"जैवीय संसाधन एवं औद्योगिक विकास,
चित्रकूट धाम मण्डल (उ०प्र०) का एक प्रतीक अध्ययन"

**"Biotic Resources and Industrial Development,
- A Case study of Chitrakut Dham Division (U.P.)"**
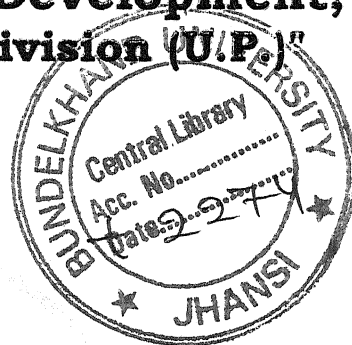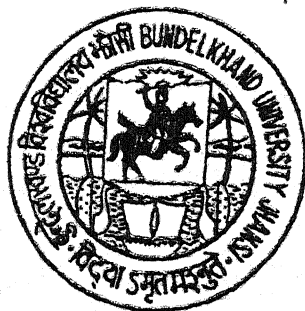
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

से

भूगोल विषय में

पी-एच.डी. उपाधि हेतु

प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

पर्यवेक्षक
डॉ० आर. के. चौरसिया
(सीनियर प्रवक्ता)
वी.एस.एस.डी. कालेज
नवाबगंज, कानपुर (उ०प्र०)

सह पर्यवेक्षक
डॉ० आर.ए. चौरसिया
(रीडर)
अतर्रा पी.जी. कालेज
अतर्रा, बाँदा, (उ०प्र०)

अनुसंधायक
प्रेमचन्द्र
अतर्रा पी.जी. कालेज
अतर्रा, बाँदा (उ०प्र०)

2005

भूगोल विभाग

वी. एस. एस. डी. कालेज, कानपुर, उ० प्र०
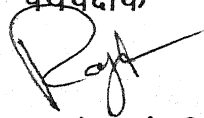
प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री प्रेमचन्द्र** आत्मज श्री बेनीमाधव ने बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की परिनियमावली में निर्दिष्ट अर्हताओं को भलीप्रकार से पूर्ण करते हुए 'कला संकाय' के अन्तर्गत भूगोल विषय में **"जैवीय संसाधन एवं औद्योगिक विकास : चित्रकूट धाम मण्डल, (उ० प्र०) का एक प्रतीक अध्ययन"** शोध शीर्षक पर **पी.–एच. डी. उपाधि** हेतु अपना शोध कार्य मेरे निर्देशन में 200 दिवस से अधिक रहकर पूर्ण कर लिया है। इनका यह कार्य पूर्णतः मौलिक है।

इस शोध प्रबन्ध के मूल्यांकन हेतु विश्वविद्यालय में प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करता हूँ एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

दिनॉक : 01/ 09/ 2005

पर्यवेक्षक

डॉ. आर. के. चौरसिया

सीनियर प्रवक्ता
वी. एस. एस. डी. कालेज
नवाबगंज, कानपुर, उ० प्र०।

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

ATARRA P. G. COLLEGE, ATARRA, BANDA (U.P.)
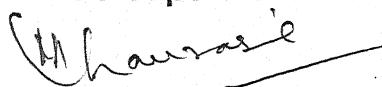
This is to certify that **Sri Prem Chandra** S/o Sri Benimadhav was enrolled for **Ph. D. Degree** of Bundel Khand University, Jhansi on 29.05.2003 under my supervision on the topic, **"Biotic Resources and Industrial Development: A case study of Chitrakut Dham Division (U.P.)"**

He has worked under my supervision for the period required under ordinance 7 of the university act, 1973 and has been present in the department during that period. Upto the best of my knowledge and belief the thesis embodies the work of the candidate himself. The facts and findings produced in the thesis are original.

I wish him all success.

Co-supervisor

(Dr R. A. Chaurasia)

Reader

Atarra P.G College

Atarra Banda (U.P)

Dated : 01/ 09/ 2005

प्राक्कथन (PREFACE)

भारत ग्रामों का देश है। ग्रामों के विकास से ही देश का विकास सम्भव है। ग्रामों का आर्थिक विकास केवल कृषि से ही सम्भव नही है, बल्कि कृषि के साथ–साथ उद्योगो का समन्वित विकास करना आवश्यक है। कृषि विकास और औद्योगिक विकास दोनों एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। बिना कृषि विकास के औद्योगिक विकास नहीं किया जा सकता और बिना औद्योगिक विकास के कृषि क्षेत्र में वांछित प्रगति नही की जा सकती।

अनेक लघु तथा कुटीर उद्योग कच्चे माल के लिए जैवीय संसाधनो (कृषि, पशु तथा वन) पर ही आधारित हैं जो ग्रामीण क्षेत्र ही इनके अनुत्पादक एवं वितरक हैं। अतः ग्रामीण क्षेत्रो के औद्योगीकरण से आर्थिक विकास की गति को तीव्र किया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों के औद्योगीकरण के लिए केवल संसाधानों की आवश्यकता नहीं होती है बल्कि ग्रामीण उद्यमियों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होती हैं।

पिछड़े ग्रामीण क्षेत्र जिन समस्याओं का सामना कर रहें है, उनके अध्ययन के लिए भूगोल के विद्यार्थियों को आगे आना चाहिए। उन्हें केवल ग्रामीण औद्योगीकरण की समस्याओं का ही अध्ययन नहीं करना चाहिए, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों के सन्तुलित एवं बहुमुखी विकास के लिए औद्योगिक नियोजन हेतु उत्तम सुझाव देना चाहिए।

ग्रामीण क्षेत्रों के सन्तुलित एवं बहुमुखी विकास के लिए अर्थशास्त्रियों, वैज्ञानिकों,भूगोल–वेत्ताओं, प्रादेशिक योजना निर्माताओं और राजनेताओं के संयुक्त प्रयास का अतीव महत्व है, क्योंकि सन्तुलित ग्रामीण विकास के लिए इनकी विभिन्न समस्याओं के निराकरण की आवश्यकता है। ग्रामीण उद्यमियों को विभिन्न संचालित योजनाओं से उन्हें अवगत कराना चाहिए।

उद्योगो के स्थानीय के लिए उपयुक्त स्थान, श्रम शक्ति, कच्चामाल, बाजार, परिवहन एवं संचार के साधनों की आवश्यकता होती है। भूगोल वेत्ताओं को विशिष्ट स्थानों के जैवीय संसाधनो की उपलब्धता का अध्ययन कर उद्योगों के

स्थानीय करण के कारकों की सुलभता को ध्यान में रखकर उद्योगों की स्थापना के लिए सुझाव देना चाहिए। समुचित स्थानों पर उपयुक्त उद्योगो के विकेन्द्रीकरण स्थापना से ही प्रदेश का आर्थिक विकास हो सकता है।

यद्यपि लघु एवं अति लघु उद्योगों की विचार धारा दशको वर्ष पुरानी है। लेकिन इस ओर उद्यमियों का ध्यान दस–पन्द्रह वर्ष पूर्व से आकर्षित हुआ है। सार्वभौमिक विचारधारा यह है कि लघु एवं कुटीर उद्योगो को वृहद् उद्योगो के बजाय अधिक आगे बढ़ाया जाय, क्योंकि वृहद् उद्योग प्राकृतिक पर्यावरण को नष्ट करके अपूर्णनीय क्षति करतें है इसलिए विकासशील देशों के द्वारा लघु एवं कुटीर उद्योगो का दर्शन सार्व भैमिक रूप से स्वीकार किया गया है। भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ अत्यधिक प्राकृतिक संसाधन है तथा बेरोजगारी की समस्या गम्भीर है, वहाँ लघु एवं कुटीर उद्योग बेरोजगारी की समस्या के समाधान की रचनात्मक भूमिका अदा कर सकते है अर्थात् वे स्थानीय संसाधनो का उपयोग शिक्षित नवयुवको को लघु एवं कुटीर उद्योगो में नियोजित करने में कर सकते है।

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में चित्रकूट धाम मण्डल के वर्तमान जैविक संसाधनों का अध्ययन कर उनसे सम्बन्धित उद्योगो का विकास करने के लिए विकास केंन्द्रो, विकास उप केंन्द्रो, एवं सेवाग्रामों के विकेन्द्रीयकरण का सुझाव प्रस्तुत किया गया है साथ ही साथ भविष्य के लिए सन्तुलित क्षेत्रीय विकास हेतु उपयुक्त उद्यम सुझाये गये है।

इस प्रकार जैविक संसाधनों के माध्यम के द्वारा ही मण्डल का सर्वांगीण आर्थिक विकास सम्भव हो सकेगा। विकास खण्ड स्तर पर किया गया यह शोध कार्य योजना निर्माणकर्ताओं, शोधार्थियों, उद्यमियों एवं स्वंय सेवी संगठनों को अपूर्व योगदान दे सकेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

आभार (ACKNOWLEDGEMENT)

प्रस्तुत शोध कार्य परम श्रद्धेय गुरूवर डॉ0 आर0 ए0 चौरसिया (रीडर अतर्रा पी. जी. कालेज अतर्रा, बादां, उ0 प्र0) के कुशल निर्देशन में साकार रुप ले सका, जिन्होंने समय समय पर अनेक नवीन सुझाव प्रस्तुत कर "जैवीय संसाधनों के धरातल पर औद्योगिक विकास की मंदाकिनी प्रवाहित की।" मैं उनका चिर ऋणी रहूँगा।

शोध कार्य के प्रेरणा श्रोत डॉ0 आर0 के0 चौरसिया, सीनियर प्रवक्ता, वी.एस. एस.डी. कालेज कानपुर के प्रति श्रद्धावनत हूँ, जिनकी कृपा एवं स्नेहपूर्ण निर्देशन एवं असाधारण योगदान के द्वारा ही मैं इस दुष्कर कार्य को सरलतापूर्वक पूर्ण करने में सक्षम हो सका। मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं प्रो0 आर0 एन0 विरले, विभागाध्यक्ष वी0एस0एस0डी0 कालेज कानपुर, प्रो0 आर0 एन0 तिवारी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, प्रो0 एम0 वी0 सिंह, बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय, बनारस, डॉ0 आर0 एस0 त्रिपाठी, रीडर अतर्रा पी0 जी0 कालेज, अतर्रा, बॉदा, प्राचार्य डॉ0 आर0 के0 शुक्ल, अतर्रा पी0 जी0 कालेज, अतर्रा, बॉदा के प्रति हृदय से आभारी हूँ। जिन्होंने प्रस्तुत शोध के दौरान विषय को अद्यतन बनाने के लिये अनेक सुझाव प्रस्तुत किये।

इसके संयोजन में पुस्तकालय, वी0 एस0 एस0 डी0 कालेज कानुपर, पुस्तकालय, अतर्रा पी0 जी0 कालेज, अतर्रा, बॉदा, पुस्तकालय, पं0 जे0 एन0 कालेज, बॉदा, कृषि निदेशालय, लखनऊ, जनगणना निदेशालय, लखनऊ, चित्रकूटधाम मण्डल के सभी जनपदों के प्रभागीय वनाधिकारी, महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र तथा अर्थ एवं संख्या अधिकारी का सहयोग रहा है। अतः इनके प्रति कृतज्ञता–ज्ञापन मेरा पुनीत कर्तव्य है।

बुन्देलखण्ड विश्व विद्यालय झॉसी के माननीय कुलपति_जी का हृदय से आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझता हूँ। जिन्होंने भूगोल विषय में शोधकार्य करने की अनुमति प्रदान की।

मै अपने कालेज के यशस्वी, कर्मठ प्राचार्य श्री गोविन्द सिंह चन्देल, श्री भस्मानन्द कालेज, लोदीपुर निवादा, हमीरपुर का विशेष आभारी हूँ, जिन्होंने समय समय पर शोध कार्य के लिये प्रोत्साहित किया एवं अनेक प्रकार से सहयोग प्रदान किया।

मैं अपने मित्र श्री मलखान प्रजापति (प्रवक्ता अंग्रेजी) के योगदान को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। उनका मैं आभारी हूँ।

मैं अपने परिवार के सदस्यों विशेषकर अपनी पत्नी श्रीमती आशादेवी एवं प्रिय बच्चों के असाधारण योगदान को जीवन पर्यन्त नहीं भुला सकता, जिन्होंने अनेकानेक गृहकार्यों से मुक्त रखकर पर्याप्त समय व स्वस्थ वातावरण मुझे प्रदान किया।

शोध प्रबन्ध को इस रुप में आपके समक्ष प्रस्तुत करने का सौभाग्य जो मुझे प्राप्त हुआ, उसके लिये कम्प्यूटर टाइपिस्ट श्री शेखर श्रीवास्तव को भी मैं धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने अत्यन्त अल्प समय में सुन्दर आकर्षक और विशुद्ध टंकण कार्य सम्पन्न करते हुये नियत अवधि में प्रस्तुत कर सकने में मुझे समर्थ किया।

अन्त में उन सभी लोगों के प्रति अपना 'आभार–हार' समर्पित करता हूँ, जिन्होंने जाने–अनजाने मनसा, कर्मणा, अपना सहयोग देकर मेरे शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में अपना योगदान किया है।

दिनॉक :– 16–08–2005

Chandra
प्रेमचन्द्र
(शोधार्थी)

विषय-सूची

"जैवीय संसाधन एवं औद्योगिक विकास : चित्रकूट धाम मण्डल (उ0 प्र0) का एक प्रतीक अध्ययन"		पृष्ठ सं0
	प्राक्कथन	A-B
	आभार	C-D
	मानचित्र एवं आरेख सूची	I-II
	तालिका –सूची	III-VII
	परिशिष्ट – सूची	VIII-IX
अध्याय 1	सामान्य परिचय **(General Introduction)**	**1-15**
	(i) प्रस्तावना	
	(ii) चित्रकूट धाम मण्डल का ऐतिहासिक परिचय	
	(iii) अध्ययन क्षेत्र – स्थिति विस्तार, प्रशासनिक संगठन,	
	(iv) विषय के सन्दर्भ में अध्ययन क्षेत्र की सार्थकता	
	(v) अध्ययन का उद्देश्य	
	(vi) विधि तन्त्र	
	(vii) परिकल्पना	
	(viii) पूर्व साहित्य का पुनरावलोकन	
अध्याय – 2	(A) अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठ भूमि **(Physical Background of the Study Area)**	**16-51**
	(i) भूगर्भ–संरचना	
	(ii) उच्चावचन	
	(iii) जल–प्रवाह	
	(iv) जलवायु	
	(v) मिट्टियॉ	

	(vi) प्राकृतिक वनस्पति	
	(vii) वन्य जीव–जन्तु	
	(B) अध्ययन क्षेत्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि **(Cultural Background of the Study Area)**	**52-78**
	(i) जनसंख्या – वृद्धिदर, वितरण, घनत्व, लिंगानुपात	
	(ii) मानव अधिवास	
	(iii) अर्थव्यवस्था	
	(iv) सामाजिक सेवायें – स्वास्थ्य, शिक्षा, साक्षरता की स्थिति, न्याय, सुरक्षा, मनोरंजन	
अध्याय – 3	जैवीय पृष्ठभूमि **(Biotic Foundation)**	**79-100**
	(i) जैवीय संसाधनों की संकल्पना	
	(ii) मानव के लिये जैवीय संसाधनों का महत्व	
	(iii) जैवीय संसाधनों का वर्गीकरण	
	(iv) जैवीय संसाधनों को प्रभावित करने वाले कारक	
अध्याय – 4	वन संसाधन **(Forest Resources)**	**101-134**
	(i) वनों का महत्व एवं वर्गीकरण	
	(ii) वनों के अर्न्तगत क्षेत्रफल	
	(iii) सामाजिक वानिकी कार्यक्रम, कृषि वानिकी, परिवहन मार्ग वानिकी	
	(iv) मृदा तथा पर्यावरण के अनुकूल वृक्ष प्रजातियों का चयन	
	(v) वनोंत्पाद	
	(vi) वनसंरक्षण एवं वन्य जीव संरक्षण	
अध्याय – 5	पशु संसाधन **(Animal Resources)**	**135-179**
	(i) पशु संसाधनों का महत्व एवं वर्गीकरण	
	(ii) चित्रकूट धाम मण्डल में पशु वृद्धि	
	(iii) पशुओं का घनत्व एवं वितरण – गोजातीय पशु, महिष जातीय पशु, भेड़े, बकरे–बकरियॉं, घोड़े एवं टट्टू, सूअर, कुक्कुट	

	(iv) मानव पशु संसाधन अनुपात, गुणवत्ता	
	(v) पशु सम्पदा के कल्याण हेतु चलाये जाने वाले कार्यक्रम	
	(vi) चारागाह, पशु चिकित्सालय, कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र, मत्स्य संसाधन, मत्स्य पालन हेतु चलाये जाने वाले कार्यक्रम	
अध्याय – 6	कृषि संसाधन **(Agriculture Resources)**	**180-234**
	(i) सामान्य भूमि उपयोग	
	(ii) कृषि भूमि का उपयोग – रवी, खरीफ, जायद	
	(iii) कृषि प्रतिरुप, शस्य संयोजन	
	(iv) प्रमुख फसलें उनका क्षेत्रफल, उत्पादन एवं वितरण – प्रमुख धान्य फसले – गेहूँ, धान, ज्वार, बाजरा, जौ, प्रमुख दलहनी फसलें – चना, मटर, मसूर, अरहर, मूँग, उर्द, प्रमुख तिलहनी फसलें – लाही व सरसों, अलसी, मूगफॅली, सोयाबीन, तिल, अन्य फ़सलें – गन्ना, तम्बाकू, कपास, सनई, पान की कृषि, शाक–सब्जी की कृषि – आलू, टमाटर, मशरुम, बागवानी – पपीता, आम, केला, नीबू, अमरुद, औषधीय पौधों की कृषि, फूलों की कृषि	
	(v) सिंचाई सुविधायें – नहरें, नलकूप, कुएं, तालाब अन्य स्रोतों द्वारा सिंचाई, सिंचित क्षेत्र	
	(vi) उत्तम कृषि हेतु सुझाव – हरित क्रान्ति तकनीक	
अध्याय – 7	अवसंरचनात्मक सुविधायें **(Infrastructural Facilities)**	**235-287**
	(i) यातायात या परिवहन – चित्रकूटधाम मण्डल के यातायात का इतिहास, यातायात के साधन 1. स्थल यातायात – सड़क यातायात, सड़क घनत्व, सड़क जनसंख्या अनुपात, सड़क–सुगमता रेल यातायात – रेल धनत्व, रेल मार्ग तथा जनसंख्या का अनुपात, रेल–सुगमता 2. जल यातायात, यातायात के विकास के लिये सुझाव	

	(ii) संचार – डाक, तार, टेलीफोन, फैक्स, संचार–सुलभता	
	(iii) ऊर्जा–परम्परागत ऊर्जा स्रोत, वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत	
	(iv) वित्तीय सुविधाएँ–बैंक, सहकारिता, बाजार, भण्डार	
	(v) अन्य–विस्तार सेवायें, कृषि सेवा केन्द्र, औद्योगिक भू–सम्पत्ति	
अध्याय–8	वनाधारित उद्योग धन्धे **(Forest Based Industries)**	**288-312**
	(i) वर्गीकरण	
	(ii) विविध वनाधारित उद्योग धन्धो का विवरण (स्थिति एवं वितरण, कच्चेमाल की उपलब्धि, कार्यरत इकाइयों की संख्या, पूँजी निवेश, रोजगार, उत्पादन, प्रबन्धन एवं नियोजन)	
	1. फर्नीचर उद्योग, 2. आरा मशीन उद्योग, 3. काष्ठ शिल्प उद्योग, 4. अगरबत्ती उद्योग, 5. कागज की दफ्ती बनाने का उद्योग, 6. कागज उद्योग, 7. आयुर्वेदिक दवा बनाने का उद्योग, 8. डलिया उद्योग, 9. बीडी उद्योग, 10. दोना पत्तल निर्माण उद्योग 11. रस्सी बनाने का उद्योग।	
अध्याय–9	पशु आधारित उद्योग धन्धे **(Live Stock Based Industries)**	**313-326**
	(i) वर्गीकरण	
	(ii) विविध पशु आधारित उद्योग धन्धो का विवरण– (स्थिति एवं वितरण, कच्चेमाल की उपलब्धि, कार्यरत इकाइयों की संख्या, पूँजी निवेश, रोजगार, उत्पादन, प्रबन्धन एवं नियोजन) 1. डेयरी उद्योग 2. चमड़ा उद्योग 3. मॉस उद्योग 4. ऊनी वस्त्र उद्योग 5. आइस कैण्डी तथा आइस्क्रीम उद्योग	
अध्याय–10	कृषि आधारित उद्योग धन्धे **(Agro-Based Industries)**	**327-363**
	(i) वर्गीकरण	
	(ii) विविध कृषि आधारित उद्योग धन्धो का विवरण (स्थिति एवं वितरण, कच्चेमाल की उपलब्धि, कार्यरत इकाइयों की संख्या, पूँजी निवेश, रोजगार, उत्पादन, प्रबन्धन एवं नियोजन) 1. खाद्य तेल उद्योग, 2. अखाद्य तेल उद्योग, 3. आटा उद्योग, 4. दाल उद्योग, 5. चावल उद्योग 6. लाई बनाने का उद्योग 7. बेकरी और	

	बिस्कुट उद्योग 8. गुड़ तथा खॅाडसारी उद्योग 9. मसाला पिसाई उद्योग, 10. पान प्रोसेसिंग उद्योग, 11. पान मसाला एवं गुटका उद्योग, 12. नमकीन एवं दालमोठ उद्योग, 13. फल सब्जी संरक्षण उद्योग, 14. हथकरघा उद्योग 15. सूत कातने का उद्योग 16. खादी वस्त्र बनाने का उद्योग 17. दरी, गलीचा तथा कालीन बुनने का उद्योग 18. रेडीमेड गारमेन्ट्स उद्योग 19. सिलाई तथा कढ़ाई उद्योग	
अध्याय–11	निष्कर्ष एवं सुझाव : औद्योगिक विकास एवं नियोजन **(Conclusion & Suggestion : Industrial Development and Planning)**	**364-399**
	(i) नियोजन की आवश्यकता	
	(ii) औद्योगिक विकास में बाधक तत्व	
	(iii) औद्योगिक अवस्थापना केन्द्रो की आवश्यकता	
	(iv) भावी संसाधनो का आंकलन	
	(v) नवीन औद्योगिक केन्द्रों का सुझाव	
	परिशिष्ट	**400-437**
	प्रश्नावली	**438-440**
	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	**441-448**

LIST OF MAP & DIAGRAMS

S.NO.	FIG. NO.	CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)	Page No.
1	1.1	LOCATION MAP : 2001-02	7
2	1.2	ADMINISTRATIVE AREAL UNITS: 2002	10
3	2A.1	GEOLOGICAL STRUCTURE	17
4	2A.2	RELIEF	22
5	2 A.3	PHYSIOGRAPHIC DIVISION	24
6	2 A. 4	DRAINAGE	28
7	2 A. 5	DISTRIBUTION OF AVERAGE ANNUAL RAINFAL	32
8	2 A. 6	SUMMER RAINFAL	34
9	2 A. 7	WINTER RAINFAL	35
10	2 A. 8	RAINFAL, TEMPERATURE AND RELATIVE HUMIDITY: HAMIRPUR, MAHOBA, BANDA, CHITRAKUT.	37
11	2 A. 9	SOILS	41
12	2 A. 10	SOIL EROSION	45
13	2 A. 11	NATURAL VEGETATION	49
14	2B. 1	DISTRIBUTION OF POPUTAION	56
15	2B. 2	DENSITY OF POPULATION	59
16	2B. 3	BLOCKWISE RURAL AND URBAN POPULATION	65
17	2B. 4	OCCUPATIONAL STRUCTURE	68
18	2B. 5	LITERACY	75
19	4.1	FORESTS	104
20	4.2	DISTRIBUTION OF FOREST COVER	109
21	4.3	WILD LIFE AND BIRD SANCTURIES	132
22	5.1	BLOCK WISE DISTRIBUTION OF ANIMAL RESOURCES	141
23	5.2	CATTLE DENSITY	145
24	5.3	BUFALO DENSITY	149
25	5.4	SHEEP DENSITY	152
26	5.5	GOATS DENSITY	155
27	5.6	HORSE & PONY DENSITY	158
28	5.7	PIGS DENSITY	161
29	5.8	POULTRY DENSITY	164
30	5.9	BLOCK WISE HUMAN – ANIMAL RESOURCE RATIO	166
31	5.10	BLOCK WISE HUMAN – POULTRY RATIO –	169
32	6.1	LAND UTILISATION: 2000-01	181
33	6.2	BLOCK WISE GENERAL LAND USE CATEGORIES: 2000-01	182

34	6.3	DOUBLE CROPPED AREA: 2000-01	186
35	6.4	AREA UNDER SEASONAL CROPS: 2000-01	188
36	6.5	COMBINATION OF CROPS: 2000-01	195
37	6.6	AREA UNDER DIFFRENT CROPS: 2000-01	197
38	6.7	AVERAGE AREA UNDER MAIN CROPS: 2000-01	198
39	6.8	PER CENT NET IRRIGATED AREA BY DIFFERENT SOURES: 2000-01	220
40	6.9	SOURCE WISE NET IRRIGATED AREA: 2000-01	221
41	6.10	DISTRIBUTION OF NET IRRIGATED AREA AND NET SOWN AREA – 2000-01	226
42	7.1	TRANSPORT: 2001-02	238
43	7.2	BLOCK WISE ROAD DENSITY: 2000-01	242
44	7.3	BOLCK WISE ROAD POPUATION RATIO: 2000-01	245
45	7.4	ROAD ACCESSIBILITY: 2001-02	248
46	7.5	BLOCK WISE RAIL DENSITY: 2000-01	255
47	7.6	BLOCK WISE RAIL POPULATION RATIO: 2000-01	259
48	7.7	ACCESSIBILITY BY RAIL: 2001-02	261
49	7.8	POST & TELEGRAPH OFFICES DENSTY: 2000-01	268
50	7.9	TELEPHONE & P.C.O. DENSITY: 2001-02	270
51	7.10	BIO – GAS PLANTS DENSITY: 2001-02	275
52	7.11	TANSIMISION LINES AND SUB-STATION: 2002-03	278
53	7.12	PER CENTAGE OF ELECTRIFIES VILLAGES 2001-02	280
54	8.1	FOREST BASED INDUSTRIES: 2003-04	293
55	8.2	FOREST BASED INDUSTRIES: 2003-04	306
56	9.1	LIVE STOCK BASED INDUSTRIES: 2003-04	316
57	10. 1	AGRO – BASED INDUSTRIES: 2003-04	331
58	10.2	AGRO – BASED INDUSTRIES: 2003-04	336
59	10. 3	AGRO – BASED INDUSTRIES: 2003-04	350
60	10.4	AGRO – BASED INDUSTRIES: 2003-04	355
61	11.1	PROSPECTIVE INDUSTAL UNITS FOR VARIOUS GROWTH CENTRES & FOCI	379
62	11.2	SUGGESTED PROSPECTIVE INDUSTRIAL UNITS FOR VARIOUS SERVICE VILLAGES	380
63	11.3	INFRA – STRUCTURAL FACILITIES: 2001-02	382
64	11.4	MARKET - CENTRES	384

तालिका – सूची

क्र0 सं0	तालिका सं0	विवरण	पृष्ठ सं0
1.	1.1	चित्रकूट धाम मण्डल का प्रशासकीय ढ़ॉचा – 2001–02	9
2.	2A. 1	चित्रकूट धाम मण्डल के भूतत्व एवं संरचना का इतिहास	16
3.	2A. 2	चित्रकूट धाम मण्डल में जलाशयों की स्थिति एवं क्षेत्रफल	30
4.	2A. 3	चित्रकूट धाम मण्डल में औसत मासिक तापक्रम	33
5.	2A. 4	चित्रकूट धाम मण्डल में औसत मासिक वर्षा का विवरण	36
6.	2A. 5	चित्रकूट धाम मण्डल में माध्य मासिक सापेक्षित आर्द्रता का प्रतिशत	38
7.	2A. 6	चित्रकूट धाम मण्डल में भू–क्षरण प्रभावित क्षेत्रफल	46
8.	2A. 7	चित्रकूट धाम मण्डल में भूसंरचना के अन्तर्गत उपचारित क्षेत्रफल	48
9.	2B. 1	चित्रकूट धाम मण्डल में जनसंख्या की वृद्धिदर	54
10.	2B. 2	चित्रकूट धाम मण्डल में जनपदवार जनसंख्या वृद्धिदर	55
11.	2B. 3	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार जनसंख्या का वितरण तथा घनत्व	58
12.	2B. 4	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार जनसंख्या का लिंगानुपात	61
13.	2B. 5	चित्रकूट धाम मण्डल में ग्रामीण तथा नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत	63
14.	2B. 6	चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्ड ग्रामीण तथा नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत	63–64
15.	2B. 7	चित्रकूट धाम मण्डल की नगरीय जनसंख्या	66
16.	2B. 8	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार का आर्थिक वर्गीकरण (प्रतिशत में)	70
17.	2B. 9	चित्रकूट धाम मण्डल में चिकित्सालय तथा स्वास्थ्य सेवायें	71
18.	2B. 10	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार साक्षर व्यक्ति तथा साक्षरता प्रतिशत	74
19.	4.1	एक सामान्य वृक्ष से लाभ	102
20.	4.2	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार वनों का क्षेत्रफल तथा प्रतिशत	108
21.	4.3	चित्रकूट धाम मण्डल की पौधशालाएं एवं उनका क्षेत्रफल	111–112
22.	4.4	चित्रकूट धाम मण्डल में प्रशासनिक वनो का वर्गीकरण तथा उनके अर्न्तगत क्षेत्रफल	113
23.	4.5	चित्रकूट धाम मण्डल में सामाजिक वानिकी की उपलब्धियां	119

24.	4.6	चित्रकूट धाम मण्डल में सामाजिक वानिकी के अन्तर्गत व्यय की गयी धनराशि का विवरण	119
25.	4.7	बांदा तथा चित्रकूट जनपद में तेदूपत्ता तुडाई का इकाइयां	123
26.	4.8	जनपद चित्रकूट के कर्वी तथा मारकुण्डी रेंज में खण्ड तथा कक्षवार दुद्धी लकड़ी के अन्तर्गत वितरित क्षेत्रफल	124
27.	4.9	चित्रकूट धाम मण्डल के वनों में पायी जाने वाली कुछ वनौषधियों की उपयोगिता	126
28.	4.10	चित्रकूट धाम मण्डल में प्रमुख तथा गौण वन–उपजों का उत्पादन	127
29.	4.11	रानीपुर वन्य जीव विहार के वन्य जीवों की गणना वर्ष 2003	133
30.	5.1	चित्रकूट धाम मण्डल में पशुधन एवं कुक्कुट की संख्या तथा वृद्विदर	140
31.	5.2	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार पशुधन प्रतिशत में	143
32.	5.3	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार गोजातीय पशुओं का घनत्व एवं वितरण।	146
33.	5.4	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार महिष जातीय पशुओं का घनत्व एवं वितरण	148
34.	5.5	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार भेड़ो का घनत्व तथा वितरण।	151
35.	5.6	चित्रकूट धाम मण्डल विकास खण्डवार बकरे– बकरियों का घनत्व तथा विवरण।	154
36.	5.7	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार घोड़े एवं टट्टुओं का घनत्व एवं वितरण।	157
37.	5.8	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार सुअरों का घनत्व एवं वितरण	160
38.	5.9	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार कुक्कुटों का घनत्व एवं वितरण।	163
39.	5.10	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार मानव–पशु संसाधन अनुपात।	167
40.	5.11	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार मानव–कुक्कुट अनुपात	168
41.	5.12	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार चारागाह का क्षेत्रफल	174
42.	5.13	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार पशु चिकित्सालय, पशुधन विकास केन्द्र तथा कृत्रिम गर्भाधान, केन्द्र	175–176
43.	5.14	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार विभागीय जलाशयों में मत्स्य उत्पादन– 2001–02	177–178
44.	6.1	चित्रकूट धाम मण्डल में भूमि उपयोग	181
45.	6.2	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार (ग्रामीण) भूमि उपयोग	187

46.	6.3	चित्रकूट धाम मण्डल में शस्य– संयोजन	194
47.	6.4	चित्रकूट धाम मण्डल में शस्य–संयोजन के आधार पर विकास खण्डों की प्रतिशत संख्या का विवरण।	196
48.	6.5	चित्रकूट धाम मण्डल में धान्य, दहलन, तिलहन, एवं अन्य फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल का प्रतिशत।	197
49.	6.6	चित्रकूट धाम मण्डल में मुख्य फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल 2000–01	197
50.	6.7	चित्रकूट धाम मण्डल में जनपदवार कृषि से सम्बन्धित कुछ मुख्य सुविधाएँ।	230
51.	6.8	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार उर्वरक वितरण	231
52.	7.1	चित्रकूट धाम मण्डल में पक्की सड़कों की लम्बाई	240
53.	7.2	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार सड़क–घनत्व	243
54.	7.3	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार सड़क जनसंख्या अनुपात	246
55.	7.4	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार सब ऋतु योग्य सड़कों से जुड़े ग्रामों का आवाद ग्रामों से प्रतिशत।	249
56.	7.5	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार बस स्टैण्ड/स्टाप से दूरी के अनुसार ग्रामों की संख्या प्रतिशत में।	251
57.	7.6	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार बस स्टैण्ड से दूरी के अनुसार ग्रामों की संख्या प्रतिशत में।	252
58.	7.7	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार रेलमार्गो की लम्बाई तथा रेलवे स्टेशन संख्या।	253–254
59.	7.8	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार रेल का घनत्व	256
60.	7.9	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार रेल–जनसंख्या अनुपात	258
61.	7.10	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार रेलवे स्टेशन/हाल्ट से दूरी के अनुसार ग्रामों की संख्या	262
62.	7.11	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार रेलवे स्टेशन/हाल्ट से दूरी के अनुसार ग्रामो की संख्या प्रतिशत में	263
63.	7.12	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार संचार सेवाएँ	266
64.	7.13	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार संचार सेवओं का घनत्व।	269
65.	7.14	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार डाकघर से दूरी के अनुसार ग्रामो की संख्या	271
66.	7.15	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार सार्वजिक टेलीफोन से दूरी के अनुसार ग्रामो की संख्या।	272
67.	7.16	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार बायोगैस संयन्त्रों की वितरण एवं घनत्व।	276
68.	7.17	चित्रकूट धाम मण्डल में विभिन्न कार्यो में जलविद्युत उपयोग	277

69.	7.18	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार विद्युतीकृत ग्राम	279
70.	7.19	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार अनुसूचित व्यावसायिक बैंक तथा ग्रामीण बैक शाखाओं की संख्या 2001– 2002	281–282
71.	7.20	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार प्रारम्भिक कृषि ऋण सहकारी समितियॉ।	283
72.	7.21	चित्रकूट धाम मण्डल में अन्य सहकारी समितियॉ, सहकारी बैंक तथा सहकारी कृषि एवं ग्राम्य विकास बैंक।	284
73.	7.22	चित्रकूट धाम मण्डल में खाद्यान्न भण्डारों एवं शीत भण्डारों की संख्या एवं क्षमता।	285
74.	8.1	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार वनाधारित औद्योगिक इकाइयों एवं कार्यरत व्यक्तियों की संख्या।	291
75.	8.2	चित्रकूट धाम मण्डल में फर्नीचर उद्योग की इकाइयों की संख्या, रोजगार, पूँजी–निवेश तथा वार्षिक उत्पादन क्षमता।	294
76.	8.3	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार आरा मशीनों का वितरण, पूँजी–निवेश तथा रोजगार।	297
77.	8.4	चित्रकूट धाम मण्डल में अगरबत्ती उद्योग की इकाइयों का वितरण, रोजगार, पूँजी–निवेश तथा उत्पादन क्षमता।	301
78.	8.5	चित्रकूट धाम मण्डल में आयुर्वेदिक दवा बनाने वाली इकाइयों का पूँजी–निवेश, रोजगार तथा उत्पादन क्षमता।	305
79.	8.6	मशीन द्वारा पत्तल से थाली तथा दोना बनाने के उद्योग की पूँजी संरचना।	310
80.	9.1	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार पशु आधारित औद्योगिक इकाइयों की संख्या एवं कार्यरत व्यक्ति तथा पूँजी निवेश।	314–315
81.	9.2	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार मिनी डेयरी उद्योग की इकाइयों की संख्या, पूंजी–निवेश तथा रोजगार	318–319
82.	9.3	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार चमड़ा उद्योग की इकाइयॉ पूँजी विनियोजन तथा रोजगार।	321–322
83.	9.4	चित्रकूट धाम मण्डल में आइस कैण्डी तथा आइसक्रीम उद्योग की इकाइयों की संख्या पूँजी विनियोजन तथा रोजगार।	325–326
84.	10.1	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार कृषि आधारित औद्योगिक इकाइयां एवं कार्यरत व्यक्ति।	329
85.	10.2	चित्रकूट धाम मण्डल में खाद्य तेल मिलो का वितरण तथा पूँजी–निवेश।	332
86.	10.3	चित्रकूट धाम मण्डल में आटा मिलों तथा चक्कियों का वितरण।	337
87.	10.4	छोटी आटामिल (चक्की) में लगी पूँजी संरचना	338

88.	10.5	चित्रकूट धाम मण्डल में दाल–मिलों का वितरण तथा पूंजी निवेश	340
89.	10.6	चावल मिल में लगी पूँजी की संरचना।	343
90.	10.7	बेकरी और विस्कुट उद्योग में पूँजी निवेश का विश्लेषण	346
91.	10.8	चित्रकूट धाम मण्डल में मसाला पीसने की इकाइयों का वितरण।	349
92.	10.9	चित्रकूट धाम मण्डल में नमकीन उद्योग इकाइयों का वितरण रोजगार तथा पूंजी निवेश।	352
93.	10.10	चित्रकूट धाम मण्डल में हथकरघा उद्योग की कार्यशील इकाइयों की संख्या तथा कार्यरत व्यक्ति।	354
94.	10.11	चित्रकूट धाम मण्डल में हथकरघा उद्योग के अन्तर्गत पूँजी निवेश।	356
95.	10.12	चित्रकूट धाम मण्डल में दरी, गलीचा, तथा कालीन उद्योग की इकाइयों का वितरण, रोजगार तथा पूँजी विनियोजनं	358–359
96.	10.13	चित्रकूट धाम मण्डल में रेडीमेड गारमेन्टस उद्योग की इकाइयों का वितरण, रोजगार तथा पूँजी–निवेश।	360–361
97.	10.14	चित्रकूट धाम मण्डल में सिलाई तथा कढ़ाई उद्योग की इकाइयों की संख्या, पूँजी विनियोजन तथा रोजगार।	362–363
98.	11.1	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार धान की अधिशेष मात्रा तथा राइसमिल की नई इकाइयों की संख्या।	373
99.	11.1	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार दलहन की अधिशेष मात्रा एवं दाल मिल की नई इकाइयों की संख्या।	374–375
100.	11.1	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार तिलहन की अधिषेष मात्रा एवं आयल मिल की नई इकाइयों की संख्या।	376
101.	11.1	चित्रकूट धाम मण्डल में औद्योगिक विकास केन्द्र, उपकेन्द्र तथा सेवाग्राम	378

परिशिष्ट – सूची

क्र0 सं0	तालिका सं0	विवरण	पृष्ठ सं0
1.	2B.1	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार जनसंख्या का आर्थिक वर्गीकरण।	400
2.	5.1	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार पशुधन	401
3.	6.1	चित्रकूट धाम मण्डल में में विकास खण्डवार भूमि उपयोग	402–403
4.	6.2	चित्रकूट धाम मण्डल में में विकास खण्डवार भूमि उपयोग प्रतिशत में।	404–405
5.	6.3	चित्रकूट धाम मण्डल में कृषि भूमि उपयोग	406
6.	6.4	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार मुख्य फसलों का क्षेत्रफल।	407–408
7.	6.5	चित्रकूट धाम मण्डल में मुख्य फसलो के अन्तर्गत क्षेत्रफल प्रतिशत में।	409
8.	6.6	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार गेहूँ का क्षेत्रफल तथा उत्पादन।	410
9.	6.7	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार चावल का क्षेत्रफल तथा उत्पादन।	411
10.	6.8	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार ज्वार का क्षेत्रफल तथा उत्पादन।	412
11.	6.9	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार बाजरे का क्षेत्रफल तथा उत्पादन।	413
12.	6.10	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार जौ का क्षेत्रफल तथा उत्पादन।	414
13.	6.11	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार चना का क्षेत्रफल तथा उत्पादन।	415
14.	6.12	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार मटर का क्षेत्रफल तथा उत्पादन।	416
15.	6.13	चित्रकूट धाम मण्डल में में विकास खण्डवार मसूर का क्षेत्रफल तथा उत्पादन।	417
16.	6.14	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार अरहर का क्षेत्रफल तथा उत्पादन।	418
17.	6.15	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार मूँग का क्षेत्रफल तथा उत्पादन।	419
18.	6.16	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार उर्द का क्षेत्रफल तथा उत्पादन।	420
19.	6.17	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार लाही/सरसो का क्षेत्रफल तथा उत्पादन।	421
20.	6.18	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार अलसी का क्षेत्रफल तथा उत्पादन।	422
21.	6.19	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार मूँगफली का क्षेत्रफल तथा उत्पादन।	423
22.	6.20	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार सोयाबीन का क्षेत्रफल तथा उत्पादन।	424
23	6.21	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार अलसी का क्षेत्रफल तथा उत्पादन।	425
24.	6.22	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार गन्ने का क्षेत्रफल तथा उत्पादन।	426
25.	6.23	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार सनई का क्षेत्रफल तथा उत्पादन।	427

26.	6.24	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार आलू का क्षेत्रफल तथा उत्पादन।	428
27.	6.25	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार विभिन्न साधनों द्वारा स्रोतानुसार शुद्व सिचिंत क्षेत्रफल।	429
28.	6.26	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार विभिन्न साधनों द्वारा स्रोतवार शुद्व सिचिंत क्षेत्रफल का प्रतिशत।	430
29.	6.27	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार सिचाई साधनों एवं स्रोतों की 21 मार्च 2002 की स्थिति।	431
30.	6.28	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार शुद्व सिंचित क्षेत्रफल का शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल से प्रतिशत।	432
31.	6.29	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार सफल सिचिंत क्षेत्रफल का शुद्व सिंचित क्षेत्रफल से प्रतिशत।	433
32.	11.1	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार वनाधारित उद्योग धन्धों का धनात्मक एवं ऋणात्मक विचलन तथा स्थानीयकरण का गुणांक।	434
33.	11.2	चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार पशु आधारित उद्योग धन्धों का धनात्मक एवं ऋणात्मक विचलन तथा स्थानीयकरण का गुणांक।	435
34.	11.3	चित्रकूट धाम मण्डल में विभिन्न विकास खण्डों में कृषि आधारित उद्योग धन्धों का धनात्मक एवं ऋणात्मक विचलन तथा स्थानीकरण का गुणांक।	436
35.	11.4	वन, पशु, एवं कृषि पर आधारित उद्योगों का विकास खण्ड स्तरीय विचलन।	437

सामान्य परिचय (General Introduction)

1.1 प्रस्तावना :-

किसी भी राष्ट्र की उन्नति एंव प्रगति में संसाधनों का महत्व अनिवर्चनीय है। संसाधन बहुआयामी होते हैं। वे दृष्टिगोचर भी होते हैं एंव अदृष्टिगोचर भी। संसाधनों की विविधता किसी भी क्षेत्र के लिए वरदान होती है। समस्त जैव-अजैव तत्व जिन्हें मानव अपनी बुद्धि, श्रम, तकनीकी-कौशल, प्रयोग एंव अनुभवों द्वारा अपनी आवश्यकता के अनुरूप संशोधित, परिवर्धित, परिष्कृत एवं अधिक उपयोगी बनाकर उसके गुण-अभिमूल्यन में वृद्धि करता है, प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं, अर्थात् कोई भी वस्तु मानव की आवश्यकता में प्रयोग आने पर संसाधन बन जाती है। धरातल, मृदा, भूदृश्यावली, पर्वत, पठार, मैदान, खाड़ी, झील, सागर, बहता हुआ जल, वायु, वनस्पति, खनिज, जीव-जन्तु तथा स्वस्थ, कुशल, शिक्षित एंव लगनशील मानव, जैव-अजैव तत्व 'प्राकृतिक सम्पदा' कहलाते हैं, प्राकृतिक संसाधन नहीं। प्राकृतिक-सम्पदा विस्तृत हैं तथा आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास का आधार हैं। ये संसाधन तभी कहलाते हैं जब मानव इनका प्रयोग अपनी आवश्यकताओं के लिये करता है, इसके लिए चाहे उसे अपनी बुद्धि, श्रम-तकनीकी ज्ञान एवं अनुभव के द्वारा उसके गुण, रूप आदि में परिवर्तन क्यों न करना पड़े। मनुष्य की आवश्यकताएं अनन्त हैं, परन्तु साधन सीमित। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जब मानव किसी एक साधन का अनेक प्रकार से प्रयोग करता है तो वह पदार्थ संसाधन बन जाता है। एक वस्तु के अनेक रूपों मे प्रयोग होने से अन्य वस्तुओं एंव पदार्थों के प्रयोग में वृद्धि हो जाती है तथा अन्य साधन भी संसाधन का रूप धारण कर लेते हैं। स्पष्टतः *"संसाधन शब्द किसी वस्तु या पदार्थ को नही बताता अपितु यह पदार्थ द्वारा किये गये कार्य को व्यक्त करता है।"*

आज विश्व के आर्थिक विकास की दौड़ में जो राष्ट्र जितना ही अधिक संसाधनों से धनी है उतना ही आगे विकास की सीढ़ी पर चढ़ सकता है विशेषतः भारत, जहां पर संसाधनों की कमी नहीं है; प्रगति का मार्ग माप सकता है। यही कारण है कि किसी विद्वान ने सत्य ही कहा है कि *'भारत निर्धन लोगों का एक धनी राष्ट्र है।'* यह उक्ति चित्रकूट धाम-मण्डल के सन्दर्भ में भी पूर्णतः सटीक बैठती है।

किसी भी राष्ट्र, क्षेत्र या प्रदेश में आर्थिक विकास अचानक सम्भव नहीं है। इन्हें आर्थिक विकास की विविध अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है। यह ध्यान देने योग्य तथ्य है, कि कोई भी राष्ट्र या प्रदेश आर्थिक विकास की एक ही स्थिति में सदैव नहीं रहता है अपितु ज्यों-ज्यों आर्थिक क्रियायें प्रगति करती जाती हैं या तकनीकी एवं वैज्ञानिक उन्नति में भी वृद्धि होती जाती है, त्यों-त्यों वह क्षेत्र विकास की एक अवस्था से दूसरी अवस्था और दूसरी से तीसरी अवस्था धारण करता है, परन्तु अध्ययन क्षेत्र में आज भी अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ विकास की किरणें अभी तक नहीं पहुँच पायी हैं।

प्रायः प्राकृतिक वातावरण से ही अधिकांश संसाधनों की उपलब्धि होती है, मानव केवल पदार्थ का स्वरूप परिवर्तित कर उससे उपयोगिता ग्रहण करता है। अतः *"संसाधनों का आर्थिक विकास से अटूट सम्बन्ध है।"* आज विकास की दौड़ में संसाधनों का इतना अधिक दुरूपयोग किया जा रहा है कि निकट भविष्य में अनेक पर्यावरणीय समस्यायें उत्पन्न होने का खतरा उत्पन्न हो गया है। अनेक

प्राकृतिक संसाधन समाप्ति की कगार पर हैं, अतः आवश्यकता यह है कि विकास इस प्रकार हो जिससे एक ओर संसाधनों द्वारा आर्थिक विकास के लक्ष्य की प्राप्ति की जा सके दूसरी ओर पर्यावरण भी संरक्षित रहे, जिससे शाश्वत् विकास के लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव हो सके।

भारतवर्ष में उत्तर प्रदेश आज भी आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ राज्य माना जाता है। उत्तर प्रदेश के अन्दर भी अनेक आर्थिक विषमताएँ मौजूद हैं। बुन्देलखण्ड प्रदेश का पठारी भाग भारत के भौगर्भिक इतिहास में एक महत्व स्थान रखता है। यह प्रदेश खनिज सम्पत्ति, जल शक्ति एवं मानव शक्ति से परिपूर्ण होते हुए भी आज भी प्रगति के पथ पर अग्रसर नही हो सका है। अनेक रूढ़ियाँ, अंधविश्वास, यातायात का अपर्याप्त विकास, उर्जा के साधनों की कमी, एवं क्षेत्रीय जागरूकता का अभाव आदि इस पिछड़ेपन के मुख्य कारण हैं।

प्रकृति ने मानव को अपार सम्पदा एवं साधन प्रदान किये हैं। *प्रकृति प्रदत्त इन संसाधनों में जैवीय संसाधनों का विशेष महत्व है। मानव जीवन का अस्तित्व जीवीय संसाधनों के आधार पर ही निर्भर है।* जीवीय संसाधन स्थल एंव जल दोनों ही स्रोतों से प्राप्त होते हैं। स्थलीय जैविक संसाधनों में प्राकृतिक वनस्पति, अर्थात् वन, घास एवं अर्द्धमरूस्थल प्रदेश के पेड़–पौधे तथा अप्राकृतिक वनस्पतियाँ अर्थात् कृषिगत् फसलें, बागान, वन्यपशु एंव पालतू पशुओं को सम्मिलित किया जाता है। *जैविक संसाधन वे संसाधन है जो जीवित रहते हैं, इनमें जीव–जन्तु वनस्पति एंव मानव मुख्य है*। ये सब मिलकर परिस्थैतिक–सन्तुलन को बनाये रखनें के साथ ही साथ एक दूसरे का शोषण भी करते रहते हैं तथा ये सभी एक दूसरे से किसी न किसी रूप में सम्बन्धित हैं। मानवेतर जैविक संसाधनों को मुख्यतः तीन उपवर्गो में विभक्त किया जा सकता है :–

(1) वन संसाधन (2) पशु संसाधन (3) कृषि संसाधन

मानव द्वारा प्रयुक्त समस्त संसाधनों में जैविक संसाधनों का सर्वाधिक महत्व है, क्योंकि ये संसाधन अन्य संसाधनों की अपेक्षा मनुष्य के जीवन को निरन्तर आधार प्रदान करते हैं। *जैविक संसाधनो के बिना मानव–जीवन का अस्तित्व सम्भव नहीं है।* वह प्रत्यक्ष रूप से वनस्पति पर आधारित है। सभी पशु तथा मछलियां प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से पौधों से ही भोजन ग्रहण करते हैं। तेल, दवाईयां, रंग, अल्कोहल, लकड़ी तथा ईधन पौधों के ही उत्पाद हैं, जो मानव–जीवन को आधार प्रदान करते हैं। आखेट, पशुचारण, पशुपालन, मुर्गीपालन, दुग्धउघोग, कृषि, मत्स्य–व्यवसाय आदि अधिकांश आर्थिक क्रियायें प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रुप से वनस्पतियों पर ही आधारित हैं। यहाँ अनेक प्राकृतिक वनस्पतियों तथा जन्तु जीवों (मछली–पक्षी एंव कीट आदि को) संसाधनों के अर्न्तगत सम्मिलित नहीं करते हैं, जो उपयोगिता के विपरीत हैं तथा मानव जीवन एंव आर्थिक क्रियाओं में बाधा उत्पन्न करते हैं।

मानव, वनस्पति तथा जन्तु–जीवन की अनेक किस्मों के उपयोग करने की तकनीक का अपेक्षाकृत कम ही विकास कर पाया है। वर्तमान समय में हमारे द्वारा उपयोग किये जाने वाली लगभग सभी वनस्पतियों, फसलों एंव जन्तुओं का उपयोग प्रागैतिहासिक मानव द्वारा भी किया जाता था। बहुत से जन्तुओं, पक्षियों तथा मछलियों की तुलना में जो कि घरेलू उपयोग एंव उत्पादन के लिए प्रयुक्त हो सकते हैं, मानव ने कीटों, मघुमक्खियों और रेशम कृमिका अपने लिए प्रत्यक्ष रूप से अधिक उपयोग किया है। इसी आधार पर अनेक कीटों की जातियों को भी संसाधन कहा जा सकता है। पशु केवल खाद्य पदार्थ तथा वस्त्रों के स्रोंतो के रूप में ही प्रयुक्त नहीं होते अपितु अनेक उत्पादनों तथा आवागमन प्रक्रियाओं में संचालक शक्ति के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। इस प्रकार हम देखते है कि वनस्पति एंव

पशु–जगत् द्वारा मानव जीवन के लिए अनेक वस्तुओं की आपूर्ति की जाती है, जिन्हें क्षेत्रीय आर्थिक विकास में प्रयोग में लाया जा सकता है।

विश्व में समस्त मानव जनसंख्या का सबसे बड़ा आर्थिक साधन पशुधन हैं। यद्यपि वर्तमान वैज्ञानिक और तकनीकी उन्नति के युग में कल–कारखानों, यन्त्रों, मशीनों, परिवहन यानों, भारवाहनों, रेलगाड़ियों एंव जलपोतों के कारण शक्ति–चालित संसाधनों एवं खनिज संसाधनों का महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, फिर भी पशु संसाधन का महत्व खनिज संसाधनों की अपेक्षा अधिक कहा जा सकता है क्योंकि मानव–जीवन में भोजन, वस्त्र, परिवहन और संस्कृति के साथ पशुओं का गहरा सम्बन्ध स्थापित हो चुका है। मानव जन्तुओं का अनेक प्रकार से उपयोग करता है।

कृषि मानव का प्राचीन एंव प्राथमिक व्यवसाय है। यांत्रिक क्रान्ति ने कृषि को भी बहुत अधिक प्रभावित किया है। कृषि में एकाकीपन, स्थानीय स्वावलम्बन और अस्थिरता के स्थान पर कृषि में अन्तर्विलम्बन (Interdependence), विशिष्टीकरण, व्यावसायिक, आदान–प्रदान तथा गतिशीलता का विकास हुआ है। अनेक उद्योगों के लिए कच्चे माल की आपूर्ति कृषि के द्वारा ही सम्भव है।

"किसी भी क्षेत्र में वहाँ की अभिगम्यता, बाजार से दूरी, वर्तमान परिवहन साधन, पूँजी की उपलब्धता, बाजारों की समीपता, प्रभावशाली माँग तथा समकक्ष प्रतियोगी वस्तुओं की उपलब्धता, किसी भी जैविक अथवा अजैविक संसाधन की उपयोगिता को प्रभावित करते हैं।"

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में भारत के पिछड़े हुए प्रदेश बुन्देलखण्ड में अवस्थित *"चित्रकूट धाम मण्डल"* के जैविक संसाधनों के अर्न्तगत वनस्पति जगत, पशु सम्पदा एंव कृषि सम्पत्ति को सम्मिलित किया गया है। यह शोध यहां विद्यमान जीवीय संसाधनों के विकास एंव उन पर आश्रित आर्थिक विकास की सम्भावनाओं का विवेचन करता है।

वस्तुतः यह क्षेत्र जैविक संसाधनों से परिपूर्ण है, किन्तु उनका सम्यक् विकास अभी तक नहीं हो सका है। झाँसी मण्डल से चित्रकूट धाम मण्डल के पृथक हो जाने पर इस क्षेत्र का महत्व और भी बढ़ गया है। इस अविकसित प्रदेश के विकास में कुछ योगदान दे सकने के लिए ही इस भाग का विस्तृत अध्ययन करने हेतु शोध–कार्य का विषय बुन्देलखण्ड के अल्प विकसित क्षेत्र चित्रकूट धाम मण्डल को उपयुक्त माना गया है।

1.2 चित्रकूट धाम मण्डल का ऐतिहासिक परिचय :–

उत्तर प्रदेश के नवसृजित *'चित्रकूटधाम मण्डल'* का नामकरण हिन्दुओं के प्रसिद्व तीर्थ 'चित्रकूट' के नाम पर किया गया है। चित्रकूट धाम मण्डल का मुख्यालय बांदा है। इस मण्डल का गठन 30 सितम्बर 1997 को झाँसी मण्डल को विभाजित कर किया गया है। वर्तमान में इस मण्डल के अन्तर्गत (1) हमीरपुर (2) महोबा (3) बाँदा तथा (4) चित्रकूट जिलें हैं। महोबा जनपद का सृजन 11 फरवरी 1995 को हमीरपुर जनपद की तीन तहसीलों (चरखारी, कुलपहाड़ एवं महोबा) को पृथक कर हुआ। चित्रकूट जनपद, का सृजन 13मई 1997 को छत्रपति शाहू जी महाराज नगर के नाम से बांदा जनपद की दो तहसीलों (कर्वी और मऊ) को पृथक कर हुआ। 8 सितम्बर 1998 को जन भावनाओं का सम्मान करते हुए जिले का नाम *'चित्रकूट'* किया गया।

चित्रकूट नाम की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कई मत हैं – प्रथम कारण यह है कि महर्षि वाल्मीकि के अनुसार यहां स्थित "कामदगिरि" अनेक धातुओं से विभूषित है, जिसके संयोग से इस

शिखर (कामदगिरि) की प्रस्तर शिलाएं विचित्रताओं की प्रतीक सी बन गयी है। इस प्रकार 'चित्रमय कूट' (पर्वत) के कारण ही यह क्षेत्र चित्रकूट कहलाया जाने लगा।

दूसरा कारण यह है कि इस भू–भाग में प्रकृति ऐसी अद्‌भुत एवं विचित्र है, जो स्वयं 'मनोहर चित्र' सदृश बन गयी है। यहाँ की प्रकृति 'सुषमा की मनोहर झाँकी' है जो मूर्तिमय चित्र की भाँति प्रतीत होती है। सम्भवतः इन्ही कारणों से इसे 'चित्रकूट' कहा जाने लगा।

चित्रकूटधाम मण्डल बुन्देलखण्ड प्रदेश का एक हिस्सा है अतः इसके इतिहास को जानने के लिए बुन्देलखण्ड प्रदेश के इतिहास पर दृष्टिपात करना समीचीन होगा। मण्डल के ऐतिहासिक कालक्रम पर दृष्टि–पात करने पर पता चलता है कि प्राचीन काल में यह क्षेत्र घने जंगलो से आच्छादित था। यहाँ पर मुख्यतः गोंड, कोल, भील, पुलिन्द, किरात आदि जनजातियाँ निवास करती थी।[2]

जब इस भू–भाग पर आर्य आए तो उन्होंने इन जन जातियों (मौलिक निवासियों) को विन्ध्याचल पर्वत के पहाड़ी क्षेत्रों तथा वनों की ओर खदेड़ दिया। वर्तमान समय में कोल अधिकांशतः मानिकपुर तथा मऊ विकासखण्डों तथा म0प्र0 के कुछ क्षेत्रों में निवास करते है। पौराणिक रीति–रिवाजों के अनुयायी प्रारम्भिक आर्य जो इस क्षेत्र के यमुना व विन्ध्य के मध्य रहते थे, वह 'चेदि' कहलाते थे। इनके कारण ही आर्यों की जीवन शैली बुन्देलखण्ड क्षेत्र में प्रचलित हुई। चेदि साम्राज्य के बाद हस्तिनापुर के कौरव वंश की आठवीं पीढ़ी के वसु का शासन भी इस भूभाग पर रहा। इनकी मृत्यु के बाद चेदिराज्य पर राजा सुबाहु का राज्य स्थापित रहा। कुछ पीढ़ियों के बाद राजा शिशुपाल तथा बाद में उसके पुत्र दृष्टिकेतु ने भी 'चेदि राज्य' की सत्ता संभाली। महाभारत काल में चेदिराज्य को उत्तर भारत के सोलह प्रमुख राज्यों (महाजनपदों) में माना जाता था।[3] इस क्षेत्र में नन्द साम्राज्य के बाद मौर्य साम्राज्य का भी विस्तार रहा है। मौर्यो की पराजय के बाद शुंग शासन आया। पुष्यमित्र शुंग(184–148 ई0पूर्व)के शासन काल में ग्रीक यात्री मेनन्डर के आने के प्रमाण मिलते हैं। हमीरपुर तहसील के 'पचखुरा' व 'सुरौली' गांवो से इस शासन के प्राप्त सिक्के, इस युग के प्रमाण हैं। शुंग के बाद 'कण्व' का शासन हुआ। पहली शताब्दी के अन्त में कनिष्क (78–101 ई0) का शासन स्थापित हुआ।[4] यहाँ नागाओं की एक शाखा भार शिव का शासन भी रहने के प्रमाण मिले हैं।[5] चौथी शताब्दी के मध्यकाल में गुप्त साम्राज्य के अधीन समुद्रगुप्त(321–375ई0)के शासनकाल का संकेत मिलता है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में वर्ष 641–642 ई0 में चीनीयात्री ह्वेनसांग ने भी भ्रमण किया था। उसने इस क्षेत्र को चि–चि–टो नाम से वर्णित किया है।[6] जुझौतिया ब्राम्हणों की बाहुल्यता के कारण इस क्षेत्र को 'जुझौती क्षेत्र' के रुप में भी जाना जाता था।[7] इनके रहन–सहन व रीति– रिवाज हर्षवर्धन के साम्राज्य से प्रभावित थे। महाराज हर्ष की मृत्यु के बाद गहरबार प्रशासको द्वारा बुन्देल खण्ड की सत्ता सम्भालने के प्रमाण प्राप्त होते है। आठवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में कन्नौज के यशस्वी शासक यशोवर्धन ने इस क्षेत्र को अपने अधिकार में कर लिया। इसकी मृत्यु के बाद प्रतिहारों का शासन रहा। प्रतिहार शासक वत्सराज ने अधिकाँश उत्तर भारत को अपने अधिकार में कर लिया था। बाणभट्ट द्वितीय व मिहिरभोज का भी शासन इस भू–भाग पर रहा है।

इसके बाद चन्देल राजाओं का शासन आया। सुप्रसिद्व ब्रिटिश इतिहासकार जनरल कर्निघम ने अपनी पुस्तक 'आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया' में लिखा है कि चन्देल राजकुमारों द्वारा जिस साम्राज्य पर शासन किया गया वह पश्चिम में घसान नदी और पूर्व में विन्ध्य पर्वत श्रंखलाओं के मध्य स्थित है तथा जिसकी उत्तरी सीमा यमुना नदी तथा दक्षिणी सीमा केन नदी तक विस्तृत है।[8] खजुराहो से प्राप्त दो लम्बे अभिलेखों तथा इतिहास वेत्ता श्री आरसी मजूमदार के अनुसार प्रारम्भिक चन्देल राजा

का नाम नन्नुक(831–845 ई0) था। इसके बाद वाक्यति (845–865ई0)का शासन रहा। तृतीय चन्देल शासक जयशक्ति(865–885ई) था, जिसे 'जेजाक' या 'जेजा' भी कहा जाता है।

चन्देलों द्वारा शासित भुक्ति क्षेत्र अथवा राज्य को 'जेजाक भुक्ति' के नाम से जाना जाता था। देववर्मन (1050–1060ई) के कार्यकाल में 'कलचुरियों' ने चन्देलों के साथ युद्ध कर कुछ क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया। देववर्मन के भाई और उत्तराधिकारी कीर्तिवर्मन (1060–1100ई) ने कलचुरी राजा को पराजित कर चन्देल साम्राज्य की विजय पताका का सम्मान बढ़ाया। इस महान राजा ने महोबा में कीरतसागर झील का निर्माण कराया।[10]कीर्तिवर्मन के बाद उसके पुत्र सुलक्षण वर्मन (1100–1115ई) ने सत्ता संभाली । इसके बाद जयवर्मन(1115–1120ई), पृथ्वीवर्मन(1120–1129ई) तथा उसके पुत्र मदनवर्मन(1129–1162ई) ने शासन किया। मदनवर्मन ने महोबा में 'मदन सागर' झील और कुलपहाड़ में 'बेलाताल' का निर्माण कराया। चन्देल साम्राज्य के बीसवें (अन्तिम) प्रतापी राजा शासक राजा 'परमार्दिदेव' (1165से1203ई) जो परमाल के नाम से प्रसिद्व हुए, उन्होनें अजमेर व दिल्ली के शासकों के साथ अनेक लड़ाइयाँ लड़ी, परन्तु दिल्ली के सम्राट पृथ्वीराज चौहान ने सिन्ध तथा पाहुज नदियों के किनारे परमाल को पराजित कर दिया। चन्देलों की इस पराजय के कारण 14वीं शताब्दी तक इस भाग पर मुस्लिम राजाओं को प्रवेश करने का अवसर प्राप्त हो गया तथा 1192 ई0 में मोहम्मद शहाबुद्वीन गोरी ने अपना साम्राज्य स्थापित किया। दिल्ली साम्राज्य के संरक्षण में 'खंगार शासकों' ने इस भाग पर लगभग 80 वर्षों तक शासन किया। 'गढ़कुन्डार' इनकी राजधानी थी। 1257ई0 में खंगार शासक बुन्देल राजपूतों द्वारा पराजित कर दिये गये।

बुन्देल राजपूतों के नाम से इस प्रदेश का नाम बुन्देलखण्ड पड़ा।[11] बुन्देला, सर्वप्रथम बांदा जिले की मऊ तहसील में बसे। इसके पश्चात कालपी तथा कालिंजर तक अपने राज्य का विस्तार किया। 1531ई0 में राजा रूद्रप्रताप सिंह के नेतृत्व में 'ओरछा' को राज्य की राजधानी बनाया गया। धीरे–धीरे बुन्देलों ने अपने साम्राज्य का विस्तार उत्तर में यमुना तथा दक्षिण में नर्मदा तक बढ़ा लिया। रूद्रप्रताप सिंह के पौत्र वीरसिंह देव को मुगल साम्राज्य के सम्मुख झुकना पड़ा। वीर बुन्देला दीवान हरदौल ने ग्वालियर के सूबेदार कुतुब खाँ तथा सेनानायक शाहबाज खां को हिन्दुओं पर अत्याचार करने के कारण ओरछा युद्ध के दौरान मृत्यु के घाट उतार दिया गया। इनके सगे भाई, हरदौल की बढ़ती ख्याति और शक्ति से ईर्ष्या करने लगे तथा मुगलों के परम हितैषी बन गये। द्वितीय वीर बुन्देला शासक चम्पतराय ने मुगल राजाओं को अपनी अदम्य वीरता से परास्त कर दिया, जिससे शक्तिशाली मुगल सेना उस समय बुन्देलखण्ड में अपनें पैर न जमा सकी। इस विजय में बुन्देलखण्ड के पठारी तथा नदियों के किनारे दूर तक फैले बीहड़ क्षेत्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इन बीहड़ भाग में बुन्देल सैनिक अपने को सुरक्षित रखते हुए मुगल सेना पर गुरिल्ला युद्व करते थे। जीवनपर्यन्त विदेशी मुगलों से संघर्ष करते हुए इस बहादुर बुन्देला शासक को अपने ही विश्वासघातियों के कारण 1661ई में अपनी वीरांगना रानी लालकुंवर के साथ आत्माहुति देनी पड़ी।

चम्पतराय के पुत्र छत्रसाल ने भी वीरतापूर्वक अपने साम्राज्य की रक्षा की।[12] मुगल शासक औरंगजेब के छक्के छुड़ाने वाले महाराज छत्रसाल ने बुन्देलखण्ड को 'स्वतन्त्र भू–भाग और सशक्त हिन्दू राज्य' बनाने के लिए अनवरत संघर्ष कर अपनी सीमाओं का विस्तार किया। उनकी राज्य की सीमाओं का वर्णन करते हुए कहा गया है:–

"इत जमुना, उत नर्मदा, इत चम्बल, उत टौंस।
छत्रसाल से लरन की, रही न काहू हौंस ।"

महाराज छत्रसाल के राज्य पर अंतिम मुगल आक्रमण सन् 1728 ई0 में इलाहाबाद के सूबेदार मुहम्मद खां बंगस ने किया था। इस ऐतिहासिक आक्रमण के समय छत्रसाल की आयु 80 वर्ष थी। वर्ष के अन्त में पूरे हमीरपुर में बंगस ने अधिकार कर लिया, जिससे छत्रसाल को 1729 में बाजीराव पेशवा से सहायता लेनी पडी।[13] अचानक मराठा पेशवा बाजीराव प्रथम(1720–1740ई) के आने पर मुहम्मद खान बंगस की विजय यात्रा पराजय में बदल गई। छत्रसाल ने उन्हें राज्य के एक तिहाई भाग के रूप में झॉसी तथा जालौन दे दिए । धीरे–धीरे झॉसी को पेशवा ने ओरछा के राजा से प्राप्त कर अपने अधिकार में कर लिया।[14]

झॅसी की रानी लक्ष्मीबाई जो राजा गंगाधर राव की पत्नी थी, अपने पति की मृत्यु के पश्चात इस साम्राज्य की उत्तराधिकारिणी बनी। स्वतन्त्रता संग्राम की वह प्रथम भारतीय महिला थी, जो 1857 ई0 में स्वतन्त्रता संग्राम में सम्मिलित हुई तथा अंग्रेजी शासन के विरूद्व हथियार उठाए। 5 अप्रैल, 1858 ई0 में झॅसी का किला (जिसे वीरसिंह ने बनवाया था) ,महारानी से अंग्रेज सेनाओं द्वारा छीन लिया गया। रानी के वीरगति प्राप्त हो जाने के पश्चात् धीरे–धीरे बुन्देलखण्ड के सम्पूर्ण भाग पर अंग्रेजों का अधिपत्य हो गया।

इस प्रकार, 13 वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक बुन्देलखण्ड भू–भाग पर बुन्देलों का एक छत्र शासन रहा, परन्तु 18वीं शताब्दी के अन्त में छोटे–छोटे मामलों पर आपसी मतभेदों एवं झगड़ो के कारण उनकी संगठित सैन्य शक्ति विखर गई। परिणाम स्वरूप इस क्षेत्र पर अंग्रेजो का आधिपत्य हो गया।

19वीं शताब्दी में बुन्देलखण्ड का उत्तरी भाग जिसमें झॅसी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर तथा बांदा (वर्तमान समय में बुन्देलखण्ड (उ0प्र0))ब्रिटिश बुन्देलखण्ड कहलाया।[15] दक्षिणी भाग कई टुकड़ों में विभाजित हो गया जो मध्य भारत एजेन्सी के अर्न्तगत आ गया।[16]

चित्रकूट–धाम मण्डल का ऐतिहासिक विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि इस भाग पर कई साम्राज्यों का उत्थान तथा पतन हुआ। चन्देल राजाओं के समय इस मण्डल का कुछ आर्थिक विकास हुआ तथा यह शान्ति व वैभव का समय रहा। बुन्देलराजा एक कुशल सैनिक तथा प्रशासक रहे परन्तु क्षेत्र के आर्थिक विकास की ओर ध्यान नहीं दिया। कृषि कार्यों की उचित व्यवस्था न करने के कारण अकाल बाढ़ तथा सूखा आदि का प्रकोप छाया रहा। देश के इस क्षेत्र के विकास में अंग्रेजों ने काफी योगदान किया। अपने व्यापारिक दृष्टिकोण के कारण उन्होने बेतवा, केन तथा घसान नदियों से नहरें निकाल कर शुष्क क्षेत्रों की सिंचाई की व्यवस्था की। रेलमार्ग तथा पक्की सड़कों का निर्माण करवाया। देश की स्वतन्त्रता के पश्चात इस क्षेत्र में आर्थिक विकास को गति प्रदान करनें हेतु अनेक कार्यक्रम संचालित किये गये। बुन्देलखण्ड विकास निधि के माध्यम से भी इसके पिछड़ेपन को दूर करने के उपाय किये गये है।

आज भी 'चित्रकूट धाम मण्डल' में विकास के लिए 'जैविक' एंव अन्य संसाधनों की उपस्थित होने पर भी उनके उचित विदोहन एंव उपयोग के अभाव के कारण यह क्षेत्र अभी भी अत्यन्त पिछड़ा एंव उपेक्षित है। अतः प्रस्तुत शोध के द्वारा यहाँ के 'जैविक संसाधनों के माध्यम' से आर्थिक विकास को प्रोत्साहन देने हेतु विकास की ठोस रुपरेखा की संरचना की गई है।

CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
LOCATION MAP
2001 - 02
LOCATION OF THE STUDY AREA IN INDIA
STUDY AREA
0 200 400 600 km
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
KURARA
HAMIRPUR
SUMERPUR
JASPURA
SARILA
GOHAND
MUSKARA
MAUDAHA
TINDWARI
BABERU
KAMASIN
RATH
BANDA
PANAWARI
CHARKHARI
KABRAI
BAROKHARKHURD
BISANDA
PAHARI
RAMNAGAR
MAU
KUL PAHAR
MAHUA
ATARRA
CHITRAKUT
MAHOBA
JAITPUR
NARAINI
MANIKPUR
STATE BOUNDARY
DISTRICT BOUNDARY
TAHSIL BOUNDARY
BLOCK BOUNDARY
RIVER
DISTRICT HEADQUARTERS
TAHSIL HEADQUARTERS
BLOCK HEADQUARTERS

FIG. 1.1

1.3 अध्ययनं क्षेत्र (Study Area) :–

मानव एक विवेकशील एंव विकासशील प्राणी है। सतत् विकास हेतु अन्वेषण एंव सर्वेक्षण उसका प्रमुख उद्देश्य रहा है। आदिम अवस्था से अब तक उसने पृथ्वी के बाह्य तथा आन्तरिक रहस्यों को उद्घाटित करने हेतु अनेकानेक प्रयत्न किये हैं। मानव अपने ज्ञान एंव अथक परिश्रम से आज प्रकृति से शासित नहीं, अपितु प्रकृति का शासक बन गया है परन्तु हमारे देश भारत में आज भी कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जो संसाधनों से परिपूर्ण होने पर भी वर्तमान विकास की दौड़ में काफी पीछे हैं। इसका मुख्य कारण है कि उन अविकसित क्षेत्र के विकास की ओर योजनाविदों, वैज्ञानिको, एवं भूगोल–वेत्ताओं का पूरा ध्यान अभीतक इस ओर आकर्षित नहीं हो सका है। *इसी पृष्ठ भूमि में जीवीय संसाधनों को 'आर्थिक विकास का दर्पण' (प्रतिबिम्ब) मानकर क्षेत्रीय विकास की सम्भावनाओं हेतु चित्रकूट धाम मण्डल का चयन किया गया है।*

1.3.1 स्थिति एवं विस्तार :– चित्रकूट– धाम मण्डल के अर्न्तगत बुन्देलखण्ड (उ0 प्र0) का वह भाग सम्मिलित है जिसमें उत्तर प्रदेश के 4 जनपद (1) चित्रकूट (कर्वी) (2) बाँदा (3) हमीरपुर एवं (4) महोबा है जिन्हे चित्रकूट धाम मण्डल के नाम से जाना जाता है। इसका मुख्यालय बांदा में है। इस मण्डल का अक्षांशीय विस्तार 24^0,52' उत्तर से 26^0,7' उत्तर तक तथा देशान्तरीय विस्तार 79^0,17' पूर्व से 81^0,34' पूर्व तक है। (मानचित्र सं–1.1) इसका कुल क्षेत्रफल 14874.60 वर्ग कि0मी0[17] तथा 2001 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 4052050 है।[18] चित्रकूट जनपद का गठन 1997 ई0 में किया गया। जबकि महोबा जनपद का गठन 11 फरवरी, 1995 को हमीरपुर जनपद से पृथक करके किया गया। 30 सितम्बर, 1997 ई0 को इन चार जनपदों को झाँसी मण्डल से पृथक कर इस मण्डल का गठन किया गया है। इस भू–भाग को उत्तर में यमुना नदी, गंगा–यमुना दोआब क्षेत्र के कानपुर देहात, फतेहपुर, कौशाम्बी तथा इलाहाबाद जनपदों से पृथक करती है, जबकि बेतवा और धसान नदियाँ पश्चिम में झाँसी मण्डल से पृथक करती है। विध्यांचल–श्रेणियाँ दक्षिण में म0प्र0 के छतरपुर, पन्ना तथा सतना जनपदों से एंव उत्तर–पूर्व में इलाहाबाद, रीवा(म0प्र0) जनपदों (बघेलखण्ड)से पृथक करती है।

1.3.2 प्रशासनिक संगठन :– चित्रकूट धाम मण्डल का नामकरण हिन्दुओं के प्रसिद्ध तीर्थ चित्रकूट के नाम पर रखा गया है। बाँदा इसका मुख्यालय है। इस मण्डल में चार जिले (i) हमीरपुर (ii)महोबा (iii) बाँदा तथा (iv)चित्रकूट (कर्वी) हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में कुल 13 तहसीलें हैं, जिसमें हमीरपुर जनपद की चार, महोबा की तीन, बांदा की चार तथा चित्रकूट जनपद की दो तहसीलें सम्मिलित है। इस मण्डल में विकासखण्डों की संख्या 24 है। हमीरपुर में सात, महोबा में चार, बांदा में आठ तथा चित्रकूट जनपद में पाँच विकासखण्ड हैं। इस मण्डल में न्याय पंचायतों की संख्या 216 है। हमीरपुर में 59महोबा में 39 बांदा में 71 तथा चित्रकंट जनपद में 47 न्याय पंचायतें हैं। मण्डल में ग्राम पंचायतों की संख्या 1328 है, जिसमें हमीरपुर में 314, महोबा में 247, बाँदा में 437 तथा चित्रकूट जनपद में 330 ग्राम पंचायतें हैं। इस मण्डल में कुल 2491 ग्राम है। आबाद ग्रामों की सेख्या 2130 तथा गैरआबाद ग्रामों की संख्या 361 है। हमीरपुर जनपद मे 626 ग्राम (आबाद ग्राम–491 गैरआबाद ग्राम 135) महोबा जनपद में 521ग्राम (आबाद ग्राम 435, गैर आबाद ग्राम 86) बांदा जनपद में कुल 694 ग्राम (आबाद ग्राम 653,गैर आबाद ग्राम 41) तथा चित्रकूट जनपद में कुल 650 ग्राम (आबाद ग्राम –551, गैर आबाद ग्राम 99) हैं।

निम्नलिखित तालिका चित्रकूट धाम मण्डल के प्रशासनिक ढ़ाँचा को प्रदर्शित करती है–

तालिका सं 0 – 1.1

चित्रकूट धाम मण्डल का प्रशासकीय ढ़ाँचा– वर्ष 2001–02

क्रम सं0	तहसील का नाम	विकास खण्ड का नाम	न्याय पंचायतो की संख्या	ग्राम पंचायतों की संख्या	कुल ग्रामों की संख्या	आबाद ग्रामों की संख्या	गैर आबाद ग्रामों की संख्या
1.	हमीरपुर	कुरारा सुमेरपुर	6 10	35 54	84 108	62 82	22 26
2.	सरीला	सरीला	9	42	84	65	19
3.	राठ	गोहाण्ड राठ	9 8	48 41	88 86	73 63	15 23
4.	मौदहा	मुस्करा मौदहा	7 10	34 60	73 103	57 89	16 14
जनपद हमीरपुर	04	07	59	314	626	491	135
5.	कुलपहाड़	पनवाड़ी जैतपुर	9 9	60 56	146 126	120 104	26 22
6.	चरखारी	चरखारी	8	47	116	85	31
7.	महोबा	करबई	13	84	133	126	7
जनपद महोबा	3	4	39	247	521	435	86
8.	बाँदा	जसपुरा तिंदवारी बड़ोखर खुर्द	6 9 8	30 51 52	45 89 76	45 80 73	0 9 3
9	बबेरु	बबेरु कमासिन	9 8	57 52	84 76	79 75	5 1
10	अतर्रा	विसण्डा महुआ	8 10	47 71	57 133	57 119	0 14
11	नरैनी	नरैनी	13	77	134	125	09
जनपद बांदा	4	8	71	437	694	653	41
12	कर्वी	पहाड़ी कर्वी (चित्रकूट) मानिकपुर	14 11 10	79 94 62	150 168 117	124 152 106	26 16 11
13	मऊ	रामनगर मऊ	5 7	38 57	93 122	71 98	22 24
जनपद चित्रकूट	2	5	47	330	650	551	99
महायोग मण्डल	13	24	216	1328	2491	2130	361

स्रोतः जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें,2002

CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
ADMINISTRATIVE AREAL UNITS
2002
FIG. 1.2
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
KURARA
HAMIRPUR
SUMERPUR
JASPURA
SARILA
GOHAND
MUSKARA
MAUDAHA
TINDWARI
BABERU
KAMASIN
RATH
BANDA
PANAWARI
CHARKHARI
KABRAI
BAROKHARKHURD
MAHUA
BISANDA
PAHARI
RAMNAGAR
KUL PAHAR
MAHOBA
ATARRA
CHITRAKUT
MAU
JAITPUR
NARAINI
MANIKPUR
STATE BOUNDARY
DISTRICT BOUNDARY
TAHSIL BOUNDARY
BLOCK BOUNDARY
RIVER
DISTRICT HEADQUARTERS
TAHSIL HEADQUARTERS
BLOCK HEADQUARTERS

1.4 विषय के सन्दर्भ में अध्ययन क्षेत्र की सार्थकता :–

बुन्देलखण्ड का चित्रकूट सम्भाग प्राकृतिक एवं जैविक संसाधनों से परिपूर्ण एक समृद्धशाली क्षेत्र है किन्तु यहाँ के संसाधनों का व्यापक रुप से उपयोग नहीं हो पाया है। निःसन्देह यह सत्य है कि किसी भी प्राकृतिक सम्पदा को हम संसाधनों की श्रेणी में तभी रख सकते हैं जब उससे मानव की आर्थिक क्रियाओं की पूर्ति हो। यहाँ कई ऐसे क्षेत्र हैं जो विपुल मात्रा में प्राकृतिक संपदा अपने में समेटे हुए है, किन्तु आज भी वे आर्थिक तंत्र का हिस्सा नहीं बन पाये है। किसी भी क्षेत्र का वास्तविक आर्थिक विकास तभी सम्भव है जब वह स्थानीय संसाधनों का प्रयोग करते हुये विकास मापदण्ड को पूरा करे। इस प्रकार जबतक किसी भी क्षेत्र या प्रदेश की सम्पदा का उपयोग मानवीय आवश्यकताओ की पूर्ति में सहयोग नहीं प्रदान करता है, तब तक उसे संसाधनों की श्रेणी में सम्मिलित नहीं किया जाता है।

चित्रकूटधाम मण्डल एक ऐसा भू–भाग है, जहाँ प्राकृतिक वनस्पति, पशु–सम्पदा एवं कृषि उपजों का पर्याप्त भण्डार है। यदि उनका समुचित उपयोग क्षेत्रीय आर्थिक विकास में किया जाय तो एक ओर क्षेत्रीय आर्थिक विकास होगा, तो दूसरी ओर इस पिछड़े हुए क्षेत्र में व्यक्तियो को आत्म निर्भर बनने का अवसर भी प्राप्त होगा।

1.5 अध्ययन का उद्देश्य :–

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्थित चित्रकूटधाम मण्डल भारत के अन्तः स्थल में विद्यमान है, परन्तु भौगोलिक प्रतिकूलता एवं सरकारी उदासीनता के परिणाम स्वरुप आज भी पिछड़ा हुआ है। प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण चित्रकूटधाम मण्डल का विकास स्थानीय संसाधनों को दृष्टिगत रखते हुए उद्योगों के विकास के माध्यम से ही संभव है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नाकिंत उद्देश्य समाहित किये गये हैं :–

1. संसाधनों की संकल्पना प्रस्तुत करते हुए जैविक संसाधनों का मूल्यांकन प्रतिपादित करना।
2. अध्ययन क्षेत्र में प्राप्त जैविक संसाधनों के अर्न्तगत वन, पशु एवं कृषि सम्पदा का वास्तविक मूल्याँकन करना।
3. जैविक संसाधनों को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।
4. औद्योगिक विकास हेतु यातायात जाल एंव अन्य अवसंरचनात्मक सुविधाओं जैसे बाजार, ऊर्जा आदि का पहचान करना।
5. औद्योगिक विकास के मार्ग में पड़नें वाली बाधाओं का अध्ययन करना।
6. अध्ययन क्षेत्र में एक ऐसा शाश्वत् आर्थिक विकास की रुपरेखा प्रस्तुत करना जो अक्षुण्ण हो एंव पर्यावरणीय दशाओं के भी अनुकूल हो।
7. अन्त में इस अध्ययन क्षेत्र का उद्देश्य एक ऐसी योजना निर्मित करना हे जो औद्योगिक विकास हेतु सार्थक हो। इस हेतु समस्त अध्ययन क्षेत्र में विकास केन्द्रों एंव सेवा केन्द्रों की पहचान करना है,जो स्थानीय संसाधनों से परिपूर्ण हो जिनके माध्यम से आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। *(It aims to provide a plan of Industrial growth points to in fuse and accelerate industrial development in the region by creating the suggested the industries at those points)*

1.6 विधितन्त्र (Methodology) :–

जैविक संसाधनों का अध्ययन एक दुरूह एंव उद्देश्य परक विषय है। इस हेतु प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक एंव द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित होगा। ये आकड़े मुख्यतः संसाधन उत्पादन क्षेत्रों में स्थित प्रशासनिक क्षेत्रों, जनपद मुख्यालयों, विभिन्न प्रकाशकों एंव शोध संसथाओं के माध्यम से प्राप्त किये गये हैं। जिन क्षेत्रों एंव' संसाधनों की वास्तविक सूचनाएं द्वितीयक स्रोतो से उपलब्ध न हो सकी है, उसके लिए प्राथमिक आँकड़ों को सृजित किया गया है। इस हेतु क्षेत्र का सर्वेक्षण एंव प्रश्नावली विधि का भी सहारा लिया गया है, तदुपरान्त इन प्राथमिक एंव द्वितीयक आंकड़ों को आवश्यकतानुसार वर्गीकरण कर उपयुक्त सरल आरेखों, मानचित्रों एंव सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग के माध्यम से किया गया है। फोटोग्राफी तकनीक एंव साक्षात्कार पद्धति का भी सहारा लिया गया है।

1.7 परिकल्पना (Hypothesis) :–

यह शोध निम्नांकित परिकल्पनाओं पर आधारित है:–

1. स्वतन्त्रता प्राप्ति के कई दशक बाद भी इस क्षेत्र में अभी भी विकास की किरणें नहीं पहुँच सकी हैं। आज भी इस क्षेत्र में आदिम जनजातियाँ निवास करती हैं, जिनका मुख्य उद्यम वनों से लकड़ी काटना, वनोंपज एकत्रित करना एंव उनका विक्रय करना मुख्य व्यवसाय है।
2. अध्ययन क्षेत्र में जैविक संसाधनों के भण्डार (Store) को ज्ञात करना।
3. अध्ययन क्षेत्र में अनेक जैविक संसाधनों के भण्डार है, परन्तु उनका वास्तविक उपयोग एंव उपभोग नहीं हो पा रहा है। ऐसे संसाधनों की पहचान करना तथा उनके विकास हेतु रुपरेखा प्रस्तुत करना।
4. उत्तर प्रदेश के इस पिछड़े क्षेत्र में रोजगार की सम्भावनाओं को तलाश करना।
5. पूर्णतः सुनियोजित आर्थिक विकास के माध्यम से ऐसे केन्द्रों का चयन करना जो औद्योगिक विकास के मार्ग को प्रशस्त कर सकें।
6. ग्रामीण औद्योगीकरण आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है, अतः विविध लघु,मध्यम एंव कुटीर उद्योगों के माध्यम से स्थानीय संसाधनों का प्रयोग करते हुए आर्थिक विकास का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।
7. इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र के संतुलित विकास हेतु स्थानीय स्तर पर प्राप्त जीवीय संसाधनों की अतिरिक्त मात्रा को ध्यान में रखते हुए कुछ अतिरिक्त विकास केन्द्रों की स्थापना करना, जिससे आर्थिक विकास की गति तीव्र हो सके एंव अधिक से अधिक लोगों को रोजगार मिल सके। अतः इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में सुझाए गये विकास केन्द्र समस्त क्षेत्र में प्रकाश स्तम्भ का कार्य करने में समर्थ होंगे।

   These industrial growth points will work as a Switch Board to infuse energy for the industrial growth of the region. the invigourating of these growth points will bring a balanced regional development by generating employment opportunities insuggested small scale and house hold industries based on local materials.

1.8 पूर्व साहित्य का पुनरावलोकन :–

जैविक संसाधनों के माध्यम से औद्योगिक विकास का अध्ययन चित्रकूट धाम मण्डल में अभी बहुत कम किया गया है, यद्यपि वन, पशु सम्पदा एंव कृषि संसाधनों का अध्ययन पृथक–पृथक कई

जगह उपलब्ध है। यद्यपि अध्ययन क्षेत्र में जैविक संसाधन पर्याप्त मात्रा में हैं, किन्तु उनका उपयोग औद्योगिक विकास हेतु अत्यन्त अल्प है। 1958 में *सेन गुप्ता*[19] ने पश्चिमी बंगाल के हुगली प्रदेश के औद्योगिक विकास की रुपरेखा प्रस्तुत की। *एस. एल. गुप्ता*[20] ने 1967 में फरीदाबाद के औद्योगिक विकास के सम्बन्ध में अपनें विचार प्रस्तुत किए, उन्होनें औद्योगिक विकास के सम्बन्ध में अनेक समस्याओं का उल्लेख किया, जिसमें श्रमिकों की कमी, ऊर्जा की कम आपूर्ति, रुग्ण यातायात आदि बातों का उल्लेख किया। *श्री० ओ० पी० भारद्वाज*[21] ने *The industrial Growth of punJab* में *महामाया मुखर्जी*[22] नें *Aspect of recent industrialization in chhotanagpur*. *आर० पी० सिन्हा*[23] ने *Growth of industries in Bihar* में अपनें मत प्रस्तुत किए। 1936 में *पी० एस० लोकनाथन्*[24] ने *Recent trends in the distribution of cotton mill industry in India* नामक शीर्षक में उद्योगों के अवस्थापना के अनेक पक्षों को प्रस्तुत किया। जिसमें यातायात मूल्य *Transportation cost* को अधिक महत्व दिया गया। 1971 में *अरुण गुप्ता*[25] ने *Silk industry of Varanasi* नामक शोध पत्र प्रस्तुत किया। जिसमें वाराणसी में सिल्क उद्योग की उत्पत्ति वृद्वि एंव उसकी संरचना पर प्रकाश डाला गया। 1961 में *आर० एन० तिवारी*[26] ने *Location of sugar mill* नामक शीर्षक से गन्ना मिलों की स्थापना में पूँजी, माल, परिवहन दूरी आदि बातों का उल्लेख किया। *डॉ० राव*[27] ने *Cottage industries of Malabar* में कुटीर उद्योगों की स्थापना में आने वाली समस्याओं का उल्लेख किया। इसी प्रकार *रंगप्पा*[28] नें *Some aspects of small and cottage industries in maysore state* में लघु–स्तरीय एंव कुटीर उद्योगों को सम्मिलित करते हुए विशेषतः हथकरघा एंव खादी उद्योग के सम्बन्ध में अपने मत प्रस्तुत किए।1967 में *सी० बी० तिवारी*[29] ने *Prospects of small scale industries in estern Uttar Pradesh* में लघु उद्योग में नवीन प्रवृत्तियों का उल्लेख किया। उन्होनें स्थानीय स्तर पर प्राप्त कच्चे माल पर आधारित माल पर आधारित उद्योगों पर विशेष बल दिया। *कानन चक्रवती*[30] ने भारतीय प्रकरण में सूती वस्त्र उद्योग की अवस्थिति के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत किए। *वसु*[31] (1961) ने प० बंगाल की जूट मिल की समस्याओं का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया *आर० पी० सिन्हा* और *अनिल कुमार*[32] ने भागलपुर तथा मुर्शिदाबाद के सिल्क उद्योग का अध्ययन किया। *दयाल*[33](1968) ने भारत में चीनी मिलों के विकास मे सहायक दीर्घ प्रवृत्तियों का अध्ययन किया। उन्होनें मिलों की मुख्य समस्याओं, जैसे गन्ने की अनियमित पूर्ति, न्यून कृषि क्षेत्र, निम्न शर्करा और पेराई का अल्पकालीन मौसम आदि को सूचीबद्व किया। *दीक्षित*[34] (1963) ने भारत की कागज की मिलों के विकास को चिन्हित किया।उन्होनें इसके कारखानों की स्थिति, कच्चे माल की आपूर्ति के निर्धारण का विश्लेषण किया। *मजीद*[35] (1968) ने बिहार में चीनी उद्योग की समस्याओं का उल्लेख किया। *के० वी० रेड्डी*[36] ने तेलगांना में औद्योगिक जागीरों का अध्ययन किया और उन्होने उनके मुख्य उद्देश्यों और प्रकारों का विश्लेषण किया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अनेक भारतीय भूगोल वेत्ताओं नें अनेक शीर्षकों के माध्यम से विविध संसाधनों का अध्ययन किया है किन्तु अध्ययन क्षेत्र की आवश्यकता इस बात की है कि यहाँ ऐसे औद्योगिक विकास की रुपरेखा सृजित की जाए जो स्थानीय जैवीय संसाधनों पर आश्रित हो एंव पर्यावरणीय परिदृश्य को सामने रखकर तैयार की गई हो, जो शाश्वत सनातन, चिरस्थाई एंव सुदृढ़ हो।

1.9 अध्याय–आयोजन :–

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध कुल ग्यारह अध्यायों में विभक्त है, जिसमें प्रथम-अध्याय के अर्न्तगत क्षेत्र का सामान्य परिचय, स्थिति–विस्तार, अध्ययन–उद्देश्य, विधितंत्र परिकल्पना एवं पूर्व साहित्य की समीक्षा आदि का उल्लेख किया गया है, जब कि द्वितीय अध्याय दो खण्डों में विभाजित है, जिसमे प्रथम खण्ड में क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि तथा द्वितीय खण्ड सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धित है। भौगोलिक

पृष्ठभूमि के अर्न्तगत, भूगर्भ संरचना, धरातल, जलप्रवाह प्रणाली, वनस्पति, मृदा आदि तथ्यों का उल्लेख किया गया है, जबकि सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अर्न्तगत मण्डल की जनसंख्या, तथ्यों का विश्लेषण किया गया है। तृतीय अध्याय जैवीय संसाधनों के संकल्पनात्मक पक्ष को प्रस्तुत करता है। जिसमें जीवीय संसाधनों के विविध पहलुओं को स्पर्श किया गया है। अध्याय चार, पांच एंव छः क्रमशः वन–संसाधन, पशु–संसाधन एंव कृषि–संसाधन से सम्बन्धित है, जिसमें इन संसाधनों की वर्तमान स्थिति, रोजगार, उत्पादन मुख्य स्रोतों का उल्लेख किया गया है, जबकि अध्याय सात के अर्न्तगत क्षेत्र में विद्यमान अवसंरचनात्मक सुविधाऐं जैसे – रेल, सड़क संचार, ऊर्जा आदि का विवरण प्रस्तुत करता है। अध्याय आठ नौ एवं दस में क्रमशः वन, पशु एंव कृषि आधारित उद्योग धन्धों का विवरण, कच्चे माल की उपलब्धि, रोजगार, उत्पादन, प्रबन्धन से सम्बन्धित है। अन्तिम अध्याय के अर्न्तगत क्षेत्र के आर्थिक विकास के लिए नियोजन की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए नवीन औद्योगिक इकाईयों को स्थापना हेतु सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं।

–: सन्दर्भ :–

(1) वाल्मीकि रामायण, अयोध्या काण्ड, LVI, 1-18

(2) *अटकिंशन, ई0 टी0.* : स्टैटिस्टिकल, डिसक्रिप्टिव एण्ड हिस्टॉरिकल एकाउन्टस ऑफ नार्थ वेस्टर्न प्राविन्स, वाल्यूम 'I'इलाहाबाद,1874.पृ01–19

(3) *मजूमदार, आर0 सी0* : (संस्करण) 'दि एज ऑफ इम्पी रियल यूनिटी' वाल्यूम II, भरतीय विधान भवन, बाम्बे, 1953 पृष्ठ XIX.217

(4) महाजन, *वी. डी.* : 'एन्सियेन्ट इण्डिया', 1990, पृ0 –439

(5) आर्क रिपोर्ट, वाल्यूम-II कलकत्ता 1855.पृ0 308,309

(6) पश्चिमी संसार का वर्णन – ह्वेनसांग

(7) *कनिंघम* : 'एन्सियेन्ट ज्याग्रफी ऑफ इण्डिया, वाल्यूम I लन्दन, 1963, पृ0405–407

(8) आर्कियोलॉजिल सर्वे ऑफ इण्डिया जनरल ए. कनिंघम

(9) एनसियेन्ट इण्डिया – आर.सी.मजूमदार दिल्ली 1984

(10) *महाजन, वी.डी.* : 'एनसियेन्ट इण्डिया', 1990, पृष्ठ 646

(11) गर्वनमेन्ट पब्लिकेशन, 'नार्थ–वेस्टर्न प्राविन्सेस एण्ड अवध डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स' (बुन्देलखण्ड), भाग 1. पृष्ठ 1874–86

(12) *गुप्ता, बी. डी.* : 'महाराज 'छत्रसाल 'बुन्देला, आगरा 1958, पृ0 23–28

(13) गर्वनमेन्ट पब्लीकेशन, 'दि इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया' IX आक्सफोर्ड 1908, पृ068

(14) *ब्रोकमैन, डी0 एल0* : 'डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ झॉसी' वॉल्यूम XXIV 1909, पृ0, 270

(15) इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया वॉल्यूम IX 1908, पृ0, 68

(16) आइविड, पृ017–76

(17) सांख्यकीय पात्रिका हमीरपुर, महोबा, बाँदा तथा चित्रकूट जनपद, 2002

(18) *सिंह, पी0 के0* : 'जनसंख्या एवं नगरीकरण', पृ0 55

(19) *सेन गुप्ता,* : "सम आस्पेक्टस आफ इन्डस्ट्रियल ग्रोथ आफ हुगली रीजन", नेशनल ज्याग्राफिकल जर्नल आफ इन्डिया, वाराणसी 4(1), 1958

(20) *गुप्ता एस0 एल0* : 'फरीदाबाद – 'ए स्टडी इन इन्डस्ट्रियल ग्रोथ'', नेशनल ज्याग्राफिकल जर्नल आफ इन्डिया, वाराणसी 41 (1–2), 1967

(21) *भारद्वाज ओ0 पी0 :* 'द इन्डस्ट्रियल ग्रोथ आफ पंजाब सिन्ध 1947', एबस्ट्रक्टस आफ पेपर्स आफ 21 स्ट. इटरनेशनल ज्याग्राफिकल यूनियन काग्रेस, न्यू देलही 1958।

(22) *मुखर्जी महामाया,* : 'एस्पेक्टस आफ रीसेन्ट इन्डस्ट्रियलाइजेशन इन छोटा नागपुर', एन0 जी0 जे0 आई0, वाराणसी, वॉल्यूम XVI, No. 2 (1970), पृ0 101-109।

(23) *सिन्हा आर0 पी0,* : 'ग्रोथ आफ इन्डस्ट्रीज इन बिहार', एबस्ट्रक्टस आफ पेपर्स आफ 21 स्ट. इटरनेशनल ज्योग्राफिकल यूनियन काग्रेस, न्यू डेलही, 1968.

(24) *लोकनाथन, पी.एस.,* : 'रीसेन्ट ट्रेन्डस इन द डिस्ट्रीब्युसन ऑफ कॉटन मिल इन्डस्ट्री इन इण्डिया'। वॉल्यूम II(3), 1936

(25) *गुप्ता' ए0,* : 'सिल्क इन्डस्ट्री ऑफ वाराणसी' इंडियन ज्यॉग्रफी जे. एल. मद्रास वॉल्यूम XLVI नं0 182 (1971), पृ0 25–23।

(26) *तिवारी, आर.एन.* : लोकेशन ऑफ सुगर मिल द नेशनल ज्याग्राफर, इलाहाबाद वाल्यूम 4,1961

(27) *राव, आर0 एस0* : कॉटेज इंडस्ट्री ऑफ मालाबार जर्नरल ऑफ द मद्रास वाल्यूम, 7 (38, 4) 1932

(28) *रंगप्पा के0* : 'सम एस्पेक्टस ऑफ स्माल स्केल एण्ड कॉटेज इन्डस्ट्रीज ऑफ इन मैसूर स्टेट. ज्याग्रॉफिकल रिव्यू आफ इण्डिया, कलकत्ता वाल्यूम 19(3),1957.

(29) *तिवारी, सी0 बी0* : प्रासपेक्टस आफ स्माल स्केल इन्डस्ट्रीज इन ईस्टर्न उत्तरप्रदेश, ज्याग्राफिकल थाट .(1)1967.

(30) *चक्रवर्ती के0 ए0* : स्टडी आफ काटन टेक्सटाइल इन्डस्ट्री आफ वेस्टइन बंगाल इन इण्यिन कान्टेक्टस ज्याग्र.रिव्यू आफ इण्डिया, कलकत्ता वाल्यूम XXXVI 104(1947)पृ0 333–342

(31) *बसु, एम0* : रीसेन्ट प्राब्लम्स फैसिंग द जूट इन्डस्स्रीज इन वेस्ट बंगाल आब्जर्वर वाल्यूम नं01961.

(32) *सिन्हा आर0 पी0* एण्ड *अनिल कुमार* : सिल्क इन्डस्ट्री इन भागलपुर दकन ज्यॉग्राफर वाल्यूम XI 102 (1971)पृ0205–216

(33) *दयाल पी0* : सुगर इन्डस्ट्रीज इन इण्डिया एब्स्ट्रेक्टस ऑफ पेपर्स आफ 21स्ट इन्टरनेशनल ज्याग्राफिकल यूनियन कांगेस न्यू डेलही,–1968.

(34) *दीक्षित के0 आर0* : ग्रोथ एण्ड डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ इन्डियन पेपर इन्डस्ट्री ,एन.जी.जे0 आई0 वाराणसी वाल्युम, 9 (3 & 4) 1963

(35) *मजीद, एस0 ए0* : 'सुगर इन्डस्ट्री इन बिहार एब्स्ट्रेक्ट्स ऑफ पेपर्स आफ द 21 स्ट इन्टरनेशनल ज्यॉग्राफिकल यूनियन कांग्रेस, न्यू डेलही, 1968

(36) *रेड्डी के0 विशाल* : इन्डस्ट्रियल इस्टेट्स इन तेलंगाना दकन ज्याग्राफर वाल्यूम X नं01 (1969) पृ0 56–64

अध्याय - 2

2-A – अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि

(Physical Background of the Study Area)

2-A-(i) भूगर्भ संरचना (Geological Structure)

प्रत्येक देश के भौगोलिक स्वरुप के निर्धारण में वहां की भू–वैज्ञानिक दशाओं एंव भू संरचना का महत्वपूर्ण स्थान होता है।[1] चित्रकूट धाम मण्डल, बुन्देलखण्ड के पूर्वी भाग में, गंगा – सतलज मैदान तथा दक्षिण के लावा प्रदेश के मध्य भाग में स्थित है। इस भाग में प्राचीनतम और नवीनतम दोनों प्रकार की चट्टानें पायी जाती है, जो संरचनात्मक दृष्टिकोण से परस्पर भिन्न हैं, इस भू–भाग की संरचना को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है– (मानचित्र 2-A-1)

(1) आर्कियन क्रम के ग्रेनाइट व नीस के क्षेत्र

(2) विन्ध्यन पर्वत क्रम,

(3) नवीन निक्षेप

मण्डल के भूतत्व एंव संरचना के इतिहास को इस प्रकार समझा जा सकता है:–

तालिका सं 2-A-1

चित्रकूट धाम मण्डल के भूतत्व एंव संरचना का इतिहास[2]

कलप	युग	अवधि	भू–भाग की रचना
निर्जीवकल्प उषःकाल या (आर्कियनरश)	पूर्व कैम्ब्रियन युग	120 करोड़ वर्ष पूर्व	चारकोनाइट श्रेणी बुन्देलखण्ड नीस तथा ग्रेनाइट
प्रथम जीवकल्प (पैलियोजोइक)	कैम्ब्रियन युग		(i) विन्ध्यन क्रम ऊपरी भाग–भांडर क्रम रीवा क्रम एवं कैमूर क्रम (ii) कुडप्पा क्रम निचलाभाग–बिजावर श्रेणी एवं ग्वालियर श्रेणी
चतुर्थ जीव कल्प	प्रतिनूतनकाल (प्लीस्टोसीन)	10 लाख वर्ष पूर्व	प्राचीन कॉप– सिन्धु गंगा के बांगर भागों के जमाव
	आधुनिक काल	25 हजार वर्ष पूर्व	नवीन कॉप– सिन्धु–गंगा के खादर के जमाव

FIG.2A-1
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
GEOLOGICAL STRUCTURE
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
N
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26°
N
30'
25°
24°
30'
N
PLEISTOCENE OR RECENT
ARCHAEN GRANITE AND GNEISES
VINDHYAN KAIMUR LIME STONE
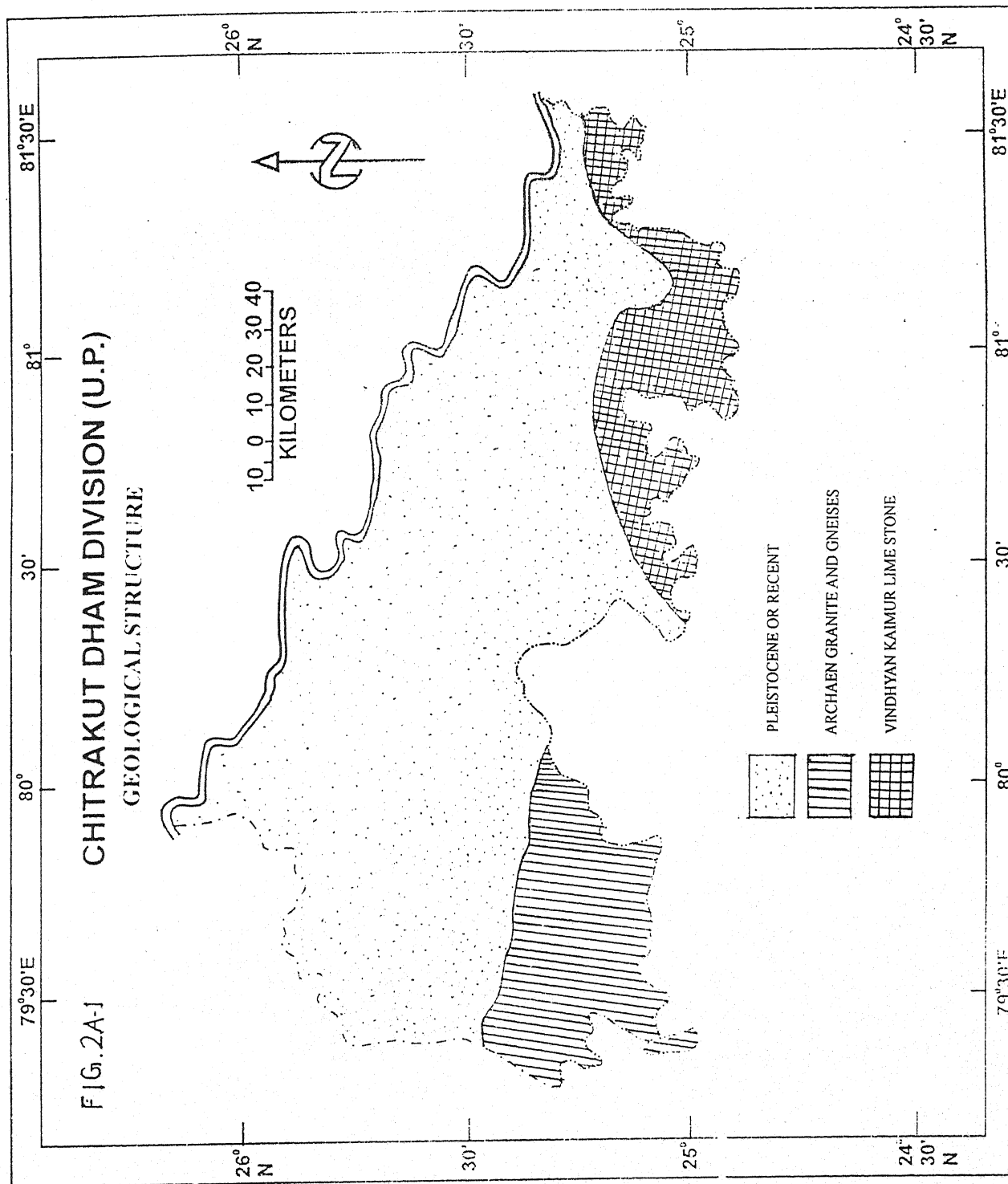
(1) **आर्कियन क्रम के ग्रेनाइट व नीस क्षेत्र** :– इस क्रम की चटटानों में आग्नेय और रुपान्तरित चट्टानें पायी जाती हैं। ग्रेनाइट और नीस इस क्रम की प्रमुख चट्टानें हैं। डी0 एन0 वाडिया के अनुसार बुन्देलखण्ड प्रदेश की ये चट्टानें पृथ्वी की प्रचीनतम चट्टानों में से हैं।[5] झिंगारन का मत है कि ये चट्टानें 130 करोड़ वर्ष पुरानी है। वी0एस0 दुबे ने बुन्देलखण्ड ग्रेनाइट की आयु 230 करोंड़ वर्ष बताया हैं। इससे स्पष्ट है कि बुन्देलखण्ड ग्रेनाइट और नीस की सही आयु कुछ भी हो पर इतना निश्चित है कि *'ये चट्टानें पृथ्वी की प्रचीनतम चट्टानों में से हैं।'* बुन्देलखण्ड का यह भू– भाग आर्कियन या निर्जीवकल्प के उषःकाल या पूर्व कैम्ब्रियन युग का है, जिसे बुन्देलखण्ड मैसिफ नाम से सम्बोधित करते हैं। इसमें ग्रेनाइट चट्टानों की प्रधानता है।

'बुन्देलखण्ड मैसिफ' की चटटानों की उत्पत्ति के विषय में अभी तक पूर्णरूपेण ज्ञात नहीं हो सका है। [3] इन चट्टानों की संरचना विवादस्पद है। कुछ विद्धानो के विचार इस प्रकार है– आर0सी0मिश्रा, एम0एन0सक्सेना तथा सूडे के अनुसार बुन्देलखण्ड मैसिफ की उत्पत्ति Plutonic Hypothesis. के द्वारा नहीं समझी जा सकती है, जो कि ग्रेनाइट की उत्पत्ति के विषय में मानी जाती है कि भूपृष्ठ के ऊपर विस्फोट से निकले मैग्मा के ठण्डे होकर जमा होने से इन चट्टानों की उत्पत्ति हुई है। इन चट्टानों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में 'पुनः स्थापन सिद्दान्त' (Replacement theory) यहां पर लागू होता है जिसके अनुसार ग्रेनाइट के उत्पत्ति की प्रकिया गैर व आग्नेय पदार्थ के पुनः स्थापन (Crystal by Crystal by hydrothermal effects) के कारण हुई। [4] बेतवा बेसिन[5] के भूगर्भीय सर्वेक्षण के द्वारा स्पष्ट होता है कि ग्रेनाइट के कणों की संरचना तथा मिश्रण अन्य किस्मों से भिन्न है।[5]

(1) डी0एन0वाडिया ने अपनी पुस्तक में ग्रेनाइट की उत्पत्ति को विवास्पद बताते हुए उसकी रचना के कई रुपों का उल्लेख किया है।[6]

(2) कुछ विद्वानों का विश्वास है कि सामुद्रिक तलछट के जमा होने के बाद तापक्रम तथा दबाव के कारण वह तलछट रुपान्तरित हो गये और चटट्ानो की उत्पत्ति हुई।

(3) कुछ विद्वानों का विश्वास है कि बड़े भूसंचलनों या दबाव के अर्न्तगत बड़ी मात्रा में प्लूटॉनिक आग्नेय समूह के रुपान्तरित हो जाने से इन चट्टानों का जन्म हुआ है।

बुन्देलखण्ड ग्रेनाइट तथा नीस चटटानों की संरचना तथा मिश्रण :– बुन्देलखण्ड के इस भूभाग में कई रंग की ग्रेनाइट चटटानें पायी जाती है, जिसमें बड़े रवे वाली फेल्सपार मिश्रित गुलाबी रंग की ग्रेनाइट चट्टानों की प्रधानता है। भूरे रंग की ग्रेनाइट भी पायी जाती है। इन चट्टानों में अनेक खनिज जैसे फेल्सपार, अभ्रक, लाल आर्थोक्लेज पाये जाते हैं। ग्रेनाइट चट्टानों में अन्य चट्टानों का भी समावेश है, जैसे शिष्ट, क्वार्टजाइट आदि।

कृष्णन[7] ने बुन्देलखण्ड में ग्रेनाइट नीस का विस्तार लगभग 320 किमी. लम्बा तथा 200 किमी. चौड़ा बताया है। ये चट्टानें संरचना तथा खनिजों के मिश्रण में पृथक की जा सकती है।

इन चट्टानों से मोटी रवे वाली चट्टानों में फैरोमैंगनीज खनिज की अधिकता है। नीस चट्टानों की रचना में लाल आर्थोक्लेज, फेलस्पार, सफेद रंग की पेंप्लैजियो, क्लेस्टिक फेलस्पार, औलिगोक्लेज, क्वार्टर, हौर्न ब्लैण्ड , क्लोराइड तथा अभ्रक खनिजों का मिश्रण रहता है। कहीं–कही' नीस के साथ केवल दो खनिज या केवल एक ही खनिज पदार्थ सम्मिलित रहता है। आर्थोक्लेज चट्टानें संयुक्त रुप से फैली रहती हैं। ये चट्टानें हार्ड–ब्लैडिक रहते हुए भी कहीं–कहीं पूर्ण रुपेण क्लोराइट अभ्रक अथवा अभ्रक के रुप में स्थित हैं।

इस भू–भाग में पाई जाने वाली चटटानों की संरचना निम्न प्रकार से है।[8]

(1) क्वार्टज –24% से 36%
(2) प्लैजियोक्लेज –21% से 36.36%
(3) पोटाश फेल्सफर – 6% से 23.21%
(4) पेरथाइट – 1.15% से 23.5%

ग्रेनाइट तथा नीस चटटानों का वितरण :– चित्रकूट धाम मण्डल में ग्रेनाइट व नीस चटटानों का वितरण एक ही साथ हुआ है क्योंकि भौगर्भिक सर्वेक्षण के आधार पर भी इन दोनों का अलग–अलग वितरण सुनिश्चित नहीं किया जा सकता है।

जिन लोगों ने बुन्देलखण्ड का सर्वेक्षण किया है वे स्पष्ट रुप से इन दोनों का वितरण निश्चित नहीं कर सके हैं। इन शैलों का विस्तार महोबा तथा बाँदा जनपद के दक्षिणी भाग में पाया जाता है। हमीरपुर तथा चित्रकूट जनपद में यत्र–तत्र छोटी–2 पहाड़ियों के रुप में ये चट्टानें देखने को मिलती हैं।

विन्ध्यन पठार के उत्तर की ओर बुन्देलखण्ड नीस का एक अर्धवृत्ताकार क्षेत्र फैला हुआ हैं। उत्तर पूर्व सीमा की ओर लगभग 329 कि0मी0 तक ये नीस की चट्टानें गंगा नदी की मिट्टी के निक्षेप से दब गयी है। इनका क्षेत्र महोबा जनपद में कुलपहाड़ एवं बाँदा जनपद में केन नदी की घाटी है। इन नीस की चट्टानों से या तो पहाड़ी भागों का निर्माण हुआ है या गुम्बदाकार पहाड़ियाँ बनी है। कहीं–कहीं गहरी घाटियाँ या संकरी खड़ी भूमि का भी निर्माण हुआ है।

कर्वी नामक स्थान से 16 कि0मी0 उत्तर तथा उत्तर पूर्व में जो 'कपना–इटौरा' के पास छोटी–छोटी पहाड़ियाँ हैं, उनकी संरचना में मोटे लाल रंग की फेलस्पर नीस के साथ चितकबरे काले एवं भूरे रंग की क्वार्टज की चट्टानें मुख्य हैं। ये चट्टानें बहुत कम क्षेत्र को घेरे हुए हैं। नीस की चट्टानों के साथ पिगनेटाइट की पर्ते भी सम्मिलित हैं तथा लाल फेलस्पर तथा क्वार्टज खनिज की महीन पर्त का आवरण इन चट्टानों पर परिलक्षित होता है।

कर्वी से दक्षिण की ओर हार्न ब्लैण्डिक शिष्ट चट्टानें मुख्य हैं। नवगाँव से 8 कि.मी दक्षिण–पूर्व की ओर नीस के साथ हल्के पीले रंग की फेलस्पर की रवेदार चट्टानों तथा हरे रंग के फेलस्पर तथा क्लोराइट चट्टानों का मिश्रण हुआ हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में नीस की प्रत्यक्ष स्तृतीकृत चट्टानें घसान नदी के समीप दिखाई देती हैं। बुन्देलखण्ड नीस क्षेत्र के दक्षिणी भाग को छोड़कर अन्य सभी क्षेत्रों में क्वार्टज की चट्टानें महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। मऊ नामक स्थान से लगभग दो समानान्तर श्रेणियाँ पश्चिम से 20^{0} उत्तर की तरफ फैली हुई हैं। कालिंजर के समीप काले रंग की सर्पिनटाइन खनिज की अधिकता है। नीस वाले क्षेत्रों में डाइक और सिल्क पाये जाते हैं।

आर्कियन क्रम की इन शैलों का अत्यधिक आर्थिक महत्व है। इन चट्टानों के टुकड़ों को सड़क रेल–यातायात और मकान निर्माण आदि कार्यों में प्रयोग किया जाता है। शैल युक्त क्वार्टज शिस्ट की चट्टानों को काटकर चक्कियाँ बनायी जाती हैं एवं पोरफिरिटिक ग्रेनाइटोइड नीस चट्टानों से काटकर स्तम्भ बनाए जाते हैं।

2. विन्ध्यन क्रम :– विन्ध्यन क्रम की रचना विन्ध्यन सागर के भरनें से हुई है।[9] कबीर (Kabir) गजेटियर ऑफ इण्डिया के अनुसार अल्गोन्कियन युग में लगभग 60 से 70 करोड़ वर्ष पूर्व 'विन्ध्यन पर्वतों' के स्थान में एक भू–सन्नति विद्यमान थी, जिसे 'विन्ध्यन सी' कहा गया। इस विन्ध्यन सागर में अरावली पर्वतों से प्राप्त पदार्थ जमा होता रहा है। कालान्तर में भूगर्भिक क्रियायों के फलस्वरुप

यह तलछटीय पदार्थ विन्ध्यन पर्वतों के रुप में उठ गया। इन पर्वतों में बालुका–प्रस्तर, चूना पत्थर और शैल चट्टानें नायी जाती हैं।

विन्ध्यन निक्षेप इस भाग को सागर के गर्त से भू–भाग तक बनाने के लिए उत्तरदायी है। विन्ध्यन क्रम दो प्रकार के मिश्रित निक्षेप से निर्मित है–

(1) समुद्री तथा कैलकेरियस जो निचले भाग में विकसित है (2) एस्चुराइन निक्षेप जिससे उपरी भाग बना है। यह उत्तर को छोड़कर बुन्देलखण्ड ग्रेनाइट के चारों ओर अर्धवृत्ताकार में विस्तृत है। दक्षिण पूर्व से उत्तर–पूर्व तक मदनपुर से बादरगुहा तक ये चट्टानें सपाट रुप में फैली हैं, परन्तु बिल्कुल दक्षिण में चूने के पत्थर व बलुआ पत्थर के कगारी भाग हैं, जो गहरे भागों में निक्षेपित होने से बनें है। इस प्रकार ये देहरी आन–सोन से होशंगाबाद तथा चित्तौरगढ़ से आगरा तथा ग्वालियर तक एक विस्तृत भाग में फैली हुई है। इस क्षेत्र का विस्तार का लगभग 100,000 वर्ग किमी. भाग में है तथा आगे 65000 वर्ग किमी क्षेत्र में विस्तृत है, जो दंकनट्रेप के नीचे विस्तृत है। इस प्रकार यह देश के अन्य भागों में दक्षिण में या दक्षिण पश्चिम में पृथक हैं। विन्ध्यन सागर के तलछट के उठाव के कारण तथा कुछ दक्षिण के टेक्टानिक गति (Tectanic Movement) के कारण इस भाग का सन्तुलन बिन्दु बना रहा।[10] इस प्रकार ये कगार जो इस भू–भाग को चारों तरफ से घेरे हुए है, उत्तरी व दक्षिणी भारत के बीच एक प्राकृतिक सीमा बनाते हैं।

विन्ध्यन क्रम विस्तृत रुप से दो वर्गो मे विभाजित किया जा सकता है। [11]

(1) ऊपरी विन्ध्यन क्रम

(2) निम्न विन्ध्यन क्रम ।

ओल्डहम (1913) ने ऊपरी विन्ध्यन कम को निम्नलिखित उपश्रेणियों में विभाजित किया है :–

(अ) भांडर श्रेणी

(ब) रीवा श्रेणी

(स) कैमूर श्रेणी ।

ऊपरी विन्ध्यन क्रम का निर्माण तलछटीय जमाओ के कारण हुआ है, जिसमें कठोर बलुआ पत्थर की प्रधानता है। निम्न विन्ध्यन क्रम ज्वालामुखी के उद्गारों से निर्मित है। भांडर और रीवा श्रेणी की चट्टानें बुन्देलखण्ड मैदान के बाहर की ओर हैं। कैमूर श्रेणी का बाहरी भाग कालिंजर के दक्षिणी पूर्वी भाग, तथा चित्रकूट जिले में चित्रकूट ओर मऊ पहाड़ियों के बीच विस्तृत है। विन्ध्यन बलुआ पत्थर इमारत बनाने के लिए श्रेष्ठ माना जाता है, जो प्राचीन ऐतिहासिक इमारतों के बनाने में प्रयोग किया गया है।

(3) नवीन निक्षेप :– चित्रकूट धाम मण्डल के उत्तरी भाग में मण्डल का लगभग दो तिहाई भाग नवीन निक्षेप का क्षेत्र है, जो वेतवा, धंसान, केन, बागै आदि नदियों के द्वारा दक्षिण की ओर से लायी गयी जलोढ़ मृदा से निर्मित है। यह मैदानी भाग सम्पूर्ण मण्डल में पूर्व से पश्चिम की ओर फैला हुआ है। यह भू सन्नति में कॉप के जमाव के द्वारा बना है। स्वेस ने इसे 'फोर डीप' कहा है तथा 'सिडनी वरार्ड' ने 'रिफ्टघाटी' बताया है, जो एक ओर दरार से घिरी हुई है। इस प्रकार कॉप के जमाव के कारण इस मैदानी भाग की रचना हुई है।[12] दक्षिणी पठार के उत्तरी भाग इस मैदान के अन्दर तक विस्तृत है। इसकी उत्पत्ति के विषय में मतभेद होने के बावजूद सभी के द्वारा एक मत होकर स्वीकार

किया गया है कि 'हिमालय–पर्वत व बुन्देलखण्ड के बीच का गहरा भाग' दक्षिणी व उत्तरी भाग की नदियों द्वारा लाए गये अवसाद के जमाव के कारण निर्मित हुआ है।

सम्पूर्ण नवीन निक्षेप के क्षेत्र में नवीन निक्षेप अर्थात् जलोढ़ मिट्टी की गहराई पृथक–पृथक है। उत्तरी भाग में अधिक गहराई है। दक्षिणी भाग में चट्टानों के कण कुछ बड़े हैं एवं उत्तरी भाग में महीन है। यह कॉप मिट्टी कृषि की दृष्टि से बहुत अधिक उपजाऊ है, जिससे चित्रकूट धाम मण्डल के 70% भाग में कृषि योग्य भूमि प्राप्त हुई है। दक्षिणी भाग में इसकी गहराई कम है एवं उत्तरी भाग में इसकी गहराई अधिक है।

2-A-ii- उच्चावचन :–

चित्रकूट धाम मण्डल में मैदानी,पठारी और पर्वतीय धरातल पाये जाते हैं। इस भाग में पायी जाने वाली धरातलीय विशेषताएं इतनी सुस्पष्ट हैं कि सम्पूर्ण भागों को मुख्य रुप से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। अनेक विद्वान जैसे– एम0 बी0 पिथवाला (1939–1948) ,के0एस0अहमद (1942) ओ0एच0के0 स्पाट (1954), एम0 एफ0 सिद्दिकी (1966) ने भी चित्रकूट धाम मण्डल को उच्चावच की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया है।–(मानचित्र 2-A-2)

1. *उत्तरी मैदान* :– जो निचला तथा उपजाऊ है।
2. *दक्षिणी उच्चभाग* :– जो विन्ध्यन श्रेणी के कगारों तथा ग्रेनाइट व नीस की पहाड़ियों के कारण समुन्नत हैं।

फिर भी सम्पूर्ण भू–भाग को मुख्य दो भागों में बांटना बड़ा जटिल है, क्योंकि पूर्व में मैदानी भाग वहाँ से आरम्भ होता है, जहाँ उच्च भाग समाप्त होता है। अतः प्रदेश के पूर्वी भाग को उच्चभूमि और निम्न भूमि में बाँटना तो सरल है, किन्तु पश्चिम में पहाड़ी भाग के मैदानी भाग में संक्रमण इतना सामान्य है कि दोनों के मध्य एक रेखा खींचना कठिन हैं। पश्चिम भाग में पहाड़ियां उत्तर के मैदानी भाग तक प्रवेश कर गयीं हैं, यद्यपि उत्तर की ओर इनकी संख्या कम हो जाती है तथा करीब–करीब राठ के उत्तर में यह नहीं पायी जाती।

सामान्य रुप से 750' की (229 मीटर) समोच्च रेखा उत्तरी मैदान तथा दक्षिणी उच्च भाग के मध्य एक विभाजक रेखा मानी जा सकती है। इस निम्नभूमि और उच्च भूमि वाले चित्रकूट धाम मण्डल के धरातलीय उच्चावच का विवरण निम्नवत् हैः–

(1) उत्तरी निचला मैदान :– यह मैदान चित्रकूट धाम मण्डल के हमीरपुर, मौदहा, सरीला, बाँदा, बबेरु, राठ, चरखारी, महोबा, नरैनी, कर्वी तथा मऊ तहसीलों के उत्तरी भाग में विस्तृत है। यह निचला भाग बुन्देलखण्ड (Bundelkhand Plain) मैदान के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इसकी संरचना यमुना की सहायक नदियों वेतवा, केन, घसान, चन्द्रावल, बागैं, पयस्वनी और बाल्मीकि नदियों द्वारा लाए गये अवसाद से निर्मित हुआ है। समुद्र सतह से इस मैदान की औसत ऊचाँई 150 मी0 है। इस मैदान के दक्षिण में औसत ऊचाँई 229 मी0 तथा उत्तर में औसत ऊचाँई 122 मी0 है। इस भू–भाग का पूर्वी क्षेत्र पश्चिम की अपेक्षा नीचा है तथा मैदानी भाग का सामान्य ढाल दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व की ओर है। इस मैदान की ऊँचाई गोहाण्ड (हमीरपुर) में 152 मी0 (498') तथा कुरारा में 124 मी0 (406') है।

FIG. 2A-2
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
RELIEF
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
IN METRES
0-150
151-300
301-450
451-600
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
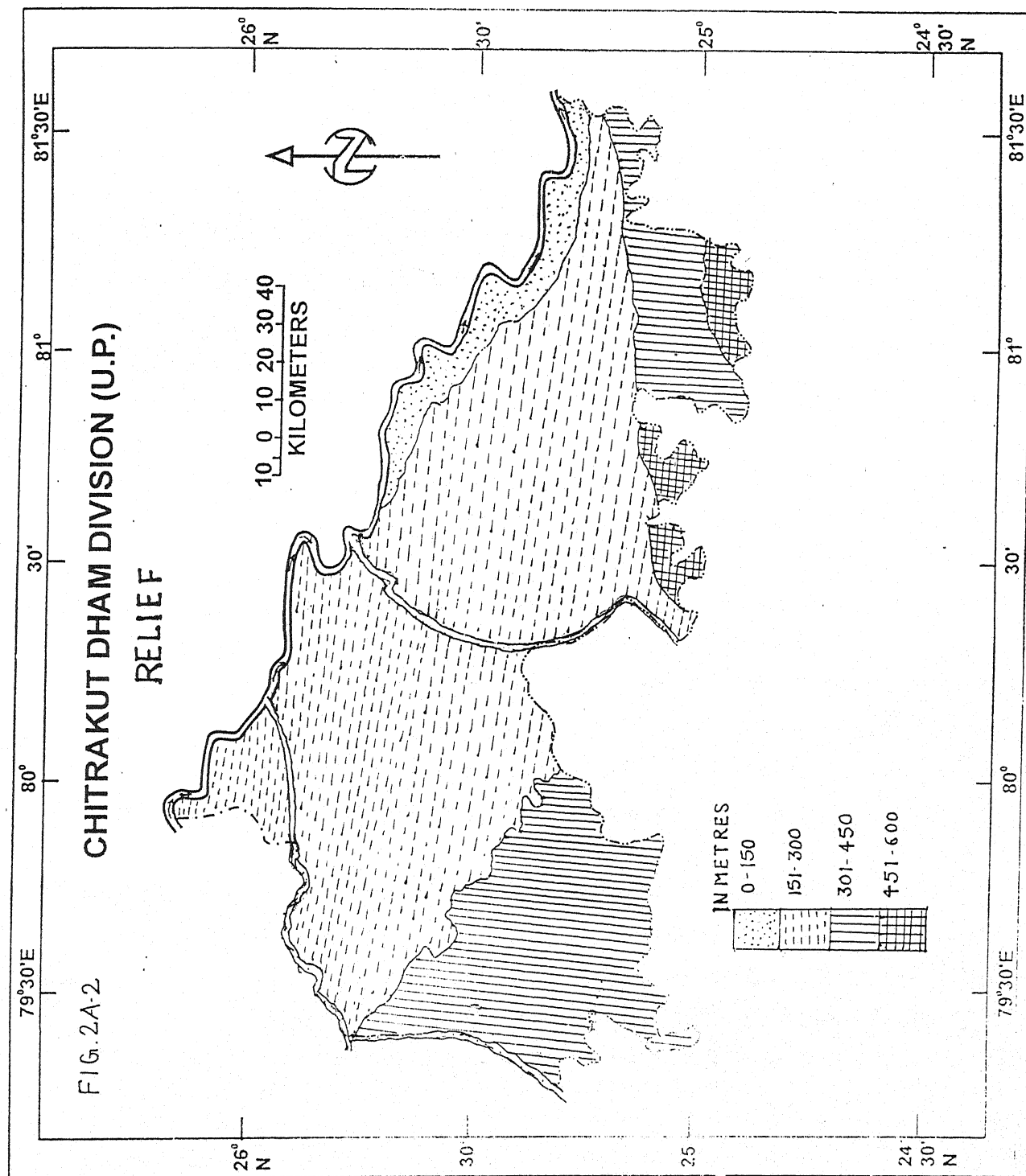
महोबा में समुद्र तल से औसत ऊँचाई 214 मी0 (701 फीट) है, जो कि उत्तर–पूर्व की ओर घटती जाती है। अकौना में इसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 124 मी0 (406 फीट) तथा पैलानी में 112 मी0 (366 फीट) है। इसी प्रकार मैदानी भाग के पूर्व ढाल दक्षिण–पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर है। कर्वी में समुद्र तल से औसत ऊचाँई 132 मी0 (433 फीट) है, जो घटकर राजापुर में 104 मी0 (342 फीट) रह जाती है। विभिन्न स्थानों की यह ऊँचाइयाँ मैदानी भाग की ढाल को प्रतिबिम्बित करती हैं।

इस मैदानी भाग के दक्षिण में ग्रेनाइट शैलें पायी जाती है, जो छोटी–छोटी पहाड़ियों के रुप में पायी जाती हैं, जिनका विस्तार राठ के दक्षिण तक पाया जाता है 152 मीटर (500फीट) की सम्मोच्च रेखा वास्तविक मैदानी भाग और ग्रेनाइटी सतह के मध्य विभाजक रेखा मानी जा सकती है। इस विभाजक रेखा के उत्तर में ही इस मण्डल का वास्तविक मैदानी भाग पाया जाता है। इस भाग में बहनें वाली मुख्य नदियां बेतवा, घसान, चन्द्रावल, बिरमा, बागै, पयस्वनी ओर वाल्मीकि नदियां हैं। इन नदी घाटियों के मध्य कुछ उच्च–भूमि वाले जल विभाजक पाये जाते हैं। बीहड़ भाग को छोड़कर शेष मैदानी भाग उपजाऊ है।

2. **दक्षिण का उच्च भाग** :– इसके अन्तर्गत कुलपहाड़, चरखारी, महोबा, नरैनी, कर्वी, मऊ तहसीलों के दक्षिणी भाग आते हैं। धरातलीय संरचना की दृष्टि से सम्पूर्ण भाग ऊबड़ खाबड़ हैं। इस भू–भाग की औसत ऊँचाई 300 मीटर से 366 मीटर के बीच में है। चित्रकूट धाम मण्डल के दक्षिणी पूर्वी भाग में विन्ध्यन श्रेणियां पायी जाती हैं। इन श्रेणियों में कहीं–कहीं कगार पाये जाते हैं। विन्ध्याचल श्रेणी के कगार कैमूर बालुका पत्थर से निर्मित हैं। पयस्वनी नदी कई छोटे–छोटे प्रपात बनाती हैं तथा मझगवाँ के पास एक खड्ड का निर्माण करती हैं। यहाँ मानिकपुर ब्लाक की रोझौंहा, रानीपुर तथा चौरी मण्डल की सबसे ऊँची पहाड़ियां हैं। दक्षिण–पश्चिम उच्च भूमि का क्षेत्र एक दृढ़ भूखण्ड (Table Land) हैं। यहाँ पाई जाने वाली ग्रेनाइट युक्त पहाड़ियाँ अनाच्छादन के फलस्वरुप गोल आकार की हो गई है। ग्रेनाइट शैल के वियोजन और विघटन के फलस्वरुप भी यहां पर लाल बजरी वाली मिट्टी पाई जाती हैं। यहां पर पाई जाने वाली ग्रेनाइट पहाड़ियाँ या तो वनस्पति विहीन हैं या उन पर केवल झाड़ियाँ पायी जाती है। इस उच्च भाग का सामान्य ढ़ाल दक्षिण से उत्तर की ओर है।

भौतिक विभाग :–

चित्रकूट धाम मण्डल का धरातल सभी क्षेत्रों में भौतिक दृष्टि से समान नहीं है। कहीं मैदान है तो कहीं बीहड़ क्षेत्र, ओर कहीं पठार तो कहीं पहाड़ पाये जाते हैं। मण्डल के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का 67%मैदानी तथा 33% भाग पठारी एंव पहाड़ी भाग है। सिदि्दकी[13] ने उत्तरप्रदेश के बुन्देलखण्ड प्रदेश को भौतिक भागों में विभाजित किया है। चित्रकूट धाम मण्डल को उच्चावच और स्थल रुपों के आधार पर निम्नंकित भौतिक विभागों में बांटा जा सकता है।(मानचित्र सं0-2-A-3)

(1) निम्न भूमि (मैदानी भाग)

- (A) ग्रेनाइट नीस का मैदान
- (B) जलोढ़ मैदान
  - (i) बेतवा घाटी (बीहड़ भाग)
  - (ii) विरमा–चन्द्रावल मैदान
  - (iii) केन–बागैं (मध्यवर्ती भू–भाग) ट्रैक्ट
  - (iv) विच्छेदित निम्नभूमि (चित्रकूट का मैदान)

CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
PHYSIOGRAPHIC DIVISIONS
Fig - 2A3
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25'
24° 30' N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
1B(i)
1B(ii)
1B(iii)
1B(iv)
1A
2B
2A
1- LOW LAND
A- GRANITE - GNEISSIC PLAIN
B- ALLUVIAL PLAIN
(I) BETWA RAVINE TRACT
(II) BIRMA CHANDRAWAL PLAIN
(III) KEN - BAGAIN TRACT
(IV) CHITRAKUT PLAIN
2- UPLAND
A- VINDHYAN TABLE LAND
B- GRANITE-GNESSIC-PLATEAU
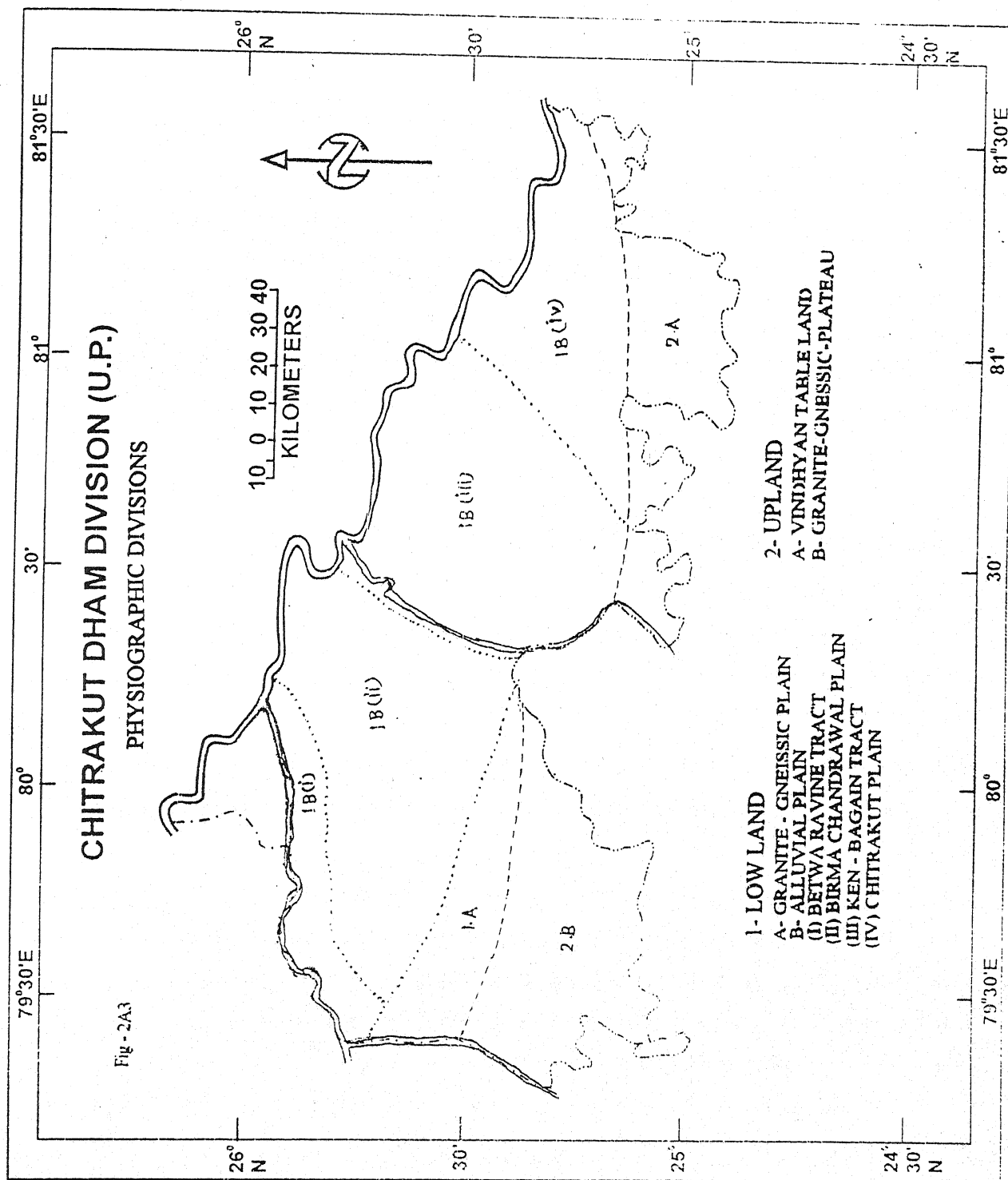
(2) उच्चभूमि (पठारी भाग)

(A) विन्ध्यन टेबुल लैण्ड (चित्रकूट का पठार)

(B) ग्रेनाइट नीस का पठार

(1) निम्नभूमि (मैदानी भाग) :—

इस मैदान का विस्तार चित्रकूट धाम मण्डल के उत्तरी भाग में पश्चिम में पूर्वी भाग तक है। इसके अर्न्तगत हमीरपुर, बाँदा चित्रकूट तथा महोबा जनपद का उत्तरी भाग सम्मिलित है। इसे दो भागों में विभक्त किया गया है

(A) ग्रेनाइट नीस का मैदान

(B) जलोढ़ मैदान

(A) ग्रेनाइट नीस का मैदान :— यह मैदानी भाग 229 मीटर (750फीट) तथा 152 मीटर (500फीट) की सम्मोच्च रेखा के मध्य फैला हुआ है। यह मैदान महोबा, चरखारी और दक्षिणी राठ तहसीलों में विस्तृत हैं। यह भू—भाग कम अपरदित है। अतः धरातलीय असमानतायें कम पायी जाती हैं। यत्र—तत्र ग्रेनाइट पहाड़ियाँ विद्यमान हैं।

(B) जलोढ़ मैदान :—

(i) वेतवा घाटी (बीहड़ भाग) :— यमुना में मिलने से पहले वेतवा नदी विसर्पो से होकर प्रवाहित होती है। नदी के किनारे काफी ऊँचे हैं। इसकी मुख्य सहायक नदी घसान है, जो इसमें राठ के पास दक्षिण से आकर मिलती है। बेतवा में मिलने वाले मौसमी नालों के द्वारा वेतवा के किनारों पर पाये जाने वाले ऊँचे भाग काफी अपरदित हो गये है। अतः ऊबड़ खाबड़ सतह वाले किनारे पाये जाते हैं।

(ii) बिरमा चन्द्रावल मैदान :— यह मैदानी भाग राठ, मौदहा और हमीरपुर तहसीलों तथा केन नदी के पश्चिम में बांदा तहसील के भू—भाग में विस्तृत है। दक्षिण में यह भू—भाग असमान सतह वाला है, लेकिन उत्तर में करीब—करीब समतल है। इन नदियों के मैदानी भाग की मिट्टी उपजाऊ है।

(iii) केन—बागैं (मध्यवर्ती भू—भाग) ट्रैक्ट :— यह भाग बाँदा, बबेरु, नरैनी, अतर्रा तहसीलों में विस्तृत है। यह समतल भू—भाग है, इसलिए इस मैदानी भाग में अपरदन की मात्रा कम रही है। इस भाग में मार, काबर मिट्टियाँ पाई जाती हैं। साथ ही मिश्रित रुप में काबर तथा पडुवा मिट्टियाँ भी देखने को मिलती है। केन नहर से नियमित रुप से सिंचाई के लिए पानी मिलने के कारण यह भाग चित्रकूट धाम मण्डल में सर्वाधिक उपजाऊ है। खरीफ की फसलों में चावल का तथा रवी की फसलों में गेंहू व चना के प्रमुख खाद्यान्न है। सम्पूर्ण मैदानी भाग में वर्ष में दो फसलें उगायी जाती हैं।

(iv) विच्छेदित निम्न भूमि (चित्रकूट का मैदान) :— यह भू—भाग चित्रकूट जनपद में कर्वी ओर मऊ तहसीलों में पाया जाता है। यह त्रिभुजाकार रुप में फैला हुआ हैं। इस भू—भाग में कई छोटी—छोटी नदियाँ पूर्वी विन्ध्यन टेबुल लैण्ड से निकलकर उत्तरपूर्व की ओर बहती हैं। फलस्वरुप यह भू—भाग छोटे—छोटे दो—आव में बँटा हुआ है। इस भाग के दक्षिण में कुछ निम्न ऊँचाई वाली पहाड़ियां भी पायी जाती है। अधिक जल प्रवाह तथा जल धाराओं के कटाव के कारण मिट्टी अधिक उपजाऊ नहीं है। अतः इस भाग में ज्वार बाजरा तथा चना की खेती महत्वपूर्ण है।

(2) उच्च भूमि (पठारी भाग) :– दक्षिणी पहाड़ी भाग तथा उत्तरी मैदान के बीच में भौतिक भिन्नता अधिक है। पश्चिमी–दक्षिणी पहाड़ी भाग से उत्तरी मैदानी भाग तक धरातलीय परिवर्तन बहुत ही धीरे धीरे हुआ है तथा मैदानी भाग में भी पहाड़ियों का विस्तार पाया जाता है परन्तु ये पहाड़ियाँ उत्तर की ओर कम ऊँची होती जाती हैं तथा राठ नगर के पास पूर्णतया समाप्त हो जाती हैं। इस उच्च भूमि को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है:–

(A) विन्ध्यन टेबुल लैण्ड (चित्रकूट का पठार) :– इस पठार का स्थानीय नाम 'पाठा' है, जो चित्रकूट जनपद की कर्वी और मऊ तहसीलों के दक्षिण में तथा बांदा जनपद की नरैनी ओर अतर्रा तहसीलों के दक्षिणी किनारे पर फैला हुआ है। इसकी समुद्रतल से औसत ऊँचाई 1000' हैं। मैदानी भाग से पठार की ओर कगार के कारण ऊँचाई अधिक है। इस कगार का स्थानीय नाम 'अरी' (Ari) है। यह पठारी भाग मैदानी भाग के दक्षिण में दो या तीन कगारों के कारण ऊँचा है, जो एक दूसरे के ऊपर विस्तृत है तथा संकरे मैदानों के कारण पृथक है। मानिकपुर विकासखण्ड में स्थित रोझौहा, रानीपुर तथा चौरी पहाड़ियां सर्वाधिक ऊँची हैं। यह पठारी भाग मौसमी जल धाराओं एवं नदियों द्वारा काफी कटा–फटा है तथा जंगलों से सभी आच्छादित है। इसमें कई झरने तथा स्रोत पाये जाते है, जिनमें हनुमान धारा का झरना, लहुरन बाबा का स्रोत, जामुर का स्रोता, केवरा–स्रोता,तुर्री–स्रोता आदि अत्यधिक प्रसिद्ध है। अधिकांश वन आरक्षित हैं। इन वनों में तेदु के वृक्षों का महत्व अत्यधिक है, जिनकी पत्तियों से बीड़ी बनाने का उद्योग विकसित है। सम्पूर्ण भाग में कृषि सुविधाओं में अभाव के कारण यहां के निवासियों के आर्थिक विकास का स्रोत वन उत्पादक वस्तुएं हैं। पाठा क्षेत्र में सिंचाई सुविधाओं के अभाव, तथा उपजाऊ मिट्‌टी के अभाव के कारण कृषि विकास नगण्य सा है। मोटे अनाज का उत्पादन (ज्वार बाजरा–कोदो–साँवा) अधिक होता है। इस क्षेत्र में बलुवा पत्थर तथा सिलिका सेंड अधिक मात्रा में पाई जाती है जिसका आर्थिक महत्व अधिक है।

B- ग्रेनाइट नीस का पठार :– यह पठारी भू–भाग महोबा जनपद की महोबा तहसील तथा कुलपहाड़ तहसील में विस्तृत है। इस क्षेत्र की समुद्रतल से औसत उँचाई 274 मीटर (900')है। इस भू–भाग में समतल सतह वाली ग्रेनाइट नीस पहाड़ियाँ पायी जाती है। इन पहाड़ियों के कारण ही यहाँ लाल बजरी वाली मिट्‌टी (मोरम) कई स्थानों में प्राप्त होती है। यह पठारी उच्च भाग अत्यधिक विषमताओं से परिपूर्ण है। इस भाग में अनेक उथले जलाशय हैं जिसका ढाल दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व की ओर है।

2-A(iii) जल–प्रवाह :–

चित्रकूट धाम मण्डल के दक्षिण में पायी जाने वाली विन्ध्यन पर्वत श्रेणियों ने प्रवाह क्रम को बहुत अधिक प्रभावित किया है। यह श्रेणियाँ दक्षिण और उत्तर के भू–भागों के मध्य एक दीवार की भांति कार्य करती है। सम्पूर्ण प्रदेश में प्रवाहित होने वाली नदियां यमुना की ही सहायक नदियां हैं । बेतवा उसकी सहायक नदी है। धसान, केन बागैन, पयस्वनी आदि सभी मिलाकर प्रत्येक छोटी बड़ी नदी का पानी यमुना नदी में ही जाता है। ये नदियाँ जो दक्षिण की विन्ध्यन श्रेणियों से निकलती हैं, 'बुन्देलखण्ड उच्च भूमि' और 'निम्न भूमि' को पार करती हुई यमुना में गिरती हैं। दक्षिणी भाग में नदियों द्वारा बहुत अधिक मात्रा में अपरदन हो चुका है। फलस्वरुप धरातल बहुत ही ऊबड़ खाबड़ हो चुका है

ऐसे धरातल को 'बेडलैण्ड टोपोग्राफी' कहा जा सकता हैं। इस भाग में इन सहायक नदियों का प्रवाह मार्ग उन स्थानों में स्पष्ट देखने को मिलता है, जहाँ वह बलुआ पत्थर को काटकर संकरी घटियों का निर्माण करती हैं।[14] चट्टानों के स्वभाव के कारण इस भाग में 'वृक्षनुमा जलप्रवाह प्रणाली' का विकास हुआ है।

यह जल प्रवाह प्रणाली वर्षा की मात्रा, वर्षा का वितरण, अपक्षय, कटाव प्रणाली तथा जलधाराओं के इतिहास पर निर्भर है।[15] वास्तव में चित्रकूट धाम मण्डल का धरातल यहां के प्रवाह तंत्र को पूरी तरह निर्धारित करता है। चूंकि दक्षिण का भाग पहाड़ी एवं पठारी है। अतः नदियों के मार्ग करीब–करीब सीधे हैं। इसके विपरीत उत्तर मैदानी भाग में नदी मार्ग टेढ़े–मेढ़े हैं। इस मण्डल का ढ़ाल यहाँ की नदियों की दिशायें व गति का निर्धारण करता है। असमान धरातल के दक्षिणी भाग में नदियों की गति कारण काफी अधिक रहती है तथा उत्तर के मैदानी भाग में समतल सतह होने के कारण नदियों की प्रवाह गति दक्षिण की अपेक्षा कम रहती है। दक्षिणी भाग में नदियों की दिशा दक्षिण से उत्तर की ओर है तथा मैदानी भाग में नदियों की दिशा दक्षिण–पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर है। मात्र यमुना नदी सम्पूर्ण प्रदेश के उत्तर में उत्तर–पश्चिम से दक्षिण–पूरब की ओर बहती है। वर्षा काल में इनमें कुछ समय के लिए बाढ़ आ जाती है परन्तु बाद में शीघ्र ही बाढ़ समाप्त होने पर अपने संकरे रास्ते में प्रवाहित होने लगती है। 'अनेक छोटी–छोटी जलधारायें वर्षा काल में बढ़ जाती हैं, जिससे जन–धन की अपार क्षति होती है।

चित्रकूट धाम मण्डल के नदी प्रवाह क्रम को निम्नलिखित क्रमों में विभक्त किया जा सकता है। :–
(मानचित्र सं. 2A-4)

1– यमुना–क्रम :– यमुना नदी इस मण्डल की सबसे बड़ी नदी है, जो इस मण्डल की उत्तरी सीमा का निर्माण करती है। मण्डल की सभी मुख्य नदियां इसमें मिलती है। इस नदी के दक्षिणी किनारे 15 से 45 मी0 ऊँचे हैं, जिन्हें 'कगार' कहते हैं। अतः दक्षिण की ओर प्रवाहित होने वाली नहरों का निर्माण कठिन है फिर भी कुछ स्थानों में पानी को ऊपर उठाकर (लिफ्ट प्रणाली द्वारा) नहरें निकाली गयीं हैं। यमुना नदी घाटी की चौड़ाई 90 मीटर से 900 मीटर तक है। इसका उद्‌गम स्थान कुँमायू क्षेत्र में स्थित वृहद हिमालय श्रेणी के 'बन्दर पूछ शिखर' (6367मीटर) के पश्चिमी ढाल पर 6320 मीटर ऊँचाई पर 'जमुनोत्री' हिमनद है। कुल मिलाकर यमुना नदी इस मण्डल के लिए अति उपयोगी है।

2– बेतवा क्रम :– वेतवा इस मण्डल की दूसरी वृहद नदी है। यह मध्य प्रदेश के भोपाल जिले (कुमरी के निकट) में विन्ध्यन श्रेणियों से निकलती है तथा बुन्देलखण्ड (उ0प्र0)में ललितपुर जिले के दक्षिणी पश्चिमी किनारे से बहती हुई मध्य प्रदेश राज्य की सीमा बनाती है एवं करीब 100 किमी. आगे बढ़कर उत्तर–पूर्व की ओर प्रवाहित होती हुई जालौन और हमीरपुर जिलों की सीमा बनाती है। हमीरपुर नगर के पास यमुना में मिल जाती हैं। जाम्नी, धसान और बिरमा, बेतवा की मुख्य सहायक नदियाँ हैं। शाहजाद और सजनम नदियाँ जाम्नी नदी की मुख्य सहायक नदियाँ हैं।

धसान नदी मध्य प्रदेश के भोपाल जिले में विन्ध्यन श्रेणियों से जन्म लेती हैं। यह नदी ललितपुर जिले के द0पू0 भाग से बुन्देलखण्ड प्रदेश में प्रवेश करती हैं। करीब 40 किमी. बहकर धसान नदी ललितपुर जिले को छोड़ देती है। इसके पश्चात् महोबा जिले में प्रवेश करती है तथा महोबा और हमीरपुर जनपद की पश्चिमी सीमा बनाती हुई गरौठा तहसील में देवरी गांवके पास यह बेतवा में मिल

FIG. 2A.4
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
DRAINAGE
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
N
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
YAMUNA RIVER
BETWA R.
BIRMA R.
CHANDRAWAL R.
KEN R.
BAGHAIN R.
PAISUNI R.
DHASAN RIVER
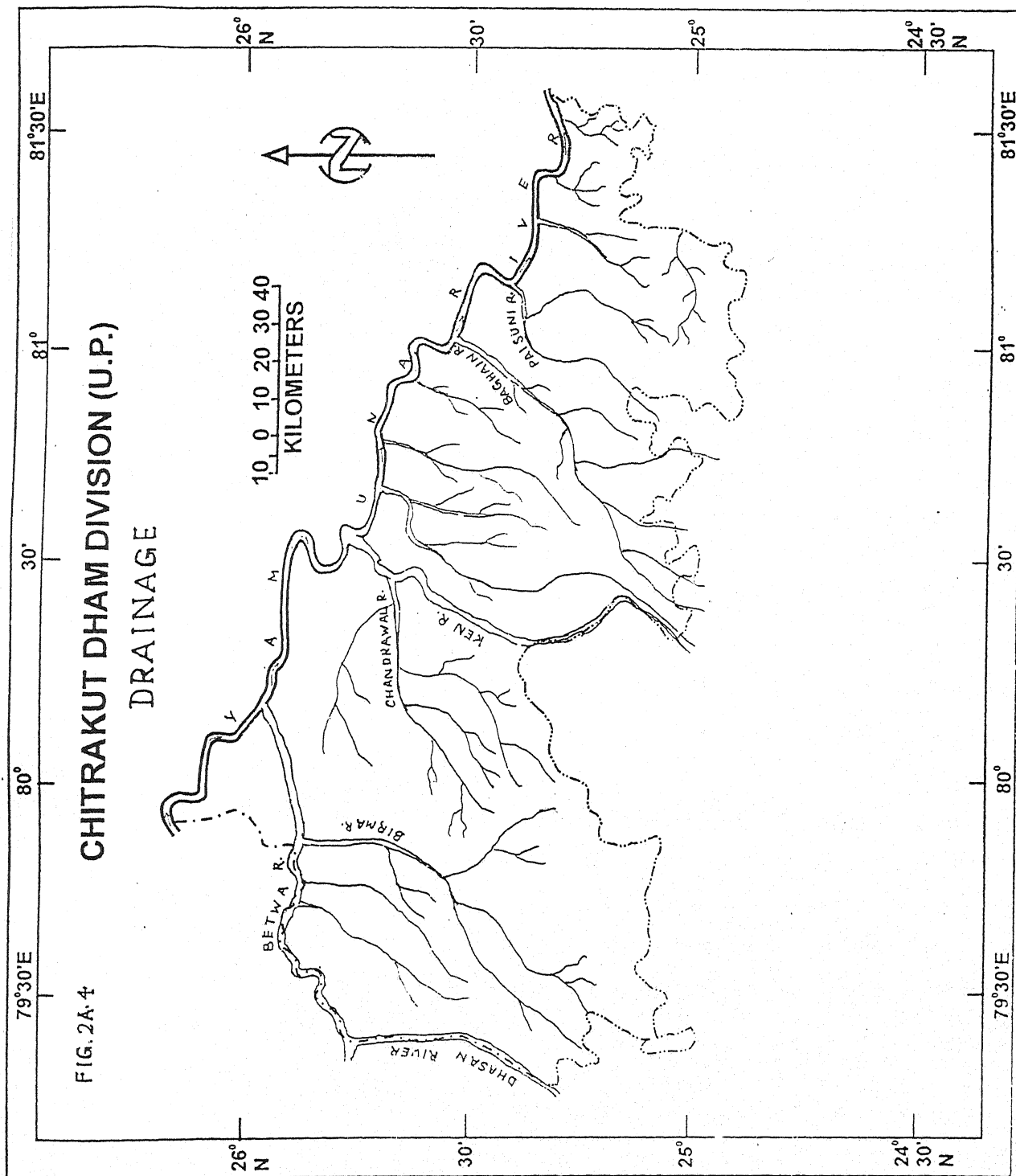
जाती हैं। लखेरी और सुखनयी नदियां इसकी मुख्य सहायक नदियां हैं। बिरमा नदी हमीरपुर जिले में बहती हुई बेतवा में मिल जाती है।

3– केन–क्रम :– केन नदी मध्य प्रदेश के दमोह जिले से निकलती हैतथा बाँदा जिले के नरैनी तहसील से होकर प्रदेश में प्रवेश करती है। बांदा नगर के पास यह कुछ चौड़ी घाटी में बहती है। इसकी घाटी पथरीली है। इसके द्वारा निर्मित उर्वर मैदानी भाग बाँदा तहसील में स्थित खप्टियांकलाँ, सांडा, अलौल, पैलानी, खास तथा सिन्धन कला गाँव तक विस्तृत है। इस नदी के दाहिने किनारे तीव्र ढाल वाले तथा बीहड़ भाग हैं। यह सदावाहिनी नदी है, परन्तु चट्टानी तल के कारण नाव चलाने योग्य नहीं है।

चन्द्रावल नदी केन की सबसे बड़ी तथा मुख्य सहायक नदी है। इसके अतिरिक्त शाम, केल, बिचुई तथा गवेन नदियाँ इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है। केन नदी बाँदा जिले में 'चिल्ला गाँव' के पास यमुना नदी में मिल जाती है।

4– बागैं क्रम :– बागैं तथा इसकी अन्य सहायक नदियाँ बाँदा जिले में प्रवाहित है। बागैं नदी पन्ना (म0 प्र0) जिले की 'खोरई पहाड़ी' (विन्ध्यन श्रेणी) से निकलकर भसौनी भरतपुर (नरैनी विकास खण्ड) के पास बाँदा जनपद में प्रवेश करती है। इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ मदरार, बरार, कलिंद, करहेलिन तथा बरुआ है। यह अपने साथ बहाकर लाई हुई ग्रेनाइट अपरदित चूरे का प्रचुर मात्रा में व अपने किनारों में जमाव करती है, जिसका प्रयोग मकानों, सड़कों आदि के निर्माण में किया जाता है। यह नदी बाँदा जिले में उत्तर–पूर्व की ओर बहकर विलासें गाँव के पास यमुना में मिल जाती है।

5– पयस्वनी क्रम :– यह नदी विन्ध्यन श्रृंखला की 'पथार कछार' की पहाड़ियों से निकलकर अनुसुइया आश्रम के पास से बहती हुई स्फटिक शिला, जानकी कुण्ड के निकटवर्ती घने व सुहावने वनों के मध्य से प्रवाहित होती हुई कर्वी तहसील में 'इटवादूनपलिया' गाँव के पास इस मण्डल में प्रवेश करती है। यहाँ इसकी घाटी बहुत चट्टानी है, जहाँ इसके मार्ग में कई छोटे–छोटे जलप्रपातों का निर्माण हुआ है। विन्ध्याचल श्रेणियों से निकलने के बाद यह दो सुन्दर झरनों में गिरती है, जो लगभग 150 फिट लम्बे है, जिन्हें 'कुण्ड' कहा जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार यह जलाशय भगवान राम के द्वारा भारद नामक दैत्य को आकाश से पृथ्वी पर फेंके जाने से, पृथ्वी पर बने गढ्ढे से बना है। यह भरतकुण्ड टिकरिया गाँव के पास में है परन्तु भूगर्भीय दृष्टि से जलधारा के द्वारा मुलायम चट्टानों के काट दिये जाने से इस जलाशय का निर्माण हुआ है।

ओहन नदी (वाल्मीकि) इसकी मुख्य सहायक नदी है। यह नदी ददरी (मानिकपुर विकास खण्ड) के पास से निकलती है, जो कर्वी तहसील में सगवारा गाँव के पास पयस्वनी में मिल जाती है। बगरेही लालापुर के पास इस नदी के तट पर आदिकवि वाल्मीकि जी का आश्रम है। इसलिये इसे वाल्मीकि नदी भी कहते है।

तालाब और जलाशय :– चित्रकूट धाम मण्डल मे पानी की कमी के कारण प्रत्येक गाँव में जल को संचित रखने के लिये कुओं व तालाबों का निर्माण कराया गया है। इनका निमार्ण करवाना धार्मिक कार्य समझा जाता हैं। यहाँ की कठोर रवेदार चट्टान में पानी अधिक मात्रा में नहीं रिसता है, जिससे

चित्रकूट धाम मण्डल के दक्षिणी भाग में जलाशय अधिक हैं। इनमें कुछ में पानी की मात्रा अधिक रहती है, जिनसे सिंचाई की जाती हैं इन जलाशयों में अधिकाँश चन्देल तथा बुन्देला राजाओं द्वारा बनवाये गये है। मुख्य तालाब कीरतसागर, मदनसागर, विजयसागर, राहिलसागर, बेलासागर, टोलताल, मानिकपुर ताल है। इसके अतिरिक्त कबरई बाँध, रगवा बाँध, अर्जुन बाँध, रैपुरा बाँध, ओहन बाँध, रसिन बाँध (निर्माणधीन) है। मौदहा बाँध, लहचूरा बाँध आदि ऐसे जलाशय है, जिनसे नहरें निकालकर सिंचाई की जाती हैं। पुराने सभी तालाबों में वर्षो से सफाई न होने से बड़े पैमाने पर सिल्ट जमा हो गई है, जिससे ये उथले हो गये है एवं जलधारण क्षमता कम हो गयी है, जिससे ग्रीष्म ऋतु में ये सूखने लगतें है। जल का अत्यधिक संकट उत्पन्न हो जाता है। कई तालाबों में जलकुम्भी उग आने से भी यह पानी को सोख रही है, जिससे दिन–प्रतिदिन पानी का स्तर घटता जा रहा हैं। भूमिगत जलस्तर को बनाये रखने के लिये मण्डल में अनेक स्थानों पर तालाबों के निर्माण की आवश्यकता है तथा पुरानें तालाबों की खुदाई का काम भी आवश्यक है, जिससे जल संकट से निपटा जा सके। वर्षा के बूँद–बूँद जल का उपयोग करने के लिये 'गाँव का पानी गाँव में, खेत का पानी खेत में' की धारणा को विकसित करना होगा–

चित्रकूट धाम मण्डल के कुछ प्रमुख तालाबों और जलाशयों के नाम, स्थिति तथा उनका क्षेत्रफल निम्नलिखित तालिका संख्या (2A–2)में दिया गया है।

तालिका संख्या (2A–2)

चित्रकूट धाम–मण्डल में जलाशयों की स्थिति एवं क्षेत्रफल

कम सं.	तालाब/जलाशय का नाम	स्थिति	क्षेत्रफल (वर्ग मीटर में)
1.	कीरत सागर	महोबा	986
2.	मदन सागर	महोबा	423
3.	विजय सागर	महोबा	3948
4.	झाना	महोबा	1833
5.	दिसरापुर	महोबा	1739
6.	टिकामऊ	महोबा	247
7.	अर्जुन बांध	चरखारी	182300000
8.	सलारपुर	चरखारी	2370000
9.	कमालपुर	चरखारी	2080000
10.	कबरई तथा मझगवां	चरखारी	2460000
11.	रैपुरा	चित्रकूट	2950000

स्रोत समाजार्थिक समीक्षा,जनपद, हमीरपुर,महोबा, बांदा,चित्रकूट –2001–2002

2-A(iv):- जलवायु :– चित्रकूट धाम मण्डल की धरातलीय संरचना ने यहां की जलवायु को बहुत अधिक प्रभावित किया है, जिससे तापक्रम के वितरण, आर्द्रता तथा वर्षा के वितरण में विषमता मिलती है। इसका उत्तरी भाग गंगा के मैदान की ओर से खुला है तथा दक्षिणी भाग विन्ध्यन पर्वत श्रेणी से बन्द हैं, जिससे उष्ण मानसूनी जलवायु दशाएं पायी जाती हैं। इस मण्डल की स्थिति राजस्थान के शुष्क भाग तथा पूर्व के समुद्रतटीय भाग के मध्य है। विन्ध्यन पर्वत श्रेणियों के अक्षांशीय विस्तार होने के कारण अरब सागर की मानसून हवाओं का प्रभाव कम रहता है, जिससे दक्षिणी–पूर्वी भाग की अपेक्षा उत्तरी–पश्चिमी भाग में वर्षा कम होती है।[16]

जलवायु का मौसमी विभाजन – भारत के मौसम विज्ञान विभाग(मौसम कार्यालय) ने भारत की जलवायु को चार ऋतुओं में विभाजित किया है :–

(1) उत्तरी–पूर्वी मानसून पवनों का मौसम

(अ) शीत–ऋतु– जो 15 दिसम्बर से 15 मार्च तक रहती है।

(ब) शुष्क ग्रीष्म–ऋतु– जो लगभग 15 मार्च से 15 जून तक है।

(2) दक्षिण–पश्चिम पवनों का मौसम।

(अ) वर्षा–ऋतु– जो लगभग 15 जून से 15 सितम्बर तक रहती है।

(ब) शरद्–ऋतु या मानसून प्रत्यावर्तन काल – जो मध्य सितम्बर से मध्य दिसम्बर तक रहता है।

चित्रकूट धाम मण्डल की जलवायु को तीन भागों में विभाजित कर अध्ययन किया जा सकता है जो अग्रांकित है :–

(1) जाड़े की ऋतु (अक्टूबर से फरवरी)

(2) गर्मी की ऋतु (मार्च से जून)

(3) वर्षा की ऋतु (जुलाई से सितम्बर)

(i) जाड़े की ऋतु :– जाड़े की ऋतु में उत्तर की ओर से आने वाली ठण्डी हवायें पूरे भू–भाग को शीतल कर देती है। यहाँ दिसम्बर व जनवरी सबसे ठण्डे महीने होते हैं। औसत मासिक तापक्रम 12.2^0C से 16^0C के बीच में रहता है। कभी–कभी यह 0^0C से0ग्रे0 तक पहुँच जाता है। जैसे फरवरी 1929 में 0^0C तथा दिसम्बर 2002 में 2^0C तापक्रम रिकार्ड किया गया। पछुआ हवायें तापक्रम की दशाओं को बदल देती हैं। इस मौसम में आर्द्रता बहुत कम रहती है, जिससे मेघाच्छादन नहीं रहता है परन्तु कभी–कभी चक्रवातीय वर्षा हो जाती है। शरद् ऋतु में भारत के उत्तरी भागों में प्रायः चक्रवात आया करते हैं। ये चक्रवात भूमध्य सागर से उठते है और ईरान के पठार एंव उत्तरी पाकिस्तान से होते हुए उत्तरी भारत पहुँचते हैं। इनसे इस मण्डल में थोड़ी बहुत वर्षा हो जाती है। इस वर्षा से रबी की फसल को बहुत लाभ होता है (मानचित्र से:2-A-7)

(ii) ग्रीष्म ऋतु :– मार्च महीने से धीरे धीरे तापमान में वृद्धि होने लगती हैं तथा गर्मी के मौसम का प्रारम्भ हो जाता हैं इस मण्डल में तापमान मार्च से मई के बीच 23^0C से 35^0C के मध्य रहता है। मई और जून के सबसे गर्म महीने होते हैं। औसत तापमान 34.5^0C तथा कभी–कभी 48^0C तक पहुँच जाता है। (तालिका सं.2-A-3) (चित्र सं.2-A-8)

FIG. 2A.5
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
DISTRIBUTION OF AVERAGE
ANNUAL RAINFALL
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
RAINFALL IN CMS
BELOW 90
90-99
100 AND ABOVE
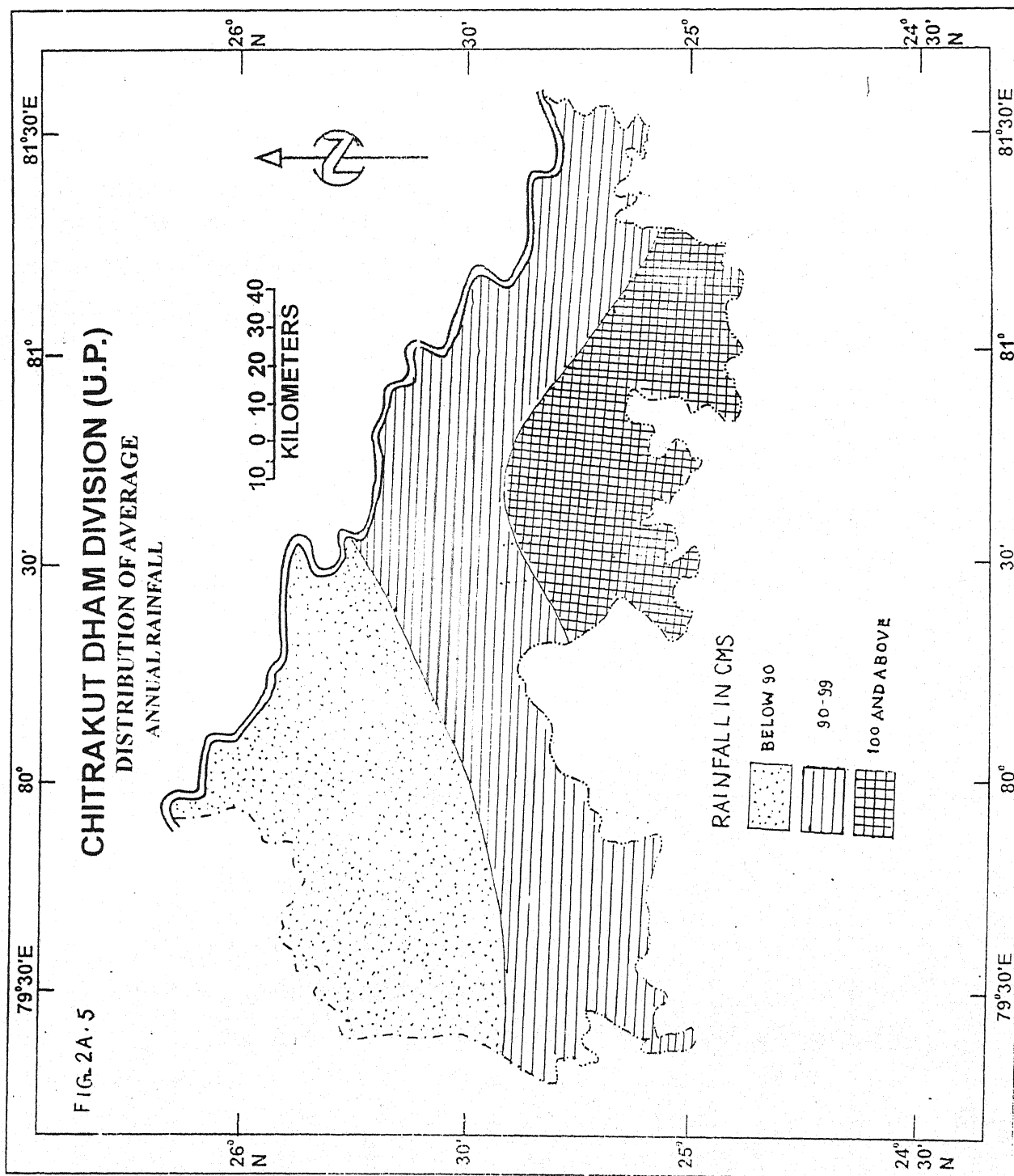
इस शुष्क ग्रीष्म ऋतु में गर्म हवायें काफी वेग से पश्चिम तथा उत्तर–पश्चिम से चलती हैं, जिन्हे 'लू' कहते हैं। यह बहुत कष्टदायक होती हैं। गर्मी के दिनों में जैसे–जैसे तापमान बढ़ने लगता है वायुदाब निम्न होने लगता है और वायु में भाप की मात्रा कम होने लगती है, जिससे इस ऋतु में उत्तरी–पश्चिमी भागों में 'धूलभरी आंधियाँ' चलती हैं तथा उनकी शक्ति पूर्व की ओर जाने पर कम होती जाती हैं। ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की किरणें इस भाग पर लम्बवत् पड़ती है, जिससे पठारी भाग का तापक्रम अधिक बढ़ जाता हैं। ग्रीन हाउस गैसों के प्रभाव के कारण ओजोन परत क्षीण हो जाने से तापमान में वृद्धि हो रही हैं, जिससे जन जीवन को अधिक कष्ट का सामना करना पड़ रहा है।

पठार के गर्म चट्टानी भाग तापक्रम का विकिरण मैदानी भागों की अपेक्षा शीघ्रता से कर देते हैं, इसलिए पठारी भाग मैदानी भागों की अपेक्षा शीघ्र ठण्डे हो जाते हैं।[17] चित्रकूट (कर्वी) के पठारी भाग में अत्यधिक गर्मी पड़ती है। दिन में भीषण गर्मी पड़ती है, परन्तु रातें दिन की अपेक्षा ठण्डी तथा सुहावनी होती हैं।

तालिका सं. 2A-3

चित्रकूट धाम मण्डल में औसत मासिक तापक्रम (सेन्टीग्रेड में)

स्थान	जन0	फर0	मार्च	अप्रै0	मई	जून	जुलाई	अग0	सित0	अक्टू0	नव0	दिस0	वार्षिक माध्य
हमीरपुरअ–	23.0	27.0	35.5	38.0	43.0	40.5	34.4	32.0	33.0	32.0	29.0	24.8	32.7
ब–	8.5	11.0	17.0	21.0	27.0	28.0	25.5	24.5	24.0	20	13.0	9.0	18.4
महोबा अ–	23.2	27.0	36.0	38.0	43.0	41.0	34.5	32.5	33.0	32.8	29.0	25.0	32.9
ब–	8.5	10.0	16.5	21.0	26.5	28.0	25.0	24.0	24.0	19.9	13.0	9.0	18.8
बांदा अ–	23.7	27.9	34.1	39.5	43.0	40.8	34.0	32.1	33.1	32.8	29.2	25.2	32.9
ब–	9.6	11.8	17.3	22.8	28.0	29.4	26.4	25.6	24.8	20.4	12.9	9.6	19.9
चित्रकूट अ–	23.0	27.0	36.2	38.1	43.5	42.0	35.0	32.5	33.0	32.9	29.0	24.0	33.1
ब–	8.5	10.0	16.5	21.0	26.0	27.0	24.0	24.0	23.8	20.0	13.0	9.0	18.6

स्रोत–कार्यालय, कृषि विभाग– हमीरपुर, महोबा, बॉदा, चित्रकूट

अ– दैनिक अधिकतम तापक्रम का माध्य (सेन्टीग्रेड में)

ब– दैनिक न्यूनतम तापक्रम का माध्य (सेन्टीग्रेड में)

(iii) वर्षा ऋतु :– चित्रकूट धाम मण्डल में जून के तीसरे सप्ताह या जुलाई के प्रथम सप्ताह तक वर्षा प्रारम्भ हो जाती है और सितम्बर के अन्त तक होती रहती है। जुलाई और अगस्त में वर्षा विशेष रुप से दक्षिणी–पश्चिमी मानसूनों द्वारा होती है। दक्षिणी–पश्चिमी भाप भरी हवाएं जून के तीसरे सप्ताह तक इस पूरे भू–भाग पर आ जाती है। कभी–कभी यह मानसून हवाएं जल्दी कभी देर से आती हैं। भारत के उत्तरी–पश्चिमी भाग में स्थित निम्न वायुभार क्षेत्र मानसून हवाओं को आकर्षित करता है, जिससे बंगाल की खाड़ी से उठने वाली जल भरी हवाएं इस क्षेत्र पर आ जाती है और वर्षा करती हैं। विभिन्न क्षेत्रीय स्टेशनों से प्राप्त वर्षा के आंकड़ों के आधार पर ज्ञात होता है कि वर्षा की मात्रा सबसे अधिक चित्रकूट के पहाड़ी भाग पर है क्योंकि विन्ध्यन श्रेणियाँ इन हवाओं के बीच बाधक हो अपना प्रभाव डालती हैं।

CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
FIG. 2A-6
SUMMER RAINFALL
JUNE-SEPTEMBER
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
RAINFALL (IN CMS)
BELOW 90
90-99
100 AND ABOVE
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N

FIG 2A·7
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
WINTER RAIN FALL
NOVEMBER-FEBRUARY
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
RAINFALL (IN CMS)
BELOW 3
3-4
5-6
6 AND ABOVE
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
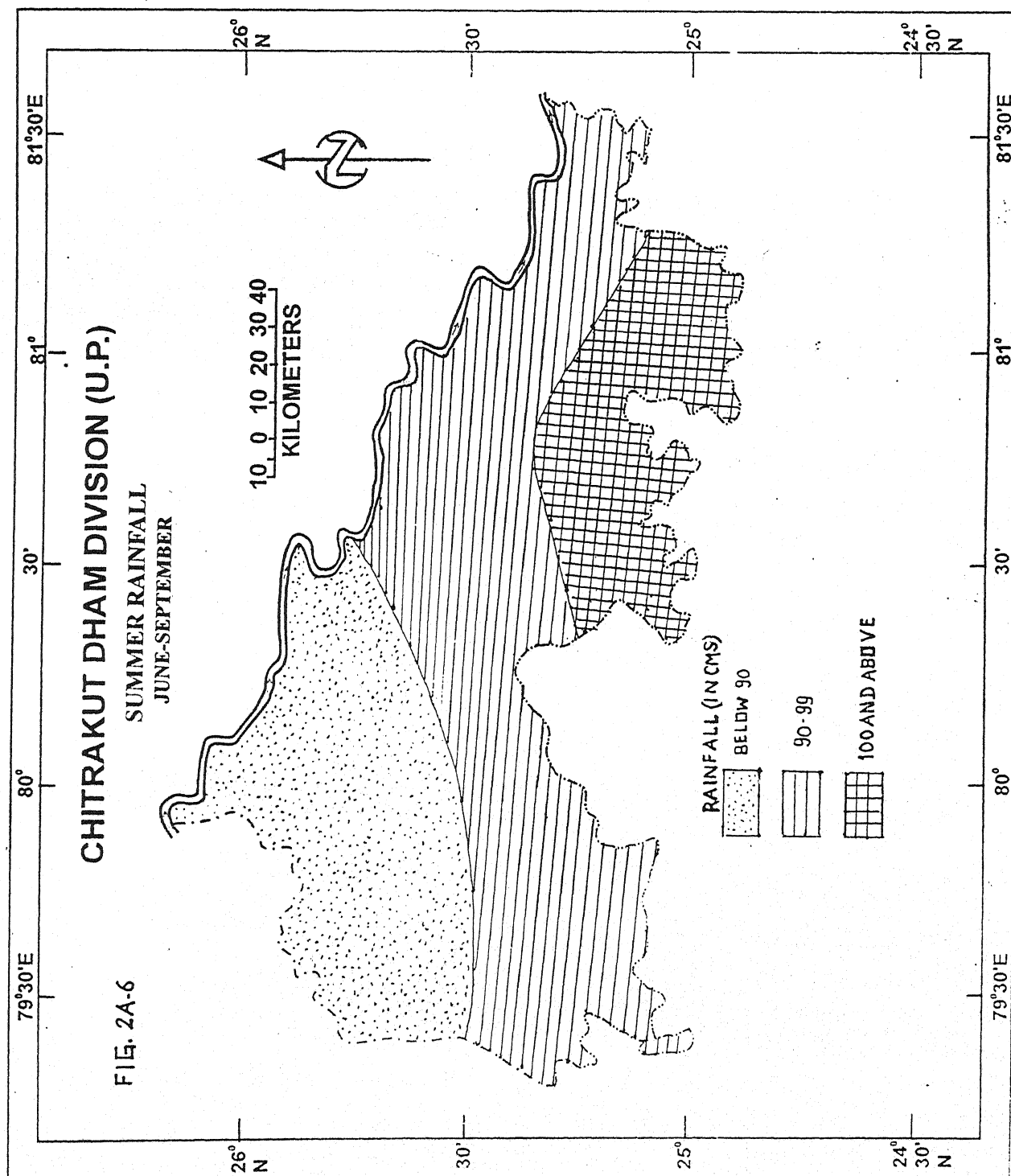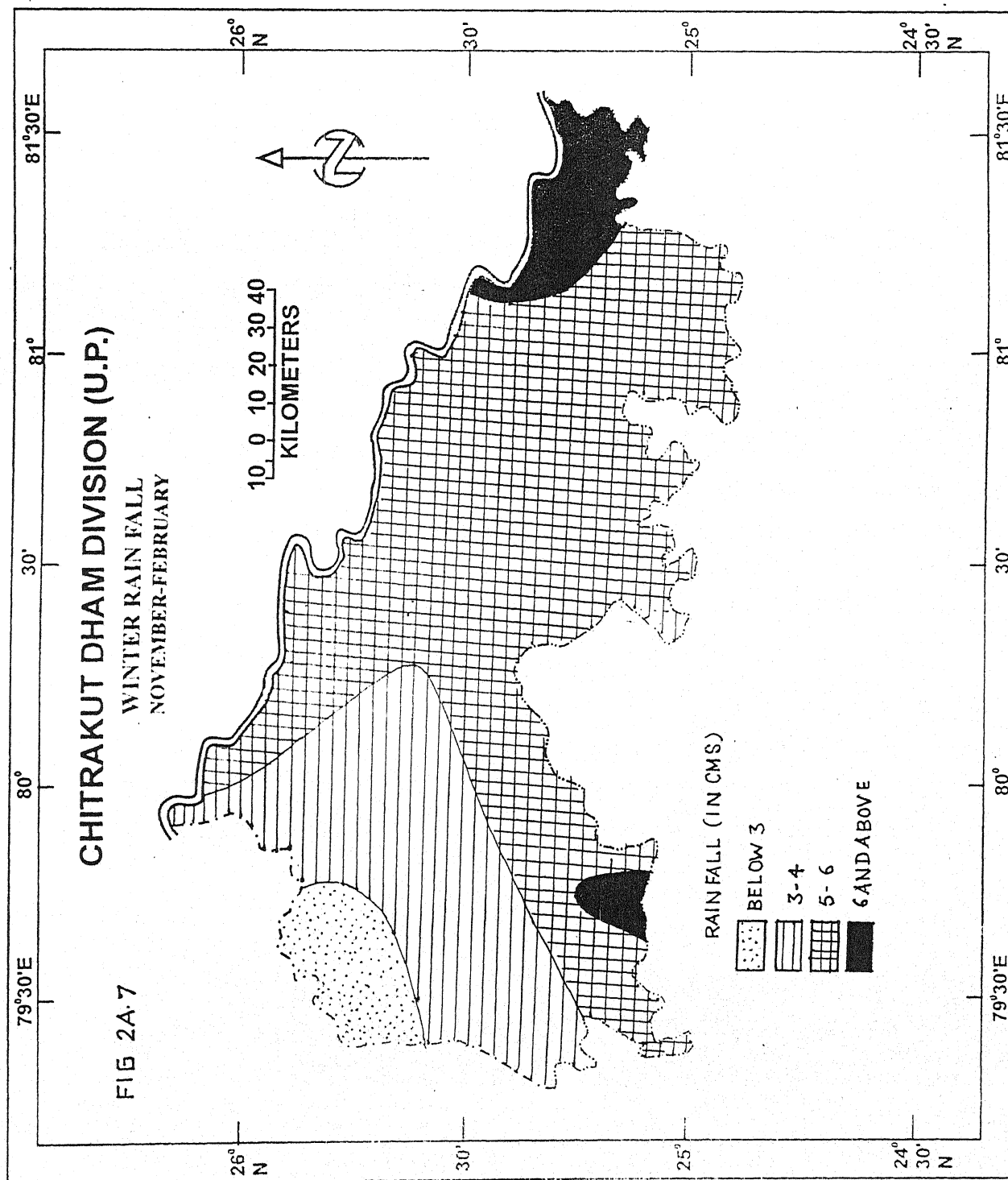
कर्वी तहसील में 103 सेमी0, चरखारी, महोबा, बांदा, बबेरु, अतर्रा, नरैनी और मऊ तहसीलों में 90–100सेमी0 के बीच वर्षा होती है। आगे बढ़ने पर हमीरपुर, मौदहा, राठ, और सरीला तहसीलों में 80–90 सेमी0 के बीच वर्षा होती है। वर्षा की मात्रा दक्षिण–पूर्व से उत्तर पूर्व की ओर क्रमशः कम होती जाती हैं।

तालिका सं. 2A-4 तथा (मानचित्र सं.2A-6)

कुल वर्षा का 90% भाग वर्षा ऋतु में होती है जिसमें 75% वर्षा जुलाई व अगस्त के महीने में ही होती है। विन्ध्याचल पर्वत श्रेणियों में अधिक वर्षा होने के कारण प्रायः मैदानी भाग में बाढ़ तथा मिट्टी के कटाव होने लगता है।

इस मौसम में आर्द्रता सर्वाधिक रहती है विशेषकर जुलाई एवं अगस्त महीने में आर्द्रता अन्य महीनों की अपेक्षा अधिक रहती है। (तालिका सं. 2A-4),बांदा तथा चित्रकूट के सिंचित भागों में आर्द्रता 90% रहती है एवं आकाश में मेघाच्छादन रहता हैं (चित्र 2A-8)

अक्टूबर में हवाएं धीरे–धीरे शक्तिहीन होने लगती हैं। वर्षा की मात्रा भी कम होने लगती है तथा साथ ही साथ तापक्रम भी कम होने लगता है। निम्नभार की पेटी धीरे–धीरे पूर्व की ओर खिसकनें लगती है तथा लौटती हुई मानसून का समय आ जाता है। ये लौटती हुई मानसून हवाएं नियमित रुप से नहीं चलती है, जिससे कभी–कभी वर्षा की बौछार इस भाग पर भी पड़ जाती हैं। अक्टूबर तक आर्द्रता कम होती रहती है। जिससे आकाश मेघ रहित रहते हैं और जाड़े की ऋतु का पुनः आगमन हो जाता है।

तालिका सं. 2A-4

चित्रकूट धाम मण्डल में औसत मासिक वर्षा का विवरण (इकाई–मि0मी0)

माह का नाम	हमीरपुर	महोबा	बांदा	चित्रकूट	औसत
जनवरी	9.00	8.50	9.00	9.50	9.00
फरवरी	7.10	7.00	7.20	7.20	7.12
मार्च	4.00	5.00	5.00	5.00	4.75
अप्रैल	2.00	2.40	2.50	2.50	2.35
मई	4.00	3.00	3.00	3.00	3.25
जून	66.00	70.00	70.00	73.00	69.75
जुलाई	306.00	308.50	309.00	321.00	311.12
अगस्त	260.00	261.00	262.00	276.00	264.75
सितम्बर	185.90	186.00	186.00	197.00	188.72
अक्टूबर	25.00	26.00	25.50	26.00	25.62
नवम्बर	6.00	7.00	6.50	7.00	6.62
दिसम्बर	20.50	21.00	20.00	21.00	20.62
योग	875.50	905.40	905.70	948.20	908.70

स्रोतः कार्यालय–कृषि विभाग, हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट

CHITRAKUT DHAMDIVISION(U.P)

RAINFALL, TEMPERATURE AND RELATIVE HUMIDITY
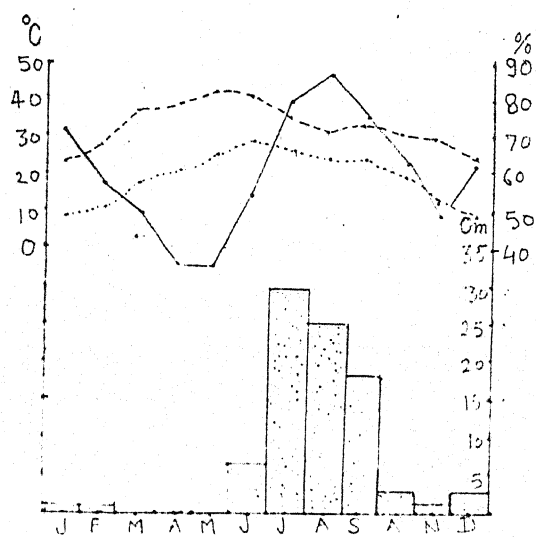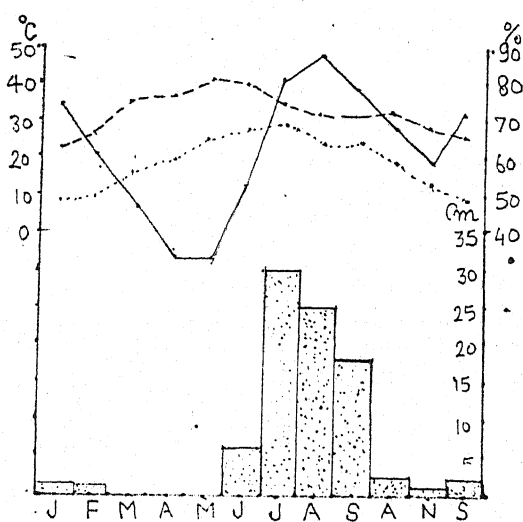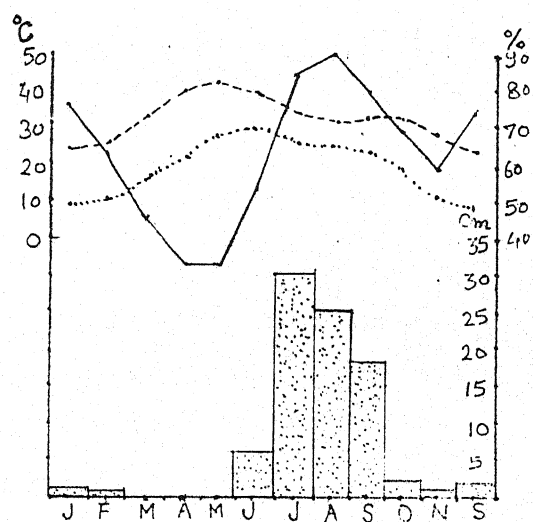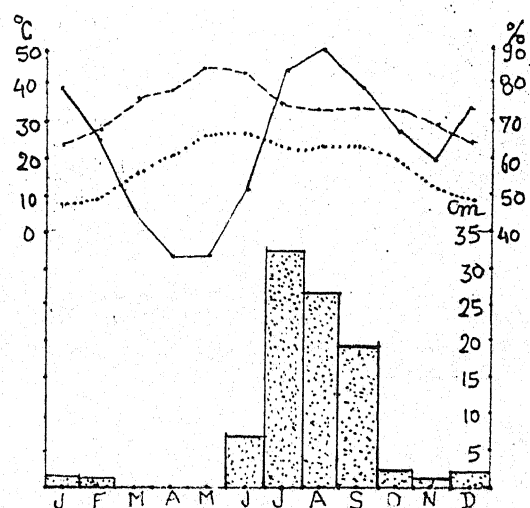
RAIN FALL

RELATIVE HUMIDITY

MAXIMUM TEMPERATURE

MINIMUM TEMPERATURE

FIG. 2A-8

तालिका सं. 2A-5

चित्रकूट धाम मण्डल में माध्य मासिक सापेक्षिक आर्द्रता का प्रतिशत

माह	हमीरपुर	महोबा	बाँदा	चित्रकूट	औसत
जनवरी	73	75	76	77	75.2
फरवरी	58	62	62	64	61.5
मार्च	49	48	48	47	48.0
अप्रैल	37	35	35	35	35.5
मई	36	35	35	34	35.0
जून	53	54	54	53	53.5
जुलाई	80	82	83	84	82.2
अगस्त	88	88	88	90	88.5
सितम्बर	77	80	80	81	79.5
अक्टूबर	64	68	69	68	67.2
नवम्बर	51	60	61	61	58.2
दिसम्बर	63	73	73	74	70.7
वार्षिक	61	63	64	64	63.0

स्रोतः कार्यालय–कृषि विभाग, हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट

वर्षा का मौसमी वितरण :– जून से सितम्बर तक में लगभग 90% वर्षा वर्षा ऋतु में हो जाती है। शेष वर्षा 10% पूरे वर्ष के अन्य महीनों में होती है। जाड़ों में वर्षा बहुत कम होती है। इस मण्डल में सबसे अधिक वर्षा वाली पेटी पूर्वी भाग है, जहां 100सेमी. से अधिक वर्षा होती है। दूसरी पेटी 90 से 100 सेमी. की वर्षा वाली है। यह चित्रकूट तथा बांदा जनपदों के उत्तरी भागों तथा महोबा जनपद के दक्षिणी भागों में विस्तृत है। तीसरी पेटी 80–90सेमी. वर्षा वाली है, जिसके अर्न्तगत हमीरपुर जनपद तथा महोबा जनपद के उत्तरी भाग आते हैं।(मानचित्र सं. 2A-5)

जाड़े की ऋतु में सर्वाधिक वर्षा मऊ तहसील में 6.9 सेमी. तथा सबसे कम वर्षा राठ तहसील में होती है। यहाँ 3सेमी. से भी कम वर्षा होती हैं। यद्यपि यह क्षेत्र रवी की फसल के लिए महत्वपूर्ण है परन्तु दोनों मौसम में कृषि की दृष्टि से वर्षा की मात्रा अपर्याप्त है।

वर्षा की विशेषताएं :– इस मण्डल में वर्षा की कुछ विशेषताएँ निम्नांकित हैं।

1) मण्डल में वर्षा का वितरण असमान है, जहाँ कुछ क्षेत्रों में वर्षा 100सेमी. से भी अधिक होती है तो वहीं कुछ भागों में 90 सेमी. से भी कम वर्षा पाई जाती है।
2) कुल वर्षा का 90% भाग दक्षिणी–पश्चिमी मानसून से गर्मी के मौसम में होती है और 10% अन्य हवाओं के माध्यम से होती है।
3) वर्षा का क्रम बीच–बीच में टूट जाता है, साथ ही साथ वर्षा कुछ दिन्नों के अन्तर से हुआ करती है, जिससे कृषकों को हानि उठानी पड़ती हैं।
4) ग्रीष्म कालीन मानसूनी हवायें पूर्व से पश्चिम की ओर तथा दक्षिण से उत्तर की ओर ज्यों–ज्यों आगे बढ़ती हैं त्यों–त्यों कम वर्षा करती है।

5) ग्रीष्म कालीन वर्षा कभी इतनी जोरों से होती कि नदियों में बाढ़ आ जाती हैं परन्तु कभी–कभी इतनी कम होती है कि अकाल पड़ जाता है। बांदा में 1865 में 55.36 से0मी0, हमीरपुर 1888 में 25.40 से0मी0, महोबा में 1877 में 45.72 से0मी0 वर्षा हुई।[18]

6) वर्ष का अधिकाशँ भाग सूखा रहता है। 90% वर्षा केवल ग्रीष्म ऋतु के 4 महीनों में हुआ करती है।

7) वर्षा प्रायः मोटी धार के रूप में होती है अतः भूमि का कटाव अधिक होता है तथा कृषि योग्य भूमि बह जाती है।

8) वर्षा अनिश्चित है, कभी–कभी वर्षा निश्चित समय के पहले ही प्रारम्भ हो जाती है और समय के पहले ही समाप्त हो जाती है। इस अनिश्चितता के कारण कृषि में बड़ी हानि उठानी पड़ती है। इसलिये कहा गया है कि भारतीय कृषक मानसून से जुआ खेलते है।

2-A(v) मिट्टियाँ (Soil) –

प्राकृतिक संसाधनों में मिट्टियों का अत्यधिक महत्व है, क्योंकि इसी पर किसी प्रदेश या क्षेत्र का सम्पूर्ण कृषि उत्पादन एवं जैव जगत निर्भर करता हैं। अमरीकी भूमि विशेषज्ञ डॉ. बेनेट के अनुसार मिट्टी भू–पृष्ठ पर मिलने वाले असंगठिन पदाथों की वह ऊपरी पर्त है, जो मूल शैलों जलवायु एंव जैव किया से बनती हैं। [19] अतः मिट्टियों का निर्माण जलवायु तथा शैलों के विखण्डन के फलस्वरुप होता है।

मानव का मृदा से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों ही रुपों सम्बन्ध है। मिट्टी से फसलें उत्पन्न होती हैं जिससे खाद्य समस्या की पूर्ति होती है। फसलों के द्वारा उद्योगों को विविध प्रकार का कच्चा माल प्राप्त होता है। मिट्टी के द्वारा विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक वनस्पतियों का उत्पादन होता है, जिससे मानव को वनों से बहुमूल्य उपज तथा लकड़ी प्राप्त होती है, जिसका उपयोग विभिन्न उद्योगों में किया जाता है। घास का प्राकृतिक वनस्पति के रुप में उत्पादन होता है तथा घास पर आधारित जीव–जन्तुओं द्वारा विभिन्न वस्तुएँ (दूध, माँस, चमड़ा, ऊन व हड्डी) प्राप्त होती है। मिट्टी के द्वारा ही मनुष्य अपनी स्थाई व अस्थाई बस्तियों का निर्माण तथा स्थलीय यातायात के साधनों का विकास करता है। अतः 'मिट्टी आर्थिक विकास की आधारशिला है।' मिट्टी के अभाव में मानव के उपयोग में आने वाली उक्त सभी वस्तुऐं प्राप्त नहीं हो सकती। [20]

चट्टानों में जलवायु एवं छोटे–छोटे कीटाणुओं की निरंतर क्रियाशीलता के कारण चट्टानें छोटे–छोटे कणों में टूट जाती है, जिससे मिट्टी का जन्म होता है। शैलों को तोड़नें में ताप, वर्षा, वायु और बहते हुए जल एंव ग्लेशियर का विशेष हाथ रहता है, जो इन टूटे हुए कणों को लाकर इकठ्ठा करते हैं एवं पृथ्वी पर बिछा देते हैं' मिट्टी में शैल, खनिज, पौधों तथा जीवजन्तुओं का मिश्रण होता है। इस प्रकार मिट्टियाँ अपने जन्म स्थान के भौर्भिक इतिहास को प्रतिबिम्बित करतीं हैं। [21] क्षेत्रीय सर्वेक्षण करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि चित्रकूट धाम मण्डल में जलवायु की अपेक्षा चट्टानों की प्रकृति व धरातलीय ढ़ाल, मिट्टी की उत्पत्ति के लिए विशेष उत्तरदायी है। इस मण्डल की मिट्टियाँ अपनी उत्पत्ति के लिए प्रायः स्थानीय शैल समूह से अधिक सम्बन्धित है। भूतात्विक विविधता के कारण उनमें अत्यधिक अन्तर परिलक्षित होता है। विन्ध्यन तथा आर्कियन नीस एंव ग्रेनाइट्स शैलों की भूगर्भीय

संरचना नें यहाँ की मिट्टियों को मुख्य रुप से प्रभावित किया है। यहाँ विन्ध्यन श्रेणियों की शैलों के विघटन होने से बलुई मिट्टी का निर्माण हुआ है, जबकि ग्रेनाइट शैलें काली एवं लाल मिट्टी की संरचना के लिए उत्तरदायी हैं।

चित्रकूट–धाम मण्डल की मृदा का वर्गीकरण :– (Classification of Soil)

चित्रकूट–धाम मण्डल में मुख्यतः काबर, मार, पडुवा तथा रांकर मिट्टियाँ पायी जाती हैं। काबर तथा मार मिट्टियों को प्रथम समूह में एवं पडुवा तथा रांकर मिट्टियों को दूसरे समूह में रखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त ऊँचें भागों में बलुई मिट्टी, नदियों के किनारे कछारी तथा तराई मिट्टियाँ पायी जाती हैं। (मानचित्र 2A-9) जिन्हे निम्नलिखित रुप में वर्गीकृत किया जा सकता है:–

1. ऊपरी भाग की मिट्टियाँ :– इस प्रकार की मिट्टियाँ कर्वी तथा मऊ तहसीलों में,एवं विन्ध्यन श्रेणियों के दक्षिणी –पश्चिमी किनारे पर पायी जाती है। यह मिट्टी विभिन्न श्रेणियों से विघटित बलुआ पत्थर से निर्मित है।

2. निम्न भाग की मिट्टियाँ :– निम्न भाग की मिट्टियों के अर्न्तगत मार, काबर, पडुवा तथा रांकर मिट्टियाँ पायी जाती हैं।

3. मार मिट्टी :– इस प्रकार की मिट्टी बांदा, हमीरपुर तथा मौदहा तहसीलों के निचले भागों में विस्तृत है। हमीरपुर तथा महोबा जनपदों में यह क्रमशः 25% तथा 7% बाँदा में 20% तथा चित्रकूट में 15% भाग पर इसका विस्तार हैं। इस मिट्टी में उत्तम संरचना के कारण नमी संचित करने की अपूर्व क्षमता है। यह उपजाऊ मिट्टी होती है, जिसमें बहुत समय तक लगातार कृषि की जा सकती है, तथा सिंचाई व खाद की आवश्यकता भी कम होती है। वर्षा ऋतु में अधिक नम हो जाने से यह चिकनी हो जाती है तथा स्थान–स्थान पर दलदली भाग बन जाते हैं। यह मिट्टी गेंहूँ, चना, गन्ना आदि के लिए उपयोगी हैं। यह मिट्टी काले रंग की होती है, जिसमें छोटे–छोटे कंकड़ भी पाये जाते हैं। इसमें लोहा, चूना तथा अल्मूनियम की मात्रा अधिक होती है तथा फॉस्फोरिक, सल्फ्यूरिक एवं कार्बोलिक एसिड, नेत्रजन एंव जीवांश की मात्रा बहुत कम होता है। नेत्रजन तथा जीवांश की कमी का प्रमुख कारण धरातलीय तापक्रम की अधिकता तथा गोबर व हरीखाद का कम प्रयोग होना है।

4. काबर मिट्टी :– यह मिट्टी मार मिट्टी से काफी मिलती जुलती है। यह सामान्यतः दो प्रकार की होती है।

(1) पूर्णतः काली, जो मार मिट्टी से काफी मिलती जुलती है।

(2) आंशिक काली

आंशिक काली किस्म की मिट्टी काबर व पडुवा मिट्टी से मिलकर बनती है। मार मिट्टी की तरह यह मिट्टी भी अपने में नमी संचित रखने की अपूर्व क्षमता रखती हैं। यह मिट्टी जब नम हो जाती है तो मुलायम हो जाती हैं। सूखने पर यह कठोर हो जाती है तथा भू–सतह में गहरी दरारें पड़ जाती है। मार तथा काबर मिट्टी में भिन्नता चूने की उपस्थिति तथा अनुपस्थिति से मालूम होती है। जब मिट्टी में चूने के कणों की उपस्थिति अधिक होती है तो मार मिट्टी कहलाती हैं। यदि इसमें चूने की कमी हो तो वह काबर मिट्टी कहलाती है। रंग में मार मिट्टी अधिक काली होती है, जबकि काबर

CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
SOILS
FIG. 2A.9
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
MAR
KABAR
RED & YELLOW
PARUA
FOREST
RANKAR
ALLUVIAL
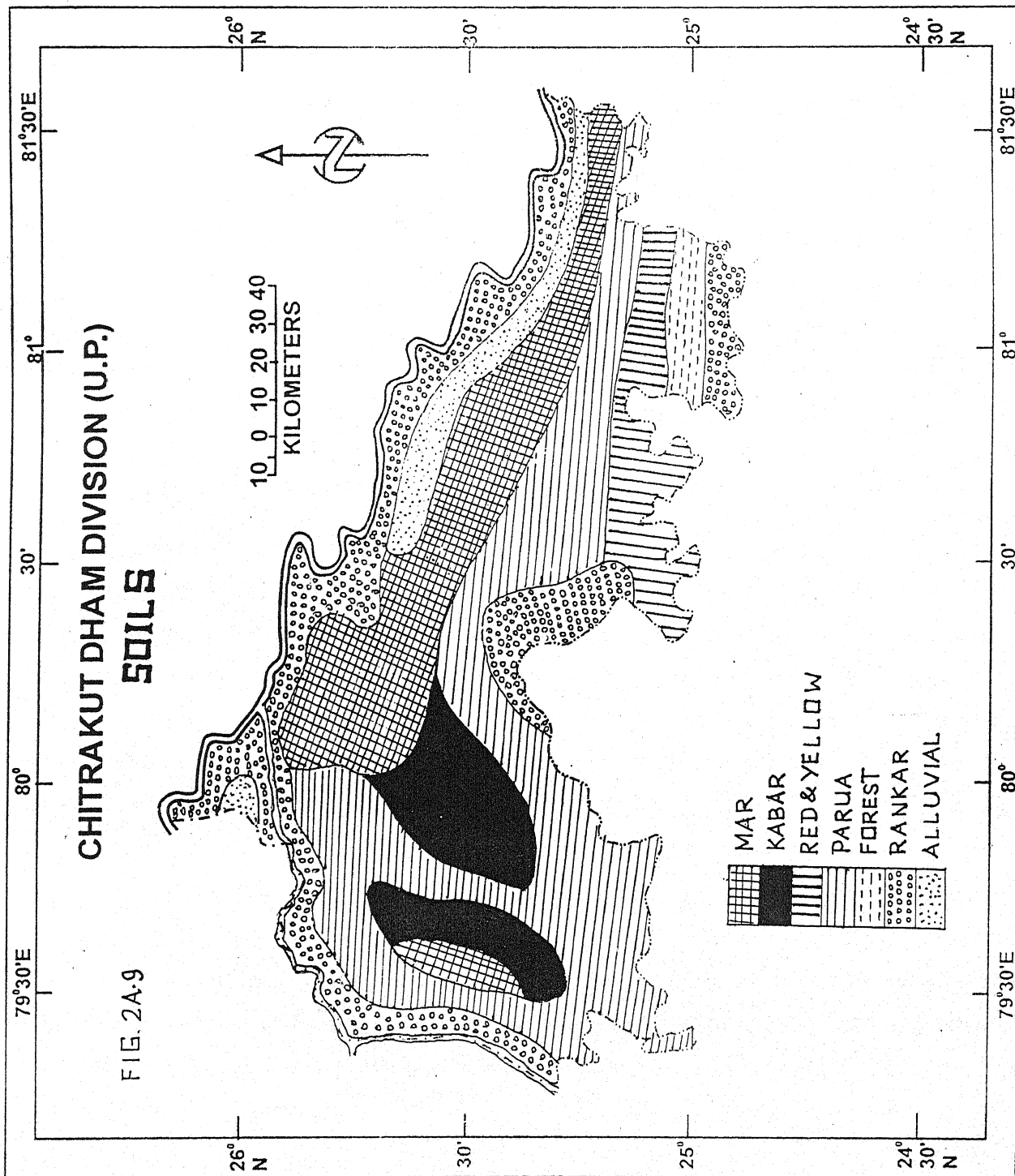
मिट्टी अधिक काले से भूरे काले की बीच की होती है। यह स्लेटी काले रंग की भी होती हैं, परन्तु इस आधार पर इन दोनों मिट्टियों के बीच अन्तर नहीं किया जा सकता है। काबर मिट्टी हमीरपुर में 26%, महोबा में 23%, बांदा में 18%, तथा चित्रकूट में केवल 15% भाग पर विस्तृत है।

काबर मिट्टी हमीरपुर, बांदा, चित्रकूट जनपदों के निचले समतल भागों में मार तथा पडुवा के बीच पायी जाती है। मार तथा काबर दोनों ही मिट्टियाँ अधिक उपजाऊ हैं। सामान्यतः इन मिट्टियों की उत्पत्ति से लावा बनी चट्टानों के टूटने से मानी जाती हैं क्रेब्स[22] ने इन मिट्टियों की उत्पत्ति किसी प्रकार की चट्टानों के द्वारा न मानकर धरातल व वायु के संयुक्त प्रभाव के कारण माना है।

वाडिया[23] का भी विचार है कि काली मिट्टी का क्षेत्र दकनट्रेप के किनारे–किनारे न होकर नीस चट्टानों वाले क्षेत्र में फैला हुआ है। इस मिट्टी में लोहा चूना तथा एल्मूनियम की मात्रा अधिक होती है, परन्तु फासफोरस तथा जीवांश की कमी है। पोटाश की मात्रा असमान है परन्तु अधिक नहीं है। यह मिट्टी गेहूँ, मसूर, लाही, मटर,गन्ना तथा कपास के उत्पादन के लिए उत्तम होती है।

लाल मिट्टी :– इस मिट्टी का निर्माण ग्रेनाइट एवं नीस चट्टानों के अपक्षय एवं अपरदन के परिणाम स्वरुप हुआ है। नीस चट्टानों के ऊपर यह मिट्टी काफी सघन है परन्तु लोहे की मात्रा की भिन्नता के कारण यह भूरे, चाकलेट, पीले या स्लेटी रंग की दिखाई पड़ती है। इस मिट्टी में चूना, मैग्नीशिया फॉस्फेट तथा नेत्रजन की कमी हैं। यह दो प्रकार की होती है–

(i) पडुवा (ii) रांकर

(i) **पडुवा मिट्टी** :– इस मिट्टी का रंग लोहे की भिन्नता के कारण पीले या स्लेटी रंग के बीच दिखायी पड़ती है। यह मिट्टी हमीरपुर, महोबा, बांदा तथा चित्रकूट जनपदों में मार तथा काबर मिट्टियों के साथ पाई जाती हैं। इसका विस्तार हमीरपुर में 25% महोबा में 40% बांदा में 35% तथा चित्रकूट जनपद में 35% भाग पर है। यह मिट्टी खाद व सिंचाई से अधिक उपजाऊ हो जाती है। यह गेहूँ की उपज के लिए उत्तम है। इस मिट्टी में लोहा, चूना, फासफेट तथा नेत्रजन की कमी है। इस मिट्टी में भू– क्षरण अधिक होता है।

(ii) **रांकर मिट्टी** :– रांकर मिट्टी का विस्तार हमीरपुर में 23% महोबा में 20% बांदा में 25% तथा चित्रकूट में 27% भाग पर है। यह कंकरीली शुष्क मिट्टी है। यह मिट्टी ढालू भू–भाग तथा बीहड़ भागों में पायी जाती है। बांदा तथा चित्रकूट जनपदों में चट्टानी टुकड़ों के साथ विभिन्न आकार की पाई जाती है। इसका उपयोग अधिकतर सड़क निर्माण के लिए किया जाता है। यह जल धाराओं द्वारा पाठा तथा मैदानी भागों से बहाकर लाई गई है। रांकर मिट्टी में भू–क्षरण अधिक होता है। भूगर्भिक रचना के आधार पर रांकर मिट्टी को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है–

(क) लाल रांकर तथा

(ख) भूक्षरण द्वारा निर्मित रांकर

(क) **लाल रांकर** :– यह मृदा प्राचीन रवेदार चट्टानों के अपक्षय एंव अपरदन की क्रियाओं के परिणाम स्वरुप निर्मित हुई है। इसमें लोहे की मात्रा अधिक होने से इसका रंग लाल होता है। ऊपरी ऊँचे भागों में मैग्नीशियम का अंश अधिक पाया जाता है। यह मिट्टी कृषि के लिए अधिक उपयुक्त नहीं है, किन्तु सिंचाई सुविधाओं एवं उर्वरकों के प्रयोग से इसमें कृषि सम्भव है।

(ख) भूक्षरण द्वारा निर्मित रांकर :— यह पूर्णरुपेण क्षरण क्रिया द्वारा बनी है तथा अनुपजाऊ होती है।

नदियों के किनारे की मिट्टियाँ :— (Riverine Soil) यह मिट्टी चिकनी होती है, जो कछारी तथा तरी (Tari) मिट्टी के नाम से सम्बोधित की जाती हैं ये मिट्टियाँ उपजाऊ है क्योंकि प्रतिवर्ष आने वाली बाढ़ के कारण इन भागों में नवीन काँप बिछा दी जाती है। ये भाग 'खादर' के भाग हैं। इस प्रकार की मिट्टियों में विभिन्न प्रकार के चट्टानों के टुकड़े सम्मिलित रहते हैं। ये टुकड़े जलधाराओं द्वारा बहकर तटवर्ती भागों में जमा कर दिये जाते हैं। नदियों के निकटवर्ती भाग खादर की निम्न भूमि कहलाती है। इस मिट्टी में भूक्षरण अधिक होता है। खीरा, ककड़ी, तरबूज तथा सब्जियों के उत्पादन के लिए यह मिट्टी बहुत उत्तम है।

अन्य मिट्टियाँ या स्थानीय मिट्टियाँ :— ये मिट्टियाँ गाँवों के समीप पाई जाती हैं जो मार, काबर , पडुवा तथा रांकर मिट्टियों से ही सम्बन्धित है परन्तु स्थान–स्थान पर उनके नामों में भिन्नता पाई जाती है। इन मिट्टियों में जीवांश की मात्रा अधिक पाई जाती है। बबेरु, बदौसा, गिरवां तथा कर्वी में पाई जाने वाली मिट्टी का स्थानीय नाम 'सिगवाँ' है जो 'पडुवा' जाति की है। बांदा जिले के 'पाठा' तथा 'पहाड़ी' क्षेत्र में 'सेतवारी' नाम की मिट्टी मिलती हैं। 'सेतवारी' का अर्थ है–'हल्की बलुई मिट्टी' 'गोरेहर' मिट्टी साधरणतः पडुवा तथा रांकर मिट्टी की तरह है। यहाँ कहीं–कहीं 'ऊसर' तथा 'रेह' मिट्टी पायी जाती है, जिसमें सोडियम, कैल्शियम और मैग्नीशियम लवणों की मात्रा अधिक होने से ये मिट्टियाँ प्रायः अनुत्पादक होती हैं।

मण्डल में घटती मृदा की उत्पादक क्षमता :—

गोबर तथा खाद के घटते प्रयोग तथा रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक प्रयोग से चित्रकूट धाम मण्डल की उपजाऊ मिट्टी में सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी होने लगी है। परिणामतः पूरे मण्डल में उत्पादकता पर विपरीत प्रभाव पड़ने लगा है। किसानों के लिए यह एक खतरनाक संकेत है।

इस तरह के तथ्य कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दी गई मिट्टी की जाँच (मृदा परीक्षण 2002–2003) से उभरकर सामने आए हैं। विशेषतः गेहूँ व धान की फसल के लिए आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्व 'जिंक' की अत्यधिक कमी चित्रकूट धाम मण्डल के चारों ओर पाई गई। इससे धान की उत्पादकता में 19% तथा गेहूँ की उत्पादकता में 38% से ज्यादा गिरावट आई है।

चित्रकूट धाम मण्डल के बाँदा, महोबा, हमीरपुर एंव चित्रकूट जिलों के कुछ गाँवों का चयन करके मिट्टी के नमूने लिए गए और जाँच की गई है। कृषि वैज्ञानिकों की जाँच में यहाँ की मिट्टी में जस्ता, तांबा, मैग्नीज तथा लोहे की कमी पायी गई।

बाँदा एंव चित्रकूट जिलों में मिट्टी में सूक्ष्म पोषक तत्वों की जाँच के लिए 103 नमूनों का परीक्षण मण्डलीय भूमि संरक्षण विभाग द्वारा किया गया। इसमें 28.3% नमूनों में जस्ता, 5.8% नमूनों में ताँबा, तथा 1% नमूनों में लोहे की कमी पाई गयी। बाँदा सदर उपसंभाग के 'बड़ोखर खुर्द' गांव में लिए गए नमूनों में 15% नमूनों में जस्ते की कमी पाई गई। बबेरु उपसंभाग के 'पतवन' गांव के नमूनों में 71% से ज्यादा, नरैनी उपसंभाग के पचोखर गांव में 12% नमूनों में जस्ता कम पाया गया। कुछ नमूनों में लोहे की कमी पाई गयी। चित्रकूट जिले के कर्वी उपसंभाग के 'बरवारा' गांव में करीब 85% नमूनों में

जस्ता कम पाया गया। यहाँ ताँबा भी काफी नमूनों में कम पाया गया। मऊ उपसंभाग के छिउलहा गांव के लिए गए नमूनों में 88% से ज्यादा में जस्ते की कमी पाई गयी।

हमीरपुर जिले में जो नमूनें लिए गए उसमें 83.3% में जस्ते की कमी पायी गई। हमीरपुर सदर उपसंभाग के 'अमिरता गांव' की मिट्टी में जस्ते की हालत सबसे दयनीय हैं। राठ उपसंभाग के 'सरसई गांव' में 70% व मौदहा उपसंभाग के पिपरौंदा गांव में 80 नमूनों में जस्ते की कमी पाई गयी।

महोबा में 40.5% नमूनों में जस्ते की कमी पाई गई। यहाँ के कई गांवों में लोहे की भी कमी पाई गई। महोबा उपसंभाग के मिरतला गांव में 35.3% नमूनों में जस्ता कम पाया गया। वहीं जैतपुर उपसंभाग के 'मुडारी गांव' के 10% नमूनों में लोहा, मैंगनीज की कमी पाई गई।[24]

कृषि वैज्ञानिकों का मानना है कि जस्ते की कमी के परिणाम स्वरुप धान व गेहूँ की उत्पादकता कम हो जाती हैं मिट्टी में सूक्ष्म पोषक तत्वों, विशेषतः जस्ते की कमी का मुख्य कारण हरी खाद, गोबर की खाद, कम्पोस्ट खाद का उपयोग कम करना है। प्रायः किसान नाइट्रोजन, पोटास, फास्फोरस खादों का उपयोग करते हैं। इसमें किसी भी तरह से सूक्ष्म पोषक तत्वों की गुंजाइश नहीं रह जाती। कृषि–विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार जस्ते की कमी से चित्रकूट धाम मण्डल में धान व गेहूँ की उत्पादकता घटी है।

मण्डल में भू–क्षरण :–

मृदा प्रकृति प्रदत्त आधारभूत संसाधन है, जिस पर जल एंव वनस्पति के साथ मानव एंव अन्य प्राणियों का अविरल विकास चिरकाल से हो रहा है। इस संसाधन का समुचित संरक्षण प्रबन्धन एंव विकास न होने के कारण उत्पादन में कमी के साथ साथ वानस्पतिक विविधता तथा पर्यावरण क्षरण में वृद्धि हो रही है। मृदा संसाधन के उपेक्षित विकास तथा अवैज्ञानिक उपयोग से भूक्षरण बीहड़ एंव जलभराव आदि की समस्याएं उत्पन्न हुई हैं जिसके कारण कृषि उत्पादन प्रभावित हुआ है।

चित्रकूट मण्डल भूक्षरण की समस्या से अछूता नहीं हैं। इस भू भाग पर अधिक तापक्रम, ढालूभूमि, वनों का अभाव तथा पशुओं की अधिक चराई के कारण भूक्षरण को अत्याधिक प्रोत्साहन मिला है। नदियों एंव नालों के कारण मण्डल की कृषि योग्य भूमि का लगभग 70% भूमि कटाव एंव बीहड़ जैसी समस्या से ग्रस्त है। भूमिक्षरण के कारण इन नदियों के तट बाँध एंव उसके आस पास के क्षेत्र इतने ऊबड़ खाबड़ हो गये हैंजिससे बीहड़ एंव खड्डे की स्थिति उत्पन्न होने से कृषि उत्पादन एंव अवस्थापना सुविधाओं का विकास प्रभावित हो रहा है । (मानचित्र 2A–10)

इस मण्डल के 50% से अधिक भाग में पडुवा तथा रांकर मिट्टियाँ हैं। जिनमें मिट्टी का क्षरण अधिक होता है। हमीरपुर जिले में 25% भाग में पडुवा मिट्टी तथा 23% भाग पर रांकर मिट्टी का विस्तार है। महोबा जिले में 40% भाग में पडुवा तथा 20% भाग में रांकर मिट्टी है, बांदा जिले में 35% भाग में पडुवा तथा 25% भाग में रांकर मिट्टी है, चित्रकूट जिले में 35% भाग में पडुवा तथा 27% भाग में रांकर मिट्टी का विस्तार है। इस प्रकार समस्त मण्डल भूक्षरण की समस्या से ग्रस्त है।

CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
SOIL EROSION
FIG. 2A·10
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
VERY HIGH EROSION
MODERATE EROSION
SMALL EROSION
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
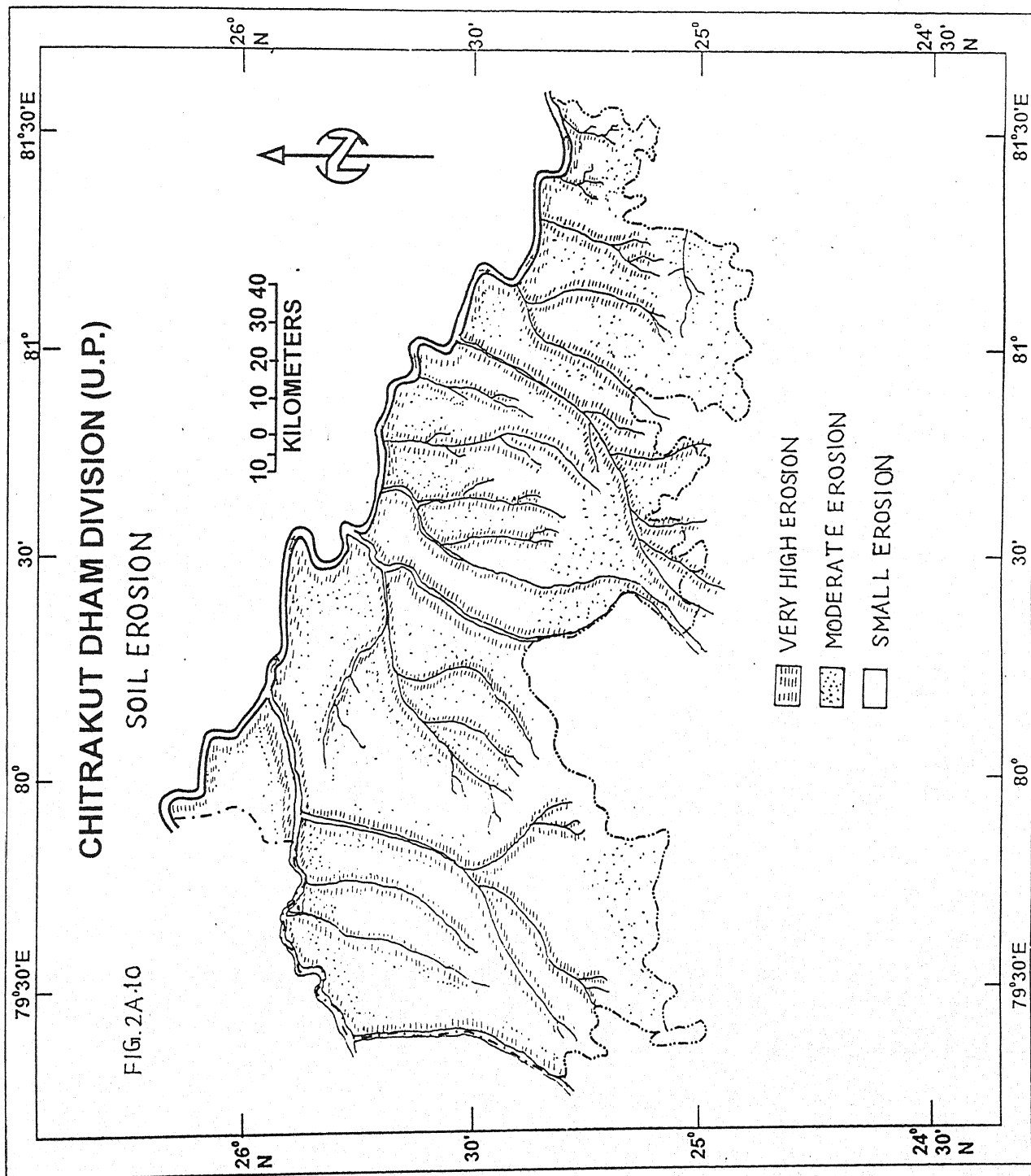
तालिका सं0–2A–6

चित्रकूट धाम मण्डल में भू–क्षरण प्रभावित क्षेत्रफल (वर्ग कि0मी0)

क्रम संख्या	जनपद का नाम	जनपद का कुल क्षेत्रफल (वर्ग कि0मी0)	भू–क्षरण से समस्याग्रस्त क्षेत्रफल (वर्ग कि0मी0)	कुल क्षेत्रफल में समस्याग्रस्त क्षेत्रफल का प्रतिशत	जनपद का भू–क्षरण का प्रतिशत
1.	हमीरपुर	4121.90	2852.35	69.20	29.51
2.	महोबा	3071.00	2118.99	69.00	21.92
3.	बाँदा	4114.20	2472.63	60.10	25.58
4.	चित्रकूट	3567.50	2222.55	62.30	22.99
मण्डल		148874.60	9666.52	64.99	100.00

स्रोत :– भूमि संरक्षण अनुभाग, हमीरपुर, महोबा, बादाँ, चित्रकूट – 2001

तालिका सं0 – 2A-6 से विदित है कि चित्रकूट मण्डल के जनपदों में भूमि के कुल क्षेत्रफल का सबसे अधिक भूक्षरण हमीरपुर जनपद में (69.20 प्रतिशत) है। महोबा में 69.00, बादाँ में 60.10, तथा चित्रकूट में 62.30 प्रतिशत भूक्षरण समस्या के अर्न्तगत है। चित्रकूट धाम मण्डल के सम्पूर्ण भाग में 64.99 प्रतिशत भूमि का क्षेत्रफल भू–क्षरण के अन्तर्गत आता है।

मण्डल में सभी जनपदों का प्रतिशत देखने से ज्ञात होता है कि सबसे अधिक भू–क्षरण हमीरपुर में है जो इस मण्डल का 29.51 प्रतिशत है। महोबा, बाँदा तथा चित्रकूट में क्रमशः 24.92%, 25.58% एवं 22.99% भाग भूक्षरण से प्रभावित है।

इस विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि मण्डल में 60.00 प्रतिशत से अधिक भूक्षरण की समस्या से ग्रस्त है। मिट्टी का अधिकाँश भाग अपक्षरित होकर बह जाने से मिट्टी की उर्वरा शक्ति का ह्रास बड़ी तीव्र गति से हो रहा है। साथ ही साथ हरी खाद, गोबर की खाद एवं कम्पोस्ट खाद का उपयोग कम होने से कृषि के आयोग्य भूमि बंजर (ऊसर) बनती जा रही है।

भूसंरक्षण (Soil Conservation)

'स्वायल कनजरवेशन सोसायटी आफ अमेरिका' के विशेषज्ञों के अनुसार – "भूसंरक्षण एक ऐसी प्रबन्ध प्रणाली है, जिसके द्वारा भूमि का प्रबन्ध उसकी क्षमता तथा आवश्यकता के अनुसार विभिन्न भूमि संरक्षण की पद्धतियों एवं विशिष्टियों को अपनाते हुए इस प्रकार करना है कि उक्त भूमि को बिना कोई क्षति पहुचाये अधिकाधिक उत्पादन किया जा सके।"

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि भूमि संरक्षण एक उपयोगी कार्यक्रम है, जिससे भूमि का उपयोग क्षमता के आधार पर उत्पादन प्राप्त किया जाता है। इसकी उपयोगिता को दृष्टिगत रखते हुए भूसंरक्षण के कई उद्देश्य निधारित किये गये हैं–

1. भू–संरक्षण द्वारा मृदा को उसकी क्षमता के अनुसार उपयोग में लाना है ताकि भूमि से निरन्तर अधिक खाद्यान्न, चारा,एवं ईंधन का उत्पादन प्राप्त होता रहे तथा उसकी उर्वरा शक्ति में कोई ह्रास न हो।

2. भूमि एवं जल के समुचित संरक्षण हेतु अभियांत्रिक एवं वानस्पतिक उपचारों का नियोजन एवं सम्पादन इस उद्देश्य से करना कि मृदा कटाव रुकने के साथ–साथ जल बहाव के साथ बहने वाली सिल्ट की मात्रा में कमी आये तथा उसकी संचयन क्षमता बनी रहे।
3. भूमि संरक्षण की विभिन्न विधियाँ अपनाकर जल प्रवाह को रोकना ताकि अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में बाढ़–विभीषका में कमी आये किन्तु कम वर्षा वाले क्षेत्रों में नमी संरक्षण एवं जल संचयन द्वारा सूखे पर नियन्त्रण पाया जा सके।
4. कटावग्रस्त ऊसर, बीहड़ तथा जलभराव की समस्याओं से ग्रस्त भूमि को सुधारकर कृषि योग्य बनाना तथा फसलोत्पादन करना।
5. असिंचित क्षेत्रों में नमी संरक्षण उपायों को कार्यान्वित कर कृषि की सघन पद्धतियों के प्रचार–प्रसार एवं उपयोग से कृषि–उत्पादन बढ़ाना।
6. भूमि–संरक्षण के सघन उपचारों से जल–संकट प्रबन्धन कार्य कर सतही एवं भूमिगत जल स्तर में वृद्वि करना।
7. ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीनों श्रमिकों एवं बेरोजगारों को रोजगार के स्थानीय अवसर सुलभ कराना तथा खाद्यान्न, चारा एवं ईंधन उत्पादन में इसकी उपलब्धता को निरन्तर बनाये रखना।
8. भूमि एवं जल संरक्षण के क्रियान्वयन से ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं पर्यावरण में सन्तुलन लाते हुए सुधार करना।

भू–संरक्षण के उपाय :– भूमि संरक्षण की विधियाँ एवं उपायों को दो मुख्य रुपों में विभाजित किया जा सकता है:–

(अ) वानस्पतिक विधियाँ

(ब) अभियान्त्रिक विधियाँ

(अ) वानस्पतिक विधियाँ :– इन विधियों के अर्न्तगत भूमि को सघन आच्छादन प्रदान करने वाली फसलों, पट्टीदार खेती, वानस्पतिक बाँध, चरागाह विकास तथा वनीकरण आदि कार्य आदि को सम्मिलित किया जाता है।

(ब) अभियाँत्रिक विधियाँ :– अभियाँत्रिक विधियों में समोच्चरेखीय बाँधों का निर्माण, समतलीकरण, अवरोधक बाँध, जलभराव बंधी, पक्के जल निकास आदि का निर्माण किया जाता हैं। उपरोक्त दोनों विधियों का प्रयोग अलग–अलग नहीं किया जाना है बल्कि समन्वित रुप से आवश्यकतानुसार जल समेट क्षेत्र के अनुसार दोनों विधियों को साथ साथ अपनाया जाना चाहिए। अतः भूमि संरक्षण सम्बन्धी कार्य जल समेट क्षेत्र के आधार पर ही लिया जाना आवश्यक एवं उपयुक्त होता है। जल समेट क्षेत्र के आधार पर भूमि संरक्षण कार्यक्रम लेने से यह ज्ञात किया जाता है कि क्षेत्र विशेष में पानी की उपलब्धता कितनी है एवं उस पानी को किस प्रकार एवं कहाँ–कहाँ नियंत्रित किया जाए ताकि क्षेत्र से अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने में तथा भूमि की उत्पादन क्षमता बढ़ाने में उसका उपयोग किया जा सके।

चित्रकूट मण्डल में भू–क्षरण उपचार :– भू–क्षरण को उपचारित करने के लिए इस मण्डल में 1957–58 से भू–संरक्षण कार्य प्रारम्भ किया गया है।

तालिका सं. **2A-7**

चित्रकूट धाम मण्डल में भूसंरक्षण के अन्र्तगत उपचारित क्षेत्रफल (वर्ग किमी.में)

वर्ष – 2000–01

क्र0 सं0	जनपद का नाम	भूमिक्षरण का क्षेत्रफल (वर्ग किमी. में)	भूमि संरक्षण द्वारा उपचारित क्षेत्रफल (वर्ग किमी. में)	भूमि संरक्षण का प्रतिशत	जनपद का भूमि संरक्षण का प्रतिशत
1	हमीरपुर	2852.35	1466.39	51.41	31.69
2	महोबा	2118.99	1044.66	49.30	22.58
3	बांदा	2472.63	1125.04	45.50	24.31
4	चित्रकूट	2222.55	991.26	44.60	21.42
चित्रकूट धाम मण्डल		9666.52	4627.35	47.87	100.00

स्रोत :– भूमि संरक्षण अनुभाग, हमीरपुर, महोबा, बाँदा, चित्रकूट

तालिका सं. **2A**–7 से ज्ञात होता है कि भूमि संरक्षण के अन्र्तगत सम्पूर्ण मण्डल में 47.87% भाग का उपचार किया गया है। सबसे अधिक उपचारित क्षेत्र हमीरपुर का 51.41% है एवं सबसे कम भूमि का उपचार चित्रकूट जनपद में 44.60% है जबकि महोबा एवं बाँदा का उपचारित क्षेत्रफल क्रमशः 49.30% एवं 45.50% है।

अतः स्पष्ट है कि इस मण्डल में भूमि कटाव की समस्या अत्यन्त गम्भीर है, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट हो रही है। साथ ही साथ कृषि योग्य भूमि की प्रति हेक्टेयर उपज कम हो रही है। अतः भूमि संरक्षण कार्यक्रम की प्रगति तीव्रतर तथा प्रभावशाली होनी चाहिए।

2A-(vi) प्राकृतिक वनस्पति :– (Flora)

पृथ्वी के सभी भागों में किसी न किसी प्रकार की वनस्पति अवश्य पायी जाती है चाहे वह झाड़ियों के रुप में हों अथवा सघन वनों के रुप में। जलवायु और मिट्टी के अन्र्तसम्बन्ध से ही वनस्पति उगती हैं वनस्पति को प्रभावित करने वाले मुख्य घटक हैं (i) तापमान (ii) जलपूर्ति (iii) प्रकाश (iv) पवन और (v) मिट्टी। चित्रकूट मण्डल में भारत की 'शुष्क महाद्वीपीय मानसूनी जलवायु' मिलती है, जिससे यहाँ तीन प्रकार की प्राकृतिक वनस्पतियाँ पायी जाती हैं (1) पर्णपाती वन (2) कँटीली झाड़ियाँ (3) घासें। (मानचित्र **2A-11**) प्राकृतिक रुप से उगनें वाले वृक्षों, पौधों, झाड़ियों और घासों के सम्मिलित रुप को फ्लोरा **(Flora)** कहते हैं।

(1) पर्णपाती वन :– चित्रकूट धाम मण्डल में पर्णपाती वन पाये जाते हैं। गर्मी की ऋतु में यह वन अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं। हमीरपुर तथा महोबा जनपद में मुख्य रुप से बंबूल, ढाक, सैजा, महुवा, नीम, पीपल, आम, जामुन, इमली, अर्जुन, बरगद आदि वृक्ष पाये जाते है। चित्रकूट जनपद के मऊ और मानिकपुर के जंगलों में अनेक प्रकार के वृक्ष पाये जाते हैं, जिनमें मुख्य रुप से महुवा, सेघ, धवा, खैर बाँसा, बाँस दुधिया, सांदन, तेंदु, आँवला, चिरौंजी, हल्दू, साल, सागौन, तथा बहेड़ा हैं। चित्रकूट तथा

FIG. 2A.11
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
NATURAL VEGITATION
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
N
RESERVED FOREST
OPEN FOREST
CHIEFLY SCRUB LAND
CHIEFLY GRAS LAND
CULTIVATED LAND AND OTHERS

बाँदा जनपद के मैदानी क्षेत्रों में आम, महुवा, पीपल, नीम, जामुन, बबूल, ढाक सेमल आदि के वृक्ष पाये जाते हैं।

(2) कटीली झाड़ियाँ :– ऊँचाई पर वर्षा की कमी के कारण काँटेदार झाड़ियाँ एवं काँटेदार वृक्ष पाये जाते हैं। मण्डल में करौंदा, बेरी, करील; कटैया, ऐल, आदि की झाड़ियाँ प्रमुख रुप से पाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त कॉटेदार वृक्ष, जैसे– बबूल, बेर, बेल, खैर, रीमाँ, कैथा, खैर आदि भी पाये जाते हैं।

(3) घासें :– निचली भूमि के बीचों बीच समतल भूमि पर तथा जंगलों में कई प्रकार की घासें पाई जाती हैं, जिससे पशुओं को चारा प्राप्त होता है। वर्षा ऋतु में घासें अधिक उगती हैं। ग्रीष्म ऋतु में ये सूख जाती है। यहाँ की मुख्य घासें दुद्धी, मोंथा, लेदरा, सेवई, कुश, कॉस, पसई दूब, मुसेल, आदि हैं। 'गोंद' तथा 'सरपत' बड़ी घासें हैं, जिन्हे पशु नहीं खाते। इनका प्रयोग छप्पर बनाने में किया जाता है। सरपत की सरई से सूपे बनाये जाते हैं। 'उरई' घास से झाडू बनाये जाते हैं तथा जड़ 'खस' के नाम से जानी जाती है जो टटियाँ बनाने के कार्य में प्रयुक्त होती है।

2–A(vii) वन्य जीव जन्तु (Fauna):– सभी प्रकार के जीव–जन्तु तथा बिना पालतू जानवरों के सम्मिलत समूह को फोना (Fauna) कहते हैं। वन्य जीवों का आवास, उत्पत्ति विकास एवं पोषण सभी कुछ वहाँ की जलवायु एवं वनस्पति पर स्पष्टतः निर्भर करता है। अतः जलवायु एवं वनस्पति तंत्र के लक्षण एंव स्वरुप के बदलते ही वन्य जीवों का स्वरुप आकार–प्रकार उनके लक्षण एंव आदतें भी परिर्वतित हो जाती हैं, जैसे विषुवत् रेखीय जलवायु का वन्य प्राणी, भूमध्य सागरीय जलवायु अथवा मरुस्थलीय जलवायु के जैव–जगत से पूर्णतः भिन्न होता है।

वन्य जीवों को आवास की दृष्टि से दो प्रकारों में विभाजित किया जाता है:–

(1) स्थलीय प्राणी (2) जलीय प्राणी।

भोजन के अनुसार जीव अथवा प्राणियों को तीन भागों में विभाजित किया जाता है:–

(1) शाकाहारी जीव **(Herbivores)** :– इसके अन्तर्गत घास, फल, फूल, पत्ते खाने वाले जीव आते हैं। चित्रकूट मण्डल में शाकाहारी जीवों में हिरन, खरगोश, गिलहरी, चिंकारा, नीलगाय, साही, बारहसिंघा आदि पाये जाते हैं। काले हिरन (Black buck) की दुर्लभ प्रजाति बांदा के चित्रकूट के वनों में देखने को मिलती है।

(2) माँसाहारी जीव **(Carnivores)** :– जो जीव पूर्णतः शाकाहारी जीवों पर निर्भर करते हैं। चित्रकूट मण्डल में सांभर, चीता, शेर, करॉयच, ऊदबिलाव, श्रंगाल, भेड़िया, डेगुरा (डगर) आदि माँसाहारी जीव पाये जाते हैं।

(3) सर्वाहारी जीव **(Omnivoses)** :– यह वे जीव होते हैं, जो शाकाहारी तथा माँसाहारी दोनों ही प्रकार के जैविक पदार्थों का उपभोग करते हैं। इनमें रीछ, लोमड़ी आदि जीव यहाँ प्रमुख रुप से पाये जाते हैं।

उपरोक्त जीवों के अतिरिक्त चित्रकूट तथा मानिकपुर के जंगलों में सांभर, तेंदुआ, शेर, करॉयच, रीछ डेगुरा (डगर) आदि जीव पाये जाते हैं।

अन्य जीव जन्तुओं में विषैलें जीव जैसे– साँप, बिच्छू, विषखापर आदि पाये जाते हैं। चित्रकूट मण्डल की बड़ी नदियों यमुना, वेतवा, केन, वागैं और घसान, पयस्वनी में बड़े अकार की मछलियाँ पायी

जाती हैं। बाँधों तथा यमुना नदी में मगर तथा घड़ियाल पाये जाते हैं। तालाबों में छोटी तथा बड़ी मछलियाँ पायी जाती हैं।

इस मण्डल में नाना प्रकार के पक्षी भी पाये जाते हैं। मोर, तोता, उल्लू, महोखर, नीलकंठ, बगुला, कोयल, सारस, बत्तख, कौवा, कबूतर, बाज, पपीहा, चमगादड़, कठफोरा, डौकी, गिद्ध, चील, चकहा, बया तथा अन्य कई छोटी रंग बिरंगी चिड़ियाँ पायी जाती हैं। सारस इस मण्डल का सबसे बड़ा पक्षी है।

वनों के विनाश एवं ह्रास से कई वन्य प्रजातियाँ सदा के लिए विलुप्त हो चुकी हैं। कुछ विलुप्त होने को हैं। मानिकपुर कें जंगलों में रीछ, साँभर आदि जीव गिने चुने रह गए है। मोर पर गहरा संकट है। खरगोश, तेंदुआ, बारहसिंहा, काला हिरण अब बहुत कम देखने को मिलते हैं। वनों की अन्धाधुन्ध कटाई करने से इनके आवास स्थल छीन लिये गये हैं जिससे ये शिकारियों के भोज्य पदार्थ बन गये हैं। नाना प्रकार के पक्षी जो कलरव करते हुए देखे जाते थे, उनकी अब कुछ प्रजातियाँ देखने को नहीं मिलती। चील एवं गिद्धों की संख्या भी अब उत्तरोत्तर कम होती जा रही है।

2-B- अध्ययन क्षेत्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

(Cultural Background of the Study Area)

2B(i) जनसंख्या:– किसी भी प्रदेश या क्षेत्र के लिए वहाँ निवास करने वाली जनसंख्या उस क्षेत्र के आर्थिक एवं औद्योगिक विकास का साधन तथा साध्य दोनों होती है। समस्त उत्पादन का मूल साधन मनुष्य ही है। वह अपने शारीरिक श्रम, बौद्धिक शक्ति तथा भौतिक साधनों का प्रयोग करके नयी रीतियों तथा प्रक्रियाओं की खोज करके उत्पादन की प्रक्रिया को जन्म देता है और आर्थिक विकास के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। सभी संसाधनो को जुटाकर मानवीय संसाधन ही उसे समन्वित करता है और उन्हें सेवा तथा माल के रूप में परिवर्तित करके 'राष्ट्रीय धन' के अधिकाधिक उत्पादन में सहायक बनाता है। यदि किसी प्रदेश या क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधन पर्याप्त हो किन्तु मानवीय संसाधन पर्याप्त एवं कुशल न हो, तो भी उस क्षेत्र विशेष का विकास संभव नही है। जैसा कि महतो ने कहा हैं कि–" *The economic development of a region is the function of its population growth if it has to absorb its entire manpower.*" [25]

आज के युग में किसी राष्ट्र की शक्ति में मानव की संख्या का ही नहीं बल्कि उसकी गुणवत्ता का महत्व अधिक बढ़ गया है। मनुष्य जो उत्पादन करता है, उसका उपभोग भी वही करता है। वस्तुओं ओर सेवाओं के लिए बाजार काफी बड़ी सीमा तक जनसंख्या के आकार पर निर्भर करता है। किसी देश में बड़े पैमाने की उत्पादन प्रणाली को अपनाया जायेगा अथवा नही, यह भी देश की जनसंख्या पर ही निर्भर करता है।

चित्रकूट धाम मण्डल की जनसंख्या पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि उत्तर प्रदेश के 6.17% क्षेत्रफल में प्रदेश की 2.44% जनसंख्या निवास करती है।सन् 1991 की जनगणनानुसार चित्रकूट धाम मण्डल की कुल जनसंख्या 3328630 थी, जो 2001 में बढ़कर 4052050 हो गई। 2011 तक चित्रकूट धाम मण्डल की जनसंख्या 48,62,460 हो जाने का अनुमान हैं। चित्रकूट धाम मण्डल का सर्वाधिक जनसंख्या वाला जनपद बाँदा है। सन् 2001 की जनगणनानुसार जहाँ की जनसंख्या 15,00253 है। इसके बाद हमीरपुर जनपद द्वितीय स्थान पर आता है, जहाँ जनसंख्या 1042374 है। तत्पश्चात् चित्रकूट जनपद की जनसंख्या 800522 तथा महोबा जनपद की जनसंख्या 708831 है। मण्डल का सर्वाधिक जनसंख्या वाला विकासखण्ड बड़ोखर खुर्द है, द्वितीय स्थान पर नरैनी विकासखण्ड तथा तृतीय स्थान पर कबरई विकासखण्ड है।रामनगर विकासखण्ड में सबसे कम जनसंख्या का जमाव पाया जाता है।

जनसंख्या की वृद्धि दर (Growth rate of population)

एक निश्चित अवधि के बाद जब किसी देश या प्रदेश की जनसंख्या में जो परिर्वतन होता है, वह उसकी जनसंख्या वृद्धि कहलाती है। जनसंख्या की यह वृद्धि धनात्मक एवं ऋणात्मक दोनों में से कोई भी हो सकती है। यह वृद्धि दर वार्षिक एवं दशकीय आधार पर बताई जाती है, जिसे संख्या एवं प्रतिशत दोनो रूपों में व्यक्त किया जाता है।तीव्र गति से आर्थिक विकास करने वाले देशों में जनसंख्या वृद्धि वरदान सिद्ध होती है, जबकि धीमी गति से आर्थिक विकास करने वाले देशों में तीव्र जनवृद्धि अभिशाप सिद्ध होती हैं।

प्रो0 वीनार के शब्दो में, *''जनसंख्या वृद्धि गरीब देशों के ऊपर संकटपूर्ण घने बादलो के समान आच्छादित है जो अन्य सभी तत्वों के आर्थिक उन्नति में योगदान को निष्फल कर सकती है।''*

चित्रकूट धाम मण्डल में आर्थिक विकास की अत्यंत मंद है, जिससे बढ़ती हुई जनसंख्या अभिशाप सिद्ध हो रही है। तालिका संख्या 2B–1 सें स्पष्ट है कि चित्रकूट धाम मण्डल की जनसंख्या सन् 1901 में 1164226 थी, जो सन् 1911 में बढ़कर 1201173 हो गयी अर्थात् 1901–1911 के दशक में वृद्धि की दर 3.17% थी। सन् 1911–21 में सम्पूर्ण भाग में जनसंख्या का ह्रास हुआ क्योकिं सूखा पड़ने तथा विभिन्न बीमारियों जैसे–इन्फ्लुएंजा व काला ज्वर के प्रकोप के कारण हजारों लोग काल–कवलित हो गये और सन् 1921 में मण्डल की जनसंख्या 1135381 रह गई।

इस प्रकार इस दशक में –5.48% की कमी आई। सन् 1931 में जनसंख्या बढ़कर 1209550 हो गई और इस दशक में जनसंख्या वृद्धि 6.53% हुई। सन् 1901 से 1931 तक जनसंख्या वृद्धि दर धीमी रही किन्तु 1931 के बाद जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ने लगी और 1941 में यह बढ़कर 1387341 हो गई। इस प्रकार 1931–41 के दशक में वृद्धि दर 14.70% रही। इसके पश्चात् जनसंख्या वृद्धि दर में गिरावट आई और 1941–51 के दशक में वृद्धि दर केवल 4.85% रही। इस दशक में द्वितीय विश्वयुद्ध तथा भारत–पाकिस्तान विभाजन यें दो घटनायें हुई। साथ ही राजनैतिक उथल–पुथल तथा प्राकृतिक प्रकोपों का भी प्रभाव पड़ा। 1946 में प्लेग तथा 1948 में बेतवा तथा यमुना नदियों में भयंकर बाढ़ के कारण असंख्य मानव काल–कवलित हो गये। 1950 में ग्रीष्म ऋतु में हैजा के कारण पुनः मानव काल–ग्रसित हुए। अतः प्रत्येक जनपद में जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत कम रहा। 1951–61 दशक में इस भाग की जनसंख्या तीव्र गति सें बढ़ी और यह 1760436 हो गई। इस दशक में 21.02% की वृद्धि हुई जबकि पूरे उत्तर प्रदेश में यह वृद्धि 16.71% थी। इस दशक में परती भूमि को कृषि योग्य बनाकर कृषि के लिए उपयोग किया गया। चिकित्सा सुविधाओं में सुधार करके मृत्यु दर पर नियन्त्रण करने का प्रयास किया गया। सिंचाई सुविधाओं का विस्तार होने से खाद्यान्न उत्पादन बढ़ा। व्यापारिक तथा यातायात सुविधाओं में वृद्धि हुई तथा पाकिस्तान से आए शरणार्थी इन भागों में आकर बस गए जिससे जनसंख्या में उछाल आया 1961–71 में मण्डल में जनसंख्या वृद्धि 23.29% हुई। सन् 1971 में चित्रकूट धाम मण्डल की जनसंख्या 2170430 हो गई तथा 1981 में यह तीव्र गति से बढ़ कर 2728158 हो

गई।1971–81 के दशक में जनसंख्या वृद्धि 25.70% हुई जो बीसवीं शताब्दी की सर्वाधिक वृद्धि मानी जाती है।1981 के बाद जनसंख्या वृद्धि में गिरावट आने लगी, इसका कारण परिवार नियोजन कार्यक्रमों को ग्रामीण स्तर पर व सभी वर्गों में प्रचार कर सफल बनाना है। 1991 में मण्डल की जनसंख्या 3328630 थी। 1981–91 दशक में यह वृद्धि दर 22.01% रही।

2001 की जनगणनानुसार चित्रकूटधाम मण्डल की जनसंख्या 4052050 हो गई है। इस 1991–2001 के दशक में कुल 21.73% की वृद्धि हुई। इस प्रकार 1901 से 2001 के 'शतक' में जनसंख्या लगभग साढ़े तीन गुना बढ़ गई है।

निम्नलिखित तालिका सं0 2B–1 में चित्रकूटधाम मण्डल की जनसंख्या की वृद्धि दर को दर्शाया गया है:–

तालिका संख्या **2B**–1

चित्रकूटधाम मण्डल में जनसंख्या की वृद्धि दर (1901–2001)

जनगणना वर्ष	कुल जनसंख्या	दशकीय वृद्धि % में
1901	1164226	—
1911	1201173	3.17
1921	1135381	– 5.48
1931	1209550	6.53
1941	1387341	14.70
1951	1454663	4.85
1961	1760438	21.02
1971	2170430	23.29
1981	2728158	25.70
1991	3328630	22.01
2001	4052050	21.73

स्रोतः सांख्यकीय पत्रिका, चित्रकूटधाम मण्डल, बांदा 2002

1991–2001 के दशक में सर्वाधिक जनपदीय जनसंख्या वृद्धि चित्रकूट जनपद में 34.33% रही। तत्पश्चात् महोबा जनपद में 21.80%,बांदा जनपद में 18.49% तथा हमीरपुर जनपद में 17.85% रही। निम्नलिखित तालिका में जनपद जनसंख्या वृद्धि को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका सं0 2B–2

चित्रकूटधाम मण्डल में जनपदवार जनसंख्या वृद्धि दर (1991–2001)

क्र0सं0	जनपद	जनसंख्या 1991	जनसंख्या 2001	दशकीय वृद्धि % में
1	हमीरपुर	884512	1042374	17.82
2	महोबा	581979	708831	21.80
3	बॉदा	1237962	1500253	18.49
4	चित्रकूट	624177	8000592	34.33
मण्डल		3328630	4052050	21.73

जनसंख्या का वितरण :–(Distribution of population)

चित्रकूटधाम मण्डल में जनसंख्या का वितरण भौतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक पर्यावरण से सम्बन्धित है। "प्राकृतिक पर्यावरण के तत्व जैसे–उच्चावचन,जलवायु तथा मिट्टियाँ, सांस्कृतिक तत्व जैसे– आवागमन तथा संचार के साधन, तथा क्षेत्रीय आर्थिक विकास, जनसंख्या की वृद्धि तथा वितरण को प्रभावित करते है। जलवायु के तत्व जनसंख्या के वितरण को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से प्रभावित करतें है। जलवायु का प्रभाव मिट्टी, प्राकृतिक वनस्पति तथा कृषि पर पड़ता है, जो जनसंख्या को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। [26]

1991 की जनगणनानुसार चित्रकूटधाम मण्डल में सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या वाले विकासखण्ड क्रमशः मौदहा (171628), नरैनी (169930), महुआ (152411), कर्वी (151878), कबरई (145318),बबेरू (144290), बडोखर खुर्द (134982), पहाड़ी (133516), विसण्डा (132303), सुमेरपुर (127867) तथा तिन्दवारी (124021) हैं। इन भागो में अधिक उपजाऊ मृदा, सिंचन सुविधाओं के विकास तथा औद्योगिक विकास के कारण जनसंख्या का केन्द्रीयकरण अधिक हैं।

महुआ,बबेरू,नरैनी, विसण्डा विकास खण्डो मे चावल का उत्पादन अधिक मात्रा में होता है। इन विकाखण्डो में काबर व पडुवा मिट्टियों का विस्तार अधिक है। इन मिट्टियों में अधिक पोषक तत्वों के साथ–साथ नमी धारण करने की अपूर्व क्षमता है। चावल का अधिक उत्पादन अधिकाधिक जनसंख्या का पोषण है। रामनगर, मानिकपुर, मऊ, कुरारा, सरीला, राठ, गोहाण्ड, चरखारी, जसपुरा विकासखण्डो में जनसंख्या का जमाव कम है (तालिका सं0 2B–3)। रामनगर, मानिकपुर, मऊ विकासखण्ड के पठारी भाग कम बसे हुए हैं, क्योकि यहाँ की मिट्टी अधिक उपजाऊ नहीं है। यमुना, बेतवा, केन तथा बागैं नदियों के बीहड़ भाग भी कम बसे हुए क्षेत्रों के अर्न्तगत आते है।

चित्रकूट धाम मण्डल में 1991 की जनगणनानुसार सबसे अधिक जनसंख्या वाले शहर क्रमशः बांदा (96795), राठ (42696), महोबा (56247), कर्वी (37595), अतर्रा (33640), हमीरपुर (26835), मौदहा (26520), चरखारी (21073) तथा भरूवा सुमेरपुर (18354) हैं। (तालिका संख्या 2B–4) ।इन नगरों में
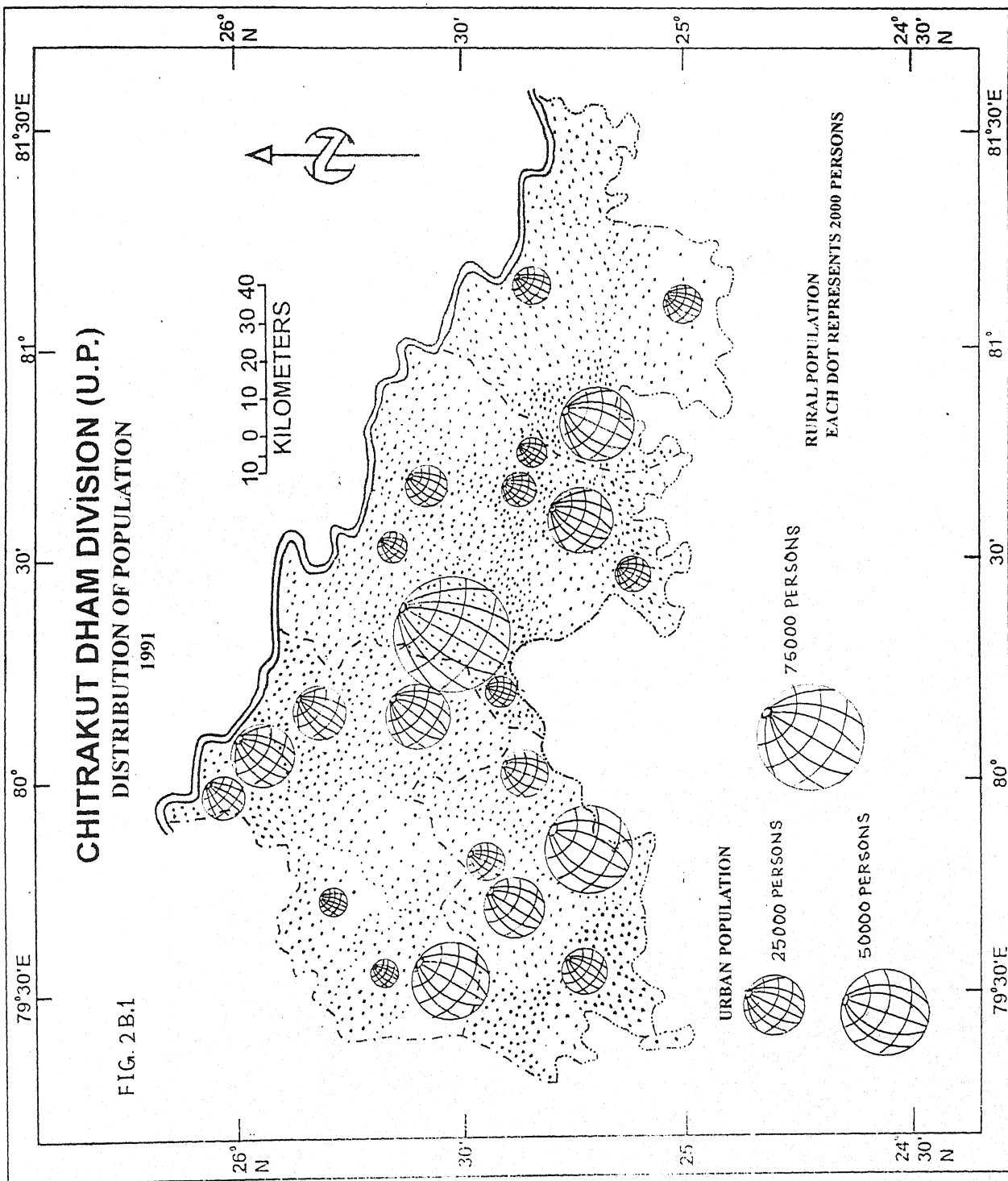
जनसंख्या अधिक होने का कारण स्थानीय उद्योग, रोजगार के अधिक अवसर तथा शिक्षण–सुविधाएँ हैं। भरूवा सुमेरपुर, राठ, अतर्रा तथा बांदा में औद्योगिक इकाइयों की बहुलता है।

जनसंख्या का घनत्व (Density of population):–

किसी क्षेत्र पर जनसंख्या का दबाव उस क्षेत्र की जनसंख्या का घनत्व कहलाता है। चित्रकूट धाम मण्डल में जनसंख्या के घनत्व का विवरणात्मक विशलेषण करने से ज्ञात होता है कि यहाँ जनघनत्व को प्रभवित करने वाले कारक भू–संरचना, मृदा उर्वरता जल की उपलब्धता, कृषि, प्राकृतिक प्रकोपों का फसलों पर कम से कम प्रभाव, पशुपालन हेतु चारागाह की उपलब्धता रोजगार–सुलभता तथा सामाजिक सुरक्षा आदि हैं। जनपद हमीरपुर तथा बांदा में कृषि योग्य भूमि की अधिकता, सिचांई सुविधाओं का विकास तथा अधिक फसलोत्पादन होने के कारण जनसंख्या घनत्व अधिक है, जबकि महोबा तथा चित्रकूट जनपदों में भूमि में उर्वरापन की कमी तथा विषम धरातल एवं यातायात के साधनों के अभाव के कारण जनसंख्या घनत्व कम पाया जाता है।

सन् 1991 की जनगणनानुसार चित्रकूट धाम मण्डल का जनसंख्या का घनत्व 224 एवं 2001 में 274 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी हो गया है।

1991 में बांदा, हमीरपुर, महोबा तथा चित्रकूट जनपदों का घनत्व क्रमशः 301, 215, 190 तथा 175 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. था।

जो 2001 में बांदा का 340, हमीरपुर का 241, महोबा का 249 तथा चित्रकूट का 250 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. हो गया।तालिका संख्या 2B–3 से स्पष्ट है कि जनसंख्या का घनत्व नगरीय क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में कम है।

1991 की जनगणनानुसार विकासखण्डों में सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या का घनत्व विसण्डा विकासखण्ड में 418 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है। इसके पश्चात् क्रमशः महुआ विकासखण्ड में 369, नरैनी में 315, कर्वी में 269, सुमेरपुर में 216, मुस्करा में 216, तिन्दवारी में 207, बडोखर खुर्द में 201, बबेरू में 240, कमासिन में 227, पहाड़ी में 230 तथा मऊ विकासखण्ड में 204 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. पाया जाता है। इन विकासखण्डों में अधिक जनघनत्व का कारण कृषि योग्य भूमि की अधिकता, सिंचाई सुविधाओं का विकास, रोजगार की सुलभता तथा जल की उपलब्धता है। बांदा जनपद के रंगऊ–गंगऊ जलाशय से निकली नहरों के द्वारा सिचांई सुविधाओं के विस्तार के कारण खेती की सुनिश्चितता अधिक बढ़ गई है। जिससे इन क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व अधिक है।

सरीला विकासखण्ड में 139, चरखारी में 103, तथा मानिकपुर विकासखण्ड में 73 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. जनघनत्व पाया जाता है इन विकासखण्डों में कम जनघनत्व का मुख्य कारण कृषि योग्य भूमि की कमी, ऊबड़–खाबड़ धरातल, कंकरीली एवं पथरीली भूमि है। निम्नलिखित तालिका सं. 2B–3 में मण्डल में विकासखण्डवार जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 2B–3

चित्रकूटधाम मण्डल में विकासखण्डवार जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व–1991

क्र0 सं0	विकासखण्ड	क्षेत्रफल वर्ग किमी.	जनसंख्या 1991	घनत्व प्रति वर्ग किमी.
1	कुरारा	440.0	75883	173
2	सुमेरपुर	593.0	127867	216
3	सरीला	651.2	90153	139
4	गोहाण्ड	532.0	95052	179
5	राठ	451.5	82325	182
6	मुस्करा	510.0	104647	205
7	मौदहा	924.4	171628	186
नगरीय		19.7	136957	6952
जनपद हमीरपुर		4121.9	884512	215
8	पनवाड़ी	619.4	118536	191
9	जैतपुर	603.2	111222	184
10	चरखारी	865.5	89215	103
11	कबरई	953.0	145318	153
नगरीय		29.9	117688	3936
जनपद महोबा		3071.0	581979	190
12	जसपुरा	409.3	79515	194
13	तिन्दवारी	599.0	124021	107
14	बडोखर खुर्द	671.7	134982	201
15	बबेरु	602.2	144290	240
16	कमासिन	527.8	119671	227
17	विसण्डा	316.7	1323.03	418
18	महुआ	412.7	152411	369
19	नरैनी	540.0	169930	315
नगरीय		34.8	180893	5196.5
जनपद बांदा		4114.2	1237962	301
20	पहाड़ी	580.9	133516	230
21	कर्वी	565.4	151878	269
22	मानिकपुर	1585.7	115838	73
23	रामनगर	338.9	65370	193
24	मऊ	485.9	98993	204
नगरीय		10.7	58582	5475
जनपद चित्रकूट		3567.5	624177	175
योग मण्डल		14874.6	3328630	224

स्रोतः जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें,2002

1991 की जनगणनानुसार सर्वाधिकनगरीय घनत्व राजापुर में 23502 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है। इसके बाद यह घनत्व क्रमशः सुमेरपुर में 10671,कुरारा में 9414, गोहाण्ड में 9124, बांदा में 8574, हमीरपुर में 8034, राठ में 7504, सरीला में 7413, विसण्डा में 7249 तथा महोबा नगर में 6901 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. पाया जाता है। (तालिका सं. 2B–7)

चित्रकूट धाम मण्डल को ग्रामीण जनघनत्व की दृष्टि से चार क्षेत्रों में बाँट सकते है–

1– उच्च घनत्व के क्षेत्र 2– मध्यम घनत्व के क्षेत्र

Fig. : 2B-2
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
DENSITY OF POPULATION - 1991
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
N
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
KURARA
SUMERPUR
JASPURA
SARILA
GOHAND
MUSKARA
MAUDAHA
TINDWARI
BABERU
KAMASIN
RATH
BAROKHAR KHURD
CHARKHARI
PANWARI
KABRAI
MAHUA
BISANDA
PAHARI
RAMNAGAR
MAU
KARWI
JAITPUR
NARAINI
MANIKPUR
PERSONS / KM²
< 150
151 – 200
201 - 250
251 – 300
301 - 350
351 - 400
401- 450

3– निम्न घनत्व के क्षेत्र 4– निम्नतम घनत्व के क्षेत्र।

1 **उच्च घनत्व के क्षेत्र** (High density areas)– (250 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. से अधिक) इसके अर्न्तगत विसण्डा, महुआ, नरैनी तथा कर्वी विकासखण्ड सम्मिलित है। इन विकासखण्डों में उच्च जनघनत्व का कारण भूमि की उत्पादकता सिंचन सुविधाओं का विकास, औद्योगिक एवं वाणिज्यिक विकास यातायात तथा संचार की सुविधाएं आदि है।

2 **मध्यम घनत्व के क्षेत्र** (Moderate density areas)–(200 से 250 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.) इसके अन्तर्गत सुमेरपुर,मुस्करा,तिन्दवारी,बडोखर खुर्द, बबेरू, कमासिन, पहाड़ी तथा मऊ विकासखण्ड सम्मिलित है।

3 **निम्न घनत्व के क्षेत्र** (Low density areas)–(150 से 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.) इसमें कुरारा, गोहाण्ड,राठ, मौदहा,पनवाड़ी, जैतपुर, कबरई, जसपुरा,रामनगर विकासखण्ड आते है। निम्न घनत्व का कारण अनुपजाऊ भूमि, वनों की अधिकता तथा कृषि तन्त्र का पिछड़ापन है।

4 **निम्नतम घनत्व के क्षेत्र**(Lowest density areas)– (150 से कम व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.) इसके अर्न्तगत सरीला,चरखारी तथा मानिकपुर विकासखण्ड आते है। इन विकासखण्डों में निम्नतम घनत्व का कारण कृषि योग्य भूमि की कमी, अनुपजाऊ मिट्टी, ऊबड़–खाबड़, पथरीली भूमि, सिंचाई के साधनों का अभाव, वर्षा की कमी, वनों की अधिकता तथा यातायात की सुविधाओं का अभाव है।

लिंगानुपात (Sex Ratio)

प्रति 1000 पुरूषो पर स्त्रियों की संख्या के अनुपात को स्त्री–पुरूष अनुपात या लिंगानुपात कहते है। चित्रकूट धाम मण्डल में स्त्रियों की संख्या पुरूषों के अनुपात में बहुत कम पाया जाना असमान लिंगानुपात को प्रकट करता है। चित्रकूट धाम मण्डल में 1991 में यह लिंगानुपात प्रति 1000 पुरूषों के पीछे 841 स्त्रियाँ थी। जिसमें हमीरपुर जनपद में लिंगानुपात 839, महोबा जनपद में 845, बांदा जनपद में 831 तथा चित्रकूट जनपद में 861 था।

2001 की जनगणनानुसार मण्डल में लिंगानुपात 1000 पुरूषों के पीछे 861 स्त्रियाँ हो गया। जिसमें हमीरपुर जनपद में लिंगाानुपात 852, महोबा जनपद में 866, बांदा जनपद में 860 तथा चित्रकूट जनपद में 872 हो गया। चित्रकूट धाम मण्डल का लिंगानुपात उत्तर प्रदेश तथा भारत से कम है, सन् 2001 की जनगणनानुसारं उ0 प्र0 का लिंगानुपात 898 स्त्रियाँ है, तथा भारत का लिंगानुपात 933 स्त्रियाँ हैं।[27]

चित्रकूट धाम मण्डल में 1991 की जनगणनानुसार सर्वाधिक ग्रामीण लिंगानुपात मऊ विकासखण्ड में 883 तथा सबसे कम लिंगानुपात बडोखर खुर्द में 811 है। (तालिका सं. 2 B–4)। सर्वाधिक नगरीय लिंगानुपात कुलपहाड़ में 890 तथा सबसे कम लिंगानुपात ओरन में 805 हैं। (तालिका सं. 2 B–7)।

लिंगानुपात में असन्तुलन का मुख्य कारण निर्धनता, बाल–विवाह, अशिक्षा सामाजिक कुरीतियाँ, पुत्र प्रधान भावना, दहेज तथा गर्भपात आदि है। यहाँ अल्पायु कन्यायों की मृत्यु दर बढ़ी है और जन्मदर घटी है। इसमें थोड़ी बहुत भूमिका गर्भस्थ शिशु के लिंग परीक्षण की भी है। नगरों में यह प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है कि गर्भस्थ शिशु के परीक्षण में यदि कन्या का पता चलता है तो गर्भपात करा दिया जाता है क्योंकि बहुत से दम्पन्ति कन्याओं का अतिरिक्त बोझ नहीं उठाना चाहते।

परन्तु जन्म के बाद भी स्त्रियों की संख्या निरन्तर कम होती जा रही है क्योंकि यहाँ भोजन, चिकित्सा, शिक्षा आदि में लड़को को वरीयता दी जाती है और लड़कियों की अवहेलना होती है। इसी कारण महिलाओं की सभी आयु वर्गों में मृत्युदर उच्च पाई जाती है, विशेषतः विवाहित स्त्रियों में पूरे

प्रजनन काल में। इसलिए सरकार को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। जिससे चित्रकूट धाम मण्डल का लिंगानुपात असंतुलन बढ़ने न पाये।

निम्नलिखित तालिका सं. 2B–4 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार जनसंख्या का लिंगानुपात दर्शाया गया है:–

तालिका सं.2B–4

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार जनसंख्या का लिंगाानुपात

(Sex ratio) – 1991

क्र0 सं0	विकासखण्ड	कुल जनसंख्या	पुरुष	प्रतिशत पुरुष	स्त्री	प्रतिशत स्त्री	प्रति 1000 पुरुषों के पीछे स्त्रियों की संख्या
1	कुरारा	75883	41178	54.3	34705	45.7	843
2	सुमेरपुर	127867	69413	54.3	58454	45.7	842
3	सरीला	90153	49215	54.6	40938	45.4	832
4	गोहाण्ड	95052	51393	54.1	43659	45.9	850
5	राठ	82325	44767	54.4	37558	45.6	839
6	मुस्करा	104647	57141	54.6	47506	45.4	831
7	मौदहा	171628	93389	54.4	78239	45.6	838
नगरीय		136957	74505	54.4	62452	45.6	838
जनपद हमीरपुर		884512	481001	54.4	403511	45.6	839
8	पनवाड़ी	118536	64489	54.4	54047	48.6	838
9	जैतपुर	112222	60233	54.2	50989	45.8	847
10	चरखारी	89215	48479	54.7	40439	45.3	829
11	कबरई	145318	79030	54.4	66288	45.6	839
नगरीय		117688	62919	53.5	54769	46.5	870
जनपद महोबा		581979	315447	54.2	266532	45.8	845
12	जसपुरा	79515	43045	54.1	36470	45.9	847
13	तिन्दवारी	124021	68135	54.9	55886	45.1	820
14	बडोखर खुर्द	134982	74514	55.2	60468	44.8	811
15	बबेरू	144290	78477	54.4	65813	45.6	839
16	कमासिन	119671	65094	54.4	54577	45.6	838
17	विसण्डा	132303	71801	54.3	60402	45.7	841
18	महुआ	152411	83271	54.6	69140	45.4	830
19	नरैनी	169930	92558	54.5	77372	45.5	836
नगरीय		180839	98972	54.7	81867	45.3	827
जनपद बांदा		1237962	675867	54.6	562095	45.4	831
20	पहाड़ी	133516	71647	53.7	61869	46.3	864
21	कर्वी	151878	81932	53.9	69946	46.1	854
22	मानिकपुर	115838	62385	53.9	53453	46.1	857
23	रामनगर	65357	35023	53.6	30347	46.4	866
24	मऊ	98993	52582	52.1	46411	46.9	883
नगरीय		58582	31794	54.3	26788	45.7	843
जनपद चित्रकूट		624177	335363	53.7	288814	46.3	861
मण्डल		3328630	1807678	54.3	1520952	45.7	841

स्रोत :– जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें 2002

2B(ii) मानव अधिवास – अधिवास के आधार पर जनसंख्या ग्रामीण एवं नगरीय दो वर्गों में विभाजित की जाती है। 1991 की जनगणनानुसार चित्रकूट धाम मण्डल की ग्रामीण जनसंख्या 2834564 (85.2%) तथा नगरीय जनसंख्या 494066 (14.8%) है। ग्रामीण जनसंख्या का उच्च अनुपात यह प्रदर्शित करता है कि हमारी अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर निर्भर है और परम्परागत सामाजिक ढांचे में परिर्वतिन नहीं आया है। चित्रकूट धाम मण्डल में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत तो बहुत कम है, लेकिन अब यह क्षेत्र कृषि–सामाजिक व्यवस्था से औद्योगिक सामाजिक व्यवस्था की ओर बढ़ रहा है, जिससे नगरीय जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। पिछले 100 वर्षों में चित्रकूट धाम मण्डल की नगरीय जनसंख्या लगभग 6 गुना हो गयी है। तालिका सं0 2B–5 का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि 1901 से 1931 तक 30 वर्षों में नगरीय जनसंख्या में वृद्धि नहीं हुई बल्कि उसमें कमी हुई है। 1931 से 1961 तक मन्द वृद्धि का चरण था। जिसमें 30 वर्षों में 39.14 प्रतिशत बढ़ी और 1961 से 1991 के मध्य तीव्र वृद्धि हुयी अर्थात् 30 वर्षों में 71.20 प्रतिशत वृद्धि हुई। इस तीव्र वृद्धि के निम्नलिखित कारण है :–
1– औद्योगीकरण में तीव्र प्रगति, 2– ग्रामीण क्षेत्रों से लोगों की नगरों की ओर दौड़, 3– अनेक ग्रामीण बस्तियों का विस्तार नगर के रुप में होना, 4– अनेक बढ़ते हुए नगरों के विस्तार में आस– पास के ग्रामीण बस्तियों का मिलना, 5– रोजगार हेतु ग्रामीण लोगों का नगरों की ओर पलायन।

ग्रामीण जनसंख्या :– चित्रकूट मण्डल में 1991 की जनगणनानुसार मुस्करा, पनवाड़ी, जसपुरा, कमासिन, महुआ, पहाड़ी तथा मऊ विकासखण्डों में शत प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या का वास है। इसके अतिरिक्त सरीला में 92.4 %, गोहाण्ड में 93.6 %, तिन्दवारी में 94.3 %, बबेरु में 92.4 %, विसण्डा में 93.5 % तथा मानिकपुर विकासखण्ड में 91.2 % जनसंख्या गॉवों में बसी है।

सबसे कम ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत बड़ोखर खुर्द में 56.4, राठ में 65.8, कबरई में 67.4, कुरारा में 68.1, चरखारी में 72.6 तथा नरैनी विकासखण्ड में 78.0 है।

सवाधिक ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत चित्रकूट जनपद में 20.6 प्रतिशत तथा सबसे कम महोबा जनपद में 79.8 प्रतिशत है। (तालिका सं0 2B–6)

चित्रकूट धाम मण्डल में कुल 2130 आबाद ग्राम हैं, जिसमें जनपदवार आबाद ग्रामों की संख्या हमीरपुर जनपद में 491, महोबा जनपद में 435, बॉदा जनपद में 653 तथा चित्रकूट जनपद में 551 है। इस मण्डल में गॉवों का संगठन कृषि भूमि की उपलब्धता, मीठे जल की उपलब्धता एवं सुरक्षा को ध्यान में रखकर हुआ है। चित्रकूट जनपद के पठारी भागों में गॉव छोटे–छोटे पाये जाते है। समतल भूमि एवं उपजाऊ मिट्टी वाले क्षेत्रों में वृहद् गॉव पाये जाते है।

तालिका से. 2B–5

चित्रकूट धाम मण्डल में ग्रामीण तथा नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत–1901–1991

जनगणना वर्ष	कुल जनसंख्या	ग्रामीण जनसंख्या	नगरीय जनसंख्या	प्रतिशत ग्रामीण	प्रतिशत नगरीय
1901	1164226	1075193	89033	92.4	7.6
1911	1201173	1117345	83828	93.0	7.0
1921	1135381	1048239	87142	92.3	7.7
1931	1209550	1122972	86578	92.8	7.2
1941	1387341	1268340	119001	91.4	8.6
1951	1454663	1321163	13350	90.8	9.2
1961	1760436	1618166	1422.70	91.9	8.1
1971	2170430	1974518	195912	91.0	9.0
1981	2728158	2348677	379481	86.1	13.9
1991	3328630	2834564	494066	85.2	14.8

स्रोत सांख्यकीय पत्रिका, चित्रकूटधाम मण्डल, बांदा, 2002

निम्नलिखित तालिका सं. 2B–6 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार ग्रामीण तथा नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत दर्शाया गया है:–

तालिका सं. 2B–6

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार ग्रामीण तथा नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत–1991

क्र. सं.	विकासखण्ड	कुल जनसंख्या	ग्रामीण जनसंख्या	नगरीय जनसंख्या	प्रतिशत ग्रामीण	प्रतिशत नगरीय
1	कुरारा	111379	75883	35426	68.1	31.9
2	सुमेरपुर	146221	127867	18354	87.4	12.6
3	सरीला	97566	90153	7413	92.4	7.6
4	गोहाण्ड	101530	95052	6478	93.6	6.4
5	राठ	125021	82325	42696	65.8	34.2
6	मुस्करा	104647	104647	–	100.00	–
7	मौदहा	198148	171628	26520	86.6	13.4
जनपद हमीरपुर		884512	747555	136957	84.5	15.5
8	पनवाड़ी	118536	118536	–	100.0	–
9	जैतपुर	125036	111222	13814	89.0	11.0
10	चरखारी	122824	89215	33609	72.6	27.4

11	कबरई	215583	145318	70265	67.4	32.6
जनपद महोबा		581979	464291	117688	79.8	20.2
12	जसपुरा	79515	79515	—	100.0	—
13	तिन्दवारी	131544	124021	7523	94.3	5.7
14	बडोखर खुर्द	239224	134982	104242	56.4	43.6
15	बबेरू	156119	144290	11829	92.4	7.6
16	कमासिन	119671	119671	—	100.0	—
17	विसण्डा	141509	132303	9206	93.5	6.5
18	महुआ	152411	152411	—	100.0	—
19	नरैनी	217969	169930	48039	78.0	22.0
जनपद बांदा		1237962	1057123	180839	85.4	14.6
20	पहाड़ी	133516	133516	—	100.0	—
21	कर्वी	189473	151878	37595	80.2	19.8
22	मानिकपुर	126954	115838	11116	91ण2	8.8
23	रामनगर	75241	65370	9871	86.9	13.1
24	मऊ	98993	98993	—	100.0	—
जनपद चित्रकूट		624177	565595	58582	90.6	9.4
मण्डल योग		3328630	2834564	494066	85.2	14.8

स्रोतः जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें,2002

नगरीय जनसंख्याः— चित्रकूट धाम मण्डल में पिछले तीन दशकों से जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का अनुपात पहले की अपेछा तेजी से बढ़ रहा है। नगरीय जनसंख्या की वृद्धि वाणिज्य, व्यापार और उद्योगो के विकास के साथ स्वाभाविक ही है। चित्रकूट धाम मण्डल में सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत बडोखर खुर्द में 43.6 है। इसके अतिरिक्त राठ में 34.2 %, कबरई में 32.6 %, कुरारा में 31.9%, चखारी में 27.4 % तथा नरैनी विकासखण्ड में 22 %जनसंख्या नगरों में निवास करती है। अन्य विकासखण्डों में कर्वी में 19.8 %, मौदहा में 13.4 %, रामनगर में 13.1 %, सुमेरपुर में 12.6%, जैतपुर में 11.0 %, मानिकपुर में 8.8 %, बबेरू में 7.6 %, सरीला में 7.6 %, विसण्डा में 6.58 %, गोहाण्ड में 6.4 %तथा तिन्दवारी में 5.7 %जनसंख्या नगरों में निवास करती है। शेष विकासखण्डों में नगरीय जनसंख्या शून्य है।

जनपदवार सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत महोबा जनपद में 20.2 %तथा सबसे कम चित्रकूट जनपद में 9.4 % है। इसके अतिरिक्त हमीरपुर जनपद में 15.5 % तथा चित्रकूट जनपद में 9.4 % है। (तालिका सं. 2B–6)

नगरीय जनसंख्या का विकास चित्रकूट धाम मण्डल में नवीं शताब्दी में चन्देल राजपूतों के नगरीय संस्कृति के विकास करने पर हुआ। वर्तमान समय के कालिंजर तथा महोबा नगरों को चन्द्रवर्मन ने बनवाया था जो चन्देल राज्य के प्रथम शासक थे। उन्होंने ये नगर सुरक्षा, धार्मिक तथा राजधानी के रूप में बसाए थे। कालिंजर का किला जिसका चन्देलों के लिए सामरिक महत्व था अब उसका अधिकांश भाग खण्डहर है। महोबा नगर जो चन्देलों की राजधानी थी।[28] अब जनपद मुख्यालय है। हमीरपुर नगर को हम्मीरदेव ने 11वीं शताब्दी में बसाया था।

वर्तमान समय में चित्रकूट धाम मण्डल में कुल 23 नगर है। जिसमें राठ, मौदहा, हमीरपुर, महोबा, चरखारी, अतर्रा, बांदा, तथा कर्वी नगर की जनसंख्या 20,000 से अधिक है। चित्रकूट धाम
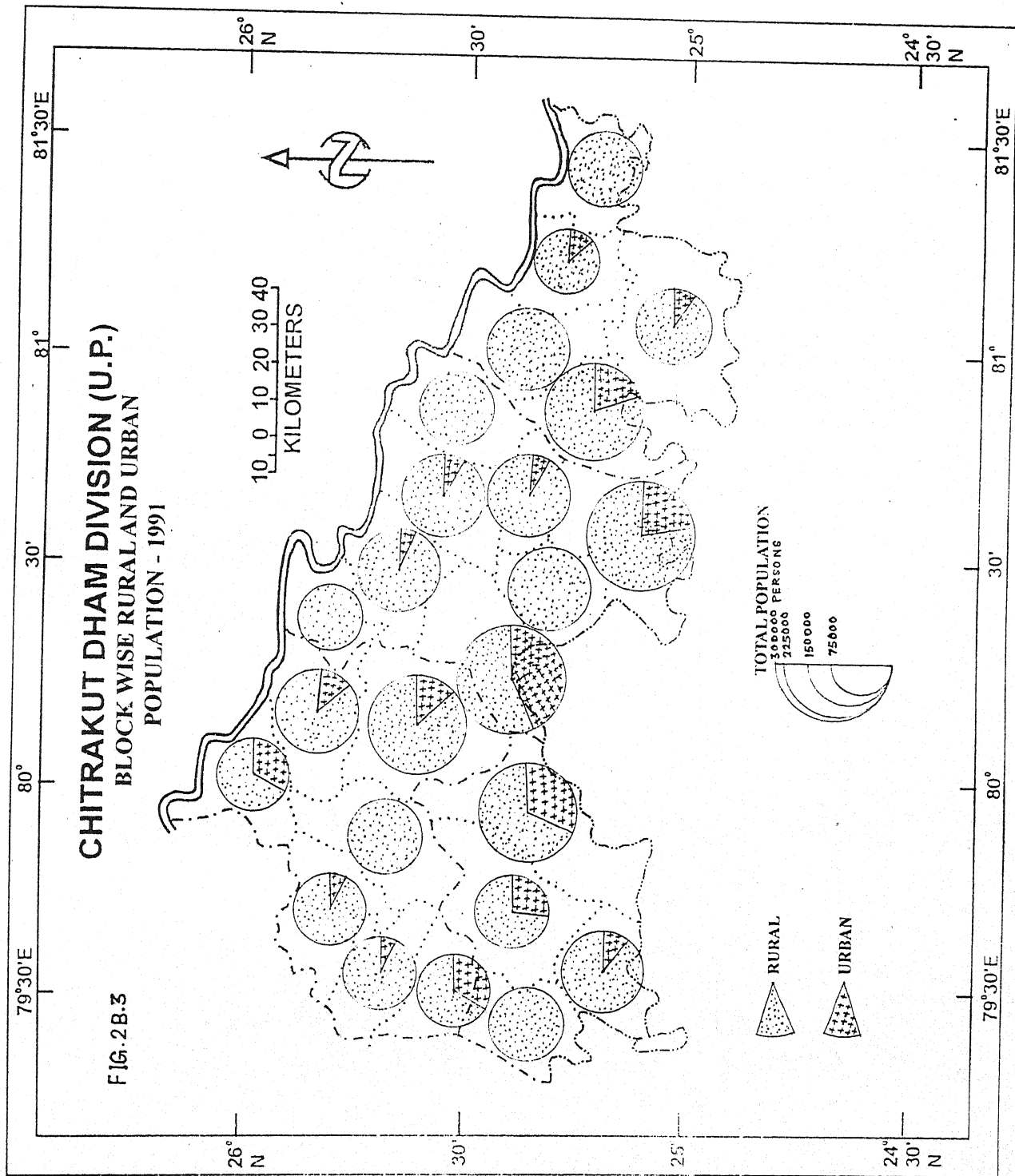
मण्डल का सबसे अधिक जनसंख्या वाला नगर बांदा है जिसकी 1991 की जनगणनानुसार जनसंख्या 96795 है।

निम्नलिखित तालिका संख्या 2B–7 में चित्रकूट धाम मण्डल की नगरीय जनसंख्या को दर्शाया गया है।

तालिका सं0 2B–7

चित्रकूट धाम मण्डल की नगरीय जनसंख्या – 1991

नगर का नाम एवं वर्ग	कुल जनसंख्या	पुरूष	स्त्री	प्रतिशत पुरूष	प्रतिशत स्त्री	लिंगानुपात 1000 पुरूषों के पीछे महिलाओं की संख्या	जनघनत्व प्रति वर्ग किमी0
1–राठनपा0प०	42696	23224	19472	54.4	45.6	838	7504
2– मौदहा न0पा0प0	26520	14307	12213	53.9	46.1	854	4183
3– हमीरपुर न0पा0प0	26835	14742	12093	54.9	45.1	820	8034
4– सुमेरपुर न0प0	18354	9997	8357	54.5	45.5	836	10671
5– कुरारा न0पं0	8661	4717	3944	54.5	45.5	83.6	9414
6– सरीला न0पं0	7413	3968	3445	53.5	46.5	868	7413
7– गोहाण्ड न0पं0	6478	3550	2928	54.8	42.2	825	9124
योग	136957	74505	62452	54.4	45.6	838	6945
8– महोबा न0पा0	56247	29888	26359	53.1	46.9	882	6901
9– चरखारी न0पा0	21073	11281	9792	53.5	46.5	868	2712
10– कुलपहाड न0 क्षे0स0	13814	7308	6506	52.9	47.1	890	5023
11– खरेला न0 क्षे0स0	12536	6811	5725	54.3	45.7	841	1471
12– कबरई न0 क्षे0स0	14018	7631	6387	54.4	45.6	837	5079
योग	117688	62919	54769	53.5	46.5	870	3929
13– अतर्रा न0 पा0प0	33640	18613	15027	55.3	44.7	807	3364
14– बबेरू न0पं0	11829	6536	5293	55.3	44.7	810	2366
15– विसण्डा न0पं0	9206	5059	4147	55.0	45.0	820	7249
16– नरैनी न0प0	8995	4888	4107	54.3	45.7	840	4498
17– मटौध न0पं0	7447	4059	3388	54.5	45.5	835	3142
18– तिन्दवारी न0पं0	7523	4065	3458	54.0	46.0	851	7234
19– ओंरन न0पं0	54.04	2994	2410	55.4	44.6	805	2844
20– बांदा न0पा0प0	96795	52758	44037	54.5	45.5	835	8574
योग	180839	98972	81867	54.7	45.3	827	5186
21– राजापुर न0पं0	9871	5341	4530	54.1	45.9	848	23502
22– मानिकपुर न0पं0	11116	6077	5039	54.7	45.3	829	4292
23– कर्वी न0पा0प0	37595	20376	1720	54.2	45.8	845	4838
योग	58582	31794	26788	54.3	45.7	843	5434
मण्डल	494066	268190	225876	54.3	45.7	842	5183

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

2B(iii) अर्थव्यवस्था :— चित्रकूटधाम मण्डल की 1991 की जनगणनानुसार कुल जनसंख्या 3328630 है, जिसका 41.8 % कार्यशील जनसंख्या है। शेष 58.12 % जनसंख्या अपने जीवन यापन के लिए कार्यशील जनसंख्या पर निर्भर है। तालिका संख्या 2 B–8 से ज्ञात होता है कि चित्रकूटधाम मण्डल में बांदा जनपद में कार्यशील जनसंख्या का सर्वाधिक प्रतिशत (42.6) है तथा सबसे कम प्रतिशत हमीरपुर जनपद में (39.2) है। इसके अतिरिक्त चित्रकूट जनपद में 41.8 % तथा महोबा जनपद में 41.3 % है।

विकासखण्डों में सर्वाधिक ग्रामीण कार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत नरैनी में 52.1 % तथा सबसे कम जसपुरा में 35.4 % है। इसके अतिरिक्त कार्यशील ग्रामीण जनसंख्या मऊ में 51.0 %, गोहाण्ड में 48.8 %, विसण्डा मं 48.8 %, मानिकपुर में 48.4 %, महुआ में 48.1 %, पहाड़ी में 47.8 %, चरखारी में 46.9 %, कमासिन में 46.6 %, रामनगर में 46.2 %, पनवाड़ी के 45.7 % तथा बबेरू में 45.3 % है। शेष विकासखण्डों में 45 % से कम है।

काम न करने वाली जनसंख्या के अन्तर्गत घर में रहने वाली महिलाएँ, विद्यार्थी, आश्रित, अवकाश प्राप्त व्यक्ति, भिक्षुक तथा अपंग आदि है।

कार्यशील जनसंख्या को 10 अंगों में विभक्त किया गया है:—

1— कृषक 2— कृषि श्रमिक 3— पशुपालन एवं वृक्षारोपण
4— खान खोदना 5— पारिवारिक उद्योग 6— गैर पारिवारिक उद्योग
7— निर्माण कार्य 8— व्यापार एवं वाणिज्य 9— यातायात संग्रहण एवं संचार
10— अन्य कर्मकार ।

चित्रकूट धाम मण्डल की आर्थिक व्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि है। कृषि प्रधान क्षेत्र होने के कारण कार्यशील जनसंख्या का अधिकांश भाग कृषि में लगा हुआ है। मण्डल में कुल कार्यशील जनसंख्या का 70 % भाग कृषि कार्य में लगा हुआ है जिसमें 46.4 % (644944) कृषक तथा 23.6 % (318193) कृषि श्रमिक हैं। 3.7 % (51157) जनसंख्या उद्योग तथा निर्माणकार्य में लगी हुई । 3.3 % (46273) जनसंख्या व्यापार एवं वाणिज्य में तथा 23 %(320526) जनसंख्या अन्य सेवाओं जैसे—पशुपालन, खान खोदना, यातयात एवं संग्रहण, संचार आदि में लगी हुई है। (तालिका सं0 2B–8) तथा (परिशिष्ट सं0 2B–1)

हमीरपुर जनपद में कुल कार्यशील जनसंख्या (346917) का 69.6 % कृषि कार्यो में (42.0 % कृषक, 27.6 % कृषि श्रमिक), 4.2 % उद्योग तथा निर्माण कार्य में, 3.7 % व्यापार एवं वाणिज्य तथा 23.4 % अन्य सेवाओं में लगा हुआ है।

महोबा जनपद में कुल कार्यशील जनसंख्या (240138) में 66.6% जनसंख्या कृषि कार्य में 42.3% कृषिक तथा 24.3 % कृषि श्रमिक, 4.5 % उद्योग तथा निर्माण कार्य में 3.7% व्यापार एवं वाणिज्य में तथा 25.2% अन्य सेवाओं में लगी है। बांदा जनपद में कुल कार्यशील जनसंख्या (527582) का 69.8% व्यक्ति कृषि कार्य में (46.6 % कृषक, 23.2 % श्रमिक), 3.5 % उद्योग कार्य में, 3.2 % व्यापार एवं वाणिज्य में तथा 23.5 % अन्य सेवाओं में लगे हुए हैं।

चित्रकूट जनपद में कुल कार्यशील जनसंख्या (276456) तथा 74.7 % व्यक्ति कृषि कार्य में (54.9 % कृषक, 19.8 % कृषि श्रमिक), 2.8 %व्यक्ति उद्योग तथा निर्माण कार्य में 2.7% व्यापार एवं वाणिज्य में तथा 19.8 % अन्य सेवाओं में लगे हुए है। चित्रकूट जनपद में कृषि कार्य में लगी हुई

FIG. 2B.4
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
OCCUPATIONAL STRUCTURE
1991
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
OCCUPATIONAL CATAGORIES
CULTIVATORS
AGRICULTURAL LABOURER
WORKERS ENGAGED IN INDUSTRY AND MANUFACTURING GROUP
COMMERCIAL GROUP
OTHERS
TOTAL RURAL WORKERS
75000
5000
25000
LEVELS
PRECENT OF RURAL WORKERS TO RURAL POPULATION
MODHIGH
51 & ABOVE
MEDIUM
46-50
MOD LOW
41-45
LOW
35-40

जनसंख्या का प्रतिशत अन्य जनपदों की तुलना में सर्वाधिक है। इसका कारण वहां आर्थिक विकास के अन्य साधनों की कमी है तथा वहां के निवासियों का प्रमुख व्यवसाय कृषि ही है।

विकासखण्डों में ग्रामीण कार्यशील जनसंख्या में सबसे अधिक कृषि कार्य में लगी जनसंख्या (कृषक तथा कृषि श्रमिक) का प्रतिशत पहाड़ी विकासखण्ड में 80.3 % तथा सबसे कम गोहाण्ड में 66.0 % है। इसके अतिरिक्त रामनगर में 78.6 जसपुरा में 78.5 %, नरैनी में 78.4 %, कर्वी में 78 %, मानिकपुर में 77.6 %, कुरारा में 77.4 %, राठ में 76.7 %, तिन्दवारी में 76.7 %, कबरई में 76.3 %, बडोखर खुर्द में 75.5 % व्यक्ति कृषि कार्य में लगे हैं । इन विकासखण्डों में आर्थिक विकास के अन्य साधनों की कमी होने के कारण कृषि कार्य में अधिक जनसंख्या कमी हुई है। शेष विकासखण्डों में 7.5 % से कम व्यक्ति कृषि–कार्य में लगे हैं।

उद्योग तथा निर्माण कार्य में लगी ग्रामीण कार्यशील जनसंख्या का सर्वाधिक प्रतिशत बडोखर खुर्द में 4.1 % है क्योंकि इस विकासखण्ड में मण्डल का मुख्यालय होने से औद्योगिक विकास अधिक हुआ है तथा सबसे कम प्रतिशत रामनगर में 1.5 % है। इसके अतिरिक्त सुमेरपुर में 3.7 %, गोहाण्ड में 3.3 %, मुस्करा में 3.5 %, मौदहा में 3.1 %, जैतपुर में 3.9 % तथा शेष विकासखण्डों में 3 % से कम जनसंख्या उद्योग तथा निर्माण कार्य में लगी हुई है।

वाणिज्य एवं व्यापार में लगी ग्रामीण जनसंख्या का सर्वाधिक प्रतिशत मुस्करा विकास खण्ड में 2.4 % तथा सुमेरपुर विकासखण्ड में 2.2 % है। विसण्डा (0.7 %) एवं पहाड़ी (0.8 %) विकास खण्डों मे ग्रामीण कार्यशील जनसंख्या में वाणिज्य एवं व्यापार में लगी जनसंख्या का प्रतिशत बहुत ही कम है।

अन्य ग्रामीण कर्मकर जो यातायात, संग्रहण संचार, पशुपालन, जंगल लगाना, वृक्षारोपण आदि सेवाओं में लगे हुए हैं का कार्यशील जनसंख्या से सर्वाधिक प्रतिशत गोहाण्ड विकासखण्ड में 29.5 % तथा सबसे कम जसपुरा विकासखण्ड में 17.0 %है। इसके अतिरिक्त चरखारी में 28.2 %, पहाड़ी में 26.7 %, बबेरू में 26.3 %, कमासिन में 25.9 %, महुआ में 24.3 %, विसण्डा में 23.6 %, सुमेरपुर तथा जैतपुर प्रत्येक में 22.4 % तथा शेष विकासखण्डों में अन्य कार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत 17 से 22 के मध्य है।

जनपदवार कुल कार्यशील नगरीय जनसंख्या में सबसे अधिक कृषि कार्य में लगी जनसंख्या का प्रतिशत हमीरपुर जनपद की नगरीय जनसंख्या का (34.4 %) तथा सबसे कम चित्रकूट जनपद की नगरीय जनसंख्या का (27.5 %) है।

उद्योग तथा निर्माण कार्य में लगी नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत बांदा जनपद तथा चित्रकूट जनपद में समान (14.3 %) है, सबसे कम प्रतिशत (12.4%)हमीरपुर जनपद की नगरीय जनसंख्या का है।

व्यापार तथा वाणिज्य में लगी नगरीय जनसंख्या का सर्वाधिक प्रतिशत चित्रकूट जनपद की नगरीय जनसंख्या का (24.8 %) है तथा सबसे कम महोबा जनपद की नगरीय जनसंख्या का 15.4 % है।

चित्रकूटधाम मण्डल में आर्थिक कार्यो में लगी हुई जनसंख्या के प्रतिशत को देखने से स्पष्ट है कि 70 % से अधिक लोग कृषि कार्य में लगे हुए हैं जिससे इस क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योग धन्धों के विकास की अधिक सम्भावनाऍ है। उद्योगों की स्थापना करके इस क्षेत्र का आर्थिक विकास किया जा सकता है।

तालिका सं0– 2B–8

चित्रकूटधाम मण्डल में विकासखण्डवार जनसंख्या का आर्थिक वर्गीकरण (प्रतिशत में)

क्र0सं0	विकासखण्ड	कुल कर्मकर	कुल जनसंख्या मे कार्यशील जन का प्रतिशत	कृषक	कृषि श्रमिक	उद्योग तथा निर्माण	व्यापार एवं वाणिज्य	अन्य कर्मकार
1	कुरारा	2737	36.1	50.2	27.4	2.0	1.8	18.6
2	सुमेरपुर	51725	40.5	41.4	30.3	3.7	2.2	22.4
3	सरीला	39860	44.2	48.2	26.2	2.7	1.4	21.5
4	गोहाण्ड	47347	48.8	43.6	22.4	3.3	1.2	29.5
5	राठ	36932	44.9	44.9	31.8	2.4	1.0	19.9
6	मुस्करा	38742	37.0	45.2	31.6	3.5	2.4	17.3
7	मौदहा	64974	378	45.8	27.4	3.1	1.8	21.9
नगरीय		40964	29.9	17.9	16.5	12.4	18.8	34.4
जनपद हमीरपुर		346917	39.2	42.0	26.7	4.2	3.7	23.4
8	पनवारी	54113	45.7	44.9	23.7	2.8	1.9	26.7
9	जैतपुर	47746	42.9	48.0	24.0	3.9	1.7	22.4
10	चरखारी	41883	46.9	45.7	22.5	2.5	1.1	28.2
11	कबरई	60494	41.6	46.7	29.6	2.9	1.5	19.3
नगरीय		35902	30.5	19.2	18.5	13.2	15.4	33.7
जनपद महोबा		240138	41.3	42.3	24.3	4.5	3.7	25.2
12	जसपुरा	28184	35.4	51.8	26.7	2.6	1.9	17.0
13	तिन्दवारी	45560	36.7	46.7	30.1	2.6	1.6	19.0
14	बड़ोखरखुर्द	52787	39.1	47.2	28.3	4.1	1.6	18.8
15	बबेरू	65423	45.3	47.6	22.1	2.6	1.4	26.3
16	कमासिन	55786	46.6	51.3	19.1	1.7	1.0	25.9
17	विसण्डा	64514	48.8	48.6	25.5	1.6	0.7	23.6
18	महुआ	73375	48.1	45.9	27.1	1.7	1.0	24.3
19	नरैनी	88483	52.1	58.3	20.1	1.7	1.3	18.6
नगरीय		53470	29.6	16.3	13.5	14.3	20.9	35.0
जनपद बांदा		527582	42.6	46.6	23.2	3.5	3.2	23.5
20	पहाड़ी	63835	47.8	57.3	23.0	1.6	0.8	17.3
21	कर्वी	58194	38.3	63.6	14.4	2.4	1.5	18.1
22	मानिकपुर	56105	48.4	51.9	25.7	2.4	1.0	19.0
23	रामनगर	30198	46.2	58.7	19.9	1.5	1.1	18.8
24	मऊ	60443	51.0	56.6	17.8	2.0	1.8	21.8
नगरीय		17681	30.2	15.5	12.0	14.3	24.8	33.4
जनपद चित्रकूट		276456	44.3	54.9	19.8	2.8	2.7	19.8
मण्डल–योग		1391093	41.8	46.4	23.6	3.7	3.3	23.0

स्रोत :– जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें – 2002 के आधार पर

2B (iv)– **सामाजिक सेवायें** :–

स्वास्थ्य (Health) विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार – " स्वास्थ्य से आशय रोगों एवं शारीरिक दुर्बलताओं के अभाव मात्र से ही नहीं, वरन् शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक रूप से मनुष्य के पूरी तरह ठीक होने से है।"

स्वास्थ्य जीवन के प्रत्येक पहलू पर मानव को प्रभावित करता है। केवल मनुष्य ही धन कमा सकता है एवं जातीय, सामाजिक, नैतिक वैयक्तिक और सब प्रकार के कर्तव्यों का पालनकर सकता है। अतः मानव की सर्वांगीण उन्नति एवं विकास का आधार स्वास्थ्य ही है। स्वास्थ्य जनता की कार्यक्षमता तथा शक्ति के मापदण्ड के साथ ही इस बात का भी संकेतक है कि व्यक्ति कितने समय तक निर्माण कार्य में संलग्न तथा राष्ट्रीय उन्नति में प्रवृत्त रह सकता है। रूग्ण व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता।

चित्रकूट धाम मण्डल लम्बे समय से महामारियों का क्षेत्र रहा है। अपर्याप्त चिकित्सा सुविधाओं, लोगों के अज्ञान तथा गरीबी के कारण चेचक, हैजा, मलेरिया, टाइफाइड तथा अन्य बीमारियां से बहुत से लोग मौत के शिकार बन जाते थे। 1951 तक बाल मृत्युदर बहुत अधिक थी तथा एक भारतीय की औसत अनुमानित आयु मात्र 32 साल थी।

तीन दशकों से अधिक के नियोजित विकास के फलस्वरूप स्वास्थ्य सुविधाओं में भारी सुधार हुआ है। वर्ष 2001–02 में चित्रकूट धाम मण्डल में कुल 37 एलोपैथिक चिकित्सालय, 138 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 55 आयुर्वेदिक चिकित्सालय एवं औषधालय, 7 यूनानी चिकित्सालय एवं औषधालय, 59 होम्योपैथिक, 9 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 38 परिवार एवं मातृ शिशु कल्याण केन्द्र तथा 611 उपकेन्द्र थे। निम्नलिखित तालिका सं0 2B–9 में चित्रकूट धाम मण्डल में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की संख्या को दर्शाया गया है :–

तालिका सं0– **2B–9**

चित्रकूट धाम मण्डल में चिकित्सालय एवं स्वास्थ्य सेवायें (सं0) – 2001–02

स्वास्थ्य सेवायें	हमीरपुर	महोबा	बांदा	चित्रकूट	योग मण्डल
1–एलोपैथिक चिकित्सालय/औषधालय	7	7	16	7	37
2– प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	39	16	55	28	138
3– आयुर्वेदिक चिकि0 एवं औषधालय	18	10	20	7	55
4–यूनानी चिकित्सालय एवं औषधालय	2	1	4	–	7
5– होम्योपैथिक	15	6	26	12	59
6–सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र	2	3	3	1	9
7–परिवार एवं मातृशिशु कल्याण केन्द्र	6	4	19	9	38
8– परिवार एवं मातृशिशु कल्याण उपकेन्द्र	174	127	205	105	611
9– क्षय रोग चिकित्सक	1	–	1	–	2
10– कुष्ठ रोग "	1	–	1	1	3

स्रोत :– जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

1976 से इस क्षेत्र में प्लेग के किसी मामले की सूचना नहीं मिली है। चेचक पहले एक भयानक बीमारी थी। अब उसका उन्मूलन कर दिया गया है। मलेरिया, क्षयरोग और हैजा पर जो कि पहले भारी संख्या में जानें लेते थे। अब विभिन्न स्तरों का नियन्त्रण पा लिया गया है। पोलियो पर नियन्त्रण पाने के लिए पल्स पोलियो उन्मूलन अभियान चलाया जा रहा है। राष्ट्रीय कुष्ठ निवारण काय्रक्रम, राष्ट्रीय क्षय नियन्त्रण कार्यक्रम, राष्ट्रीय प्रतिरक्षक कार्यक्रम, राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम तथा मातृ एवं शिशु कल्याण कार्यक्रम चलाये जा रहे है।

स्वास्थ्य की दशाओं में सुधार का सही माप दण्ड देश की प्रत्याशित आयु (Life expectancy) तथा मृत्यु दर सम्बन्धी ऑकड़ों से समझा जाता है। भारत में सन् 1941 में जन्म पर प्रत्याशित आयु 32 वर्ष समझी जाती थी। सन् 1941 में बढ़कर 41 वर्ष और 1981 में यह 54 वर्ष, 1991 में बढ़कर 59 वर्ष हो गयी है। इसी तरह देश में मुत्युदर में भी कमी आयी है। सन्1951 में मृत्युदर 27.4 जो सन्1961 में कम होकर 22.8 और 1981 में 14.0 तथा 1991 में घटकर 10.2 प्रति हजार रह गई थी। ये आंकड़े इस बात के द्योतक है कि मण्डल के स्वास्थ्य स्तर में सुधार हो रहा है।

किन्तु जब हम भारत की प्रत्याशित आयु की तुलना विश्व के अन्य देशों से करते हैं तो हमें पता चलता है कि यहॉ प्रत्याशित आयु अत्यन्त कम है। उदाहरण के लिए जापान में अपेक्षित आयु 77 वर्ष, अमरीका में 75 वर्ष तथा रूस में 71 वर्ष है। ये आंकड़े हमे बतलाते है कि भारत में सामान्य स्वास्थ्य का स्तर नीचे दर्जे का है। निम्न स्तर के स्वास्थ्य का कारण 1– ऊँची जन्म दर 2– स्वच्छ पेय जल एवं सफाई की उचित व्यवस्था का अभाव 3– अपर्याप्त और अपौष्टिक भोजन या कुपोषण
4– गन्दी व अपर्याप्त आवास व्यवस्था 5– दवाइयों और डाक्टरों की कमी तथा 6– जल और वायु प्रदूषण है। अतः निम्न स्वास्थ्य स्तर को सुधारने की आवश्यकता है।

शिक्षा (EDUCATION) :- शिक्षा का उद्देश्य जहॅा एक ओर शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक विकास करना है, वहीं दूसरी ओर भौतिक प्रगति के लिए उत्पादक कुशलता प्राप्त करना भी है। अतः आज जब सुनियोजित आर्थिक विकास को समस्त सामाजिक गतिविधियों में प्राथमिकता दी जा रही है, शिक्षा को आर्थिक विकास की अपेक्षाओं के अनुरूप ढालना समय की मांग है। " *"शिक्षा ही एक प्रमुख तत्व है, जिसके द्वारा आर्थिक विकास और कला विज्ञान सम्बन्धी विकास की प्रगति हो सकती है।"*

अतः आर्थिक विकास को बढ.ावा देने के लिए सामाजिक अभिवृत्तियों, रूढ़ियों, पुराने धार्मिक बन्धनों तथा राजनीतिक संस्थानों को बदलना होगा और इसके लिए शिक्षा का विकास अनिवार्य है। अतः शिक्षा तथा प्रशिक्षण दो स्तरों पर आर्थिक विकास में योगदान दे सकता है।

प्रथम यदि किसी देश में साक्षरता बढ़ती है तो उसके परिणाम स्वरूप देश में आर्थिक परिवर्तन करने में सहायता मिलती है। दूसरे किसी देश में नये उद्योग धन्धे कायम करने के लिए विभिन्न स्तरों

पर कुशल श्रमिक कारीगर तथा इन्जीनियर आदि चाहिए। यही नहीं जनता को बीमारियों से बचाने के लिए कुशल नर्सो एवं डाक्टरों की सहायता चाहिए। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि देश के मानवीय संसाधनों के विकास द्वारा ही आर्थिक औद्योगिक विकास सम्भव है।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2001–02 में शिक्षण हेतु 3875 जूनियर बेसिक सकूल, 1116 सीनियर बेसिक स्कूल, 190 माध्यमिक या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, 15 महाविद्यालय या स्नातक महाविद्यालय, 2 प्रावैधिक शिक्षण संस्थान (महोबा तथा बांदा में), 5 औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, 2 शिक्षक प्रशिक्षण संस्थन है। इसके अतिरिक्त 1500 अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र तथा 2075 बालबाड़ी या आंगनबाड़ी केन्द्र हैं।[29]

साक्षरता की स्थिति :– तालिका सं0 10 से स्पष्ट है कि चित्रकूटधाम मण्डल में 1991 में साक्षरता प्रतिशत 29.9 थी अर्थात् कुल साक्षर व्यक्ति 994412 थी जिसमें पुरूष साक्षरता 42.8 % (साक्षर पुरूष 774276) तथा स्त्री साक्षरता 14.5 % (साक्षर स्त्री 220136) थी।

1991 में सबसे अधिक साक्षरता प्रतिशत हमीरपुर जनपद में 41.7 % थी, जिसमें पुरूष साक्षरता 57.9 % तथा स्त्री साक्षरता 22.1 % थी। सबसे कम साक्षरता प्रतिशत चित्रकूट जनपद में 29.9 थी जिसमें पुरूष साक्षरता 42.8 % तथा स्त्री साक्षरता 14.5 % थी।

चित्रकूटधाम मण्डल में साक्षरता का प्रतिशत 2001 की जनगणनानुसार 57.76 % था जिसमें बांदा में 54.84 % चित्रकूट में 66.06 % हमीरपुर में 58.10 % तथा महोबा में 54.23 अ पायी गयी है।[30]

1991 में विकास खण्डों में सर्वाधिक ग्रामीण साक्षरता सुमेरपुर विकासखण्ड में 41.2 % थी जिसमें पुरूष साक्षरता 57.4 %तथा स्त्री साक्षरता 21.7 % थी। न्यूनतम साक्षरता मानिकपुर विकासखण्ड में 25.7 % थी जिसमें पुरूष साक्षरता 40.4 % तथा स्त्री साक्षरता 8.0 % थी।

सर्वाधिक ग्रामीण पुरूष साक्षरता प्रतिशत गोहाण्ड विकासखण्ड में (60.0%) तथा सबसे कम पुरूष साक्षरता प्रतिशत मानिकपुर विकासखण्ड में (40.4%) है। इसी प्रकार सर्वाधिक ग्रामीण स्त्री साक्षरता प्रतिशत सुमेरपुर विकासखण्ड में 21.7 % तथा सबसे कम स्त्री साक्षरता मानिकपुर विकासखण्ड में 8.0 % है।

निम्नलिखित तालिका सं0 2B–10 में चित्रकूटधाम मण्डल में विकासखण्डवार साक्षर व्यक्ति तथा साक्षरता का प्रतिशत दर्शाया गया है :–

तालिका सं0 2B –10

चित्रकूटधाम मण्डल में विकासखण्डवार साक्षर व्यक्ति तथा साक्षरता का प्रतिशत– सन् 1991

क्र0 सं0	विकासखण्ड	साक्षर व्यक्ति			साक्षरता का प्रतिशत		
		पुरूष	स्त्री	कुल	पुरूष	स्त्री	कुल
1–	कुरारा	15836	4596	20432	48.4	17.1	34.2
2–	सुमेरपुर	31840	9946	41786	57.4	21.7	41.2
3–	सरीला	19954	3815	23769	50.0	11.8	32.9
4–	गोहाण्ड	24994	5956	30950	60.0	17.1	40.5
5–	राठ	19284	4694	23978	51.1	15.7	36.2
6–	मुस्करा	25994	7281	33275	55.8	19.3	39.5
7–	मौदहा	41518	11684	53202	55.3	19.0	38.9
नगरीय		45499	22507	68006	74.6	44.8	61.1
जनपद–हमीरपुर		224919	70479	295398	57.9	22.1	41.7
8–	पनवाडी	26918	6971	33889	51.4	16.0	35.3
9–	जैतपुर	21460	5127	26587	44.2	12.6	29.8
10–	चरखारी	19485	4532	24017	49.4	14.1	33.5
11–	कबरई	28714	7056	35770	44.9	13.4	30.7
नगरीय		33678	16922	50600	66.0	38.8	53.4
जनपद–महोबा		130255	40608	170863	51.0	19.1	36.5
12–	जसपुरा	18007	4664	22671	52.2	16.8	35.9
13–	तिन्दवारी	30554	8675	39229	55.9	19.9	39.9
14–	बडोखर खुर्द	32592	7478	40070	54.2	15.8	37.3
15–	बबेरू	32336	6573	38909	51.3	12.8	34.1
16–	कमासिन	24268	3883	28151	46.4	9.1	29.7
17–	विसण्डा	25772	4000	29772	44.4	8.4	28.2
18–	महुआ	34543	8190	42733	51.1	14.9	34.9
19–	नरैनी	33412	6889	40301	46.6	12.0	31.2
नगरीय		59851	29154	89005	60.5	35.6	49.2
जनपद–बांदा		291335	79506	370841	51.9	17.5	36.5
20–	पहाड़ी	26025	4954	30979	45.7	10.2	29.4
21–	कर्वी	30250	5015	35265	44.3	8.7	28.1
22–	मानिकपुर	20057	3296	23353	40.4	8.0	25.7
23–	रामनगर	11802	2153	13955	42.7	9.3	27.5
24–	मऊ	20812	4939	25751	50.6	13.8	33.5
नगरीय		18821	9186	28007	72.7	42.9	59.2
जनपद– चित्रकूट		127767	29543	157310	47.4	13.0	31.7
मण्डल		774276	220136	994412	42.8	14.5	29.9

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकाएँ, 2002।

नोट :– 1991 की साक्षरता का प्रतिशत 7 तथा अधिक वर्ष की जनसंख्या से सम्बन्धित है।

Fig. : 2B-5
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
LITERACY - 1991
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26°
N
30'
25°
24°
30'
N
KURARA
SUMERPUR
JASPURA
SARILA
GOHAND
MUSKARA
TINDWARI
MAUDAHA
RATH
BAROKHAR
KHURD
BABERU
KAMASIN
CHARKHARI
PANWARI
KABRAI
MAHUA
BISANDA
PAHARI
RAMNAGAR
KARWI
MAU
JAITPUR
NARAINI
MANIKPUR
PERCENTAGE OF LITERATES TO RURAL
POPULATION
25 - 30
35 - 40
30 - 35
40 - 45

न्याय (Justice) :-

चित्रकूटधाम मण्डल में प्रत्येक जनपद में 1– दिवानी न्यायालय 2– फौजदारी न्यायालय तथा 3– राजस्व न्यायालय कार्य कर रहे है तथा ग्रामीण अंचलों में न्याय पंचायतों का गठन किया गया है । कई ग्राम सभाओं (5 से 12) को मिलाकर एक न्याय पंचायत का गठन किया गया है। चित्रकूटधाम मण्डल में कुल न्याय पंचायतों की संख्या 216 है। जो हमीरपुर, महोबा, बांदा तथा चित्रकूट जनपदों में क्रमशः 52, 39, 71 तथा 47 है। प्रत्येक जनपद में दिवानी अदालतों में जिला या अतिरिक्त जिला न्यायाधीश, सिविल न्यायाधीश सीनियर डिवीजन तथा जूनियर डिवीजन, फौजदारी अदालतों में सत्र न्यायाधीश, अतिरिक्त न्यायाधीश, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट नियुक्त है, अधीनस्थ न्यायालय प्राप्त अधिकारों के अनुसार सभी तरह के दीवानी और फौजदारी विवादों का निपटारा करते हैं। जिले का सबसे बड़ा प्रशासनिक अधिकारी जिलाधिकारी (डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट) होता है। उच्च न्यायालय इलाहाबाद में स्थित है और इसकी 'न्यायपीठ' लखनऊ में स्थापित है।

सुरक्षा (Security) :- किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास के लिए धन जन की सुरक्षा होना अति आवश्यक है। डाकुओं तथा आतंकवादियों के आतंक से आर्थिक विकास बाधित होता है। साथ ही साथ सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक विकास भी प्रभावित होता है। मानिकपुर का पठारी क्षेत्र दस्यु प्रभावित क्षेत्र रहा हैं। इसलिए यह क्षेत्र अत्यन्त पिछड़ा तथा निर्धन क्षेत्र है। यहॉ की राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक गतिविधियॉ डाकुओं से प्रभावित रहती हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में कुल पुलिस स्टेशनों की संख्या 50 है, जिसमें 30 ग्रामीण तथा 20 नगरीय है। हमीरपुर जनपद में कुल पुलिस स्टेशन 14 हैं जिसमें 9 ग्रामीण क्षेत्रों में तथा 5 नगरीय क्षेत्रों में स्थित है। महोबा जनपद में 9 (4 ग्रामीण तथा 5 नगरीय), बांदा जनपद में 17 (10 ग्रामीण तथा 7 नगरीय) तथा चित्रकूट जनपद में 10 (7 ग्रामीण एवं 3 नगरीय) पुलिस स्टेशन हैं, जो ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्र के निवासियों को सुरक्षा प्रदान करते हैं।

मनोरंजन (Means of Recreation) :- चित्रकूटधाम मण्डल में मनोरंजन के प्रमुख साधन रेडियो, टेलीवीजन, सिनेमा, विभिन्न प्रकार के खेल, तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम हैं। इनसे मनुष्य परिश्रम से क्लान्त अपने मन को प्रसन्न करते हैं। टेलीविजन मनोरंजन का प्रमुख साधन है, जो केवल धनी वर्ग तक सीमित है। नगरीय क्षेत्रों में इसका प्रसार अधिक है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में कम। रेडियो जन साधारण का मनोरंजन तथा ज्ञान का साधन है। चित्रकूटधाम मण्डल में मनोरंजन के साधन के रूप में 25 सिनेमागृह स्थापित है, जिनमें सीटों की कुल संख्या 13305 है। हमीरपुर जनपद में 7 (मुस्करा, हमीरपुर, मौदहा, राठ) सिनेमागृह तथा सीटों की कुल संख्या 3685, महोबा जनपद में 8 सिनेमागृह (महोबा, कबरई, चरखारी, कुलपहाड़, पनवाडी) तथा सीटों की कुल संख्या 3725, बांदा जनपद में 6 सिनेमागृह (बांदा, अतर्रा) तथा सीटों की कुल संख्या 3255 एवं चित्रकूट जनपद में 4 सिनेमागृह तथा सीटों की कुल संख्या 2640 है।

—: सन्दर्भ :—

1. *वर्मा, आर0 वी0* : भारत का संक्षिप्त भौगोलिक विवेचन पेज 11
2. *वाडिया, डी0एन0* : ज्योलॉजी ऑफ इण्डिया (तृतीय संस्करण संशोधित) पब्लिश्ड, 1996, ज्यालाूजिकल फारमेशन ऑफ इण्डिया, पृ069
3. एच0एच0 : दि ग्रेनाइट कन्ट्रोवर्सी थामस मर्वी, लन्दन 1957,
4. *सक्सेना, एम0एम0* : एगमेटिक्स इन बुन्देलखण्ड ग्रेनाइट्स एण्ड नीसेस एण्ड फिनॉमिना ऑफ ग्रेनाइटीशेशन करेन्ट साइन्स वाल्यूम, XXII पृ.376 – 77
5. रिर्पोट ऑफ ज्यालॉजी एण्ड माइनिंग, यू0पी0 वाल्यूम,1, लखनऊ पृ0112
6. *वाडिया डी0एन0* : ज्योलॉजी ऑफ इण्डिया, दि आर्कियन सिस्टम नीस एण्ड शिस्ट, 1966. पृ076
7. *कृष्णन. एम0एस0* : ज्यालॉजी ऑफ इण्डिया, वर्मा.1968, पृ0124
8. *झिंगरन, ए0जी0* : प्रोसीडिंग्स ऑफ 45वीं सेशन ऑफ आई.एस.सी.ए. भाग 11, पृ0107
9. *कबीर, एच0* : गजेटियर ऑफ इण्डिया, वाल्यूम 1, नई दिल्ली 1965 पृ0.4
10. *सक्सेना, जे0पी0* : ज्योलॉजिकल कन्ट्रोल ऑफ दि इब्ल्यूशन ऑफ बुन्देलखण्ड टेपोग्राफी, जनरल ऑफ ज्याग्रफी, यूनीवर्सिटी ऑफ जबलपुर वाल्यूम11. 1960, पृ019
11. *वाडिया, डी0एन0* : ज्योलॉजी ऑफ इण्डिया आप. सेट. पृ0128
12. *कृष्णन, एम0एस0* : ज्योलॉजी ऑफ इण्डिया एण्ड वर्मा, पृ0511'
13. *सिदि्दकी, एम0एफ0* : फिजियोग्रैफिक डिवीजन्स ऑफ बुन्देलखण्ड, पृ025–33
14. *लॉ, बी0 सी0* : माउन्टेन एण्ड रीवर्स ऑफ इण्डिया, एम.सी.जी कलकत्ता,1968 पृ0375
15. *स्पेन्सर, डब्ल्य0. ई0* : ज्योलॉजी ए सर्वे ऑफ अर्थ साइंस न्यूयार्क, 1966, पृ0289
16. *केन्ड्रयू, डब्ल्यू0 जी0 डी0* : क्लाइमेट ऑफ दि कन्टीनेन्टस, छठा संस्करण, आक्सफोर्ड, 1963, पृ0169
17. *पैधी, एस0एस0* : क्लाइमेट ऑफ दि दकन ट्रैप रीजन विदर्भ, दि इण्डियन ज्याग्रफिकल जनरल्स वाल्यूम XXXIII न. 384, मद्रास, 1963. पृ088
18. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर बाँदा 1909, हमीरपुर 1909 पृ021
19. *एच0एम0बेनेट* : द स्वायल एण्ड एग्रीकल्चर 'ऑफ सदर्न' स्टेटस.1921
20. *रॉयन, वी0बेगटसन* : फन्डामेन्टल ऑफ इकोनॉमिक ज्याग्रफी, नई दिल्ली 1971, पृ0110
21. *थार्नवरी, डब्ल्यू0 डी0* : प्रिन्सपल्स ऑफ ज्योग्राफिलाफजी, न्यूयार्क ,1954, पृ073

22. केब्स–'क्लाइमेट एण्ड स्वायल फॉरमेशन इन साउथ इण्डिया एण्ड ईस्ट', डा.आर. दुबे, इक्नॉमिक ज्याग्रफी ऑफ इण्डियन रिपब्लिक, किताब महल इलाहाबाद ,1961, पृ059 द्वारा उद्घृत ।
23. *वाडिया, डी0एन0* : 'ज्योलॉजी ऑफ इण्डिया', न्यूयार्क, 1961, पृ0516–17
24. अमर उजाला– समाचार पत्र – 18 जून 2003
25. *महतो के0* : "पैटर्न आफ पापुलेशन ग्रोथ इन बिहार" इण्डियन ज्याग्राफिकल स्टडीज रिसर्च बुलेटिन नं0 2, मार्च 1974, ज्यॉग्राफी रिसर्च पटना, पृ0 28
26. *क्लार्क, जे0आई0* : पापुलेशन ज्यॉग्राफी, लन्दन 1966 पृष्ठ 20
27. *सिंह, प्रभात कुमार* : जनसंख्या एवं नगरीकरण, कॉम्पिटीशन स्पेक्ट्रम, 84/13 पुरा दलेज, अल्लापुर इलाहाबाद, पृ0–60
28. *कनिंघम* : एन्सेन्ट ज्याग्रफी ऑफ इण्डिया, लन्दन 1963, पृ0 408
29. सांख्यकीय पत्रिका, चित्रकूट धाम मण्डल, बांदा – 2002
30. *सिंह, प्रभात कुमार* : जनसंख्या एवं नगरीकरण कॉम्पिटीशन स्पेक्ट्रम, 84/13 पुरा दलेल, अल्लापुर, इलाहाबाद, पृ0–55

अध्याय –3

जैवीय पृष्ठभूमि
(BIOTIC FOUNDATIONS)

3.1 जैवीय संसाधनों की संकल्पना :–

प्रकृति ने मानव को अनेक संसाधन प्रदान किये है। प्रकृति प्रदत्त इन संसाधनों में जैवीय संसाधनों का विशेष महत्व है। *मानव जीवन का अस्तित्व जैवीय संसाधन पर ही निर्भर है।* जैवीय संसाधन थल एवं जल दोंनों ही स्रोतो से प्राप्त होते हैं। थलीय जैव संसाधनों में प्राकृतिक वनस्पति अर्थात् वन, घास एवं अर्द्ध मरुस्थल प्रदेश के पेड़–पौधे, कृषिगत फसलें, बागान आदि, वन्य जीव–जन्तु एवं पालतू पशुओं को सम्मिलित किया जाता है। प्राकृतिक वनस्पति का स्थलीय संसाधनों में सर्वाधिक महत्व है और जलीय संसाधनों में मछलियां सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

जैवीय संसाधनों में प्राकृतिक वनस्पति तथा जन्तु जीवन यथा मछली, पशु, एवं कीट आदि को ही सम्मिलित नहीं करते बल्कि उन जैवीय तत्वों को भी सम्मिलित किया जाता है, जो कि उपयोगिता के विपरीत हैं तथा मानव अधिवास एवं आर्थिक क्रियाओं में बाधा उत्पन्न करतें हैं। फिर भी अधिकाँश जीव–जन्तु एवं वनस्पतियाँ मानव को प्रत्यक्ष संसाधन उपलब्ध कराने की अपेक्षा परोक्ष रुप से संसाधन प्रदान करती हैं। आखेट, वनोपज एकत्रीकरण, पशुचारण, मुर्गीपालन, दुग्ध उद्योग, कृषि, मत्स्य व्यवसाय आदि अधिकांशतः मानव जाति को आधार प्रदान करते हैं। उदाहरणार्थ विश्व के टुण्ड्रा एवं स्टेपी प्रदेशों में आखेट या पशुचारण एक मात्र जीविका का उपाय है। इन क्षेत्रों में पशुओं के बिना मानव जीवन असम्भव नहीं तो दुष्कर अवश्य है एवं उत्पादन अत्यधिक व्ययशील है। वास्तव में ऐसा प्रतीत होता है कि यदि मानव ने संसाधन के रुप में पशुओं का उपयोग न किया होता तो वह इतना विकसित न हो पाता। इसी प्रकार पशु भी अपने भोजन के लिए विशेष रुप से वनस्पति पर ही निर्भर है।

मनुष्य वनस्पतियों तथा जीव जन्तुओं की अनेक किस्मों का उपयोग करने में पूर्ण सफलता नहीं प्राप्त कर सका है। बहुत से जन्तुओं, पक्षियों तथा मछलियों की तुलना में घरेलू उद्योग अथवा उत्पादन के लिए मानव ने केवल दो कीटों–(1) मधुमक्खी तथा (2) रेशम कृमि का प्रत्यक्ष रुप में अधिक उपयोग किया है। इसी आधार पर अनेक कीटों की जातियों को भी संसाधन कहा जा सकता है।

वास्तव में संसाधन का अर्थ किसी उद्देश्य को प्राप्त करना है। यह उद्देश्य व्यक्तिगत अथवा सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति करता है। अतः कोई भी वस्तु तब तक संसाधन नहीं कही जा सकती, जब तक उसमें मानव की आवश्यकता पूर्ति अथवा कठिनाई निवारण की आंशिक अथवा पूर्ण क्षमता नहीं है। संसाधनों की उपादेयता मानव की क्रियाओं द्वारा ही सम्भव है। मानव एवं उनके कार्यो से ही इसका सम्बन्ध हैं और मानव की आवश्यकता पूर्ति ही संसाधन का उपयोग है।[1]

जिम्मरमैन के अनुसार – *Source is means of attaining given ends ,the ends being satisfaction of individual wants and a attainment of social objective.*[2]

किसी भी पदार्थ की संसाधनता उसके उपयोग पर निर्भर करती है। जीवीय संसाधनों की संसाधनता का अध्ययन तीन उपवर्गो के अर्न्तगत किया जा सकता है–

(1) प्राकृतिक वनस्पति (2) पशु एवं जीव जन्तु

(3) कृषि उपज एवं उद्यान

(1) प्राकृतिक वनस्पति की संसाधनता :–

प्राकृतिक वनस्पति में वनों का महत्व सर्वोपरि है। आदिकाल से ही मानव अपनी उदर पूर्ति के लिए वनों पर आश्रित रहा है। प्राचीन मानव वनों में ही कन्दमूल और फल इकट्ठा करके अथवा वन्य पशुओं का शिकार करके अपना आहार जुटाता था। वृक्षों की छालों तथा पत्तों से अपना तन ढकता था तथा वृक्षों से प्राप्त लकड़ियों पत्तों एवं घासों से मकान बनाकर रहता था। मानव आज भी कुछ हद तक वनों पर निर्भर है। भोज्य पदार्थों के रुप में विभिन्न फल, नारियल, बेर, कैथा, अखरोट, अंजीर, आडू, खुबानी, जामुन, आम, अनेक कन्दमूल तथा ताड़ से प्राप्त गुड़ आदि भी वनों से प्राप्त होते हैं। उद्योगों के लिए कच्चामाल, विभिन्न प्रकार की कठोर व मुलायम लकड़ी, विभिन्न रेशें, सेमल की रुई, जंगली रबड़, बेंत, औषधियों के लिए विभिन्न जड़ी बूटियाँ, ढाक और तेन्दू पत्ते तथा ईंधन के लिए लकड़ी आदि हमें वनों से ही प्राप्त होती है।

घास के मैदानों का भी विशेष आर्थिक महत्व है। ऊन, चमड़ा तथा अन्य पदार्थों का मूल आधार 'पशु' इसी प्राकृतिक वनस्पति पर निर्भर करते हैं। मरुस्थलीय एवं अर्धमरुस्थलीय वनस्पतियाँ भी आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। प्राकृतिक वनस्पति एवं वनों के इन प्रत्यक्ष लाभों के अलावा वनों का सबसे महत्वपूर्ण कार्यजलवायुविक नियन्त्रण, मृदा अपरदन को रोकना तथा भूमि की आर्द्रता को बनाये रखना हैं। बाँढ़ों को संयमित करने तथा नदियों के प्रवाह को सन्तुलित रखने में भी वन सहायक होते हैं। साथ ही साथ पर्यावरण को शुद्व करने में भी इनका महत्वपूर्ण योगदान है।

(2) पशुओं एवं जीवजन्तुओं की संसाधनता :–

जैवीय संसाधन आदिकाल से मानव के लिए सहज प्राथमिक संसाधन रहे हैं। जीवजन्तु जैवीय संसाधनों का अभिन्न अंग है। मानव के लिए जीवजन्तु सदैव एक संसाधन के रुप में रहे हैं। जीवजन्तु एक ओर जहाँ मानव के लिए लाभप्रद हैं, वहीं उनका पारिस्थितिक महत्व भी है।

मानव तो प्रत्येक प्रकार की जलवायु में अपना अनुकूलन (Adaptation) कर सकता है परन्तु जन्तु प्रत्येक प्रकार की जलवायु में नहीं रह सकता। जो जन्तु प्रवासी होते हैं, उनके स्थानान्तरण करने का पर्यावास भी सीमित होता है।

संसार में समस्त मानव का सबसे बड़ा आर्थिक साधन पशुधन है। यद्यपि वर्तमान वैज्ञानिक एवं तकनीकी उन्नति के युग में कल कारखानों, यन्त्रों, मशीनों, परिवहन– यानों, भारवाहनों, रेलगाड़ियों जलपोतों और संचार माध्यमों शक्ति के संसाधनों और खनिज का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, फिर भी पशु संसाधन का महत्व तथा आर्थिक उत्पादन खनिज संसाधनों की अपेक्षा आज भी अधिक है। *'मानव जीवन में भोजन, वस्त्र, परिवहन और संस्कृति के साथ पशुओं का गहरा सम्बन्ध स्थापित हो चुका है।'*

सभ्यता के प्रारम्भ से पशुओं को मॉस की प्राप्ति के लिए मारा जाता रहा है। कुछ पशुओं से दूध भी प्राप्त किया जाता रहा है। अन्य वस्तुओं के लिए उनका शोषण समूर, चमड़ा, औजार, अस्त्र आदि प्राप्त करने के लिए किया जाता रहा है। बैल भूमि को जोतने में सहायक सिद्व हुए जिससे मानव को कृषि उत्पादन बढ़ाने में सहायता मिली। इसके अतिरिक्त पालतू पशु अन्य पशुओं से संघर्ष में भी सहायक रहें। कुछ पशुओं का मूल्य रक्षक एवं साथी के रुप में हैं तो कुछ राष्ट्रीय क्रीड़ा की वस्तु भी हैं, जैसे – घोड़ा, कुत्ता, मुर्गा, साड़ आदि। जिनकी कुश्ती बड़े चाव से देखी जाती है। इसके अतिरिक्त कुछ युद्व में सहायक होते हैं, जैसे – हाथी, घोड़े आदि।

चिकित्सा के क्षेत्र में पशुओं का सहयोग भूला नहीं जा सकता। 'गिनीपिग' सफेद चूहे तथा अन्य बहुत से जन्तु, खरगोश, बन्दर आदि पर औषधियों का परीक्षण होता रहता है। प्रायः सभी दवाईयाँ पहले पशुओं पर प्रयोग में लाई जाती हैं और लाभप्रद सिद्ध होने पर ही मानव के लिए उन्हे प्रयोग में लाया जाता है। अनेक औषधियों का निर्माण पशुओं के विभिन्न द्रव्यों से किया जाता है।

पशुओं का प्रयोग बहुत ही व्यापक है। इसके द्वारा विश्व के अनेक प्रदेशों में भोजन की कमी को पूरा किया जाता है। सम्पूर्ण कैलोरी का लगभग 1/5 भाग इनके द्वारा पूरा किया जाता है। जिम्मरमैन के अनुसार विश्व के दो तिहाई लोग या तो माँस नहीं खाते या बहुत कम खाते हैं, परन्तु समूर, रेशम का प्रयोग बहुत अधिक मात्रा में करते हैं।

इस प्रकार कुछ पशुओं से हमें दूध और माँस प्राप्त होता हैं, तो कुछ पशुओं से ऊन एवं चमड़ा प्राप्त होते हैं। कुछ अन्य जन्तुओं से तेल, औषधियाँ व अन्य पौष्टिक पदार्थ प्राप्त होते हैं, तो कुछ पशु बोझा ढ़ोने व सवारी का साधन है। कुछ पशु हमारा मनोरंजन करते हैं। गिद्ध, सुअर व कुछ अन्य, मृत जीव–जन्तुओं को खाकर प्राकृतिक सफाई कर्मचारी या अपमार्जक का कार्य करते हैं। केचुए भूमि को जोतकर उपजाऊ बनाने के कारण 'कृषक के मित्र' कहलाते हैं।

कीट पतंगो में असंख्य जातियाँ होती हैं, जिन पर सामान्यतः मानव का ध्यान नहीं जाता। फिर भी मानव के लिए प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप से अनेक कार्यों में सहायक हैं।

3. कृषि उपजों व उद्यानों की संसाधनता :–

मानव ने अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए अनेकानेक प्रयास किए हैं। विविध संसाधनों के परिवर्द्धन–संसोधन और परिष्करण के माध्यम से आज कृषि का उन्नत स्वरुप विकसित हो सका है। कृषि मानव जगत की बड़ी पुरानी परम्परा है और इसका विस्तार उतना है जितना मानव निवास का। इसमें मानव की सम्पूर्ण सभ्यता निहित है। कृषि में खेत की जुताई, फसल उगाना, पशुचारण, फलों की खेती, वन सम्बन्धी कार्य, सिंचाई, मत्स्य पालन, आदि सम्मिलित हैं। भोजन की प्राप्ति कृषि की प्रधान क्रिया है, किन्तु भोजन कृषि के अतिरिक्त आखेट तथा फल एकत्रण से भी प्राप्त होता है जो कृषि की प्रकिया नहीं है। कुछ विद्वानों ने कृषि को वृक्षों तथा पशुओं के शोषण की संज्ञा दी है, किन्तु वास्तव में यहाँ कृषि विकास की एक पद्धति है।

जिम्मरमैन के अनुसार :– *"कृषि के अर्न्तगत वे उत्पादक प्रयास सम्मिलित हैं जो भूमि पर बसे हुए मानव द्वारा उपयोग किये जाते हैं और यदि सम्भव हो तो मानव पौधे एवं पशु जीवन या प्राकृतिक विकास की प्रणाली को अधिक उन्नत या प्रगतिशील बनाता है और लक्ष्य रखता है कि इन पद्धतियों के द्वारा अपनी वनस्पति या पशु सम्बन्धी पदार्थों की आवश्यकता पूरी हो।'*

कृषि का महत्वपूर्ण कार्य भोजन का उत्पादन है। इसमें पशुओं का भोजन भी सम्मिलित हैं। अधिकांश भोजन कृषि द्वारा ही प्राप्त किया जाता है।

कृषि प्राचीन काल से ही भोजन प्राप्ति का एक साधन रही है। वर्तमान में भी यह विश्वव्यापी है। कृषि के विभिन्न तरीकों से भोजन उपजाया जाता हैं। यह क्रिया पृथ्वी पर सभी स्थानों में चलती है।

3.2 मानव के लिए जैवीय संसाधनों का महत्व :–

जैवीय संसाधन के अर्न्तगत मुख्यतः वनस्पति और जन्तु जगत के संसाधन आते हैं। इस पृथ्वी में तीन प्रकार के जीवधारी हैं–

(1) वनस्पतियां (2) पशु और (3) मानव

तीनों के पारस्परिक सहयोग से ही तीनों का सह अस्तित्व होता है। वनस्पति के बिना संसार में मनुष्य की सत्ता कायम नहीं रह सकती है। मानव और जन्तु चलने फिरने वाले जीवधारी हैं और वनस्पति अचल जीवधारी है। मानव और वनस्पति का इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि मानव को जीवित

रहने के लिए जिस प्राण वायु (ऑक्सीजन) की आवश्यकता होती है वह वनस्पति से ही प्राप्त होती है। न केवल मनुष्य अपितु अन्य प्राणी भी इनसे प्राप्त ऑक्सीजन को प्राणवायु के रुप में ग्रहण करते हैं। मनुष्य के साँस लेने पर जो वायु फेफड़ों में जाती है, वह शुद्ध ऑक्सीजन गैस मनुष्य के रक्त को शुद्व करती है और मनुष्य को जीवन प्रदान करती है। मनुष्य उस ऑक्सीजन के बदले में कार्बनडाई ऑक्साइड साँस द्वारा बाहर निकाल देता है। पेड़ पौधे इस कार्बनडाई आक्साइड गैस को अपने लिए उपयोग कर लेते हैं और इसके बदले में ऑक्सीजन बाहर निकाल देते हैं। इसी ऑक्सीजन से मानव जीवन सम्भव है।

इस प्रकार मानव और वनस्पति का परस्पर जैविक सम्बन्ध है, जिसके द्वारा एक दूसरे का सह–अस्तित्व है। मानव जगत् और वनस्पति जगत् दोनों के योग से ही प्रकृति में जीवन सन्तुलन स्थिर रहता है। मनुष्य ने अपने बुद्धिबल से सृष्टि के चर और अचर सभी संसाधनों का अपने हित के लिए उपयोग किया है। जीवजन्तु से उसने आर्थिक साधन जुटाएँ हैं। मनुष्य ने अपनी बुद्धिकौशल से सबसे भयंकर एवं हिंसक प्रकृति के जीवों को भी अपने वश में करके, उनसे यथेष्ट लाभ प्राप्त किया है। पर्यावरण में पृथक–पृथक जैविक संसाधनों की उत्पत्ति हुई है। यदि हम प्राकृतिक वातावरण के साथ जीव–जन्तुओं का सामंजस्य देखे तो स्पष्ट होता है कि रेगिस्तानी भागों में ऊँट बिना भोजन पानी के कई दिनों तक जीवित रह सकता है व *'रेगिस्तानी जहाज'* कहलाता है। भूमध्यरेखीय क्षेत्रों में शक्तिशाली जीव तथा विशालकाय जानवर निवास करते हैं, जो सघन वनों से गुजर सकें, क्योंकि भूमध्यरेखीय वनों में सघन वनस्पति पायी जाती है। आस्ट्रेलिया के घास के मैदान, जो 'डाउन्स' कहलाते हैं, इनमें 'कंगारु' एक विशेष जीव है, जो उछाल मारते समय बच्चे को पेट से लगी थैली में रख लेता है। इस प्रकार विभिन्न क्षेत्र में 'जैविक संसाधन' अपने पर्यावरण के साथ सामंजस्य स्थापित किये हुए हैं। पशु एवं वनस्पति की एक निश्चित सीमा नहीं बनायी जा सकती, परन्तु फिर भी ये दोनों एक दूसरे से परिस्थितिकी क्रम (Eco system) बनाये हुए है। इन दोनों में परिस्थितिकी क्रम इस प्रकार स्थापित हुआ है कि वनस्पति की न्यूनता होने पर पशुओं की संख्या में न्यूनता होने लगती है तथा वनस्पति की अधिकता होने पर ये पशु स्वस्थ एवं सन्तुलित होने लगते हैं।

(क) प्राकृतिक वनस्पतियों का महत्व :– जैवीय संसाधनों में 'प्राकृतिक वनस्पति' का महत्व सर्वोपरि है, क्योंकि *मानव सभ्यता का विकास 'वनों की गोद' में हुआ है।* प्राचीनकाल से ही भारतीय सभ्यता के विकास में वनों एवं वृक्षों का विशेष महत्व रहा हैं हमारे ऋषि–मुनियों ने इन्ही वनों के सौम्य, शुद्ध एवं शान्त वातावरण में वेदों एवं पुराणों की रचना की तथा धार्मिक कर्मकाण्डों एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वृक्षों एवं वनस्पति के महत्व को प्रतिपादित किया।

प्राचीन काल से ही वनों एवं वृक्षों को हमारी सभ्यता में यथोचित स्थान प्राप्त है। यही कारण है कि बरगद, पीपल, नीम, आम, तुलसी बेल, कुश, इत्यादि की पूजा होती आई है तथा धार्मिक कर्मकाण्डों में इनका प्रयोग होता आया है।

मत्स्य पुराण में एक वृक्ष को दस पुत्रों के समान कहा गया है एवं वराह पुराण में वृक्ष लगाने वाले को कभी नर्कवास न मिलने का उल्लेख है। इसी प्रकार कुरान शरीफ कहता है कि हरे पेड़ काटने वाले को खुदा कभी मॉफ नहीं करता।

मानव आदिकाल से ही अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए वृक्षों एवं वनों पर आश्रित रहा है। वनों से समाज या मानव को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रुप से अनेक लाभ मिलते हैं।

(i) ***प्रत्यक्ष लाभ*** :— प्राकृतिक वनस्पति द्वारा मानव को निम्नलिखित प्रत्यक्ष लाभ होते हैं:—

(1) वनों से कई प्रकार की लकड़ियाँ प्राप्त होती हैं, जो जलाने के काम आती हैं तथा मकान बनाने में प्रयोग होता है। इन्ही से रेल के डिब्बे, रेल के स्लीपर और जहाजों का निर्माण होता है। इतना ही नहीं दैनिक व्यवहार की अनेक वस्तुओं का निर्माण लकड़ियों से ही होता है।

(2) वन उत्तम चरागाह हैं। वनों के निकट कृषकों को अपने पशुओं को खिलाने पिलाने की उतनी चिन्ता नहीं रहती, जितनी कि मैदान के किसानों को होती है

(3) वनों से ही हमें अनेक दवाईयों में काम आने वाली जड़ी बूटियाँ और शहद प्राप्त होता हैं।

(4) रबड़, लाख, तारपीन का तेल, चन्दन का तेल,गोंद आदि हमें वनों से ही प्राप्त होता है।

(5) भोजन के लिए कन्दमूल—फल आदि प्राप्त होते हैं, जैसे बेल, आँवला, खिरनी, इमली, आम, जामुन, सीताफल, टीमरु, महुआ, चिरौंजी, जंगलीखुबानी, अखरोट, चिलगोजा आदि फल प्राप्त करते हैं।

(6) वनों से रेशेदार पौधे —सेमल, ओंक, रामबांस, वनकपास, प्राप्त होते हैं।

(7) हांथी दाँत, हड्डियाँ, मोम, कत्था, कुछ पक्षियों के पंख, आंते, सिंहचर्म, मृगछाला, सींग, चमड़ा और खालें वनों से ही प्राप्त होती हैं।

(8) वनों से ही 'सवाई' और 'भावर' नामक घास और 'मूंज' मिलती है, जिससे कागज बनाया जाता है। कागज की लुग्दी भी जंगलों से ही प्राप्त होती है।

(9) चमड़ा कमाने और रंगने के पदार्थ जैसे बबूल, सुन्दरी, टीमरु की छाल, चमड़ा रंगने के लिए हर्र और बहेड़ा आदि से चमड़ा कमाया और रंगा जाता है। तुरवद, गेम्बिया व आवल की झाड़ियों की जड़ों से छाल प्राप्त कर चमड़ा रंगने का कार्य किया जाता है। ढाक के फूल और फलों से हरा नीला, लाल और केसरिया रंग प्राप्त कर कपड़ा और चमड़ा रंगा जाता है।

(10) राल और बिरोजा चीड़ के वृक्षों से प्राप्त किया जाता है। कुसुम, बरगद, सिरस, खैर, रीठा, घोट, सीसू, पीपल, गूलर, बड़ और छ्यूला के वृक्षों की नरम डालों के रस को चूस कर लाख का कीड़ा एक चिपचिपा पदार्थ निकालता रहता है जिससे लाख प्राप्त होता है।

(11) बांस और बेत से छप्पर, टोकरियाँ, मकान की छतें, कुर्सियाँ आदि बनाई जाती हैं।

(12) वनों से उद्योगों के लिए कच्चा माल प्राप्त होता हैं। दियासलाई उद्योग के लिए मुलायम लकड़ी, खेल का सामान, रेयन, कृत्रिम रेशे, कागज, वस्त्र, परिवहन आदि उद्योगो को कच्चा माल वनों से ही मिलता है। बाँस, बेंत, सरकण्डे, घास आदि पर आधारित अनेक लघु उद्योग इसी पर आश्रित है।

(13) वन व्यक्तियों को प्रत्यक्ष रुप से दैनिक व्यवसाय देते हैं। अनेक लोग लकड़ी काटने और चीरने, लकड़ियाँ ढोने तथा गोंद, राख, राल, कन्दमूलफल आदि एकत्र करने में लगे हैं। वन करोडों जनजातियों के निवास स्थल हैं और उनके जीवन यापन का महत्वपूर्ण साधन हैं।

(14) उत्सवों में श्रृंगार और सजावट करने के लिए पुष्प—पत्तियाँ लताएं आदि वृक्षों से ही प्राप्त होती हैं।

(ii) ***अप्रत्यक्ष लाभ*** :—

वनों से होने वाले अप्रत्यक्ष लाभ प्रत्यक्ष लाभों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है तथा प्रकृति में पर्यावरण संरक्षण बनाए रखने में अद्वितीय एंव अनिवार्य भूमिका निभाते हैं। जैसेः—

(1) वनों में वृक्षों, झाड़ियों तथा अन्य समस्त वनस्पतियों की हरी पत्तियाँ वायु मण्डल की हानिकारक कार्बनडाई ऑक्साइड गैस को सोखकर समस्त जीव—जन्तुओं के श्वसन कार्य के लिए आवश्यक ऑक्सीजन वातावरण में छोड़ती हैं। यदि वन एवं वनस्पतियाँ पर्याप्त मात्रा में न हों तो पृथ्वी पर

जीव–जन्तुओं की निरन्तरता नहीं बनी रह सकती है। एक अध्ययन के अनुसार एक हेक्टेयर वन क्षेत्र प्रतिवर्ष औसतन तीन मीट्रिकटन अशुद्ध वायु ग्रहण करता है तथा एक मीट्रिकटन शुद्ध वायु देता है। इसके अतिरिक्त 70 मीट्रिकटन धूल को वृक्ष अपने पत्तों, टहनियों आदि से रोक लेते हैं। इस प्रकार वन 'पर्यावरण प्रदूषण के नियंत्रण' में अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान देते हैं तथा पृथ्वी के जैव मण्डल के लिए फेफड़ों की भूमिका निभाते हैं।

(2) वनों के पेड़ एवं पौधे वर्षा की बूँदों को अपने ऊपर रोकते हैं, जिससे मिट्टी का कटाव बहुत कम हो पाता है। पेड़, पौधें की जड़ें मिट्टी को बाँधे रखती हैं। इससे मिट्टी का कटाव व बहाव रुकता है। वनों के धरातल पर स्थित वनस्पतियाँ एवं घास तथा गिरे, पड़े, पत्ते आदि स्पंज की तरह कार्य करते हैं तथा वर्षा के जल को सोख लेते हैं एवं धीरे–धीरे छोड़ते हैं, जिससे मिट्टी का कटाव तो रुकता ही है, साथ ही बहुत सा पानी मिट्टी सोख लेती है, जिससे भूमिगत जलस्तर उच्च बना रहता है। इन्ही कारणों से वर्षा का समस्त पानी एकदम नदियों एवं नालों में न पहुँचकर धीरे धीरे पहुँचता है, जिससे बाढ़ पर नियंत्रण होता है। इस प्रकार ये धरातल पर 'रोम छिद्रों' का कार्य करते हैं।

(3) वनों के वृक्ष एवं वनस्पतियाँ भूमि से जो खाद एवं अन्य खनिज पदार्थ अपनी जड़ों के माध्यम से अपनी वृद्धि के लिए लेते हैं, उसकी पूर्ति उनके पत्तों, टहनियों, लकड़ी तथा जड़ों आदि के सड़ने से होती रहती है, जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति अक्षुण्ण बनी रहती है।

(4) जो पानी मिट्टी से रिसता हुआ भूमिगत जल से मिल जाता है, उसे वृक्षों एवं वनस्पतियों की जड़े सोख लेती हैं। उसका कुछ भाग का वातावरण में वाष्पोत्सर्जन हो जाता है, जिससे वातावरण में नमी बनी रहती है व तापमान नियंत्रित होता है। इस प्रकार प्राकृतिक चक्र में वन, खनिज एवं जल–चक्र को बनाये रखने में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

(5) वनों में विभिन्न प्रकार के जीव–जन्तु पाये जाते हैं जिनकी पर्यावरण के संरक्षण एवं परिस्थितिकी–सन्तुलन में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका है। वनों के समाप्त होते ही वन में रहने वाले वन्य प्राणियों का भी विनाश हो जायेगा। इससे पर्यावरण सन्तुलन पर अत्यधिक दुष्प्रभाव पड़ेगा।

(6) पेंड पौधों की हरी पत्तियाँ सूर्य की तपती किरणों को सोख लेती हैं, जिससे यह किरणें सीधे पृथ्वी के धरातल पर नहीं पहुँच पाती हैं, जिसके कारण तापमान नियंत्रित रहता है। इस प्रकार वायु मण्डल का तापमान एवं आर्द्रता बनाये रखने में वनों का योगदान महत्वपूर्ण है।

(7) वन वर्षा कराने में सहायक होते हैं। वनों के ऊपर से होकर जाने वाली भाप युक्त हवाऐं इनसे नमी ग्रहण कर लेती हैं और ठंडी होकर वर्षा करती हैं। इस प्रकार से वनों से रेगिस्तान के प्रसार को रोका जा सकता है। थार के बढ़ते हुए रेगिस्तान को जंगल द्वारा ही रोका जा सकता है। यदि जंगलों का समुचित रुप से प्रबन्ध हो जाय तो दिल्ली की ओर बढ़ता हुऐ रेगिस्तान को रोका जा सकता है।

(8) एक अध्ययन के अनुसार एक 50 वर्षीय वृक्ष अपने जीवन काल में लगभग 33.50 लाख रुपये के अप्रत्यक्ष लाभ प्रदान करता है, इसमें छाया, हरियाली, ईधन, फल–फूल आदि का मूल्य सम्मिलित नहीं है।

(9) वनस्पतियाँ अपने क्षेत्र की जलवायु, मिट्टी, भू संरचना, 'भूतल–जल'–भूमिगत जल और पर्यावरण के अन्य कारकों के प्रतिबिम्ब होते हैं। अतः वनस्पति को दूर से ही देख कर पता चल जाता है कि उस प्रदेश की जलवायु उष्णार्द है या उष्ण अर्धशुष्क या मरुस्थलीय है अथवा समशीतोष्ण आर्द्र है। वनस्पति की सघनता और आकृति से किसी क्षेत्र की मिट्टी की उर्वरता का पता

चलता है। इसी प्रकार घास के मैदानों के माध्यम से वहाँ पर विद्यमान अनेक विशेषताओं का परिचय प्राप्त हो जाता है। चूँकि घास के मैदान कृषि के लिए बहुत उपयुक्त होते हैं अतः जिन क्षेत्रों में घास के गुच्छे दूर–दूर तक बिखरकर उगते हैं, उनकी जलवायु शुष्क होती हैं। मरुस्थल में कैक्टस की झाड़ियों से प्रकट हो जाता है कि वहाँ कि मिट्टी सिंचाई करने पर बहुत उपजाऊ होगी।

(10) वन कृषि कार्य में सहायक तथा अकालों को रोकते है। बाढ़ को रोककर, खादों की पूर्ति करके, कृषिगत सामग्री जुटाकर कृषि के विकास और संवर्धन में सहयोग करते हैं साथ ही साथ सूखे की समस्या का भी निराकरण करते हैं।

श्री के. एम. मुन्शी (भूतपूर्व केन्द्रीय खाद मंत्री) का कथन है :–

'वृक्षों का अर्थ है जल, जल का अर्थ है रोटी और रोटी ही जीवन है।'

(ख) जीव जन्तुओं का महत्व :– जैवीय संसाधन में वनस्पति के पश्चात् 'जन्तु संसाधन' का ही महत्व है। जन्तु–जगत, वनस्पति जगत की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ कहा जा सकता है। इसका मुख्य कारण उनकी गतिशीलता है। यद्यपि मानव प्रायः हर प्रकार की जलवायु में समायोजन (अनुकूलन) कर लेता है, परन्तु जन्तुओं में यह क्षमता नहीं होती है। उन्हे 'प्रकृति का दास' कहा जा सकता है।

मानव के लिए पशु संसाधन अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। यद्यपि इस वैज्ञानिक युग में पशुओं की उपयोगिता कम होती जा रही है, फिर भी इनका महत्व कम नहीं कहा जा सकता है। *आज मानव जीवन में पशुओं के साथ गहरा सम्बन्ध स्थापित हो चुका है। पशु मानव के भोजन, वस्त्र, परिवहन के साथ–साथ अनेक उद्योगों की आधारशिला है।*

मानव ने पशुओं, विशेषकर गाय, बकरी, भेड़ और घोड़ों को पालना नवपाषाण युग में ही आरम्भ कर दिया था। बाद में भैंस, सुँअर, ऊँट और हाँथी पालना भी शुरु हो गया था। कुत्ता तो आदि काल से ही मानव का साथी हो गया था। इसके साथ ही साथ मुर्गे–मुर्गियाँ और शहद की मक्खियों तथा रेशम बनाने वाले कीटों को भी पाला जाता रहा है। इस प्रकार मानव ने पशु पक्षियों तथा जीवों को पालतू बनाकर उनको अनेक प्रकार से प्रयोग किये हैं जैसे–

1. भोजन प्राप्ति के लिए – दूध और दुग्ध पदार्थ तथा माँस एवं अण्डों के लिए विभिन्न जलवायु के प्रदेशों में विभिन्न प्रकार के जन्तु पाले जाते हैं।
2. वस्त्रों के लिए– भेड़, अलपाका, बिकुना से ऊन, बकरी बकरा से बाक तथा अन्य पशुओं से भी बाल प्राप्ति के लिए उन्हे पाला जाता है।
3. कृषि कार्य में – हल जोतने, सिंचाई आदि में बैल, घोड़ा, ऊँट आदि का प्रयोग किया जाता है।
4. सामान ढ़ोने के लिए– बैल, ऊँट, गधा, खच्चर, याक, लामा, अलपाका और हाँथी का प्रयोग किया जाता है। हिमालय के ऊँचे भागों में भेड़ बकरी का प्रयोग होता है।
5. सवारी के लिए– घोड़ा, ऊँट खच्चर व हाथी का प्रयोग किया जाता है।
6. पहरेदारी जासूसी और मनोरंजन के लिए – कुत्ते तथा बिल्ली का प्रयोग किया जाता है।
7. सौन्दर्य वृद्धि के लिए रंगीन पक्षियों और मछलियों को पाला जाता है।

संसार में पशुओं की बहुत सी प्रजातियाँ पाई जाती हैं, लेकिन विश्व अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से उनमें कुछ ही महत्वपूर्ण हैं। "एक अनुमान के अनुसार हमारे देश में पशुपालन से सीधे सीधे तीन करोड़ लोगो की रोजी रोटी जुड़ी हुई है। कुल पशुधन का बाजार में वर्तमान मूल्य 46 हजार करोड़ के लगभग है जो कि पहले से काफी कम हो गया है। हमारे जीवनाधार पशुओं से हमें 19000 करोड़ रुपये का दूध और 900 करोड़ की खाद गोबर–मूत्र के रुप में प्राप्त होती है इसके अलावा मृत पशुओं की

खाल, हड्डियों आदि से तीन हजार करोड़ की आय होती है। विश्व के दुधारु पशुओं का कुल 15% भारत में है, जबकि पूरे विश्व में दुग्ध उत्पादन में भारत की भागीदारी मात्र 8% है।"[3]

"विश्व भोज्य सामाग्री आपूर्ति में विगत दशक में 'जल–कृषि' का भी अभूतपूर्व महत्व बढ़ा है। 1984–94 के मध्य जलज उत्पादन (मछली, झींगा, केकड़ा, घोंघा आदि) में दो गुने से अधिक वृद्धि हुई है। विश्व के कुछ मत्स्य एवं शेलफिश उत्पादन में जलकृषि का अंशदान 20% हो गया है। भोजन–आपूर्ति की दृष्टि से जल कृषि का महत्व और बढ़ गया है क्योंकि सम्पूर्ण कृषि उत्पादन सीधे भोजन के काम आता है, जब कि परम्परागत सामुदायिक आखेट का अधिकांश भाग तेल निकालने या पशु आहार (Fish Meal) तैयार करने में खपता है। जलकृषि उत्पादन में 81% अंशदान एशिया का है इसप्रकार जल–कृषि का भविष्य आशापूर्ण है। जल कृषि का 2010 ई.तक उत्पादन दो गुना अर्थात् 3.9 करोड़ टन होने की सम्भावना है जिससे विशेषकर छोटे किसानों की आय वृद्धि एवं निर्धनों की भोज्य सामाग्री की बेहतर आपूर्ति होगी।"[4]

(ग) कृषि एवं बागवानी का महत्व :–

कृषि एक प्राथमिक उद्योग है, जिसमें मानव प्राकृतिक परिस्थितयों का बुद्धिमतापूर्ण उपयोग करता है और अपने अनुकूल बनाकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इससे मनुष्य को भोजन वस्त्र तथा अन्य उद्योगों की सामग्रियाँ उपलब्ध होती हैं। अतीत में कृषि, जलवायु तथा मिट्टी पर निर्भर करती थीं, किन्तु आज मनुष्य नें अपनी बुद्वि, सामर्थ्य तथा नवीन तकनीकि प्रयोग से कृषि को अपने अधिकार क्षेत्र में कर लिया है। सिंचाई के साधन, अनेक प्रकार की खाद, विशिष्ट परिष्कृत बीज तथा नये–नये यन्त्रों के आविष्कार के फलस्वरुप कृषि मानव पर अधिक निर्भर करती है। इसी कारण उपजों के वितरण का स्वरुप नित्य परिबर्तित हो रहा है। यह सब मानव के सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक स्तर पर निर्भर करता है। जहाँ कभी अविकसित कृषि के ढंग प्रचलित थे, वहाँ आज विस्तीर्ण या वैज्ञानिक कृषि हो रही है। आर्द्र तथा सिंचित कृषि भी हो रही है। कृषि के ढंगों में परिवर्तन मात्र से उत्पादन क्षेत्रों का पुर्नवितरण भी हो जाता है। एक क्षेत्र जो कभी आदिम शुष्क तथा विस्तीर्ण कृषि का था, वह आज गहन कृषि या सिंचित कृषि के क्षेत्र में गिना जा रहा है। जहाँ कृषि सम्भव नहीं थी, वहाँ कई प्रकार की फसले पैदा की जा रही हैं। एक विशेष मौसम में पैदा होने वाली फसल प्रत्येक मौसम में पैदा की जा रही है।

"कृषि क्षेत्र में हमारी श्रम शक्ति का लगभग 64% प्रतिशत हिस्सा अजीविका प्राप्त कर रहा है और सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 26% इसी क्षेत्र से मिलता है। देश के कुल निर्यात में कृषि का योगदान लगभग 18% है। गैर कृषि क्षेत्र के लिए बड़ी मात्रा में उपभोक्ता वस्तुएँ और अधिकांश उद्योगों के लिए कच्चा माल कृषि क्षेत्र के लिए प्राप्त होता है।"[5]

शक्कर, जूट, वनस्पति तेल और वस्त्र उद्योग जैसे महत्वपूर्ण उद्योग कृषि द्वारा उत्पादित कच्चे माल पर ही आधारित हैं। लाख के उत्पादन में तो भारत का लगभग एकाधिकार है। चाय, मूँगफली और गन्ना उत्पादन में विश्व में सर्वप्रथम स्थान है। दुनिया में सबसे अधिक क्षेत्र में दलहन की खेती करने वाला देश भारत है, जबकि कपास के क्षेत्र में भारत ऐसा पहला देश है जहां कपास की संकर किस्म विकसित की गई है। चावल, जूट, कपास आदि के उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है।

बागवानी फसलों के अर्न्तगत फलों, सब्जियों, कन्दमूल फसलो, फूलों औषधीय एवं सुगन्धित पौधों, कुकुरमुत्ता (मशरुम), बागवानी फसलों, मसालों आदि की व्यापक प्रजातियां शामिल हैं। भारत की शीतोष्ण, उपोष्ण और शुष्क क्षेत्रों जैसी बुन्देलखण्ड क्षेत्र में विविध कृषि जलवायु स्थितियों में ये फसलें सफलतापूर्वक उगाई जा रहीं हैं।

भारत फलों का दूसरा उत्पादक देश है। सब्जी उत्पादन के क्षेत्र में भारत, चीन के बाद सबसे बडे दूसरे देश के रुप में उभरा है। आम, नारियल, काजू,मसालों आदि के उत्पादन में भारत का पहला स्थान है। भारत काजू का सबसे बडा निर्यातक है और विश्व के काजू उत्पादन में भारत का हिस्सा 40% है।भारत अदरक, हल्दी का सबसे बड़ा उत्पादक है तथा विश्व के कुल उत्पादन में इसका योगदान क्रमशः 65 और 76 प्रतिशत है।

चित्रकूट मण्डल का कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 1495271 हेक्टेयर हैं, जिसमें 1057210 हेक्टेयर कृषित भूमि है, जो कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का 70.70 % है। कृषि योग्य बंजर भूमि 41707 हेक्टेयर (2.79%) परती भूमि 101208 हेक्टेंयर (6.77%) तथा वन भूमि 133222 हेक्टेयर (8.91%)है।

कृषि एवं बागवानी का महत्व निम्नलिखित तथ्यों से स्पष्ट हैः–

1. कृषि का सबसे महत्वपूर्ण कार्य भोजन का उत्पादन है। इसमें पशुओं का भोजन भी उपलब्ध है। अधिकांश भोजन कृषि के द्वारा उत्पन्न किया जाता है।
2. कृषि एवं कृषि व्यवसाय भारत की अधिकांश जनता को रोजगार प्रदान करता हैं। कृषि पर न केवल 64% व्यक्ति प्रत्यक्ष रुप से निर्भर है, वरन् बहुत से लोग कृषि व पशुजन्य पदार्थों का व्यापार कर अपनी आजीविका कमाते हैं। इसके अतिरिक्त परिवहन द्वारा कारखानों तक को कृषि पदार्थ (खाद्यान्न, कपास, जूट, गन्ना, तिलहन आदि) एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने में यथेष्ट आय होती है। इस प्रकार भारतीय कृषि देश के निवासियों के लिए जीवन निर्वाह का सबसे महत्वपूर्ण साधन है।
3. भारत में कुल भूमि का 46.8% खेती के लिए व्यवहृत होता है, जबकि चीन, जापान, बिट्रेन, संयुक्त राज्य अमेरिका और फ्राँस और स्पेन में यह प्रतिशत केवल क्रमशः 12, 15, 23, 22.8, 36.3, और 35.6 ही है।[6]
4. भारत में फसलों की विविधता पाई जाती है। कृषि में खाद्यानों का भाग 70% रहता है, जबकि 8% के अर्न्तगत अन्य अखाद्य उपज, 4% रेशेदार उपज, 4% तिलहन और 4% चाय पैदा की जाती है।
5. भारतीय खेतों का आकार बहुत ही छोटा है। औसत रुप से यहाँ 1.55 हेक्टेयर के खेत पाये जाते हैं। जबकि ब्रिटेन में औसत खेत 55 हेंक्टेयर, संयुक्त राज्य अमेरिका में 158 हेक्टेयर, न्यूजीलैण्ड में 184हेक्टेयर, हॉलैण्ड में 26 हेक्टेयर और फ्राँस में 8 हेक्टेयर के पाये जाते हैं
6. जनसंख्या में वृद्धि होने के फलस्वरुप प्रतिव्यक्ति कृषि योग्य भूमि का भाग कम होता गया है। सन् 1921 में यह 0.8 हेक्टेयर था, जो घट कर सन् 1931 में 0.72 सन् 1941 में 0.64, सन् 1951 में 0.57, सन् 1961 में 0.30 तथा सन् 1991 में 0.2 हेक्टेयर हो गया। विश्व का यह औसत 4.5 हेक्टेयर प्रति व्यक्ति पीछे है। कनाडा में 212 हेक्टेयर, अर्जेन्टाइना में 125 हेक्टेयर, रुस में 103,हेक्टेयर संयुक्त राज्य अमेरिका में 89 हेक्टेयर, आस्ट्रेलिया में 339 हेक्टेयर है। पौष्टिक भोजन देने के लिए यह क्षेत्र बहुत ही कम है।
7. भारत में पशुओं के लिए विशेष रुप से ऐसी कोई फसल नहीं उगाई जाती जिसका उपयोग उन्हे खिलाने के लिए किया जाता है। पशुओं का चारा अधिकांशतः खाद्यान्न फसलों की गौण उपज भूसा है। अतः यहाँ के पशु मुख्य आर्थिक इकाई नहीं हैं। पशु निर्वल एवं घटिया हैं। अतः कृषि माँस एवं डेयरी उद्योग पिछड़ी एवं अनार्थिक या घाटे की अवस्था में हैं। भारतीय कृषि का यन्त्रीकरण भी सीमित ही हुआ है।
8. भारतीय कृषि मानसून का जुआ कहलाती है, यदि मानसून समय पर आ जाता है और वर्षा पर्याप्त हो जाती है तो कृषि उत्पादन भी ठीक हो जाता है, जिससे देश में खाद्यानों की

आवश्यकता की भी पूर्ति हो जाती है और उद्योगों को भी यथेष्ट कच्चा माल प्राप्त हो जाता है। ऐसी स्थिति में सरकार अपनी कर व्यवस्था को तदनुसार ही निश्चित कर सकती है। वर्षा कम होने व बाढ़ आने के कारण कृषि उत्पादन की भारी क्षति होती है, जिससे सम्पूर्ण राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। डॉ क्रेसी के अनुसार– *''किसी भी देश में इतने अधिक व्यक्ति वर्षा पर निर्भर नहीं करते जितने कि भारत में, क्योंकि सामायिक वर्षा में किंचित् भी परिवर्तन होने से सम्पूर्ण देश की समृद्धि रुक जाती है।''*[7]

9. भारत की राष्ट्रीय आय में 'कृषि उद्योग' का सर्वाधिक योगदान है। कृषि से सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 26% भाग प्राप्त होता है।
10. 2001 में देश की कुल मुख्य कार्यशील जनसंख्या (40.25 करोंड़)में से 23.5 करोंड़ व्यक्ति कृषक, कृषि–श्रमिक, पशुपालन और वानिकी में लगे हैं।
11. चाय, जूट का सामान, काजू, तम्बाकू, कहवा, काली मिर्च, नारियल के रेशे से बनी वस्तुओं, खली, रुई और वनस्पति तेल के निर्यात से बहूमूल्य विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है। 1995–96 में कृषि वस्तुओं तथा कृषि कच्चे पदार्थों पर आधारित उ़द्योग का निर्यात लगभग 21,138 करोड़ रुपये था।
12. भारत की खाद्यान्न आवश्यकताओं की लगभग शत प्रतिशत की पूर्ति भारतीय कृषि द्वारा की जाती है। इसके अतिरिक्त सूती वस्त्र, चीनी, पटसन, तेल, वनस्पति , आदि उद्योग प्रायः पूरी तरह भारतीय कृषि उत्पादन पर निर्भर करते हैं, क्योंकि इनकी कच्चे माल की पूर्ति मुख्यतः घरेलू उत्पादन द्वारा होती है। कुछ लम्बे रेशे की रुई, खाद्य तेल तथा पटसन की कमी रहती है जो विदेशों से प्राप्त की जाती है।
13. फसल काटने के बाद किसान को ऐसी बाजार सेवाएँ उपलब्ध नहीं, जहाँ उसे अपनी कृषि उपजों का लाभकर मूल्य मिल सके। विकारीय कृषि उपजों जैसे दुग्ध, अण्डा मछली,सब्जियाँ, फल आदि के परिरक्षण की ग्रामीण क्षेत्रों में उचित व्यवस्था नहीं है। अतः किसानों को इनके उत्पादन के लिए पर्याप्त प्रोत्साहन नहीं मिल पा रहा है।
14. देश में कृषि आधारित कुटीर उद्योगों का नितान्त अभाव है, जिसके कारण किसानों को अपनी उपजों का पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं हो पाता और ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी एवं गरीबी बढ़ती जा रही है। यदि फलों के रस, चटनी, अचार, मुरब्बे आदि बनाने और सब्जियों के परिरक्षण तथा दुग्ध उत्पादों के 'घरेलू उद्योग' गांवों में स्थापित किये जायें तो किसानों को इन उपजों का पूर्ण लाभ प्राप्त होगा और रोजगार के साधनों में भी वृद्धि होगी।

3.2 जैवीय संसाधनों का वर्गीकरण :–

प्रकृति ने मानव को अनेकानेक संसाधन प्रदान किये हैं जिन्हे सामान्यतः दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. भौतिक संसाधन (Physical Resources)
2. जैवीय संसाधन (Biotic Resources)

भौतिक संसाधन के अर्न्तगत चट्टाने, स्थलाकृति, खनिज सम्पदा एवं जलीय संसाधनों को सम्मिलित किया गया है, जिन्हे प्रकृति प्रदत्त उपहार के रुप में जाना जाता है, जबकि जैविक संसाधन को 'गिन्सबर्ग' ने द्वितीय वर्ग के अर्न्तगत सम्मिलित किया है तथा लिखा है कि ''ये (जैविक संसाधन) वे संसाधन है, जो मनुष्य की आर्थिक कियाओं को बहुत समय तक प्रभावित करते हैं तथा स्वयं भी मानवीय क्रियाओं से प्रभावित होते हैं। इस प्रकार इनका एक दूसरे के प्रति अर्न्तसम्बन्ध बना रहता है।

ये वे संसाधन हैं जो परिस्थितयों के अनुकूल घट या बढ़ सकते हैं एवं मानवीय किया कलापों से प्रभावित होते रहते हैं। यद्यपि भौतिक एवं जैवीय संसाधन एक दूसरे से सम्बन्धित हैं, किन्तु जैवीय संसाधनों के बिना भौतिक संसाधनों का अस्तित्व शून्य है।"

जैवीय संसाधन पृथ्वी पर थल एवं जल दोनों ही स्रोतों से प्राप्त होते हैं। स्थलीय जैवीय संसाधनों में प्राकृतिक वनस्पति, पेंड़, पौधे तथा कृषिगत फसलें, बागान आदि एवं जन्तुओं को सम्मिलित किया जाता है। वस्तुतः जिनमें जीवन पाया जाता है उन्हे ही 'जैवीय संसाधन' के अन्तर्गत रखा जाता है इस प्रकार से इस जगत में तीन प्रकार के जीवधारी हैं–वनस्पति, जन्तु एवं मानव। तीनों के पारस्परिक सहयोग से ही एक दूसरे का अस्तित्व निर्भर करता है।

प्रस्तुत शोध में जैवीय संसाधनों को निम्नांकित तीन वर्गों में प्रस्तुत किया गया है:–

1. प्राकृतिक वनस्पति (वन संसाधन)
2. जीव जन्तु (पशु संसाधन)
3. कृषिगत फसलें एवं बागवानी (कृषि संसाधन)

इनका वर्गीकरण निम्नलिखित हैं–

1. प्राकृतिक वनस्पतिः– प्राकृतिक वनस्पति के अन्र्तगत पेड़, पौधे लताएं तथा घासें सम्मिलित हैं। आकार एवं कोशिका वाले पौधों से लेकर उष्ण एवं शीतोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्रों के पुष्पों एवं फलदार वृहदाकार वृक्षों तक होता है। आकार, संरचना, कार्यकलाप आदि के दृष्टिकोण से पौधों में विश्व स्तर पर इतनी विविधताऐं होती हैं कि पौधों को कुछ विशेष वर्ग में विभक्त करना सम्भव नहीं है।अब तक केवल 40 हजार प्रजातियों की ही जानकारी उपलब्ध हो सकी है। साथ ही साथ नित नई नई प्रजातियों की खोज भी होती रहती है अतः पौधों का वर्गीकरण सदैव स्थाई नहीं रहेगा। सामान्य रुप से पौधों का वर्गीकरण उनके आकारकीय लक्षणों, नमी, पदानुक्रम तथा जीवन अवधि आदि विविध आधारों पर किया जाता है जिनका विवरण अग्रांकित हैं :–

जल के आधार पर पौधों का वर्गीकरण :–

वातावरण में जल की मात्रा के अनुसार पेड़ पौधों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा गया है:–

i. जलोद्भिद् (Hydrophytes)
ii. समोद्भिद् (Mesophytes)
iii. मरुद्भिद् (Xerophytes)
iv. लवण मृदोद्भिद् (Halophytes)
v. अधिपादप (Epiphytes)

i. जलोद्भिद् (Hydrophytes) :–

ये पौधे जल में या ऐसी मिट्टी जो जल से संतृप्त (Saturated) होती हैं में पाये जाते हैं। जलोद्भिद् तीन प्रकार के होते हैं :–

a. ***निमग्न पौधे (Submerged Plants)*** :–

इन पौधों की पत्तियाँ पूर्ण रुप से जल से ढ़की रहती हैं। उदाहरणतः हाइड्रिला, बैलिसनेरिया, पोटेमोजीटोन, सिरैटोफिलम, निकामेण्ड्रा तथा इलोडिया आदि।

b. ***तैरने वाले पौधे (Floating Plants)*** :–

इन पौधों की पत्तियाँ जलकी सतह पर तैरती रहती हैं। ये दो प्रकार के होते हैं :–

1- *स्वतन्त्र तैरने वाले पौधे (Free Floating Plants) :–*

ये पौधे जल के ऊपर तैरते रहते हैं और इनकी जड़ें मिट्टी में नहीं धँसती हैं। उदाहरण– वुल्फिया, लेम्ना, स्पाइरोडेला समुद्रसोख आदि।

2- *स्थिर तैरने वाले पौधे (Fixed Floating Plants) :–*

इन पौधों की जडें कीचड़ में धँसी रहती हैं उदाहरणतः – कमल, निम्फिया, जूसिया ट्रापा आदि।

(C) **जल स्थलीय पादप (Amphibious plants) :–**

इन पौधों का नीचे का भाग अधिक जल वाली मृदा में धँसा रहता है या पायः तने का नीचे का भाग छिछले जल में डूबा रहता है। इन पौधों के तने का ऊपरी भाग व पत्तियाँ वायु में रहते हैं। कभी–कभी वर्षा के समय ये दोनों भाग भी जल में डूब सकते हैं। इनके उदाहरण हैं– पटेरा, जलधनिया, टाइफा, धान, सैजिटेरिया, बिगोनिया, रेननकुलस, एक्वाटिलिस आदि।

(2) **समोद्‌भिद् (Mesophytes) :–**

ये पौधे पृथ्वी पर उन स्थानों में मिलते हैं जहाँ औसत मात्रा में जल प्राप्त होता है। ऐसे पौधे अधिक समय तक जलीय वातावरण में जीवित नहीं रह सकतें अत्यन्त शुष्क वातावरण भी उनके लिए घातक हो जाता है। उदाहरण– उद्यानों में लगाये जाने वाले पौधे,वनों की भूमि, मैदानों में उगने वाले सभी सामान्य पेंड़ पौधे इस समूह में सम्मिलित हैं।

(3) **मरुद्‌भिद् (Xerophytes) :–**

ये पौधे शुष्क वातावरण में एवं बहुत कम जल की मात्रा में अपना जीवन चक्र पूर्ण करने की क्षमता रखते हैं। ऐसे पौधे मरुस्थलों में अथवा चट्टानों पर पाये जाते हैं। उदाहरण नागफनी, घीक्वार, बाँस केवड़ा, कैजुएराइना, मदार तथा म्यूहेलनबेकिया आदि।

मरुद्‌भिद् चार प्रकार के होते हैं:–

(A) जलाभाव पलायनी मरुद्‌भिद् पौधे **(Drought escaping xerophytes) :–**

इन पौधों को 'अल्पकालिक' भी कहते हैं। यह ऐसे एक वर्षीय पौधे हैं, जो अपना जीवनचक्र केवल 4–6 सप्ताह में पूर्ण कर लेते हैं। इन पौधों के बीज वर्षा के आरम्भ में अंकुरित होते हैं। शीघ्र ही इन पर पत्तियाँ, पुष्प, फल व बीज उत्पन्न हो जाते हैं। वर्षा के अन्त में सम्पूर्ण पौधों की मृत्यु हो जाती है, परन्तु बीज भूमि पर रह जाते हैं, जो अगले वर्ष, वर्षा के आरम्भ में फिर से नये पौधों को जन्म देते हैं– जैसे सोलेनम, जैन्थोकार्पम आदि।

(B) वार्षिक या सूखाहार मरुद्‌भिद् पौधे **(Annuals or Drought evading xerophytes):–** इन पौधों को जल की आवश्यकता कम होती है। ये पौधे बहुत छोटे होते हैं और इनकी वृद्धि भी बहुत कम होती हैं तथा ये एक दूसरे से दूरी पर स्थित होते हैं। इन पौधों में वाष्पोत्सर्जन को कम करने तथा नमी को संरक्षित रखने हेतु रुपान्तरण पाया जाता हैं।

(C) जलाभाव सहिष्णु मरुद्‌भिदृ पौधे **(Drought enduring xerophyte) :–**

इन पौधों में जल संग्रह की कोई विशेष व्यवस्था नहीं होती परन्तु फिर भी इनमें लम्बे समय तक जलाभाव को सहन करने की क्षमता होती है। ये पौधे छोटे होते हैं। जब मृदाजल पौधों की वृद्वि के लिए कम हो जाता है तो पत्तियाँ मुरझाकर गिर जाती हैं परन्तु पौधा फिर भी जीवित रहता है और नई वृद्वि उस समय तक नहीं होती जब तक कि जल फिर से प्राप्त न हो जाये। जल प्राप्त होते ही ये पौधे फिर से तेजी से वृद्वि करने लगते हैं जैसे– कोविलिया ग्लूटीनोसा।

(D) जलाभाव सह या मांसलोद्भिद् पौधे **(Drought resisting or Succulent plants)**:– ये पौधे जल को अपने ऊतकों में संग्रह करके उस समय प्रयोग में लाते हैं जब मृदा में जल की कमी होती है। उदाहरण– नागफनी,घीक्वार।

(4) लवण मृदोद्भिद् (Halophytes) :–

इस प्रकार के पौधे समुद्र के किनारे की दलदल या ऐसी मिट्टी में उगते हैं, जिसमें लवण की मात्रा अधिक होती है। समुद्र तट एवं डेल्टा स्थलों में इस प्रकार के छोटे व नाटे आकार के वृक्षों के वन पाये जाते हैं जिन्हे 'मैनग्रोव' वनस्पति कहते हैं जैसे– सोनेरेशिया तथा राइजोफोरा।

(5) अधिपादप (Epiphytes) :–

'अधिपादप' पौधों का वह समूह है जो वृक्षों की शाखाओं पर उगता है। वास्तव में ये पराश्रयी नहीं होते हैं। इन्हे केवल वृक्षों पर आधार की आवश्यकता होती है। विभिन्न प्रकार के आर्किड इसी समूह में आते हैं। 'डिस्चिडिया', 'रेपिल–सियाना' तथा कुछ 'फर्न' भी अधिपादप होते हैं।

(ख) पौधों का अकारिकीय लक्षणों के आधार पर वर्गीकरण :–

(Morphological Classification of the Plants)

सामान्यतः आकृति की विविधता तथा जनन प्रक्रिया के आधार पर पौधों को निम्नांकित दो वृहद श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:–

(1) पुष्प रहित पौधे (Crystogames):– इस जाति के पौधों में बीज और फल नहीं होते हैं। ये अन्तर्निहित बीजाणुओं से अपनी सन्तति को (Offsprings) जन्म देकर जाति को अक्षुण्ण बनाये रखते हैं। इन पौधों की जनन प्रक्रिया इनके शरीर में ही अन्तर्निहित होती है। इस वर्ग के पौधों की आन्तरिक संरचना सरल होती है, इन्हे निम्नांकित 6 वर्गो में विभक्त किया जाता है–

(a) बैक्टीरिया (Bacteria) :– ये एक कोशिकीय (Unicellular) पौधे होते हैं। ये अपनी कोशिका को दो भागों में विभक्त करके सन्तानोत्पत्ति करते हैं। अतः इन्हे शाइजोफाइटा (Schizophyta) के नाम से भी जाना जाता है। आहार निर्माण तथा ग्रहण प्रक्रिया के आधार पर इन्हे पुनः दो वर्गो में विभक्त किया जा सकता है– (i) स्वपोषित (autotrophs) एवं (ii) परपोषित (heterotrophs) स्वपोषित बैक्टीरिया अपना आहार स्वतः निर्मित करती है। ये बैक्टीरिया अपनी ऊर्जा या तो प्रकाश अकार्बनिक अजैविक स्रोतों या प्रकाश एवं कार्बनिक (जैविक) स्रोतों से प्राप्त करते हैं। जबकि परपोषित बैक्टीरिया अपना आहार स्वयं निर्मित नहीं करती वरन् अपने आहार के लिए अन्य जीवों पर निर्भर करती हैं। ये परपोषित बैक्टीरिया मृतजीवों को वियोजित तथा विघटित करते हैं तथा जीव मंडल में पोषक तत्वों के चक्रण में सहायक होती है।

(b) शैवाल :– **(Algae)**

यह जल में रहने वाला सूक्ष्म पादप होता है, जिसकी संरचना अति सरल होती है इसका रुप अतिसूक्ष्म एक कोशिका वाला होता है जबकि बड़े शैवाल कई कोशिका वाले होते हैं। कुछ शैवाल मिट्टियों में भी पाये जाते हैं। ये प्रकाश रसायन (Photochemical) क्रिया द्वारा ऊर्जा प्राप्त करते हैं।

(c) कवक या फन्जाई :– **(fungi)**

ये पादप प्रकाश संश्लेषण करने में सक्षम होते है। अतः भोजन के लिए अन्य जीवों के उत्पादों पर निर्भर रहते हैं। कुछ कवक परजीवी (Parasite) होते हैं जो अन्य जीवित जीवों से अपना आहार प्राप्त करते हैं तथा कुछ मृतजीवी (Saprophyte) होते हैं, जो अपने आहार के लिए जैविक पदार्थों पर निर्भर रहते है। कुकुरमुत्ता (Mushroom) इसका प्रमुख उदाहरण है।

(d) ब्रायोफाइटा :– **(Bryophyta)**

इस समूह के पौधे नम एवं छायादार स्थलों में पाये जाते हैं। इसके अन्तर्गत काई (Moss) को रखा जाता है। ये अधिकांशतः स्थलज होते है।परन्तु इनकी कुछ प्रजातियाँ जल में भी पाई जाती हैं। वर्षा ऋतु में अधिक वृद्वि के कारण ये अपना वास स्थान (habitat) पर हरी सतह का निर्माण करते हैं। अधिकतर ब्रायोफाइस में क्लोरोफिल पाया जाता है। जिससे वे प्रकाश संश्लेषण विधि द्वारा अपना भोजन स्वंय बनाते हैं। ये असंवहनीय (NonVascular Plants) पौधे होते हैं। कुछ ब्रायोफाइस मृतोपजीवी होते हैं।

(e) शिलावल्क या काई अथवा लाइकेन :– **(Lichen)**

इसके अन्तर्गत ऐसे पौधे आते हैं जिनमें कवक तथा शैवाल साथ–साथ एक ही पौधे के रुप में होते हैं। इस तरह के पादप मिस्र (Composite) होते हैं। इस मिस्र पौधे का एक भाग अर्थात् कवक परजीवी होता है, जिसे उसी पौधे का दूसरा भाग यानी शैवाल आहार प्रदान करता है।

(f) टेरिडोफाइटा :– **(Pteridophyta)**

ये संवहनीय पौधे (Vascular Plants) होते हैं, परन्तु इनमें सन्तति जनन पूर्वोक्त असंवहनीय पादपों के समान ही एक कोशिका के दो भागों में विभक्त होने पर होता है। इसके अन्तर्गत फर्न (Fern) अश्वपुच्छ (Horsetail) आदि को सम्मिलित किया जाता है।

(2) पुष्पी पौधे :– (Pharerogams or Flowening Plants)–

इस श्रेणी के पौधों में फूल लगता है और बीज पड़ता है एवं बीजों के माध्यम से संतति जनन होता है। इन्हे स्पर्मेटोफाइटा (Spermatophyta) भी कहते है। क्योंकि इनमें शुक्राणु (Sperms) भी होते हैं। ये संवहनीय (Vascular) पौधे होते हैं। इनको पुनः दो भागों में विभक्त किया जा सकता है–

(i) अनावृत्त बीजी **(Gymnospermae)**:–

इस तरह के पौधों में बीज किसी आवरण से ढ़का नहीं रहता है, बल्कि खुला रहता है। कोणधारी या शंक्वाकार वृक्ष जैसे –पाइन (Pine), स्प्रूस, जूनिफर आदि इसके अन्तर्गत सम्मिलित किये जाते हैं।

(ii) आवृत्त बीजी :– **(Angiosperms)**

इस तरह के पौधों में बीजरक्षक आवरण (Protective Cover) होता है। ये वास्तविक पुष्पी पौधे होते हैं तथा सभी प्रकार के पौधों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण होते हैं। इनका विकास सबसे बाद में (लगभग 100 मिलियन वर्ष पूर्व) हुआ है। इन्हे बीज अंकुरण के समय, पत्तियों की संख्या के आधार पर पुनः दो उपक्रमों में विभक्त किया जाता है–

(a) द्विबीज पत्ती **(Dicotyledons)** :–

इसमें बीज के अंकुरण के समय दो पत्तियाँ निकलती हैं। मानव उपयोगी फलदार पौधे तथा दलहनी खाद्यान्न पौधे इस श्रेणी में आते हैं। इनके बीज में दो भाग होते हैं– अरहर, मटर, उरद, मूँग, चना, आम, महुवा आदि इसके उदाहरण हैं।

(b) एक बीज पत्ती **(Monocoty ledons)** :–

इस तरह के पौधों में बीज का एक ही भाग होता है तथा अंकुरण के समय एक पत्ती निकलती है। इसके अन्तर्गत अधिकांश खाद्यान्न (Careals) आते हैं। जैसे– गेहूँ, चना, मक्का, ज्वार, बाजरा आदि तथा अन्य घासें।

(ग) प्राकृतिक वनस्पतियों का सामान्य वर्गीकरण :–

प्राकृतिक वनस्पति के तीन वर्ग होते है :–

1. वन या जंगल समुदाय

2. घास समुदाय
3. मरुस्थलीय वनस्पतियाँ

सामान्य रुप से जंगल आर्द्रता पूर्ण जलवायु के प्रदेशों में होते हैं और मरुस्थलीय झाड़ियाँ शुष्कतम जलवायु में तथा घास दोनों के बीच की दशाओं में मिलती हैं।

1. **वन समुदाय (जंगल)** :– वृक्ष जंगल का मुख्य पौधा होता है। वनस्पति साम्राज्य में वृक्ष सिर्फ शक्तिशाली पौधा ही नहीं होता बल्कि 'जंगल' के नाम को सार्थक करने वाला भी होता है। जब पौधे इतने विकसित हो जाते हैं कि उनकी शाखायें आपस में उलझ जाती हैं तब वन (जंगल) को वास्तविक स्वरुप प्राप्त होता है।

वनों के वर्गीकरण के चार दृष्टिकोण होते हैं–

(i) जलवायु विभिन्नताओं के आधार पर – उष्ण कटिबन्धीय, समशीतोष्ण कटिबन्धीय और शीतोष्ण कटिबन्धीय वृक्ष,

(ii) पत्तियों के आकार के आधार पर – नुकीली व चौड़ी पत्तियों वाले वृक्ष,

(iii) हरीतिमा रहने के आधार पर – पतझड़ या सदाबहार वाले वृक्ष,

(iv) वृक्षों के आधार पर – मुलायम या कड़ी लकड़ी वाले वृक्ष,

अधिकांश चौड़ी पत्तियों से युक्त वृक्ष कड़ी लकड़ियों वाले होते हैं, दूसरी ओर नुकीली पत्तियों वाले वृक्ष जैसे – देवदार, मुलायम लकड़ियों वाले वृक्ष होते हैं। सदाबहार वाले वृक्ष वे हैं, जो अपनी पत्तियाँ काफी मात्रा में वर्षभर बचाकर रखते हैं। पतझड़ वाले वृक्ष वर्ष के एक काल में अपनी पत्तियों का परित्याग कर देते हैं। अतः कुछ समय के लिए नग्न हो जाते हैं। कड़ी लकड़ियों के वृक्ष पतझड़ और सदाबहार दोनों कोटि के होते हैं। जंगल को अन्य वनस्पतियों की अपेक्षा जल की अधिक आवश्यकता होती हैं। तेज, शुष्क वायु (जिसमें वाष्पीकरण की क्रिया बलवती होती है) वृक्षों के लिए हानिकारक होती है।

2. **घास समुदाय** :– घास के प्रदेशों में वर्षानुवर्षी घासें मिलती हैं। यद्यपि अन्य पौधे भी काफी संख्या में मिलते हैं। निम्न अक्षांशो में घास की भूमि को 'संवाना' कहते हैं। मध्य अक्षांशो में इन्हे 'प्रेयरी' कहते हैं। आर्द्र और कम विकसित जलप्रवाह क्षेत्रों में घास की भूमि को 'बांगर' या 'मीडो' कहते हैं। अधिकांश घासों की जड़ें छोटी होती हैं इसलिए वे लम्बी शुष्कता के शिकार बन जाती हैं। उन्हें सबसे अधिक क्षति तो तब होती है जब उनका विकासकाल और शुष्कता का काल एक समय होता है। जलवायु की दृष्टि से घास अर्द्धशुष्क प्रदेशों की उपज है, जहाँ अधिकांश वर्षा ग्रीष्म ऋतु में होती है।

3. **मरुस्थलीय वनस्पतियाँ** :– मरुस्थलीय वनस्पतियों को पौध जीवन के आधार पर दो कोटि में रखा जा सकता है– एक 'सहारा' प्रकार का है जहाँ जल किसी भी रुप में विद्यमान नहीं है। दूसरा 'ध्रुवीय' प्रकार का है जो अधिकांशतः हिमाच्छादित रहता है। जल बर्फ या हिम के रुप में वर्तमान रहने के कारण पौधों के लिए उपयुक्त नहीं रहता। इन दोनों प्रकार के मरुस्थलों में शुष्कतारोधक पौधे ही हो पाते हैं।

2. **जीव जन्तुओं (प्राणियों) का वर्गीकरण** :– प्राणिजगत के वर्गीकरण में अवरोहीक्रम में क्रमशः संघ, वर्ग, कोटि, परिवार, वंश एवं प्रजाति के नाम से विभाजन किया गया है।

(क) **आकार, रचना, स्वरुप एवं लक्षण के आधार पर वर्गीकरण** :– इनके अनुसार जन्तुओं को विभिन्न संघों (Phylum) में वर्गीकृत करते हैं जिसमें 10 संघ प्रमुख हैं– यथा –

(1) प्रोटाजोआ (2) पोरीफेरा
(3) निडेरिया (4) प्लैटीहेल्मिन्थीज
(5) निमैटोडा (6) एनिलिडा

(7) मौलस्का　　(8) आर्थ्रोपोडा

(9) इकाइनोडर्मेटा　　(10) कॉर्डेटा

यह वर्गीकरण एक कोशिकीय प्रोटोजोआ (अमीबा) से लेकर रीढ़दार कॉर्डेटा (हाँथी, व्हेल, साँप, विभिन्न पक्षी) तक अपने में सम्मिलित करता है।

(ख) आर्थिक महत्व के आधार पर प्राणियों का वर्गीकरण :— आर्थिक महत्व के आधार पर प्राणियों को दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं :—

(अ) लाभदायक प्राणी

(ब) हानिकारक प्राणी

(अ) लाभदायक प्राणी :—

विभिन्न लाभों के आधार पर लाभदायक प्राणी निम्नलिखित हैं:—

(A) भोजन — मांस, अंडा, दूध प्रदान करने वाले प्राणी जैसे — मछली, सुअर, बकरा, मुर्गा, मुर्गी, गाय, भैंस आदि

(B) वस्त्र — रेशम, ऊन एवं चमड़ा प्रदान करने वाले प्राणी जैसे — रेशम की कीट, भेड़, गाय, भैंस आदि

(C) औषधियाँ — मछली का तेल, कस्तूरी, शहद, कैन्थराइडिन प्रदान करने वाले प्राणी जैसे — कॉड मछली, मृग, कैन्थराइडिन बीटल तथा शहद की मक्खी।

(D) परिवहन तथा सवारी वाले प्राणी — घोड़ा, खच्चर, ऊँट, हाँथी।

(E) कृषक के मित्र — जैसे — केंचुआ, बैक्टीरिया।

(F) अपमार्जक प्राणी — जैसे — गिद्ध, चील, छिपकली, गुबरैला।

(G) पालतू जन्तु — जैसे — कुत्ता, बिल्ली, कबूतर।

(H) अन्य उपयोगी प्राणी — जैसे — मोती बनाने वाले सीप, लाक कीट आदि।

(ब) हानिकारक प्राणी :—

हानिकारक जन्तुओं में से अनेक मनुष्य व अन्य जन्तुओं के शरीर से बाहर एवं अन्दर रहते हैं, ऐसे जन्तु जो अन्य जन्तुओं के शरीर से अपना भोजन प्राप्त करते हैं, परजीवी कहलाते हैं। जिन जन्तुओं के शरीर से अपना भोजन प्राप्त करते हैं उन्हे पोषक कहते हैं।

परजीवी जन्तुओं के अतिरिक्त कुछ ऐसे जन्तु भी हैं जो मानव शरीर को सीधे हानि न पहुँचाकर उसकी फसल, पशुओं एवं सम्पत्ति को नष्ट करके उसे आर्थिक हानि पहुँचाते हैं। टिड्डी, दीमक, चूहा व तोता इत्यादि ऐसे ही जन्तुओं के उदाहरण हैं।

(A) मानव जाति में रोग उत्पन्न करने वाले प्राणी :—

(i) परजीवी प्राणी :—

(क) बाहय परजीवी — जैसे — खटमल, मच्छर, जूँ, किलनी, चीलर

(ख) अन्तः परजीवी — जैसे — ऐस्कारिस (गोलकृमि), फीताकृमि, हुकवर्म तथा मलेरिया वाहक जन्तु।

(II) रोगवाहक जन्तु — जैसे — घरेलू मक्खी

(B) मानव सम्पत्ति एवं फसल को हानि पहुँचाने वाले प्राणी जैसे — दीमक, टिड्डी, तोता चूहा आदि।

(ग) जन्तुओं का पारिस्थितिक वर्गीकरण (Ecological Classification of Animals)

पारिस्थितिकी के अनुसार जन्तुओं को निम्नलिखित वर्गो में विभक्त किया गया है—

(1) जलीय जन्तु (Agnatic Animals)

(2) वायुवीय जन्तु (Aerial Animals)

(3) स्थलीय जन्तु (Terrestial Animals)

(4) मरुस्थलीय जन्तु (Desert Animals)

(1) जलीय जन्तु (Agnatic Animals) :–

जल में रहने वाले जन्तुओं को तीन भागों में बाँटा गया है–

(a) प्रथम श्रेणी के जलीय जन्तु :– इस श्रेणी के जलीय जन्तु वे हैं जिनकी उत्पत्ति जल में ही हुई है। अर्थात् ये मूलरुप से जल के निवासी है। इनमें मुख्यतः मछलियाँ व अन्य जलीय जन्तु आते हैं।

(b) द्वितीय श्रेणी के जलीय जन्तु :– द्वितीय श्रेणी के जलीय जन्तु वे हैं, जिन्होने जल में रहने के लिए अनुकूलन प्राप्त किया है, जबकि इनके पूर्वज पहले स्थलवासी थे, जैसे स्तनधारियों (Mammals) में ह्वेल, सील, डालफिन; पक्षियों में पेन्गुइन, बत्तख, पोलिकन, सरीसृप (Reptiles) में कछुआ व मगरमच्छ आदि।

(c) तृतीय श्रेणी के जलीय जन्तु :–

तृतीय श्रेणी में जलीय जन्तु गहरे समुद्री जल में रहते हैं, जैसे – टारपीडो, क्रेब, पेक्लिन आदि।

(2) वायुवीय जन्तु (Aerial Animals) :– गगनधारी जन्तुओं का शरीर वायुवीय जीवन के लिए अनुकूलित होता है। वायुवीय अनुकूलन कुछ मछलियों (जैसे – एक्सोसीट्स) कुछ उभयचारी (Amphibians) जैसे उड्डयन मेंढ़क (Rhacophorous)] सरीसृप वर्ग की कुछ छिपकलियों (जैसे ड्रैको Draco), पक्षी वर्ग के जन्तुओं तथा स्तनधारियों (जैसे चमगादड़) में पाया जाता है। अकशेरुकी जन्तुओं के उड़ने वाले कीटों में भी वायुवीय अनुकूलन होता है। इन जन्तुओं में दो प्रकार की उड़ान होती है– (क) सक्रिय उड़ान (Active or true Flight) (ख)निस्क्रिय उड़ान

(3) स्थलीय जन्तु (Terrestial Animals) :– स्थलीय जन्तुओं में कुछ उभयचारी (Amphibians) सरीसृप (Reptile) पक्षीवर्ग (Aves) तथा अधिकांश स्तनधारी (Mammals) आते हैं।

(4) मरुस्थलीय जन्तु (Desert Animals) :– पृथ्वी का वह क्षेत्र जहाँ वर्षा एवं नमी की कमी पायी जाती है मरुस्थल कहा जाता है। मरुस्थलीय पारिस्थितकी में रहने के लिए जन्तुओं के शरीर में पायी जाने वाली विशेषताओं को मरुस्थलीय अनुकूलन कहते हैं। यहाँ दिन के समय ताप अधिक और रात्रि के समय तापमान कम रहता है। इस प्रकार मरुस्थलीय जन्तुओं में गर्म एवं ठण्डे दोनों ही प्रकार के वातावरण को झेलना पड़ता है। ताप में वृद्धि होने से वायु तीव्र गति से प्रवाहित होती है। फलतः धूलभरी आधियां चलती हैं। कम वर्षा के कारण वन्स्पतियों की कमी पायी जाती है। यहाँ ऐसे जन्तु पाये जाते हैं जो विषम परिस्थिति में भी अपना अनुकूलन कर सकें जैसे :– ऊँट, शुतुरमुर्ग आदि।

(3) कृषिगत फसलों, फलों एवं सब्जियों का वर्गीकरण :– आर्थिक उद्देश्य से उगाये गये पौधों के समूह को फसल कहते हैं – फसलों का वर्गीकरण कई प्रकार से किया गया है जो निम्नांकित है :–

(अ) पौधों के जीवन चक्र के आधार पर :–

(1) एकवर्षीय **(Annuals)**फसलें :– यह अपना जीवन चक्र एक वर्ष के अन्दर पूरा कर लेते हैं, जैसे – गेंहूँ, चना आदि।

(2) द्विवर्षीय **(Biennials)**फसलें :– यह पहले वर्ष में अपनी वृद्धि करते हैं तथा दूसरे वर्ष में बीज उत्पादन करते हैं जैसे – चुकन्दर।

(3) बहुवर्षीय (Prennials)फसलें :–यह अनेक वर्षो तक जीवित रहते हैं जैसे – रिजका, चुकन्दर आदि।

(ब) ऋतुओं के आधार पर :–

(1) खरीफ की फसलें :– इस वर्ग की फसलों को बोते समय अधिक तापमान तथा आर्द्रता व पकते समय शुष्क वातावरण की आवश्यकता होती है। जैसे – ज्वार, बाजरा आदि।

(2) रबी की फसलें :– इस वर्ग की फसलों को बोते समय अपेक्षाकृत कम तापमान तथा पकते समय आधिक तापमान व शुष्क मौसम की आवश्यकता होती है। जैसे – गेंहूँ, जौ आदि।

(3) जायद की फसलें :– इस वर्ग की फसलों में तेज हवा तथा धूप सहन करने की क्षमता होती है। जैसे – ककड़ी, खरबूजा आदि।

(स) **आर्थिक दृष्टिकोण** के आधार पर :– इस प्रकार का वर्गीकरण आर्थिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर किया गया है–

(1) अनाज की फसलें **(Cereals)** :– जैसे – गेंहूँ, जौ, धान आदि।

(i) मोटे अनाज **(Millets)** :– जैसे – ज्वार, बाजरा और मक्का।

(ii) अन्य मोटे अनाज **(Smallers Millets)** :– जैसे – चना काकून, कोदो, रागी, सांवा आदि।

(2) दलहनी फसलें **(Legumes and Pulses)** :– जैसे – चना, मूंग, मटर आदि।

(3) चारे की फसलें **(Forage Crops)** :– जैसे – बरसीन, ग्वार, लोविया आदि।

(4) रेशे की फसलें **(Fibre Crops)** :– जैसे – कपास, जूट, सवई आदि।

(5) चीनी देने वाली फसलें **(Sugar Crops)** :– जैसे – चुकन्दर, गन्ना आदि।

(6) तिलहनी फसलें **(Oilseeds Crops)** :– जैसे – सरसों, मूँगफली आदि।

(7) उत्तेजक तथा औषधि फसलें **(Medicinal Crops)** :– जैसे – चना, मूंग, मटर आदि।

(8) जड़ तथा कन्द वाली फसलें **(Root and Tuber Crops)** :– जैसे – आलू, मूली आदि।

(9) मसाले वाली फसलें :– जैसे – लहसुन, प्याज, मिर्च आदि।

फलों का वर्गीकरण (Classification of Fruits)

फलों का हमारे दैनिक जीवन में आदि काल से ही बड़ा महत्व दिया जाता रहा है। फलों का वर्गीकरण कई प्रकार से किया जाता है। निम्नांकित वर्गीकरण सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है–

(A) **जलवायु के आधार पर फलों का वर्गीकरण** – फलों को विभिन्न जलवायु क्षेत्रों (Climate Zone) में उगाने के आधार पर निम्न वर्गो में विभाजित किया जाता है–

(1) **शीतोष्ण कटिबन्धिीय फल** – (Tamperate Fruits) इस प्रकार के फल ठण्डे क्षेत्रों में सफलतापूर्वक उगाये जाते हैं। जहाँ पर जाड़ों में तापक्रम हिमॉक बिन्दु (Freezing Point) से भी नीचे चला जाता है। इस वर्ग में सेब, नाशपाती, आडू, आलूबुखारा, बादाम, खुबानी, चेरी, चिलगोजा, रसभरी, अखरोट, स्ट्राबेरी एवं पीकनर आदि सम्मिलित हैं।

(2) **उपोष्ण कटिबन्धीय फल** – (Subtronical Fruits) इस प्रकार के फल मैदानी क्षेत्रों में उगाये जाते हैं। इन फलों को गर्म एवं शुष्क जलवायु में उगाया जाता है।इस वर्ग में नींबू जाति के फल , अंगूर, लीची, बेर, अनार, अंजीर, फालसा, आंवला, बेल, ऐवोकेडो, शहतूत, करौंदा, खजूर, इमली, एवं जामुन आदि फल आते हैं।

(3) **उष्ण कटिबन्धीयफल** – (Tropical Fruits) आम, केला, पपीता, अमरुद, अनानास, शरीफा, काजू, कटहल, चीकू, एवं कमरख आदि फल इस श्रेणी में आते हैं। इन्हे उगाने हेतु उच्च तापक्रम एवं आर्द्र जलवायु चाहिए।

(B) परागंकण के आधार पर फलों का वर्गीकरण :– इस आधार पर फलों को दो प्रकार से वर्गीकृत किया जाता है।

(1) स्वपरागित फल (Self Pollinated Fruits) इसके अन्तर्गत – खुबानी (Apricot), नींबू (Lemon) आडू (Peach) आदि सम्मिलित किये जाते हैं।

(2) परपरागित फल (Cross Pollinated Fuits) इसके अन्तर्गत आम, नाशपाती, रसभरी, अखरोट, हृजलनर, सेब, एवोकैडो, केला,चेरी, खजूर, अंजीर, नारियल, अंगूर, पपीता, अलूचा, लोकार, स्ट्रावेरी बादाम आदि आते है।

सब्जियों का वर्गीकरण (Classification of Vegetables) :– मानव के सन्तुलित आहार एवं स्वास्थ्य–अनुरक्षण के लिए सब्जियों का अतिमहत्व है। भारत मे लगभग 125 प्रकार की वनस्पतियाँ सब्जियों के रुप में उपयोग में लायी जाती है जिसमें 60 लगभग ऐसी सब्जियाँ हैं, जो प्रायः सभी स्थानों में विभिन्न मौसमों में उगाई जाती है। इन सब्जियों को उगाने व उनके उपयोग के अनुसार विभिन्न वर्गो में विभाजित किया जाता है–

(A) बीजपथ (Cotyledons) के आधार पर –

(i) एक बीज पथी पौधे –

	कुल	–	*सब्जियाँ*
1.	ऐरेसी	–	अरबी, जिमीकन्द
2.	एमोरिलिडेसी	–	प्याज, लहसुन, लीक, चाइव
3.	डायोस्कोरियेसी	–	रतालू (याम)
4.	लिलिएसी	–	सतावर (एस्पैरागस)

(ii) द्विबीजीय पथी पौधे –

1.	मालवेसी	–	भिण्डी
2.	जिजीवरेसी	–	हल्दी, अदरक
3.	एजोएसी	–	न्यूजीलैण्ड पालक
4.	कोनवोल वुलेसी	–	शकरकन्द
5.	अम्बैकी केरी	–	बाजर, धनियाँ, पार्सले, जीरा, सौंफ
6.	कम्पोजिटी	–	सलाद, चिकोरी
7.	क्रूसीफेरी	–	फूलगोभी, बन्दगोभी, गांठगोभी, शलजम, चीनी, ब्रसेल्स, स्पाउर, मूली
8.	यूफोरवियेसी	–	टेपिओका
9.	चीनी पोडिएसी	–	चुकन्दर, विलायती पालक, बथुआ, स्वीसचार्ड
10.	लेविएरी	–	पुदीना, पिपरमेन्ट
11.	वेसेल्लसी	–	पोई
12.	लेग्युमिनोसी	–	मटर, सेम, ग्वार, लोविया, मेथी, फराशबीन
13.	सोलेनसी	–	आलू, बैंगन, टमाटर, शिमलामिर्च, मिर्च
14.	पोटिलकेसी	–	कुल्फा
15.	कुकरविरेसी	–	लौकी, सीताफल, टिण्डा, खरबूजा, खीरा, करेला, तरबूज, चप्पन कद्दू, तुरई, कन्दस, परवल, चिचिण्डा, पेठा, ककड़ी

(B) विभिन्न वनस्पति–भागों के उपयोग के आधार पर

(1) जड़ प्रधान सब्जियाँ – गाजर, मूली, चुकन्दर, शलजम

(2) कन्द प्रधान – आलू, जिमीकन्द, अरवी, शकरकन्द

(3) शल्क प्रधान – प्याज, लहसुन

(4) पत्ती प्रधान – चौलाई, पालक, पाई, मैथी, सरसों पत्तागोभी

(5) फूलप्रधान – प्रोकली, फूलगोभी

(6) फल एवं कली प्रधान – मिर्च, बैंगन, भिन्डी, टमाटर, ग्वार, सेम, लोविया, राजमा, वाकला, लौकी, खीरा, खरबूजा, तरबूज, ककड़ी, तुरई, काशीफल, पेठा आदि

(C) ऋतुओं (Seasons) के आधार पर :–

(1) जायद या गर्मियों की सब्जियाँ – कद्दू वर्गीय सब्जियाँ, भिण्डी, टमाटर, बैंगन, शिमला मिर्च, लाल मिर्च, लोविया, चौलाई, अरवी,

(2) खरीफ या बरसाती सब्जियाँ – भिण्डी, टमाटर, लोविया, शिमला मिर्च, ग्वार, खीरा, ककड़ी, लौकी, पेठा, चिचिण्डा,

(3) रवी या सर्दियों की सब्जियाँ – मूली, शलजम, गोभी वर्गीय सब्जियाँ गाजर, प्याज, मटर, सलाद, चुकन्दर, मैथी, पालक, धनियाँ

3(iv) जैवीय संसाधनों को प्रभावित करने वाले कारक :–

जैवीय पदार्थों की उयोगिता कुछ चुने हुए कारकों पर ही निर्भर करती है। ये कारक सभी संसाधनों के उपयोग नियंत्रित करते हैं, जैसे ज्ञान एवं तकनीकी योग्यता एक आवश्यक तत्व है, जिसकी महत्ता एक स्थान से दूसरे स्थान तथा एक शताब्दी से दूसरी शताब्दी तक बदलती रहती है। किसी क्षेत्र में वहाँ की अभिगम्यता, बाजार से दूरी, वर्तमान परिवहन साधन, पूँजी की उपलब्धता, बाजारों की समीपता, प्रभावशाली माँग, तथा समकक्ष प्रतियोगी वस्तुओं की उपलब्धता किसी भी जैविक एवं अजैविक संसाधनों की उपयोगिता को प्रभावित करते हैं। जैवीय संसाधनों को प्रभावित करने वाले निम्नलिखित कारक हैं :–

1. **ज्ञान एवं तकनीकी योग्यता :–** जैवीय संसाधनों का सही एवं वास्तविक उपयोग ज्ञान एवं तकनीकी योग्यता के आधार पर ही किया जा सकता है। संसाधनों के उचित प्रकार से दोहन के लिए ज्ञान एवं तकनीकी योग्यता अति आवश्यक है, क्योकि जैविक संसाधनों के दुरुप्योग को ज्ञान एवं तकनीकी के माध्यम से रोका जा सकता है तथा इसे आसानी से प्राप्त भी किया जा सकता है एवं संरक्षित भी किया जा सकता है। ज्ञान एवं तकनीकी योग्यता जैवीय संसाधनों की गुणवत्ता में भी वृद्वि करती है। जैसे पशु नस्ल सुधार। ज्ञान एवं तकनीकी योग्यता द्वारा प्राथमिक क्षेत्र के उत्पादों में सपरिवर्तन करके उनकी उपयोगिता में वृद्वि की जा सकती है।
2. **अभिगम्यता :–** जिस स्थान या क्षेत्र में जितनी आसानी से पहुँचा जा सकता है, वहाँ के जैवीय संसाधनों का उपयोग उतना ही अधिक किया जा सकता है। उदाहरण के लिए विषुवतीय रेखीय वन दुर्गम हैं अतः उनका दोहन अधिक नहीं हो सका है, क्योकि वहाँ के वनों से वृक्ष काटकर एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाना बहुत ही कठिन है। इसी प्रकार ऊबड़ खाबड़, रेगिस्तानी क्षेत्र, ऊँचे पर्वतों में पहुँचने में आसानी न होने के कारण जैवीय संसाधनों का कम लाभ मिल पाता है। अतः स्पष्ट है कि अभिगम्यता जैवीय संसाधनों को अत्यधिक प्रभावित करती है।
3. **बाजार से दूरी :–** जैवीय संसाधनों पर आधारित उद्योगों की स्थापना और उन्नति में बाजार की निकटता विशेष लाभदायक रहती है। जिन क्षेत्रों में जैविक संसाधनों पर आधारित उद्योग विशेष की वस्तुओं की खपत अधिक होती है, वहाँ उनसे सम्बन्धित उद्योग संचालित किये जाते हैं। इस प्रकार तैयार माल को बाजार तक भेजने में सुविधा रहती है तथा खर्च भी कम होता है। यदि तैयार माल कच्चे माल की अपेक्षा भारी या आयतन में अधिक होता है, (जैसे – फर्नीचर, पैकिंग बॉक्स, आदि) तो ऐसे उद्योग प्रायः खपत क्षेत्रों के निकट ही स्थापित किये जाते हैं। तैयार माल के भारी होने पर

या विकारीय होने पर (शीघ्र खराब होने वाले फल, सब्जियाँ, दूध, अण्डे से बने भोज्य पदार्थ हेतु) बाजार की निकटता का महत्व और भी बढ़ जाता है।

4. **परिवहन के साधनों की सुविधा** :— जैवीय संसाधनों तथा उस पर आधारित उद्योगों के लिए कच्चे माल को लाने और निर्मित वस्तुओं को बाजार पहुँचाने के लिए यातायात के साधनों का सुविकसित होना नितान्त आवश्यक है। सस्ता परिवहन उत्पादन लागत को कम रखता है, जिससे प्रतिस्पर्धा में आसानी होती है। आधुनिक युग में बड़े–बड़े नगर रेल, सड़क, हवाई मार्ग इत्यादि से जुड़े रहने से ही नगरों में उद्योगों की स्थापना स्वतः हो जाती है। मुम्बई कोयला क्षेत्र से बहुत दूर है, परन्तु सूती वस्त्र उद्योग का प्रमुख केन्द्र है। वस्त्र उद्योग, डेरी उद्योग, माँस उद्योग, फर्नीचर उघोग, चमड़ा उद्योग आदि परिवहन के साधनों की सुविधा होने पर ही विकसित होते हैं।
5. **पूँजी की सुलभता** :— पूँजी की सुलभता भी जैवीय संसाधनों को प्रभावित करती है। प्रत्येक उद्योग की स्थापना के लिए या जैवीय संसाधनों को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त पूँजी की आवश्यकता होती है। अमरीकन युद्धकाल में कपास निर्यात में हुई कठिनाई का भारतीय व्यापारियों ने लाभ उठाया और उस पूँजी से इन व्यापारियों ने नये–नये उद्योगों की स्थापना की। मुम्बई एवं अहमदाबाद का सूती वस्त्र उद्योग इसका उदाहरण है। वर्तमान में बैकिंग सुविधाओं में वृद्धि एवं आसान ऋण सुविधाओं के कारण पूँजी की सुलभता आसान हो गयी है जिससे उद्योगो को प्रोत्साहन मिल रहा है।
6. **अनुकूल जलवायु** :— जैवीय संसाधनों को प्रभावित करने में जलवायु का महत्वपूर्ण स्थान है। जिस देश या प्रदेश की जलवायु मानव के अनुकूल होगी वहाँ जैविक संसाधनों का दोहन सरलतापूर्वक होता है। जैविक संसाधन के उत्पादन में भी जलवायु एक महत्वपूर्ण कारक है। उपयुक्त तापमान तथा अच्छी वर्षा होने पर ही उत्तम कृषि की जा सकती है। टुन्ड्रा प्रदेश में अत्यधिक शीत पड़ने तथा बर्फ जमी रहने के कारण कृषि नहीं की जा सकती है। अतः वहाँ पशुओं एवं जीवजन्तुओं पर निर्भरता बढ़ जाती है। इसी प्रकार अनुकूल जलवायु जैविक संसाधनों पर आधारित उद्योगों की स्थापना में एक महत्वपूर्ण कारक है। यह उद्योग ऐसे स्थानों पर स्थापित किये जाते हैं, जहाँ की जलवायु कुछ नम, परिवर्तनशील एवं लाभप्रद हो। किसी भी उद्योग को विशेष जलवायु की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए सूती वस्त्र उद्योग के लिए आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है, क्योंकि आर्द्र जलवायु में धागा कम टूटता है तथा धागा महीन से महीन बनाया जा सकता है। डेरीफार्मिंग हेतु विशेष रुप से गायों के लिए, साधारण जाड़ों और शीतल गर्मियों वाली शीतोष्णार्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है। ठण्डी जलवायु में दुग्ध तथा उससे निर्मित पदार्थ शीघ्र खराब नहीं होते, परन्तु शीतकाल में ताप हिमांक से नीचे नहीं जाना चाहिए।
7. **प्रभावशाली माँग** :— माँग की स्थिति जैविक संसाधनों को प्रभावित करती हैं। बड़े नगरों में जिन वस्तुओं की माँग अधिक होती है, वहाँ उससे सम्बन्धित उद्योग शीघ्र स्थापित हो जाते हैं, जिससे तैयार माल को बाजार तक भेजने में सुविधा रहती है तथा परिवहन लागत कम होती है। दूध की प्रति व्यक्ति अधिक खपत वाले बड़े नगरीय क्षेत्रों के निकट डेरी उद्योग स्थापित किये जाते हैं एवं जहाँ माँसाहारी लोग अधिक होते हैं वहाँ ही माँस उद्योग विकसित होता है। बशर्ते पशुओं के चरने के लिए घासस्थल स्थित हो अथवा मत्स्य पालन के लिए जल क्षेत्र स्थित हो।
8. **समकक्ष प्रतियोगी वस्तुओं की उपलब्धता** :— उच्च गुणवत्ता से युक्त एवं सस्ते जैविक संसाधनों की माँग अधिक होती है। इसलिए उनका उत्पादन एवं वितरण अधिक होता है, जैसे – जापान के सूती वस्त्र उद्योग का विदेशी बाजार में कड़ी प्रतिस्पर्धा है, विश्वबाजार की माँग के अनुसार नवीन एवं मिश्रित किस्म के टिकाऊ, आर्कषण व सस्ते वस्त्र बनाये जाते हैं। इसी प्रकार उत्तम नस्ल के

पशुओं जिनसे अधिक दूध या अधिक माँस प्राप्त होता है, उनकी माँग अधिक रहती है। मिस्र के लम्बे रेशे वाली कपास की माँग अधिक रहती है, क्योंकि लम्बा रेशा उच्च कोटि के सूती वस्त्र एवं उत्तम सिलाई धागा बनाने हेतु प्रयुक्त होता है। देश में समकक्ष प्रतियोगी वस्तुओं की उपलब्धता से आत्मनिर्भरता बढ़ती रहती है, फलतः वस्तुओं का हमें आयात नहीं करना पड़ता है।

9. **सरकारी संरक्षण :–** जिन 'जैविक संसाधनों' का मूल्य अधिक होता है, उनका उत्पादन अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए अधिक किया जाता है। जबकि जिन वस्तुओं का बाजार मूल्य अधिक होता है, उनका उत्पादन केवल स्वंय उपभोग के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए – तिलहनों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सरकार उनके मूल्य में वृद्धि कर रही है, क्योंकि देश में तिलहन का उत्पादन कम होने के कारण आयात करना पड़ता है। इसके विपरीत देशी उद्योगों को प्रोत्साहन देने एवं उन्हे संरक्षण देने हेतु सरकार अनेक प्रकार के प्रशुल्क, (टैक्स) लगाकर विदेशी वस्तुओं से प्रतिस्पर्धा को कम कर देती है।

1. *श्री मती भावना माथुर एवं महेश नारायण,* : वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, प्रथम संस्करण 1998, पृष्ठ 265
2. *इ0 डब्ल्यू0 जिम्मरमैन,* : ए इन्ट्रोडक्शन टू वर्ल्ड रिसोर्सेज, एच.एल.हन्टर (एड.), पृष्ठ
3. *प्रो0 राजेन्द्र प्रसाद एवं डॉ वीरेन्द्र कुमार* : विजय–ग्रामीण विकास एवं प्रौघोगिकी केन्द्र भारतीय प्रोघोगिकी संस्थान दिल्ली 110016
4. *प्रो0 जगदीश सिंह* : संसाधन भूगोल (प्रथम संस्करण 1998) ज्ञानोदय प्रकाशन, पृष्ठ 209
5. भारत 2002, वार्षिक सन्दर्भ ग्रन्थ प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ 416
6. *करन, महेश्वर प्रसाद* : संसाधन भूगोल, पृष्ठ 320
7. *क्रेसी, जी0 बी0,* : एशियाज लैण्ड एण्ड पीपुल, 1963 पृष्ठ 396.

अध्याय –4
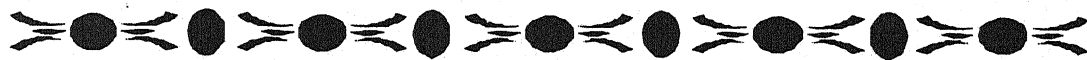
वन संसाधन (FOREST RESOURCES)

4 (i)- वनों का महत्व एवं वर्गीकरण :–

प्राकृतिक संसाधनों में वनों का विशेष महत्व है। इसकी महत्ता को ध्यान में रखकर ही इसे 'हरा सोना' (Green gold) की संज्ञा से विभूषित किया गया है। प्राचीन काल से वृक्षों एवं वनों का अपना विशिष्ट स्थान रहा है एवं इसे पर्यावरण का महत्वपूर्ण अंग माना गया है। धार्मिक दृष्टिकोण से भी वृक्षों का महत्व प्राचीन काल से लेकर अभी तक बना हुआ है। नास्तिक लोग वृक्षों की पूजा को अंधविश्वास मानते हैं, किन्तु व्यावहारिक जीवन में 'वृक्ष–पूजा' का महत्व अपना विशिष्ट स्थान रखता है। महात्मा बुद्व ने 'पीपल वृक्ष' के नीचे तपस्या करके ज्ञान प्राप्त किया था, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण आज भी बौद्ध गया में देखा जा सकता है। सांस्कृतिक दृष्टि से भी वनों का विशेष महत्व है। चारों वेद वनों में ही लिखे गये। वनस्पति के बिना विश्व में मनुष्य की सत्ता कायम नहीं रह सकती।

आधुनिक सभ्यता में इनका महत्व विभिन्न रुपों में है क्योंकि ये केवल जलाने के लिए ईंधन के रुप में लकड़ियाँ ही नहीं देते वरन् उद्योगों के लिए कच्चामाल, कृषि उपकरण गृहोपयोगी वस्तुएं, तथा भवनों के लिए लकड़ियाँ, पशुओं के लिए चारा, मनुष्यों के लिए कन्दमूल और वस्त्र निर्माण के लिए रेशे, दवाईयों के लिए जड़ी बूटियाँ, वन्य पशु–पक्षियों एवं आदिम समाज को शरण–स्थल प्रदान करते हैं।

इनसे होने वाले अप्रत्यक्ष लाभ इससे भी कई गुना अधिक महत्वपूर्ण हैं। वन वातावरण में समुचित सन्तुलन के साथ–साथ प्रदूषण से मुक्त पर्यावरण प्रदान करते हैं। वर्षा करने में सहायक होते हैं। मृदा अपरदन रोकते हैं। जल–स्तर को ऊँचा रखने में सहायक होते हैं। कृषि कार्य में सहायक तथा अकालों को रोकते है। बाढ़ को रोककर, खादों की पूर्ति करके कृषिगत सामाग्री जुटाकर वन कृषि के विकास और संवर्धन में सहयोग करते हैं। साथ ही साथ सूखे की समस्या का भी निराकरण करते हैं।

डॉ के. एम. मुन्शी ने कहा था– *"वृक्षों का अर्थ जल, जल का अर्थ है रोटी और रोटी ही जीवन है।"* वृक्ष पर्वतीय क्षेत्रों में भूस्खलन रोकते है, वृष्टि को नियंत्रित करते है तथा नदियों को अनुशासन में रखते हैं। वे झरनों की जलधारण क्षमता बनाये रखते हैं, तथा पक्षियों का पोषण करते हैं। वन किसी भी देश की राष्ट्रीय आय के मूल स्रोत हैं। राष्ट्र का बहुमूल्य खजाना है, जिसमें कोई भी राष्ट्र स्वयं को सबल बना सकता है। इसलिए भूगोल वेत्ताओं और अर्थशास्त्रियों ने राष्ट्रीय वननीति के अनुसार देश के 33.3% भाग पर वनों का रोपण आवश्यक माना है। वनों से लोगों को रोजगार मिलता है। वन मानव के लिए एक बहुत बड़ा आर्थिक आधार हैं। एक वृक्ष अपने पचास वर्ष के जीवन काल में कितना लाभ प्रदान करता है, इस सम्बन्ध में एक अध्ययन के अनुसार कहा गया है कि एक पचास वर्षीय वृक्ष अदृश्य रुप से 33.50 लाख रुपये मूल्य की अमूल्य सेवाएँ प्रदान करता है"।[1] इसमें वृक्ष की छाया, ईंधन, हरियाली, फल–फूल इत्यादि शामिल नहीं किया गया है। किन्तु इस रुप में भी यह हमें लगभग 1.00 लाख रुपये का लाभ प्रदान करता है।" एक सामान्य वृक्ष अपने 50 वर्ष के जीवन में कितना लाभ देता है? इसे निम्न तालिका में दर्शाया गया है–

तालिका सं. 4–1

क0सं0	एक वृक्ष से प्राप्त लाभ का क्षेत्र	रुपये (लाख में)
1	कुल उत्पादित ऑक्सीजन का मूल्य	05.50
2	वायु के परिष्करण का मूल्य	10.50
3	जल के अवशोषण एवं आर्द्रता नियन्त्रण का मूल्य	06.40
4	मिट्टी के परिक्षण का मूल्य	05.30
5	पशु–पक्षियों के संरक्षण का मूल्य	05.30
6	प्रोभूजिन (प्रोटीन) के रुपान्तर का मूल्य	00.50
	कुल योग	33.50
नोट : इसमें छाया, हरियाली, ईंधन, फलफूल आदि का मूल्य– सम्मिलित नहीं है		

एक अन्य अध्ययन के अनुसार एक हेक्टेयर वन क्षेत्र प्रतिवर्ष औसतन तीन मीट्रिकटन अशुद्ध वायु ग्रहण करता है तथा एक मीट्रिक टन शुद्ध वायु देता है। इसके अतिरिक्त 70 मीट्रिकटन धूल को वृक्ष अपने पत्तों टहनियों आदि पर रोक लेते हैं। इस प्रकार *वन पर्यावरण प्रदूषण के नियंत्रण में अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान देते हैं तथा पृथ्वी के जैव मण्डल के लिए फेफड़ों की भूमिका निभाते हैं।*[2]

वनों का वर्गीकरण :– चित्रकूट धाम मण्डल में वनों की किस्म के निर्धारण में भूमि की बनावट मिट्टी और जलवायु का विशेष प्रभाव देखा जा सकता है। विद्वानों तथा वनस्पति वैज्ञानिकों नें भारत के वनों को विभिन्न वर्गों में विभाजित किया है। सर्वप्रथम हूकर और थामसन[3] ने सन् 1855 में भारत के वनों को प्रादेशिक विशेषता के आधार पर वर्गीकृत करने का प्रयास किया। क्लार्क[4] नें 1898 में भारत को 6 वनस्पति मेखलाओं (Vegelation zones) में विभाजित करने का प्रयास किया। काल्डर[5] ने 1937 में भारत को छः प्रकार के वनस्पति–आवरण में विभक्त किया। चटर्जी[6] ने 1939 में भारत को आठ वनस्पति समूहों में विभक्त किया। इसके बाद स्टाम्प[7], चैम्पियन[8] और पुरी[9] ने भारत के वनों को बर्गीकृत करने का प्रयास किया। चैम्पियन ने 1936 में भारतीय वनों का वैज्ञानिक वर्गीकरण प्रस्तुत किया। इन्होंने तापमान को आधार मानकर भारत को 15 वनस्पति मेखलाओं और 136 उपमेखलाओं में विभक्त किया। सन् 1960 में पुरी ने वनों के वर्गीकरण का सुधरा रुप प्रस्तुत किया।

चैम्पियन और पुरी के वनों के वर्गीकरण के आधार पर चित्रकूट धाम मण्डल के वनों को 6 मुख्य वर्गों में बाँट सकते हैं :–

1. नम साल के वन
2. उष्ण नदी तट के सीमावर्ती वन
3. उष्ण शुष्क मिश्रित पर्णपाती वन
4. उष्ण शुष्क पर्णपाती वनों के मृदीय चरम प्रकार
   (क) करधई के वन

(ख) सलई के वन

(ग) शुष्क बांस के वन

(घ) बबूल के वन

(ड.) छिउला के वन

(च) शुष्क सागौन के वन

(छ) थूहर के वन

5. शुष्क घास के वन

6. बीहड़ क्षेत्रों के उष्ण कटीले वन

1. नम साल के वन :— इस प्रकार के वन चित्रकूट के मड़ैयन वन खण्ड में तथा महोबा वन प्रभाग में सदा जल स्रोतों की घाटियों में इक्के—दुक्के या कहीं—कहीं 60 से 70 मीटर चौड़ी पट्टियों में मिलते हैं। साल के साथ अन्य वृक्ष प्रजातियों का मिश्रण प्रायः नगण्य है। इन पट्टियों में निम्नरोह भी घनें नहीं हैं और घास लगभग नहीं के बराबर है। साल के ये वन अन्यत्र पाये जाने वाले वनों के बहुत समरुप नहीं हैं और इनमें पाई जाने वाली प्रजातियाँ भी उन वनों से भिन्न हैं। यहाँ के साल वृक्षों की वृद्धि तथा दशा भी अचछी नहीं है।

2. उष्ण नदी के तट के सीमावर्ती वन :— चित्रकूट धाम मण्डल में इस प्रकार के वन पयस्वनी, वरदहा, केन, वेतवा तथा धसान नदी के तट एवं अन्य बड़े नालों तथा सदा जल स्रोतों के किनारे प्रायः मिलते हैं। इन वनों की स्थिति उत्तर काष्ठा (पोस्ट क्लाइमेक्स) वनों की है। भूमि तथा जल की अनुकूल अवस्था प्राप्त होने से इन वनों में पाये जाने वाले वृक्षों की ऊँचाई और मोटाई समीपवर्ती उष्ण शुष्क मिश्रित पर्णपाती वनों, जो जलवायु काष्ठा (क्लाइमेटिक क्लाइमेक्स) की स्थिति में है, में पाये जाने वाले वृक्षों की अपेक्षा अधिक होती है।

इन वनों में उष्ण शुष्क मिश्रित पर्णपाती वनों की ही प्रजातियाँ मिलती हैं। वृक्ष प्रजातियों में 'कवा' अथवा 'अर्जुन' (टरमिनालिया अर्जुना) 'जामुन' (साईजियम क्यूमिनाई), 'कठजामुन' (साईजियम हिनेनम) 'कैमा' (मिर्ताग्वा पार्वीफलोरा), 'गूलर' (फइक्स ग्लीमैरैटा), 'तेन्दू' (डायोस्पईरस टोमेन्टास), खिरनी, खुन्जा (इक्जोरा आर्वोरिया) तथा अजवाई आदि प्रमुख हैं, परन्तु इनमें प्रधानता कवा और जामुन की है। अधोवन अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। इनमें पाई जाने वाली मुख्य प्रजातियों में कटैया, खरहर, पापड़ और कहीं कहीं रोहिनी आदि उल्लेखनीय हैं। निम्न रोहियों में करौंदा, सेमरी, गवई और मरोड़ फल या ऐंठी आदि हैं। लताओं में केबनिट बद्रासिन तथा मोराइन आदि उल्लेखनीय हैं। इन वन पट्टियों में प्रायः घास की कमी है, परन्तु बीहड़ क्षेत्रों में नदी के किनारे की बलुई मिट्टी में 'दूब' व 'कुश' तथा अन्य स्थानों में 'छोटा परवा' आदि घासें मिलती हैं।

3. उष्ण शुष्क मिश्रित पर्णपाती वन :— चित्रकूट धाम मण्डल के अधिकांश वन इस वर्ग में सम्मिलित हैं। इन वनों में अनेक वृक्ष प्रजातियों के मिश्रण पाये जाते हैं। कहीं—कहीं धौ, करधई, तुरहा, खैर तथा कुछ पहाड़ियों पर सलई के अमिश्रित वन भी मिलते हैं, परन्तु समस्त क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए इनका विस्तार नगण्य है। मिश्रित पर्णपाती वनों में घोंट, धव, खैर, तेन्दू एवं सेजा सबसे अधिक पाई जाने वाली वृक्ष की प्रजातियाँ हैं। समस्त क्षेत्र में घोंट एवं धव की मात्रा अधिक है। मारकुण्डी रेंज के गुरसरांय पूर्व, इटंवा, जमुनिहाई, कुलमारपरासिन, ददरी, मड़ैयन, रुकमाबुजुर्ग, मानिकपुर रेंज के

FIG. 4·1
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
FORESTS
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
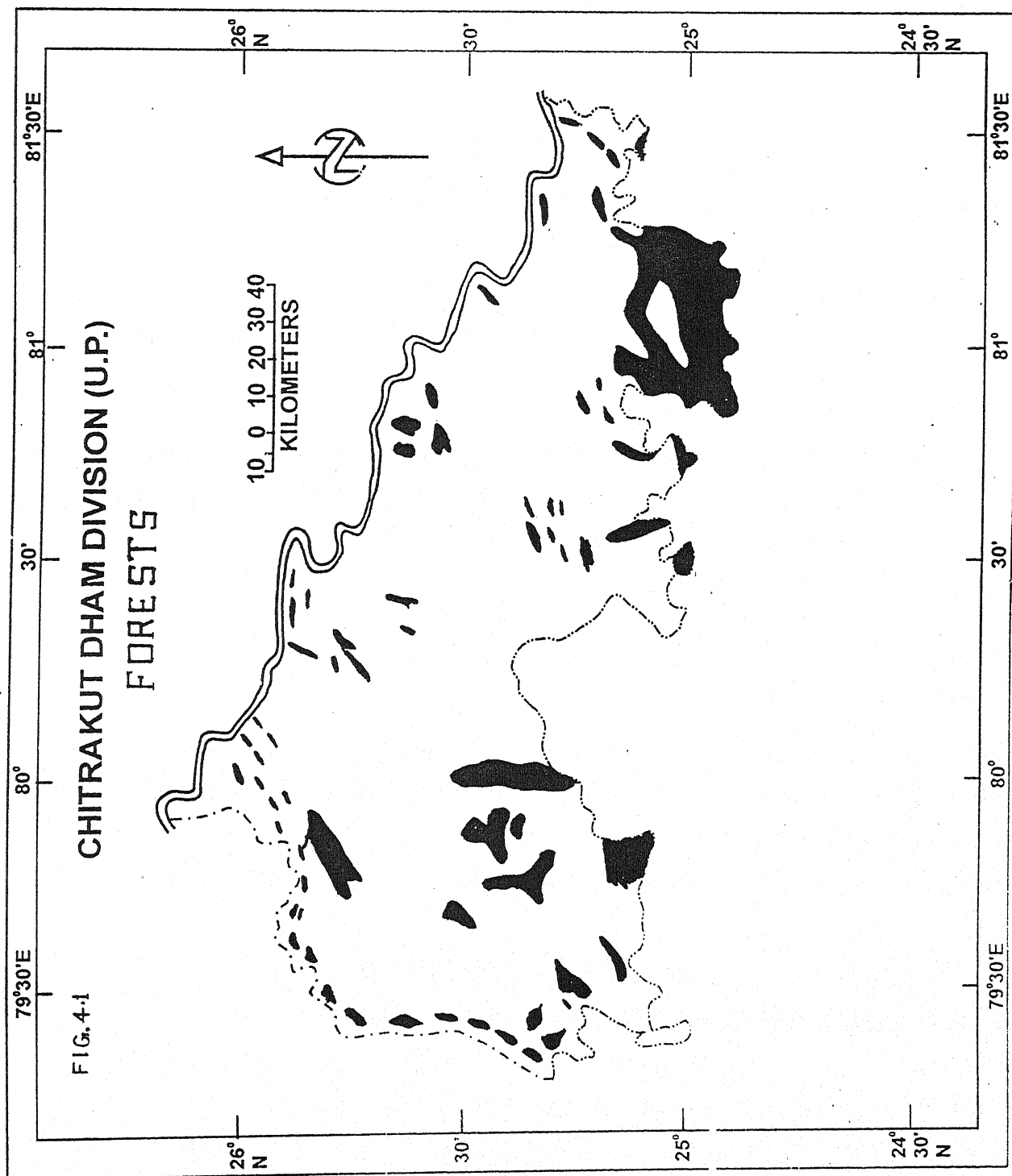
4. गुरदारीपूर्व, मऊगुरदारी पश्चिम, ममरानिया कर्वी रेंज के मटदर एवं सिद्वपुर, बांदा रेंज के कटरा, महोबा रेंज के बरा, ढिकवाहा, इमिलिया, साल्ट उ0 साल्ट दक्षिण, रतौली, पनवाड़ी रेंज के मानकी, मनखेड़ा, तथा रेंज के देवखेरी वन खण्डों के कुछ भागों में खैर की मात्रा अधिक है। दूसरे पठारी भाग की मटियार मिट्टी में तुरहा की चट्टानों से प्राप्त गहरी और लोहित मिट्टी में सलई तथा बलुई दोमट मिट्टी तथा ग्रेनाइट की पहाड़ियों पर करधई की विशुद्व उपज दिखाई देती है। मिश्रित पर्णपाती वनों में बहुधा पाई जाने वाली मुख्य प्रजातियों में दुद्वी, गुरजा, आंवला, फलदू, धामिन, भोथी तथा रिसका उल्लेखनीय है। इन प्रजातियों के अतिरिक्त अचार, बंसा, अमलवास, विजससाल, छिउला, कसई, सादन, सेमल, थूहड़, बहेड़ा कुल्लू तथा बेल भी जगह जगह मिलते हैं।

निम्नरोह में भी बहुत सी प्रजातियों का मिश्रण पाया जाता है, परन्तु कहीं कहीं सिंहारु एवं ऐंठी से ढ़के विशुद्व क्षेत्र भी मिलते हैं। निम्नरोह में पाई जाने वाली झाड़ियों में सिहारु, ऐंठी, कठबेर, कटैया, गुरशकरी, करौंदा, एवं बीहड़ क्षेत्रों में करील, इगुंवा और सखेड़ी बहुतायत से मिलते हैं। इनके अतिरिक्त बेल, चकुण्डा, धवई, ध्योपत्ती, कालीवंशा, कसरौता, मैनफल, तथा विलाई की प्रजातियां भी पाई जाती हैं। नदी नालों के किनारे की नम बलुई मिट्टी में सेमारा या निगंडू की प्रधानता भी पाईजाती है।

निम्नरोहों के बीच–बीच में खुले हुए क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की घासें पाई जाती हैं, जिनमें परवा, सेजा, एवं भुजुरा तथा बीहड़ क्षेत्रों में छोटा परवा या परवी प्रमुख है। गनेर, चिकुवा, मुसेल, फुलेरिया, तथा चिचुरी बहुधा पाई जाने वाली प्रजातियाँ हैं।

नदियों के किनारे कांस, मूंज एवं बीहड़ क्षेत्रों में कुरा एवं सवई घासें भी मिलती हैं। यत्र–तत्र पाई जाने वाली घासें में बरु, डोंडा, गंगेरुवा, गोंचा, खश उल्लेखनीय हैं। लताओं में ऐल, मकोय, रत्ती, एवं बद्रासिन तथा बीहड़ क्षेत्रों में करियारी, छारहंटा प्रमुख हैं। अन्य प्रजातियों में दुधिया, केंवाच, केबटी, एवं पानीबेल की लतायें पाई जाती हैं। इनके अतिरिक्त गाज, गुरिच, मौराइन, पुरेना, रामदातुन तथा सतमूली की लताऐं भी कम मात्रा में मिलती हैं।

इन वनों में पाये जाने वाले प्रमुख वृक्षों में महुवा, अचार, कवां, आम, बरगद, गुर्जा, पीपल, सलई, सांदन आदि अच्छे किस्म की इमारती लकड़ी प्रदान करते हैं। गाँवों के पास के क्षेत्रों में शुष्क पर्णपाती वनों का विकृत रुप पाया जाता है क्योंकि घरेलू जानवरों की अनियमित चराई, शाखाकर्तन, स्कन्धकर्तन तथा अनियमित पातन चलता रहता है। प्रतिवर्ष नये कापिस कल्ले निकलते हैं जो चरे जाते हैं, या काटे जाते हैं।

4. उष्ण शुष्क पर्णपाती वनों के मृदीय चरम प्रकार :–

(क) करधई के वन :– यह मृदीय चरम प्रकार क्वार्ट्ज रीफ्स एवं ग्रेनाइट पहाड़ियों में विशेष रुप से पायी जाती है। विन्ध्याचल के पठारी भागों में सेल एवं सैण्ड स्टोन से प्राप्त मृदा में भी करधई की उपज पठारी भागों में छोटे–छोटे टुकड़ों में पायी जाती है। कोल्हुहा वन खण्ड तथा बीहड़ क्षेत्रों में करधई प्रायः नहीं मिलती। मानिकपुर रेंज के धौनरहरा वन खण्ड में करधई प्रमुख प्रजाति है।

पनवाड़ी व महोबा रेंज की अधिकतर ग्रेनाइट एवं क्वार्टज रीफ्स की पहाड़ियाँ करधई वनों से आच्छादित हैं। महोबा रेंज में बधोरा,बुधवारा, कर्रा, पसानाबाद, अतनिया–माफ, रामपुरा, सेंठबारा, बीहट आदि वन खण्डो में करधई प्रमुख प्रजाति है। क्वार्ट्ज रीफ्स के ढलानों पर, जहाँ की मृदा प्रायः पथरीली है तथा चट्टानें खुली है, में विशुद्व करधई की उपज मिलती है, परन्तु नीचे की ओर तथा समतल भागों

में अन्य प्रजातियॉ जैसे खैर, सेंजा, धव, तेन्दु, घोंट, छिउला, कैमा, रेंउजा, बेल आदि करधई का स्थान ले लेती हैं। अधिक ढलान वाली पहाड़ियों के ऊपरी भागों में करधई की अपेक्षा सलई एवं गुरजा की मात्रा अधिक होती है और इनके साथ कठबेर भी पाया जाता है। ग्रेनाइट चट्टान के अपक्षरण से प्राप्त स्थूल मृदा वाली समतल एवं ऊँची–नीची भूमि में करधई अन्य प्रजातियों के मिश्रण में प्रमुख प्रजाति के रुप में मिलती है। सख्त मटियारी भूमि में खैर के शुद्ध खण्ड मिलते हैं या उनके साथ घोंट का मिश्रण रहता है। गाँवों के निकट के वन क्षेत्रों में जहाँ पशुचारण (विशेषकर बकरियाँ) अधिक होता है, करघई झाड़ीनुमा क्षुद्ररोह के रुप की हो गयी है।इन क्षेत्रों में बरगढ़ के पुराने एवं पुनर्ग्रहित वन क्षेत्र सम्मिलित हैं। इन वनों में घास नगण्य है तथा बाँस प्रायः नहीं है।

(ख) सलई के वन :– बांदा तथा चित्रकूट जनपद में सलई के वन मृदीय प्रकार के रुपमें अधिकतर चोटियों के ऊपर, पहले व दूसरे पठार के ढलानों पर तथा दूसरे एस्कार्पमेंट की अर्रियों में मिलते हैं। कोल्हुआ वन खण्ड के पहाड़ी भागों की अर्रियों और ढलानों में भी सलई काफी मात्रा में पाई जाती है। हमीरपुर और महोबा जनपद में सलई अधिकतर क्वार्टज और ग्रेनाइट की पहाड़ियों में उपलब्ध है। धसान और विरमा नदियों के किनारे की बीहड़ भूमि में भी सलई मिलती है। सलई वनों में पाई जाने वाली मृदा अधिकतर बलुई दोमट प्रकार की है, जो विभिन्न प्रकार की रवेदार, लेटेराइट एवं शेल प्रकार की चट्टानों के अपक्षरण से बनी है। मृदा प्रायः पथरीली, कम गहरी और शुष्क है और इसमें जलोत्सारण बहुत कम है। सलई के प्रमुख सहरोही प्रजातियों में गबदी, गुरजा, कुल्लू और खरहार है, परन्तु कुछ एक कठबेर, सेंजा, घोंट और करधई के वृक्ष भी मिलते हैं। भू–आवरण में विभिन्न प्रकार की घासें गुनेर, परवा, भुंजुरा आदि भी मिलती हैं।

(ग) शुष्क बाँस के वन :– 'डेण्ड्रोकेलेमस स्ट्रिकट्स' प्रजाति का बाँस क्वार्ट्ज कूटजों (क्वार्टज् रिजेज), नीस की पहाड़ियों और विन्ध्याचल के पठारी भाग के किनारे पर अर्री के नीचे तथा नालों के किनारे सामूहिक रुप से तथा इक्के दुक्के बेड़ियों में समस्त भूभाग में मिलता है। कर्वी रेंज के कोल्हुआ वन खण्ड में बाँस की मात्रा सर्वाधिक है। यद्यपि विन्ध्यांचल के पठारी भाग की प्रायः हर पहाड़ियों में थोड़ी बहुत मात्रा में बाँस मिल जाता है, किन्तु कोल्हुआ वन खण्ड में कुछ उत्तम श्रेणी के बॉस मिलते हैं। हमीरपुर जनपद में ममानिया व शेखपुर तथा रुरीपारा वनखण्डों में बाँस औसत श्रेणी व सघनता के हैं। अन्य बाँस की श्रेणी और घनता निम्न स्तर की है। हमीरपुर तथा महोबा वन प्रभाग में प्राकृतिक बाँस प्रायः नहीं उपलब्ध हैं। बाँस के वनों के बीच–बीच में करौंदा और झरबेरी की कटीली झाड़ियाँ, कहीं कहीं मकोय की बेल और भंजुरा, परवा अदि घासें मिलती हैं। इनकी औसत ऊँचाई 6 से 7 मीटर तक है।

(घ) बबूल के वन :– ये वन कुनेहटा खण्ड में मिलते हैं। हमीरपुर जनपद के मैदानी क्षेत्रों में गहरी काली मिट्टी के क्षेत्रों में भी बबूल के वृक्ष पाये जाते हैं। बबूल के साथ प्रायः छौंकर, कैथा, छिउला, करील और कैसिया झाड़ियाँ उगती हैं।

(ड.) छिउला के वन :– इस प्रकार के वन शुष्क मटियारी भूमि, काली मिट्टी, जो पहाड़ियों के निचले समतल भागों, सड़कों नदी–नालों के किनारे या कहीं–कहीं गढ्डों में जमी मिलती है, में प्रायः पाये जाते है। छिउला के साथ घोंट, कटैया, सैजा और खैर के वृक्ष भी मिलते हैं। इन वनों में करौंदा,

झाड़बेरी झाड़ियाँ और परवा घास भी पाई जाती है। महोबा रेंज में कुनहेटा में छिउला के वन मुख्य रुप से पाये जाते हैं।

(च) **शुष्क सागौन के वन** :– चित्रकूट धाम मण्डल में सागौन के प्राकृतिक वन नहीं है। ममानिया वन खण्डों के कुछ भागों, मौदहा रेंज में सैंकड़ो एकड़ में खंडेह वन क्षेत्रों में सागौन के रोपवन मिलते हैं, जिनमें पौधों की वृद्धि अच्छी है। बरगढ़ रेंज के बोझ, कलछिया तथा मारकुण्डी रेंज के चौरी वन खण्ड में भी सागौन के इक्के दुक्के वृक्ष पाये जाते हैं परन्तु इनकी दशा अच्छी नहीं है।

(छ) **थूहर के वन** :– चित्रकूट धाम मण्डल में थूहर के वन बाँदा तथा चित्रकूट जनपद में विन्ध्याचल की पहाड़ियों तथा पठारी भाग के ढलानों में मिलते हैं। यहाँ की मृदा पथरीली होती है। इन क्षेत्रों में थूहर ही प्रमुख प्रजाति है। अन्य वृक्ष प्रजातियों में 'गबदी', 'घोंट' तथा झाड़ियों में 'चखेड़ी' व घास की प्रजातियों में 'परवा' तथा 'छोटा परवा' चन्द्रामारा वन खण्डों में मिलते हैं।

5. **शुष्क घास के वन** :– इस प्रकार के वनों में वे क्षेत्र सम्मिलित हैं। जिनमें वृक्षों की सघनता बहुत निम्न है, एवं जहाँ घास का उत्पादन ही प्रमुख है। वृक्ष प्रजातियों में घोंट, खैर, तेन्दु, सेजा तथा निम्नरोह की प्रजातियों में करौंदा, धवई व झड़बेरी आदि प्रमुख हैं। घास की प्रजातियों में भंजुरा, छोटापरवा, लम्बा परवा तथा मुसेल, चिमुवा तथा सेंजा तथा भोड़ी या गुनेर आदि प्रमुख हैं। केवल कुछ क्षेत्रों को छोड़कर जो घास की बिक्री हेतु चराई से बन्द रखे जाते हैं, अन्यत्र सभी क्षेत्रों में भारी मात्रा में चराई होती हैं। घास की अच्छी उपज पाने के लिए ग्रामीणों द्वारा इन क्षेत्रों का प्रतिवर्ष 'फुकान' कर दिया जाता है ओर इस प्रकार ये क्षेत्र पूर्वकाष्ठा की स्थिति में बने रहते हैं। इस प्रकार के क्षेत्र बरगढ़, मानिकपुर एवं मारकुण्डी रेंज के कुछ वन खण्डों में है।

6. **बीहड़ क्षेत्रों के उष्ण कटीले वन** :– इस प्रकार के वन प्रायः यमुना, धसान, केन, वागैं, वेतवा और पयस्वनी नदियों के बीहड़ों में मिलते हैं। रोपवन को छोड़कर अधिकतर क्षेत्रों में कोई वनस्पति नहीं मिलती है। वृक्ष छोटे विकृत एवं छिटपुट मिलते हैं। जिनमें रेंउजा, खैर, कटैया प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त बबूल, नीम, कैथा और कहीं–कहीं चिल्ला व छेवखरा भी मिलते हैं निम्नरोहो की प्रजातियों में करौंदा, धवई, झड़बेरी, इगुवा, करील, हिंसा और कहीं–कहीं अरुसा या बाँस , मदार, सरफोक आदि मिलते हैं। लताओं में छरेंहटा आदि घासें में छोटा परवा, भंजुरा एवं कुश आदि प्रमुख हैं। मानचित्र सं. 4.1 में चित्रकूट धाम मण्डल में वन–क्षेत्र को प्रदर्शित किया गया है।

4(ii) वनों के अर्न्तगत क्षेत्रफल :– (Distribution of Forested Area)

चित्रकूट धाम मण्डल में वनों के अर्न्तगत कुल क्षेत्रफल 133222 हेक्टेयर है, जो कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 8.96% एवं कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का 8.91% है। जबकि भूगोल वेत्ताओं और अर्थशास्त्रियों ने 33.3% भाग पर वनों से आच्छादित होना आवश्यक माना है। मण्डल को कुल वन क्षेत्रफल देश के कुल वनों के क्षेत्रफल का मात्र 0.18% है। जो अविभाजित उत्तरप्रदेश के वन क्षेत्रफल का 2.35% है। चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार वनों का क्षेत्रफल तथा उसका प्रतिशत एवं **प्रतिव्यक्ति वन क्षेत्रफल निम्नलिखित तालिका सं0 4–2 में दर्शाया गया है** :–

तालिका सं0 4–2

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार वनों का क्षेत्रफल तथा प्रतिशत–2000–01

क0 सं0	विकासखण्ड	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र0 हेक्टे0 में	वन क्षेत्र0 हेक्टेयर में	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र0 से वन क्षेत्र का प्रतिशत	प्रतिव्यक्ति वन क्षेत्र0 (हेक्टे0)
1	कुरारा	44715	3975	8.89	0.05
2	सुमेरपुर	62651	478	0.76	0.00
3	सरीला	65669	7432	11.32	0.08
4	गोहाण्ड	52023	1811	3.48	0.02
5	राठ	44623	5496	12.29	0.07
6	मुस्करा	50402	2032	4.03	0.02
7	मौदहा	93758	297	0.31	0.00
योग ग्रामीण		413841	21521	5.20	0.03
योग वन क्षेत्र		1999	1999	100.00	–
नगरीय		108	–	–	–
योग हमीरपुर जनपद		415948	23520	5.65	0.03
8	पनवाड़ी	61936	2975	4.80	0.03
9	जैतपुर	62000	5663	9.13	0.05
10	चरखारी	76322	3108	4.07	0.03
11	कबरई	91826	1685	1.83	0.01
योग ग्रामीण		292084	13431	4.60	0.03
योग वन क्षेत्र		1912	1912	100.00	–
नगरीय		5951	103	1.73	0.00
योग महोबा जनपद		299947	15446	5.15	0.03
12	जसपुरा	35926	167	0.46	0.00
13	तिन्दवारी	59245	809	1.37	0.01
14	बड़ोखर खुर्द	65673	360	0.55	0.00
15	बबेरु	58629	114	0.20	0.00
16	कमासिन	52101	–	–	0.00
17	विसण्डा	46760	155	0.33	0.00
18	महुआ	50856	380	0.75	0.00
19	नरैनी	82894	1640	1.98	0.01
योग ग्रामीण		452084	3625	0.80	0.01
योग वन क्षेत्र		1383	1383	100.00	–
योग बांदा जनपद		453467	5008	1.10	0.01
20	पहाड़ी	62850	9	0.01	0.00
21	कर्वी	92275	44822	48.58	0.34
22	मानिकपुर	92834	34768	37.45	0.23
23	रामनगर	36800	2423	6.58	0.04
24	मऊ	41150	7226	17.56	0.07
योग ग्रामीण		325909	89'248	27.38	0.16
योग चित्रकूट जनपद		325909	89248	27.38	0.14
योग मण्डल		1495271	133222	8.91	0.04

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें – 2002

CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
DISTRIBUTION OF FOREST COVER
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
< 1%
1 - 3%
3 - 9%
9 – 13 %
13 - 18%
> 18%
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
Fig. : 4.2
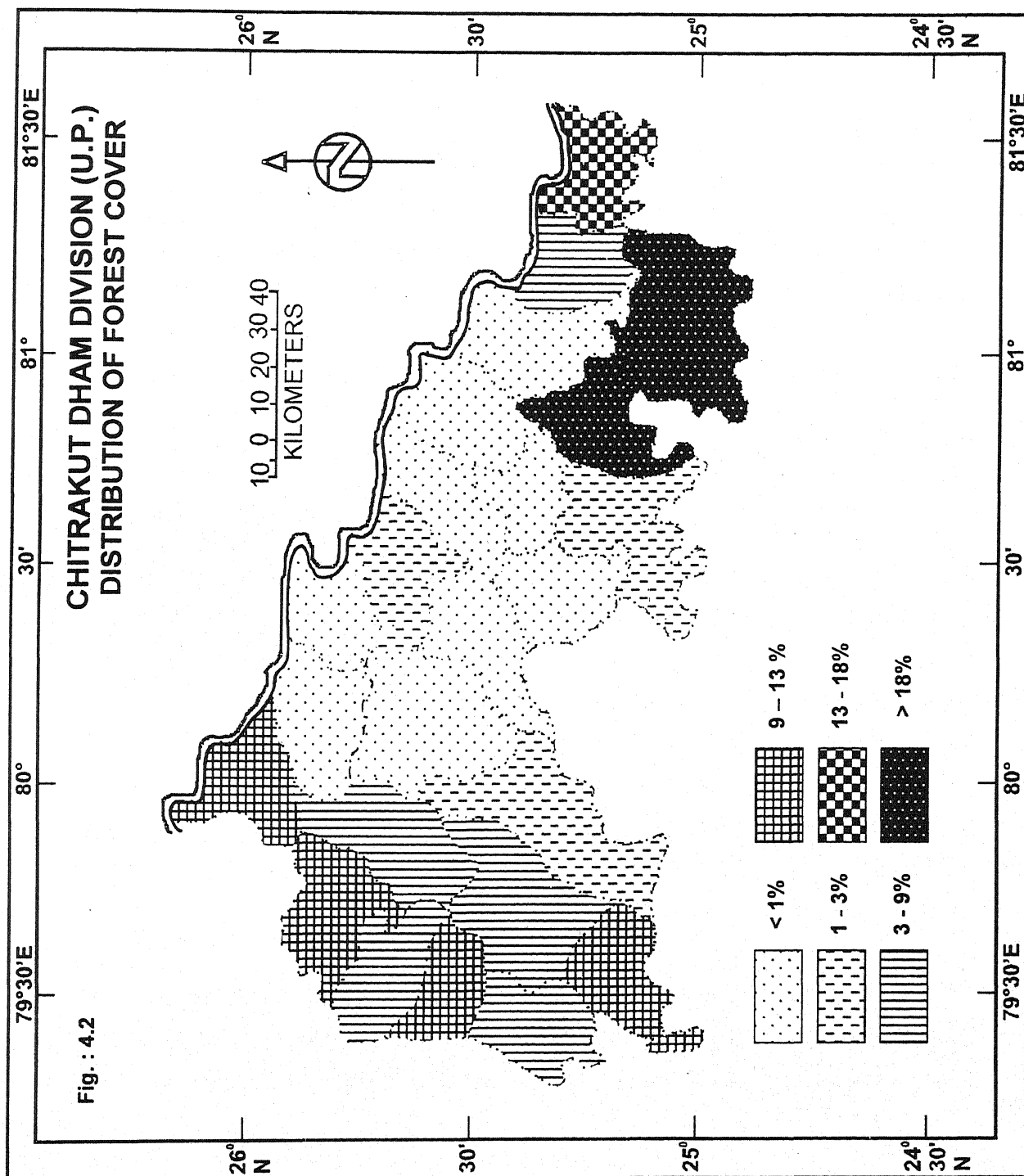
उपर्युक्त तालिका सं0 4–2 में देखने से स्पष्ट होता है कि चित्रकूट धाम मण्डल में वनों का आच्छादन का स्तर कम मध्यम तथा उच्च है। कर्वी तथा मानिकपुर को छोड़कर शेष विकासखण्डों में 17.56% से कम वनाच्छादन है। सर्वाधिक कर्वी विकासखण्ड 48.58% वनाच्छादित है। तथा मानिकपुर दूसरे स्थान पर 37.45% वनाच्छादित है। मऊ विकासखण्ड का वनाच्छादन की दृष्टि से तीसरा स्थान है। यहाँ 17.56% वनाच्छादन हैं राठ, सरीला, कुरारा, तथा जैतपुर विकासखण्ड में वनों के अन्तर्गत क्षेत्रफल का प्रतिशत 9 से 13% प्रतिशत के मध्य है। रामनगर, पनवाड़ी, चरखारी, मुस्करा गोहाण्ड विकासखण्डों का वनाच्छादन 3% से 9% के मध्य है। कबरई, तिंदवारी, तथा नरैनी विकासखण्डों के अन्तर्गत वनों का आच्छादन 1 से 3 प्रतिशत के मध्य है। सुमेरपुर, मौदहा, जसपुरा, बड़ोदर खुर्द, बबेरु, कमासिन, विसण्डा, महुवा, और पहाड़ी विकासखण्डों का वनाच्छादन 1% से भी कम है। कमासिन विकासखण्ड में वनक्षेत्रफल का प्रतिशत शून्य है (मानचित्र सं0 4–2) चित्रकूट धाम मण्डल में प्रतिव्यक्ति वन क्षेत्रफल मात्र 0.04 हेक्टेयर है। चित्रकूट जनपद में सर्वाधिक प्रतिव्यक्ति वन क्षेत्रफल 0.14 हेक्टेयर है। सबसे कम बांदा जनपद में 0.01 हेक्टेयर प्रतिव्यक्ति है। हमीरपुर तथा महोबा जनपद में प्रतिव्यक्ति वन क्षेत्रफल समान (0.03 हेक्टेयर) है।

चित्रकूट धाम मण्डल में कृषि क्षेत्र का विस्तार होने के कारण वन क्षेत्र लगातार सिकुड़ते जा रहे हैं। जिन क्षेत्रों में पथरीली एवं कृषि अयोग्य भूमि है उन्ही क्षेत्रों में वन का विस्तार है। मनुष्य वनों का सबसे बड़ा शत्रु है। अनियमित पातन स्कन्धकर्तन, शाखाकर्तन द्वारा मनुष्य वनों को अपार क्षति पहुँचा रहा हैं। ग्रामों के निकटवर्ती स्थानों पर कृषि करने के उद्देश्य से अतिक्रमण की समस्या भी बहुत ही गम्भीर है। वनों से होते हुए आने जाने वाले चरवाहे तथा स्थानीय निवासियों की असावधानी से अधिकतर अग्नि दुर्घटनाऐं हो जाती हैं। चरवाहे अच्छी चराई के लिए कोमल घास प्राप्त करने के लिए एवं महुवा एकत्र करने के लिए स्वंय भी आग लगा देते हैं। चित्रकूट धाम मण्डल अभी भी अत्यधिक पिछड़ा हुआ है तथा स्थानीय निवासी दीन– हीन हैं, अतएव जाड़ों में ईंधन एकत्र करने तथा घरेलू माँगों जैसे मकान, भवन, कृषि औजार, प्रकाष्ठ हेतु ग्रामीणों द्वारा अनियमित पातन के मामले भी अब ज्यादा होने लगे हैं। मानिकपुर, कर्वी, अर्तरा, मऊ में ईंधन के गढ्ठों की बिक्री को रोकना एक समस्या बन गई है। निर्माण कार्यों में पत्थर की आवश्यकता बढ़ जाने से पत्थर खदानों से वनों पर कुप्रभाव पड़ रहा है। पर्यावरण एवं पारिस्थितकीय सन्तुलन बनाये रखने के लिए वनों के इस प्रकार के विनाश को रोकना होगा।

वन–विभाग वनों के विनाश को रोकने का प्रयास कर रहा है। सरकार ने 1952 में राष्ट्रीय वन नीति की घोषणा की, जिसमें कार्यात्मक आधार पर संरक्षित वन तथा ग्रामीण वन के आधार पर वनों का वर्गीकरण करने का प्रस्ताव किया गया। देश की एक–तिहाई भूमि पर वन उगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया परन्तु अनेक कारणों से लक्ष्य प्राप्त न किया जा सका। इसलिए पुनः संशोधित राष्ट्रीय वन नीति 1988 में तैयार की गई। इसमें वनों के प्रतिरक्षण, संरक्षण और विकास पर विशेष बल दिया गया है। चित्रकूट धाम मण्डल को वनों के प्रतिरक्षण, संरक्षण ओर विकास के लिए 18 वन क्षेत्रों (Forest Ranges) में विभक्त किया गया है। प्रत्येक रेंज में विभिन्न पौधशालाओं (Nurreries) का विकास किया गया है। निम्नलिखित तालिका में प्रत्येक रेंज की नर्सरी तथा उनका क्षेत्रफल दर्शाया गया है:–

तालिका सं0 4.3

चित्रकूट धाम मण्डल की पौधशालाऐं **(Nurseries)** एवं उनका क्षेत्रफल 2002–03

क0सं0	रेन्ज	पौधशाला का नाम	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)
1.	हमीरपुर	बदनपुर	1.00
	,,	कनौटा	3.00
	,,	बेरी	1.00
2.	सुमेरपुर	कुछेछा	1.50
	,,	सुमेरपुर	1.50
	,,	विदोखर	1.20
3.	मौदहा	मौदहा	0.75
	,,	रमना	1.00
	,,	बिवॉर	0.05
4.	राठ	धनौरी	2.00
	,,	गुगरबारा	0.50
5.	सरीला	सरीला	0.50
	,,	जलालपुर	1.00
	,,	अमूंद	0.50
6.	महोबा	बीजानगर	1.50
	,,	बरा	2.00
	,,	बिल्खी	0.50
7.	चरखारी	टोला तालाब	1.00
	,,	रामनगर	0.50
	,,	दयालपुर	1.00
8.	जैतपुर (अजनर)	इन्द्रहटा	2.00
		कुलपहाड़	0.50
9.	पनवाड़ी	छतीसर	1.00
	,,	नकरा	0.50
	,,	बभौंरी	0.50
	,,	धरवार	0.50
	,,	सलारपुर (स्योडी)	0.5
10.	बांदा	बांदा परिसर	0.50

	,,	नवाब टैंक	5.00
	,,	नरैनी	1.00
	,,	सौंता	1.00
11.	बबेरु	कमासिन	1.50
		सया	1.50
12.	तिन्दवारी	ककनारे बाबा	1.5
		मूगुस	2.00
13.	पैलानी	भाथा	2.00
14.	कर्वी	रेन्ज परिसर कर्वी	1.00
		वन चेतना केन्द्र	1.0
		भरतपुर	0.50
15.	रैंपुरा	रैपुरा	2.00
	,,	नादिन	1.00
16.	बरगढ़	रेन्ज परिसर बरगढ़	1.00
		हटवा	0.50
17.	मानिकपुर	मंडपा	1.50
18	मारकुण्डी	बरदहा	2.0
योग – चित्रकूट धाम मण्डल			54.00

प्रशासनिक आधार पर वनों का विभाजन :– शासकीय आधार पर वनों को तीन भागों में विभक्त किया गया है:–

1. आरक्षित वन (Reserved Forests)
2. संरक्षित वन (Protected Forests)
3. अवर्गीकृत वन (Unclassified Forests)

1. **आरक्षित वन (Reserved Forests)** – ये वन सरकार द्वारा सुरक्षित घोषित किये गये हैं। सरकार स्वंय इन वनों की देखरेख करती है। इनमें से केवल वही वृक्ष काटे जाते हैं जो या तो सूख जाते हैं या सूखने के समीप होते हैं। इनमें पशु–चारण पर रोक है। चित्रकूट धाम मण्डल में कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 6.9% भाग(102621.904 हे0 क्षेत्र) में आरक्षित वन हैं सबसे अधिक चित्रकूट जनपद में 20.7% इसके बाद महोबा में 4.5% हमीरपुर में 2.9% तथा बांदा में 0.8% है।
2. **संरक्षित वन (Protected Forests)** :– ये वन भी सरकार द्वारा संरक्षित हैं। बिना सरकार की आज्ञा प्राप्त किए न तो इन वनों से लकड़ी ही काटी जा सकती है और न ही पशुओं को चराया जा सकता है। चित्रकूट धाम मण्डल में केवल बांदा जनपद में इस प्रकार के वन हैं। बांदा जनपद में कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 0.3% भाग में इस प्रकार के वन पाये जाते हैं, जो चित्रकूट धाम

मण्डल के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का मात्र 0.1% है। मुख्य संरक्षित वन 1032.330 हे0 क्षेत्रफल में हैं।

3. **अवर्गीकृत वन (Unclassified Forests)%&** इस प्रकार के वनों में लकड़ी काटने और पशु चराने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है। इन वनों को ठेकेदार सरकार से ठेके पर ले लेते हैं और वे आवश्यकातानुसार लकड़ी काटते रहते हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 1.8% भाग में इस प्रकार के वन है। चित्रकूट जनपद में कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 3.7% भाग में इस प्रकार के वन पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त हमीरपुर जनपद में 2.7% महोबा जनपद में 0.6% तथा बांदा जनपद में 0.2% भाग में इस प्रकार के वन पाये जाते है। चित्रकूट–धाम मण्डल में इस प्रकार के वनों का कुल क्षेत्रफल 27137.268 हे0 हैं। निम्नलिखित तालिका सं0 4–4 में प्रशासनिक वनों का वर्गीकरण तथा उसका क्षेत्रफल दर्शाया गया है:–

तालिका सं0 4.4

चित्रकूट धाम मण्डल में प्रशासनिक वनों का वर्गीकरण तथा उनके अन्तर्गत क्षेत्रफल

क0 सं0	वन का प्रकार	जनपद	क्षेत्रफल हेक्टेयर में	कुल भौगोलिक क्षेत्र का प्रतिशत
क–1	आरक्षित वन	हमीरपुर	11836.794	2.9
2–	,,	महोबा	13750.100	4.5
3–	,,	बांदा	3296..820	0.8
4–	,,	चित्रकूट	73738.190	20.7
	,,	मण्डल	102621.904	6.9
ख–1	संरक्षित वन	हमीरपुर	–	
2–	,,	महोबा	–	
3–	,,	बांदा	1032.330	0.3
4–	,,	चित्रकूट	–	
	,,	मण्डल	132.330	0.1
ग–1	अवर्गीकृत वन	हमीरपुर	11269.918	2.7
	,,	महोबा	1912.000	0.6
	,,	बांदा	881.280	0.2
	,,	चित्रकूट	13074.070	3.7
	,,	मण्डल	27137.268	1.8
सम्पूर्ण मण्डल–योग			130791.502	8.8

स्रोत :– वन प्रभाग कार्यालय जनपद–हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट–2002–03

उपर्युक्त आँकड़ों से स्पष्ट है कि चित्रकूट धाम मण्डल में प्रशासन्कि वनों का क्षेत्रफल अत्यन्त कम हैं। इमारती लकड़ियों एव वनोत्पाद की माँग निरन्तर बढ़ रही है और वनों की अत्याधिक कटाई से उसका क्षेत्रफल निरन्तर कम हो रहा है। ऐसे में कृषि वानिकी एवं सामाजिक वानिकी कार्यक्रम का महत्व उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। फारेस्ट सर्वे ऑफ इण्डिया के अनुसार देश में वन क्षेत्र प्रतिवर्ष घट रहा है।

एशियन डेवलपमैंट बैंक ने अपने अध्ययन के आधार पर चेतावनी दी है कि यदि एशिया के उष्ण कटिबन्धीय देश (इनमें भारत भी सम्मिलित है) अपने वनों का इसी प्रकार विनाश करते रहेंगे तो अगले 20 वर्ष में उनके टिम्बर भण्डार समाप्त हो जायेंगे। हाल ही में कई देशों में किए गए अध्ययनों की रिपोर्ट में उष्ण कटिबन्धीय देशों के निर्वनीकरण के ऐसे भयंकर परिणामों की सम्भावना व्यक्त की गयी है जिनके विषय में अभी तक सोंचा नहीं गया।

अतः इस विभीषका से बचने के लिए सामाजिक एवं कृषि वानिकी कार्यक्रम के अर्न्तगत वृक्षारोपण किया जाना चाहिये। इसके माध्यम से बंजर भूमि, खाली पड़ी भूमि, सड़कों के किनार, रेल लाइनों के किनारे,नहरों के किनारे तथा गाँवों की अनुपयोगी भूमि में लगाये जायें जिससे ग्रामीण जनता के लिए ईंधन की लकड़ी, चारा तथा खेती में काम आने वाली लकड़ी की आवश्यकता की पूर्ति की जा सके।

4(iii) सामाजिक वानिकी कार्यक्रम :– इस योजना का प्रथम चरण (वर्ष 1979–80 से 84–85 तक) अन्तर्राष्ट्रीय विकास एजेन्सी की सहायता से प्रदेश के 40 जनपदों में सफलतापूर्वक चलाया गया था। द्वितीय चरण में (वर्ष 1985–86 से 1992–93 तक) प्रदेश के समस्त मैदानी जनपदों में अर्न्तराष्ट्रीय विकास एजेन्सी एवं यू.एस.डी.ए. की सहायता से यह प्रायोजना संचालित की गयी जिसमें प्रत्येक मैदानी जनपद स्तर पर एक प्रभागीय कार्यालय तथा ब्लाक स्तर पर एक राजि (रेंज)कार्यालय स्थापित किये गये । वर्ष 92–93 के पश्चात् बाह्य स्तर पर सहायता अनुपलब्ध होने के कारण इसका वित्त पोषण प्रदेश सरकार द्वारा किया जा रहा है। सामाजिक वानिकी योजना ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनता उन्मूलन में अत्यधिक सफल सिद्ध हो सकती है। दूसरे भारतीय वन नीति के अनुसार कुल भूमि के 33.3% भाग पर वन होने चाहिए जबकि चित्रकूट धाम मण्डल में भौगोलिक क्षेत्रफल के 8.96% क्षेत्रफल पर वन हैं। अब वनो के लिए कोई भी अतिरिक्त भूमि उपलब्ध नहीं है। अतः सन्तुलित पर्यावरण तथा ईंधन की लकड़ी के लिए सामाजिक वानिकी एकमात्र उपाय है।

सामाजिक वानिकी के उद्देश्यों में ग्रामीण क्षेत्रों में जलाऊ लकड़ी की पूर्ति तथा गोबर को खाद रुप में प्रयोग करने को प्रोत्साहन करना था क्योंकि गोबर के खाद के प्रयोग से जहाँ कृषि उत्पादन बढ़ाया जा सकता है वहीं दूसरी ओर रासायनिक खादों के अन्धाधुन्ध प्रयोग को रोका जा सकता है। इसके अतिरिक्त छोटी इमारतों हेतु लकडी की पूर्ति चारे की व्यवस्था, खेतों को वायु के प्रकोप से बचाना था। इस योजना द्वारा सबसे बड़ा लाभ बेकार भूमि का समुचित प्रयोग भूमि संरक्षण व जल संरक्षण, भारी वर्षा तथा बाढ़ों से होने वाली हानि से बचाना तथा पर्यावरण को शुद्व करने में सहायता प्रदान करना है।

चित्रकूट धाम मण्डल में 94873 हेक्टेयर बंजर भूमि है जिसमें 41707 हेक्टेयर कृषि योग्य बंजर भूमि तथा 53166 हेक्टेयर भूमि कृषि के अयोग्य भूमि है जिसमें सामाजिक वानिकी के अर्न्तगत वृक्षारोपण किया जा सकता है।

सामाजिक वानिकी में (1) कृषि व फार्म वानिकी (2) परिवहन मार्ग_वानिकी (3) प्रसार वानिकी (4) पुनः वृक्षारोपण वानिकी (5) मनोंरंजन वानिकी सम्मिलित है। (1) कृषि वानिकी के अर्न्तगत खेत की मेड़ों तथा कृषि भूमि पर वृक्षारोपण किया जाता है। चित्रकूट धाम मण्डल में कृषक सर्वाधिक यूकेलिप्टस के वृक्ष मेंड़ों पर लगा रहे हैं। (2) परिवहन मार्ग वानिकी में – सड़कों तथा रेलमार्गों के किनारे वृक्ष

लगाये जाते हैं। (3) प्रसार वानिकी का उद्देश्य गाँव समाज की भूमि तथा बंजर भूमि पर मिश्रित वन और चारागाह चारा देने वाले पेंड़–पौधे तथा ईंधन की लकड़ी वाले वृक्ष लगाना है। (4) पुनः वृक्षारोपण वानिकी के अर्न्तगत नष्ट हुए वनों में पुनः वृक्ष लगाकर वनों का प्रसार किया जाता है। (5) मनोरंजन वानिकी के अर्न्तगत नगरों के निकटवर्ती क्षेत्रों में वन लगाकर हरित पेटी (Green Belt) तैयार की जाती है, जहाँ नगरीय जनसंख्या के मनोंरंजन हेतु पर्यटन स्थल निर्मित किये जाते हैं।

सामाजिक वानिकी जनसाधारण को यह शिक्षा देती है कि वे अपनी कृषि भूमि, नदी, नहर तथा नाले के किनारें, सड़क तथा रेलवे लाइन के किनारे ग्राम की सामान्य तथा अनुपयोगी भूमि तथा ग्राम के चारों ओर बाजार तथा सार्वजनिक स्थानों पर किस प्रजाति के वृक्ष लगायें और उनका किस प्रकार संरक्षण करें? इससे यह आशय है कि जिस भूमि को अभी तक अनुपयोगी समझा जाता था, उसका उचित उपयोग किया जाय। इससे ग्राम वासियों को चारा, घास तथा इमारती लकड़ी उपलब्ध हो सकेगी।

'राष्ट्रीय कृषि आयोग' के अनुसार सामाजिक वानिकी के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं:–

(1) ग्रामीण क्षेत्रों में गोबर की जगह लकड़ी उपलब्ध कराना।
(2) ग्रामीणों को इमारती लकड़ी उपलब्ध कराना।
(3) पशुओं क लिए चारा उपलब्ध कराना।
(4) वायु से कृषि भूमि की रक्षा करना तथा
(5) मनोंरंजन सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति करना।

सामाजिक वानिकी का उद्देश्य यह भी है कि "वनों के प्रबन्ध के लिए लोगों को सहभागी बनाना"। (People's participation in the management of forestry.)

विभागीय सूत्रों के अनुसार चित्रकूट धाम मण्डल में प्रत्येक जनपद में वन विभाग एक वर्ष में औसतन एक हजार हेक्टेयर वन भूमि बढ़ा पाता है। यह गति अत्यन्त मन्द है। इस गति से वनों का निर्धारित मानक पूरा करने में काफी समय लग जाएगा। वन विशेषज्ञों का मानना है कि बंजर भूमि, ऊसर भूमि व अन्य बंजर भूमि को विकसित करके वृक्षारोंपण के लिए तैयार किया जा सकता है। यदि वन विभाग शासन निर्देशों का ईमानदारी से पालन करें तो इन अनुपजाऊ भूमि को हरा–भरा कर वनों के मानक को 12% तक पहुँचाया जा सकता है। दूसरी ओर बांदा और चित्रकूट जिलों में जानवरों की बहुतायत है, जबकि चारागाह बांदा जनपद में 400 हेक्टेयर तथा चित्रकूट जनपद में मात्र 59 हेक्टेयर में है। इस कारण यहाँ चारागाह को बढ़ाया जाना नितान्त आवश्यक है। वन विभाग के सूत्रों के अनुसार बांदा एवं चित्रकूट में इतना वृक्षारोपण कागजों में है कि एक इंच भी क्षेत्रफल खाली नहीं है। इसी प्रकार हमीरपुर जिले में 5.65% तथा महोबा में 5.15% वन भूमि का विस्तार है। जबकि शासन ने मैदानी क्षेत्र के लिए वनभूमि 21% होने का मानक निर्धारण किया है। इस प्रकार चित्रकूट धाम मण्डल में वनों का निर्धारण मात्रक काफी कम है। तलिका सं0 4.5 में चित्रकूट धाम मण्डल में 2002–03 में वनभूमि में किये वृक्षारोपण कार्यक्रम का विवरण स्पष्ट किया गया है–

कृषि वानिकी – (Agriculture or Farm Forestry)

कृषि वानिकी दो शब्द कृषि एवं वन से मिलकर बना है। इसके अर्न्तगत कृषि फसलें एवं वृक्ष साथ–साथ उगाए जाते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य वनों पर निर्भरता कम करना है और किसानों को आर्थिक लाभ देना है। कृषि वानिकी कार्यक्रम चलाने हेतु वन विभाग और कुछ निजी संस्थाओं द्वारा सहयोग दिया जा रहा है। कृषि वानिकी से निम्नलिखित लाभ हैः–

1. कृषकों की आय में वृद्धि
2. कृषकों की निजी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ईंधन चारा व प्रकाष्ठ की उपलब्धता
3. भूमि की उत्पादकता बनाये रखना
4. बड़ी रकम की एक मुश्त वापसी
5. प्राकृतिक विपदाओं अथवा दैनिक प्रकोपों से उत्पन्न स्थितियों में बीमा सुविधा प्रदान करना।
6. शुद्ध पर्यावरण के निर्माण में सहयोग करना।
7. पेड़ों की रक्षा कतारों से वायु की तेज गति को रोकना।

कृषि वानिकी के अर्न्तगत पेंड़ लगाने का तात्पर्य दीर्घसूत्रीय विनियोग और दीर्घसूत्रीय आय से होता है।

कृषि वानिकी के द्वारा किसान फसल के साथ–साथ मेंड़ एवं खेती के अयोग्य भूमि पर वृक्ष लगाकर अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। कृषि वानिकी से एक ओर जहाँ वृक्ष नकदी फसलों के साथ उगाये जाने पर ये किसान का "सावधि जमा खाता" या "हुण्डी" साबित होते हैं वहीं दूसरी ओर ईंधन प्राप्त करने के लिए वनों का सहारा लेने की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि ईंधन व लघु प्रकाष्ठ वृक्ष के जीवन काल में ही मिल जाता है। कृषि वानिकी को अपनाने से हमारे देश में अनाज, ऊर्जा, पशु–सुधार एवं जलवायु सम्बन्धी आदि सभी समस्याओं का निदान हो सकता है। इससें देश की बढ़ती हुई आबादी की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति होगी ही, साथ–साथ उत्पादन तथा रोजगार में बढ़ोत्तरी होगी।

कृषि वानिकी के लिए वृक्षों की प्रजाति चयन के समय कृषकों को अपनी मुख्य आवश्यकता को ध्याान मे रखना आवश्यक है। इसके अलावा कृषकों को वृक्षों के बहुआयामी उपयोग से परिचित होना भी आवश्यक है। इन सब बातों को ध्यान में रखकर वृक्षों का चयन करना चाहिए। इसके अलावा निम्न बातों का ध्यान भी रखना चाहिएः–

(I) चुनी हुई प्रजाति शीघ्र बढ़ने वाली हो (II) चुनी हुई प्रजाति बहुउद्देशीय हो
(III) फसल के लिए प्रकाश की उपलब्धता बनी रहे।

चित्रकूट धाम मण्डल में कृषि–वानिकी के लिए यूकेलिप्टस, शीशम, सागौन, आम, आँवला, आदि वृक्ष काफी लाभदायक साबित हुए हैं।

2002–03 में हमीरपुर जनपद में कृषि वानिकी के अर्न्तगत 840 हेक्टेयर भूमि में दस लाख पौध लगाये गये। कृषि वानिकी के अर्न्तगत खेतों, मेंड़ों, परती, ऊसर,व बीहड़, भूमि पर वृक्षारोपण किया गया। जनपद में प्रतिवर्ष कई लाख पौध लगाकर वृक्षारोपड़ कार्य किया जा रहा है। फिर भी वनों की हालत दयनीय है। महोबा जनपद में कृषि वानिकी के अर्न्तगत 2002–03 में लगभग 725 हेक्टेयर भूमि में लगभग नौ लाख पौध लगाये गये जिसमें यूकूलिप्टस पौधों की अधिकता थी।

बांदा जनपद में कृषि वानिकी के अर्न्तगत 689 हेक्टेयर भूमि में लगभग 8.5 लाख वृक्ष लगाये गये। यहाँ पर कृषि वानिकी के अर्न्तगत खेतों की मेड़ों, बीहड़, ऊसर तथा खाली पड़ी भूमि पर

वृक्षारोपण कार्य किया गया। चित्रकूट जनपद में 2001–03 में कृषि वानिकी के अर्न्तगत 947 हेक्टेयर भूमि में दस लाख से अधिक पौध लगाये गये। यहाँ पर कृषि वानिकी कार्यक्रम चलाने हेतु वन विभाग और कुछ निजी संस्थाओं द्वारा सहयोग दिया जा रहा है। चित्रकूट धाम मण्डल में बदनपुर (हमीरपुर) तथा नवाब टैंक बांदा में *'वन चेतना केन्द्र'* स्थापित किये गये हैं, जो कृषकों को कृषि वानिकी हेतु प्रोत्साहित एवं आकर्षित करते हैं।

परिवहन–मार्ग वानिकी :–

परिवहन मार्ग वानिकी में सड़कों तथा रेलमार्गों के किनारे वृक्षारोपण को सम्मिलित किया जाता है। परिवहन मार्ग वानिकी में अधिकाशतः वृक्षारोपण सड़कों के किनारे ही हुआ है। कहीं–कहीं रेलवेलाइनों के किनारे भी वृक्षारोपण हुआ है।

(क) सड़कों के किनारे वृक्षारोपण :– वैदिक काल से ही सड़कों के किनारे वृक्ष लगाने की परम्परा रही हैं। सड़कों के किनारे वृक्ष यात्रियों को छाया व शरण प्रदान करने के उद्देश्य से लगाये जाते हैं। सड़कों के किनारे वृक्षारोपण का उद्देश्यआर्थिक लाभ नहीं बल्कि सुख–सुविधा प्रदान करना है। राष्ट्रीय कृषि आयोग ने सड़कों के किनारे अधिक तेजी से बढ़ने वाले वृक्षों के वृक्षारोपण पर सिफारिश की थी तथा इस बात पर जोर दिया था कि सड़कों के किनारे का वृक्षारोपण आर्थिक विनियोग के उद्देश्य से किया जाय। यह सिफारिश ईंधन तथा इमारती लकड़ी के अभाव को दृष्टिगत करते हुए की गयी थी तथा प्राकृतिक वनों को बेहतर स्थिति में रखना भी इसका उद्देश्य था जिससे सड़क वृक्षावली के प्रबन्धन में परिवर्तन आया। वर्तमान स्थितियों में सड़क परिवहन मार्ग वानिकी के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:–

1. यात्रियों को छाया की सुविधा का प्रबन्ध
2. समाज द्वारा अपेक्षित अधिक से अधिक वृक्षों का उत्पादन
3. सड़कों के किनारे को स्थायित्व देना तथा बंजर भूमि के कटाव को रोकना,
4. स्थानीय लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति के उद्देश्य से अधिकाधिक उत्पादन,
5. पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार एवं
6. सौन्दर्य आवर्धन तथा भूदृश्यावली को संरक्षित करना।

सड़क के किनारे वृक्षारोपण ध्वनि प्रदूषण को कम करता है। यातायात से राजमार्गों में ध्वनि तीव्रता बढ़ती हैं जो कष्टदायी होती है। गाड़ियों के भोंपू भी ध्वनि प्रदूषण करते हैं, जो सड़क के किनारे रहने वालों के स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद होता है। 50 डेसीबेल के ऊपर कष्टप्रद तथा 130 से 140 डेसीबेल पर पीड़ा तथा सिरदर्द होता है। अधिक तेज ध्वनि होने पर मनुष्य में सुनने की शक्ति का हास होता है, नींद ठीक से नहीं आती और अनेक रोग हो जाते हैं। वृक्ष तथा झाड़ियाँ शोर कम करने के लिए प्रभावशाली माध्यम हैं।

सड़क के किनारे वृक्षारोपण की डिजाइन सन्तुलित पंक्ति, असन्तुलित पंक्ति, असन्तुलित अवरुद्ध पंक्ति, छिटपुट (यत्रतत्र) वृक्षारोपण तथा उद्यानरुपी वृक्षारोपण भूमि की बनाब्वट तथा मिट्टी की प्रकृति के आधार पर हो सकती है। वृक्षारोपण की प्रथम दो डिजाइन अधिक प्रचलित हैं। सन्तुलित पंक्ति पद्धति से निरन्तर हरी पट्टी तैयार होती है जो कि गणवेशरुप होती है। यूकेलिप्टस वृक्षवीथी सौन्दर्य के लिए वांछनीय नहीं है।

प्रजाति का चुनाव जलवायु, स्थान विशेष की परिस्थिति, वृक्षारोपण का उद्देश्य तथा क्षतिप्रद कारकों को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। पंक्तिबद्ध वृक्षारोपण मुख्यतः छाया के अतिरिक्त निम्नलिखित आवश्यकताओं की पूर्ति करें।[10]

I. वृक्षों की प्रजाति सदाबहार प्रकृति की हो, साथ ही छत्राकार या अर्धछत्राकार हो जैसे – नीम, महुआ, इमली, आम आदि।

II. ये प्रजातियां खुले क्षेत्र में उग सके और सड़कों के निर्माण के समय आये हुए मृदा परिवर्तन को बर्दाश्त कर सकें।

III. ये प्रजातियाँ काफी कठोर हों, दीर्घ जीवी हों, अनावृष्टि तथा सूखा को बर्दाश्त कर सकती हों, शीघ्र उगने वाली हों और आँधी सह सकती हों, बीमारियों और कीटाणुओं से नष्ट न होती हों।

IV. ये प्रजातियाँ कम से कम दो तीन मीटर तक सीधा तना तैयार कर सकती हों तब छत्र धारण करती हों।

V. चयनित प्रजातियों में सामूहिक सौन्दर्य हो।

VI. यदि सम्भव हो तो, प्रजातियाँ अत्यधिक आर्थिक महत्व की हों।

फल वाले वृक्ष सामान्यतः सड़कों के किनारे न लगाऐं जायें लेकिन आम, इमली, सिजीजियम क्यूमिनी जो अच्छी सुन्दर वृक्षवीथी बनाते हैं लगाये जा सकते है।

1994–95 से 2003–04 तक चित्रकूट धाम मण्डल में 345.33 हेक्टेयर भूमि में सड़क परिवहन मार्ग वानिकी कार्यक्रम के अर्न्तगत वृक्षारोपण किया गया। हमीरपुर में 98.0 हेक्टेयर, महोबा में 89.0 हेक्टेयर, बांदा में 72.33 हेक्टेयर तथा चित्रकूट जनपद में 86.00 हेक्टेयर भूमि में वृक्षारोपण कार्य हुआ।

(ख) रेलवे लाइन के किनारे वृक्षारोपण :– इसके अर्न्तगत वृक्षारोपण कम हुआ है। चूंकि ईंधन और इमारती लकड़ी ग्रामीण क्षेत्रों में कम होने लगी है, इसलिए सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है। रेलवे विभाग ने रेलवे लाइन के किनारे वृक्षारोपण का प्रयास किया है लेकिन इस विभाग के पास पौधों के विशेषज्ञ कम होने के कारण प्रभावशाली सफलता नहीं मिली है। इसलिए वन–विभाग को स्थानान्तरित कर दिया गया है। रेलवे लाइन के किनारे वृक्षारोपण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

1. रेलवेलाइन के कटाव को रोककर उनमें स्थायित्व लाना।
2. स्थानीय लोगों के लिए आवश्यक उत्पादन देने वाले वृक्षों के सम्बर्धन में भूमि का सदुपयोग
3. भूमि का अतिक्रमण रोकना
4. आकस्मिक शरण पट्टियाँ बनाना, सरकती हुई बलुई मिट्टी को रोकना।

रेलवे लाइन के किनारें वृक्षारोपण में रेलपथ सुलभ भूमि, टेलीफोन तथा विद्युत लाइनों का ध्यान रखना चाहिए। रेलपथ की सुरक्षा की दृष्टि से वृक्षों की प्रथम पंक्ति रेलपथ के करीब नहीं होना चाहिए। प्रथम पंक्ति रेलपथ के मध्य से लगभग 7.5 मीटर की दूरी पर होना चाहिए। प्रथम पंक्ति के वृक्षों की ऊँचाई 7 मीटर से अधिक नहीं होना चाहिए। जिससे आँधी तूफान में वृक्ष रेलमार्ग रोक करके दुर्घटना न कर दें तथा वृक्ष इस तरह के न होने चाहिए कि रेलपथ दिखाई न दे। टेलीफोन लाइनों के नीचे कोई वृक्षारोपण नहीं करना चाहिए।

प्रजातियों का चयन जलवायु एवं क्षेत्रीय उत्पाद क्षमता को दृष्टिगत करते हुए किया जाता है। सड़कों के किनारे लगे हुए वृक्ष छायादार हो सकते हैं लेकिन रेलपथ के किनारे छायादार वृक्ष होना आवश्यक नहीं है। इसलिए आग जैसी घटनाओं को सह सकने वाले वृक्ष लगाने चाहिए।

चित्रकूट धाम मण्डल में रेलवे लाइन के किनारे 1994–95 से 2003–04 तक 86.53 हेक्टेयर में वृक्षारोपण का कार्य हुआ है। हमीरपुर जनपद में 20.00 हेक्टेयर, महोबा जनपद में 16.0 हेक्टेयर, बांदा में जनपद में में 30.00 हेक्टेयर तथा चित्रकूट जनपद में 20.53 हेक्टेयर भूमि में वृक्षारोपण कार्यकिया गया।

तालिका सं0 4.5

चित्रकूट धाम मण्डल में सामाजिक वानिकी की उपलब्धियाँ

(1994–95 से 2003–04 तक) हेक्टेयर में

	हमीरपुर	महोबा	बांदा	चित्रकूट	योग (हे0 में)
वनभूमि	3063.00	1642.00	1521.00	3684.00	9910.00
सड़क के किनारे	98.0	89.00	72.33	86.00	345.33
रेलवे लाइन के किनारे	20.00	16.00	30.00	20.53	86.53
ग्राम समाज–भूमि	629.00	340.00	114.25	145.00	1228.25
नगरभूमि	26.00	38.00	41.10	21.00	126.10

स्रोत :– कार्यालय, वन प्रभाग, हमीरपुर, महोबा, बांदा तथा चित्रकूट

सामाजिक वानिकी स्थानीय लोगों को लाभ प्रदान करने के लिए एक कार्यक्रम है। वन विभाग सड़क एवं रेललाइन के किनारे और अन्य खाली पड़ी भूमि पर वनीकरण कार्यक्रम पर प्रतिवर्ष धन व्यय कर रहा है।

निम्नलिखित तालिका में सामाजिक वानिकी (जिला योजना) के अर्न्तगत वित्तीय वर्ष 1999–2002 से 2002–03 तक व्यय की गयी धनराशि का विवरण दर्शाया गया हैः–

तालिका सं0 4.6

चित्रकूट धाम मण्डल में सामाजिक वानिकी के अर्न्तगत व्यय की गयी धनराशि का विवरण

(लाख रुपयों में)

वित्तीय वर्ष	हमीरपुर	महोबा	बांदा	चित्रकूट	योग
1999–2000	23.94	17.60	11.80	10.90	64.24
2000–01	45.48	55.63	49.43	22.17	172.71
2001–02	61.00	44.17	82.00	40.11	227.28
2002–03	44.90	26.10	44.20	24.80	140.00

स्रोतः कार्यालय, जनपदीय वन प्रभाग,

4(IV) मृदा तथा पर्यावरण के अनुकूल वृक्ष प्रजातियों का चयन :–

मृदा के अनुकूल वृक्ष प्रजातियों का चयन :–

1981 में सफल वनीकरण के क्षेत्रों को सुनिश्चित करने के लिए सर्वेक्षण किया गया था। प्रस्तुत सर्वेक्षण में विभिन्न प्रजातियों के पौधों के अनुकूल मृदा सर्वेक्षण भी हुआ था। मृदा के अनुरुप वृक्ष प्रजातियों का चयन निम्नलिखित हैं :–

1. बलुई मिट्टी – शीशम, खैर, सेमल, सागौन, सिरस, अरु और कंजा।
2. बलुई दोमट मृदा – सागौन एवं कठ सागौन।

3. दोमट मृदा – शीशम, खैर, सेमल, सिरस, बहेड़ा, सहजन, यूकेलिप्टस, आम, जामुन, आँवला और कचनार

4. चिकनी मृदा – बबूल, अर्जुन, नीम, बबूल, यूकेलिप्टस आदि।

5. मटियारी मृदा – बबूल, सेमल, कंजू, हल्दू आदि।

6. मटियारी और मटियारी दोमट – बबूल, जामुन, नीम, सागौन और कठ सागौन।

7. शुष्क मृदा – अकेसिया, टरटिलिस, आँवला, कंजी, महुआ, कठसागौन, बबूल, अरु, कालासिरस, नीम, इमली आदि।

इसके अतिरिक्त भूमि की स्थिति के अनुरुप उपयुक्त प्रजातियों का चयन करना आवश्यक होता है:–

(i) पहाड़ी भागों के चट्टानी क्षेत्रों में वृक्षारोपण न किया जाय।

(ii) मैदान, लहरदार भूमि, एवं पठारी क्षेत्रों में निम्न प्रजातियाँ लगायी जायें–

(क) बाँस, नीम, खैर, महुआ, सलई

(ख) आँवला, बहेड़ा, सागौन

(ग) शीशम तथा ढ़ाक

(iii) कगारी एवं ढ़ालू भूमि पर नीम तथा खैर सर्वाधिक उपयुक्त होते हैं। मन्द ढाल पर खैर, नीम, शीशम, सागौन, साल, काला सिरस लगाये जायें ।

(iv) जल अवरुद्व क्षेत्रों में जामुन, अर्जुन, आँवला आदि लगाये जायें।

(v) जलोढ़ निक्षेप के क्षेत्रों में सागौन, शीशम, काला सिरस, खैर, नीम तथा महुआ लगाये जा सकते हैं।

(vi) भूमि संरक्षण हेतु– बाइटेक्स, निगन्डू, डडोनिया, जंगल जलेबी आदि लगाई जाय।

वृक्ष प्रजातियों का चयन मृदा के साथ–साथ उपयोगिता को ध्यान में रखकर किया जाय। जैसे–

(a) ईंधन – बबूल, कंजी, ढाक, फराश, काला सिरस, सुबबूल, इमली आदि।

(b) चारा पत्ती – अरु, बबूल, नीम, सुबबूल, बेर, कचनार, लसोड़ा, काला सिरस।

(c) लघु प्रकाष्ठ – शीशम, जामुन, सिरस, नीम, बबूल, आम, यूकेलिप्टस, सागौन।

(d) चमड़ा रंगाई हेतु – अर्जुन, बबूल, आवँला, बहेड़ा आदि।

(e) आर्ट पेपर की लुग्दी हेतु – सहजन

(f) रेशम के कीड़े पालने हेतु – शहतूत, अर्जुन

(g) कागज की लुग्दी तथा टोकरियाँ बनाने हेतु – बाँस

(h) तेल बीज – नीम, महुआ, सहजन

(i) खाद्य फल–फूल – आँवला, आम, इमली, बेल, महुआ (फूल) कटहल आदि।

पर्यावरण के अनुकूल वृक्ष प्रजातियों का चयन :–

प्रकृति एवं मानव के प्रगाढ़ सम्बन्धों में हरे पेड़ पौधों का प्रकृति में क्या योगदान है?– यह तब और स्पष्ट हो जाता है जब हम पौधों और जन्तुओं (मानव सहित) के बीच ऊर्जा सम्बन्ध को ध्यान में रखे। आधुनिक युग में प्रदूषित हवा को शुद्ध करने में सहायक होना इन पौधों को महत्वपूर्ण बना देता है। पौधों में ऍरोसोल, धुँआ, धूल, परागकरण, रेडियो धर्मिता युक्त तत्वों व प्रदूषित गैसों (सल्फर डाइआक्साइड, नाइट्रोजन के आक्साइड, ओजोन व पैन इत्यादि) को कम करने की क्षमता सर्वविदित है।

पौधों में प्रदूषित गैसों को अवशोषित कर उनको रासायनिक क्रियाओं द्वारा कम नुकसान पहुँचाने वाले घटकों में बदलने की एक विशेष क्षमता होती है जिससे वायुगुणवत्ता सही बनी रहती है तथा पौधे वायु से सल्फर डाइऑक्साइड (जो विभिन्न कारखानों, वाहनों व कोयला जलाने से बड़ी मात्रा में उत्पन्न होती है) अवशोषित कर ऑक्सीजन की क्रिया द्वारा उसको कम जहरीले 'सल्फेट' में बदल देते हैं। यह ध्यान देने की बात है कि वायु में इस गैस की सान्द्रता एक निश्चित अनुपात से ज्यादा होती है तो पौधे इस क्रिया में अपने को असहाय पाते हैं और इनको नुकसान पहुँचता है। कुछ पौधों में प्रदूषित तत्वों को ग्रहण कर अपने में समायोजित करने की क्षमता अन्य पौधों से ज्यादा होती है। इन पौधों को ज्यादा प्रदूषित क्षेत्रों में रखे जाने पर भी उनमें विपरीत लक्षण कम ही दिखाई पड़ते हैं। ये पौधे 'अवरोधक या कठोर' श्रेणी के होते हैं। ये गुण उनमें विभिन्न बाहरी व आन्तरिक संरचना, कामिकी व अनुवांशिक संरचना इत्यादि के कारण होते हैं। 'अवशोषक पौधे' विभिन्न प्रजातियों का ऐसा समूह है जो शहरी व औद्योगिक क्षेत्रों में शुद्ध वायु क्षेत्र (लंगस्पेस) व हरत संरक्षित पट्टी (ग्रीन शेल्टर बेल्ट) के विकास में सहयोगी होते हैं। इन पौधों के सम्पर्क में जो विषैले घटक (खास तौर पर गैसें) आते हैं उनको ये अपने में अवशोषित कर लेते हैं जिससे वायु में इनकी सान्द्रता कम हो जाती है। वास्तव में *पौधे वातावरण में 'जैविक छन्ने' (बायोलॉजिकल फिल्टर) का कार्य करते हैं।* वैज्ञानिक परीक्षणों से पता चलता है कि जिन वृक्षों की पत्तियों का पी0एच0 क्लोरोफिल' एस्कोर्बिक अम्ल व तुलनात्मक जल आर्द्रता का प्रतिशत ज्यादा होता है प्रदूषित क्षेत्रों में ज्यादा अवरोधी सिद्ध होती हैं। ध्यान रखने योग्य बात यह है कि उन्ही पौधों का चयन ज्यादा उपयोगी होता है जिनको काटने या जला दिए जाने पर भी उनमें नीचे से पुर्नजीवित होने की क्षमता ज्यादा हो।

पर्यावरण के अनुकूल वृक्ष प्रजातियों के चयन में ध्यान देने की योग्य तथ्य यह है कि जिन क्षेत्रों में वायु प्रदूषण की मात्रा ज्यादा होती है वहाँ फैलती हुई आच्छादन वाले प्रतिरोधक पौधे जैसे प्रोसोफिस, कैसिया, नेरियम व बोंगेनबेलिया आदि ज्यादा उपयोगी होते हैं।

मध्य प्रदूषित क्षेत्रों के लिए सुबबूल, नीम, पाकड़, कदम्ब, व महुआ प्रजातियाँ ज्यादा पसंद की जाती हैं। कम प्रदूषित क्षेत्रों के लिए कम शाखा वाले लम्बे वृक्ष जैसे यूकेलिप्टस, शीशम, अशोक, जंगल, जलेबी व अर्जुन प्रजातियाँ ज्यादा उपयुक्त पाई गई है। ये पेड़ प्रदूषित कणों व गैसों को अवशोषित करने के साथ हवा की गति को भी कम कर देते हैं। पौधों को प्वाइंट स्रोत से एक केन्द्रीयभूत गोलों में उनकी ऊँचाई, आच्छादन व अवरोधक क्षमता को ध्यान में रखकर विशेषज्ञ की सलाह से लगाना चाहिए। इनमें लम्बे वृक्ष बाहर की तरफ व छोटे पौधे अन्दर के हिस्से में होने चाहिए।

सड़कों के अगल बगल प्रदूषण को रोकने के लिए उचित पौधों का रोपण आवश्यक है। इन पौधों में गोलाकार आच्छादन वाले वृक्ष सड़क के अन्दर की तरफ और शंक्वाकार आच्छादन वाले वृक्ष बाहर की तरफ लाभदायक होते हैं। इन पेड़ों से वायु के साथ–साथ ध्वनि प्रदूषण की भी रोकथाम होती है। इसके लिए अशोक, सुबबूल, जंगल जलेबी, शीशम, कचनार, पाकड़, बरगद, पीपल, सिरस, इमली, सावनी, नीम, व अर्जुन के पौधे मुख्य रुप से उपयोगी हैं।

शहरों के मध्य एक गर्म क्षेत्र बनता है, जहाँ हल्की व शुष्क वायु ऊपर जाती है और भारी प्रदूषित वायु बगल से उसका स्थान ले लेती है। इसलिए शहरों की पारिस्थितिक अनुकूल विकास योजना में शहर के मध्य एक विशाल खुला स्थान जरुर होना चाहिए जिसमें प्रदूषण–रोधी पौधों की विभिन्न प्रजातियों को होना चाहिए। यह स्थान शुद्ध वायु क्षेत्र (लंगस्पेस) कहा जाता है जहाँ मनुष्यों को

हरे पेंड़ पौधों व सुन्दर फूलों के बीच न सिर्फ शुद्ध हवा मिलती है वरन् एक विशेष मानसिक शान्ति का अनुभव होता है। ये वृक्ष विभिन्न तरह के प्रदूषणों को दूर करते हैं और साथ ही अपनी प्रकाश–संश्लेषण प्रकिया द्वारा पर्यावरण में भारी मात्रा में एकत्रित कार्बन डाइऑक्साइड को अपने में समाहित करके वायु के शुद्धीकरण का कार्य करते हैं। इससे वातावरण के तापमान में गिरावट आती है व गर्म मौसम में शीतलता का विशेष अनुभव होता है। झगड़ा फसाद को दूर रखने के लिए इन सार्वजनिक क्षेत्रों में फल देने वाले वृक्षों को कम से कम लगाना श्रेष्ठ होगा।

पर्यावरणविदों का विश्वास है कि पर्यावरण के अनुकूल वृक्ष प्रजातियों का चयन कर वृक्षारोपण करने से अच्छे व शुद्ध वातावरण का निर्माण होगा और मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार होगा।

4(V) वनोत्पाद (Forest Products) :— वन उद्योगों के लिए बहुत सा कच्चामाल प्रदान करते हैं। फर्नीचर उद्योग का यह स्तम्भ है। वनों की उपजों को प्रमुख उपजों और गौण उपजों के रुप में विभाजित किया जा सकता है।

क प्रमुख उपजें (Major Forest Products) :— वनों की प्रमुख उपजों में औद्योगिक लकड़ी इमारती लकड़ी और ईंधन की लकड़ी का उत्पादन वन–विकास का प्रमुख मापदण्ड होता है। चित्रकूट धाम मण्डल में 133222 हेक्टेयर वनों से लकड़ी का उत्पादन होता है। चित्रकूट धाम मण्डल में लकड़ी प्रदान करने वाले प्रमुख वृक्ष–आचार, अंजना, अर्री, अमलतास, आँवला, आम, अर्जुन, असना, दुरहा, बबूल, बहेड़ा, बांस, वन्सा, कालासिरस, बरगद (वट), बेल, बेर, सिहारु, भेल, भेटी, भेरी, मुरकुल, धामिन, विजयसाल, बजहैरा, चमरौर, चिलविल, कंजू, ढाक, छिउला, धव, धौरी, सेंजा, करधई, धवई, धोविन, दुद्धी, गबदी, गलगज, खम्हार, वन्ता, गूलर, पलूट, कैमा, हल्दू, हरदी, इमली, जामुन, गुरजा, जिंगना झींगन, कचनार, कैथा, घोटकोर, कारी, कटैया, कठजामुन, खैर, साल, खजूर, कुल्लू, कुसुम, करार, लसौर, महुआ, गमरी, मैनफल, नीम , पाकड़, पाडल, पीपल, रोहिनी, सफेद, सिरस, सागौन, सांदन, मलई, सहजन, सेमल, शीशम, तेंदू, हैं। इनमें से इमारती लकड़ी आम, अर्जुन, बबूल, बहेड़ा, बांस, सिरस, सांदन, जामुन, महुआ, नीम, सागौन, साल, सलई, आदि से प्राप्त होती है। चित्रकूट बांदा और हमीरपुर जनपदों में आम, साल, सागौन, की लकड़ी बहुत कम मात्रा में प्राप्त होती है। वह भी उद्योगों के लिए अच्छी किस्म की नहीं है। धौं, सादन, तुरहा, सेंजा, करघई, महुआ, जामुन, सलई, और गुरजा प्रजाति के वन काफी मात्रा में हैं। चित्रकूट जनपद में बरगढ़, मानिकपुर, कर्वी एवं मारकुण्डी रेंज से प्राप्त ईंधन की लकड़ी की बिक्री इलाहाबाद, बांदा, अतर्रा में होती है। जलाऊ लकड़ी के लिए सलई कुल्लू थूहर और गबदी को छोड़कर सभी प्रजातियाँ उपयोग में आती हैं। इनमें घोंट, धौं, आँवला, सेंजा, बबूल, खैर, सिहारु जलाऊ लकड़ी की महत्वपूर्ण प्रजातियाँ हैं। कोयले के लिए धौ, करधई, प्रमुख प्रजातियाँ हैं। धौं, करधई चित्रकूट तथा बांदा जनपद के वनों में तथा बबूल हमीरपुर जनपद में अधिक पाया जाता है। इलाहाबाद कानपुर और आगरा कोयले की प्रमुख मण्डियाँ है।

ख गौण वन उपजें (Minor Forest Products) :—

चित्रकूट धाम मण्डल के वनों की गौण उपजों से वनों की उपजों की कुल आय का एक तिहाई भाग प्राप्त होता है। इनमें घरेलू माँग की पूर्ति होने के अतिरिक्त प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में भी भेजा जाता है। वनों से अनेक उद्योगों के लिए कच्चा माल मिलता है। गौण वन्य उपजों में महुआ के फल–फूल, अचार, तेंदूँ, आँवला, हर्रा, बहेड़ा, जामुन, बेल, आदि के फल रस्सी बनाने के लिए मोराइन के तने की

छाल तथा छिउला के जड की छाल, चमड़ा सिझाने के लिए घोंट के फल, कपड़े पर माड़ी चढ़ाने के लिए बिलाईकन्द, गोंद, घास और चारा, बांस, जड़ी–बूटियाँ, तेंदूँ पत्ता, खिलौना और सजावट की वस्तुओं के निर्माण के लिए दुद्धी की लकडी, शहद आदि प्राप्त होते हैं। ग्रामवासी उपरोक्त सभी प्रकार की वन्य उपज की पूर्ति अपनेगाँवों के समीपवर्ती वनों से करते हैं। सरकारी वन दूर होने पर इनकी प्राप्ति ग्राम–समाज के वनों से होती है।

1. **तेंदूपत्ता** :– आर्थिक दृष्टि से तेंदूपत्ता इस मण्डल की सबसे महत्वपूर्ण उपज है। चित्रकूट तथा बांदा जनपद तेंदूपत्ता उत्पादन के प्रमुख क्षेत्र हैं। यह बीड़ी उद्योग में प्रयोग होता है। तेंदू पत्ते की अधिकांश मात्रा इलाहाबाद, कोलकाता, जबलपुर तथा मुम्बई आदि शहरों में बीड़ी निर्माताओं को निर्यात की जाती है। थोड़ी मात्रा में स्थानीय खपत मानिकपुर में बीड़ी बनाने के लिए होती है। तेंदूँपत्ता चित्रकूट जनपद के वन विभाग की आमदनी का सर्वाधिक प्रमुख स्रोत हैं। इसका उत्पादन प्रतिवर्ष लगभग 1 लाख वास्तविक वोरा प्रतिवर्ष का है। तेंदूँपत्ता इस जनपद के समस्त क्षेत्र में न्यूनाधिक रुप से पाया जाता है। बांदा तथा चित्रकूट जनपद में तेंदू पत्ता तुड़ाई की इकाइयों का विवरण निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट हैं:–

तालिका सं0 4–7

बांदा तथा चित्रकूट जनपद में तेंदूपत्ता तुड़ाई की इकाइयाँ

क0सं0	रेंज का नाम	इकाइयाँ
1.	बांदा	करतल, सढा, कटरा, कालींजर, नवगवां, पथरा, नरैनी
2.	कर्वी	खोही, अगरहुडा, बगरेही, रुकमाखुर्द, बहिलपुरवा, चन्द्रामारा, कोल्हुआ, रसिन, दुगवां, खमरिया, ऐंचवारा, रेहुँटिया, सिद्धपुर, भौंरी, शीतलपुर, सेमरदहा, डढ़वा मानपुर
3.	मानिकपुर	चूल्ही, सरहट, गडचपा, ऐलहा बढैया
4.	मारकुण्डी	जरवा, इटंवा, टिकरिया, ददरी, मडैयन, अमचूरनेरुवा, भेड़ा, छेरिहा
5.	बरगढ़	देशाह, कोटा, कन्डैला, करदवा, बरयारीकला, मुरका छतैनी, कटैया डाड़ी, खण्डेहा, बम्बुरी, लौरी।
6.	रैपुरा	इटवा, कुपुरी, हनुवां।
	रानीपुर वन्य जीव विहार	रानीपुर, रुझौंहा, कल्याणपुर, चौरी, डोडा

स्रोत :– कार्य–योजनावृत (द्वितीय) उ0 प्र0 1995, कार्यालय, वन–विभाग, चित्रकूट, बांदा, (1994–95 से 2003–2004 तक)

वर्ष 1972–96 तक तेंदू पत्ता निस्तारण तेंदूपत्ता व्यापार विनिमयन अधिनियम 1972 के अर्न्तगत रोयल्टी विधि से किया गया। वर्ष 1977 से रोयल्टी प्रथा समाप्त कर टेन्डर विधि द्वारा ठेके पर बेचा जाता रहा। वर्ष 1983 में तेंदू पत्ता उ0 प्र0 वन निगम को रोयल्टी के आधार पर दिया गया। 1983 के बाद बीच के दो वर्षों में 1987–88 में तेंदू पत्ते के विदोहन व वितरण के कार्य को उ0 प्र0 तराई

अनुसूचित जनजाति विकास निगम को दिया गया लेकिन तराई अनुसूचित जनजाति विकास निगम द्वारा सही कार्य न करने पर वर्ष 1988 व अगले वर्षों से तेंदू पत्ते के विदोहन व विपणन के कार्य को उ0 प्र0 वन निगम को दिया गया।

2. **दुद्धी (कोरैया) की लकड़ी** :— दुद्धी लकड़ी हल्के भूरे रंग की होती है तथा कोमल व हल्की होने के कारण इसका प्रयोग खिलौने और सजावट की वस्तुओं के निर्माण के लिए चित्रकूट में निजी कुटीर उद्योग में होता है। दुद्धी लकड़ी के वृक्ष चित्रकूट वन प्रभाग के मारकुण्डी रेंज में अधिक क्षेत्रफल में पाये जाते हैं। यहाँ यह निम्नलिखित क्षेत्रों में 10 से 25 प्रतिशत में पाई जाती हैं।

तालिका सं0 4—8

जनपद चित्रकूट में कर्वी तथा मारकुण्डी रेंज में खण्ड तथा कक्षवार दुद्धी लकड़ी के अन्तर्गत वितरित क्षेत्रफल —2002—03

रेन्ज का नाम	खण्ड तथा कक्ष	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)
कर्वी	सिद्धपुर	698.11
मारकुण्डी	करकाछेरिया — 1 से 5 तक	683.91
,,	आमचोरनेरवा 1 से 12 तक	1730.02
,,	ददरी (1से 14 तक)	1927.18
,,	टिकरिया (1से 8 तक)	1160..27
,,	गुरुसराय पूर्व	562.94
,,	गुरुसराय पश्चिम भाग	131.98
,,	गुरुसराय प0 1 व 2	367.87
,,	जमुनिहाई	260.63
,,	रुकमा	57.87
,,	रुकमा बुजुर्ग	732.91
,,	मडैयन	725.22
,,	कुल योग	9038.91

स्रोत : कार्यालय चित्रकूट वन प्रभाग, चित्रकूट कार्ययोजना वृत (द्वितीय) उ0प्र0 1995 (1994—95 से 2003—2004 तक)

3. **बाँस** :— बाँस का प्रमुख उपयोग कागज की लुगदी बनाने के लिए किया जाता है और ग्रामीण क्षेत्रों में इससे मकान की छतें तथा टोकरियाँ बनायी जाती हैं। कर्वी रेंज के कोल्हुआ वन खण्ड में बाँस की मात्रा सबसे अधिक है जो कुछ अच्छी श्रेणी का है। ममानिया व शेखपुरा वनखण्डों में बाँस औसत श्रेणी व सघनता के हैं। यद्यपि विन्ध्याचल के पठारी भाग की प्रायः हर पहाड़ियों में थोड़ी बहुत मात्रा में बाँस मिल जाता है। चित्रकूट वन प्रभाग की कार्ययोजना (सारिणी121) के अनुसार प्राकृतिक बाँस एवं

रोपवन बाँस की पातन श्रेणी का क्षेत्रफल क्रमशः 2285.36 हेक्टेयर एवं 882.75 हेक्टेयर है। सकल क्षेत्रफल 23734.11 हेक्टेयर है। यहाँ का प्राकृतिक बाँस प्रायः खोखला पतला एवं कम ऊँचाई का है। स्थानीय ग्रामीणों द्वारा पातन एवं पशुओं की चराई के कारण बेड़ियाँ साधारण निम्न कोटि की हैं, एवं कहीं कहीं बेड़ियों की संख्या अधिक भी है। चित्रकूट वन प्रभाग में बाँस रोपवन 1965 से प्रारम्भ हुआ है जिनमे बम्बसा, अरुन्डिनेसिया प्रजाति के बॉस लगाये गये है। रोपवन की स्थिति अत्याधिक चराई के कारण सन्तोषप्रद नहीं है। बॉस का उपयोग विभिन्न उद्योगों में किया जाता है। एलैक्जैन्डर्स ने कहा है कि भारत में 1922 से अब तक बाँस का प्रयोग कागज बनाने के लिए काफी मात्रा में व्यापारिक रुप से किया जा रहा है। इस उद्योग के लिए काफी मात्रा में कच्चामाल प्राप्त होता है। स्थानीय उपयोग के अतिरिक्त यह कानपुर, इलाहाबाद, दिल्ली, चन्दौसी, आगरा एवं अलीगढ़ विक्रय केन्द्रों में निर्यात कर दिया जाता हैं। कुछ मात्रा में बाँस की बिक्री बांदा, चित्रकूट, कर्वी एवं मानिकपुर में भी होती है।

4. **महुआ** :– चित्रकूट जनपद में बहुतायत से पाया जाता है लेकिन सम्पूर्ण चित्रकूट मण्डल में मैदानी भाग में यह वृक्ष साधारण रुप से पाया जाता है। इसकी लकड़ी का उपयोग ईंधन के रुप में, तथा मकान बनाने में किया जाता है। महुआ के फूलों को सुखाकर खाने के लिए तथा शराब बनाने के लिए किया जाता है। बीजों से तेल निकलता है जिसका उपयोग कपड़ा धोने का साबुन बनाने, खाना बनाने, दवा के रुप में, जलाने व बाल में लगाने वाले तेल के रुप में किया जाता है। इस वृक्ष के लिए स्पेट महोदय ने कहा है–

'This tree is so common and so luxuriously fluorescent in the North East peninsula which is a main source of Alcohal,"[12]

5. **कत्था** :– कत्था खैर की लकड़ी से बनाया जाता है। इसका उत्पादन परम्परागत विधि से होता है। कत्था का प्रयोग पान के साथ खाने में तथा अधिकतर रंग बनाने में किया जाता है। चित्रकूट तथा बांदा वन प्रभाग में खैर के वृक्ष अधिक पाये जाते हैं।

6. **घासें** :– चित्रकूट धाम मण्डल में घास की कई प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें चिकवा, परवा, मनजुरा, मुसेल तथा दूब आदि प्रमुख हैं। सम्पूर्ण क्षेत्र में पशुचारे की बहुत कमी है। अतः रोपवन के वन क्षेत्रों की घास की स्थानीय बिक्री हो जाती है। प्रतिरक्षा विभाग के ग्रास फार्म को बरगद और मारकुण्डी के कुछ क्षेत्रों से चारा घास निकालने के लिए पट्टे पर आवंटन किया जाता है। मूँज, थुनेर तथा कुश घासों का प्रयोग छप्पर छाने के लिए किया जाता हैं। सबई घास का उपयोग रस्सी बनाने के लिए होता है। कहीं–कहीं खस भी मिलता है जिससे खस की टटियाँ बनाई जाती हैं। यह एक सुगन्धित घास होती है।

7. **गोंद** :– विजयसाल, सलई, कुल्लू, बबूल, धव, झींगन, सेमल, सिरस, नीम, ढाक, तुरहा, कैथल अदि वृक्षों से गोंद प्राप्त की जाती है। इससे चिपकाने वाला गोंद, खाने वाला गोंद आदि बनाया जाता है। वस्त्रों पर छीट, बेलबूटे आदि छापने के रंग तैयार करने तथा काली स्याही तैयार करने में यह भारी मात्रा में उपयोग में लाया जाता है।

8. **रंगने के पदार्थ** :– चित्रकूट धाम मण्डल के वनों में उत्पन्न अनेक वृक्षों की छाल, फल आदि चमड़ा कमाने और रंगने के काम आती है। अर्जुन तथा बबूल के वृक्ष की छाल, हर्र और बहेड़ा फल से सूत, ऊन और रेशम भी रंगा जाता है। आंवला, छिउला के फूल और फलों से हरा, नीला, लाल और केसरिया रंग प्राप्त कर कपड़ा और चमड़ा रंगा जाता है। घोंट के फल चमड़ा सिझाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

9. **जड़ी बूटियाँ** :– चित्रकूट धाम मण्डल में विभिन्न प्रकार की जड़ी बूटियाँ प्राप्त होती हैं। कालींजर और चित्रकूट की पहाड़ियों में गुम्मीठर्रा, लोखराही, पथरचट्टा, छुई–मुई, दुद्धी, लटजीरा, बसई,

गुडुच, निगुँडी, पारिजात, विदारीकंद, सफेद, पुनर्नवा, गुडमार, अर्जुन, अश्वगंधा, हरीतिका, चेतकी, शलावटी, पाषाणभेद जैसी दुर्लभ औषधियों का भण्डार है। पयस्वनी तट पर गोक्षुर, ब्रहती, पाटाला, गंभरी भी पायी जाती है। कालिंजर में पाई जाने वाली हरीतकी व चेतकी नामक औषधियों में सप्तवर्ण होता है। यह मलेरिया रोग में बेहद लाभकारी है। अन्य स्थानों पर मिलने वाली इन बूटियों में इसका अभाव मिलता है। इसी स्थान पर दुर्लभ औषधि शिवलिंगी पायी जाती है। यह बाँझ स्त्रियों की गोद भरने में समर्थ है। संरक्षण के अभाव में अधिकांश दुर्लभ प्रजाति की जड़ी बूटियाँ लुप्त होने की कगार पर हैं। चित्रकूट धाम मण्डल के वनों में पाये जाने वाले कुछ वृक्षों, झाड़ियों तथा लताओं की वनौषधि के रुप में उपयोगिता निम्नलिखित तालिका में स्पष्ट किया गया है :–

तालिका सं. 4–9

चित्रकूट धाम मण्डल के वनों में पायी जाने वाली कुछ वनौषधियों की उपयोगिता :–

क्र0 सं0	वनौषधि का नाम	प्रयुक्त भाग	उपयोगिता
1.	खैर	सार–काष्ठ	नाक से खून बहने को रोकने के लिए
2.	बेल	तरुण पत्तियाँ	आँखों की लालिमा को ठीक करने के लिए
3.	धौ	छाल	सिरदर्द ठीक करने के लिए
4.	सलई	छाल	दाँत दर्द ठीक करने के लिए
5.	ढाक	गोंद	अतिसार व अमातिसार रोगों को ठीक करने के लिए
6.	अमलतास	जड़	सर्पदंश ठीक करने के लिए
7.	आँवला	फल	कमजोर दृष्टि ठीक करने के लिए
8.	खरहर	जड़	बिच्छू के डंक मारने पर ठीक करने के लिए
9.	दुद्धी	छाल	मलेरिया ज्वर में
10.	चिलबिल	पत्ती	शारीरिक सूजन ठीक करने के लिए
11.	महुआ	छाल	पीलिया ठीक करने के लिए
12.	सहजन	जड़	फोड़ों को ठीक करने के लिए
13.	बीजासाल	सारकाष्ट	स्वांस रोग को ठीक करने के लिए
14.	कुल्लू	जड़	प्रसूति के समय पीड़ा कम करने के लिए
15.	इमली	पत्ती	आँखों की सूजन दूर करने के लिए
16.	सतावर	जड़	मवेसियों के अधिक दुग्ध उत्पादन हेतु
17.	करौंदा	छाल	जख्मी जानवरों के कीड़ों को मारने के लिए
18.	गुरुसकरी	जड़	फोड़ों को ठीक करने के लिए
19.	नीम	पत्ती	रक्तशोधक
20.	गूंची	लतायें/जड़	बिच्छू के डंक को ठीक करने के लिए
21.	पाताल कोहदा	कन्द	सीने का दर्द ठीक करने के लिए
22.	हरजोड़	तना	अस्थिभंग होने पर
23.	अर्जुन	छाल	हृदय रोग नाशक
24.	जामुन	छाल	स्त्रियों के प्रदर (लिकोरिया) के लिए तथा शुगर की बीमारी के लिए
25.	सेंमल	छाल	फोड़ा ठीक करने के लिए

स्रोत : कार्यालय, वन प्रभाग चित्रकूट, कार्ययोजना वृत (द्वितीय) उ0प्र0 1995(1994–95 से 2003–2004 तक)

10. अन्य उपजें (Other Products) :–

(1) बिलाई कन्द जड़ों का प्रयोग कपड़ों पर माड़ी देने तथा दवाओं क लिए होता है।

(2) मोराइन एवं छिउला की जड़ों की छाल रस्सी बनाने के लिए प्रयोग में लायी जाती है।

(3) महुआ और नीम के बीज से तेल निकाला जाता है।

(4) आँवला, अचार, तेंदूँ, जामुन आदि के फलों तथा महुआ के फूल का उपयोग स्थानीय निवासियों द्वारा खाने के लिए किया जाता है।

(5) वनों से शहद, कुछ पक्षियों के पुख, मृगछाला, सींग, चमड़ा और खालें प्राप्त होती हैं।

(6) चित्रकूट के वनों में मकान की पुताई के लिए रामरज प्राप्त होता है।

(7) कुसुम, घोट, बेर, छिउला तथा सिरस के वृक्षों पर लाख का उत्पादन किया जा सकता है।

निम्नलिखित तालिका में चित्रकूट मण्डल में प्रमुख तथा गौण वन उपजों का 2002–2003 में उत्पादन दर्शाया गया है :–

तालिका सं0 4–10

चित्रकूट धाम मण्डल में प्रमुख तथा गौण वन–उपजों का उत्पादन– 2002–03

वन उपज का नाम	हमीरपुर	महोबा	बाँदा	चित्रकूट	इकाई	योग	औसत मूल्य लाख रु0में
अ–प्रमुख वन उपजें							
1. जलाऊ लकड़ी	1658.6	9746.5	5650.7	2054.2	कुन्तल	19110	6.91 लाख
2. इमारती लकड़ी	41.910	39.7	236	126.16	घन मीटर	443.77	8.89
ब– गौण वन उपजें							
1. तेंदू पत्ता	335.00	2760	12440	55610.53	मानक बोरा	71145.53	270.35
2. बांस	–	1400	2300	3100	कौड़ी	6800	13.60
3. सिहारु	2330.0	2100	700	4200	कुन्तल	9330	0.32
4.जामुन बीज	01.00	–	–	–	कुन्तल	1.00	0.01
5. घास	3200.00	2900	200	352	कुन्तल	6652	2.00

स्रोत : वार्षिक कार्य योजना, वन प्रभाग कार्यालय, जनपद–हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट–2002–03

4(VI) वन संरक्षण एवं वन्यजीव संरक्षण

(Forest conservation and Whild Life conservation)

वनसंरक्षण :– निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या, कृषि, उद्योगों, नदी घाटी योजनाओं के लिए वनों का विनाश तथा अनेक प्रकार के जैविक दबाव के कारण वनों की उत्पादक क्षमता में काफी ह्रास हुआ है। निर्वनीकरण तथा वनों के घनत्व में कमी के कारण समाज को निम्नलिखित समस्याओं से जूझना पड़ रहा है :–

i. प्रदूषण जो अनेक रोगों का कारण है।

ii. जलवायु की कठोरता

iii. भू–क्षरण जिसके कारण प्रतिवर्ष हजारों टन उपजाऊ मिट्टी बह जाती है।

iv. अन्न की उत्पादकता में कमी

v. शुष्कता का विस्तार/ रेगिस्तान का फैलाव

vi. फसलों के क्षति कारक कीड़ों के चिड़ियों द्वारा नष्ट किये जाने में कमी

vii. प्राकृतिक खाद की कमी

viii. ईंधन की कमी

ix. चारे की कमी

x. कागज, कत्था, लीसा, फर्नीचर आदि उद्योगों के लिए कच्चे माल की कमी

xi. बाढ़, एवं सूखे का प्रकोप

xii. जैव–विवधता का ह्रास

xiii. कुटीर उद्योगो हेतु कच्चे माल का अभाव।

उपरोक्त भयावह स्थिति से बचने के लिए आवश्यक है कि भौगोलिक क्षेत्र का एक तिहाई भाग वनों से आच्छादित रहे। इस हेतु वनों की सुरक्षा, संरक्षण और विकास अति आवश्यक है।

राष्ट्रीय वन नीति एवं वन–सुधार योजनायें :– भारत उन कुछ देशों में से है जहाँ 1894 से ही वन नीति लागू है। इसे 1952 और 1988 में संशोधित किया गया। संशोधित वन नीति 1988 का मुख्य आधार आज वनों की सुरक्षा, संरक्षण और विकास है।

इसके मुख्य लक्ष्य हैं :–

(1) पारिस्थितकीय सन्तुलन के संरक्षण और पुनःस्थापन द्वारा पर्यावरण स्थायित्व को बनाए रखना

(2) प्राकृतिक सम्पदा का संरक्षण

(3) नदियों, झीलों और जलाशयों के जलग्रहण क्षेत्र में भूमि कटाव और जलों के क्षरण पर नियन्त्रण

(4) राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में तथा तटवर्ती क्षेत्रों में रेत के टीलों के विस्तार को रोकना

(5) व्यापक वृक्षारोपण और सामाजिक वानिकी कार्यक्रमों के जरिए वन और वृक्ष के आच्छादन में महत्वपूर्ण बढ़ोत्तरी

(6) ग्रामीण और आदिवासी जनसंख्या के लिए ईंधन की लकड़ी, चारा तथा अन्य छोटी–मोटी वन्य उपज आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कदम उठाना

(7) राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वन–उत्पादों में वृद्धि

(8) वन–उत्पादों के सही उपयोग को बढ़ावा देना और लकड़ी का अनुकूलतम विकल्प खोजना एवं
(9) इन उद्देश्यों की प्राप्ति और मौजूदा वनों पर पड़ रहे दबाव को न्यूनतम करने में जन–साधारण, विशेषकर महिलाओं का अधिकतम सहयोग हासिल करना।

अगले 20 वर्षों के लिए लम्बी अवधि के एक वृहद राजनीतिक योजना के रुप में राष्ट्रीय वन कार्यक्रम भी तैयार किया गया है तथा उसे जारी किया जा चुका है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य वनों की कटाई को रोकना तथा देश के एक तिहाई भाग को वृक्षों/वनों से ढ़कना है।

वन संरक्षण अधिनियम, 1980 के प्रावधानों के अन्तर्गत वन भूमि को गैर–वन भूमि में बदले जाने से पूर्व केन्द्रीय सरकार की अनुमति की आवश्यकता होती है। प्रमुख वन संरक्षकों को पाँच हेक्टेयर तक की वनभूमि को गैर वन प्रयोजनों के लिए मंजूरी देने के अधिकार प्राप्त हैं। इनमें उत्खनन व अवैध कब्जों को नियमित करने के मामले शामिल नहीं हैं। राज्य सलाहकार समूह के परामर्श से उन्हे पाँच से 20 हेक्टेयर तक की वनभूमि के मामलों पर विचार करने का भी अधिकार है।

वनों को नष्ट होने से बचाने और उनके विकास के लिए ग्रामीण समुदायों की सहायता लेने के वास्ते मंत्रालय ने 1990 में दिशा निर्देश जारी किए थे। *तत्पश्चात् 'संयुक्त वन प्रबन्धन' की अवधारण शुरु की गई।* संयुक्त वन प्रबन्ध के लिए एक सितम्बर 2000 तक 26 राज्यों द्वारा प्रस्ताव जारी किया जा चुका है, जिसमें उत्तर प्रदेश भी सम्मिलित है। परियोजना के प्रथम चरण में उ0प्र0 में 1060 ग्रामों में यह कार्यक्रम चलाया गया है जिसके अन्तर्गत वन पंचायतों एवं ग्राम वन समितियों के माध्यम से संयुक्त प्रबन्धित वन क्षेत्र के लिए माइक्रोप्लान तैयार एवं क्रियान्वित किये गये हैं । माइक्रोप्लान की तैयारी में एक प्रेरक दल ग्राम समुदाय की सहायता करता है। इस दल में एक सहायक वन संरक्षक एक वन क्षेत्र अधिकारी तथा दो स्वयं सेवी कार्यकर्ता होते हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में चित्रकूट जनपद में 2003–04 में 650 हेक्टेयर वन भूमि पर वृक्षारोपण ग्राम वन समितियों के माध्यम से कराया गया जिसमें 250 हेक्टेयर भूमि पर कृत्रिम वृक्षारोपण, 200 हेक्टेयर भूमि पर बाँस वृक्षारोपण तथा 200 हेक्टेयर भूमि पर घास वृक्षारोपण किया गया।

राष्ट्रीय वन नीति, 1998 का अनुसरण करते हुए अदिवासी बहुल क्षेत्रों में नष्ट हो चुके वनों को फिर से हरा–भरा करने के कार्य में स्थानीय लोगों को शामिल करने के लिए शत–प्रतिशत केन्द्र द्वारा प्रायोजित योजना शुरु की गई है। इस योजना का नाम 'अवक्रमिक वनों को उपभोग के आधार पर पुर्नजीवित करने के लिए जनजातीय और ग्रामीण निर्धन वर्ग संगठन' है। इस योजना का उद्देश्य अदिवासियों को रोजगार और भोगाधिकार मुहैया करवाना है।

विश्व खाद्य कार्यक्रम परियोजना का द्वितीय चरण दिनाँक 1.7.97 से चित्रकूट धाम मण्डल में बांदा तथा चित्रकूट जनपदों में भी प्रारम्भ किया गया है। इस योजना का उद्वेश्य प्रदेश में कार्यरत वानिकी श्रमिकों एवं परियोजना क्षेत्र के निर्धन गाँव वालों के कल्याण के लिए विभिन्न कार्यों का क्रियान्वयन है। चित्रकूट जनपद में विश्व खाद्य कार्यक्रम के अन्तर्गत 2001–02 में 25 हेक्टेयर तथा 2003–04 में 15 हेक्टेयर में वृक्षारोपण कार्य किया।

वर्ष 1991 से ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में अपने प्रियजनों की यादगार बनाये रखने के उद्वेश्य से 'स्मृति वनों' की स्थापना का कार्य एक अभियान के रुप में चलाया जा रहा है। इस योजना के अन्तर्गत

वृक्षों का रोपण एक जीवित स्मारक के रुप में किया जाता है। इस प्रकार के वृक्षारोपण से न केवल परिवार के स्वजनों की स्मृति ताजा रहती है अपितु इससे पर्यावरण सुधार एवं पारिस्थितिकीय सन्तुलन बनाये रखने में सहयोग मिलता है तथा प्रदेश की हरियाली तथा वृक्षों से आच्छादित आवरण में भी वृद्वि होती है। हमीरपुर जनपद में 'मंझूपुर सिटी–फारेस्ट' में स्मृति वन का सुव्यवस्थित तरीके से विकास किया गया है।

वनों का संरक्षण के लिए सामाजिक वानिकी प्रयोजना का प्रारम्भ 1979–80 से किया गया था। इसका प्रमुख उद्वेश्य ग्रामीणों को ईंधन, चारा एवं अन्य गौण वन उपज सुलभ करना तथा सामान्य जनता में वनों के प्रति अभिरुचि जागृत करना है। इसके अन्तर्गत (i) कृषि व फार्म वानिकी (ii) परिवहन मार्गवानिकी (iii) प्रसार वानिकी (iv) पुनः वृक्षारोपण वानिकी और (v) मनोरंजन वानिकी सम्मिलित है।

उत्तर प्रदेश सरकार ने कृषकों की सुविधा के लिए निजी वृक्षों को काटने एवं वृक्षों के संरक्षण के लिए उ0प्र0 वृक्ष संरक्षण अधिनियम 1976 तथा उ0प्र0 इमारती लकड़ी व अन्य वन्य उपज अभिवहन नियमावली 1978 बनायी है, जिसमें समय–समय पर संसोधन भी किया गया है। अधिनियम व नियमों का पालन न करने वालों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जाती है।

वनों के संरक्षण के मुख्य उपाय :– (1) वन सुधार योजनाओं, अधिनियमों तथा नियमों को सुचारु रुप से क्रियान्वयन किया जाय। कार्य–योजनाओं को अद्यतन बनाया जाय तथा संरक्षण पर विशेष बल दिया जाय। (2) प्रारम्भिक कार्ययोजना का बहु–विषयक दृष्टिकोण होना चाहिए। (3) वनवासी और जनजातीय लोग वनों एवं वनोत्पादों से आय इस प्रकार प्राप्त करें कि वनों का संवर्धन होता रहे। (4) चराई स्थलों का गहराई से अध्ययन किया जाए और विशिष्ट आदेशों द्वारा ही चराई को सम्मिलित किया जाए। (5) जहाँ तक सम्भव हो कृत्रिम सम्पोषण के साथ निर्बाध कटाई न की जाए। (6) पहाड़ों और जलग्रहण क्षेत्रों, प्रायः भूस्खलन वाले और मिट्टी का कटाव होने वाले क्षेत्रों की पूर्ण रुप से सुरक्षा की जाए। इन भागों में तेजी से वनारोपण किया जाये। (7) वनों के कार्य–कलापों में ठेकेदारी प्रथा को समाप्त करने के लिए कदम उठायें। (8) धुएँ से रहित चूल्हों, बायोगैस, सौर कुकर, वाटर हीटर, जैसे ऊर्जा के गैर–परम्परागत स्रोतों को लोकप्रिय बनाया जाना चाहिए। (9) दीर्घकालीन समाधान के लिए चराई, स्थानान्तरण कृषि करने और लकड़ी के स्थानापन्नों की सम्भावना का अध्ययन किया जाना चाहिए। (10) वनों के प्रबन्ध, विकास एवं उत्पादकता में वृद्वि के लिए अनुसंधान की महत्वपूर्ण भूमिका है। अतः चित्रकूट धाम मण्डल में भी 'वानिकी अनुसंधान शाखा' का होना नितान्त आवश्यक है। उत्तर प्रदेश में अभी केवल कानपुर में 'राज्य वानिकी अनुसंधान संस्थान' स्थित है।

वन्य जीव संरक्षण – वनों की विविधता के अनुरुप वन्य जीव धरोहर भी उतनी ही विविध एवं समृद्ध है। इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि मुगल शासक शिवालिक क्षेत्र वनों में सिंहों का शिकार करते थे। इस सदी के कुछ दशकों तक विन्ध्य क्षेत्र में चीता पाया जाता था। कभी तराई के वनों में गैंडे विचरण किया करते थे। वनों के विनाश एवं ह्रास से कई वन्य-प्रजातियाँ चीता, पिगमीहॉग, ग्रेट इंडियन वस्टर्ड तथा मांउटेन क्वेल प्रदेश से सदा के लिए विलुप्त हो चुकी हैं। इसलिए प्रदेश में वन्य जीवों के संरक्षण के लिए *'राष्ट्रीय उद्यान'* व *'वन्य जीव विहारों'* की स्थापना इस शताब्दी के चौथे दशक से प्रारम्भ कर दी गई थी। वर्ष 1935 में जनपद देहरादून में 'मोतीचूर वन्य जीव विहार' की

स्थापना की गयीं। यह वन्य जीव विहार अब राजा जी राष्ट्रीय पार्क में सम्मिलित कर दिया गया है। वर्ष 1936 में भारत का ही नहीं बल्कि एशिया का पहला राष्ट्रीय उद्यान 'हैली नेशनल पार्क' जो अब "कार्बेट नेशनल पार्क" के नाम से विश्व विख्यात है अविभाजित उत्तर प्रदेश में ही स्थापित किया गया था। देश में सर्वप्रथम वन्य जीव परिरक्षण संगठन उत्तर प्रदेश में वन विभाग के अन्तर्गत गठित हुआ। वर्तमान में प्रदेश में लगभग 13000 वर्ग किमी. क्षेत्र जो कि वन क्षेत्र का 26% तथा प्रदेश के सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्रफल का 4.3% है, वन्य जीव परिरक्षण संगठन के अन्तर्गत है। अविभाजित उत्तर प्रदेश में 7 राष्ट्रीय पार्क,17 वन्य जीव विहार, 12 पक्षी विहार तथा एक बायोस्फियर रिजर्व स्थापित किये जा चुके हैं।

इनमें से चित्रकूट मण्डल में एक भी राष्ट्रीय उद्यान नहीं हैं। 'रानीपुर वन्य जीव विहार' (अभ्यारण्य) चित्रकूट जनपद में हैं तथा एक 'विजयसागर पक्षी विहार' महोबा जनपद में स्थित है। चित्रकूट धाम मण्डल में कृषकों को वानिकी की ओर आकर्षित करने हेतु बदनपुर (हमीरपुर) तथा नवाब टैंक (बांदा) में वन चेतना केन्द्र स्थापित किये गये हैं।

रानीपुर वन्य जीव विहार :– उत्तर प्रदेश के नवसृजित चित्रकूट जनपद के उपतहसील मानिकपुर के विन्ध्यन पर्वत श्रृंखला में बसा यह वन्य जीव विहार इलाहाबाद–मानिकपुर–मुम्बई रेल मार्ग के दक्षिण में कुल 263 वर्ग किमी0 (230वर्ग किमी. कोर क्षेत्र एवं 33 वर्ग किमी. बफर क्षेत्र) क्षेत्र में फैला हुआ है। इसकी स्थापना 1977 में की गयी थी। सघन वन क्षेत्रों से आच्छादित पहाड़ियाँ व ऊपर पर्वतमाला में स्थित घास के मैदान वन्य जीवों हेतु समुचित पर्यावास प्रदान करते हैं। इस वन्य जीव विहार में उत्तरी शुष्क मिश्रित पर्णपाती वन तथा उष्ण नदी तट के सीमावर्ती वनों की विविध वनस्पतियाँ विद्यमान हैं, जिसमे करघई, खैर , तेन्दू, महुआ, बाँस, ढाक, आँवला, बेल, विजयसाल, सादन, सलई, आदि तथा नालों के किनारे अर्जुन, जामुन, गूलर, खिन्नी, कैमा आदि प्रमुख हैं। वन्य जीवों में बाघ (प्रमुख वन्य जीव), तेन्दुआ, भेड़िया, लकड़बग्घा, सियार, जंगलीकुत्ता, चिंकारा, कालाहिरण, सांभर, चीतल, चौसिंघा, भालू, नीलगाय आदि देखे जा सकते हैं। इनकी संख्या तालिका संख्या 4–11 में दर्शायी गयी है। इस क्षेत्र में पैंगोलिन, मगर, गिद्धराज अदि एवं वन्य जीव विहार के निकटवर्ती खेतों में सारस के जोड़े भी आसानी से देखे जा सकते हैं। पानी के स्रोतों के निकट पेण्टेड स्टार्क, ब्लैक नेक स्टार्क आदि बहुतायत में पाये जाते हैं। प्राकृतिक रुप से वरदहा नदी में वर्षपर्यन्त पानी उपलब्ध हैं ग्रीष्मकाल के अतिरिक्त अमहा नदी जमुनहई नाला, बेधक जलधारा, तोड़वा जलधारा, अमरदहा, लखनपुर नाला, महुवा नाला, कुल्लूडोल नाला अदि जल स्रोत हैं जहाँ पर वन्य जीवों को पीने का पानी उपलब्ध है। चौरी वन क्षेत्र, लखनपुर वन क्षेत्र, रुझौना वन क्षेत्र अपने चौड़े घास के मैदान हेतु जाने जाते हैं।

यह वन्य जीव विहार भगवान राम की कर्मस्थली चित्रकूट से लगा हुआ है। महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल शबरी प्रपात, राघव प्रपात, अमरावती प्रपात, धारकुण्डी आश्रम, मरवरिया देवी मन्दिर वन्य जीव विहार की सीमा में ही है। निकटवर्ती अन्य महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल कामतानाथ मन्दिर, हनुमान धारा, गुप्तगोदावरी, कामदगिरी परिक्रमा स्थल, आरोग्य धाम आदि वन्य जीव विहार से मात्र 50 किमी. की परिधि में स्थित हैं। मारकुण्डी एवं मानिकपुर में स्थित इण्टरप्रेटेशन सेन्टर एवं रिसर्च सेन्टर क्षेत्रीय महत्व को उजागर करते हुए वन्य जीवों व जैव विविधता की पूरी जानकारी उपलब्ध कराता है। (मानचित्र सं. 4–3)

FIG. 4.3
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
WILD LIFE AND BIRD SANCTUARIES
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25'
24° 30' N
VIJAY SAGAR BIRD SANCTUARY
RESERVE FOREST
BIJANAGAR LAKE
BIJANAGAR GRAM
MAHOBA
GRAM SAHAJ
POPULATION & AGRICULTURAL LAND
POPULATION & AGRICULTURAL LAND
VIJAY SAGAR BIRD SANCTUARY
RANI PUR WILD LIFE SANCTUARY
STATE BORDER
WILD LIFE SANCTURIES BOUNDARY
ROAD
TO ALLAHABAD
MANIKPUR
RANIPUR
KADAM
CHAURI
M.P.
TO SATNA
RANI PUR WILD LIFE SANCTUARY

तालिका सं. 4.11

रानीपुर वन्य जीव विहार के वन्य जीवों की गणना– वर्ष 2003

क0सं0	प्रजाति	नर	मादा	बच्चे	कुल योग
	माँसाहारी				
1.	बाघ	2	4	3	9
2.	तेंदुआ	5	10	4	19
	शाकाहारी				
3.	चीतल	126	184	49	359
4.	सांभर	118	177	35	330
5.	काला हिरण	63	136	28	227
6.	जंगली सुअर	918	1296	399	2613
7.	चिंकारा	134	168	34	336
8.	भालू	74	74	22	170
9.	बन्दर	644	874	196	1714
10.	लंगूर	396	487	172	1055
11.	जंगली कुत्ता	34	36	11	81
12.	नीलगाय	220	339	63	662

स्रोत:कार्यालय, वन्य जीव प्रतिपालन, रानीपुर वन्य जीव विहार, कर्वी, चित्रकूट

विजय सागर पक्षी विहार :– विजय सागर पक्षी विहार महोबा जनपद मुख्यालय से 4 किमी. की दूरी पर विन्ध्य पर्वत श्रृखलाओं के मध्य स्थित है। वर्ष 1990 में प्रवासी एवं स्थानीय पक्षियों को उचित संरक्षण प्रदान करने की दृष्टि से बीजानगर झील एवं उसके आसपास के 262 हेक्टेयर क्षेत्र को विजय सागर पक्षी विहार घोषित किया गया। इस पक्षी विहार में लगभग 262 प्रजातियों के स्थानीय एवं प्रवासी पक्षी भ्रमण करते हैं। नवम्बर माह से ही प्रवासी पक्षियों का आगमन प्रारम्भ हो जाता है। दिसम्बर व जनवरी माह में यह झील अपने चरमोत्कर्ष पर रहती है। मार्च माह तक यह प्रवासी अतिथि शनैः शनैः अपने देश वापस चले जाते है। कुछ स्थानीय पक्षी वर्ष भर यहाँ रहते हैं एवं घोंसलें बना कर अण्डे देते हैं। इस पक्षी विहार में दिखने वाले प्रवासी पक्षी गूज, पिनटेल, कामन टील, काटन टील, रेड क्रेस्टेड पोचर्ड, सुर्खाब, कूट आदि हैं। "स्थानीय या स्थानीय प्रवासी पक्षी – स्पॉट, बिल, सारस, क्रेन, पेण्टेड स्टार्क, व्हाइट आइबिस, ब्लैक आइबिस, डब चिक, ग्रिब, स्पून, बिल, ओपेन बिल्ड स्टार्क, कॉमोरेंट, इण्डियन शाग, इग्रेट, पैडी बर्ड, ग्रे पार्टिज, कामन कुक्कू, कॉमन आउल, किंग फिशर, रेड वाल्टेड बुलबुल, मुनिया, लैपविंग, पलोवर, सैण्ड पाइपर, टर्न, विजन, किंग बल्चर, स्केवेन्जर वल्चर तथा कॉमन पैरेट आदि हैं। झील में पायी जाने वाली प्रमुख मछलियाँ रोहू, सौर, मागुर तथा टैंगन आदि हैं। यहाँ की वनस्पतियों में अर्जुन, बबूल, प्रोसोपिस, जूलीफ्लोरा, बेर, ढाक, महुआ, आम तथा मीठी नीम की अधिकता है। यहाँ के स्तनधारी जीव वन बिलाव, गीदड़, खरगोश आदि हैं। इसके अलावा विभिन्न प्रकार की तितलियाँ व कीट आदि बहुतायत में दिखते हैं।(मानचित्र सं0 4–3)

सिटी फारेस्ट :– हमीरपुर मुख्यालय से 2 किमी. दूर हमीरपुर–कालपी मार्ग पर वन विभाग द्वारा मंझूपुर सिटी फॉरेस्ट की स्थापना की गई है। इसमें कुल दो सौ हेक्टेयर भूमि सम्मिलित है। इस भूमि में सुव्यवस्थित ढंग से वृक्षारोपण करके 12 हेक्टेयर भूमि को पिकनिक स्पाट के रुप में विकसित किया गया है। आर्टीफिसियल लेक, रेस्ट हाउस, चिल्ड्रेन पार्क, क्रोकोडाइल पार्क, रेस्टोरेन्ट, समरहट, चारागाह पौधशाला व मिश्रित वन क्षेत्र में फल व फूलदार पौधों का विकास कर प्राकृतिक वातावरण और सुरम्य पर्यावरण को साकार करने की कल्पना की गई है। बारह हेक्टेयर भूमि को आठ प्लाटों में बाँटकर वन विभाग द्वारा विभिन्न पर्यावरण प्रेमी राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त व्यक्तियों के नाम पर इनका नामकरण किया गया है। इन प्लाटों में फलदार, शोभाकार, इमारती व चारा वाले पेड़ जैसे शीशम, नीम, सागौन, सुबबूल, कचनार, सिरस कंजी, गोल्ड मोहर, अमलतास, आँवला, चांदनी केसिया, गुड़हल, बाटलब्रुश, नींबू, जामुन, सहजन, मौलश्री, कनेर, शहतूत, महुआ, व अनार लगाए गये हैं। स्मृति वन, मिश्रित वन, व चारागाह क्षेत्र का विकास सुव्यवस्थित तरीके से किया गया है।

यमुना व वेतवा नदियों के मध्य स्थित 'सिटी फारेस्ट' की प्राकृतिक छटा बहुत ही सुरम्य, सुखद और मनोहारी है। पुष्पाच्छादित भूमि, हरी– भरी पहाड़ियाँ कल–कल कोलाहल करती निर्मल जल की नदियाँ पक्षियों के चहचहाने की कलरव ध्वनि वातावरण को अनुप्राणित करते हुए आगन्तुओं को आनन्दित कर देती है। पारिस्थितिकी सन्तुलन के लिए वन्य प्राणियों और सभी वनस्पतियों का धरती पर अस्तित्व में बना रहना अपने में एक महत्वपूर्ण एवं वैज्ञानिक तथ्य है।

1. वन विभाग, प्रगति के पथ पर मार्च 1998, प्रसार एवं जन सम्पर्क वृत्त, वन विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ, पृ.6
2. वन विभाग, उत्तर प्रदेश, ऑप. सिट. सन्दर्भ–1
3. *हूकर जे0डी0 एण्ड थामसन* : 'इन्ट्रोडक्ट्री एसे टू द फ्लोरा इण्डिका', लन्दन–1855
4. *क्लार्क, सी0बी0* : 'सब–सब एरियाज ब्रिटिश इण्डिया', जर्नल आफ लिन सोसाइटी, वाल्यूम 34. 1898,
5. *काल्डर, सी0सी0* : 'एन आउटलाइन आफ द वेजीटेशन आफ इण्डिया', एन आउटलाइन आफ द फील्ड साइन्स आफ इण्डिया, इण्डियन साइन्स कांग्रेस एशोसियेशन– कलकत्ता, 1937
6. *चटर्जी, डी0* : 'स्टडीज आन द इन्डेमिक फ्लोरा आफ इण्डिया एण्ड वर्मा', जर्नल आफ रॉयल एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, वाल्यूम 05,1939
7. *स्टाम्प, एल0डी0* : एशिया ट्वल्वथ एडीशन–लन्दन, 1961
8. *चैम्पियन, एच0जी0* : 'ए प्रिलीमिनरी सर्वे आफ द फारेस्ट टाइप्स आफ इण्डिया एण्ड वर्मा', इण्डियन फारेस्ट रिकार्ड्स, वाल्यूम 1, पृ.286
9. *पुरी, जी0एस0* : 'इण्डियन फारेस्ट इकोलॉजी', वाल्यूम1, देहली 1960
10. *चतुर्वेदी, एम0डी0* : 1938 रोड साइड ऑवेन्यूज एण्ड कम्पाउन्ड्स, यू.पी. फारेस्ट डिपार्टमेन्ट, अंक नं. 12, सुपरिन्टेन्डेन्ट प्रिन्टिंग एण्ड स्टेशनरी, एलाहाबाद. पृ.21.
11. उ0प्र0 सरकार, बुन्देलखण्ड वृत्त उत्तर प्रदेश की कार्ययोजना वृत (2) बांदा वन प्रभाग (1984–85 से 1993–94) पृ. 258.
12. *चैम्पियन, एच0जी0* : ''इण्डियन फारेस्ट रिकार्ड्स ''वाल्यूम 1, देहरादून, पृ. 116.

अध्याय –5

पशु – संसाधन (ANIMAL RESOURCES)

5(i) पशु संसाधनों का महत्व एवं वर्गीकरण :–

पशु संसाधनों का महत्व :– "प्राचीन काल से ही देश की कृषि अर्थव्यवस्था में शक्ति के साधन, भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए गोबर की प्राप्ति और दुग्ध, मॉस, चमड़ा, ऊन आदि का प्रधान स्रोत होने के कारण पशुओं का स्थान सर्वव्यापी रहा है।"[1] चित्रकूट धाम मण्डल में कृषि प्रधान क्षेत्र होने के कारण पशुओं का अधिक महत्व है। मण्डल में आज भी कृषि कार्यो में पशुओं का प्रयोग किया जाता है। बैल तथा भैंसा खेत जोतने,भार ढोने मड़ाई करने और कुओं से पानी खींचकर सिंचाई करने के काम आते हैं। पशुओं के द्वारा ही भूमि को उच्च कोटि की खाद प्राप्त होती है जो कि कृषि उपज के लिए नितान्त आवश्यक है। इस प्रकार *"पशु संसाधन प्रादेशिक अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है।"*[2]

भूतपूर्व कृषि मंत्री श्री बूटा सिंह ने कहा था – " अनाज की बढ़ती कीमतों का मुख्य कारण रासायनिक खाद का महँगा होना है, अगर रासायनिक खाद की जगह गोबर की खाद का प्रयोग किया जाय जो अनाज के दाम काफी कम हो जायेंगे।"

चित्रकूट धाम मण्डल के गाँवों में आज भी आवागमन के आधुनिक साधनों की कमी है। गाँव में बैलगाड़ियाँ कृषि पदार्थो को ढ़ोने, लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का प्रमुख साधन हैं। घोड़े, खच्चर, गधे की भी परिवहन में उपयोगिता सर्वविदित है।

"But unlike in other countries of the world whose cattle are maintained mainly for milk and meat, in India these are primarily kept as draught animals for the plough or cast as the camel, the horse, the donkey and mechanical vehicles are rarely used without them no cultivation would be possible without them no produce can be transported."[3]

चित्रकूट धाम मण्डल में अनुमानतः 3000 टन दूध प्रतिदिन औसत रुप से प्राप्त होता है। इसका उपयोग ताजे दूध, घी, खोया, मक्खन, पनीर, दही आदि अनेक पदार्थों के बनाने में होता। दुग्ध उद्योग को प्रोत्साहन के लिए अनेक डेरियाँ खोली गयी हैं। चित्रकूट मण्डल में मानिकपुर (चित्रकूट) खोया बनाने की सबसे बड़ी मण्डी है।

पशुओं से हमको बहुत बड़ी मात्रा में मॉस व चर्बी प्राप्त होती है। मॉस खाने के काम आता है तथा चर्बी का उपयोग विभिन्न कार्यो में किया जाता है। मॉस मुख्य रुप से भेंड़ बकरियाँ तथा सुअर से प्राप्त किया जाता है। मछलियों तथा मुर्गो का मॉस भी खाने के काम आता है। मुर्गियाँ अण्डे तथा मॉस दोनों के लिए पाली जाती हैं।

भेंड़ों से हमें ऊन प्राप्त होता है, जिस पर हमारा ऊनी वस्त्र उद्योग आधारित है। सरकार ने अच्छी नस्ल की भेड़ों के विकास के लिए विदेशों से भेड़ों का आयात किया है, जिससे बढ़ती हुई ऊन की माँग को पूरा किया जा सके। चित्रकूट जनपद में अच्छी नस्ल की भेड़ों का अभाव है। अतः अच्छा ऊन नहीं प्राप्त होता है। राजस्थान के गड़रियों के बारे में लोकोक्ति है कि *'कहनें को ये लोग भेड़ें*

पालते हैं वरना तो भेड़ें ही इनको पालती हैं क्योंकि उनसे प्राप्त दूध, घी, ऊन आदि के व्यापार से ही इनका काम चलता है।'

चमड़ा उद्योग पशुओं पर आधारित है। हमारे दैनिक के प्रयोग की बहुत सी वस्तुयें चमड़े से प्राप्त होती हैं, जैसे– जूता, सूटकेस, पेटियाँ, गद्दियाँ, थैले, दस्ताने, इत्यादि।

खालें गोश्त के लिए वध किए गये पशुओं से तथा स्वाभाविक रुप से मरने वाले पशुओं से प्राप्त की जाती हैं। खालें शीघ्र सड़ जाती हैं। अतः सड़ने से बचाने के लिए कुछ विशेष वस्तुओं के प्रयोग से खालों को रंगकर सुखाया जाता है। इसे कमाई हुई (शोधित) खाल को चमड़ा (Leather) कहते हैं।

मण्डल में प्रदेश के कुल चमड़े एवं खालों के उत्पादन का 07% प्राप्त होता है। मण्डल में प्रतिवर्ष लगभग 12000 खालें भैंसो की, 13000 खालें बकरियों की तथा 3000 खालें भेड़ों की प्राप्त की जाती है।

चित्रकूट धाम मण्डल में कृषि और पशु दो ही आय के मुख्य स्रोत हैं। कुल आय का 12% पशुओं द्वारा ही प्राप्त होता है। ''मानव व पशु एक दूसरे पर आश्रित अथवा एक दूसरे के पूरक हैं।'' मानव यदि एक शिशु को पालता है तो पशु उसके सारे परिवार को पालता है। तांगे वाला एक घोड़े के सहारे अपने पूरे परिवार का भरण–पोषण करता है। अनेक व्यक्ति बन्दरो, रीछों, साँप आदि को नचाकर अपनी रोटी रोजी कमाते हैं।

विविध औषधियों के निर्माण हेतु पशु–सम्पदा का प्रयोग किया जाता है। गोमूत्र से अनेक औषधियाँ बनाई जाती है। पशुओं की हड्डी के चूरे से खाद बनाई जाती है, तथा चीनी उद्योग में भी यह प्रयुक्त होता है।

गाय, भैंस, बैल, के गोबर से उपले बनाये जाते हैं, जो ईंधन के रूप में प्रयोग किये जाते हैं। गैस ऊर्जा (गोबर गैस) में इन पशुओं के गोबर का उपयोग होता है तथा खाद प्राप्त होती है। एक बैल अपने जीवन काल में कम से कम 40 मीट्रिकटन अन्न उत्पन्न कर सकता है। ''एक अनुान के अनुसार हमारे देश में 7.15 करोड़ बैलों तथा 75 लाख भैसों से 4700 मेगावाट ऊर्जा के बराबर काम होता है।''[4] गाय की उपयोगिता को देखते हुए इसकी पूजा वैदिक काल से हो रही है। एक गाय कितने मनुष्यों को आहार देती है इसका अनुमान लगाना मुश्किल नहीं है। एक गाय औसत 10 किलो दूध प्रतिदिन के हिसाब से हर वर्ष में औसत 10 महीने तक देती है। वह एक वर्ष में 3000 किग्रा. दूध देकर 6000 व्यक्तियों की दूध की आवश्यकता पूरी करती है।

हरित क्रान्ति के सहारे हम अधिक से अधिक अन्न उत्पादन करने में समर्थ हो सके हैं तथा यह क्रान्ति अब लगभग अपनी चरम सीमा पर है। इस मण्डल के विकास एवं जन स्वास्थ्य की रक्षा में श्वेत क्रान्ति का अपना विशेष योगदान है क्योंकि चित्रकूट धाम मण्डल की अर्थव्यवस्था में सुधार एवं हमारे आहार में प्रोटीन तथा वसा की पूर्ति इस क्रान्ति से ही सम्भव हुयी है। इसकी सफलता से हमें दूध, अण्डा, माँस, घी तथा मक्खन आदि उपलब्ध हो रहा है।

इस प्रकार पशुधन किसी न किसी रुप में मनुष्य के जीवन का एक आवश्यक अंग है एवं हमारी अर्थव्यवस्था का आधार है।

पशु संसाधनों का वर्गीकरण :—

जातियों के आधार पर वर्गीकरण :— जातियों के आधार पर पशु—संसाधनों को निम्नलिखित वर्गों में बाँट सकते हैं :—

(1) गोवंशीय पशु (Cattle or Bovine)
(2) महिष वंशीय (Babaline)
(3) अश्व वंशीय (Equine)
(4) ऊँट वंशीय (Cameline)
(5) भेंड़ वंशीय (Ovine)
(6) बकरी वंशीय (Caprine)
(7) श्वान वंशीय (Canine)

(1) गोवंशीय पशु **(Bovine)** :— गोवंशीय पशुओं में गाय, बैल, साँड, तथा बछड़े एवं बछिया आते हैं। इन पशुओं की निम्नांकित मुख्य प्रजातियाँ हमारे देश में पायी जाती हैं :— अमृतमहल, देवनी, डोंगी, गिलाऊ, गिर, हल्लीकर, हरियाना, हिसार, कंक्रेज, कांगयाम, खिलार, मालवी, कनकथा, नागौरी, निमारी, अंगोल, रथी, रेड कन्थारी, रेड सिन्धी, साहीवाल, थारपारकर, खीरी, पवार, शाहाबादी (गंगातीरी) आदि।

उपरोक्त के अतिरिक्त कुछ विदेशी प्रजातियाँ भी पाई जाती हैं जैसे— होल्स्टीन फ्रीजियन, जर्सी, ब्राउन स्विस, रेडडेन तथा इन प्रजातियों की वर्णसंकर प्रजातियाँ आदि।

(2) महिष वंशीय **(Bobaline)** :— इनके अन्तर्गत भैंस, भैंसा, तथा उनकी विविध प्रजातियाँ सम्मिलित हैं। इनकी प्रमुख प्रजातियाँ मुर्रा, भदावरी, जाफराबादी, नीली हैं।

(3) अश्व वंशीय **(Equine)** :— अश्व वंशीय पशुओं में घोड़ा (Horse) गधा (Donkey) तथा खच्चर **(Mule)** आते हैं। घोड़े की प्रजातियाँ मारवारी, कठियावारी, तथा भूटिया हैं। गधा की प्रजातियाँ स्माल ग्रे तथा लार्जह्वाइट हैं।

(4) ऊँट वंशीय **(Cameline)** :— इनकी पंमुख प्रजातियाँ— डिजर्ट कैमल या बीकानेरी ऊँट, खिराइन कैमल, हिल कैमल हैं।

(5) भेड़ वंशीय **(Ovine)** :— प्रमुख भेंड़ वंशीय प्रजातियाँ भदवाह या गड्डी, बीकानेरी या मागरा, डेकानी, हिसारडेल, कठियावाड़ी, तथा नाली (Nali) हैं। विदेशी प्रजातियाँ मेरिनो, रैम्बुले, कोरीडेल आदि है।

(6) बकरी वंशीय **(Caprine)** :— इसके अन्तर्गत बकरा—बकरी एवं उनके बच्चे सम्मिलित हैं। इनकी प्रमुख प्रजातियाँ बरबरी, जमुनापारी, बीटल, काली भूरी सफेद बेंगाल, गड्डी या ह्वाइट हिमालयन, तथा चेघू या अन्गोरा हैं।

(7) श्वान वंशीय **(Canine)** :— श्वान वंशीय पशुओं में कुत्ता, कुतिया तथा उनके बच्चे (पिल्ला, पिल्ली) आते हैं। कुत्तों की महत्वपूर्ण प्रजातियाँ — स्पोटिंग डाग्स, होंन्ड्स, तथा वर्किंग डाग्स हैं। इसके अतिरिक्त टेरियर्स, ट्वाय डाग्स तथा नान स्पोर्टिंग डाग्स की श्रेणी भी होती है।

उपयोगिता के आधार पर पशुओं का वर्गीकरण :—

उपयोगिता के आधार पर पशुओं को निम्नलिखित वर्गों में विभक्त कर सकते हैं:—

(1) *दूध देने वाले पशु* — दूध या दुग्ध पदार्थ प्राप्त करने हेतु पाले जाने वाले पशु — गाय, भैंस, बकरी तथा भेंड़ हैं।

(2) *कृषि कार्य हेतु* — खेत की जुताई एवं फसल मढ़ाई हेतु — बैल, भैंसा पाले जाते हैं।

(3) *लद्दू पशु* — जो मनुष्यों की सवारी और बोझा लादने के काम में लाये जाते हैं जैसे — बैल, घोड़े, गधे, खच्चर, ऊँट, हाँथी।

(4) *माँस वाले पशु* – बकरा, भेड, सुअर, माँस के लिए पाले जाते हैं।

(5) *ऊन वाले पशु* – भेडें ऊन और माँस दोनों के लिए पाली जाती हैं। जो जाति अच्छा माँस (Mutton) उत्पन्न करती है, वह अच्छी ऊन पैदा नहीं करती और जिनका ऊन अच्छा होता है,उसका माँस अच्छा नहीं होता।

(6) *रखवाली वाले पशु* – घर की रखवाली के लिए कुत्ते तथा बिल्ली पाले जाते हैं।

5(ii) **चित्रकूट धाम मण्डल में पशु वृद्धि** :– चित्रकूट मण्डल की भौतिक दशायें एवं जलवायु, पशु पालने के लिए अनुकूल है। कृषि प्रधान क्षेत्र होने के कारण कृषि और पशुपालन एक दूसरे पर निर्भर हैं। पशुओं के लिए भोजन (चारा) कृषि उत्पाद से प्राप्त किया जाता है, क्योंकि यहाँ चारागाहों की कमी है। मण्डल में चारागाह का कुल क्षेत्रफल 1177 हेक्टेयर है। खेत की जुताई से लेकर अनाज को मण्डी मे पहुँचाने का सारा कार्य पशुओं के सहयोग से ही किया जाता है। अतः कृषि की उन्नति के लिए पशुधन का समुचित विकास आवश्यक है। मण्डल में लगभग 100 प्रकार के जानवर और 500 प्रकार की चिड़ियाँ पायी जाती हैं। उनमें से 12 प्रकार के जानवरों को मानव ने पालतू बनाया और उनसे विभिन्न लाभ प्राप्त कर रहा है। चित्रकूट मण्डल में दूध देने वाले पालतू पशु गाय, भैंस, बकरी, और भेंड़ हैं। भेड़ें ऊन के लिए भी पाली जाती हैं। कृषि कार्य के लिए बैल तथा भैंसा पाला जाता है तथा भार ढोने वाले पशुओं में बैल, भैंसा, घोड़ा, गधा, खच्चर पालें जाते हैं। माँस वाले पशुओं में सुअर तथा बकरे हैं, माँस तथा अण्डे के लिए मुर्गियाँ पाली जाती हैं। घर की रखवाली के लिए कुत्ते तथा बिल्ली पाले जाते हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में 1988 की पशुगणनानुसार कुल पशुओं की संख्या 2417685 थी। 1993 में यह बढ़कर 2691825 हो गई अर्थात् 5 वर्षो में 274140 पशुओं की वृद्धि हुई, 1988–1993 के मध्य औसत वार्षिक वृद्धि दर 2.27% थीं। 1997 में घटकर कुल पशुधन 2543898 हो गया और इन चार वर्षो में 13792 पशुधन कम हो गया, इसका कारण अति वृष्टि के कारण आई बाढ़ तथा पशुओं में फैली महामारी है। 1993–1997 के बीच औसत वार्षिक वृद्धि दर 1.37% रही।

1988 में गोजातीय देशी 3 वर्ष से अधिक नर की संख्या 512472 थी जो 1993 में बढ़कर 526152 तथा 1997 में घटकर 456034 हो गई 1988–1993 के मध्य औसत वार्षिक वृद्धि दर 0.53% तथा 1993–1997 के मध्य औसत वार्षिक वृद्धि दर – 3.33% रही। कम वृद्धि दर का कारण पशु–बीमारी एवं कुपोषण था। तीन वर्ष से अधिक मादा की वर्ष 1988, 93, 97 में क्रमशः संख्या 379014, 387934 तथा 345926 थी, जिसकी 1988–93 के मध्य औसत वार्षिक वृद्धि दर 0.47% तथा 1993–97 के बीच औसत वार्षिक वृद्धि दर – 2.70% थी।

गोजातीय देशी बछड़ा एवं बछिया की संख्या 1988, 93, 97 में क्रमशः संख्या 366981,380898 तथा 385798 थी। 1988–93 के मध्य वार्षिक औसत वृद्धि दर 0.76% तथा 1993–97 के मध्य 0.32% रही। गोजातीय देशी की कुल संख्या 1988 में 1258467, 1993 में 1294984 तथा 1997 में घटकर 1187758 हो गयी। 1998–93 के मध्य औसत वार्षिक वृद्धि दर 0.58% तथा 1993–97 के मध्य वार्षिक औसत वृद्धि दर घटकर – 2.07% रह गई।

2.5 वर्ष से अधिक नर गोजातिय क्रास ब्रीड(दोगली) पशुओं की संख्या 1988 में 421, 1993 में 128 तथा 1997 में 117 थी। इनकी 1988–93 के मध्य औसत वार्षिक वृद्धि दर – 13.92% तथा 1993–97 के मध्य गिरकर – 2.14% रह गई। वृद्धि दर गिरावट का मुख्य कारण इनकी कृषकों के लिए अनुपयोगिता है क्योंकि यह हल खींचने तथा बैलगाड़ी खींचने में भी काम नहीं करते इसलिए कुपोषण के कारण इनकी मृत्यु हो जाती है। 2.5 वर्ष से अधिक मादा की संख्या 1988,1993 तथा 1997 में क्रमशः 691, 924 तथा 1187 थी, जिनकी 1988–93 के मध्य वार्षिक औसत वृद्धि दर 6.74% तथा 1993–97 के मध्य वृद्धि दर 7.12% रही। गोजातीय क्रास ब्रीड (दोगली) के बछड़ा एवं बछिया की कुल संख्या 1988 में 706, 1993 में 936 तथा 1997 में 1174 थी, जिनकी 1988–93 के मध्य वार्षिक औसत वृद्धि दर 6. 52% तथा 1993–97 के मध्य 6.74% थी। गोजातीय क्रास ब्रीड (दोगली) की कुल संख्या 1988,93 तथा 97 में क्रमशः 1818, 1988 तथा 2478 थी जिसकी 1998–93 में वुद्धि दर 1.87% तथा 1993–97 के मध्य वार्षिक औसत वुद्धि दर 6.74% थी। कुल गोजातीय (देशी तथा क्रास ब्रीड) संख्या 1988 में 1260285 तथा 1993 में यह बढ़कर 1296272 तथा 1997 में यह घटकर 1190236 रह गई। 1988–93 के मध्य वार्षिक वृद्धि दर 0.58% तथा 1993–97 के मध्य वृद्धि दर 2.06% घट गयी। कुल भैंसों की संख्या 1988 में 497710 थी जो 1993 में 531628 तथा 1997 में बढ़कर 592003 हो गई। 1988–93 के मध्य वृद्धि दर 1.36% वार्षिक थी तथा 1993–97 के मध्य औसत वार्षिक वृद्धि दर 2.84% हो गई।

भेडों की संख्या 1988, 93, 97 में क्रमशः 82688, 91958 तथा 101330 थी, जिनकी 1988–93 के मध्य वार्षिक वृद्धि दर (औसत) 2.24% तथा 1993–97 के मध्य 2.55% थी।

बकरे एवं बकरियों की कुल संख्या 1988 में 500862, 1993 में 539494 तथा 1997 में यह बढ़कर 564499 हो गई। इनकी 1988–93 के मध्य औसत वार्षिक वृद्धि दर 1.54% तथा 1993–97 के मध्य 1.16% थी।

चित्रकूट धाम मण्डल में कुल घोड़ों की संख्या 1988 में 4298, 1993 में 3507 तथा 1997 में 4200 थी, जिनकी 1988–93 के मध्य औसत वार्षिक वृद्धि दर – 3.68% तथा 1993–97 के मध्य 4.94% थी।

सुअरों की संख्या 1988, 1993, 1997 में क्रमशः 68113, 80029 तथा 87003 थी, जिनकी 1988–93 के मध्य औसत वार्षिक वृद्धि दर 3.50% तथा 1993–97 के मध्य 2.18% थी।

अन्य पशुओं की संख्या 1988 में 3729 थी। 1993 में इनकी संख्या बढ़कर 148237 हो गई क्योंकि पशुगणना में कुछ अन्य और पशुओं को सम्मिलित किया गया है। 1997 में अन्य पशुओं की संख्या 4627 रह गयी। पशुगणना 1988 जैसी रही। इस तरह 1993–97 के मध्य अन्य पशुओं की वृद्धि दर घटकर – 24.22% हो गयी। चित्रकूट धाम मण्डल में कुल मुर्गे, मुर्गियों एवं चूजों की संख्या 1988 में 134798 एवं 1993 में 153270 तथा 1997 में यह बढ़कर 215015 हो गई, जिनकी 1988–93 के मध्य औसत वार्षिक वृद्धि दर 2.74% तथा 1993–97 के मध्य 10.07% थी।

निम्नलिखित तालिका सं. 5–1 में चित्रकूट धाम मण्डल में पशुधन वृद्धि को दर्शाया गया है :–

तालिका संख्या 5.1

चित्रकूट धाम मण्डल में पशुधन एवं कुक्कुट की संख्या तथा वृद्धि दर

पशुधन	1988	1993	1997	1988–93 के मध्य औसत वार्षिक वृद्धि दर %	1993–97 के मध्य औसत वार्षिक वृद्धि दर%
1क गोजातीय देशी	512472	526152	456034	0.53	–3.33
3 वर्ष से अधिक नर	379014	387934	345926	0.47	–2.70
3 वर्ष से अधिक मादा	366981	380898	385798	0.76	0.32
बछड़ा एवं बछिया					
कुल	1258467	1294984	1187758	0.58	–2.07
1ख गोजातीय क्रास ब्रीड (दोगली)					
2.5 वर्ष से अधिक नर	421	128	117	–13.92	–2.14
2.5 वर्ष से अधिक मादा	691	924	1187	6.74	7.12
बछड़ा एवं बछिया	706	936	1174	6.52	6.36
कुल	1118	1988	2478	1.87	6.74
कुल गोजातीय	1260285	1296972	1190236	0.58	–2.06
2. महिष जातियाँ					
3 वर्ष से अधिक नर	20938	13535	12778	–7.07	–1.40
3 वर्ष से अधिक मादा	265550	293653	315681	2.12	1.88
पड़या एवं पड़िया	21222	224440	263544	1.25	4.35
कुल	497710	531628	592003	1.36	2.84
3 क– भेड़ देशी	82245	90951	100389	2.12	2.59
3 ख– भेड़ क्रास ब्रीड	443	1007	941	25.46	1.64
कुल भेड़	82688	91958	101330	2.24	2.55
4– कुल बकरा एवं बकरियाँ	500862	539494	564499	1.54	1.16
5– कुल घोड़े	4298	3507	4200	–3.68	4.94
6 क– सुअर देशी	66184	77930	84221	3.54	2.02
6 ख– सुअर क्रास ब्रीड	1929	2099	2782	1.76	8.13
कुल सुअर	68113	80029	87003	3.50	2.18
7 अन्य पशु	3729	148237	4627	775.04	–22.22
कुल पशुधन	2417685	2691825	2543898	2.27	–1.37
कुल मुर्गे, मुर्गियाँ एवं चूजे	132809	134020	190565	0.18	10.55
अन्य कुक्कुट	1989	19250	24450	173.56	6.75
कुल कुक्कुट	134798	153270	215015	2.74	10.17

स्रोत : सांख्यकीय पत्रिका, चित्रकूट धाम मण्डल, बांदा–2002

FIG. 5.1
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
BLOCK WISE DISTRIBUTION
OF ANIMAL RESOURSCES
1997
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
KURARA
SUMERPUR
JASPURA
TINDWARI
BABERU
KAMASIN
PAHARI
RAMNAGAR
MAU
SARILA
MUSKARA
MAUDAHA
GOHAND
RATH
CHARKHARI
KABRAI
BAROKHAR KHURD
MAHUA
BISANDA
PANWARI
JAITPUR
NARAINI
KARWI
MANIKPUR
INDEX
CATTLE
BUFFALO
SHEEP
GOAT
OTHER ANIMAL
ANIMAL
225000
150000
76000

तालिका संख्या 5–2 तथा परिशिष्ट संख्या 5–1 में दृष्टिपात करने से यह ज्ञात होता है कि चित्रकूट मण्डल में कुल पशुओं की संख्या 2543898 है, जिसमें 46.7% गोजातीय, 23.3% महिष जातीय 4.0% भेडें, 22.2% बकरी–बकरा, 0.2% घोड़े एवं टट्टू, 3.4% सुअर तथा 0.2% अन्य पशु हैं। सर्वाधिक पशु बांदा जनपद में 955163 हैं। यहॉ पर 50% गोजातीय 25.2% महिष जातीय 2.2% भेड़ें, 19.1% बकरी, बकरा, 0.2% घोडे एवं टट्टू4.2% सुअर तथा 0.1% अन्य पशु हैं। सबसे कम पशुओं की संख्या महोबा जनपद में है, यहाँ पर 418748 पशुओं में 41.2% गोजातीय, 18.7% महिष जातीय, 6.6% भेड़े, 28. 9% बकरी, बकरा, 0.2% घोड़े एवं टट्टू, 4.2% सुअर तथा 0.2% अन्य पशु हैं। विकासखण्डो में सर्वाधिक पशुओं की संख्या मानिकपुर विकासखण्ड में 187439 तथा सबसे कम पशुओं की संख्या राठ विकासखण्ड में 61422 है। इसके पश्चात् क्रमशः नरैनी में 181409, बबेरु में 128195, मौदहा में 124965, महुआ में 114313, विसण्डा में 113411, बड़ोखर खुर्द में 112072, तिन्दवारी में 106397, कबरई में 104580, जैतपुर में 102319, पनवाड़ी में 101922, सुमेरपुर में 101117, कर्वी में 95623 पशु है। शेष विकास खण्डों में पशुओं की संख्या 61422 से 91725 के मध्य है।

विकासखण्डों में गोजातीय पशुओं का सर्वाधिक प्रतिशत कमासिन में 55.5% है तथा सबसे कम राठ में 32.4% है। इसके अतिरिक्त रामनगर में गोजातीय पशुओं का प्रतिशत 54.4%, विसण्डा में 54. 3%, पहाड़ी में 53.3% कर्वी में 53.0, % मऊ में 52.1%, बड़ेखर खुर्द में 51.4%, महुआ में 50.1%, बबेरु में 49.6%, सुमेरपुर में 49.3%, नरैनी में 49.1%, मानिकपुर में 48.6%, तिन्दवारी में 48.6%, चरखारी में 46.6% है। शेष विकासखण्डों में 44% से कम है।

महिष जातीय पशुओं का सर्वाधिक प्रतिशत राठ विकासखण्ड में 9.6% तथा सबसे कम कमासिन विकासखण्ड में 0.9% पाया जाता है। इसके अतिरिक्त चरखारी में 8.6%, पनवाड़ी में 7.5%, गोहाण्ड में 7.2%, रामनगर में 6.2% सरीला में 6.1%, कर्वी में 6.0%, जैतपुर में 5.9%, कबरई में 5.7%, तथा मऊ में 5.0% है। शेष विकासखण्डों में 5% से कम है।

बकरा–बकरी का कुल पशुओं से सर्वाधिक प्रतिशत जैतपुर विकासखण्ड में32.6% पनवाड़ी विकासखण्ड में 30.3%, जसपुरा में 28.3%, मौदहा में 28.2%, कबरई में 26.7%, राठ में 25.5%, सरीला में 25.4%, मुस्करा में 25.1%, चरखारी में 24.4%, तिन्दवारी में 23.8%, कुरारा में 23.6% गोहाण्ड में 23. 2%, मानिकपुर में 21.6% तथा शेष विकासखण्डों में 21% से कम है। घोड़े एवं टट्टू का कुल पशुओं से सर्वाधिक प्रतिशत कमासिन तथा रामनगर विकासखण्ड में (0.3%)है। शेष विकासखण्डों में 0.1% या 0. 2% है।

सुअरों का सर्वाधिक प्रतिशत गोहाण्ड में तथा कुरारा विकासखण्ड में 6.5% है और सबसे कम कर्वी तथा मानिकपुर विकासखण्ड में 1.8% है। इसके अतिरिक्त राठ में 5.7%, सरीला में 4.8%, मुस्करा में 4.1%, सुमेरपुर में 3.9%, पनवाड़ी में 3.9%, जैतपुर में 3.7%, कबरई में 3.6%, तथा चरखारी में 3.5% है। शेष विकासखण्डो में इनका प्रतिशत 1.8% से 3.4% के मध्य है।

अन्य पशुओं का प्रतिशत सरीला तथा कर्वी में अधिक (0.4% है) एवं अन्य विकासखण्डों में इससे कम है। (मानचित्र सं. 5–1)।

चित्रकूट धाम मण्डल के जनपदों में सर्वाधिक गोजातीय पशुओं का कुल पशुओं से प्रतिशत चित्रकूट जनपद में 51.4% है तथा सबसे कम महोबा जनपद में 41.2% है। महिष जातीय पशुओं का सर्वधिक प्रतिशत बांदा जनपद 25.6% तथा सबसे कम 18.7% महोबा जनपद में है।
भेड़ों का सर्वाधिक प्रतिशत महोबा जनपद में 6.6% तथा सबसे कम बांदा में 2.2% है। बकरे–बकरियों का कुल पशुओं से प्रतिशत सबसे अधिक महोबा जनपद में 28.9% तथा सबसे कम चित्रकूट जनपद में 18.9% है। घोड़े एवं टट्टू का प्रतिशत प्रत्येक जनपद में समान (0.2%) है। सुअरों का सर्वाधिक प्रतिशत हमीरपुर जनपद में 4.6% तथा सबसे कम बांदा जनपद में 2.8% है। निम्नलिखित तालिका सं. 5–2 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार कुल पशुओं की संख्या तथा प्रत्येक वर्ग के पशुओं का प्रतिशत दर्शाया गया है :–

तालिका संख्या 5–2

चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार पशुधन–प्रतिशत में(पशुगणना वर्ष 1997)

क्रसं.	विकासखण्ड	कुल पशुओं की संख्या	गोजातीय	महिष जातीय	भेड़	बकरी–बकरा	घोड़े एवं टट्टू	सुअर	अन्य पशु
1	कुरारा	61594	41.5	25.4	2.9	23.6	0.1	6.5	–
2	सुमेरपुर	101117	49.3	23.4	2.4	20.8	0.2	3.9	–
3	सरीला	87254	43.9	19.3	6.1	25.4	0.1	4.8	0.4
4	गोहाण्ड	63148	39.0	24.0	7.2	23.2	0.1	6.5	–
5	राठ	61422	36.4	22.6	9.6	25.5	0.2	5.7	–
6	मुस्करा	89546	39.1	28.1	3.4	25.1	0.2	4.1	–
7	मौदहा	124965	42.1	24.8	2.0	28.2	0.2	2.7	–
नगरीय		33989	30.9	25.7	0.6	35.2	0.2	6.2	1.2
जनपद हमीरपुर		623035	41.5	24.1	4.1	25.3	0.2	4.6	0.2
8	पनवाड़ी	101922	38.0	19.9	7.5	30.3	0.2	3.9	0.2
9	जैतपुर	102319	39.9	17.7	5.9	32.6	0.1	3.7	0.1
10	चरखारी	81487	46.6	16.7	8.6	24.4	0.1	3.5	0.1
11	कबरई	104580	42.0	21.6	5.7	26.7	0.2	3.6	0.2
नगरीय		28440	39.6	13.8	3.7	31.2	0.9	9.8	1.0
जनपद महोबा		418748	41.2	18.7	6.6	28.9	0.2	4.2	0.2
12	जसपुरा	71911	42.0	26.1	1.1	28.3	0.1	2.2	0.2
13	तिन्दवारी	106397	48.6	20.7	4.4	23.8	0.1	2.3	0.1
14	बड़ोखर खुर्द	112072	51.4	23.6	2.2	20.3	0.2	2.1	0.2
15	बबेरु	128195	49.6	25.4	2.7	18.7	0.2	3.3	0.1
16	कमासिन	89823	55.5	21.7	0.9	18.4	0.3	3.1	0.1
17	विसण्डा	113411	54.3	29.0	2.1	11.0	0.1	3.4	0.1
18	महुआ	114313	50.1	30.8	1.9	14.5	0.1	2.5	0.1
19	नरैनी	181409	49.1	26.4	2.2	20.2	0.1	1.9	0.1
नगरीय		37632	43.9	26.1	1.1	20.3	0.4	7.8	0.4
जनपद बांदा		955163	50.0	25.6	2.2	19.1	0.2	2.8	0.1
20	पहाड़ी	93166	53.3	20.9	4.0	18.2	0.2	3.4	0.3
21	कर्वी	95623	53.0	20.5	6.0	18.2	0.1	1.8	0.4
22	मानिकपुर	187439	48.6	23.1	4.7	21.6	0.1	1.8	0.1
23	रामनगर	65801	54.4	24.2	6.2	12.2	0.3	2.5	0.2
24	मऊ	91775	52.1	20.4	5.0	19.0	0.2	3.1	0.2
नगरीय		13148	48.5	10.9	–	26.0	0.3	9.9	4.4
जनपद चित्रकूट		546952	51.4	21.7	4.9	18.9	0.2	2.6	0.3
मण्डल		2543898	46.7	23.3	4.0	22.2	0.2	3.4	0.2

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002 के आँकड़ों के आधार पर

5 (iii) पशुओं का घनत्व एवं वितरण :–

चित्रकूट धाम मण्डल में पशुगणना में गोजातीय, महिषजातीय, भेड़, बकरा–बकरी, घोड़े एवं टट्टू, सुअर तथा अन्य पशुओं के अन्तर्गत गधे , खच्चर, ऊँट तथा हाँथी को सम्मिलित किया गया है। अन्य पालतू जीव जन्तुओं में पोल्ट्री ग्रुप (मुर्गे, मुर्गी, चूजे तथा बत्तख) की गणना की गयी है, जिनका घनत्व एवं वितरण निम्नलिखित है:–

गोजातीय पशुओं का घनत्व एवं वितरण :— विविध पशुओं में गाय, बैल सबसे उपयोगी एवं आवश्यक है। खेती के अनेक कामों में बैलों का प्रयोग किया जाता है। खेती की जुताई अधिकांशतः बैलों द्वारा ही होती है। खेतों की सिंचाई के लिए बैल कुओं से रहट द्वारा पानी खींचता है। गाँवों की फसल शहरों तक बिक्री हेतु लाने के लिए अधिकतर बैलगाड़ी काम में लाई जाती है, अन्न से भूसा निकालने के लिए भी बैल ही काम में लाये जाते हैं।

गाय का महत्व बैलों से कम नहीं है। हिन्दुओं में गाय का स्थान बहुत उच्च्य माना गया है। गाय पूजनीय एवं माता तुल्य मानी गयी है। गाय के दूध से उत्तम प्रकार का प्रोटीन प्राप्त होता है जो भोजन का एक आवश्यक तत्व है। गाय के दूध से ही दही, मक्खन, छेना, और खोया प्राप्त होता है। *''दुधारू गाय के ताजे गोबर एवं गाय के सींग से तथा कुछ अन्य स्थानीय उपलब्ध पदार्थों से प्रत्येक गाँव में कृषि के लिए उपयोगी जैविक खाद बनायी जा सकती है, जो आधुनक कृषि में विद्यमान विषैलें रासायनिक उर्वरक से छुटकारा प्रदान कर आत्मनिर्भरता एवं समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकती है।''*[5] गाय का बछड़ा बड़ा होकर खेतों में हल चलाता है। मरने के बाद भी इसका चमड़ा, हड्डी खुर और सींग सभी काम में आते हैं। गायें दो प्रकार की होती हैं देशी गाय तथा क्रास ब्रीड। क्रास ब्रीड गायें दूध अधिक देती हैं। यूरोपीय देशों में 10—12 किग्रा. प्रतिदिन से कम दूध देने वाली गायों को अनार्थिक माना जाता है, जबकि हमारे यहाँ बहुत कम गायें ऐसी हैं जो 10—12 किग्रा. प्रतिदिन दूध देती हैं। हमारी अधिकांश गायें 2—3 किग्रा. ही दूध देती हैं।

गाय की उन्नत दुधारु नस्लें साहीवाल, लाल सिन्धी, गिर तथा देवनी हैं।

भारवाही नस्लें— खैरीगढ़, केनवरिया, मालवी, नागौरी, तथा पवॉर हैं

दुकाजी नस्लें— हरियाणा, गंगातीरी, थारपाकर, तथा कॉकरेज हैं।

केनवरिया नस्ल बांदा जनपद में केन नदी के आस—पास पायी जाती है। चित्रकूट धाम मण्डल में 60% गायें घटिया नस्ल की हैं जो बहुत कम दूध देती हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में गोजातीय पशुओं का घनत्व 80 गोजातीय पशु प्रति वर्ग किमी है। बांदा जनपद में सर्वाधिक घनत्व — 116/किमी^{2} है। इसके अतिरिक्त चित्रकूट जनपद में 78.9/ किमी^{2}, तथा हमीरपुर जनपद में 62.8/ किमी^{2} है।

विकासखण्डों में गोजातीय पशुओं का सर्वाधिक घनत्व विसण्डा विकासखण्ड में 194.4 प्रतिवर्ग किमी. है। सबसे कम चरखारी विकासखण्ड में 43.8 प्रतिवर्ग किमी है। इसके अतिरिक्त नरैनी में 164.8 गोजातीय पशु प्रतिवर्ग किमी., महुआ में 138.8, बबेरु में 105.7, रामनगर में 105.7, मऊ में 98.4, कमासिन में 94.4, मानिकपुर में 90.1, कर्वी में 89.6, तिन्दवारी में 86.4, बड़ोदर खुर्द में 85.8, पहाड़ी में 85.5, सुमेरपुर में 84.1, है शेष विकासखण्डों में यह घनत्व 43.8 से 73.8 के मध्य है।

गोजातीय पशुओं के घनत्व को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है:—
(तालिका सं. 5—4)

(1) अति उच्च्व घनत्व — (150 से अधिक गोजातीय पशु प्रति वर्ग किमी.)— चित्रकूट धाम मण्डल में 150 से अधिक घनत्व विसण्डा तथा नरैनी विकासखण्डों में पाया जाता है।

(2) उच्च्व घनत्व — (100 से 150 गोजातीय पशु प्रति वर्ग किमी.)— महुआ, बबेरु, रामनगर में अधक घनत्व पाया जाता है।

(3) मध्यम घनत्व — (50 से 100 गोजातीय पशु प्रति वर्ग किमी.)— मऊ, कमासिन, मानिकपुर, कर्वी, तिन्दवारी, बड़ोदर खुर्द, पहाड़ी, सुमेरपुर,, जसपुरा, मुस्करा, जैतपुर, पनवाड़ी, सरीला, कुरारा, तथा मौदहा विकासखण्डों में पाया जाता है।

(4) न्यून घनत्व — (50 गोजातीय पशु प्रति वर्ग किमी से कम) — 50से कम घनत्व गोहाण्ड, राठ, कबरई तथा चरखारी विकासखण्डों में पाया जाता है। (मानचित्र सं. 5.2)

चित्रकूट धाम मण्डल में कुल गोजातीय पशुओं का सर्वाधिक प्रतिशत मानिकपुर विकासखण्ड में (7.7%) है तथा सबसे कम प्रतिशत राठ विकासखण्ड में (1.9%) है। इसके अतिरिक्त नरैनी में 7.5% बबेरु में 5.4% विसण्डा में 5.2%, महुआ तथा बड़ोखर खुर्द प्रत्येक में 4.8%, मौदहा में 4.4%, तिन्दवारी
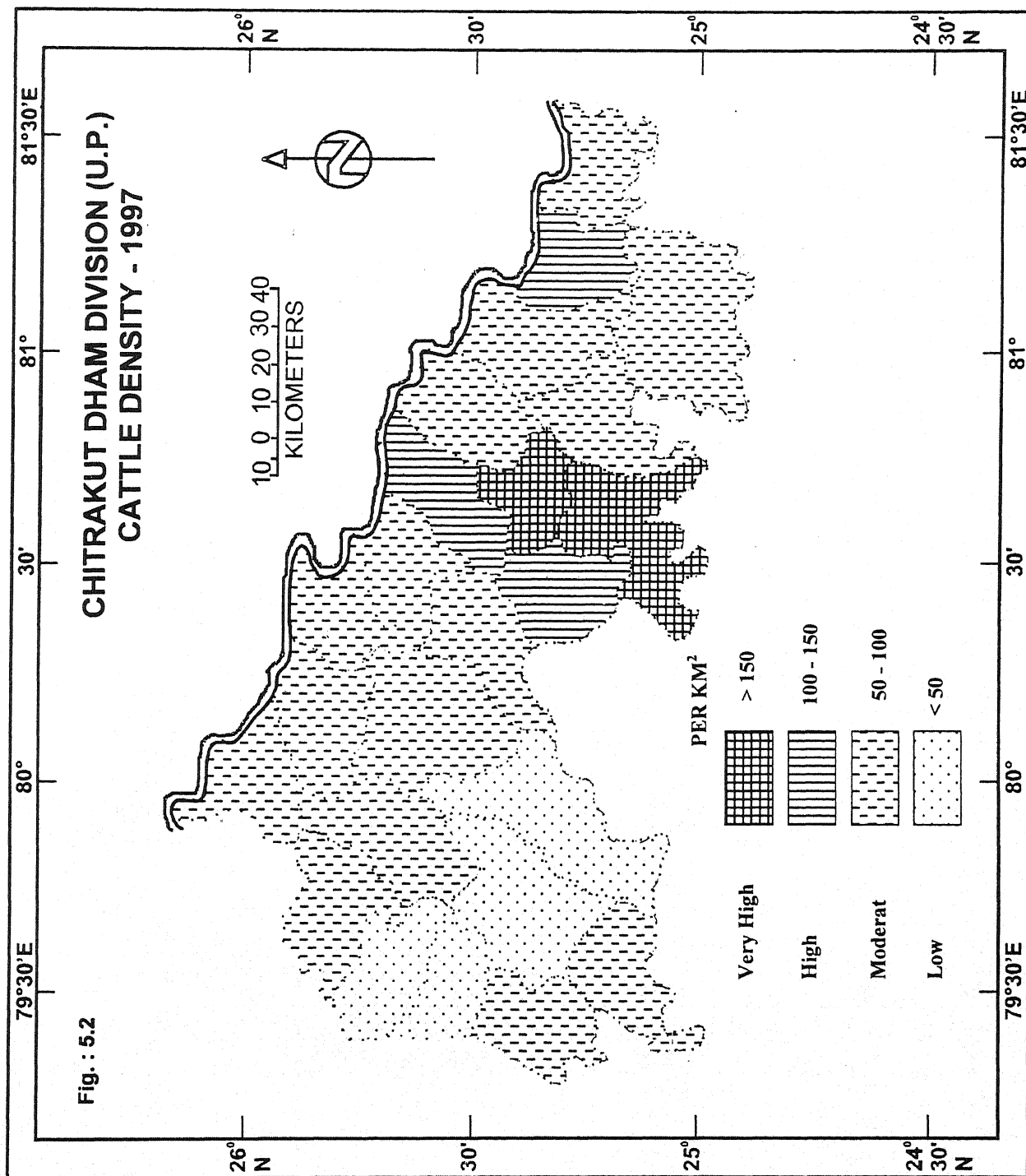
में 4.3%, कर्वी में 4.3%, सुमेरपुर, कमासिन तथा पहाड़ी प्रत्येक में 4.2% तथा मऊ में 4.0% है। **शेष** विकासखण्डों में 4% से कम गोजातीय पशु पाये जाते हैं। (तालिका सं. 5.3)

निम्नलिखित तालिका सं. 5.3 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार तथा जनपदवार गोजातीय पशुओं का घनत्व एवं वितरण प्रदर्शित किया गया है:–

तालिका सं. 5–3

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार तथा जनपदवार गोजातीय पशुओं का घनत्व एवं वितरण

(पशुगणना वर्ष 1997)

क्रसं.	विकासखण्ड / जनपद	क्षेत्रफल वर्ग किमी.	गोजातीय पशुओं की संख्या	घनत्व प्रति वर्ग किमी	प्रतिशत
1	कुरारा	440.0	25573	58.1	2.1
2	सुमेरपुर	593.0	49896	84.1	4.2
3	सरीला	651.2	38306	58.8	3.2
4	गोहाण्ड	532.0	24627	46.3	2.1
5	राठ	451.5	22346	49.5	1.9
6	मुस्करा	510.1	34972	68.6	2.9
7	मौदहा	924.4	52546	56.8	4.4
नगरीय		19.7	10503	533.1	0.9
जनपद हमीरपुर		4121.9	258769	62.8	21.7
8	पनवाड़ी	619.4	38727	62.5	3.3
9	जैतपुर	603.2	40838	67.7	3.4
10	चरखारी	865.5	37949	43.8	3.2
11	कबरई	953.0	43907	46.1	3.7
नगरीय		29.9	11249	376.2	0.9
जनपद महोबा		3071.0	172670	56.2	14.5
12	जसपुरा	409.3	30201	73.8	2.5
13	तिन्दवारी	599.0	51736	86.4	4.3
14	बड़ोखर खुर्द	671.7	57650	85.8	4.8
15	बबेरु	602.2	63641	105.7	5.4
16	कमासिन	527.8	49823	94.4	4.2
17	विसण्डा	306.7	61564	194.4	5.2
18	महुआ	412.7	57270	138.8	4.8
19	नरैनी	540.0	89008	164.8	7.5
नगरीय		34.8	16516	474.6	1.4
जनपद बांदा		4114.2	477409	116.0	40.1
20	पहाड़ी	580.9	49690	85.5	4.2
21	कर्वी	565.4	50670	89.6	4.3
22	मनिकपुर	1585.7	91018	90.1	7.7
23	रामनगर	338.9	35819	105.7	3.0
24	मऊ	485.9	47813	98.4	4.0
नगरीय		10.7	6378	596.1	0.5
जनपद चित्रकूट		3567.5	281388	78.9	23.7
चित्रकूट धाम मण्डल		14874.6	1190236	80.0	100.0

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें 2002

महिष जातीय पशु :– भैंस पालने की दृष्टि से चित्रकूट धाम मण्डल की जलवायु बड़ी अनुकूल है। यहाँ प्रायः सभी स्थानों मे भैंसे पाली जाती हैं। गाय की अपेक्षा भैंस अधिक दूध देती है। भैंस दूध के लिए अधिक पाली जाती है। मण्डल का 55% दूध भैंसों द्वारा प्राप्त होता है। घी, मक्खन, और दही की दृष्टि से तो भैंसों का महत्व गायों से कहीं अधिक है क्योंकि भैंस का दूध गाढ़ा होता है और इसमें मक्खन तथा घी का अनुपात अधिक होता है। भैंसे अधिकतर गाड़ी खींचने, हल चलाने तथा कृषि के अन्य कार्यो में प्रयुक्त हेते हैं।

भैंसों की लगभग 25 नस्लें हैं जिनमें काठियावाड़ की जाफराबादी, ओर पंजाब की मुर्रा जाति अधिक विख्यात है। जाफराबादी नस्ल की भैंसें कभी–कभी एक दुग्धकाल में 10,000 पौंड(4.53 टन) तक दूध देती है। मुर्रा भैंस अनेक जलवायु प्रदेशों में रह सकती है और इसके दूध से 11% तक घी निकाला जाता है। इसके अतिरिक्त महाराष्ट्र की नागपुरी और गुजरात की मेहसाना नस्ल की भैंसे भी अच्छी जाति की भैंसे होती है।

चित्रकूट धाम मण्डल में कुल भैंसों (Buffaloes) की संख्या 592003 है। यहाँ भैंसों का घनत्व 39.8 भैसें प्रति वर्ग किमी हैं। सबसे अधिक घनत्व बांदा जनपद में 59.6 भैंसे/किमी^{2} तथा सबसे कम महोबा जनपद में 25.5 भैंसे/किमी^{2} है। इसके अतिरिक्त हमीरपुर जनपद में 36.4 भैंसे/किमी^{2} एवं चित्रकूट जनपद में 33.2 भैंसे/किमी^{2} है।विकास खण्डो में सर्वाधिक घनत्व विसण्डा विकासखण्ड में 103.9 भैंसे प्रति वर्ग किमी है तथा सबसे कम चरखारी विकासखण्ड में 15.8 भैंसे प्रति वर्ग किमी है। इसके अतिरिक्त नरैनी में 88.6 महुआ में 85.2 बबेरु में 54.1, मुस्करा में 49.3, रामनगर में 46.9, जसपुरा में 45.9, मानिकपुर में 43.2, संमेरपुर में 39.9, बड़ोखर खुर्द में 39.4, मऊ में 38.5, कमासिन में 36.9, तिन्दवारी में 36.7, कुरारा में 35.6 भैंसे प्रति वर्ग किमी है।

चित्रकूट धाम मण्डल को महिष घनत्व की दृष्टि से निम्नलिखित चार क्षेत्रों में बाँट सकते हैं:–

(1) अति उच्च घनत्व के क्षेत्र (90 भैंसे प्रति वर्ग किमी से अधिक) :– इस प्रकार का घनत्व केवल विसण्डा विकासखण्ड में पाया जाता है।

(2) उच्च घनत्व के क्षेत्र (60 से 90 महिष / किमी^{2})– इसके अंर्तगत नरैनी, महुआ विकासखण्ड आते हैं।

(3) मध्यम घनत्व के क्षेत्र (30 से 60 महिष /किमी^{2})– बबेरु, मुस्करा, रामनगर, जसपुरा, मानिकपुर, सुमेरपुर, बड़ोखर खुर्द, मऊ, कमासिन, तिन्दवारी, कुरारा, राठ, मौदहा, पनवाड़ी, पहाड़ी तथा कर्वी विकासखण्डों में मध्यम घनत्व पाया जाता है।

(4) न्यून घनत्व :– (30 महिष / किमी.^{2} से कम)– न्यून महिष घनत्व के विकासखण्ड सरीला, गोहाण्ड, जैतपुर, कबरई तथा चरखारी हैं। (मानचित्र सं. 5–3) चित्रकूट धाम मण्डल में सर्वाधिक महिष जातीय पशुओं का प्रतिशत नरैनी विकासखण्ड में 8.0% पाया जाता है। सबसे कम प्रतिशत चरखारी विकासखण्ड में 2.3% है। इसके अतिरिक्त मानिकपुर विकासखण्ड में 7.3%, महुआ में 5.9%, विसण्डा में 5.6%, बबेरु में 5.5%, मौदहा में 5.2%, बडोंखर खुर्द में 4.5%, मुस्करा में 4.3%, सुमेरपुर में 4.0%, कबरई में 3.8%, तिन्दवारी में 3.7%, पनवाड़ी में 3.4%, कमासिन पहाड़ी तथा कर्वी प्रत्येक में 3.3% जसपुरा एवं मऊ प्रत्येक में 3.2%, जैतपुर में 3.0% है। शेष विकासखण्डों में यह 3% से कम है।
निम्नलिखित तालिका सं. 5–4 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार तथा जनपदवार महिष जातीय पशुओं का घनत्व एवं वितरण प्रदर्शित किया गया है :–

तालिका 5.4

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार तथा जनपदवार महिष जातीय पशुओं का घनत्व एवं वितरण (पशुगणना वर्ष 1997)

क्र.सं	विकासखण्ड	क्षेत्रफल वर्ग किमी.	महिष जातीय पशुओं की सं.	घनत्व प्रति वर्ग किमी.	प्रतिशत
1	कुरारा	440.0	15670	35.6	2.6
2	सुमेरपुर	593.0	23686	39.9	4.0
3	सरीला	651.2	16811	25.8	2.8
4	गोहाण्ड	532.0	15145	28.5	2.6
5	राठ	451.5	13885	30.8	2.4
6	मुस्करा	510.1	25167	49.3	4.3
7	मौदहा	924.4	30956	33.5	5.2
नगरीय		19.7	8713	442.3	1.5
जनपद हमीरपुर		4121.1	150033	36.4	25.4
8	पनवाड़ी	619.4	20242	32.7	3.4
9	जैतपुर	603.2	18049	29.9	3.0
10	चरखारी	865.5	13629	15.8	2.3
11	कबरई	953.0	22562	23.7	3.8
नगरीय		29.9	3914	130.9	0.7
जनपद महोबा		3071.0	78396	25.5	13.2
12	जसपुरा	409.3	18795	45.9	3.2
13	तिन्दवारी	599.0	22002	36.7	3.7
14	बड़ोखर खुर्द	671.7	26485	39.4	4.5
15	बबेरु	602.2	32587	54.1	5.5
16	कमासिन	527.8	19488	36.9	3.3
17	विसण्डा	316.7	32914	103.9	5.6
18	महुआ	412.7	35151	85.2	5.9
19	नरैनी	540.0	47824	88.6	8.0
नगरीय		34.8	9831	282.5	1.7
जनपद बांदा		4114.2	245077	59.6	41.4
20	पहाड़ी	580.9	19467	33.5	3.3
21	कर्वी	565.4	19629	34.7	3.3
22	मानिकपुर	1003.9 581.8 वन क्षे0	43328	43.2	7.3
23	रामनगर	338.9	15910	46.9	2.6
24	मऊ	485.9	18727	38.5	3.2
नगरीय		10.7	1436	134.2	0.3
जनपद चित्रकूट		3567.5	118497	33.2	20.0
मण्डल		14874.6	592003	39.8	100.0

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें 2002, के आँकड़ों के आधार पर

Fig. : 5.3
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
BUFFALO DENSITY - 1997
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
N
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26°
N
30'
25°
24°
30'
N
PER KM²
Very High
> 90
High
60 - 90
Moderat
30 - 60
Low
< 30
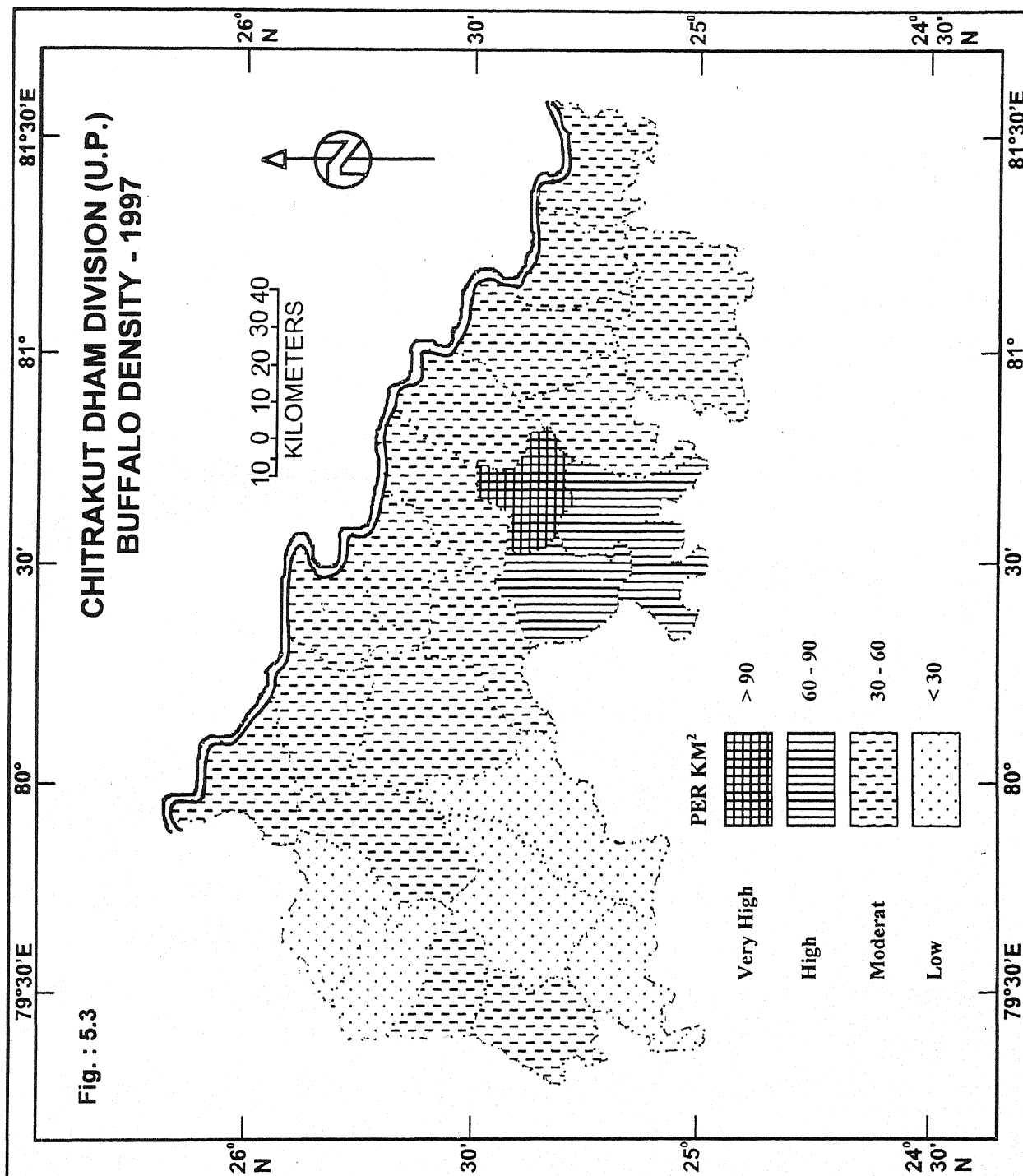
भेंडें (Sheep) :– भेड़ें मुख्यतः ऊन के लिए पाली जाती हैं, माँस प्राप्त करना इसका गौण लक्ष्य है। चित्रकूट धाम मण्डल में पायी जाने वाली भेडों की ऊन घटिया किस्म की होती है और इससे अधिकांशतः मोटे कम्बल बनाये जाते हैं। यहाँ भेंड पालने का काम 'गड़रिये' करते हैं, जिनके भेंड़ पालने का ढग बहुत अवैज्ञानिक है। यही कारण है कि यहाँ की एक भेंड़ वर्ष में 900 ग्राम से अधिक ऊन नहीं देती, जबकि राजस्थान में पायी जाने वाली नस्ल की एक भेंड़ से 2.3 से 3.5 किग्रा. तक ऊन प्राप्त होती है।

चित्रकूट धाम मण्डल में भेंड़ों की कुल संख्या 101330 है। मण्डल में भेड़ों का घनत्व 6.8 भेड़ प्रति वर्ग किमी है। महोबा जनपद में भेड़ों का घनत्व सर्वाधिक 9 भेड़ें/ किमी^{2} तथा सबसे कम घनत्व बांदा जनपद में 5.1 है। इसके अतिरिक्त यह घनत्व चित्रकूट में 6.8 तथा हमीरपुर में 6.2 है।

विकासखण्डों में सबसे अधिक घनत्व राठ में 13.1 भेड़/किमी^{2} तथा सबसे कम कमासिन में 1.6 भेंड़/ किमी^{2} है। इसके अतिरिक्त पनवाड़ी में 12.3, रामनगर में 12.0, कर्वी में 10.1, जैतपुर में 10.0, मऊ में 9.4, मानिकपुर में 8.7, गोहाण्ड में 8.5, चरखारी तथा सरीला में 8.1 तिन्दवारी में 7.9, नरैनी में 7.5, विसण्डा में 7.4, कबरई में 6.3, पहाड़ी में 6.3 तथा मुस्करा में 6.0 भेड़ें प्रतिवर्ग किमी हैं। शेष विकासखण्डों में 6.0 से कम है। (तालिका सं. 5–5)

भेड़ों के घनत्व को तीन भागों में बाँटा जा सकता है :–

(1) उच्च घनत्व (10 भेड़ें/किमी^{2} से अधिक) – इसके अंतर्गत राठ, पनवाड़ी, रामनगर, तथा कर्वी विकासखण्ड सम्मिलित हैं।

(2) मध्यम घनत्व (6 से 10 भेड़ें/किमी^{2})– इसके अन्तर्गत जैतपुर, मऊ, मानिकपुर, गोहाण्ड, चरखारी, सरीला, तिन्दवारी, नरैनी, विसण्डा, कबरई, पहाड़ी, तथा मुस्करा विकासखण्ड सम्मिलित हैं।

(3) निम्न घनत्व (0 से 6 भेड़ें/किमी^{2})– इसके अन्तर्गत कुरारा, सुमेरपुर, मौदहा, जसपुरा, बड़ोखर खुर्द, बबेरु, कमासिन, महुआ, विकासखण्ड सम्मिलित हैं। (मानचित्र सं. 5–4)

महोबा जनपद में मण्डल की 27.4% भेड़ें पायी जाती हैं। 26.5% चित्रकूट जनपद में, 25.3% हमीरपुर जनपद में तथा सबसे कम बांदा जनपद में 20.8% भेंड़े पायी जाती है। विकासखण्डों में सर्वाधिक प्रतिशत मानिकपुर का 8.7% है। इसके अतिरिक्त पनवाड़ी में 7.5% चरखारी में 7.5% में 7. 0%, जैतपुर में 6.0%, कबरई में 5.9%, राठ में 5.8%, कर्वी में 5.6%, सरीला में 5.2%, शेष विकासखण्डों में 5% से कम भेड़ें पायी जाती हैं।

निम्नलिखित तालिका संख्या 5–5 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार तथा जनपदवार भेड़ों का घनत्व एवं वितरण प्रदर्शित किया गया है :–

तालिका सं. 5–5

चित्रकूट धाम मण्डल मे विकास खण्डवार तथा जनपदवार भेड़ों का घनत्व तथा वितरण (पशुगणना वर्ष 1997)

क्र.सं	विकासखण्ड	भेडों की संख्या	घनत्व प्रति किमी^{2}	प्रतिशत
1	कुरारा	1792	4.1	1.8
2	सुमेरपुर	2426	4.1	2.4
3	सरीला	5299	8.1	5.2
4	गोहाण्ड	4521	8.5	4.5
5	राठ	5913	13.1	5.8
6	मुस्करा	3046	6.0	3.0
7	मौदहा	2481	2.7	2.4
नगरीय		204	10.4	0.2
जनपद हमीरपुर		25682	6.2	25.3
8	पनवाड़ी	7609	12.3	7.5
9	जैतपुर	6024	10.0	0.2
10	चरखारी	7029	8.1	7.0
11	कबरई	6007	6.3	5.9
नगरीय		1047	35.0	1.0
जनपद–महोबा		277116	9.0	27.4
12	जसपुरा	769	1.9	0.8
13	तिन्दवारी	4712	7.9	4.6
14	बड़ोखर खुर्द	2417	3.6	2.4
15	बबेरु	3410	5.7	3.4
16	कमासिन	862	1.6	0.8
17	विसण्डा	2331	7.4	2.3
18	महुआ	2169	5.3	2.1
19	नरैनी	4038	7.5	4.0
नगरीय		403	11.6	0.4
जनपद– बांदा		21111	5.1	20.8
20	पहाड़ी	3676	6.3	3.6
21	कर्वी	5702	10.1	5.6
22	मानिकपुर	8771	8.7	8.7
23	रामनगर	4083	12.0	4.0
24	मऊ	4589	9.4	4.6
नगरीय		–	–	–
जनपद चित्रकूट		26821	7.5	26.5
मण्डल		101330	6.8	100.0

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें

Fig. : 5.4
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
SHEEP DENSITY - 1997
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
PER KM²
High
> 10
Moderat
6 - 10
Low
< 6
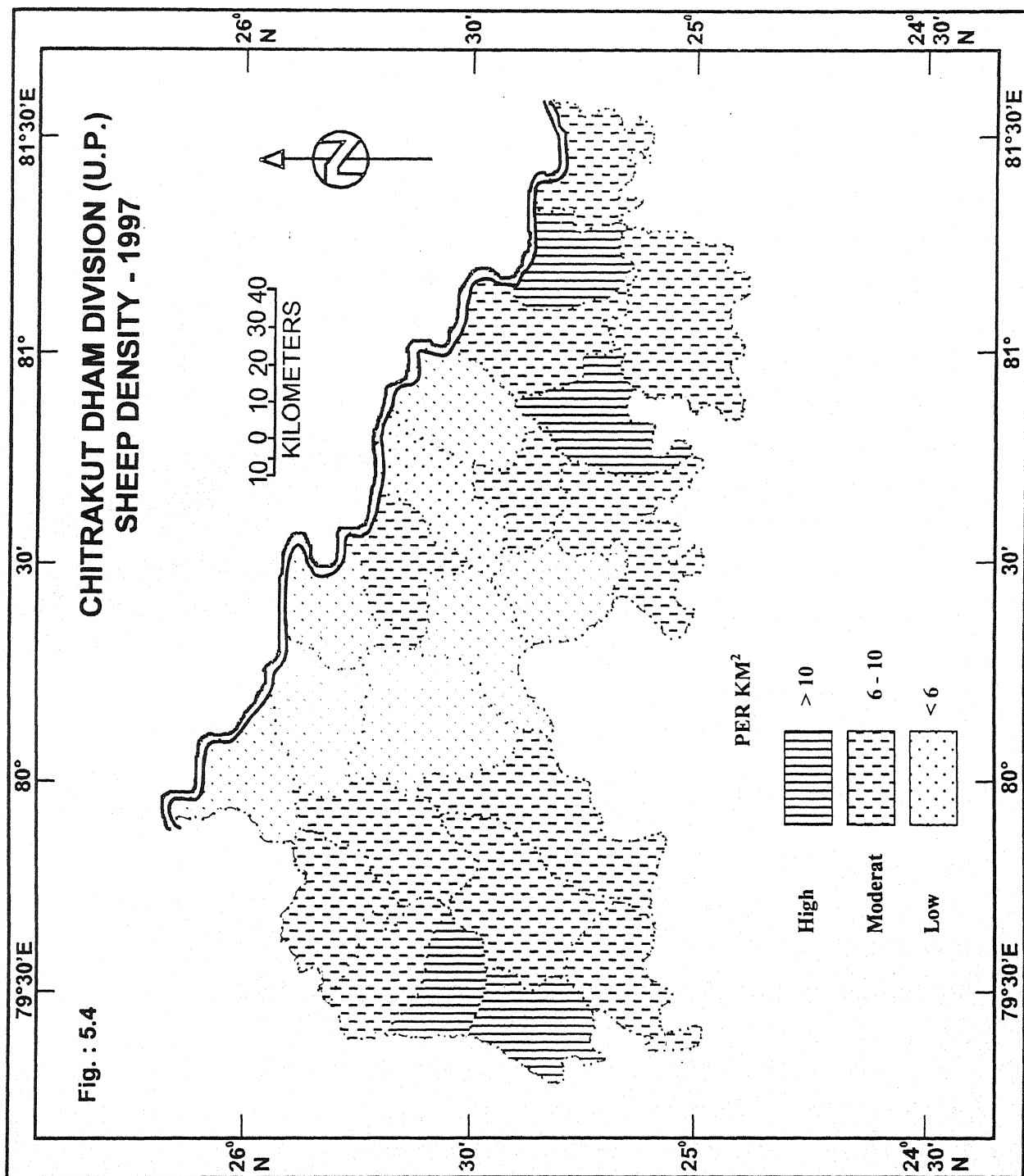
बकरे–बकरियाँ :– *"विभिन्न प्रकार की जलवायु दशाओं में जीवित रह सकने की क्षमता वाली और सुगमता से पाली जा सकने वाली बकरी जाति को न केवल भारत वरन् सम्पूर्ण संसार में निर्धन व्यक्ति की गाय कहा है।"*[6] बकरियाँ माँस और दूध दोनों दृष्टियों से पाली जाती हैं। यहाँ अधिकतर माँस बकरों का ही खाया जाता है। चित्रकूट धाम मण्डल के कृषक बकरियों के सस्तेपन के कारण दूध के लिए पालते हैं। बकरी दूध कम देती है परन्तु अच्छे नस्ल की बकरियाँ ढाई, तीन लीटर तक दूध देती हैं। जमुनापारी तथा बरबरी नस्ल की बकरी दूध देने की दृष्टि से अच्छी होती है। बालकों तथा रोगियों के लिए बकरी का दूध विशेष लाभदायक होता है। बकरियों की खाल भी मजबूत होती है और देशी जूते बनाने के काम आती है। मण्डल में लगभग दो लाख लीटर बकरियों से दूध प्राप्त होता है।

चित्रकूट धाम मण्डल में कुल बकरे तथा बकरियों की संख्या 564499 है, जिनका घनत्व 37.9 प्रति वर्ग किमी हैं। सर्वाधिक घनत्व बांदा जनपद में 44.3 बकरे बकरियाँ प्रति वर्ग किमी है तथा न्यूनतम घनत्व चित्रकूट जनपद में 29.0 है। इसके अतिरिक्त महोबा जनपद में 39.4 तथा हमीरपुर जनपद में 38.3 बकरे बकरियाँ प्रति वर्ग किमी है।

विकासखण्डों में सर्वाधिक घनत्व नरैनी विकासखण्ड में 68.0 बकरे–बकरियाँ प्रति वर्ग किमी है तथा सबसे कम घनत्व चरखारी विकासखण्ड में 23.0 है। इसके अतिरिक्त जैतपुर में 55.3, पनवाड़ी में 50.0 जसपुरा में 49.6, मुस्करा में 44.0, तिन्दवारी में 42.2, मानिकपुर में 40.4, महुआ में 40.2, बबेरु में 39.8, विसण्डा में 39.3, मौदहा में 38.1, मऊ में 35.9, सुमेरपुर में 35.4, राठ में 34.7, सरीला में 34.1 बकरे बकरियाँ प्रति वर्ग किमी हैं । (तालिका सं. 5–6)

बकरे बकरियों के घनत्व को चार भागों में विभक्त कर सकते हैं :–

(1) अति उच्च घनत्व (50 से अधिक बकरे बकरियाँ प्रति वर्ग किमी.):– इसके अन्तर्गत नरैनी तथा जैतपुर विकासखण्ड आते हैं।

(2) उच्च घनत्व (40 से 50 बकरे बकरियाँ प्रति वर्ग किमी.):– इसके अन्तर्गत पनवाड़ी, जसपुरा, मुस्करा, तिन्दवारी, मानिकपुर, तथा महुआ विकासखण्ड सम्मिलित हैं।

(3) मध्यम घनत्व (30 से 40 बकरे बकरियाँ प्रति वर्ग किमी.):– बबेरु, विसण्डा, मौदहा, मऊ, सुमेरपुर, राठ, सरीला, कुरारा, बड़ोखर खुर्द, कमासिन तथा कर्वी विकासखण्डों में पाया जाता हैं।

(4) निम्न घनत्व (30 बकरे–बकरियाँ प्रति वर्ग किमी से कम):– इसके अन्तर्गत गोहाण्ड, कबरई, चरखारी, पहाड़ी, तथा रामनगर विकासखण्ड सम्मिलित हैं। (मानचित्र सं. 5–5)

बांदा जनपद में चित्रकूट मण्डल की 32.3% बकरे बकरियाँ पायी जाती हैं। इसके अतिरिक्त हमीरपुर में 27.9%, महोबा जनपद में 21.4%, तथा चित्रकूट जनपद में 18.4% बकरे बकरियाँ पायी जाती हैं।

विकासखण्डों में सर्वाधिक प्रतिशत मानिकपुर विकासखण्ड में 7.2: है। इसके अतिरिक्त क्रमशः नरैनी में 6.5:, मौदहा में 6.2:, जैतपुर में 5.9:, पनवाड़ी में 5.5:, कबरई में 4.9:, तिन्दवारी में 4.5:, सरीला में 3.9:, सुमेरपुर में 3.7:, जसपुरा में 3.6:, चरखारी में 3.5: तथा शेष विकासखण्डों में 3.5: से कम है। निम्नलिखित तालिका सं. 5–6 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार तथा जनपदवार बकरे तथा बकरियों का घनत्व एवं वितरण प्रदर्शित किया गया हैं :–

तालिका सं. 5–6

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार तथा जनपदवार बकरे बकरियों का घनत्व तथा वितरण (पशुगणना वर्ष 1997)

क्र.सं	विकासखण्ड	बकरे–बकरियों की संख्या	घनत्व प्रति किमी^{2}	प्रतिशत
1	कुरारा	14511	33.0	2.6
2	सुमेरपुर	21006	35.4	3.7
3	सरीला	22199	34.1	3.9
4	गोहाण्ड	14677	27.6	2.6
5	राठ	15652	34.7	2.8
6	मुस्करा	22453	44.0	4.0
7	मौदहा	35208	38.1	6.2
नगरीय		11973	607.8	2.1
जनपद हमीरपुर		157679	38.3	27.9
8	पनवाड़ी	30917	50.0	5.5
9	जैतपुर	33369	55.3	5.9
10	चरखारी	19840	23.0	3.5
11	कबरई	27968	29.3	4.9
नगरीय		8871	296.7	1.6
जनपद महोबा		120965	39.4	21.4
12	जसपुरा	20318	49.6	3.6
13	तिन्दवारी	25268	42.2	4.5
14	बड़ोखर खुर्द	22756	33.9	4.0
15	बबेरु	23979	39.8	4.3
16	कमासिन	16513	31.3	2.9
17	विसण्डा	12447	39.3	2.2
18	महुआ	16606	40.2	2.9
19	नरैनी	36731	68.0	6.5
नगरीय		7641	219.6	1.4
जनपद बांदा		182259	44.3	32.3
20	पहाड़ी	16711	28.8	3.0
21	कर्वी	17408	30.8	3.1
22	मानिकपुर	40562	40.4	7.2
23	रामनगर	8050	23.8	1.4
24	मऊ	17450	35.9	3.1
नगरीय		34.5	319.2	0.6
जनपद चित्रकूट		103596	29.0	18.4
मण्डल		5644.99	37.9	100.0

स्रोतः जनपदीय सांख्यिकीय पत्रिकायें 2002

Fig. : 5.5
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
GOATS DENSITY - 1997
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
PER KM²
Very High
> 50
High
40 - 50
Moderat
30 - 40
Low
< 30
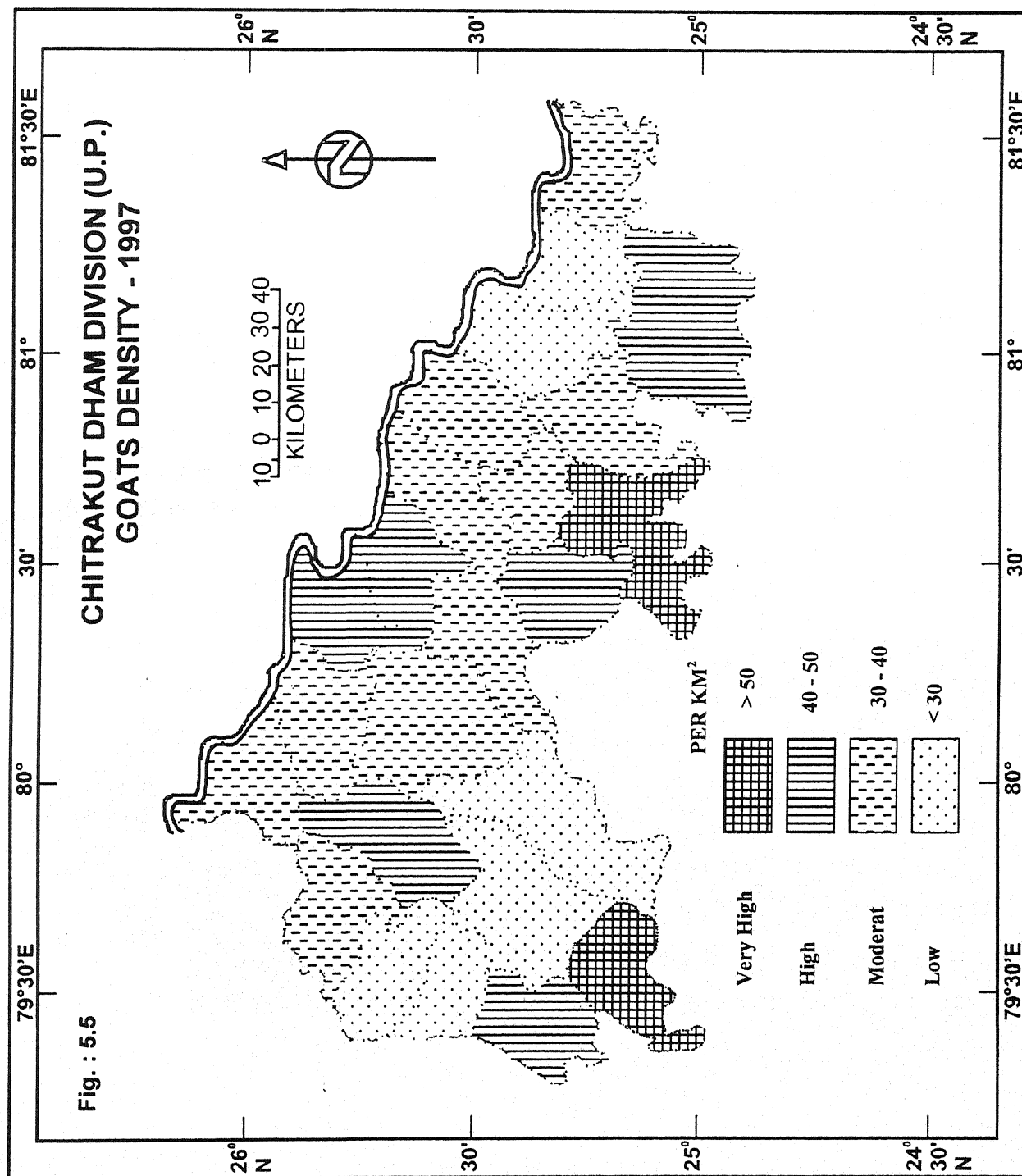
घोड़े एवं टट्टू :— घोड़ा बहुत ही उपयोगी जानवर है। इसका प्रयोग अधिकतर सवारी तथा इक्के, ताँगों में होता है। यह बहुत मजबूत और तेज दौड़ने वाला जानवर है, इसलिए इसका प्रयोग युद्ध के समय भी होता रहा है। सबसे अच्छे घोड़े उत्तर प्रदेश में पाये जाते हैं। अच्छे नस्ल के बड़े घोड़े अधिकतर मैदानी भागों में पाये जाते हैं। पहाड़ी भागों में टट्टू पाये जाते हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में कुल घोड़ों एव टट्टुओं की संख्या 4200 है। जिनका घनत्व 28.2 घोड़े प्रति 100 वर्ग किमी. है। बांदा जनपद में सर्वाधिक घनत्व 36.5 घोड़े एवं टट्टू प्रति 100 वर्ग किमी. है। चित्रकूट, महोबा तथा हमीरपुर में यह घनत्व क्रमशः 28.2, 27.1, 24.1 प्रतिवर्ग किमी. है।

विकासखण्डों में सर्वाधिक घनत्व कमासिन विकासखण्ड में 59.1 घोड़े एवं टट्टू प्रति 100 वर्ग किमी. हैं तथा सबसे कम गोहाण्ड विकासखण्ड में 7.1 है।

घोड़े तथा टट्टुओं के घनत्व को चार भागों में विभक्त कर सकते हैः

1) **उच्च घनत्व** (45 से अधिक प्रति 100 वर्ग किमी.) :— इसके अंतर्गत कमासिन (59.1), विसण्डा (50.8), रामनगर (48.4), विकासखण्ड आते है।

2) **मध्यम घनत्व** (30 से 45 घोड़े एवं टट्टू प्रति 100 वर्ग किमी) :—इस प्रकार का घनत्व बबेरु (42.8), मऊ (36.6), पहाड़ी (36. मुस्करा (35.7), नरैनी (33.5), महुआ (31.3) विकासखण्डों में पाया जाता है।

3) **निम्न घनत्व** (15 से 30 घोड़े एवं टट्टू प्रति 100 वर्ग किमी.) :—यह घनत्व पनवाड़ी (28.3), राठ (27.2), सुमेरपुर (27.0), बड़ोदर खुर्द (25.5), मौदहा (26.8), जसपुरा (20.8), कर्वी (20.7), जैतपुर (19.2), कबरई (17.6) मानिकपुर (16.3), सरीला (15.8), विकासखण्डों पाया जाता है।

4) **अति निम्न घनत्व** (15 से कम घोड़े एवं टट्टू प्रति 100 वर्ग किमी.) :— कुरारा (12.9), चरखारी (11.9), तिन्दवारी (11.2), तथा गोहाण्ड (7.1) विकासखण्डों में इस प्रकार का घनत्व पाया जाता है। (मानचित्र सं. 5–6)

सर्वाधिक घोड़े बांदा जनपद में 35.7%, हमीरपुर जनपद में 23.7%, चित्रकूट में 20.8%, महोबा जनपद में 19.8% पाये जाते हैं। विकासखण्डों में सबसे अधिक घोड़े एवं टट्टू कमासिन (7.4%) विकासखण्ड में पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त बबेरु में 6.1%, मौदहा में 5.9%, पहाड़ी में 5.0%, नरैनी में 4.3%, मुस्करा में 4.3%, मऊ में 4.2%, पनवाड़ी में 4.2%, बड़ेदर खुर्द में 4.1%, घोड़े पाये जाते हैं। शेष विकासखण्डों में 4% से कम घोड़े पाये जाते हैं। सबसे कम घोड़े गोहाण्ड विकासखण्ड में 0.9% पाये जाते हैं। निम्नलिखित तालिका सं. 5.7 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार घोड़े एवं टट्टूओं का घनत्व एवं विवरण दर्शाया गया है :—

तालिका सं. 5.7

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार घोड़े एवं टट्टूओं का घनत्व एवं वितरण (पशुगणना वर्ष 1997)

क्रं सं.	विकासखण्ड	घोड़े एवं टट्टू सं.	घनत्व प्रति 100 वर्ग किमी	प्रतिशत
1	कुरारा	57	12.9	1.4
2	सुमेरपुर	160	27.0	3.4
3	सरीला	103	15.8	2.5
4	गोहाण्ड	38	7.1	0.9
5	राठ	123	27.2	2.9
6	मुस्करा	182	35.7	4.3
7	मौदहा	248	26.8	5.9
नगरीय		83	421.3	2.0
जनपद हमीरपुर		994	24.1	23.7
8	पनवाड़ी	175	28.3	4.2
9	जैतपुर	116	19.2	2.8
10	चरखारी	103	11.9	2.4
11	कबरई	168	17.6	4.0
नगरीय		269	899.7	6.4
जनपद महोबा		831	27.1	19.8
12	जसपुरा	85	20.8	2.0
13	तिन्दवारी	67	11.2	1.6
14	बड़ोखर खुर्द	171	25.5	4.1
15	बबेरु	258	42.8	6.1
16	कमासिन	312	59.1	7.4
17	विसण्डा	161	50.8	3.8
18	महुआ	129	31.3	3.1
19	नरैनी	181	33.5	4.3
नगरीय		138	396.6	3.3
जनपद बांदा		1502	36.5	35.7
20	पहाड़ी	210	36.2	5.0
21	कर्वी	117	20.7	2.8
22	मानिकपुर	164	16.3	3.9
23	रामनगर	164	48.4	3.9
24	मऊ	178	36.6	4.2
नगरीय		40	373.8	1.0
जनपद चित्रकूट		873	24.5	20.8
मण्डल		4200	28.2	100.0

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें 2002
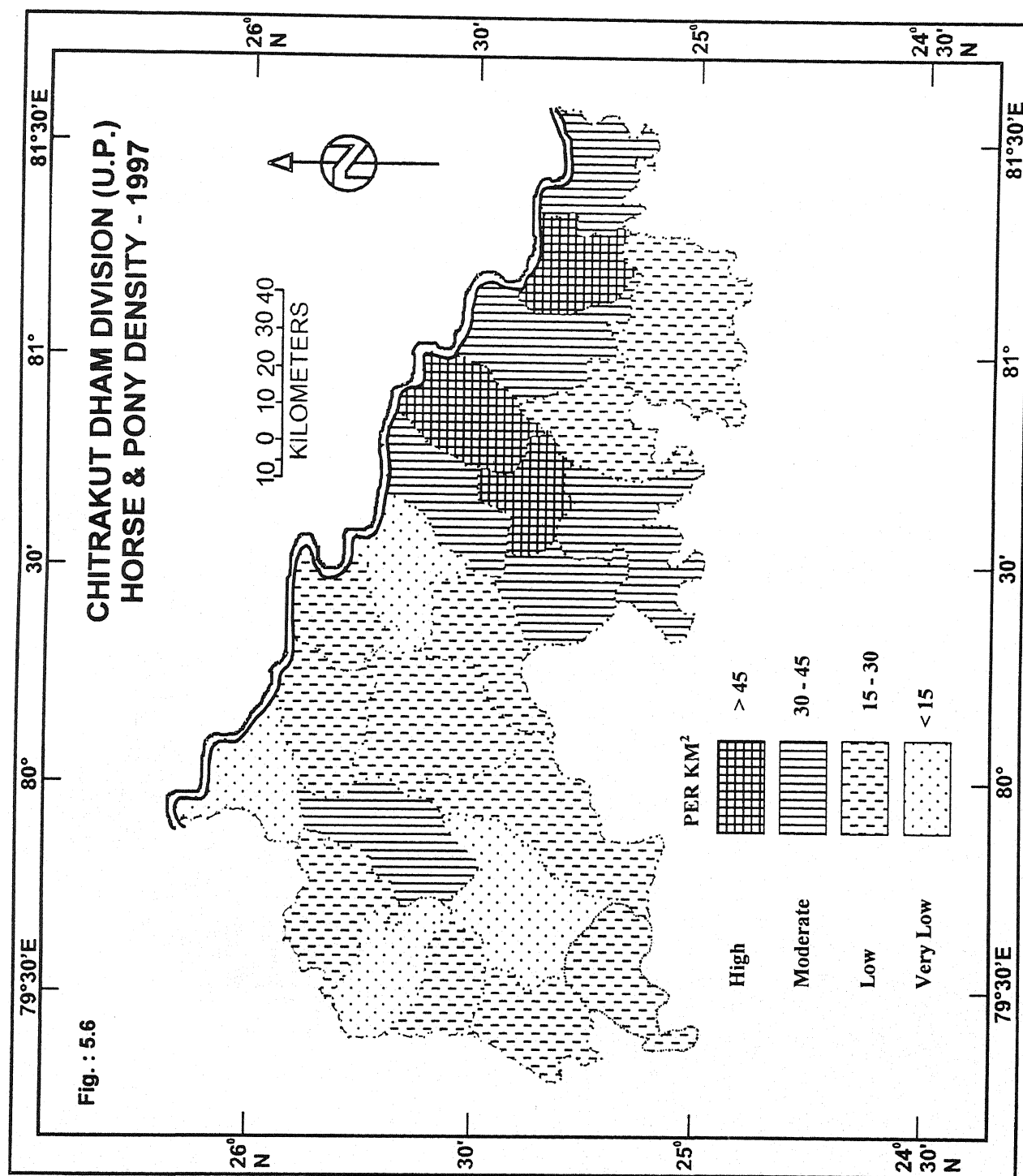
सुअर :— चित्रकूट धाम मण्डल में सुअर एक अपवित्र जानवर माना जाता है। इसे पासी, खटिक, चमार और मेहतर आदि जातियाँ पालती हैं। ये गाँव और नगरों में कूड़ा करकट और विष्ठा पर आश्रित रहते हैं। सुअर गोश्त, चर्बी तथा बाल के लिए पाले जाते हैं किन्तु इनका रखरखाव अत्यंत अवैज्ञानिक ढंग से होता है।

चित्रकूट धाम मण्डल में कुल सुअरों की संख्या 87003 है जिनका प्रति वर्ग किमी घनत्व 5.8 हैं। हमीरपुर जनपद में सर्वाधिक घनत्व 7.0सुअर प्रति वर्ग किमी. है। इसके अतिरिक्त बांदा, महोबा तथा चित्रकूट जनपद में यह घनत्व क्रमशः 6.5, 5.6 तथा 4.0 है।

विकासखण्डों में सर्वाधिक घनत्व विसण्डा विकासखण्ड में 12.1 सुअर प्रति वर्ग किमी. है। और सबसे कम घनत्व कर्वी विकासखण्ड में 3.1 हैं। मण्डल में पाये जाने वालें सुअर के घनत्व को निम्नांकित भागों में विभक्त कर सकते है:—

क) 9 सुअर प्रति वर्ग किमी. से अधिक घनत्व :—इस प्रकार का घनत्व विसण्डा (1201) तथा कुरारा (9.1) विकासखण्डों में पाया जाता है।

ख) 7 से 9 सुअर प्रति वर्ग किमी. घनत्व :— इसके अंतर्गत गोहाण्ड (7.8), राठ (7.7), मुस्करा (7.2), विकासखण्ड आते है।

ग) 5 से 7 सुअर प्रति वर्ग किमी. घनत्व :— इस प्रकार का घनत्व बबेरु (7.0), महुआ (7.0), सुमेरपुर (6.6), पनवाड़ी (6.6), नरैनी (6.5), सरीला (6.4), जैतपुर (6.3), मऊ (5.9), पहाड़ी (5.4), तथा कमासिन (5.2) विकासखडों में पाया जाता है।

घ) 5 सुअर प्रति वर्ग किमी. से कम घनत्व :— इसके अंतर्गत रामनगर (4.9), तिन्दवारी (4. 1),कबरई (4.0), जसपुरा (3.9), मौदहा (3.7), बड़ोखर खुर्द (3.6), मानिकपुर (3.4), चरखारी (3.3), तथा कर्वी (3.1) विकासखण्ड आते है। (मानचित्र सं.5—7)

हमीरपुर जनपद में चित्रकूट धाम मण्डल के कुल सुअरों का 33.2% सुअर पाये जाते है। इसके अतिरिक्त बांदा जनपद में 30.6%, महोबा में 19.9% तथा चित्रकूट जनपद में 16.3% सुअर पाये जाते हैं।

विकासखण्डों में सुअरों का सर्वाधिक प्रतिशत गोहाण्ड, सरीला, बबेरु, प्रत्येक में 4.8 % है। इसके अतिरिक्त पनवाड़ी में 4.7%, कुरारा में 4.6 %, सुमेरपुर में 4.5 %, जैतपुर, कबरई, विसण्डा प्रत्येक में 4.4%, मुस्करा में 4.2%, राठ, नरैनी तथा मानिकपुर प्रत्येक में 4.0% सुअर पाये जाते हैं। शेष विकासखण्डों में 4.0% से कम सुअर पाये जाते हैं। (तालिका सं. 5—8)

निम्नलिखित तालिका सं. 5—8 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार सुअरों का घनत्व एवं वितरण अंकित किया गया है :—

तालिका सं. 5–8

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार सुअरों का घनत्व एवं वितरण (पशुगणना वर्ष 1997)

क्र.सं.	विकासखण्ड	सुअरों की संख्या	घनत्व प्रति वर्ग किमी.	प्रतिशत
1	कुरारा	3991	9.1	4.6
2	सुमेरपुर	3908	6.6	4.5
3	सरीला	4190	6.4	4.8
4	गोहाण्ड	4131	7.8	4.8
5	राठ	3481	7.7	4.0
6	मुस्करा	3684	7.2	4.2
7	मौदहा	3426	3.7	3.9
नगरीय		2118	107.5	2.4
जनपद हमीरपुर		28929	7.0	33.2
8	पनवाड़ी	4075	6.6	4.7
9	जैतपुर	3811	6.3	4.4
10	चरखारी	2832	3.3	3.2
11	कबरई	3798	4.0	4.4
नगरीय		2796	93.5	3.2
जनपद महोबा		17312	5.6	19.9
12	जसपुरा	1607	3.9	1.8
13	तिन्दवारी	2490	4.1	2.9
14	बड़ोखर खुर्द	2393	3.6	2.8
15	बबेरु	4220	7.0	4.8
16	कमासिन	2767	5.2	3.2
17	विसण्डा	3838	12.1	4.4
18	महुआ	2888	7.0	3.3
19	नरैनी	3487	6.5	4.0
नगरीय		2923	84.0	3.4
जनपद बांदा		26613	6.5	30.6
20	पहाड़ी	3150	5.4	3.6
21	कर्वी	1738	3.1	2.0
22	मानिकपुर	3421	3.4	4.0
23	रामनगर	1648	4.9	1.9
24	मऊ	2887	5.9	3.3
नगरीय		1305	122.0	1.5
जनपद चित्रकूट		14149	4.0	16.3
मण्डल		87003	5.8	100.0

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें 2002

Fig. : 5.7
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
PIGS DENSITY - 1997
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
PER KM²
>9
7 - 9
5 - 7
<5
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
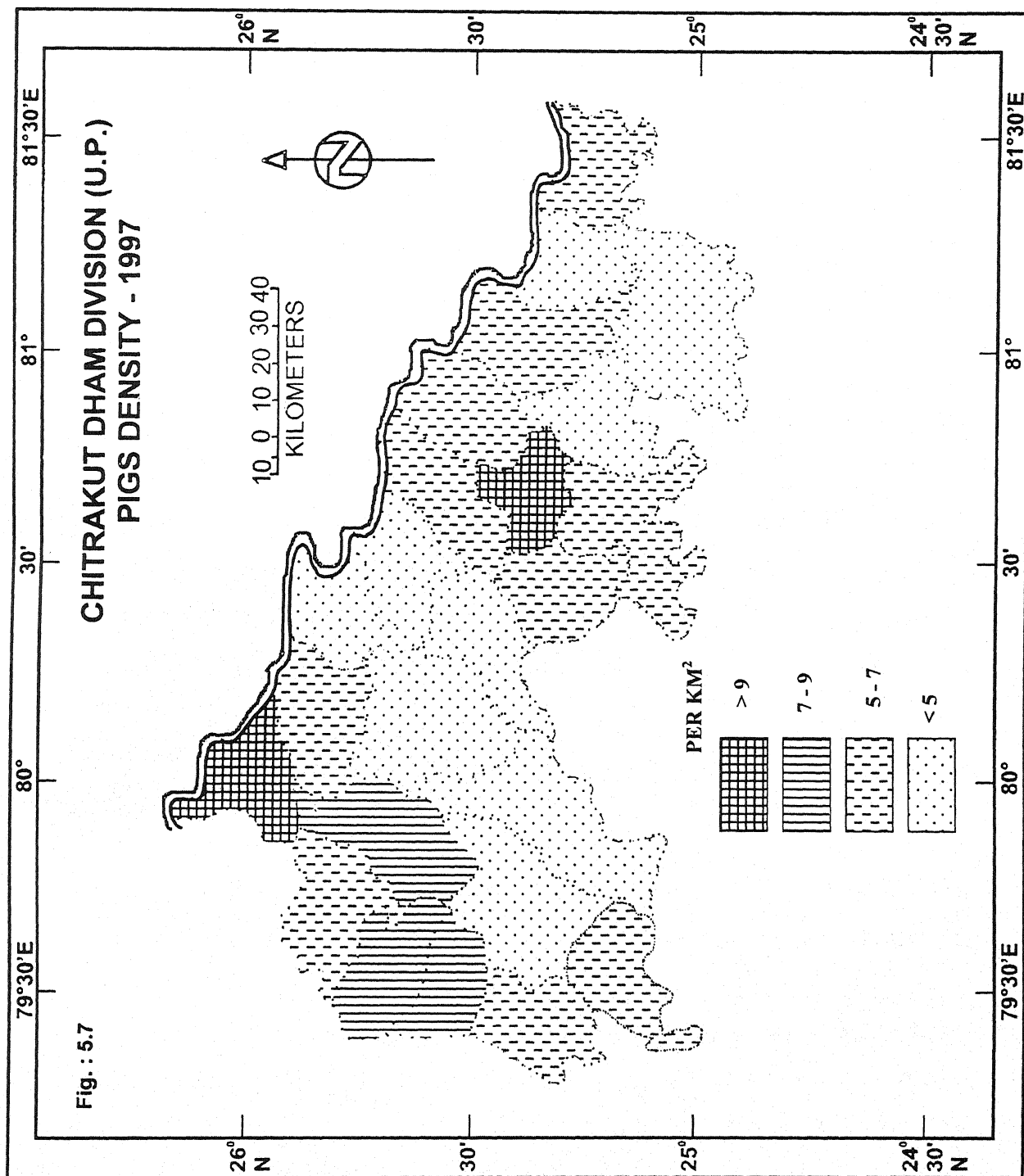
कुक्कुट – (Poultry) :– कुक्कुट (पोल्ट्री) में पालतू मुर्गी, मुर्गे, चूजे तथा बत्तखें आदि सम्मिलित हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में मुर्गी–पालन का कार्य अधिकतर मुसलमान, ईसाई और हिन्दुओं की कुछ जातियाँ करती हैं। मुर्गियाँ माँस तथा अण्डे दोनों के लिए पाली जाती है। ये अतिरिक्त आमदनी के स्रोत हैं।यहाँ की मुर्गियों की नस्ल अच्छी नहीं है और ये अंडे भी कम देती हैं। सरकार का ध्यान अब इस ओर गया है और मुर्गियों की नस्ल सुधारने के लिए प्रयत्न किए जा रहे हैं। अधिक अंडा देने वाली प्रजातियाँ रानीशेवर, हाईलाइन, बैवकोक तथा हाईसेक्स और माँस वाली (ब्राइलर्स) प्रजातियाँ हाइब्रो रोस –1 शेबर स्वारबो, पर्लस्मार्ट तथा आरबोर–एकर हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में 1997 की पशुगणनानुसार कुक्कुटों की संख्या 2,15,015 है तथा कुक्कुटों का प्रति वर्ग किमी. घनत्व 14.5 है। सर्वाधिक घनत्व महोबा जनपद में 19.3 कुक्कुट प्रति वर्ग किमी. तथा सबसे कम घनत्व बांदा जनपद में 12.7 है। इसके अतिरिक्त चित्रकूट तथा हमीरपुर जनपद में क्रमशः 14.5, 13.8 है।

विकासखण्डों में सर्वाधिक घनत्व पनवाड़ी विकासखण्ड में 31.3 कुक्कुट प्रति वर्ग किमी. है तथा सबसे कम जसपुरा विकासखण्ड में 6.7 कुक्कुट प्रति वर्ग किमी हैं।इनके घनत्व को निंम्नांकित भागों में बाँटा जा सकता है:–

क) 20 कुक्कुट प्रति वर्ग. किमी. से अधिक घनत्व –इस प्रकार का घनत्व पनवाड़ी (31.3), विसण्डा (27.4), तथा जैतपुर (24.4) विकासखण्डों में पाया जाता है।

ख) 15 से 20 कुक्कुट प्रति वर्ग किमी. घनत्व – इस प्रकार का घनत्व रामनगर (19.7), मुस्करा (17.9), राठ (17.8), नरैनी (17.8), महुआ (17.4), सरीला (16.4), कर्वी (16.4), गोहाण्ड (16.2), विकासखण्डों में पाया जाता है।

ग) 10 से 15 कुक्कुट प्रति वर्ग किमी. घनत्व – इस प्रकार का घनत्व पहाड़ी (14.2), मानिकपुर (13.6), मऊ (13.5), बबेरु (10.5), सुमेरपुर (10.4), कबरई (10.0) विकासखण्डों में पाया जाता है।

घ) 10 कुक्कुट प्रति वर्ग किमी. से कम घनत्व – इस प्रकार का घनत्व तिन्दवारी (9.2), मौदहा (8.9), चरखारी (8.8), कुरारा (7.8), बड़ोखर खुर्द (7.2), कमासिन (7.1), तथा जसपुरा (6.7) विकासखण्डों में पाया जाता है। (मानचित्र सं. 5–8)

चित्रकूट धाम मण्डल के कुल कुक्कुटों की संख्या का 27.5%, महोबा जनपद में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त, हमीरपुर, बांदा तथा चित्रकूट जनपद में क्रमशः 26.4,24.4, तथा 21.7% पाया जाता हे।

विकासखण्डों में कुक्कुटों का सर्वाधिक प्रतिशत जसपुरा में 1.3% पाया जाता है। इसके अतिरिक्त जैतपुर में 6.8%, मानिकपुर में 6.4%, सरीला में 5.0%, नरैनी, कबरई में 4.5%, कर्वी में 4.3 राठ में 3.7%, चरखारी में 3.5%, महुआ में 3.3%, रामनगर में 3.1%, तथा मऊ में 3.0% है। शेष विकासखण्डों में यह प्रतिशत 3% से कम है।निम्नलिखित तालिका सं. 5–9 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार कुक्कुटों का घनत्व एवं वितरण प्रदर्शित किया गया है :–

तालिका सं. 5–9

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार कुक्कुटों का घनत्व एवं विवरण

क्र.सं.	विकासखण्ड	कुक्कुटों की संख्या	घनत्व प्रति वर्ग किमी.	प्रतिशत
1	कुरारा	3427	7.8	1.6
2	सुमेरपुर	6161	10.4	2.9
3	सरीला	10680	16.4	5.0
4	गोहाण्ड	8624	16.2	4.0
5	राठ	8029	17.8	3.7
6	मुस्करा	9157	17.9	4.3
7	मौदहा	8271	8.9	3.8
नगरीय		2354	119.5	1.1
जनपद हमीरपुर		56703	13.8	26.4
8	पनवाड़ी	19392	31.3	9.0
9	जैतपुर	14693	24.4	6.8
10	चरखारी	7579	8.8	3.5
11	कबरई	9587	10.0	4.5
नगरीय		7932	265.3	3.7
जनपद महोबा		59183	19.3	27.5
12	जसपुरा	2741	6.7	1.3
13	तिन्दवारी	5491	9.2	2.6
14	बड़ोखर खुर्द	4816	7.2	2.2
15	बबेरु	6303	10.5	2.9
16	कमासिन	3755	7.1	1.8
17	विसण्डा	8668	27.4	4.0
18	महुआ	7187	17.4	3.3
19	नरैनी	9621	17.8	4.5
नगरीय		3845	110.5	1.8
जनपद बांदा		52427	12.7	24.4
20	पहाड़ी	8258	14.2	3.8
21	कर्वी	9246	16.4	4.3
22	मानिकपुर	13686	13.6	6.4
23	रामनगर	6692	19.7	3.1
24	मऊ	6539	13.5	3.0
नगरीय		2281	213.2	1.1
जनपद चित्रकूट		46702	13.1	21.7
मण्डल		215015	14.5	100.0

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें 2002

Fig. : 5.8
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
POULTRY DENSITY - 1997
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
N
PER KM²
> 20
15 - 20
10 - 15
< 10
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
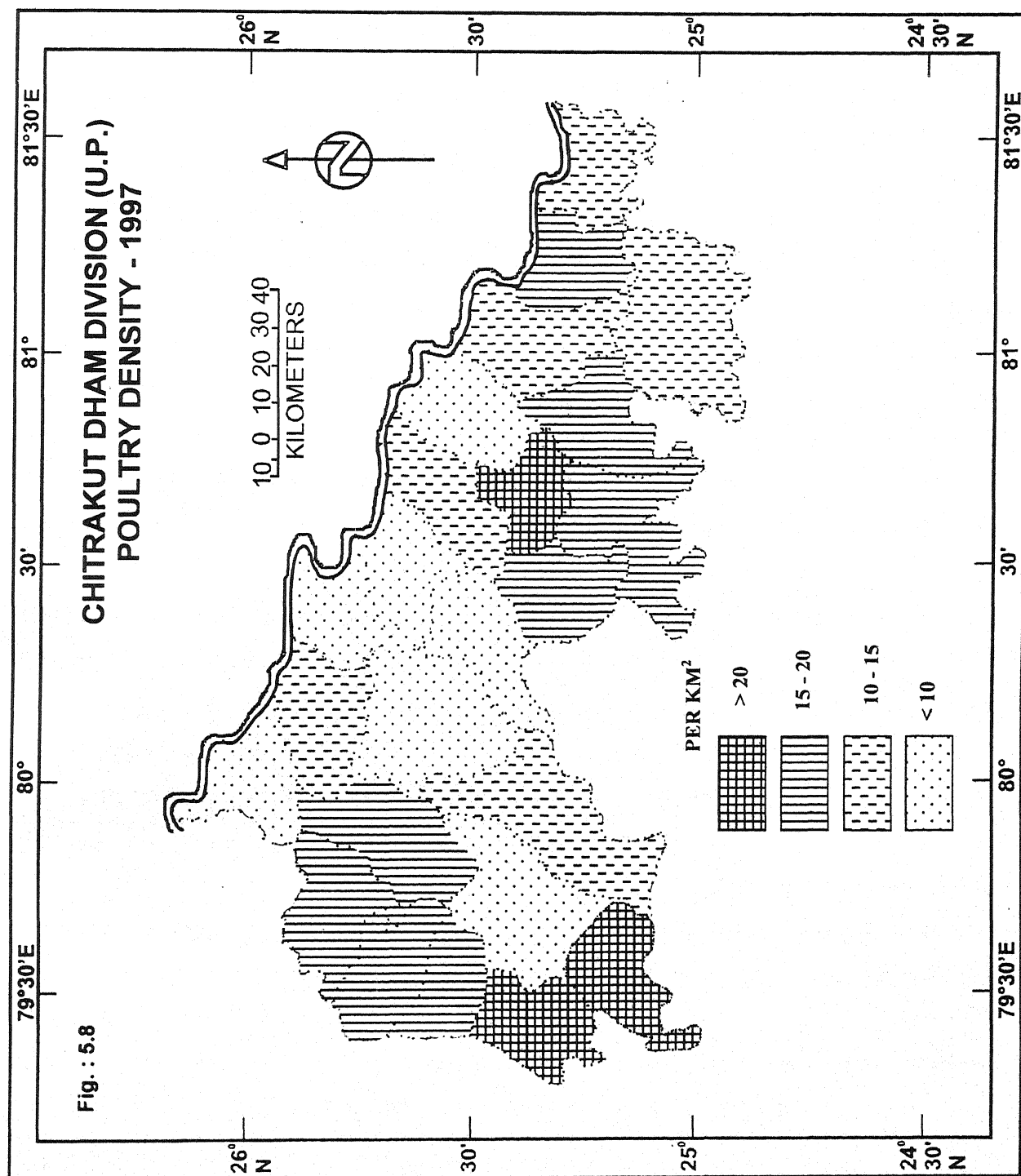
5(iv) मानव–पशु संसाधन अनुपात, गुणवत्ता

किसी भी प्रदेश या क्षेत्र के अर्थिक विकास में 'पशु संसाधन उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितने कि मानवीय संसाधन।" *मानवीय संसाधन एवं पशु संसाधन एक गाड़ी के दो पहियों के समान है जिनका किसी प्रदेश के आर्थिक विकास के लिए होना अनिवार्य है।"*

" मिश्रित कृषि क्षेत्रों में पशुओं के माँस और दूध की आय ही कृषकों की प्रमुख आय होती है।"[7] कोई प्रदेश या क्षेत्र अपने खाद्य–पदर्थों में पशुजन्य पदार्थो का कितना उपभोग करता है, इससे इसके रहन सहन के स्तर का पता चलता हैं। जिस प्रदेश में मानव संसाधन की तुलना में जितना अधिक पशु संसाधन होगा वहाँ के लोगों को उतना ही अधिक दूध, घी, एवं माँस की उपलब्धता होगी। पशु संसाधन मानव की आर्थिक क्रियाओं को लम्बे समय तक प्रभावित करते हैं। पशु संसाधन पर मानवीय क्रिया का प्रभाव तो पड़ता ही है परन्तु इसके स्वरुप में परिवर्तन नहीं होता है। पशु संसाधन के वितरण एवं विकास पर प्राकृतिक परिवेश विशेषकर जलवायु, वनस्पति एवं धरातल का गहरा प्रभाव पड़ता है। मानव अपने ज्ञान, कौशल, शोध एवं तकनीक के आधार पर पशु संसाधनों का विकास करता रहता है। वह पशुओं के प्रजनन नस्ल सुधार, रोगों की रोकथाम तथा बीमार पशुओं की उचित देखभाल भी करता है। पशु संसाधनों पर डेरी उद्योग तथा माँस उद्योग, चमड़ा उद्योग तथा ऊनी वस्त्र उद्योग आदि निर्भर हैं। अतः मानव एवं पशु एक दूसरे के पूरक हैं। इसलिए मानव एवं पशु संसाधन अनुपात का विश्लेषण करना अत्यावश्यक है।

तालिका सं. 5–10 में दृष्टिपात करने से यह ज्ञात होता है कि चित्रकूट धाम मण्डल में प्रति 100 जनसंख्या पर पशुधन संख्या 76.4 है।

सर्वाधिक पशुधन संख्या प्रति 100 जनसंख्या पर चित्रकूट जनपद में 87.6 है। इसके अतिरिक्त बांदा जनपद में पशुधन सं. 77.2, महोबा में 71.9 तथा हमीरपुर जनपद में 70.4 है।

विकासखण्डों में सबसे अधिक पशुधन संख्या प्रति 100 जनसंख्या के पीछे मानिकपुर विकासखण्ड में 161.8 है तथा सबसे कम कर्वी विकासखण्ड में 63.0 है।

तीन विकासखण्डों में प्रति 100 जनसंख्या के पीछे 100 से अधिक पशुधन संख्या है। ये विकासखण्ड मानिकपुर (161.8), नरैनी (106.8), तथा रामनगर (100.7) हैं।पाँच विकासखण्डों में प्रति 100 जनसंख्या पर 90 से 100 पशुधन संख्या है– ये विकासखण्ड सरीला (96.8), मऊ (92.7), जैतपुर (92.0), चरखारी (91.3), तथा जसपुरा (90.4) हैं।

सात विकासखण्डों में प्रति 100 जनसंख्या के पीछे 80 से 90 पशुधन संख्या हैं। इनमें बबेरु (88. 8), पनवाड़ी (86.0), तिन्दवारी (85.8), विसण्डा (85.7), मुस्करा (85.6), बड़ोखर खुर्द (83.0), कुरारा (81. 2) विकासखण्ड सम्मिलित हैं।

नौ विकासखण्डों में प्रति 100 जनसंख्या के पीछे पशुधन संख्या 63 से 80 के मध्य हैं। ये विकासखण्ड सुमेरपुर (79.1), महुआ (75.0), कमासिन (75.1), मौदहा (72.8), कबरई (72.0), पहाड़ी (69. 8), गोहाण्ड (66.4), तथा कर्वी (63.0) हैं। (मानचित्र सं. 5–9)

Fig. : 5.9
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
BLOCKWISE HUMAN-ANIMAL
RESOURCE RATIO - 1997
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
ANIMAL/100PERSONS
< 80
80 - 90
90 - 100
> 100
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
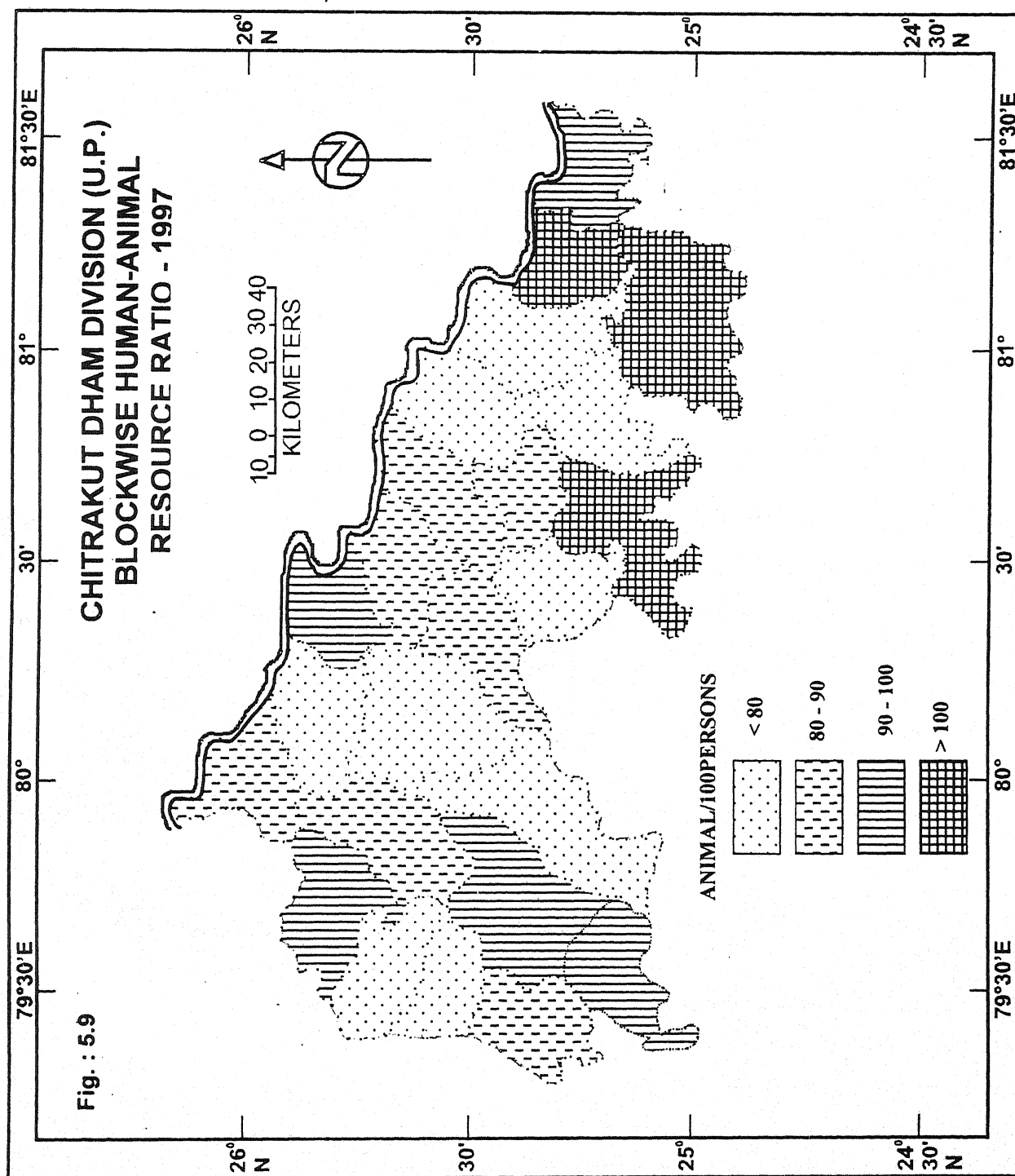
तालिका सं. 5–10

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार मानव–पशु संसाधन अनुपात

क्र.सं.	विकासखण्ड	जनसंख्या (1991)	पशुधन सं.(1997)	प्रति 100 जनसंख्या पर पशुधन सं.
1	कुरारा	75883	61594	81.2
2	सुमेरपुर	127867	101117	79.1
3	सरीला	90153	87254	96.8
4	गोहाण्ड	95052	63148	66.4
5	राठ	82325	61422	74.6
6	मुस्करा	104647	89546	85.6
7	मौदहा	171628	124965	72.8
नगरीय		136957	33989	24.8
जनपद हमीरपुर		884512	623035	70.4
8	पनवाड़ी	118536	101922	86.0
9	जैतपुर	111222	102319	92.0
10	चरखारी	89215	81487	91.3
11	कबरई	145318	104580	72.0
	नगरीय	117688	28440	24.2
जनपद महोबा		581979	418748	71.9
12	जसपुरा	79515	71911	90.4
13	तिन्दवारी	124021	106397	85.8
14	बड़ोखर खुर्द	134982	112072	83.0
15	बबेरु	144290	128195	88.8
16	कमासिन	119671	89823	75.1
17	विसण्डा	132303	113411	85.7
18	महुआ	152411	114313	75.0
19	नरैनी	169930	181409	106.8
नगरीय		180839	37632	20.8
जनपद बांदा		1237962	955163	77.2
20	पहाड़ी	133516	93166	69.8
21	कर्वी	151878	95623	63.0
22	मानिकपुर	115838	187439	161.8
23	रामनगर	65370	65801	100.7
24	मऊ	98993	91775	92.7
नगरीय		58582	13148	22.4
जनपद चित्रकूट		624177	546952	87.6
चित्रकूट धाम मण्डल		3328630	2543898	76.4

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें 2002

मानव – कुक्कुट अनुपात – तालिका संख्या 5–11 में स्पष्ट है कि चित्रकूट धाम मण्डल में महोबा जनपद में प्रति 100 जनसंख्या पर सर्वाधिक कुक्कुट संख्या 10.2 है। इसके अतिरिक्त चित्रकूट, हमीरपुर तथा बांदा जनपद में क्रमशः 7.5, 6.4 तथा 4.2 है।

तालिका सं. 5–11

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार मानव–कुक्कुट अनुपात

क्र.सं.	विकासखण्ड	जनसंख्या (1991)	कुक्कुट सं. (1997)	प्रति 100 जनसंख्या पर कुक्कुट सं.
1	कुरारा	75883	3427	4.5
2	सुमेरपुर	127867	6161	4.8
3	सरीला	90153	10680	11.8
4	गोहाण्ड	95052	8624	9.1
5	राठ	82325	8024	9.8
6	मुस्करा	104647	9157	8.8
7	मौदहा	171628	8271	4.8
नगरीय		136957	2354	1.7
जनपद हमीरपुर		884512	56703	6.4
8	पनवाड़ी	118536	19392	16.4
9	जैतपुर	111222	14693	13.2
10	चरखारी	89215	7579	8.5
11	कबरई	145318	9587	6.6
नगरीय		117688	7932	6.7
जनपद महोबा		581979	59183	10.2
12	जसपुरा	79515	2741	3.4
13	तिन्दवारी	124021	5491	4.4
14	बड़ोखर खुर्द	134982	4816	3.6
15	बबेरु	144290	6303	4.4
16	कमासिन	119671	3755	3.1
17	विसण्डा	132303	8668	6.6
18	महुआ	152411	7187	4.7
19	नरैनी	169930	9621	5.7
नगरीय		180839	3845	2.1
जनपद बांदा		1237962	52427	4.2
20	पहाड़ी	133516	8258	6.2
21	कर्वी	151878	9246	6.1
22	मानिकपुर	115838	13686	11.8
23	रामनगर	65370	6692	10.2
24	मऊ	98993	6539	6.6
नगरीय		58582	2281	3.9
जनपद चित्रकूट		624177	46702	7.5
मण्डल		3328630	215015	6.5

स्रोतः जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें 2002

Fig. : 5.10
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
BLOCKWISE HUMAN-POULTRY
RATIO - 1997
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
N
POULTRY/100 PERSONS
< 5
5 - 10
10 - 15
15 - 20
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
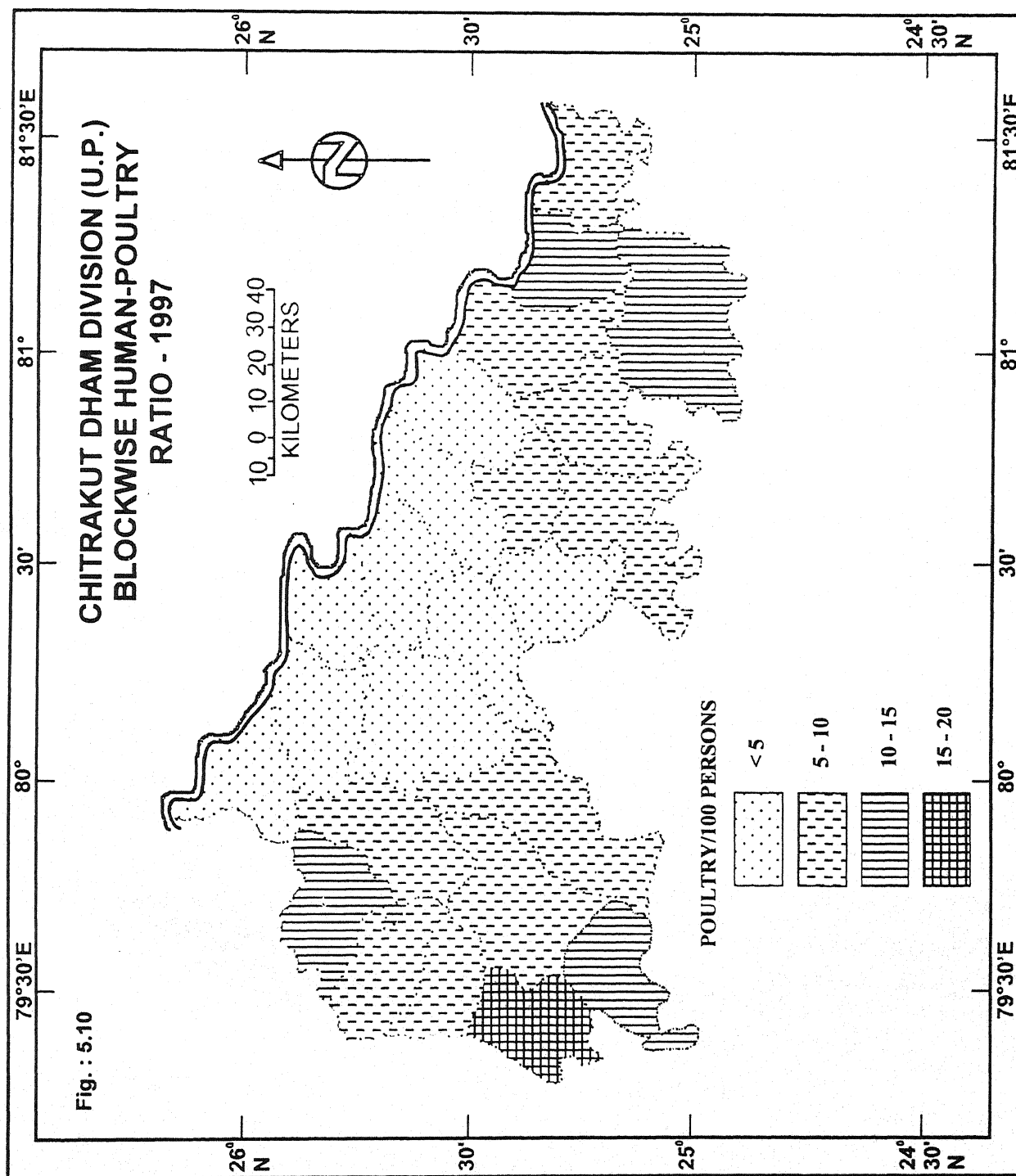
विकासखण्डों में सर्वाधिक प्रति 100 जनसंख्या के पीछे कुक्कुट संख्या पनवाड़ी विकासखण्ड में 16.4 है तथा सबसे कम कमासिन विकासखण्ड में 3.1 है। इसके अतिरिक्त प्रति 100 जनसंख्या पर जैतपुर विकासखण्ड में कुक्कुट संख्या 13.2, सरीला में 11.8, मानिकपुर में 11.8, रामनगर में 10.2, राठ में 9.8, गोहाण्ड में 9.1, मुस्करा में 8.8, चरखारी में 8.5, कबरई, विसण्डा, मऊ प्रत्येक में 6.6, पहाड़ी में 6.2, कर्वी में 6.1, नरैनी में 5.7, तथा शेष विकासखण्डों में 5.0 कुक्कुट संख्या से कम है। (मानचित्र सं. 5–10)

पशु संसाधन–गुणवत्ता :– यद्यपि चित्रकूट धाम मण्डल में पशुओं की संख्या अधिक है परन्तु उनकी दशा अभी भी बहुत हीन है।यहाँ की गायें अन्य देशों की गायों की अपेक्षा बहुत कम दूध देती हैं। यहाँ की प्रति गाय प्रतिवर्ष औसतन 300 किग्रा. दूध देती है, जबकि डेनमार्क मे एक गाय प्रतिवर्ष 3710 किग्रा., अमेरिका में 3180 किग्रा., दूध देती है। यहाँ की कुछ गायें तो इतना कम दूध देती हैं कि इन्हे "Tea cup cows" कहते हैं। इसी प्रकार यहाँ प्रतिव्यक्ति पीछे दूध का उपभोग भी अन्य देशों की अपेक्षा कम है। बैलों की दशा भी सन्तोषजनक नहीं है, यद्यपि गरीब कृषकों की कृषि बैलों पर ही निर्भर है, फिर भी यहाँ के बैल कमजोर होते हैं और उनकी कार्यक्षमता भी कम होती है।

चित्रकूट धाम मण्डल में गायों के दूध कम देने के कारण दूध प्राप्त करने के लिए अधिक गायें पाली जाती है। इसी प्रकार यहाँ के बैल भी कमजोर होते हैं और कृषकों को खेती के लिए अधिक बैल पालने पड़ते हैं। इसके परिणाम स्वरुप यहाँ गाय–बैलों की संख्या इतनी अधिक हो गई है कि उनकी उचित रुप से देखभाल करना भी कठिन हो गया है और यहाँ के निर्धन किसान उनके लिए उचित चारे का प्रबन्ध नहीं कर सकते।

मण्डल में पशु–संसाधन की निम्न गुणवत्ता का मुख्य कारण निकृष्ट नस्ल के पशुओं की अधिक संख्या का होना है। उत्तम नस्ल के साँड़ों के अभाव के कारण नए पीढ़ियों का सुधार नहीं हो पाता। पशुओं की नस्ल सुधारने के लिए यह आवश्यक है कि यहाँ अच्छे नस्ल के साँड हों। मण्डल में कृत्रिम गर्भधान पद्धति की उपेक्षा की जाती है और अभी ऐसे केन्द्रों का अधिक प्रचार नहीं हुआ है।वर्तमान समय में मण्डल में मात्र 43 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र एवं 18 उपकृत्रिम गर्भाधान केन्द्र है। अच्छे नस्ल के साँड़ो की कमी के कारण यह आवश्यक हैं कि कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र और अधिक संख्या में खोले जायें। कृत्रिम साधनों द्वारा एक साँड़ द्वारा 500 गायें गर्भवती हो सकती हैं। भैंसों की नस्ल भी इसी प्रकार सुधारी जा सकती है। मण्डल में कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों के द्वारा पशुओं की नस्ल में सुधार का प्रयास किया जा रहा है।

भेंड़ तथा बकरियों की नस्ल यहाँ अच्छी नहीं है। अतः यहाँ की बकरियाँ दूध कम देती है जबकि अच्छे नस्ल की बकरियाँ ढाई, तीन लीटर तक दूध प्रतिदिन देती हैं। दूध देने की दृष्टि से जमुनापारी तथा बरबरी नस्ल की बकरी अच्छी होती हैं। अतः बकरियों की नस्ल सुधारने की आवश्यकता है। यहाँ की भेड़ें अधिक ऊन नहीं देती हैं। अतः भेड़ों की नस्ल सुधारने के लिए सरकार द्वारा अनेक स्थानों पर भेड़ विकास केन्द्र खोलना चाहिए। यद्यपि मण्डल में 7 भेड़ विकास केन्द्र खोले गये हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल के कृषक पशुओं को वैज्ञानिक ढंग से रखना नहीं जानते। गन्दे स्थानों में रहने और सड़ी गली वस्तुओं के खाने के कारण यहाँ के पशु अनेक प्रकार की बीमारियों से ग्रस्त हैं।

कभी–कभी तो वर्षा ऋतु में खुरपका, डिप्थीरिया, और गलघोंटू आदि संक्रामक रोग फेलते हैं, जिससे बहुत से पशु मर जाते हैं। पशुओं के मरने से यहाँ के निर्धन कृषकों को बहुत ही आर्थिक हानि होती है। यहाँ पशु चिकित्सालयों की संख्या कम है और वे गाँवों से दूर स्थित हैं।

पशुओं को रोगों से बचाने के लिए यह आवश्यक है कि उनके रहने का स्थान साफ हो और उचित चारे तथा स्वच्छ जल का प्रबन्ध हो, अधिक अस्पताल खोले जायें और पशुओं के रोगों को रोकने के प्रयास किए जायें। छूत के रोगों का टीका लगाकर भी पशुओं को बीमारी से बचाया जा सकता है।

चित्रकूट धाम मण्डल में पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था भी ठीक नहीं है और उन्हे पेटभर चारा नहीं मिलता। जनसंख्या के दबाव के कारण अधिकाँश भूमि पर खेती की जाती है और चारागाहों की बहुत कमी है। पशुओं का मुख्य चारा डंठलों से प्राप्त कुट्टी और भूसा है। पशुओं के स्वास्थ्य के लिए हरा चारा आवश्यक है। यह वर्षा ऋतु में तो मिल जाता है परन्तु ग्रीष्म ऋतु में नहीं मिल पाता है। पशुओं को पेटभर चारा देने के लिए आवश्यक है कि चारागाहों की उचित व्यवस्था की जाय। वरसीम अधिक मात्रा में बोई जाय। इस चारे के प्रयोग से गाय–भैंसों के दूध में वृद्धि की जा सकती है।

पशुओं को हृष्ट–पुष्ट बनाने, बीमारियों से बचाने तथा नस्ल सुधारने के लिए यह आवश्यक है कि उन्हे स्वच्छ और हवादार स्थानों मे रखा जाय, मल–मूत्र को इकट्ठा करने के लिए नालियाँ बनानी चाहिए जिससे वहाँ कीचड़ न इकट्ठा हो। चारा देने का हौदा पक्का और साफ होना चाहिए और साफ पानी का प्रबन्ध होना चाहिए।

पशुओं की गुणवत्ता में सुधार करने लिए सरकार प्रयत्नशील है और पंचवर्षीय योजनाओं में पशु सुधार को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। बेकार पशुओं के लिए 'गोसदन' स्थापित किए जा रहे हैं और सरकारी पशु फार्म खोले जा रहे हैं जहाँ जनता के सम्मुख पशु–पालन की विधियों का प्रदर्शन किया जाता है। कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र एवं पशुधन विकास केन्द्र भी खोले जा रहे हैं।

5(v) पशु–सम्पदा के कल्याण हेतु चलाये जाने वाले कार्यक्रम

(Programmes under taken for live stocke welfare)

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में पशुपालन हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। पशुपालन का महत्व प्राचीनकाल से ही रहा है। पशुपालकों की आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति के साथ–साथ चित्रकूट धाम मण्डल की बढ़ती हुई जनसंख्या को स्वस्थ्य रखने के लिए पौष्टिक पदार्थ उपलब्ध कराया जा सके एवं बेरोजगार युवकों को रोजगार दिलाया जा सके तथा गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले करोड़ों व्यक्तियों को पोषण कर आर्थिक एवं सामाजिक स्तर सुधारा जा सके। इस हेतु पशु–सम्पदा के कल्याण के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं:–

(1) पशु नस्ल सुधार कार्यक्रम – पशु नस्ल सुधार हेतु उनके उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए कृत्रिम गर्भाधान द्वारा अतिहिमीकृत वीर्य का उपयोग अच्छे किस्म के विदेशी साँड़ों जर्सी फ्रीजियन का उपयोग कर उन्नत नस्ल की संतति उत्पन्न कर दुग्ध उत्पादन बढ़ाया जा रहा है। इसके साथ ही अंशदान पर अच्छे नस्ल के साँड़ ग्रामों में वितरित किये गये हैं।

(2) बधियाकरण कार्यक्रम – नकारात्मक तथा बेकार साड़ों का बधियाकरण का कार्यक्रम भी विभाग द्वारा प्रत्येक जनपद में चलाया जा रहा है, जिससे हमारे बछड़े अच्छे बैल बने और उन्नतिशील साड़ ही प्रजनन के कार्य आ सके।

(3) बकरी प्रजनन कार्यक्रम – चित्रकूट धाम मण्डल में बकरी महत्वपूर्ण जैवीय संसाधन है, इसके उत्पादन माँस, दूध, खाल, खाद, बाल (मोहेयर) है। इसके प्रजनन को बढ़ावा देने के लिए चित्रकूट धाम मण्डल के प्रत्येक जनपद में अधिकाँश पशु चिकित्सालयों पर उन्नतशील नस्ल के बरबरी एवं जमुनापारी बकरे रखे गये हैं। इसके साथ ही ग्रामीण अंचल में बकरी पालकों को अंशदान पर बकरा साड़ वितरित किये गये हैं, जिससे दूध एवं माँस का उत्पादन बढ़ सके।

(4) भेड़ प्रजनन कार्यक्रम – चित्रकूट धाम मण्डल के प्रत्येक जनपद में भेड़ की नस्ल सुधारने एवं ऊन का उत्पादन बढ़ाने के लिए अंशदान पर उन्नतिशील नाली नस्ल के भेड़ों का वितरण किया गया है, जिससे गरीब भेड़ पालकों के भेड़ों का नस्ल सुधार कर ऊन तथा माँस का उत्पादन बढ़या जा सकेगा फलतः उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार आयेगा। चित्रकूट धाम मण्डल में 7 भेड़ विकास केन्द्र खोले गये जो हमीरपुर, बांदा, महोबा प्रत्येक जनपद में एक–एक तथा चित्रकूट जनपद में 4 भेड़ विकास केन्द्र स्थापित हैं।

(5) सूकर प्रजनन कार्यक्रम – समाज के पिछड़े वर्ग के लोगों के उत्थान के लिए चित्रकूट धाम मण्डल के प्रत्येक जनपद में 11 पशु चिकित्सालयों पर उन्नतिशील सूकर साँड प्रजनन हेतु रखे गये है। इच्छुक सूकर पालकों को अंशदान पर भी उन्नतिशील साँड उपलब्ध कराये जाते हैं। देशी सूकरों को उपरोक्त नर सूकरों से गार्भाधान कराकर उन्नत बच्चे पैदा किये जाते हैं। सूकरों के स्वास्थ्य की देखभाल मण्डल के सभी पशु चिकित्सालयों द्वारा किया जाता है। सूकरों के रख–रखाव टीकाकरण, कृमिनाशक दवाएं, खुजली की दवाएँ उपलब्ध कराई जाती है। प्रदेश में विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत सूकर पालकों को अनुदान पर इकाइयाँ स्थापित करने के लिए प्रदेशीय सरकार तथा भारत सरकार द्वारा अनुदान दिये जाने का प्राविधान है। सूकर पालन का कार्य सूकर पालकों के आर्थिक स्थिति में सुधार ला रहा है। चित्रकूट धाम मण्डल में 11 पशु चिकित्सालयों में सूकर विकास केन्द्र स्थापित किये गये है, जिसमें हमीरपुर जनपद में 5, बांदा में 1, महोबा में 3, तथा चित्रकूट में 2 सूकर विकास केन्द्र हैं।

(6) चिकित्सीय सुविधाएँ – रोगी पशुओं को स्वस्थ्य रखने के लिए पशु चिकित्सालयों द्वारा चिकित्सा की सुविधा प्रदान की जाती है। चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में 60 पशु चिकित्सालय कार्य कर रहे हैं। हमीरपुर जनपद में 17, महोबा जनपद में 9, बांदा जनपद में 20 तथा चित्रकूट जनपद में 14 पशु चिकित्सालय हैं।

(7) टीकाकरण कार्यक्रम – संक्रामक बीमारियों से बचाने के लिए सुरक्षात्मक टीकाकरण अभियान के रुप में लागू किया गया है, जिससे पशुओं में महामारी न फैलने पाये। प्रतिवर्ष गलाघोंटू, खुरपका, मुहपका, ब्लैक क्वार्टर, रेबीज के टीके पशुओं के लगाये जाते है। मुर्गियों की बीमारियों फालपॉक्स, रानीखेत की रोकथाम के लिए भी टीके लगाये जाते हैं।

(8) कुक्कुट विकास कार्यक्रम – अण्डा तथा माँस उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए झाँसी कुक्कुट फार्म से मुर्गी के बच्चों, जिसमें अण्डा देने वाली मुर्गी के बच्चे तथा माँस उत्पादन वाले ब्रायलर बच्चे कुक्कुट व्यवसायमें जुड़ लोगो को उपलब्ध कराया जाता है, जिससे कुक्कट पालकों का जीवन स्तर सुधरे, अधिक आमदनी प्राप्त हो तथा बेरोजगारी समाप्त हो, इस प्रकार के 'ब्रायलर यूनिट' क्षेत्र में चल रहे हैं। इसके लिए निःशुल्क प्रशिक्षण की सुविधा भी विभाग विभाग द्वारा प्रदत्त की जाती है।

5(vi) चारागाह, पशु चिकित्सालय, कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र, मत्स्य संसाधन

चारागाह :– पशुओं से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि उनकी खिलाई–पिलाई आवश्यकतानुसार उचित ढ़ंग से की जाए। साथ ही इस बात का भी ध्यान रखा जाय कि आहार मूल्य में सस्ता भी हो। आहार सन्तुलित होना चाहिए जिससे पशु के शरीर को सभी आवश्यक पोषक तत्व उचित मात्रा मे उपलब्ध हो सके, जिससे संतुलित शारीरिक विकास, गर्भावस्था तथा अन्य विशेष अवस्थाओं की आवश्यकतापूर्ण हो सके।

पशुओं को चरने के लिए चारागाह आवश्यक हैं। जहाँ चारागाह का अभाव होता है। वहाँ खेतों में बरसीम, लूसर्न, जई, ज्वार या चरी, मक्का, बाजरा, मीठी ज्वार, लोबिया, ग्वार, सोयाबीन आदि उगाकर उसे खेत से काटकर कुट्टी करके पशुशाला में खिलाया जाता है।

चित्रकूट धाम मण्डल के पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था ठीक नहीं है और उन्हे पेटभर चारा नहीं मिलता। जनसंख्या की अधिकता के कारण तथा भूमि के कमी के कारण अधिकांश भूमि पर खेती की जाती है और चारागाहों की बहुत कमी है। चित्रकूट धाम मण्डल में कृषि योग्य भूमि के केवल 3% भाग पर चरी बोई जाती है और पशुओं का मुख्य चारा ठंडलों से प्राप्त कुट्टी और अनाजों द्वारा प्राप्त भूसा हैं। पशुओं के स्वास्थ्य के लिए हरा चारा आवश्यक है। यह वर्षा ऋतु में तो मिल जाता है परन्तु मार्च से जून तक शुष्क ऋतु में हरे चारे की विशेष कमी हो जाती है। पशुओं को पेट भर चारा देने के लिए आवश्यक है कि चारागाहों की उचित व्यवस्था की जाय और उसमें अच्छे किस्म की घास बोई जाय। बरसीम एक ऐसा चारा है जिसमें केवल पौष्टिक तत्व ही अधिक मात्रा में नहीं मिलता वरन् यह साल में कई बार बोया और काटा जाता है। चारे का उचित प्रबन्ध करके ही श्वेत क्रान्ति लाई जाती है।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में 1177 हेक्टेयर भूमि में चारागाह है, जो कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का मात्र 0.08% है। हमीरपुर जनपद में 314 हेक्टेयर, महोबा में 404 हेक्टेयर, बांदा में 400 हेक्टेयर तथा चित्रकूट जनपद में 59 हेक्टेयर भूमि में चारागाह है। विकासखण्डों में सर्वाधिक चारागाह का क्षेत्रफल मौदहा विकासखण्ड में 182 हेक्टेयर है, जो मौदहा विकासखण्ड के कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का 0.20% तथा मण्डल के कुल चारागाह के क्षेत्रफल का 15.5% है। इसके अतिरिक्त तिन्दवारी में 138 हेक्टेयर, जैतपुर में 117 हेक्टेयर, कबरई में 120 हेक्टेयर, बड़ोखर खुर्द में 103 हेक्टेयर तथा गोहाण्ड में 50 हेक्टेयर भूमि में चारागाह है। शेष विकासखण्डों में 50 हेक्टेयर से भी कम भूमि में चारागाह है। सुमेरपुर, तथा रामनगर विकासखण्डों में चारागाहों का अभाव है। निम्नलिखित तालिका में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार चारागाह का क्षेत्रफल दर्शाया गया है :–

तालिका संख्या 5–12

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार चारागाह का क्षेत्रफल (हेक्टेयर में) 2000–01

क्र.सं.	विकासखण्ड	चारागाह का क्षेत्र (हेक्टे. में)	प्रतिशत
1	कुरारा	27	2.3
2	सुमेरपुर	–	–
3	सरीला	41	3.5
4	गोहाण्ड	50	4.2
5	राठ	3	0.3
6	मुस्करा	11	0.9
7	मौदहा	182	15.5
जनपद हमीरपुर		314	26.7
8	पनवाड़ी	98	8.3
9	जैतपुर	117	9.9
10	चरखारी	62	5.3
11	कबरई	120	10.2
नगरीय		7	0.6
जनपद महोबा		404	34.3
12	जसपुरा	27	2.3
13	तिन्दवारी	138	11.7
14	बड़ोखर खुर्द	103	8.8
15	बबेरु	30	2.5
16	कमासिन	8	0.7
17	विसण्डा	31	2.6
18	महुआ	22	1.9
19	नरैनी	41	3.5
जनपद बांदा		400	34.0
20	पहाड़ी	8	0.7
21	कर्वी	31	2.6
22	मानिकपुर	6	0.5
23	रामनगर	–	–
24	मऊ	14	1.2
जनपद चित्रकूट		59	5.0
मण्डल योग		1177	100.0

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

पशु चिकित्सालय :— तालिका सं. 5—13 से स्पष्ट है कि चित्रकूट धाम मण्डल में पशु—चिकित्सालयों की संख्या कम है तथा वे गाँवों से दूर स्थित हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में कुल पशु चिकित्सालयों की संख्या 60 है, जिसमें जनपद हमीरपुर में 17, महोबा में 9, बांदा में 20 तथा चित्रकूट जनपद में 14 हैं। राठ, चरखारी, बबेरु तथा विसण्डा विकासखण्डों में ग्रामीण क्षेत्र में एक भी पशु चिकित्सालय नहीं हैं।

पशु चिकित्सालयों के अतिरिक्त चित्रकूट धाम मण्डल में कुल 78 पशुधन विकास केन्द्र है। इनकी सख्या हमीरपुर जनपद में 23, महोबा जनपद में 14, बांदा जनपद में 25 तथा चित्रकूट जनपद में 16 हैं। तालिका सं. 5—13 में विकासखण्डवार पशुचिकित्सालय संख्या तथा पशुधन विकास केन्द्र संख्या प्रदर्शित की गयी है।

कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र :— उपकरणों की सहायता से साँड से वीर्य को एकत्रित करके उचित समय पर मादा पशु की जननेन्द्री में पहुँचा देने की प्रक्रिया को कृत्रिम गर्भाधान कहते हैं। इसके पश्चात् शुक्र कीट, डिम्ब का निषेचन करके भ्रूण की उत्पत्ति करता है। इस विधि को अपनाकर उत्तम नस्ल के साँडों के अभाव की पूर्ति भली प्रकार से हो जाती है क्योंकि नैसर्गिक प्रजनन द्वारा एक साँड एक वर्ष में लगभग 100 गायों को गर्भित कर सकता है परन्तु इस विधि से एक साँड से एक वर्ष में 1000 से 2000 तक पशु गर्भित किए जा सकते हैं।

वीर्य एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जा सकता है, यहाँ तक अति हिमीकृत वीर्य (Deep Frozen Semen) एक देश से दूसरे देश तक भी ले जाया जा सकता है। कृत्रिम गर्भाधान में केवल उत्तम गुण वाले साँडों के वीर्य का ही प्रयोग होता है।

(वर्ष 2001—02 में) चित्रकूट धाम मण्डल में कुल 43 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र तथा 18 कृत्रिम गर्भाधान उपकेन्द्र स्थित हैं। हमीरपुर जनपद में 12 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र तथा 11 कृत्रिम गर्भाधान उपकेन्द्र, महोबा जनपद में 4 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र तथा 7 कृत्रिम गर्भाधान उपकेन्द्र है, बांदा जनपद में 16 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र तथा चित्रकूट जनपद में 11 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र स्थित हैं। मौदहा, चरखारी, पनवाड़ी, तथा विसण्डा विकासखण्डों में ग्रामीण क्षेत्र में कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र स्थापित नहीं है अतः इन विकासखण्डों में कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र खोलने की आवश्यकता है।

तालिका सं. 5—13 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों तथा उपकेन्द्रों की संख्या दर्शायी गयी है :—

तालिका सं. 5—13

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार पशुचिकित्सालय, पशुधन विकास केन्द्र तथा कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र (2001—02)

क्र.सं.	विकासखण्ड	पशु चिकित्सालय संख्या	पशु धन विकास केन्द्र संख्या	कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र संख्या	कृत्रिम गर्भाधान उपकेन्द्र संख्या
1	कुरारा	1	3	1	1
2	सुमेरपुर	1	6	1	2

3	सरीला	2	2	1	1
4	गोहाण्ड	1	3	1	1
5	राठ	–	3	1	2
6	मुस्करा	2	2	1	2
7	मौदहा	2	4	–	–
नगरीय		8	–	6	2
जनपद हमीरपुर		17	23	12	11
8	पनवाडी	1	3	–	2
9	जैतपुर	2	2	1	1
10	चरखारी	–	3	–	–
11	कबरई	1	6	1	1
नगरीय		5	–	2	3
जनपद महोबा		9	14	4	7
12	जसपुरा	1	3	1	–
13	तिन्दवारी	3	3	4	–
14	बड़ोखर खुर्द	2	4	–	–
15	बबेरु	–	4	1	–
16	कमासिन	1	2	1	–
17	विसण्डा	–	2	–	–
18	महुआ	2	3	1	–
19	नरैनी	3	3	2	–
नगरीय		8	1	6	–
जनपद बांदा		20	25	16	–
20	पहाड़ी	1	2	1	–
21	कर्वी	2	3	2	–
22	मानिकपुर	4	5	2	–
23	रामनगर	2	2	2	–
24	मऊ	2	3	1	–
नगरीय		3	1	3	–
जनपद चित्रकूट		14	16	11	–
चित्रकूटधाममण्डल योग		60	78	43	18

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

मत्स्य संसाधन (Fishing) :– मछली एक महत्वपूर्ण पौष्टिक खाद्यपदार्थ है और कुछ हद तक खाद्यान्नों की कमी को पूरा करती है। कृषि की अपेक्षा मछली मारने का काम बहुत सरल है। खेती के लिए खेत जोतने बोने से लेकर फसलों को काटकर अन्न प्राप्त करने तक अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है जबकि मत्स्याखेट में समुद्र, नदियों, जलाशयों, एवं तालाबों आदि में जाल फेंककर मछलियाँ पकड़ ली जाती है। मछलियों की वंश वृद्धि भी बहुत शीघ्र होती है क्योंकि मछलियाँ केवल एक बार में ही लाखों की संख्या में अंडे देती हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में नदियों, बाँधों, नहरों, तथा तालाबों में ताजे पानी में मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। बाँधों तथा तालाबों में मछलियों का पालन–पोषण होता है। कुछ तालाब तो मछलियों को पालने के उद्देश्य से ही बनाये गए हैं। ताजे पानी की मछलियाँ छोटी होती हैं और उनका शिकार भी छोटे पैमाने पर जालों में फँसाकर और कटियों द्वारा किया जाता है।

नदियों की मछलियाँ :– चित्रकूट धाम मण्डल में प्रमुख नदियाँ यमुना, बेतवा, केन, धसान, बागैं, पयस्वनी हैं। इसके अतिरिक्त अनेक छोटी–छोटी नदियाँ हैं जिनमें मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। वर्ष 2001–02 में चित्रकूट धाम मण्डल में नदियों में लगभग 1600 कुन्तल मछली का उत्पादन हुआ।

बाँध :– चित्रकूट धाम मण्डल में सिंचाई हेतु बाँध बनाये गये हैं जिनमें वर्षभर पानी रहता है। इनमें मछलियों का पोषण करके मछलियों की पैदावार बढायी जा सकती है और बाँधों का पानी भी साफ रखा जा सकता है। वर्ष 2001–02 में मण्डल में बाँधों में लगभग 2500 कुन्तल मछली का उत्पादन हुआ।

तालाब :– चित्रकूट धाम मण्डल में छोटे–बड़े कई तालाब हैं, जिनमें वहाँ के निवासी अपने निजी उपभोग के लिए मछलियाँ मार लेते हैं। कुछ विभागीय तालाब हैं जो मत्स्यपालन हेतु पट्टे पर दिये जाते हैं। कई तालाबों में वर्षभर पानी रहता है और कई तालाब ग्रीष्म ऋतु में सूखने लगते हैं तो मछलियाँ तालाब के कीचड़ में प्रवेश कर जाती हैं और वर्षा ऋतु में पुनः तालाबों के जल में चली जाती हैं। 2001–02 में चित्रकूट धाम मण्डल के विभागीय जलाशयों में 1952 कुन्तल मछली का उत्पादन हुआ। सबसे अधिक उत्पादन महोबा जनपद में 962 कुन्तल हुआ। इसके अतिरिक्त बांदा जनपद में 831 कुन्तल तथा चित्रकूट जनपद में 159 कुन्तल उत्पादन हुआ।

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार विभागीय जलाशयों की संख्या, क्षेत्रफल तथा मत्स्य–उत्पादन निम्नलिखित तालिका संख्या 5–14 में दर्शाया गया है :–

तालिका सं.– 5–14

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार विभागीय जलाशयों में मत्स्य–उत्पादन 2001–02

क्र.सं.	विकासखण्ड	जलाशय सं.	क्षेत्रफल (हेक्टे.)	उत्पादन कुन्तल में
1	कुरारा	1	0.20	–
2	सुमेरपुर	–	–	–
3	सरीला	–	–	–
4	गोहाण्ड	–	–	–
5	राठ	–	–	–
6	मुस्करा	–	–	–
7	मौदहा	–	–	–
नगरीय		1	9.84	–
जनपद हमीरपुर		2	10.04	–
8	पनवाड़ी	2	7.50	100

9	जैतपुर	4	320.84	200
10	चरखारी	1	1000.00	262
11	कबरई	9	2565.00	400
जनपद महोबा		16	3893.34	962
12	जसपुरा	—	—	—
13	तिन्दवारी	1	1.20	15
14	बड़ोखर खुर्द	1	0.98	16
15	बबेरु	9	15.26	270
16	कमासिन	—	—	—
17	विसण्डा	4	21.50	336
18	महुआ	2	6.38	127
19	नरैनी	2	3.09	67
जनपद बांदा		19	48.41	831
20	पहाड़ी	—	—	—
21	कर्वी	1	648.00	159
22	मानिकपुर	3	810.00	—
23	रामनगर	—	—	—
24	मऊ	1	172.00	—
जनपद चित्रकूट		5	1630.00	159
मण्डल–योग		42	5581.79	1952

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

मत्स्य–पालन हेतु चलाये जाने वाले कार्यक्रम :–

मत्स्य विभाग द्वारा मत्स्य पालन हेतु चलाये जा रहे कार्यक्रम इस प्रकार हैं :–

(1) ग्राम समाज के दस वर्षीय तालाबों का पट्टा :– ग्राम समाज के तालाबों का मत्स्य पालन हेतु दस वर्षीय पट्टा दिलाने में तहसील स्तर पर उपजिलाधिकारी द्वारा निर्गत किया जाता है। पट्टा दिलाने में मत्स्य पालक विकास अभिकरण सहयोग करता है।

(2) तालाब सुधार एवं उत्पादन निवेशों की सुविधा :– तालाब सुधार कार्य हेतु शासनादेश 23 अक्टूबर 2000 रू0 द्वारा 60,000/– प्रति हेक्टेयर अनुदान 20% की दर से अधिकतम रु 12000 प्रति हेक्टेयर तथा अनु0 जाति एवं जनजाति के लिए 25% अर्थात् 15000 रु प्रति हेक्टेयर तक देय है।

(3) निजी भूमि पर तालाब निर्माण :– मण्डल में निजी भूमि पर तालाब निर्माण हेतु केवल ऐसे मत्स्य पालकों को ऋण देय है जो अपनी अनुपजाऊ भूमि को मत्स्य पालन हेतु प्रयोग में लाना चाहता हो। ऐसे ऋण पर रु0 2.0 लाख प्रति हेक्टेयर की दर से अधिकतम रुपया 40,000 अनुदान देय (20% की दर से) तथा अनु0 जाति जनजाति हेतु रुपया अधिकतम 50,000 अनुदान देय (25% की दर से) है।

(4) तालाबों की मिट्टी व पानी की जाँच व तकनीकि परामर्श :– मत्स्य पालकों के तालाबों की मिट्टी पानी की जाँच मत्स्य विभाग की मण्डलीय प्रयोगशालाओं में निःशुल्क की जाती है तथा वैज्ञानिक मत्स्य पालन हेतु तकनीकि परामर्श निःशुल्क दिया जाता है।

(5) मत्स्य बीज उत्पादन एवं वितरण :– मत्स्य पालकों को ऑक्सीजन पैकिंग में सरकारी दरों पर तालाब तक शुद्ध मत्स्य बीज की आपूर्ति की जाती है।

(6) मत्स्य बीज हैचरी की निजी क्षेत्र में स्थापना :– निजी क्षेत्र में मत्स्य बीज उत्पादन को बढ़ावा देने व रोजगार सृजन हेतु स्थापना प्रस्तावित है जिसकी स्थापना हेतु 10 मिलियन फ्राई क्षमता वाली हैचरी हेतु अधिकतम रु 7.20 लाख का बैंक ऋण तथा रु 80,000/– तक अनुदान दिया जाता है तथा हैचरी निर्माण की तकनीकि भी उपलब्ध करायी जाती है।

(7) जलाशयों व झीलों में मत्स्य विकास :– विभागीय जलाशयों/झीलों को खुली नीलामी के माध्यम से ठेके पर दिये जाने की व्यवस्था है। श्रेणीवार विभागीय जलाशयों के ठेके की अवधि श्रेणी एक या दो–3वर्ष तथा श्रेणी तीन या चार –5 वर्ष की है।

(8) मछुवा आवास निर्माण :– भारत सरकार के सहयोग से ग्रामीण निर्धन. मछुआरों को अपने आवास निर्माण हेतु प्रति आवास रुपया 20,000/– तथा 20 आवासों पर रुपये 15000/–की लागत से एक हैण्डपम्प की सुविधा अनुमन्य है।

(9) मत्स्य जीवी सहकारी समितियों का गठन तथा पंजीकरण :– न्यूनतम दस सदस्यों (मछुवारों) की एक समिति का गठन कर उसके प्रस्ताव का पंजीकरण उ0प्र0 मत्स्य निर्देशालय लखनऊ के स्तर पर किया जाता है।

(10) मत्स्य पालकों को दस दिवसीय मत्स्य पालन प्रशिक्षण :– मत्स्य पालकों को मत्स्य पालन तकनीक का दस दिवसीय अल्पकालीन प्रशिक्षण दिया जाता है, जिस पर 50 रु प्रतिदिन की दर से प्रशिक्षणार्थियों को मानदेय एवं प्रशिक्षण यात्रा भत्ता प्रति प्रशिक्षणार्थी 100 रू0 दिया जाता हैं।

(11) दुर्घटना बीमा योजना :– पंजीकृत मत्स्य सहकारी समितियों के 65 वर्ष तक की उम्र के मछुवारों का दुर्घटना बीमा योजना मृत्यु होने पर 50000 रु0 व अपंग होने की दशा में 25000 रु की धनराशि दिये जाने का प्रविधान है। बीमा प्रीमियम की धनराशि रु 14 प्रति सदस्य की दर से आधी धनराशि भारत सरकार व आधी धनराशि उ0प्र0 सरकार द्वारा जमा की जाती है।

1. आर0 वी0 वर्मा : 'भारत का संक्षिप्त भैगोलिक विवेचन', किताब घर कानपुर, पृ0 27।
2. आर0 ए0 चौरसिया : 'एग्रो इण्ड्रस्ट्रियल डेवलेप्मेंट–ए स्ट्राट्जी चुघ पब्लिकेशन इलाहाबाद, इण्डिया 1988, पृ0 69।
3. रिपोर्ट ऑफ द रॉयल कमीशन आन एग्रीकल्चर, पृष्ठ 169।
4. प्रो0 राजेन्द्र प्रसाद तथा डा0 वीरेन्द्र कुमार विजय : 'गौवंश आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था'– विश्व आयुर्वेद परिषद पत्रिका, सितम्बर 2002 ई0, 58 लोधी स्टेड, नई दिल्ली, पृ0 91।
5. डा0 राजेश दुबे : 'गाय का गोबर एक जैविक सोना'– विश्व आयुर्वेद परिषद पत्रिका, सितम्बर 2002 ई0, 58 लोधी स्टेड, नई दिल्ली, पृ0 146।
6. आर0 वी0 वर्मा : 'भारत का संक्षिप्त भैगोलिक विवेचन', किताब घर कानपुर, पृ0 27।
7. डॉ0 मेवाराम, विश्व का भूगोल (ग्यारहवाँ संस्करण),भारत भारती प्रकाशन एण्ड कं. मेरठ, पृष्ठ 306।

अध्याय –6

कृषि–संसाधन (Agriculture Resources)

'कृषि' (Agriculture) का अर्थ है मनुष्य के उपयोग के लिये पौधे उगाना या पशुपालन करना। अंग्रेजी का 'Agriculture' शब्द लैटिन भाषा के 'Ager' और 'Cultura' शब्दों के योग से बना है, जिसका अर्थ है, 'खेत' और देखभाल अर्थात् भूमि को जोतकर फसल पैदा करना है। परन्तु कृषि शब्द की संकल्पना में भूमि से फसल उत्पन्न करने के साथ ही पशुपालन, सिंचाई आदि क्रियाएँ भी सम्मिलित हैं। साथ ही अन्तर्निहित भाव यह भी है कि पौधों एवं पशुओं की उन प्रजनन प्रक्रियाओं पर भी मानव का नियन्त्रण होता है, जो उनके (पौधों एवं पशुओं के) विकास में सहायक होती है। निश्चित रुप से कृषि का सम्बन्ध स्थायी निवासियों से है। इन तथ्यों के आधार पर कृषि की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है–*''कृषि मानव के उन प्रयासों को कहते हैं जिनके द्वारा वह भूमि पर बस कर उसके उपयोग की कोशिश करता है, और यथा सम्भव पौधों एवं पशुओं के प्राकृतिक प्रजनन एवं वृद्वि की प्रक्रिया को तीव्र एवं विकसित बनाता है। इन सभी कार्यों का उद्‌देश्य मानव के लिए आवश्यक या उसके द्वारा वांछित वानस्पतिक एवं पशु उपजें उत्पन्न करना होता है।''*[1]

बुकानन[2] ने 'कृषि शब्द को मिश्र–शब्द (Porymanteau word) कहा है जिसका बड़ा व्यापक अर्थ है और इसके अन्तर्गत मानव प्रयोग के लिए खाद्य पदार्थ अथवा कच्चे माल उत्पन्न करने के लिए मिट्टी का उपयोग करने वाली अत्यन्त साधारण से लेकर अत्यन्त जटिल तक विधियाँ आती हैं।'

मानवीय आर्थिक कार्यों में कृषि कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। यह सभी छोटे बड़े विकसित तथा विकासशील देशों में की जाती है। अतः अन्य आर्थिक कार्यों की तुलना में यह अधिक सार्वभौमिक है। इस सार्वभौमिकता का मूल कारण कृषि का उपभोक्ता (विशेषता खाद्य) वस्तुओं का लगभग एक मात्र स्रोत का होना है।

विश्व में औद्योगीकरण और नगरीकरण में तीव्र वृद्धि होते हुए भी कृषि ही एक ऐसी क्रिया है जिसमें सर्वाधिक क्रियाशील जनसंख्या लगी हुई है। भारत में कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 44.8% भाग कृषि उत्पादन के लिए उपयोग किया जाता है तथा लगभग जनसंख्या का 76.7% भाग जीविका के लिए इस पर निर्भर है। भारत की कुल आय में कृषि एवं पशुपालन के उत्पादनों का योगदान लगभग 30% है।

चित्रकूट धाम मण्डल का मुख्य उद्यम कृषि है। इस मण्डल के कुल परिवेक्षित क्षेत्र के 71% भाग में कृषि की जाती है। मण्डल के कुल कर्मकरों में (1991 की जनगणनानुसार) में 46.4% कृषक 23.6% कृषि श्रमिक तथा 16.8% सीमान्त कर्मकर हैं। मण्डल में उद्योग, वाणिज्य, तथा व्यापार आदि का विकास न होने के कारण लगभग 86.8% जनसंख्या कृषि पर निर्भर है।

6(i) सामान्य भूमि उपयोग :–

भूमि संसाधन कृषि के दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण संसाधन है। चित्रकूट धाम मण्डल में मानव श्रम की अधिकता तथा औद्योगिक विकास कम होने के कारण इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। भूमि उपयोग के आँकड़ों के आधार पर यह ज्ञात किया जा सकता है कि प्रतिव्यक्ति कितनी भूमि उपलब्ध है। आँकड़ों के आधार पर किसी क्षेत्र की भूमि की उत्पादन क्रिया–कलाप तथा कृषि पर आश्रित उद्योग धन्धों की एक रुपरेखा तैयार की जा सकती है, जिसके लिए औसत जोत आकार में कितना भाग सिंचित है अथवा असिंचित है, उसकी उर्वरा शक्ति, भूमि की किस्म व उसकी रासायनिक व भौतिक दशा आदि ऑकडों की आवश्यकता होती है। जिनका उल्लेख इसी अध्याय में आगे किया गया है।

तालिका सं. 6–1

चित्रकूट धाम मण्डल में भूमि उपयोग (हेक्टेयर में)

क्र.सं.		1997–98	प्रतिशत	2000–01	प्रतिशत
1	वन	116780	7.80	133222	8.91
2	कृषि योग्य बंजर भूमि	55168	3.69	41707	2.79
3	वर्तमान परती	58738	3.92	65597	4.39
4	अन्य परती	38066	2.54	35611	2.38
5	ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	56623	3.78	53166	3.56
6	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	101679	6.79	102328	6.84
7	चरागाह	1146	0.08	1177	0.08
8	उद्यानों,बागों वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्र	9978	0.67	5253	0.35
9	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	1058762	70.73	10572210	70.70
	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र	1496940	100.00	1495271	100.00

स्रोत : सांख्यकीय पत्रिका चित्रकूट धाम मण्डल, बांदा, 2001 व 2002

तालिका सं. 6–1 में प्रदर्शित भूमि उपयोग के अन्तर्गत चित्रकूट धाम मण्डल में 1997–98 में कुल प्रतिवेदित क्षत्रफल में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 70.73% तथा 2000–01 में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 70.70% है (चित्र 6–1) वन भूमि का प्रतिशत 1997–98 तथा 2000–01 में क्रमशः 7.80 तथा 8.91 है। कृषि योग्य बंजर भूमि का प्रतिशत 1997–98 तथा 2000–01 में क्रमशः 3.69 तथा

FIG. 6.2
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
GENERAL LAND USE CATEGORIES
2000-01
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26°
N
30'
25°
24°
30'
N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
KURARA
SUMERPUR
JASPURA
TINDWARI
MAUDAHA
BABERU
KAMASIN
PAIHARI
RAMNAGAR
MAU
SARILA
GOHAND
MUSKARA
RATH
CHARKHARI
KABRAI
BAROKHAR KHURD
MAHUA
BISANDA
KARWI
NARAINI
PANWARI
JAITPUR
MANIKPUR
NET CROPPED AREA
FORESTS, PASTURES AND ORCHARDS
CULTIVABLE WAS TES, CURRENT FALLOWS AND OTHER FALLOWS LAND
BARREN AND UNCULTIVATED LAND
LAND PUT TO NON AGRICULTURAL USES
HECTARES
90000
60000
30000

2.79 है। 1997–98 तथा 2000–01 में वर्तमान परती का प्रतिशत क्रमशः 3.92 तथा 4.39, अन्य परती भूमि का प्रतिशत क्रमशः 2.54 तथा 2.38, ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि का प्रतिशत क्रमशः 3.78 तथा 3.56, कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि का प्रतिशत क्रमशः 679 तथा 6.84 है, जबकि चारागाह का प्रतिशत केवल 0.08 है। 1997–98 में उद्यानों बागोंवृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्र का प्रतिशत 0.67 है जो 2000–01 में घटकर 0.35%रह गया है।

विकासखण्डवार (ग्रामीण) भूमि उपयोग के अन्तर्गत कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल में शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल का सर्वाधिक प्रतिशत मौदहा में

88.36: (82850 हेक्टेयर) तथा न्यूनतम प्रतिशत विकासखण्ड मानिकपुर में 33.97: (31537 हेक्टेयर) है। अन्य विकासखण्डों में सुमेरपुर में 83.04:, मुस्करा में 82.04:, जसपुरा में 80.46:, बड़ोखर खुर्द में 80.40:, महुआ मे 80.33 तथा पहाडी में 85.91: भाग है। हमीरपुर जनपद के सभी विकासखण्डों में वास्तविक बोया गया क्षेत्रफल का प्रतिशत 60: से अधिक है।(परिशिष्ट सं. 6–1 तथा 6–2)

महोबा जनपद में जैतपुर विकासखण्ड को छोड़कर सभी विकासखण्डों में शुद्ध बोए गए क्षेत्रफल का प्रतिशत 70% से अधिक है, जैसे पनवाड़ी में 72.16%, चरखारी में 75.61%, तथा कबरई में 78.06%। (मानचित्र सं. 6–2)

बांदा जनपद के विकासखण्डों में नरैनी विकासखण्ड को छोड़कर अन्य सात विकासखण्डों में शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल का प्रतिशत 70% से 81% के मध्य में है। चित्रकूट जनपद में शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल का प्रतिशत मानिकपुर तथा कर्वी विकासखण्ड में बहुत कम क्रमशः 33.97% तथा 38.39% है, क्योंकि यह पाठा क्षेत्र है। पहाड़ी का सर्वाधिक 85.91% रामनगर तथा मऊ का क्रमशः 74.46% तथा 62.47% भाग शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल के अंतर्गत आता है।

जनपदवार शुद्ध बोए गए क्षेत्रफल का प्रतिशत सबसे अधिक हमीरपुर जनपद में 78.52% है तथा सबसे कम चित्रकूट जनपद में 53.41% है। महोबा तथा बांदा जनपद में क्रमशः 72.86 तथा 74.90 प्रतिशत है। हमीरपुर जनपद में मैदानी भाग, उपजाऊ मिट्टी तथा सिंचाई की सुविधा होने के कारण कृषि के लिए भूमि का सबसे अधिक उपयोग किया गया है। चित्रकूट जनपद में पहाड़ी एवं पठारी भाग होने के कारण कृषि योग्य भूमि की कमी है इसलिए भूमि का कृषि के लिए सबसे कम उपयोग किया गया है।

सन् 2000–01 के आँकड़ों के आधार पर विकासखण्डवार वन भूमि का सर्वाधिक विस्तार कर्वी में 48.58% तथा कमासिन में वन भूमि का अभाव है।

अन्य विकासखण्डों में मानिकपुर में 37.45% तथा मऊ में 1756% है। हमीरपुर जनपद के विकासखण्डों में राठ तथा सरीला में क्रमशः 12.25% तथा 11.32% वन भूमि है। शेष 5 विकासखण्डों में 0.31% से 9% के मध्य यह विस्तार पाया जाता है। महोबा जनपद में 1% से 10% के बीच, बांदा जनपद में 0 से 2% के बीच, चित्रकूट जनपद में सर्वाधिक कर्वी में 48.58%-तथा सबसे कम पहाड़ी में 0.01% वन भूमि का विस्तार है। रामनगर में 6.58% तथा मऊ में 17.56% वन भूमि का विस्तार है।

चित्रकूट धाम मण्डल में जनपदवार वन भूमि का सबसे अधिक प्रतिशत चित्रकूट जनपद में 27.38% तथा न्यूनतम प्रतिशत बांदा जनपद में 1.10% है।

कृषि योग्य बंजर भूमि का विकासखण्डवार सर्वाधिक प्रतिशत मऊ विकासखण्ड में 7.99% तथा सबसे कम प्रतिशत विकासखण्ड सुमेरपुर में मात्र 0.03% है। अन्य विकासखण्डों में, कृषि योग्य बंजर भूमि का विस्तार रामनगर में 5.15%, जैतपुर में 5.34%, पनवाड़ी में 4.36%, कबरई में 4.03% हैं। शेष विकासखण्डों में 0.03% से 4% के बीच हैं।

मण्डल में जनपदीय विश्लेषण से विदित होता है कि कृषि योग्य बंजर भूमि का सर्वाधिक प्रतिशत महोबा जनपद में 4.17%, तथा न्यूनतम हमीरपुर जनपद में 1.28% है। बांदा जनपद में 2.68% तथा चित्रकूट जनपद में 3.60% है। वर्तमान परती भूमि का सर्वाधिक प्रतिशत नरैनी विकासखण्ड में 16.60% तथा न्यूनतम प्रतिशत मानिकपुर में 0.99% है। अन्य विकासखण्डों में कुरारा 4.78% जैतपुर में 3.55%, सुमेरपुर में 6.08%, सरीला में 5.22%, राठ में 4.89%, गोहाण्ड में 3.75%,चरखारी में 3.95%, जसपुरा मे 5.30% तिन्दवारी में 5.62%, बड़ोखर खुर्द में 4.97%, बबेरु में 5.13%, विसण्डा में 6.28%, तथा महुआ में 3.10% है। शेष विकासखण्डों में 3% से कम है।

जनपदीय विश्लेषण से विदित होता है कि सबसे अधिक वर्तमान परती भूमि का प्रतिशत बांदा जनपद में 7.97% है तथा सबसे कम चित्रकूट जनपद में 1.33% है।

अन्य परती भूमि का विकासखण्डवार सर्वाधिक प्रतिशत बबेरु में 6.50% है तथा न्यूनतम मुस्करा में 0.19% है। कमासिन में 6.28%, नरैनी में 6.36% है। शेष विकासखण्डों में अन्य परती भूमि का प्रतिशत 3.69% है। न्यूनतम हमीरपुर जनपद में 1.08% है।

ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि का सर्वाधिक प्रतिशत मानिकपुर विकासखण्ड में 16.17% है तथा न्यूनतम प्रतिशत मौदहा विकासखण्ड में 1.14% है। शेष विकासखण्डों में 5% से कम है।

कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि का सभी विकासखण्डों में सर्वाधिक प्रतिशत राठ में 10.61% है और सबसे कम कर्वी में 3.20% है।

चारागाह का प्रतिशत सभी विकासखण्डों में 1% से भी कम है। सुमेरपुर, राठ, तथा रामनगर में चारागाह का प्रतिशत शून्य है।

उद्यानों बागों वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्र का प्रतिशत भी नगण्य है। मानिकपुर विकासखण्ड में सर्वाधिक 1.44% है। शेष विकासखण्डों में 1% से कम है।

अतः जनपदीय तथा विकासखण्ड स्तर पर भूमि उपयोग के आँकड़ों के अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि चित्रकूट धाम मण्डल में भूमि उपयोग में पर्याप्त विषमता व्याप्त है, जिसका मुख्य कारण भौगोलिक स्थिति, भूमि की बनावट, मिट्टी की प्रकृति, पानी की उपलब्धता तथा मनुष्यकृत अन्य साधन हैं। योजना के दृष्टिकोण से यह सुझाव है कि उपग्रह के माध्यम से भूगर्भवर्ती जल का सर्वेक्षण करके सिंचाई के साधनों का विकास करके अनुपयोगी तथा परती-पड़ी हुई भूमि का उपयोग किया जा सकता है। यदि जल की व्यवस्था हो जाए तो मण्डल की मार, कावर पडुवा तथा रांकर भूमि को उसकी उपयोगिता के आधार पर शस्य प्रणाली के रुप में तैयार किया जा सकता है और मण्डल की आर्थिक स्थिति को कुछ हद तक सुधारा जा सकता है।

6(ii) कृषि भूमि का उपयोग :— कृषि भूमि संसार का सबसे अधिक आधारभूत, व्यापक और विविध संसाधन है, क्योंकि इससे मानव को न केवल भोजन और वस्त्र प्राप्त होते हैं, बल्कि उद्योगों के लिए विविध प्रकार का कच्चा माल भी प्राप्त होता है। कृषि चित्रकूट धाम मण्डल का प्रमुख उद्यम है।

इस मण्डल में कुल बोया गया क्षेत्र सन् 2000—01 के अनुसार 1229934 हेक्टेयर है, जिसमें शुद्ध बोया गया क्षेत्र 85.96% तथा एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र 14.04% है। (तालिका सं. 6—2) शुद्ध बोए गए क्षेत्र का प्रतिशत सबसे अधिक मौदहा विकासखण्ड में 96.41% है तथा सबसे कम प्रतिशत विसण्डा में 64.73% है। इसके अतिरिक्त कुरारा में 90.06%, सरीला में 93.75%, चरखारी में 9276% जसपुरा में 95.24%, तिन्दवारी में 92.21% पहाड़ी में 92.49% रामनगर में 92.51% तथा मऊ विकासखण्ड में 90.29% क्षेत्र शुद्ध बोए गये क्षेत्रफल के अंतर्गत आता है। शेष विकासखण्डों में बोए गए क्षेत्र का प्रतिशत 90% से 64.73 के मध्य है।

एक बार से अधिक बोए गए क्षेत्र का सर्वाधिक प्रतिशत विसण्डा विकास खण्ड में 35.27% है तथा न्यूनतम प्रतिशत मौदहा विकासखण्ड में मात्र 3.59% है। इसके अतिरिक्त सुमेरपुर में 11.58%, गोहाण्ड में 12.74%, राठ में 18.05%, मुस्करा में 11.09%, पनवाड़ी में 11.49%, जैतपुर में 17.31%, कबरई में 14.74%, बड़ोखर खुर्द में 13.57%, बबेरु में 14.27%, कमासिन में 19.16%, महुआ में 35.16%, नरैनी में 22.08%, कर्वी में 16.87%, तथा मानिकपुर में 10.32% क्षेत्र एक बार से अधिक बोए गये क्षेत्र के अंर्तगत सम्मिलित है। शेष विकासखण्डों में एक बार से अधिक बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत 10% से कम है। (तालिका सं. 6—2 एवं मानचित्र सं. 6—3)

जनपदीय विश्लेषण से विदित होता है कि सर्वाधिक एक बार से अधिक बोए गए क्षेत्र का प्रतिशत बांदा जनपद में 20.36% है। तथा न्यूनतम हमीरपुर जनपद में 9.53% है। इसके अतिरिक्त महोबा जनपद में 12.58% तथा चित्रकूट जनपद में 14.04% क्षेत्र एक बार से अधिक बोए गए क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

चित्रकूट मण्डल में रबी के अन्तर्गत कुल बोया गया क्षेत्रफल का 71.17% , खरीफ के अन्तर्गत 28.77% तथा जायद की फसल के अन्तर्गत केवल 0.06% भाग पाया जाता है।

मण्डल के जनपदों में रबी के अन्तर्गत सबसे अधिक महोबा जनपद में 78.35% तथा सबसे कम रबी के अन्तर्गत बांदा जनपद में 67.98 है। इसके अतिरिक्त हमीरपुर में 74.84%, तथा चित्रकूट में 62.13% भाग रबी के अंतर्गत आता है। खरीफ के अन्तर्गत चित्रकूट जनपद में 37.79% बांदा में 31.96%, हमीरपुर में 25.12% तथा महोबा जनपद में 21.55% है। जायद की फसल के अन्तर्गत हमीरपुर में 0.04%, महोबा में 0.10%, बांदा में 0.06% तथा चित्रकूट में 0.08% है।

Fig. : 6.3
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
DOUBLE CROPPED AREA
2000 - 01
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
N
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
KURARA
SUMERPUR
JASPURA
SARILA
GOHAND
MUSKARA
TINDWARI
MAUDAHA
BABERU
KAMASIN
RATH
BAROKHAR KHURD
CHARKHARI
PAHARI
PANWARI
KABRAI
MAHUA
BISANDA
RAMNAGAR
JAITPUR
KARWI
MAU
NARAINI
MANIKPUR
PERCENTAGE OF DOUBLE CROPPED AREA
> 30
10 – 15
20 – 30
5 - 10
15 - 20
0 - 5

तालिका सं. 6–2

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार (ग्रामीण) भूमि उपयोग (प्रतिशत में)– 2000–01

क्र. सं.	विकास खण्ड	कुल बोया गया क्षेत्र (हे0 में)	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र	रवी	खरीफ	जायद
1	कुरारा	34637	90.06	9.94	74.28	25.67	0.05
2	सुमेरपुर	58835	88.42	11.58	71.56	28.42	0.02
3	सरीला	49257	93.75	6.25	71.01	28.98	0.01
4	गोहाण्ड	47035	87.26	12.74	70.99	28.95	0.06
5	राठ	36965	81.95	18.05	66.51	33.39	0.10
6	मुस्करा	46507	88.91	11.09	73.39	26.58	0.03
7	मौदहा	85931	96.41	3.59	86.00	13.96	0.04
जनपद हमीरपुर		359173	90.47	9.53	74.84	25.12	0.04
8	पनवाड़ी	50492	88.51	11.49	78.58	21.33	0.09
9	जैतपुर	49162	82.69	17.31	73.90	25.98	0.12
10	चरखारी	62205	92.76	7.24	83.52	16.40	0.08
11	कबरई	84070	85.26	14.74	73.63	23.29	0.08
जनपद महोबा		250009	87.42	12.58	78.35	21.55	0.10
12	जसपुरा	30360	95.21	4.79	69.19	30.81	00
13	तिन्दवारी	50920	92.21	7.79	77.03	22.93	0.04
14	बड़ोखरखुर्द	61091	86.43	13.57	79.42	20.36	00.22
15	बबेरु	52920	85.73	14.27	73.02	26.98	00
16	कमासिन	45576	80.84	19.16	73.34	26.58	0.04
17	विसण्डा	57739	64.73	35.27	60.84	39.15	0.01
18	महुआ	63007	64.84	35.16	58.62	41.35	0.03
19	नरैनी	64887	77.92	22.08	57.07	42.86	0.07
जनपद बांदा		426500	79.64	20.36	67.98	31.96	0.06
20	पहाड़ी	58378	92.49	7.51	50.10	49.85	0.05
21	कर्वी	42617	83.13	16.87	41.29	58.54	0.17
22	मानिकपुर	35167	89.68	10.32	71.97	27.98	0.05
23	रामनगर	29621	92.51	7.49	76.74	23.19	0.07
24	मऊ	28469	90.29	9.71	90.68	9.28	0.04
जनपद चित्रकूट		194252	89.61	10.39	62.13	37.79	0.08
मण्डल		1229934	35.96	14.04	71.17	28.77	0.06

स्रोत : सांख्यकीय पत्रिका 2002, जनपद हमीरपुर, महोबा, बांदा, तथा चित्रकूट

FIG. 6·4
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
AREA UNDER SEASONAL CROPS
2000-01
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
KURARA
SUMERPUR
JASPURA
TINDWARI
BABERU
SARILA
MUSKARA
GOHAND
MAUDAHA
CHARKHARI
BISANDA
KAMASIN
PAHARI
BAROKHAR KHURD
PANWARI
KABRAI
MAHUA
KARWI
RAMNAGAR
MAU
JAITPUR
NARAINI
MANIKPUR
RABI
KHARIF
JAID
AREA HECTORES
100000
75000
50000
25000

मण्डल के विकासखण्डों का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि रबी फसल के अन्तर्गत सर्वाधिक क्षेत्र विकासखण्ड मऊ में 90.68% तथा न्यूनतम क्षेत्र कर्वी में 41.29% है। इसके अतिरिक्त कुरारा में 72.28%, सुमेरपुर में 71.56%, सरीला में 71.01%, गोहाण्ड में 70.99%, मुस्करा में 73.39%, मौदहा में 86%, पनवाडी में 78.58%, जैतपुर में 73.90%, चरखारी में 83.52%, कबरई में 76.63%, तिन्दवारी में 77.03%, बड़ोखर खुर्द में 79.42%, बबेरु में 73.02%,मानिकपुर में 71.97%, रामनगर में 76.74% है। शेष विकासखण्डों में 70% से कम है।

खरीफ की फसल के अन्तर्गत सर्वाधिक क्षेत्र कर्वी विकासखण्ड में 58.54%, तथा न्यूनतम मऊ विकासखण्ड में 9.28%, है। इसके अतिरिक्त राठ में 33.39%, जसपुरा में 30.81%, विसण्डा में 39.15%, महुआ में 41.35%, नरैनी में 42.86%, पहाड़ी में 49.85%, है। शेष विकासखण्डों में 30% से कम भाग खरीफ के अंतर्गत आता है। जायद की फसल के अन्तर्गत सभी विकासखण्डों में 1% से कम भाग है। यहाँ तक कि जसपुरा तथा बबेरु विकासखण्ड के अन्तर्गत जायद की फसल का प्रतिशत शून्य है। (मानचित्र सं. 6–4)

वर्षा की मात्रा में अनियमितता तथा कमी, तापक्रम की अधिकता, मार, काबर, पडुवा तथा रांकर मिट्टियों के वितरण के कारण प्रत्येक विकास खण्ड में रवी की फसल में बोए जाने वाले अनाजों को अधिक प्रोत्साहन मिला है तथा खरीफ की फसलों का उत्पादन अपेक्षाकृत कम है। इस मण्डल के सभी विकासखण्डों में जायद की फसलें नाम मात्र को ही बोई जाती हैं। इसका मुख्य कारण *'अन्ना प्रथा'* से होने वाला नुकसान है। दूसरा कारण जल का संकट है। तापक्रम की अधिकता के कारण ग्रीष्म ऋतु में जल का संकट उत्पन्न हो जाता है। जायद की फसलें फरवरी से मई तक उगाई जाती है। जिनको पानी की अधिक आवश्यकता होती हैं। मण्डल में सिंचन सुविधाओं की कमी के कारण इनका उत्पादन सभी विकासखण्डों में कम है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कृषि केवल प्राकृतिक कारकों का परिणाम नहीं है बल्कि मानव निर्मित सामाजिक तथा आर्थिक दशाएँ इसके प्रतिरुप को निश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। भूमि स्वामित्व, खेतों का आकार, क्षेत्रफल एवं वितरण, कृषि श्रमिकों की उपलब्धि, कृषि के उपयोग में आने वाले औजार (उपकरण), सिंचाई सुविधाएं, बाजारों की स्थिति, एवं समीपता यातायात के साधनों की उपलब्धि एवं कृषकों का दृष्टिकोण ये सभी कृषित भूमि के उपयोग को प्रभावित करते हैं।

6(iii) – कृषि प्रतिरुप :–

चित्रकूट धाम मण्डल में गहन निर्वाहन (भरण पोषण) वाली कृषि की जाती है। ''गहन निर्वाहन कृषि वह कृषि पद्धति हैं जिसमें प्रधानतः खाद्य फसलों का उत्पादन स्थानीय उपभोग के लिए होता है।'' इस कृषि पद्धति की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :–

(1) इस कृषि में फसलों का पशुपालन की अपेक्षा अधिक महत्व होता है। फसलों में खाद्य फसलों की प्रधानता होती है। जहाँ भी पर्याप्त वर्षा होती है या सिंचाई के साधन उपलब्ध हैं, वहाँ चावल के उत्पादन को प्राथमिकता दी जाती है। शुष्क भागों में गेंहूँ, जौ, ज्वार, बाजरा पैदा किए जाते हैं। खाद्यान्नों कें अतिरिक्त अन्य विविध फसलें भी न्यूनाधिक मात्रा में उगाय़ी जाती है।

(2) इस कृषि में पशुओं का स्थान गौण होता है, पर पशुओं की संख्या अत्यधिक पाई जाती है। पशुपालन का प्रमुख उद्देश्य उनसे माँस या दूध प्राप्त करना नहीं बल्कि कृषि कार्यों में उनका उपयोग करना होता है। चारागाह के लिए कोई अलग व्यवस्था नहीं पाई जाती। कृषि के लिए

अनुपयुक्त भूमि ही चारागाह का काम देती है। पशुओं का मुख्य भोजन खाद्यान्न का डंठल एवं भूसा है। भार ढ़ोने के लिए घोडे, ऊँट, खच्चर भी पाले जाते हैं। भेड़–बकरियाँ भी पाली जाती हैं जिनसे थोडा बहुत मॉस का उत्पादन होता है। कृषि में सहायक होने के अतिरिक्त इनसे खाद भी प्राप्त होती है।

(3) इसमें श्रम का अधिकाधिक उपयोग होता है। श्रम की तुलना में पूँजी की लागत कम होती है। मशीनों का उपयोग नगण्य है। खेतों में प्राचीन काल से प्रचलित साधारण लकड़ी अथवा लोहे के हल–कुदाल से जुताई, गुडाई की जाती है।

(4) इस प्रकार की कृषि पद्धति सदियों की पीढ़ी दर पीढ़ी संचित ज्ञान एवं अनुभव पर आधारित है। यद्यपि इस कृषि में प्रति एकड़ उपज अन्य आधुनिक वैज्ञानिक ढ़ग से की जाने वाली कृषि की अपेक्षा कम होती है तथापि प्रति एकड़ लागत के अनुपात में अधिकतम उत्पादन प्राप्त होता है। जहाँ कहीं पानी की सुविधा प्राप्त है, वहाँ वर्ष में दो या तीन फसलें एक ही खेत से प्राप्त की जाती हैं।

(5) विभिन्न प्रकार की फसलें एक साथ इस ढंग से भी बोई जाती है कि वर्षा की मात्रा न्यूनाधिक होने पर भी कोई न कोई फसल अच्छी हो जाती है। अर्थात किसान कम से कम लागत से खेत से अधिकतम उत्पादन करने के लिए तथा मौसम की प्रतिकूलता से बचने के लिए हर सम्भव प्रयास करता है। इस प्रकार यह विश्व की सबसे गहन कृषि प्रणाली है।

(6) इस कृषि प्रदेश में खेत अत्यन्त छोटे–छोटे तथा बिखरे होते हैं। किसी भी किसान के सभी खेत एक जगह नहीं मिलते। सभी किसान एक गाँव में रहते हैं तथा उनके खेत गाँव के चारों ओर बिखरे रहतें हैं। अनगिनत मेड़ों में जमीन का काफी नुकसान होता है। सिंचाई में बाधा पहुँचती है तथा खेत की जुताई एवं देखभाल में अधिक असुविधा होती है एवं समय का अपव्यय होता है। अब कई गाँवों में चकबन्दी द्वारा इस समस्या का निवारण किया गया है।

(7) इस कृषि पद्धति मे कृषक–परिवार के जीवन निर्वहन हेतु कठिनाई से उत्पादन हो पाता है। किसान अधिकतर वही अन्न खातें हैं जो पैदा कर सकते है जो अन्न या शाक–सब्जी उत्पन्न नहीं कर पाते, उसे खाने में असमर्थ रहते हैं। पैदावार का थोड़ा अंश बेंचकर वे अपने कपड़े एवं अन्य आवश्यक वस्तुएँ खरीदते हैं, जो अन्न किसान बेंचते हैं वह स्थानीय नगरों में ही खप जाता है।

(8) प्रति एकड़ उत्पादन कम होने से कृषक का जीवन–स्तर नीचा होता है। कृषि में मशीन, खाद, अच्छे बीज आदि के विनियोग के लिए उनके पास पर्याप्त पूँजी नहीं है।

(9) गहन निर्वाहन कृषि प्रदेश को भी दो वर्गो में विभाजित किया है –

(1) चावल प्रधान गहन निर्वाहन कृषि–जिसे सावा कृषि (Sawha Agriculture) भी कहते हैं।

(2) चावल–विहीन गहन निर्वाहन कृषि – जिसे शुष्क – खेत कृषि (Dry field Agriculture) भी कह सकते हैं। इन दोनो प्रकार की कृषि में फसल विभेद के अनुसार उत्पादन–पद्धति में भी थोड़ी भिन्नता मिलती है।

फसल चक्र :– चित्रकूट धाम मण्डल के सभी विकासखण्डों में रबी, खरीफ़ फसल के अन्तर्गत एक फसल न बोकर मिलवां फसल बोते हैं तथा खेत में फसलों का परिवर्तन करते रहते हैं। किसी निश्चित क्षेत्र पर निश्चित समय में फसलों को इस प्रकार बोना जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति का ह्रास न हो 'फसल चक्र' कहते हैं।

व्यावहारिक कृषि का मुख्य उद्देश्य यह है कि एक फसल उसी खेत में लगातार न बोई जाए वरन् एक या एक से अधिक फसलों के बोने के पश्चात् फिर बोई जाए। चित्रकूट मण्डल में मिलवां (मिश्रित) फसल बोने की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही हैं। मण्डल में मिलवां फसल को दृष्टिगत करते हुए फसलचक्र निम्न रुप से पाया जाता है–

प्रचलित फसल चक्र :

1.	धान – जौ	एक वर्षीय
2.	ज्वार – चना/मटर	एक वर्षीय
3.	ज्वार – मसूर	एक वर्षीय
4.	ज्वार + अरहर	एक वर्षीय
5.	अरहर या सोयाबीन – गेंहूँ	एक वर्षीय
6.	धान – गेंहूँ	एक वर्षीय
7.	बाजरा – मटर/मसूर	एक वर्षीय
8.	धान – चना	एक वर्षीय
9.	सोयाबीन	एक वर्षीय
10.	धान – जौ + सरसों + चना + अलसी –	एक वर्षीय
11.	उड़द + मूँग – गेंहूँ	एक वर्षीय
12.	पलेवा (परती भूमि) – गेंहूँ + चना	
13.	पलेवा – मसूर + अलसी + सरसों	

उपर्युक्त फसल चक्र से स्पष्ट है कि किसी भी परिस्थिति में चित्रकूट मण्डल के कृषक एक वर्षीय फसल चक्र को ही अपनाते हैं। अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि इस प्रकार मिलंवा फसल प्रणाली से निम्नलिखित लाभ है :–

(1) कीड़ों व रोगों के प्रभाव से समूची फसल को नष्ट होने से बचाने के लिए किसान एक ही खेत में दो या तीन फसलें बोता है,जैसे – ज्वार + अरहर, उर्द + तिल, गेंहूँ + चना + अलसी, मसूर + अलसी आदि।

यदि अधिक वर्षा, कम वर्षा या कीड़े लगने से कोई एक फसल नष्ट हो जाए तो बची हुई अन्य फसलों में कृषक को उपज प्राप्त हो जाती है अर्थात् जोखिम के दृष्टिकोण से 'मिलंवा फसल' लाभदायक है। चूँकि सम्पूर्ण चित्रकूट धाम–मण्डल वर्षाधीन खेती के अन्तर्गत आता है अतः शीतऋतु की वर्षा 'महावट' न होने से गेंहूँ की फसल सूखने पर भी उसे चने की फसल मिल जाती है।

(2) भिन्न– भिन्न समय में तैयार होने वाली मिलवां फसलों से श्रम का अच्छा वितरण हो जाता है तथा वर्षभर समय–समय पर आय होती रहती है।

(3) भूमि का अच्छा उपयोग हो जाता है। उड़द, मूंग, मसूर, अरहर आदि दलहनी फसलें भूमि को उर्वराशक्ति प्रदान करती हैं।

(4) खेती की जुताई, निराई, गुड़ाई, सिंचाई और खाद एक समय में लग जाने से फसलों को पैदा करने में लागत व्यय कम पड़ता है।

(5) चित्रकूट धाम मण्डल की जमीन में नमी धारण करने की शक्ति अत्यधिक होने के कारण कम पानी चाहने वाली प्रजातियों को एक साथ मिलंवा बोकर उर्वराशक्ति पूर्ण भूमि– काबर, मार तथा पडुवा का समुचित उपयोग हो जाता हैं।

प्रचलित मिलंवा फसलों को एक साथ बोने से जहाँ एक ओर कई लाभ है वहीं दूसरी ओर कुछ हानियां भी हैं :–

(1) बड़े क्षेत्रफल में कटाई के लिए मशीनों का प्रयोग नहीं हो सकता है।

(2) यदि किसी फसल में रोग या कीड़े लग जाएँ तो दवा छिड़कने में असुविधा होती है।

(3) शुद्ध (Pure) बीज एकत्र करने में कठिनाई होती है।

शस्य – संयोजन (Crop Combination)

किसी इकाई क्षेत्र में उत्पन्न की जाने वाली प्रमुख फसलों के समूह को 'शस्य– संयोजन या' (शस्य समूहन) कहते हैं। फसलों के एकांकी अध्ययनों के साथ शस्यों के संयोजनों के अध्ययन को महत्वपूर्ण समझा जाता है। वास्तव में फसलों का प्रतिरुप वहाँ की प्राकृतिक, आर्थिक तथा कृषक की सामाजिक एवं वैयक्तिक गुणों के अन्योन्य क्रिया का परिणाम होता है। इन तत्वों के विश्लेषण में एकाकी फसलों की तुलना में फसलों का सामूहिक अध्ययन अधिक उपादेय है। जे.सी.वीवर (Weaver)[3] ने शस्य–संयोजन के अध्ययन के महत्व को व्यक्त करते हुए कहा है कि विभिन्न क्षेत्रों में फसलों का अलग अलग महत्व है, जिसको समझनें के लिए शस्य–संयोजन का अध्ययन आवश्यक है। दूसरे, शस्य संयोजन स्वंय (सभी कारकों का) समाकलनात्मक सत्यता है। इस कारण इसकी व्यवस्था की जानी चाहिए तथा उसके वितरण प्रतिरुपों का भी विश्लेषण करना आवश्यक है। तीसरे कृषि प्रदेश निर्धारित करने में शस्य–संयोजनों पर विचार करना आवश्यक है। ऐसा कहा जा सकता है कि कृषि उद्यम तथा कृषि के स्थानीकरण को एकाकी फसलों के विश्लेषण द्वारा नहीं बल्कि उनके संयोजनों के माध्यम से ही समझा जा सकता है।

वास्तव में शस्य–संयोजन सम्बन्धी अध्ययन के अभाव में कृषि की क्षेत्रीय विषमताओं को ठीक से नहीं समझा जा सकता है। साथ ही क्षेत्रीय संकल्पना के बिना कृषि–प्रदेश विभाजन की दिशा में भी संतोषजनक संश्लेषण नहीं हो सकता है।[4]

शस्य–संयोजन के द्वारा जहाँ एक ओर किसी क्षेत्र में फसलों के क्षेत्रीय प्रभाव के अनुसार कृषि प्रदेशों की जानकारी होती है, वहीं दूसरी ओर प्रदेश में फसलों की संख्या तथा उनकी वरीयता का भी ज्ञान होता है। इसके द्वारा शस्य–संयोजन प्रदेशों का परिसीमन कर क्षेत्रीय कृषि विशेषताओं को अधिक स्पष्ट किया जा सकता है। जिससे वर्तमान कृषि समस्याओं को भलीभाँति समझकर योजनाबद्ध शस्य–संयोजन को कृषकों द्वारा अपनाने के लिए ज्ञान कराया जा सकता है।[5]

शस्य–संयोजन बनाने की विधियों में वीवर (1954) की विधि अग्रणी है। उन्होने मध्य पश्चिमी अमेरिका के लिए शस्य–संयोजन प्रदेशों का निर्धारण किया, जिसके लिए अग्रांकित सूत्र का प्रयोग किया गया है :

$$\sigma^2=\Sigma d^2/n$$

यहाँ d का तात्पर्य फसलों के सैद्धान्तिक और वास्तविक प्रतिशत क्षेत्रों के अन्तर से है और n का तात्पर्य सम्बन्धित संयोजन में फसलों की संख्या से है। जिस शस्य–संयोजन में सैद्धान्तिक और

वास्तविक प्रतिशतों में न्यूनतम प्रसरण (विभेद) होता है, वहीं उस इकाई क्षेत्र का शस्य–संयोजन माना जाता है।

डा. थामस ने वीवर की विधि को संशोधित रुप में अपनाकर बेल्स को कृषि प्रदेशों में विभाजित किया[6] तथा थामस की संशोधित विधि को डॉ. कोपाक ने इंग्लैण्ड तथा वेल्स की कृषि एटलस का प्रयोग किया।[7] इनके अलावा स्काट[8] (1957), जानसन[9] (1958), ने भी अलग–अलग विधियाँ प्रस्तावित की हैं। अय्यर[10] (1969) ने भी एक नई विधि का उपयोग किया है। इसके साथ ही संयोजन बनाने में नगरों के कार्मिक वर्गीकरण में प्रयोग की जाने वाली नेल्सन[11] (1965) तथा रफी अल्ला (1965) तथा औद्योगिक संरचना के विश्लेषण में प्रयुक्त दोई[12] (Doi 1957–59) की विधि का भी उपयोग शस्य–संयोजन निर्धारित करने में किया गया है।

भारत में इस प्रकार का प्रयास डॉ. बनर्जी द्वारा किया गया। जिन्होनें वीवर की संशोधित विधि को अपनाया। जिसकी कुछ बिन्दुओं पर अधिक आलोचना हुई।[13] दोई विधि के आधार पर अहमद तथा सिद्दिकी ने लूनी वेसिन के शस्य साहचर्य प्रदेशों का निर्धारण किया।[14] सिद्दिकी ने बुन्देलखण्ड के शस्य संयोजन प्रदेशों के लिए वीवर की विधि को अपनाते हुए अन्त में दोई की विधि को बुन्देलखण्ड के लिए अधिक उपयुक्त बताया है।[15] त्रिपाठी वी0बी0 तथा अग्रवाल यू0 ने निचले गंगा–यमुना दो–आब के लिए[16] डॉ0 वी0एस0 चौहान ने यमुना हिंडन प्रदेश के लिए [17], टी0सी0 शर्मा ने उत्तर प्रदेश के लिए [18] तथा डॉ0 नित्यानन्द ने राजस्थान के शस्य–संयोजन प्रदेशों के लिए [19] दोई विधि का ही प्रयोग किया है।

प्रस्तुत अध्ययन में चित्रकूट धाम मण्डल के शस्य–संयोजन प्रदेशों के निर्धारण के लिए वीवर के द्वारा प्रस्तुत विधि का प्रयोग किया गया है।

<u>वीवर का मॉडल</u> – जे0 सी0 वीवर (1954) की न्यूनतम विचलन विधि (Minimum Deviation Method) बहुचर्चित है। उन्होने शस्य–संयोजन प्रदेश निश्चित करने का एक गणितीय मॉडल बनाया। जिसका प्रदर्शन संयुक्त राज्य के मध्य पश्चिमी क्षेत्र को लेकर किया। उस मॉडल का सैद्धान्तिक आधार यह है कि फसलों के अन्तर्गत भूमि सामान रुप से वितरित है। जैसा कि एक धान्य कृषि में शत–प्रतिशत कृषि भूमि एक ही फसल के अन्तर्गत होनी चाहिए। यदि दो फसलें हैं तो प्रत्येक का हिस्सा 50% तीन फसलें होने पर प्रत्येक के अन्तर्गत 33.3% ऐसे ही दस फसलें होने पर 10% कृषित भूमि होनी चाहिए। इस सैद्धान्तिक स्थिति की तुलना वास्तविक स्थिति से करके शस्य–संयोजन निश्चित किया जाता है। इसके लिए प्रत्येक फसल के क्षेत्रफल का कुल फसलों के क्षेत्रफल से प्रतिशत ज्ञात करके उन्हे घटते क्रम में रखा जाता है। इन फसलों को प्रथम फसल से आरम्भ करके एक फसल, प्रथम दो फसलों, प्रथम तीन फसलों आदि का समूह बना लेते हैं। प्रत्येक शस्य–संयोजन के वास्तविक और सैद्धान्तिक प्रतिशत क्षेत्रफल का अन्तर ज्ञात करके प्रामाणिक विचलन विधि (Standard Deviation Method) से न्यूनतम विचलन विधि वाला शस्य–संयोजन निर्धारित किया जाता है। चूँकि वीवर का उद्देश्य विचलन की वास्तविक मात्रा ज्ञात न होकर विचलन का सापेक्षिक क्रम (Ralative Rank) ज्ञात करना था। इसलिए उन्होने प्रमाण विचलन के सूत्र के स्थान पर प्रसरण (Variance) के सूत्र : $\sigma^2 = \sum d^2/N$ का प्रयोग किया है। जिस शस्य–संयोजन में सैद्धान्तिक और वास्तविक प्रतिशतों में न्यूनतम प्रसारण होता है, वहीं उस इकाई क्षेत्र का शस्य–संयोजन माना जाता है।

तालिका सं. 6–3

चित्रकूट धाम मण्डल में शस्य–संयोजनः–(2000–01 के आँकड़ो के आधार पर)

क्र.सं.	विकासखण्ड	संयोजन में शस्यों की संख्या	शस्यों के नाम
1	कुरारा	4	चना, गेंहूँ, मसुर, ज्वार
2	सुमेरपुर	5	चना, गेंहूँ, ज्वार, मसूर, उर्द
3	सरीला	4	चना, ज्वार, मसूर, उर्द
4	गोहाण्ड	6	गेंहूँ, मसूर, चना, मटर, ज्वार, उर्द
5	राठ	4	गेंहूँ, मटर, चना, मसूर
6	मुस्करा	3	चना, गेंहूँ, मसूर
7	मौदहा	3	चना, मसूर, गेंहूँ
8	पनवाड़ी	4	मटर, गेंहूँ, चना, मसूर
9	जैतपुर	4	गेंहूँ, मटर, चना, मसूर
10	चरखारी	3	गेंहूँ, चना, मटर
11	कबरई	4	गेंहूँ, चना, मटर, मसूर
12	जसपुरा	3	चना, गेंहूँ, ज्वार
13	तिन्दवारी	4	चना, गेंहूँ, मसूर, ज्वार
14	बड़ोखर खुर्द	3	चना, गेंहूँ, मसूर
15	बबेरु	5	गेंहूँ, चना, मसूर, ज्वार, चावल
16	कमासिन	4	चना, गेंहूँ, मसूर, ज्वार
17	विसण्डा	4	गेंहूँ, चावल, मसूर, चना
18	महुआ	3	गेंहूँ, चावल, चना
19	नरैनी	4	गेंहूँ, चावल, चना, ज्वार
20	पहाड़ी	5	चना, गेंहूँ, ज्वार, मसूर, अरहर
21	कर्वी	4	गेंहूँ, चना, ज्वार, चावल
22	मानिकपुर	4	गेंहूँ, चना, ज्वार, चावल
23	रामनगर	6	चना, गेंहूँ, ज्वार, चावल, मसूर, अरहर
24	मऊ	5	गेंहूँ, चना, ज्वार, चावल, मसूर

नोट :– चित्रकूट धाम मण्डल में मुख्य फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल (हेक्टेयर में तथा प्रतिशत में) परिशिष्ट संख्या– 6–4 एवं 6–5 देखें।

तालिका सं. 6–3 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार ज्ञात किये गये शस्य–संयोजन से स्पष्ट है कि 4 यौगिक फसल वाले विकासखण्डों की संख्या अधिक है। इसके अन्तर्गत कुरारा, सरीला, राठ, पनवाड़ी, जैतपुर, कबरई, तिन्दवारी, कमासिन, विसण्डा, नरैनी, कर्वी, मानिकपुर, विकासखण्ड आते हैं। (मानचित्र सं. 6–5)। 5 फसल यौगिक वाले विकासखण्ड सुमेरपुर, बबेरु,पहाड़ी तथा मऊ हैं। 3 फसलें यौगिक वाले मुस्करा, मौदहा, चरखारी, बड़ोखर खुर्द, महुआ तथा जसपुरा हैं। 12 विकासखण्डों में गेंहूँ तथा 11 विकासखण्डों में चना प्रथम स्थान पर है।

Fig. : 6.5
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
COMBINATION OF CROPS 2000-01
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
GWLJ
GWJLU
GWJ
GJLW
WLGPJU
GWL
GLW
WPGL
WGP
PWGL
WGPL
WPGL
GWLJ
WGLJR
GWLJ
GWL
WRG
WRLG
GWJLA
GWJRAL
WGJRL
WGJR
WRGJ
WGJR
3 CROP COMBINATION
4 CROP COMBINATION
5 CROP COMBINATION
6 CROP COMBINATION
CROPS
W = Wheat
L = Lentil
R = Rice
A = Arhar
J = Jowar
U = Urd
G = Gram
P = Pea

तालिका सं. 6–4

चित्रकूट धाम मण्डल में शस्य–संयोजन के आधार पर विकासखण्डों की प्रतिशत संख्या का विवरण

शस्य–संयोजन की फसलों की संख्या	विकासखण्डों की संख्या	प्रतिशत (विकासखण्डों का)
1	शून्य	0.00
2	शून्य	0.00
3	6	25.00
4	12	50.00
5	4	16.67
6	2	8.33
कुल योग	24	100.00

तालिका सं. 6–4 में प्रदर्शित विकासखण्डों के प्रतिशत से स्पष्ट होता है कि 6 विकासखण्डों में तीन फसल यौगिक है जिसका प्रतिशत 25 है। 5 फसल यौगिक चार विकासखण्डों में जिसका प्रतिशत 16.67 है। 6 फसल यौगिक केवल दो विकासखण्डों में है जिसका प्रतिशत 8.33 है। अतः स्पष्ट है कि मण्डल में चार फसल यौगिक को इस क्षेत्र का कृषक अधिक अपनाता है। चित्रकूट धाम मण्डल के सभी विकासखण्डों के शस्य–संयोजन को तालिका सं. 6–3 तथा मानचित्र सं. 6–5 में दर्शाया गया है। परिशिष्ट सं. 6–5 में मुख्य फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल को प्रतिशत में ज्ञात किया गया है जिसके आधार पर मण्डल में शस्य–संयोजन विकासखण्डवार ज्ञात किया गया है।

अध्ययन भ्रमण के मध्य महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि कृषक भलीभाँति जानता है कि जोखिम को कम करने के लिए फसल मिश्रण करते समय किस फसल के साथ कौन सी फसल मिलंवा ली जाए जिसका प्रतिस्पर्धात्मक स्वभाव न हो तथा लगाए गए लागत में वे एक दूसरे के अनुपूरक हो। वे वैज्ञानिक तथ्यों को भी ध्यान देते है, जैसें पौधों की उचित सघनता कीटों एवं रोगों के प्रभाव को कम करना, कम लागत सें अधिक उपज प्राप्त करना तथा मिलंवा पद्धति के द्वारा जोखिम दर को कम करना आदि।

कृषि के विभिन्न पहलुओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि चित्रकूट धाम मण्डल की कृषि व्यवस्था का स्वरुप प्रकृति पर निर्भर है। सिंचाई के साधनों का विकास, कृषि यन्त्रों का प्रयोग, उत्तम बीजों का प्रयोग तथा उर्वरकों के प्रयोग के माध्यम से उत्पादन तथा उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है। परती भूमि को कृषि योग्य बनाकर कृषि क्षेत्र को बढ़ाया जा सकता है। वर्षा जल का संचय करके सिंचाई व्यवस्था को ठीक किया जा सकता है। गोबर जैविक एवं हरी खादों का अधिक मात्रा में प्रयोग करके मृदा की उर्वरता को दीर्घकाल तक कायम किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त वर्षाधीन कृषि परिक्षेत्र का विकास व प्रसारण, कृषकों द्वारा वैज्ञानिक अनुपालन एवं विपणन व भण्डारन व्यवस्थाओं के माध्यम से कृषि की स्थिति को सुधारा जा सकता है।

6(iv) प्रमुख फसलें उनका क्षेत्रफल, उत्पादन एवं वितरण :– चित्रकूट धाम मण्डल एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। इसके 1495271 हेक्टेयर प्रतिवेदित क्षेत्रफल में से 1057210 हेक्टेयर (70.70%) क्षेत्र, शुद्ध बोया गया क्षेत्र है। (परिशिष्ट संख्या 6–1)। मण्डल की प्रमुख धान्य फसलें गेंहूँ, चावल, जौ, ज्वार,

बाजरा, है। दलहनी फसलें – उर्द, मूँग, मसूर, चना, मटर, तथा अरहर हैं। तिलहनी फसलों के अन्तर्गत लाही/सरसों , अरसी, तिल, मूँगफली, सोयाबीन प्रमुख हैं। अन्य फसलों में गन्ना, आलू तथा सनई प्रमुख हैं।

तालिका सं. 6–5

चित्रकूट धाम मण्डल में धान्य, दलहन, तिलहन एवं अन्य फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल का प्रतिशत – 2000–01

	धान्य	दालें	तिलहन	अन्य	कुल योग
हेक्टेयर में	555722	595327	56887	7863	1215799
प्रतिशत में	45.71	48.97	4.67	0.65	100.00

स्रोत : सांख्यकीय पत्रिका चित्रकूट धाम मण्डल बांदा 2002

चित्रकूट–धाम मण्डल में प्रमुख फसलों के अन्तर्गत कुल क्षेत्रफल 1215799 हेक्टेयर है जिसमें धान्य फसलों के अन्तर्गत 555722 हेक्टेयर क्षेत्रफल (45.71%) दलहन के अन्तर्गत 595327 हेक्टेयर (48.97%) तथा तिलहन के अन्तर्गत 56887 हेक्टेयर (4.67%) है। अन्य फसलों के अन्तर्गत 7863 हेक्टेयर क्षेत्र (0.65%) हैं। (तालिका संख्या 6–5) सिंचित क्षेत्रफल, कुल फसलों के क्षेत्रफल का 28. 34% है। चित्रकूट धाम मण्डल में गेंहूँ के अन्तर्गत सर्वाधिक क्षेत्रफल 27.24% है। जबकि चना के अन्तर्गत 2354%, मसूर के अंतर्गत 12%, ज्वार के अंतर्गत 9.29%, चावल के अंतर्गत 7.04%, मटर के अंतर्गत 5.35%, उर्द के अंतर्गत 3.79%, अरहर के अंतर्गत 3.48%, लाही/सरसों के अंतर्गत 0.82% तथा अन्य फसलों के अन्तर्गत 7.45% क्षेत्रफल है। (चित्र 6–6) निम्नलिखित तालिका सं. 6.6 में चित्रकूट धाम मण्डल में मुख्य फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल तथा उसके प्रतिशत को प्रदर्शित किया गया है :–
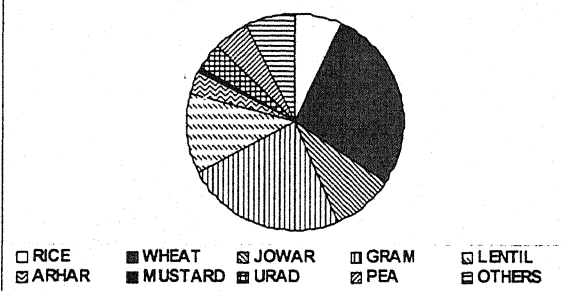
तालिका सं. 6–6

चित्रकूट धाम मण्डल में मुख्य फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल – 2000–01

क्र.सं.	फसलें	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	प्रतिशत
1	चावल	85580	7.04
2	गेंहूँ	331186	27.24
3	ज्वार	112922	9.29
4	चना	286151	23.54
5	मसूर	145839	12.00
6	अरहर	42354	3.48
7	लाही/सरसों	9988	0.82
8	उर्द	46124	3.79
9	मटर	65106	5.35
10	अन्य	90549	7.45
	कुल योग	1215799	100.00

स्रोतः सांख्यकीय पत्रिका चित्रकूट धाम मण्डल बांदा 2002

Fig. : 6.7
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
AVERAGE AREA UNDER MAIN CROPS
2000-01
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
INDEX
RICE
WHEAT
JOWAR
GRAM
LENTIL
ARHAR
URAD
PEA
OTHERS
HECTARES
100000
75000
50000
25000
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
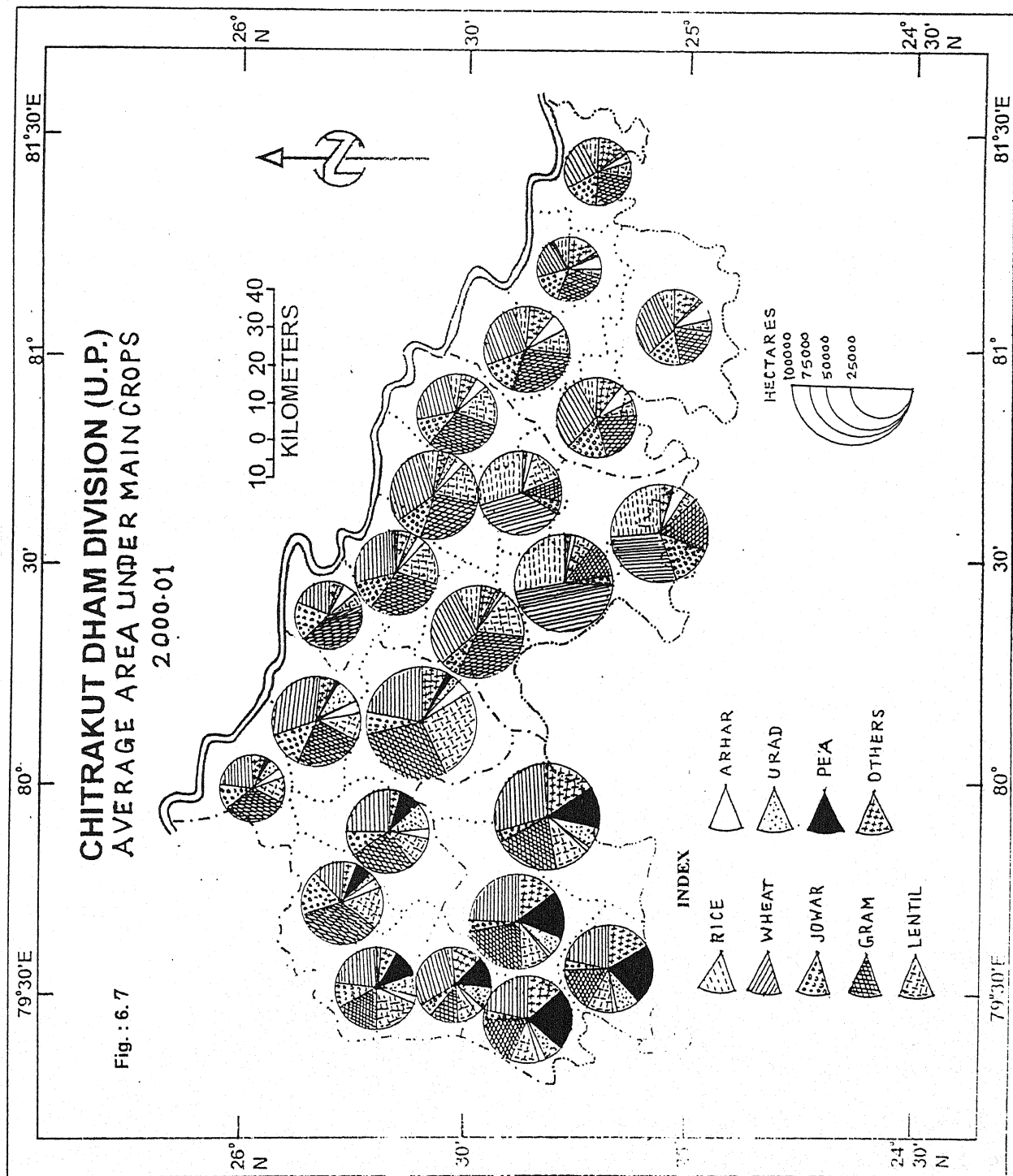
परिशिष्ट संख्या 6–5 में दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि विकासखण्डवार चावल के अन्तर्गत क्षेत्रफल का सर्वाधिक प्रतिशत विसण्डा विकासखण्ड में 32.09% (14795 हेक्टेयर)है, इसके पश्चात् महुवा में 30.24% (20528 हेक्टेयर), नरैनी में 25.91% (18282 हेक्टेयर) क्षेत्र चावलके अंतर्गत आता है। इसका कारण यहॉ सिंचाई सुविधाओं का विकास तथा चावल योग्य उपजाऊ मिट्टी है। अन्य विकासखण्डों में चावल के अन्तर्गत क्षेत्रफल का 10% से भी कम है। गेंहू के अन्तर्गत सर्वाधिक प्रतिशत महुआ में 46.11% (31299 हेक्टेयर) है। विसण्डा में 36.47%, मानिकपुर में 30.77%, कर्वी में 29.74% तथा बड़ोखर खुर्द में 29.07% है। अन्य विकासखण्डों में 29% से 13% के मध्य है। ज्वार के अन्तर्गत सर्वाधिक प्रतिशत जैतपुर में 3.18% है। सरीला में 17.47%, रामनगर में 15.44%, मऊ में 15.79% कर्वी में 16.43% तथा मानिकपुर में 14.80% है। नरैनी में 13.44% पहाड़ी में 13.06% तिन्दवारी में 11.85%, सुमेरपुर में 13.15%, है। अन्य विकासखण्डों में 11.50% से कम है। चना के अन्तर्गत सर्वाधिक प्रतिशत जसपुरा में 41.93% (12602 हेक्टेयर) हैं। इसके अतिरिक्त कुरारा 32.78% (10914 हेक्टेयर), सरीला में 34.79%, बड़ोखर खुर्द में 30.09%, तिन्दवारी में 29.79%। तथा सुमेरपुर में 29.98% है। शेष विकासखण्डों में 29% से कम भाग चने के अंतर्गत आता है।

मसूर के अन्तर्गत क्षेत्रफल का सर्वाधिक प्रतिशत मौदहा में 26.33% (22721 हेक्टेयर) है तथा सबसे कम प्रतिशत नरैनी विकासखण्ड में 3.74% है। (2638 हेक्टेयर)। गोहाण्ड में 18.65%, सरीला में 16.05%, तिन्दवारी में 17.46%, बड़ोखर खुर्द में 16.93%, कमासिन में 16.67%, है। शेष विकासखण्डों में 16% से कम है।

अरहर के अन्तर्गत क्षेत्रफल का सर्वाधिक प्रतिशत मानिकपुर में 7.51%, (2993 हेक्टेयर) पहाड़ी में 5.93%, शेष विकासखण्डों में 5% से कम है। कबरई, महुआ, चरखारी, जैतपुर तथा पनवाड़ी में 2% से कम क्षेत्रफल है।

लाही तथा सरसों के अन्तर्गत क्षेत्रफल का प्रतिशत सभी विकासखण्डों में 2% से भी कम है।

उर्द के अन्तर्गत सर्वाधिक प्रतिशत राठ में 10.32% है। इसके अतिरिक्त कुरारा में 6.03%, सुमेरपुर में 8.79%, गोहाण्ड में 8.46%, मुस्करा में 9.98%, जैतपुर में 8.21%, पनवाड़ी में 7.29%, तथा कबरई में 6.34%, है मौदहा में 3.04%, शेष विकासखण्डों में 3% से कम क्षेत्रफल है।

मटर के अन्तर्गत क्षेत्रफल का सर्वाधिक प्रतिशत पनवाड़ी विकासखण्ड में 23.01% (12260 हेक्टेयर) हैं। इसके अतिरिक्त जैतपुर में 22.3%, चरखारी में 16.22%, कबरई में 12.92%, राठ में 13.88%, गोहाण्ड में 11.07%, मुस्करा में 7.88%, तथा सरीला में 6.48%, है। शेष विकासखण्डों में 2% से भी कम है। बांदा तथा चित्रकूट जनपदों के विकासखण्डों में मटर के अन्तर्गत 1% से भी कम क्षेत्रफल है।(मानचित्र 6–7)

प्रमुख धान्य फसलें

1. **गेंहूँ (Wheat)** :– वर्तमान समय में गेंहूँ चित्रकूट धाम मण्डल की रबी की प्रमुख फसल है। सिंचाई के साधनों के विकास के साथ ही साथ गेंहूँ के उत्पादन क्षेत्र और उत्पादन में बढ़ी तेजी से वृद्धि हुई है। देश में 1966 के बाद हुई हरित क्रान्ति का प्रभाव यहाँ भी पड़ा है। इसके पहले यहाँ थोड़ी मात्रा में लाल गेंहूँ का उत्पादन होता था जो बिना सिंचाई द्वारा उत्पन्न होता था।

गेंहूँ प्रधानतः शीतोष्ण कटिबन्धीय फसल है। चित्रकूट धाम मण्डल की भौगोलिक दशायें गेंहूँ उत्पादन के लिए अनुकूल है। यहाँ की जलवायु व मिट्टियों में उगने वाले बीजों का विकास कर लिया

गया है। इसलिए यहाँ गेहूँ का उत्पादन अधिक होने लगा है। गेहूँ नवम्बर के प्रथम सप्ताह से लेकर दिसम्बर के अन्त तक बोया जाता है। बुवाई के समय 10^0 से 15^0 सें.ग्रे. तक औसत तापमान होना चाहिए। पकते समय 25^0 सेन्टीग्रेड औसत ताप पर्याप्त होता है। पाला, कोहरा ओला व तेज और शुष्क हवाएँ इसकी फसल के लिए हानिकारक होती हैं। इसकी कृषि के लिए 50 से 80 सेमी. वर्षा वाले क्षेत्र उपयुक्त रहते हैं। कम वर्षा वाले भागों में सिंचाई के द्वारा गेहूँ उगाया जाता है। चित्रकूट धाम मण्डल में साधारणतया गेहूँ की खेती, बलुई और रांकर मिट्टी को छोड़कर शेष काबर, मार तथा पडुवा मिट्टी में की जाती है। परन्तु दोमट मिट्टी इसकी कृषि के लिए सर्वोत्तम मानी जाती है। मण्डल में गेहूँ की कई किस्में उगाई जाती है। मण्डल में गेहूँ की प्रमुख उन्नत कई किस्में है जिनमें– सोनालिका (आर. आर. 21), कल्यान सोना (सोना 227), के 816, एच.डी. 1982, राज 911, यू.पी. 301, यू.पी. 368, यू.पी. 315(बौनी किस्में) तथा के 65, सी. 306, के – 68, मुक्ता (लम्बी किस्में) हैं। इनमें राज 911 तथा मुक्ता बुन्देलखण्ड क्षेत्र के लिए उपयुक्त प्रजातियाँ हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में वर्ष 2000–01 में 331186 हेक्टेयर क्षेत्रफल में गेहूँ की कृषि की गयी, जो मुख्य फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल का 27.24% हैं। इसमें गेहूँ का कुल उत्पादन 519387.87 मीट्रिकटन हुआ। गेहूँ के अन्तर्गत क्षेत्रफल का सर्वाधिक प्रतिशत महुआ विकासखण्ड में 41.11% तथा सबसे कम सरीला विकासखण्ड में 13.92% है।

विकासखण्डों में महुआ विकासखण्ड गेहूँ के उत्पादन में अग्रणी है। यहाँ मण्डल के कुल गेहूँ उत्पादन का 8.33% (43255.22 मीट्रिकटन) उत्पादन हुआ। इसके बाद मौदहा में 7.58%, सुमेरपुर में 6.22%, कबरई में 6.08% तथा नरैनी में 5.43%, गेहूँ का उत्पादन हुआ। अन्य विकासखण्डों में गेहूँ का उत्पादन 5% से कम रहा। (परिशिष्ट सं. 6–6)

मण्डल के कुल गेहूँ उत्पादन का सर्वाधिक प्रतिशत बांदा जनपद में 35.22%, तथा सबसे कम प्रतिशत चित्रकूट जनपद में 15.49% रहा। इसके अतिरिक्त हमीरपुर जनपद में 32.25% तथा महोबा जनपद में 17.04% रहा। वर्ष 2000–01 में हमीरपुर जनपद में 20.02 कुन्तल प्रति हेक्टेयर, महोबा जनपद में 13.95 कुन्तल प्रति हेक्टेयर, बांदा जनपद में 13.82% कुन्तल/हेक्टेयर तथा चित्रकूट जनपद में 15.56 कुन्तल प्रति हेक्टेयर गेहूँ का उत्पादन हुआ। जो पिछले पाँच–छः वर्षों की तुलना में बहुत कम हो गया है। इसका कारण गोबर तथा हरीखादों का कम प्रयोग तथा रासायनिक उर्वरकों का अन्धाधुन्ध प्रयोग है। इससे मिट्टी में जरुरी सूक्ष्म पोषक तत्वों जिंक (जस्ता) तथा ताँबे की कमी आ गयी है जिससे गेहूँ की उत्पादकता में 38% से ज्यादा गिरावट आई है। अतः भूमि की उर्वरता को कायम रखने के लिये गोबर की खाद, हरी खाद आदि जैविक खादों का प्रयोग अनिवार्य रुप से करना चाहिये तथा रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कम कर देना चाहिये।

आहार (नरैनी तहसील) क्षेत्रवासियों ने खेतों में खड़ी धान की फसल में ही गेहूँ के बीज का छिड़काव कर बिना जोते–सींचे गेहूँ के उत्पादन की नई तकनीक विकसित की है। इस तकनीक से यहाँ के किसानों ने प्रति एकड़ भूमि से आठ–नौ कुन्तल तक गेहूँ का उत्पादन किया। जबकि स्थिति यह है कि यहाँ सिंचाई के पर्याप्त साधन नहीं हैं।

इससे लाभ यह भी है कि जमीन की उर्वराशक्ति के क्षीण होने का कोई खतरा नहीं है। इस तकनीक के और अधिक विकसित होने से फसल का उत्पादन दो गुना तक हो सकता है।

2. **धान (Rice)** :– खरीफ की फसलों मे धान प्रमुख खाद्यान्न फसल है। चित्रकूट धाम मण्डल में इसकी खेती बहुत पहले से होती चली आ रही है। यहाँ इसकी फसल वर्ष में एक बार ली जाती है। चावल उष्ण एवं नम जलवायु की उपज है। मानसूनी जलवायु इसके लिए सर्वोत्तम है। इसके लिए ऊँचे तापमान की आवश्यकता होती है। चावल के लिए 24^0 सेन्टीग्रेड से 27^0 सेन्टीग्रेड तक तापमान आवश्यक होता है। इसे सुवितरित 150 सेमी. से अधिक औसत वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है। चावल के वर्धनकाल में खेतों में पानी भरा रहना चाहिए। कम वर्षा वाले क्षेत्रों में सिंचाई की सहायता से चावल उगाया जाता है। इसकी कृषि के लिए चिकनी या मटियार मिट्‌टी सबसे अधिक उपयुक्त होती है। पानी भरे रहने के लिए खेत का समतल होना भी जरुरी होता है। जिससे सर्वत्र पानी पहुँच जाय। चित्रकूट धाम मण्डल में धान दो प्रकार से बोया जाता है
(1) छिटकवां (2) पौध लगाकर (रोपाई विधि द्वारा)

धान की शीघ्र पकने वाली प्रजातियॉः–साकेत4, अश्विनी, गोविन्दपन्त 12, मध्यम समय से पकने वाली उन्नतिशील प्रजातियॉ–महसूरी, टा. 9.टा. 100, क्रास 116। सुगन्धित धान – टा. 3, बासमती 370, पूसा, बासमती – 1, तथा संकर धान की प्रमुख प्रजातियाँ पन्त संकर धान –1, नरेन्द्र संकर धान–2, प्रो. एग्रो 6201, पी. एच.वी. 71 आदि हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में वर्ष 2000–01 में धान की कृषि 85580 हेक्टेयर भूमि में की गयी। चावल के अन्तर्गत क्षेत्रफल का सर्वाधिक प्रतिशत विसण्डा विकासखण्ड में तथा सबसे कम प्रतिशत जसपुरा विकासखण्ड में 0.01% है।

वर्ष 2000–01 में चित्रकूट धाम मण्डल में 83777.95 मीट्रिकटन चावल का उत्पादन हुआ। महुआ विकासखण्ड चावल उत्पादन में प्रथम स्थान रखता है। *इसे बुन्देलखण्ड का चावल का कटोरा कहते हैं।* यहाँ 20692.22 मीट्रिकटन धान का उत्पादन हुआ जो कुल उत्पादन का 24.70% है। दूसरा स्थान नरैनी विकासखण्ड (22%) का है। इसके अतिरिक्त विसण्डा में 17.80% बड़ोखर खुर्द में 6%, बबेरु में 4.35%, पहाड़ी में 4.02%, तथा कर्वी में 4.06% चावल का उत्पादन हुआ। *(परिशिष्ट सं0 6.7)*

अतर्रा तहसील धान के उत्पादन के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध है। मण्डल में अतर्रा चावल की सबसे बड़ी एवं प्रसिद्ध मण्डी है। यहाँ चावल की कई मिलें है। हमीरपुर तथा महोबा जनपद चावल उत्पादन में बहुत पीछे हैं। यहाँ किसी भी विकासखण्ड में 1% से अधिक चावल का उत्पादन नहीं होता है। बांदा जनपद चावल के उत्पादन में अग्रणी है। यहाँ 2000–01 में 78.95% (66142.95 मीट्रिकटन) धान का उत्पादन हुआ। यहाँ धान के उत्पादन के लिए भौगोलिक दशायें अनुकूल है। समतल भूमि एवं सिंचाई की सुविधाएँ होने के कारण प्रति हेक्टेयर चावल का उत्पादन अधिक है।

वर्ष 2000–01 में चित्रकूट धाम मण्डल में चावल का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 9.79 कुन्तल था, जो पिछले वर्षों की तुलना में कम है। यहाँ चावल का प्रति हेक्टेयर उत्पादन घटता जा रहा है। इसका कारण गोबर तथा हरी खादों (जैविक खादों) का प्रयोग कम तथा रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग अधिक है। वैज्ञानिकों द्वारा की गई मिट्टी की जाँच से पता चला है कि मिट्टी में जरुरी पोषक तत्व जिंक की अत्यधिक कमी आ गई है, जिससे चावल की उत्पादकता में 19% से ज्यादा गिरावट आई है। अतः उत्पादन बढ़ाने के लिए जैविक उर्वरकों का प्रयोग अधिक तथा रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कम करने की जरुरत है।

3. **ज्वार (JOWAR)** :– ज्वार की कृषि उन भागों में की जाती है, जहाँ वर्षा की मात्रा कम होती है एवं सिंचाई के साधनों का अभाव होता है। ज्वार विशेषकर चारे के लिए उगाया जाता है। इसके साथ ही यह निर्धन लोगों का मुख्य भोजन भी हैं। आजकल ज्वार से आरारोट बनाकर सूती मिलों में कपड़ों पर कलफ देने का काम अधिक मात्रा में हो रहा है। ज्वार की कृषि के लिए 21.1^0 सेन्टीग्रेड से 26.7^0 सेन्टीग्रेड तापमान तथा 50 सेमी. से 100 सेमी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है। ज्वार की फसल कम उपजाऊ मिट्टी में भी खाद का प्रयोग कर उगायी जा सकती है। बलुई दोमट अथवा ऐसी भूमि जहाँ जल निकास की अच्छी व्यवस्था हो, ज्वार की खेती के लिए उपयुक्त होती है। चित्रकूट धाम मण्डल में बोयी जाने वाली ज्वार की उन्नतिशील प्रजातियाँ मऊ टा–1, मऊ टा–2, सी.एस.एच. 13, सी.एस.एच. 15, तथा संकर प्रजातियों में सी.एस.एच. – 16, सी.एस.एच. –9, सी.एस.एच. – 14, सी.एस.एच. – 18 प्रमुख हैं। चरी की उन्नत किस्में मीठी ज्वार (रियो), पी.सी. 6,9 यू.पी. चरी 1 व2, पन्त चरी 3 एवं 4 प्रमुख है।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में 112922 हेक्टेयर क्षेत्रफल में ज्वार की कृषि की गयी। जिसमें 93760.34 मीट्रिकटन ज्वार का उत्पादन हुआ। मण्डल के कुल उत्पादन का 31.59% हमीरपुर में, 6.70% महोबा में, 35.92%, बांदा में तथा 25.79% चित्रकूट जनपद में उत्पादन हुआ। ज्वार के उत्पादन में बांदा जनपद अग्रणी है यहाँ 39664 हेक्टेयर भूमि में 33674.74 मीट्रिकटन ज्वार का उत्पादन हुआ। विकासखण्डवार ज्वार का सर्वाधिक उत्पादन नरैनी विकासखण्ड में 8.59%, तथा सबसे कम जैतपुर विकासखण्ड में 1.44% हुआ। इसके अतिरिक्त सुमेरपुर में 6.57%, सरीला में 7.24%, तिन्दवारी में 5.36%, पहाड़ी में 5.84%, कर्वी में 6.55%, मानिकपुर में 5.30%, ज्वार का उत्पादन हुआ। शेष विकासखण्डों में ज्वार का उत्पादन 5% से कम है।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में 8.30 कुन्तल/हेक्टेयर ज्वार का उत्पादन हुआ। जिसमें हमीरपुर जनपद में 8.08 कुन्तल/हेक्टेयर, महोबा में 7.94 कुन्तल/हेक्टेयर बांदा में 8.49% कुन्तल/हेक्टेयर तथा चित्रकूट जनपद में 8.43 कुन्तल/हेक्टेयर ज्वार का उत्पादन हुआ। निम्नलिखित परिशिष्ट संख्या 6–8 में चित्रकूट धाम मण्डल में ज्वार का विकासखण्डवार क्षेत्रफल एवं उत्पादन दर्शाया गया है :–

4. **बाजरा (Bajra)** :– यह एक शीघ्रता से बढ़ने वाली रोग निरोधक तथा अधिक कल्ले फूटने वाली चारे की फसल है। यह गरीब जनता का भोजन है। प्रायः शुष्क एवं अर्धशुष्क क्षेत्रों में इसकी बुवाई की जाती है। यह अकेले अथवा दलहनी फसलों के साथ मिलाकर बोई जाती हैं। इसके लिए साधारण वर्षा की आवश्यकता होती है। 25 से 50 सेमी. तक वर्षा वाले भागों में इसकी कृषि सफलता पूर्वक की जाती है। परन्तु सफल कृषि हेतु 50 से 90 सेमी. वर्षा वाले क्षेत्र श्रेयष्कर माने जाते है। बलुई दोमट भूमि इसकी खेत के लिए अच्छी होती है। बाजरे की उन्नत किस्में कम्पोजिट बाजरा तथा ज्वाइन्ट बाजरा हैं। चारे के लिए संकर बाजरा की द्वितीय पीढ़ी के बीज का भी प्रयोग किया जा सकता है।

वर्ष 2000–01 में चित्रकूट धाम मण्डल में 11325 हेक्टेयर भूमि में 8621.44 मीट्रिकटन बाजरे का उत्पादन हुआ। विकासखण्डों में बाजरे का सर्वाधिक उत्पादन प्रतिशत रामनगर विकासखण्ड में 21.82%, है। इसके अतिरिक्त मऊ में 17.82%, कर्वी में 11.26%, पहाड़ी में 9.34%, मानिकपुर में 8.21%, कमासिन

में 11.99%, जसपुरा में 5.32%, बबेरु में 5.87% तथा कुरारा में 3.56% है। शेष विकासखण्डों में 2% से कम उत्पादन है। गोहाण्ड, पनवाडी, चरखारी, कबरई, में उत्पादन शून्य है।

चित्रकूट जनपद, मण्डल के कुल बाजरे उत्पादन का सर्वाधिक 68.65% उत्पन्न करता है। इसके अतिरिक्त बांदा जनपद में 27.28%, हमीरपुर में 4.03%, बाजरे का उत्पादन हुआ। महोबा जनपद में बाजरे का उत्पादन नगण्य है। वर्ष 2000–01 में चित्रकूट धाम मण्डल में बाजरे का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 7.61 कुन्तल है। हमीरपुर, बांदा, तथा महोबा जनपद में 8.43 कुन्तल/हेक्टेयर एवं चित्रकूट जनपद में 7.29 कुन्तल/हेक्टेयर है। परिशिष्ट संख्या 6–9 में विकासखण्डवार बाजरे का क्षेत्रफल तथा उत्पादन दर्शाया गया है।

5. **जौ (Barley)** :– जौ रबी की फसल है। गेंहूँ के साथ ही साथ इसकी भी पैदावार होती है। होम, यज्ञ आदि धार्मिक कार्यों में जौ का महत्व अतीत काल से ही चला आ रहा है। आज भी जौ का उपयोग भोजन के रुप में किया जाता है। भोजन के अतिरिक्त जौ का उपयोग शराब और स्टार्च आदि बनाने में भी होता है।

कम उपजाऊ एवं शुष्क भागों में जहाँ गेंहूँ की कृषि नहीं हो सकती जौ की अच्छी फसल पैदा की जाती है। इसके बुवाई के समय 10^0 से 15^0 सेन्टीग्रेड तथा पकते समय 26^0 सेन्टीग्रेड औसत तापमान की आवश्यकता होती है। पाला, कोहरा, ओला, और शुष्क हवायें इसके लिए हानिकारक हैं। इसके लिए गेंहूँ की अपेक्षा कम पानी की आवश्यकता होती है। इसमें स्वयं शुष्कता सहन करने की क्षमता होती है अतः इसके लिए 50 सेमी. से 90 सेमी.वर्षा वाले क्षेत्र उपयुक्त रहते हैं। जौ की फसल के लिए हल्की और चूना युक्त मिट्टी उत्तम होती है। क्षारयुक्त भूमि में भी इसकी कृषि की जा सकती है, परन्तु अधिक आर्द्र भूमि फसल के लिए हानिकारक होती है। चित्रकूट धाम मण्डल में उगायी जाने वाली जौ की प्रमुख प्रजातियाँ KV 292, K84, और KU 294 हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में 11737 हेक्टेयर क्षेत्रफल में 8236.26 मीट्रिकटन जौ का उत्पादन हुआ। हमीरपुर जनपद में 1584 हेक्टेयर भूमि में 1096.13 मीट्रिकटन (13.31%), महोबा में 2875 हेक्टेयर भूमि में 1989.50 मीट्रिकटन (24.16%), बांदा में 1837 हेक्टेयर भूमि पर 1271.20 मीट्रिकटन (15.43%) तथा चित्रकूट जनपद में 5441 हेक्टेयर भूमि पर 3879.43 मीट्रिकटन (47.10%) जौ का उत्पादन हुआ। सर्वाधिक उत्पादन प्रतिशत चित्रकूट जनपद का है। परिशिष्ट संख्या 6–10 के अनुसार 2000–01 में विकासखण्ड मानिकपुर में जौ का सर्वाधिक उत्पादन 11.61% है। इसके अतिरिक्त पहाड़ी में 10.30%, कर्वी में 8.64%, रामनगर में 8.41%, मऊ में 8.14%, पनवाड़ी में 6.08%, जैतपुर में 6.62%, चरखारी में 5.06%, तथा कबरई में 6.40%, हैं अन्य विकासखण्डों में 4% से कम है। वर्ष 2000–01 में हमीरपुर, महोबा तथा बांदा जनपदों में जौ का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 6.92 कुन्तल है, जबकि चित्रकूट जनपद में 7.13 कुन्तल/हेक्टेयर है। सम्पूर्ण चित्रकूट धाम मण्डल में पिछले वर्ष की तुलना में प्रति हेक्टेयर उत्पादन में बहुत कमी आयी है, क्योंकि 1999–2000 में मण्डल में जौ की औसत उपज 14.44 कुन्तल/हेक्टेयर थी, जो 2000–01 में घटकर 7.02 कुन्तल प्रति हेक्टेयर रह गयी। इससे यह स्पष्ट है कि उत्पादकता में 51.38% की कमी आयी है। इसका कारण मिट्टी में सूक्ष्म पोषक तत्वों जस्ता (जिंक) तथा तांबा की कमी है। अतः रासायनिक उर्वरकों के साथ–साथ गोबर की खाद एवं कम्पोष्ट खाद, का प्रयोग भी आवश्यक है।

प्रमुख दलहनी फसलें

चित्रकूट धाम मण्डल में दालों का विशेष महत्व है। यहाँ की अधिकाँश जनता शाकाहारी होने के कारण भोजन में दाल का अधिक प्रयोग करती है। दाल से हमें भोजन का आवश्यक तत्व प्रोटीन काफी मात्रा में प्राप्त हो जाता है। दाल वाली फसलों को उगाने से खेतों की उर्वरा शक्ति बढ़ जाती है। इनकी जड़ों में अधिक मात्रा में नाइट्रोजन इकट्ठा हो जाता है, जिसके फलस्वरुप खेतों की उर्वरता बढ़ जाती है और दूसरी फसल सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है।

चित्रकूट धाम मण्डल में कई प्रकार की दालें उत्पन्न की जाती हैं। जिनमें चना, अरहर, मटर, मसूर, मूँग, उड़द आदि प्रमुख हैं। 2000–01 में चित्रकूट धाम मण्डल में 595327 हेक्टेयर भूमि में दलहन की कृषि की गयी जो कि कुल कृषि की गयी भूमि का 48.97% है।

1. **चना (Gram)** :– दलहनी फसलों में चना का महत्व सबसे अधिक है। चने का प्रयोग मुख्यतः दाल के रुप में होता है। साथ ही साथ इसके बेसन से नाना प्रकार की चीजें बनायी जाती हैं। चने को गेंहूँ या अन्य खाद्यान्नों के साथ भी मिलाकर खाते हैं। यह घोड़े तथा बैलों का भी मुख्य भोजन है। चने की बुवाई के समय 10^0 सेन्टीग्रेड से 15^0 सेन्टीग्रेड तक तापमान की आवश्यकता होती है। पकते समय 25^0 सेन्टीग्रेड तक औसत ताप पर्याप्त होता है। पाला तथा ओला हानिकारक है। इसकी खेती के लिए 50 से 80 सेमी. वर्षा वाले क्षेत्र उपयुक्त रहते हैं। वर्षा न होने पर सिंचाई के द्वारा इसकी कृषि की जाती है। चने के लिए मार एवं पडुवा भूमि जहाँ पानी के निकास का उचित प्रबन्ध हो, उपयुक्त होती है। चने की संस्तुत प्रजातियाँ – राधे, पूसा, के. 850, अवरोधी, उदय, प्रगति (काबुली), के. डब्ल्यू., आर. 108, सदाबहार, पन्त जी – 114, पूसा 267 (काबुली), जे.जे. 315, पी.डी.जी. 81–10, एल– 550 (काबुली) हैं। इनमें राधे तथा जे. जी. 315 बुन्देलखण्ड क्षेत्र के लिए अधिक उपयुक्त हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में 286151 हेक्टेयर भूमि में 199242.86 मीट्रिकटन चने का उत्पादन हुआ। जनपद हमीरपुर में 93974 हेक्टेयर भूमि में 65969.75 मीट्रिकटन चने का उत्पादन हुआ, जो कि कुल उत्पादन का
33.11% है। इसी प्रकार महोबा में 48082 हेक्टेयर भूमि में 25916.20 मीट्रिकटन (13.01%), बांदा जनपद में 98046 हेक्टेयर भूमि में 76181.74 मीट्रिकटन (38.23%) तथा चित्रकूट जनपद में 46049 हेक्टेयर भूमि में 31175.17 मीट्रिकटन (15.65%) चने का उत्पादन हुआ।

परिशिष्ट संख्या 6–11 पर दृष्टिपात करने पर यह ज्ञात होता है कि विकासखण्डों में चने का सर्वाधिक उत्पादन प्रतिशत मौदहा विकासखण्ड में 8.70% है। इसके अतिरिक्त चने का उत्पादन प्रतिशत सुमेरपुर में 6.12%, सरीला में 5.90%, मुस्करा में 4.27%, कबरई में 4.16%,जसपुरा में 4.91%, तिन्दवारी में 5.80%, बड़ोखर खुर्द में 7.02%, बबेरु में 5.30%, कमासिन में 5.47%, नरैनी में 5.03%, तथा पहाड़ी में 4.82%, है। शेष विकासखण्डों में चने का उत्पादन का 4% से कम है।

चित्रकूट धाम मण्डल में चने की प्रति हेक्टेयर औसत उपज 2000–01 में 6.96 कुन्तल है, जो कि पिछले वर्ष की तुलना में 13.22%, कम है। हमीरपुर जनपदमें औसत उपज 7.02 कुन्तल/हेक्टेयर, महोबा जनपद में 5.39 कुन्तल/हेक्टेयर, बांदा जनपद में 7.77 कुन्तल/हेक्टेयर तथा चित्रकूट जनपद में 6.77 कुन्तल/हेक्टेयर हैं।

2. **मटर (Pea)** :– मटर अन्न और साग सब्जी दोनों के लिए पैदा की जाती है। मटर की बुवाई के समय 15° सेग्रे. तथा पकते समय 25° से0ग्रे0 औसत ताप तथा 50 सेमी. से 80 सेमी. वर्षा वाले क्षेत्र उपयुक्त रहते हैं। वर्षा न होने पर सिंचाई के द्वारा इसकी कृषि की जाती है। मटर की खेती के लिए दोमट तथा हल्की दोमट मिट्टी अधिक उपयुक्त मानी जाती है। काबर मिट्टी में भी इसकी उपज अच्छी होती है। मटर की उन्नतशील प्रजातियाँ– टा–163, रचना, पन्त–5, बी. एल. 1, टाइप 56, स्वर्ण रेखा, मालवीय–2 हैं। इनमें मालवीय –2, चित्रकूट धाम मण्डल के लिए अधिक उपयुक्त प्रजाति है। हरी फलियों के लिए – आर्केल, बोनविला, जवाहर, अर्ली, दिसम्बर, लिटिल मार्वेल मुख्य हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में 65106 हेक्टेयर भूमि में 38021.65 मीट्रिकटन मटर का उत्पादन हुआ। जिसमें हमीरपुर जनपद में 19558 हेक्टेयर भूमि में 11441.43 मीट्रिकटन (30.09%), महोबा में 44322 हेक्टेयर भूमि में 25839.72 मीट्रिकटन (67.96%), बांदा में 965 हेक्टेयर भूमि में 582.86 मीट्रिकटन (1.53%) तथा चित्रकूट जनपद में 261 हेक्टेयर भूमि में 157.64 मीट्रिकटन (0.42%) मटर का उत्पादन हुआ।

विकासखण्डों में सर्वाधिक मटर का उत्पादन प्रतिशत पनवाड़ी में 18.80%, है। इसके अतिरिक्त मटर का उत्पादन प्रतिशत क्रमशः जैतपुर में 18.11%, चरखारी में 15.56%, कबरई में 15.49%, सुमेरपुर में 1.09%, सरीला में 4.79%,गोहाण्ड में 7.87%, राठ में 7.82%, मुस्करा में 5.61%, तथा मौदहा में 1. 99% है। शेष विकासखण्डों में मटर का उत्पादन 1%, से भी कम है (परिशिष्ट संख्या 6–12) वर्ष 2000–01 में चित्रकूट धाम मण्डल में मटर की औसत उपज 5.84 कुन्तल/हेक्टेयर, है। हमीरपुर जनपद में मटर की औसत उपज 5.85 कुन्तल/हेक्टेयर , महोबा में 5.83 कुन्तल/हेक्टेयर, बांदा में 6.04 कुन्तल/हेक्टेयर तथा चित्रकूट में 6.04 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है।

3. **मसूर (Lentil)** :– मसूर एक दलहनी फसल है। इसका प्रयोग दाल एवं दालमोठ बनाने में होता है। धान के बाद खाली खेतों में मसूर विशेषकर बोयी जाती है। इसकी कृषि के लिए 10° सेग्रे. से 15° सेग्रे. तापमान एवं 50 से 75 सेमी वर्षा वाले क्षेत्र उपयुक्त रहते हैं। वर्षा न होने पर सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। चित्रकूट धाम मण्डल की 'काबर' एवं 'मार' मिट्टियाँ मसूर के उत्पादन के लिए उपयुक्त हैं। दोमट मिट्टी में भी इसकी अच्छी उपज होती है। मण्डल में बोयी जाने वाली मसूर की उन्नतिशील प्रजातियाँ – एल 4076, पन्त मसूर – 639, पन्त मसूर 406, मलिका के. 75, डी.पी.एल. – 15 (प्रिया) हैं। इनमें डी.पी.एल. 15 (प्रिया) बुन्देलखण्ड क्षेत्र के लिए अधिक उपयुक्त है।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में 145839 हेक्टेयर भूमि में 53215.72 मीट्रिकटन मसूर का उत्पादन हुआ। हमीरपुर जनपद में 58208 हेक्टेयर भूमि में 21536.96 मीट्रिकटन (40.47%), महोबा जनपद में 25231 हेक्टेयर भूमि में 7872.07 मीट्रिकटन, बांदा जनपद में 49894 हेक्टेयर भूमि में 16215. 55 मीट्रिकटन (30.47%) तथा चित्रकूट जनपद में 12506 हेक्टेयर भूमि में 7591.17 मीट्रिकटन (14.26%) मसूर का उत्पादन हुआ।

विकासखण्डवार सर्वाधिक मसूर का उत्पादन प्रतिशत मौदहा विकासखण्ड में 15.80% है। इसके अतिरिक्त यह उत्पादन प्रतिशत सुमेरपुर में 3.84%, सरीला में 5.37%, गोहाण्ड में 5.98%, मुस्करा में 3.78%, पनवाड़ी में 3.30%, जैतपुर में 3%, चरखारी में 3.51%, कबरई में 4.99%, तिन्दवारी में 5.33%, बड़ोखर खुर्द में 6.18%, बबेरु में 4.93%, कमासिन में 4.59%, विसण्डा में 4.09%, तथा पहाड़ी में 5.15%, है। शेष विकासखण्डों में 3% से कम उत्पादन है। (परिशिष्ट संख्या 6–13)

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में मसूर की औसत उपज 3.65 कुन्तल/हेक्टेयर है। इसकी औसत उपज हमीरपुर जनपद में 3.70%, कुन्तल/हेक्टेयर, महोबा जनपद में 3.12 कुन्तल/हेक्टेयर, बांदा जनपद में

3.25% कुन्तल/हेक्टेयर तथा चित्रकूट जनपद में 6.07 कुन्तल/हेक्टेयर है। मण्डल की औसत उपज पिछले वर्षों की तुलना में कम है। कम उत्पादकता का कारण भूमि में आवश्यक सूक्ष्म तत्वों की कमी तथा मौसम की प्रतिकूलता है।

4. **अरहर (Arhar)** :– दलहनी फसलों में चने के बाद अरहर का प्रमुख स्थान है। यह फसल अकेली तथा दूसरी फसलों के साथ भी बोई जाती है। ज्वार, बाजरा, उर्द, और कपास, अरहर के साथ बोई जाने वाली प्रमुख फसलें हैं। अरहर को खेती के लिए 21^0 सेग्रे. से 27 सेग्रे. तापमान तथा 60 सेमी से 100 सेमी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है। इसकी कृषि के लिए बलुई दोमट व दोमट भूमि श्रेयष्कर होती है। उचित जल निकास तथा ढ़ालू खेत अरहर के लिए सर्वोत्तम होते हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में बोई जाने वाली उन्नतिशील प्रजातियाँ – बहार, अमर, नरेन्द्र–अरहर–1, आजाद हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में 42354 हेक्टेयर भूमि में 54162.24 मीट्रिकटन अरहर का उत्पादन हुआ। चित्रकूट धाम मण्डल में सर्वाधिक अरहर उत्पन्न करने वाला जनपद बांदा (45.30%) है। इसके बाद क्रमशः चित्रकूट जनपद में 28.69%, हमीरपुर जनपद में 21.62% तथा महोबा जनपद में 4.39% अरहर का उत्पादन हुआ।

हमीरपुर जनपद में 2000–01 में सुमेरपुर विकासखण्ड में 4.31%, सरीला में 3.14%, मौदहा में 4.69%, तथा शेष विकासखण्डों में उत्पादन 3% से कम रहा। महोबा जनपद के किसी भी विकासखण्ड का उत्पादन 2% से अधिक नहीं है। बांदा जनपद में जसपुरा में 6.23%, तिन्दवारी में 6.13%, बड़ोखर खुर्द में 4.40%, बबेरु में 6.22%, कमासिन में 6.74%, विसण्डा में 2.30%, महुआ में 2.50%, तथा नरैनी में 10.78% अरहर का उत्पादन हुआ। नरैनी विकासखण्ड मण्डल में सर्वाधिक अरहर का उत्पादन करता है। चित्रकूट जनपद में पहाड़ी विकासखण्ड में 7.07%, कर्वी में 6.92%, मानिकपुर में 7.18%, रामनगर में 4.36%, तथा मऊ में 3.16%, अरहर का उत्पादन हुआ। (परिशिष्ट संख्या 6–14)

मण्डल में अरहर की औसत उपज प्रदेश की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक है। 2000–01 में चित्रकूट धाम मण्डल में अरहर का प्रति हेक्टेयर उत्पादन

12.79 कुन्तल है। हमीरपुर जनपद में अरहर की औसत उपज 9.01 कुन्तल/हेक्टेयर, महोबा में 7.74 कुन्तल/हेक्टेयर , बांदा जनपद में 17.13 कुन्तल/हेक्टेयर तथा चित्रकूट जनपद में 12.99 कुन्तल/हेक्टेयर हुई।

5. **मूंग (Moong)** :– चित्रकूट धाम मण्डल में मूंग की कृषि खरीफ एवं जायद दोनों फसलों के अंतर्गत की जाती है। खरीफ में मूंग की बुवाई सामान्यतः चित्रकूट धाम मण्डल के सभी जनपदों में की जाती है। मूंग की खेती के लिए 22^0 सेग्रे. से 27^0 सेग्रे. तापमान तथा 50 से 100 सेमी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है। सामान्यतः सभी प्रकार की उपयुक्त मिट्टियों में जिसमें पानी का समुचित निकास हो, इसकी कृषि की जा सकती है, लेकिन चित्रकूट धाम मण्डल की बलुई दोमट तथा काबर मिट्टी इसके लिए अधिक उपयुक्त होती है। इस मण्डल में मूंग की संस्तुत प्रजातियाँ – टाइप 44, के. 851, पन्त मूँग –2, पन्त मूँग–3, पन्त मूँग–1, पन्त मूँग–4, नरेन्द्र मूँग–1, पी.डी.एम. 54, पी.डी.एम. 11, एम.यू. एम.–2, मालवीय जागृति, तथा सम्राट है।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में 9728 हेक्टेयर भूमि में 3191.66 मीट्रिकटन मूँग का उत्पादन हुआ, जिसमें महोबा जनपद में सर्वाधिक मूँग का उत्पादन 4274 हेक्टेयर भूमि में 1316.39 मीट्रिकटन (41.25%) हुआ। इसके अतिरिक्त हमीरपुर जनपद में 2938 हेक्टेयर भूमि में 1010.67 मीट्रिकटन (31.67%), बांदा में 1618 हेक्टेयर भूमि में 556.59 मीट्रिकटन (17.44%) तथा चित्रकूट जनपद में 898 हेक्टेयर भूमि में 308.01 मीट्रिकटन (9.65%) मूँग का उत्पादन हुआ।

विकासखण्डों में सर्वाधिक मूँग का उत्पादन प्रतिशत कबरई विकासखण्ड में (12.15%) है। इसके अतिरिक्त पनवाड़ी में 11.47%, जैतपुर में 8.79%, चरखारी में 8.83%, गोहाण्ड में 7.01%, राठ में 9.89%, मुस्करा में 3.17%, मौदहा में
7.08%, तिन्दवारी में 3.20%, बड़ोखर खुर्द में 3.32%, बबेरु में 4.40%, तथा पहाड़ी में 3.97%, मूंग का उत्पादन पाया जाता है। अन्य विकासखण्डों में उत्पादन 3%से कम है।

चित्रकूट धाम मण्डल में मूंग का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 2000–01 में 3.28 कुन्तल है, जबकि 1999–2000 में 2.70 कुन्तल/हेक्टेयर था अर्थात् उत्पादकता में 21.48% की वृद्धि हुई। वर्ष 2000–01 में हमीरपुर जनपद में 3.44 कुन्तल/हेक्टेयर, महोबा जनपद में 3.08 कुन्तल/हेक्टेयर बांदा जनपद में 3.44 कुन्तल/हेक्टेयर तथा चित्रकूट जनपद में 3.43 कुन्तल/हेक्टेयर उत्पादन रहा। परिशिष्ट संख्या 6–15 में चित्रकूट धाम मण्डल में मूंग का विकासखण्डवार क्षेत्रफल तथा उत्पादन दर्शाया गया है।

6. **उर्द (Urd)** :– उर्द की खेती सामान्यतः चित्रकूट धाम मण्डल के सभी जनपदों में की जाती है। यहाँ यह खरीफ की फसल में पैदा की जाती है। इसकी कृषि के लिए 22^0 सेग्रे. से 27^0 तापमान तथा 50 सेमी. से 100 सेमी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है। समुचित जल निकास वाली उपयुक्त भूमि इसकी खेती के लिए उपयुक्त मानी जाती है। चित्रकूट धाम मण्डल में बोई जाने वाली उर्द की उन्नतिशील प्रजातियाँ – टा–9, पन्त यू–19, आजाद उर्द –2, आई. पी. यू. 94–1, (उत्तरा), पन्त यू –35, शेखर –2, नरेन्द्र उर्द –1 हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में 46124 हेक्टेयर भूमि में 18648.09 मीट्रिकटन उर्द का उत्पादन हुआ। उर्द के उत्पादन में हमीरपुर जनपद अग्रणी है। यहाँ 2000–01 में 23318 हेक्टेयर भूमि में 11262.59 मीट्रिकटन उर्द का उत्पादन हुआ जो मण्डल के कुल उत्पादन का 60.40%, है। महोबा जनपद में 16821 हेक्टेयर भूमि में 5466.83 मीट्रिकटन (29.32%), बांदा जनपद में 4725 हेक्टेयर भूमि में 1592.33 मीट्रिकटन (8.53%) तथा चित्रकूट जनपद में 1260 हेक्टेयर भूमि में 326.34 मीट्रिकटन (1.75%), उर्द का उत्पादन हुआ।

विकासखण्डों में सर्वाधिक उर्द का उत्पादन प्रतिशत सुमेरपुर विकासखण्ड में 13.21% है। इसके अतिरिक्त कुरारा में 5.20%, सरीला में 3.31%, गोहाण्ड में 10.12%, राठ में 9.80%, मुस्करा में 11.98%, मौदहा में 6.78%, पनवाड़ी में 6.77 %, जैतपुर में 7.67%, चरखारी में 6.24%, तथा कबरई में 8.64%,उर्द का उत्पादन होता है। बांदा तथा चित्रकूट जनपद के विकासखण्डों में किसी में भी 3% से अधिक उत्पादन नहीं होता है। यहाँ तक कि चित्रकूट जनपद के विकासखण्डों में 1% से भी कम उत्पादन होता है। (परिशिष्ट संख्या 6–16)

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में उर्द का औसत उत्पादन 4.04 कुन्तल/हेक्टेयर हुआ, जबकि पिछले वर्ष 1999–2000 में औसत उत्पादन 3.27 कुन्तल/हेक्टेयर था। अर्थात् प्रति हेक्टेयर उत्पादकता में 23.55% की वृद्धि हुई है। वर्ष 2000–01 में जनपदवार में प्रति हेक्टेयर उत्पादन हमीरपुर में 4.83 कुन्तल, महोबा में 3.25 कुन्तल, बांदा में 3.37 कुन्तल तथा चित्रकूट में 2.59 कुन्तल रहा।

तिलहनी फसलें :— चित्रकूट धाम मण्डल में 2000—01 में 56887 हेक्टेयर भूमि में तिलहन का उत्पादन किया गया, जो कुल बोई गयी भूमि का 4.67%, है। इनका प्रयोग हमारी दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जाता है। तिलहन से प्राप्त तेल का प्रयोग भोजन बनाने, जलाने, वनस्पति घी बनाने, मोमबत्ती, साबुन, विभिन्न प्रकार की दवाइयाँ सुगन्धित वस्तुएँ एवं वार्निश बनाने में किया जाता है। पशुओं को इसकी खली खिलाने तथा मशीनों को चिकना करने में भी तेल का प्रयोग होता है। खली से खेतों के लिए उत्तम खाद भी प्राप्त होती है। आजकल वनस्पति घी बनाने में तिलहन का बहुत अधिक प्रयोग हो रहा है।

चित्रकूट धाम मण्डल में मुख्यतः सभी प्रकार के तिलहन का उत्पादन होता है। मण्डल में उत्पन्न होने वाली तिलहन — लाही, सरसों, अलसी, तिल, सोयाबीन, रेडी, मूँगफली, सूरजमुखी आदि हैं। इनमें लाही, सरसों, अलसी, और तिल छोटे दाने के तिलहन हैं, जबकि मूँगफली, रेडी, सोयाबीन और सूरजमुखी बड़े दाने के तिलहन हैं।

1. **लाही व सरसों (Mustard)** :— यह रबी की फसल है। इसकी खेती जौ और गेंहूँ के साथ—साथ की जाती है। सरसों का दाना पीले रंग का और राई के दाने से कुछ बड़ा होता है। लाही का दाना काले रंग का और सरसों के दाने से छोटा होता है। लाही व सरसों का तेल खाने के काम में आता है। इसकी कृषि के लिए साधारण तापमान प्रारम्भिक अवस्था में लगभग 10^0 से 15.6^0 सेग्रे. तथा फसल पकते समय 21^0 सेग्रे. से 26^0 सेग्रे. तापमान उपयुक्त होता हैं। कुहरा तथा पाला इसके लिए हानिकारक है। शुष्क शरद ऋतु इसकी कृषि के लिए उत्तम होती है। इसकी कृषि के लिए 75 से 125 सेमी. वर्षा की आवश्यकता होती है। इसके लिए उपजाऊ कछारी मिट्टी अधिक उपयुक्त होती है। चित्रकूट धाम मण्डल की 'काबर' तथा 'मार' मिट्टी इसकी कृषि के लिए उपयुक्त है। लाही व सरसों की प्रमुख उन्नतिशील प्रजातियाँ रोहिणी, क्रान्ति, कृष्णा, वरदान, वैभव, उर्वशी, राई वरुणा (टी. 56) नरेन्द्र राई (8501) है।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000—01में 9988 हेक्टेयर भूमि में सरसों तथा लाही की कृषि की गयी जो मण्डल की कुल की गयी कृषित भूमि का 0.82% है। इसमें 4644.43 मीट्रिकटन लाही तथा सरसों का उत्पादन हुआ। चित्रकूट धाम मण्डल के कुल उत्पादन का 32.60%, हमीरपुर जनपद में, 27.56%, महोबा में 17.77%,सरसें का उत्पादन हुआ।

परिशिष्ट संख्या 6—17 पर दृष्टिपात करने से यह ज्ञात होता है कि सरसों का सर्वाधिक उत्पादन प्रतिशत मौदहा विकासखण्ड में है। यहाँ सन् 2001 में 1607 हेक्टेयर भूमि में 747.25 मीट्रिकटन लाही व सरसों का उत्पादन हुआ जो मण्डल के कुल उत्पादन का 16.09% है। इसके अतिरिक्त कुरारा में 5.45%, सुमेरपुर में 4.32%, सरीला में 2.57%, मुस्करा में 2.49%, पनवाड़ी में 6.62%, जैतपुर में 7.28%, चरखारी में 7.04%, कबरई में 6.62%, जसपुरा में 2.30%, तिन्दवारी में 3.68%, बड़ोखर खुर्द में 4.62%, बबेरु में 2.86%, कमासिन में 2.19%, पहाड़ी में 5.81%, कर्वी में 6.91%, मानिकपुर में 5.41%, तथा रामनगर में 2.45%,लाही का उत्पादन हुआ । शेष विकासखण्डों में 2%, से कम उत्पादन है।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000—01 में लाही व सरसों का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 4.65 कुन्तल है। कृषकों को लाही व सरसों का उचित मूल्य न मिलने के कारण इसके उत्पादन पर गिरावट आयी है। अतः इसके उत्पादन को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार को उचित लाभप्रद मूल्य निर्धारित करना चाहिए।

2. **अलसी (Linseed)** :– अलसी चित्रकूट धाम मण्डल का प्रमुख तिलहन है। यह रबी की फसल है। इसका तेल खानें में प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त इसका तेल वार्निश और रंग बनाने में भी प्रयोग होता है। अलसी का तेल निकालनें तथा उससे अनेक प्रकार की वस्तुएं बनाने के कारखानें स्थापित किये गये हैं। अलसी की खेती के लिए (अधिक तापमान)12^0 सेग्रे. से 27^0 सेग्रे. तापमान तथा 75 से 150 सेमी. की वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है। इसकी कृषि विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में होती है, परन्तु 'काबर मिट्टी' (काली मिट्टी) का क्षेत्र इसकी उपज के लिए अधिक उपयुक्त समझा जाता है। चित्रकूट धाम मण्डल में बोई जाने वाली अलसी की उन्नतिशील प्रजातियाँ नीलम, टी.397, गरिमा, लक्ष्मी – 27, श्वेता, शुभ्रा, शिखा पदमिनी आदि हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में 19116 हेक्टेयर भूमि में 7108.43 मीट्रिकटन अलसी का उत्पादन हुआ। हमीरपुर जनपद में चित्रकूट धाम मण्डल के कुल उत्पादन का 35.96%, महोबा में 34.23%, बांदा में 23.04%, तथा चित्रकूट जनपद में 6.77% उत्पादन हुआ।

परिशिष्ट संख्या 6–18 में दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है। कि विकासखण्डवार सर्वाधिक अलसी का उत्पादन प्रतिशत मौदहा विकासखण्ड में है, जो मण्डल के कुल उत्पादन 20.49% अलसी का उत्पादन करता है। इसके अतिरिक्त इसका उत्पादन सुमेरपुर में 8.75%, पनवाड़ी में 3.92%, जैतपुर में 3.67%, चरखारी में 13.13%, कबरई में 13.51%, तिन्दवारी में 3.56%, बड़ोखर खुर्द में 9.48%, बबेरु में 3.04%, है। अन्य विकासखण्डों में अलसी का उत्पादन 3% से कम है। सबसे कम उत्पादन प्रतिशत राठ में मात्र 0.21% है।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में अलसी का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 3.72 कुन्तल है, जो कि पिछले वर्ष की तुलना में कम है। पिछले वर्ष (1999–2000) यह उत्पादन 4.71 कुन्तल/हेक्टेयर था। मण्डल में 1998–99 में अलसी का कुल उत्पादन 11600.00 मीट्रिकटन है। 1999–2000 में 10978.00 मीट्रिकटन तथा 2000–01 में यह उत्पादन घटकर 7108.43 मीट्रिकटन रह गया है।

3. **मूँगफली (Groundnut)** :– चित्रकूट धाम मण्डल में महोबा तथा हमीरपुर जनपद के अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में मूँगफली की कृषि द्रुतगति से बढ़ रही है। मूँगफली उष्टकटिबन्धीय पौधा है। यह खरीफ की फसल के साथ बोई जाती है।मूँगफली की कृषि के लिए 21.1^0 सेग्रे. से 28^0 सेग्रे. तापमान एवं 100 सेमी. या कुछ अधिक वर्षा उपयुक्त होती है, किन्तु 50 से 75 सेमी. की वर्षा के प्रदेशों में भी सिंचाई के द्वारा इसकी कृषि की जा सकती है। मूँगफली की कृषि के लिए बलुई मिट्टी उपयुक्त होती है, किन्तु चित्रकूट धाम मण्डल की पडुवा तथा रांकर मिट्टी इसके लिए उपयुक्त है। साधारणतः वह मिट्टी जिसकी सतह कठोर हो जाती हो, इसके लिए उपयुक्त नहीं होती है। बुन्देलखण्ड में मूँगफली बोई जाने वाली संस्तुत प्रजातियाँ कौशल (जी–201) तथा प्रकाश हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में 12979 हेक्टेयर भूमि में 8034 मीट्रिकटन मूँगफली का उत्पादन हुआ। महोबा जनपद मूँगफली के उत्पादन में अग्रणी है। यहाँ 11332 हेक्टेयर भूमि में 7014.51 मीट्रिकटन मूँगफली का उत्पादन हुआ, जो मण्डल के कुल उत्पादन का 87.31% है। इस जनपद में मूँगफली के उत्पादन के लिए आवश्यक भौगोलिक दशायें मौजूद हैं। हमीरपुर जनपद में 589 हेक्टेयर भूमि में 364.59 मीट्रिकटन (4.54%), बांदा जनपद में 1036 हेक्टेयर भूमि में 641.28 मीट्रिकटन (7.98%) तथा चित्रकूट जनपद में 22 हेक्टेयर भूमि में 13.62 मीट्रिकटन (0.17%) मूँगफली का उत्पादन हुआ।

सबसे कम उत्पादन चित्रकूट जनपद का है, जबकि यहाँ मूँगफली के अधिक उत्पादन की सम्भावनायें हैं क्योंकि यहाँ की मिट्टी मूँगफली उत्पादन के लिए उपयुक्त है।

विकासखण्डों में सर्वाधिक मूँगफली का उत्पादन कबरई विकासखण्ड में होता है। यहाँ सन् 2000–01 में 4901 हेक्टेयर भूमि में 3033.72 मीट्रिकटन मूँगफली का उत्पादन हुआ, जो कि मण्डल के कुल उत्पादन का 37.76% है। दूसरा स्थान जैतपुर विकासखण्ड का है। यहाँ 3001 हेक्टेयर भूमि में 1857.62 मीट्रिकटन मूँगफली का उत्पादन हुआ, जो कि मण्डल के कुल उत्पादन का 23.12% है। इसके अतिरिक्त चरखारी में 14.73%, पनवाड़ी में 11.70%, मूँगफली का उत्पादन हुआ। इस प्रकार महोबा जनपद के सभी विकासखण्डों में मूँगफली का उत्पादन प्रतिशत अधिक है। हमीरपुर जनपद के विकासखण्डों में सर्वाधिक उत्पादन गोहाण्ड में 1.09% होता है। इसके अतिरिक्त कुरारा में 0.98%, मुस्करा में 0.56%, राठ में 0.92%, सरीला में 0.43%, सुमेरपुर में 0.29%, तथा मौदहा में 0.27% उत्पादन हुआ। बॉदा जनपद के विकासखण्डों में सर्वाधिक मूँगफली का उत्पादन नरैनी विकासखण्ड में 6.81% हुआ। इसके अतिरिक्त महुआ में 0.73% तथा बड़ोखर खुर्द में 0.22% अन्य विकासखण्डों में उत्पादन नगण्य है। चित्रकूट जनपद के विकासखण्डों में मूँगफली का उत्पादन नगण्य है यहाँ किसी भी विकासखण्ड में 2000–01 में मूँगफली का उत्पादन 0.06% से अधिक नहीं हुआ।

चित्रकूट धाम मण्डल में मूँगफली का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 2000–01 में 6.19 कुन्तल रहा है। मूँगफली का कुल उत्पादन 1998–99 में 6193 मीट्रिकटन 1999–2000 में 7763 मीट्रिकटन तथा 2000–01 में बढ़कर 8034 मीट्रिकटन हो गया। अर्थात् चित्रकूट धाम मण्डल में मूँगफली उत्पादन में वृद्धि हो रही है, और आगे भी उत्पादन में वृद्धि होने की सम्भावनायें हैं। परिशिष्ट संख्या 6–19 में चित्रकूट धाम मण्डल में मूंगफली का क्षेत्रफल तथा उत्पादन विकासखण्डवार प्रदर्शित किया गया है।

4. **सोयाबीन (Soyabean)** :– सोयाबीन के विविध उपयोग हैं। जानवरों के चारे के अतिरिक्त यह वनस्पति तेल का महत्वपूर्ण स्रोत तथा भोजन का अंग है। यह विभिन्न रुपों में भोजन में उपयोग होता है। इसके तेल का ओलियो, मार्जरीन, साबुन तथा पेन्ट बनाने में भी उपयोग होता है। इसकी खली में तेल की मात्रा अहुत अधिक होती है। अतः जानवरों का पौष्टिक चारा है। सोयाबीन की बुवाई के समय 18.3^0 सेन्टीग्रेट पौधों के विकासकाल में 22^0 से 23.3^0 सेग्रे. तथा पकते समय अपेक्षाकृत अधिक तापमान तथा खुली धूप की आवश्यकता होती है। इसके लिए 50 से 100 सेमी. तक वार्षिक वर्षा अपेक्षित है। पर्याप्त वर्षा न होने पर फूल या फली आते समय सिंचाई अवश्य करनी चाहिए। चित्रकूट धाम मण्डल में सोयाबीन की कृषि सभी प्रकार की मिट्टियों जैसे– काबर, मार, पडुवा, तथा रांकर में सफलता पूर्वक की जा सकती है। सोयाबीन की उन्नतिशील प्रजातियाँ जे.एस.–335, जे0 एस0 –2, जे0 एस0 – 80–81, जे0 एस0 – 71–5, गौरव (जे0 एस0 – 72–44); जे0 एस0 – 75–46, पी.के. 327, पी.के. 472, पूसा–20 हैं। जे.एस. 75–46 प्रजाति राकड़ तथा पडुवा भूमि हेतु उपयुक्त मानी जाति है।

वर्ष 2000–01 में चित्रकूट धाम मण्डल में 1156 हेक्टेयर भूमि में 685.51 मीट्रिकटन सोयाबीन उत्पन्न किया गया। सर्वाधिक (39.97%) बांदा जनपद में उत्पन्न किया गया। इसके अतिरिक्त महोबा जनपद में 35.73%, हमीरपुर जनपद में 22.14% तथा चित्रकूट जनपद में 2.16% सोयाबीन उत्पन्न किया गया।

हमीरपुर के विकासखण्डों में सर्वाधिक उत्पादन प्रतिशत गोहाण्ड विकासखण्ड में 6.14% रहा। इसके अतिरिक्त राठ में 5.36%, कुरारा मे 4.67%, सरीला में 2.24%, मुस्करा में 1.82%, मौदहा में

1.55%, तथा सुमेरपुर में यह प्रतिशत केवल 0.26% रहा। महोबा जनपद के विकासखण्डों में सर्वाधिक उत्पादन प्रतिशत कबरई में 10.04%, रहा। इसके बाद चरखारी में 9.17%, पनवाड़ी में 8.82%, तथा जैतपुर में 7.70% रहा। बांदा जनपद के विकासखण्डों में सर्वाधिक उत्पादन बबेरु विकासखण्ड में 11. 85% (मण्डल में सर्वाधिक) रहा। इसके अतिरिक्त नरैनी में 8.91%, बड़ोखर खुर्द में 6.66%, तिन्दवारी में 3.81%, कमासिन में 3.46%, विसण्डा में 3.89%, तथा महुआ में 1.39%, रहा। चित्रकूट जनपद के विकासखण्डों में सोयाबीन का उत्पादन प्रतिशत नगण्य है। केवल पहाड़ी विकासखण्ड में 1.47% उत्पादन हुआ। शेष विकासखण्डों में उत्पादन प्रतिशत एक से भी कम है।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में सोयाबीन की औसत उपज 5.93 कुन्तल/हेक्टेयर हुई। परिशिष्ट संख्या 6–20 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार सोयाबीन का क्षेत्रफल एवं उत्पादन प्रदर्शित किया गया है।

5. **तिल (Til)** :– तिल रबी तथा खरीफ दोनों फसलों में उत्पन्न किया जाता है। चित्रकूट धाम मण्डल में इसकी खेती खरीफ की फसल के साथ होती है। तिल के तेल का प्रयोग अधिकांशतः मूँगफली के साथ वनस्पति घी बनाने में होता है। भोजन में भी इसके तेल का प्रयोग होता है। इसके अतिरिक्त साबुन बनाने, कीटाणुनाशक रसायन, इत्र बनाने जलाने तथा मशीन में लगाने के काम में भी इसका उपयोग होता है। तिल की खेती के लिए औसत रुप से 20° सेग्रे. तापमान तथा 50 सेमी. से 100 सेमी. वर्षा उपयुक्त होती हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में रांकड़ तथा काबर भूमि में इसकी खेती शुद्ध या मिश्रित रुप में की जाती है। अधिकतर इसे ज्वार, बाजरा, तथा अरहर के साथ बोते हैं। तिल की उन्नति शील प्रजातियाँ – टा.–4, टा–12, टा–13, टा–78, तथा शेषर हैं।

परिशिष्ट संख्या 6–21 में दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में 13613 हेक्टेयर भूमि में 1647.17 मीट्रिकटन तिल का उत्पादन हुआ, जिसमें हमीरपुर जनपद में 5487 हेक्टेयर भूमि में 663.93 मीट्रिकटन (40.31%), महोबा में 6159 हेक्टेयर भूमि में 745.24 मीट्रिकटन (45.24%), बांदा जनपद में 1393 हेक्टेयर भूमि में 168.55 मीट्रिकटन (10.23%), तथा चित्रकूट जनपद में 574 हेक्टेयर भूमि में 69.45 मीट्रिकटन (4.22%) तिल का उत्पादन हुआ।

विकासखण्डों में सर्वाधिक तिल का उत्पादन जैतपुर में हुआ। यहाँ 1687 हेक्टेयर भूमि में 204.13 मीट्रिकटन तिल का उत्पादन हुआ जो मण्डल के कुल तिल उत्पादन का 12.39%, है। इसके अतिरिक्त कबरई में 12.18% (दूसरा स्थान), पनवाड़ी में (तीसरा स्थान) 10.75%, चरखारी में 9.92% (चतुर्थ स्थान) तिल का उत्पादन हुआ। इससे स्पष्ट है कि महोबा जनपद तिल के उत्पादन में अग्रणी है।

हमीरपुर जनपद के सरीला विकासखण्ड में 8.37%, गोहाण्ड में 8.79%, राठ में 5.54%, मुस्करा में 5.72%, सुमेरपुर में 4.15%, मौदहा में 4.04%, तथा कुरारा में 3.69% तिल का उत्पादन हुआ।

बांदा जनपद में सर्वाधिक तिल का उत्पादन प्रतिशत नरैनी विकासखण्ड में 4.39% है। शेष विकासखण्डों में 2% से कम है।

चित्रकूट जनपद के सभी विकासखण्डों में उत्पादन 2% से कम है। यहाँ 2000–01 में तिल का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 1.21 कुन्तल हुआ, जबकि वर्ष 1999–2000 में औसत उपज 1.35 कुन्तल प्रति हेक्टेयर थी। तिल के उत्पादन में निरन्तर वृद्धि हो रही है, जैसे–1998–99 में 983 मीट्रिकटन 1999–2000 में 1498 मीट्रिकटन तथा 2000–01 में बढ़कर 1647.17 मीट्रिकटन हो गया।

अन्य फसलें

1. **गन्ना (Sugarcane)** :– गन्ना प्रमुख नगदी फसल है। गन्ने से चीनी, गुड़, खाण्डसारी, आदि बनायी जाती है। इसके शीरे से एल्कोहल, शराब तथा कृत्रिम रबड़ बनायी जाती है। इसकी खोई का ईंधन, बायोमॉस ऊर्जा और कागज बनाने के लिए उपयोग किया जाता है। 100 कुन्तल गन्ने से रस 60–70 प्रतिशत, राब –14%, गुड़ 12%, तथा चीनी 10% मात्रा में उपलब्ध होती है।

गन्ने की कृषि के लिए 25^0 सेग्रे. से 35^0 सेग्रे. औसत ताप तथा 75 से 100 सेमी. तक सुवितरित वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्र उपयुक्त माने जाते हैं। चित्रकूट धाम मण्डल के लिए उपयुक्त गन्ने की उन्नतिशील किस्में – को. 1147, को. 1158, को. 63035, के. शा. 510, 531, 611 तथा बी. ओ. 54 है।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में 5447 हेक्टेयर भूमि में 235060.01 मीट्रिकटन गन्ने का उत्पादन हुआ। हमीरपुर जनपद में 3340 हेक्टेयर भूमि में 11878.64 मीट्रिकटन गन्ने का उत्पादन हुआ जो मण्डल के कुल उत्पादन का 63.30% है। अनुकूल मिट्टी एवं सिंचाई के साधनों का विस्तार गन्ने के अधिक उत्पादन में सहायक है। महोबा जनपद में 1015 हेक्टेयर भूमि में 43801.31 मीट्रिकटन (18.63%), बांदा जनपद में 694 हेक्टेयर भूमि में 22299.77 मीट्रिकटन (10.76%) तथा चित्रकूट जनपद में 398 हेक्टेयर भूमि में 17175.29 मीट्रिकटन (7.31%) गन्ने का उत्पादन हुआ। विकासखण्डवार गन्ने का सर्वाधिक उत्पादन राठ का (49.03%)है। इसके अतिरिक्त गोहाण्ड में 9.32%, पनवाड़ी में 5.98%, जैतपुर में 5.71%, चरखारी में 2.86%, कबरई में 4.08%, महुआ में 2.87%, नरैनी में 3.87%, कर्वी में 2.02% गन्ने का उत्पादन होता है। शेष विकासखण्डों में गन्ने का उत्पादन 2% से कम है। (परिशिष्ट संख्या 6–22)

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में गन्ने का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 431.54 कुन्तल हुआ, जबकि (1999–2000 में) प्रति हेक्टेयर उत्पादन 498.83 कुन्तल था। अर्थात् उत्पादकता में 13.49% की कमी हुई । मण्डल में गन्ने का उत्पादन 1998–99 में 208024 मीट्रिकटन, 1999–2000 में 252662 मीट्रिकटन तथा 2000–01 में 235060.01 मीट्रिकटन हुआ।

2. **तम्बाकू (Tobacco)** :– तम्बाकू एक मुद्रादायिनी फसल है। इसका उपयोग कई तरह से किया जाता है। इसका प्रयोग बीड़ी, सिगरेट और चूना मिलाकर खाने में होता है। नशे के लिए इसका प्रयोग प्राचीन काल से हो रहा है। भारत जैसे घनी जनसंख्या वाले देश में तम्बाकू के व्यवसाय का भविष्य उज्जवल है। तम्बाकू शीतोष्ण जलवायु की उपज है। इसके लिए 21.1^0 सेग्रे. से 29.4^0 सेग्रे. तापमान और 100 सेमी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है। फसल पकते समय शुष्क जलवायु एवं उच्च तापमान आवश्यक है। इसकी कृषि के लिए हल्की दोमट मिट्टी, जिसमें पोटाश, फासफोरस एवं लोहे का अंश यथेष्ट मात्रा में हो, उत्तम होती है।

चित्रकूट धाम मण्डल में तम्बाकू का कृषि क्षेत्र अत्यंत कम है। 2000–01 में कुल 35 हेक्टेयर भूमि में तम्बाकू की कृषि की गयी, जिसमें 244 मीट्रिकटन तम्बाकू का उत्पादन हुआ। मुस्करा में 15 हेक्टेयर भूमि में, मौदहा में 3 हेक्टेयर, पनवाड़ी में 5 हेक्टेयर, जैतपुर में 3 हेक्टेयर , चरखारी में 3 हेक्टेयर, कबरई में 5 हेक्टेयर तथा महुआ में 1 हेक्टेयर भूमि में तम्बाकू की कृषि की जाती है। तम्बाकू की औसत उपज हमीरपुर जनपद में 86.89 कुन्तल/हेक्टेयर, महोबा जनपद में 70.63 कुन्तल/हेक्टेयर तथा बांदा जनपद में 70.40 कुन्तल/हेक्टेयर अंकित की गई।

3. **कपास (Cotton)** :– चित्रकूट धाम मण्डल में कपास की कृषि का मुगलकाल से बीसवीं शताब्दी तक का एक स्वर्णिम इतिहास रहा है। कपास की कृषि बांदा तथा हमीरपुर की काबर (काली) मिट्टी में आसानी से की जा सकती है। कपास की खेती में कीटों के अधिक प्रकोप एवं स्थानीय कपास मिलों के बंद हो जाने के कारण कृषकों ने इसकी खेती करना बन्द कर दिया था। अब इसकी कृषि के विकास के लिए 'कपास विकास कार्यक्रम' के तहत कृषकों को प्रशिक्षित तथा प्रोत्साहित किया जा रहा है।

4. **सनई (Sanai)** :– जूट की भाँति यह एक रेशेदार पौधा है, जिसके रेशे से घरेलू कार्य में प्रयुक्त होने वाली अनेक चीजों का निर्माण होता है, जिसमें टाट, रस्सी एवं डोरियाँ मुख्य है। इसका बीज भेंड़–बकरियों को खिलाने के काम आता है। सनई से हरी खाद बनाकर भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने का कार्य किया जाता है।

चित्रकूट मण्डल में 2000–01 में शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल के 0.18%, भाग में सनई की कृषि की गयी। यहाँ 1893 हेक्टेयर भूमि में 810.19 मीट्रिकटन सनई का उत्पादन हुआ। हमीरपुर जनपद में सर्वाधिक उत्पादन 34.13%, महोबा जनपद में 20.55%, बांदा जनपद में 32.75%, तथा चित्रकूट जनपद में 12.57% उत्पादन हुआ।

विकासखण्डों में सर्वाधिक उत्पादन मौदहा विकासखण्ड में 8.67%, है। यहाँ 164 हेक्टेयर भूमि में 70.19 मीट्रिकटन सनई का उत्पादन हुआ। इसके अतिरिक्त सुमेरपुर में 5.07%, सरीला में 5.76%, गोहाण्ड में 3.59%, राठ में 3.59%, मुस्करा में 5.97%, पनवाड़ी में 4.81%, जैतपुर में 3.59%, चरखारी में 6.34%, कबरई में 5.81%, जसपुरा में 5.65%, तिन्दवारी में 6.81%, बड़ोखर खुर्द में 4.65%, बबेरु में 5.86%, कमासिन में 4.75%, नरैनी में 3.12%, पहाड़ी में 4.12%, उत्पादन हुआ। शेष विकासखण्डों में 3%, से कम उत्पादन हुआ।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में सनई की औसत उपज 4.28 कुन्तल प्रति हेक्टेयर हुई। परिशिष्ट संख्या 6–23 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार सनई का क्षेत्रफल तथा उत्पादन को प्रदर्शित किया गया है।

5. **पान की कृषि** :– पान एक मुद्रादायिनी फसल है। चित्रकूट मण्डल में इसकी कृषि के लिए सभी उपयुक्त भौगोलिक दशायें विद्यमान हैं। इसकी खेती के लिए राज्य–सरकार को विशेष ध्यान देना चाहिए। पान का महत्व हमारी संस्कृति व धार्मिक अनुष्ठानों में विशेष रुप से हैं। इसके अतिरिक्त पान का उपयोग औषधि निर्माण एवं खाने में किया जाता है। इसमे विटामिन ए, बी, सी पायी जाती है, जो स्वास्थ्य की दृष्टि से भी लाभदायक है।

महोबा में *'राष्ट्रीय वानस्पतिक अनुसंधान संस्थान लखनऊ'* से संचालित 'पान अनुसन्धान केन्द्र' पान की नई प्रजातियों के विकास एवं बीमारियों की रोकथाम के लिए अनुसन्धान कार्य कर रहा है। अब इसका संचालन 'उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग' को सौप दिया गया है। पान प्रयोग एवं प्रशिक्षण केन्द्र महोबा की स्थापना वर्ष 1981–82 में जिला योजना के अन्तर्गत की गयी थी। इस केन्द्र का उद्देश्य पान की खेती पर नये शोध करने के उपरान्त पान कृषकों को तकनीकि जानकारी देना है एवं निरोग पान बेल का उत्पादन कर कृषकों को सस्ती दर पर समस्त सुविधाएं उपलब्ध कराना है।

पान की खेती 'बरेजा' बनाकर की जाती है। एक बीघा खेत में दो 'बरेजा' तैयार होते हैं। एक बरेजा की लागत लगभग 10 हजार रुपये आती है। बरेजा बांस और कुशा से निर्मित पान की कृषि का क्षेत्र होता है।बरेजों में बांस के ऊपर तथा चारों तरफ से बन्द स्थान तैयार किया जाता है तथा भीतर

छाया में पान की फसल तैयार होती है। पान के लिए कोई बीज आदि नहीं बोना पड़ता। पहले डठंल की रोपाई की जाती है। इसकी लताएं बांस पर चढ़कर बड़ी होती रहती है। चार माह बाद पान के पत्ते तोड़े जाने लगते हैं।

पान की फसल में जिस तरह पैसा मिलता है उसी तरह फसल पाने के लिए खूब खर्च करना पडता है। यह अत्यंत नाजुक पौधा होता है। यह अधिक ठण्डी एवं गर्मी नहीं सह सकता है। अतः इसके लिए 20^0 सेग्रे. से 27^0 सेग्रे. तक तापमान उपयुक्त रहता है।

पान की खेती के लिए ढालू भूमि उपयुक्त होती हैं, क्योंकि इसके खेतों में पानी भरा नहीं रहना चाहिए। इसका रोपण क्यारियों में किया जाता है बीच–बीच में सिंचाई करने के लिए नालियां बनायी जाती हैं। बेलों में मिट्टी चढ़ा दी जाती हे। सरसों और अलसी की खाली को खाद के रुप में प्रयोग किया जाता है। पान की कृषि के लिए अधिक पानी की आवश्यकता होती है। कहा भी गया है – 'धान पान अरू केला, ये तीनो पानी के चेला।' अतः समय–समय पर सिंचाई करना आवश्यक है। चूँकि बरेज में कुश, सनकट्टे, एवं बांस आदि का भरपूर प्रयोग होता है। इसलिए बरेजों में आग भी लग जाती है ,जिससे कृषकों को बहुत हानि उठानी पड़ती है।

चित्रकूट धाम मण्डल में पान की खेती महोबा एवं बांदा जनपद में की जाती है। महोबा जनपद में महोबा तहसील एवं बांदा जनपद में नरैनी तहसील के अन्तर्गत बरई–मानपुर गाँव (सिहुदा शेरपुर) पान उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं। यहाँ का पान पाकिस्तान तक जाता रहा है। सरकारी संरक्षण के अभाव में यहाँ का पान व्यापार धीरे–धीरे ठप्प सा हो रहा है। बरई मानपुर में पहले 100 बीघे जमीन में पान की फसल तैयार की जाती थी। दैवी आपदा तथा जमीन खराब होते जाने से फसल बरबाद होती रही, जिससे किसान आर्थिक मार से टूटता चला गया और आज मात्र (2000–01) पाँच बीघे जमीन में टुकड़े–टुकड़े करके एक दर्जन किसान पान की खेती करके सैकड़ों साल पुरानी पान की खेती को जीवित बनाए हुए हैं। यहाँ देशी पान के अलावा बंगला, लंका तथा सौफिया पान भी खूब पैदा किया जाता हैं। महोबा जनपद में वर्ष 1980 में 100 एकड़ पान का क्षेत्रफल था, 1997–98 में बढ़कर 400 एकड़ हो गया किन्तु अब यह क्षेत्रफल सरकारी उदासीनता तथा दैवी प्रकोप के कारण घटता जा रहा है। महोबा तथा बांदा जनपदों में पान की कृषि के विकास की काफी सम्भावनाएं हैं। यदि वैज्ञानिक विधि अपनाकर इन क्षेत्रों में पान की खेती प्रारम्भ कर दी जाए तो इस क्षेत्र की गरीबी दूर हो सकती है। क्षेत्र में पान की आपूर्ति पूर्ण होगी तथा विजयवाड़ा के 'कपूरी पान' तथा कोलकाता के 'बंगला पान' को यहाँ नहीं मंगाना पड़ेगा।

शाक–सब्जी की कृषि (Vegetable Culture) :– शाक–सब्जी की कृषि करना आधुनिक युग का प्रमुख उद्यम है। शहर के लोग मकानों के पीछे, गांवों में घरों से संलग्न भूमि पर एवं बड़े फार्मोंके एक भाग पर शाक–सब्जी उत्पन्न करने लगें है। वर्तमान शताब्दी में रेफ्रीजरेशन तथा द्रुतगामी परिवहन के विकास के बाद सब्जी उगाना व्यापारिक पैमाने पर विकसित हो गया है। चित्रकूट धाम मण्डल की मिट्टी सब्जियों की कृषि के लिए बहुत उपयोगी है। अतः यहाँ आलू, टमाटर, मिर्च, फूलगोभी, भिन्डी, पालक, प्याज, कद्दू, लौकी, तुरई, कुम्हड़ा, करेला, बैंगन, टिन्डा, गाजर, गाँठगोभी, मूली, पातगोभी, परवल, सेग, कुँदरु, पड़ोरा तथा मशरुम आदि का अच्छा उत्पादन किया जा सकता है। इससे कृषकों की आय में वृद्धि होगी तथा घर के लिए सब्जी की भी पूर्ति होगी। चित्रकूट धाम मण्डल में केवल महोबा में शीत भंडारन (कोल्ड स्टोरेज) की व्यवस्था है। अन्य जनपदों में भी शीत भंडारन की व्यवस्था होनी चाहिए

जिससे हरी सब्जियों के अधिक उत्पादन करने के लिए कृषक प्रोत्साहित हो सके तथा सब्जियों का उचित मूल्य उन्हें मिल सके।

1. **आलू (Potato)** :– रबी की फसलों में आलू एक महत्वपूर्ण फसल है। अन्य फसलों की तुलना में आलू से कम समय में अधिकाधिक पैदावार ली जा सकती है। इसमें स्टार्च के अतिरिक्त प्रोटीन तथा विटामिन पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। इसलिए सब्जियों में आलू का विशेष स्थान है। लम्बे समय तक रखने की सुविधा तथा विभिन्न प्रकार की जलवायु एवं मिट्टी में उगने के कारण यह अधिकांश क्षेत्रों में व्यापारिक पैमाने पर उगाया जाने लगा है। शीत भण्डारन (Cold Storrage) की सुविधा ने आलू की कृषि को बहुत प्रोत्साहन दिया है। आलू उष्ण तथा शीतोष्ण कटिबन्धीय प्रदेशों में उगाया जाता है। इसके लिए 15^0 सेग्रे. से 28^0 सेग्रे. तापमान तथा 75 सेमी. से 100 सेमी. वर्षा वाले क्षेत्र उपयुक्त हातें हैं। आलू की खेती लगभग सभी प्रकार की मिट्टियों में की जा सकती है परन्तु अच्छे जल निकास वाली बलुई–दोमट मिट्टी, जिसका पी. एच. मान 5 से 7 के बीच हो सर्वोत्तम मानी जाती है। आलू की उन्नत किस्में–'कुफरी चन्द्रमुखी' 'कुफरी अलंकार', 'कुफरी ज्योति', 'कुफरी सिन्दूरी (सी. 140)', 'कुफरी चमत्कार', तथा 'कुफरी देवा (सी. 3804)' हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में 484 हेक्टेयर भूमि में 10314.53 मीट्रिकटन आलू का उत्पादन हुआ। सर्वाधिक उत्पादन चित्रकूट जनपद में 267 हेक्टेयर भूमि में 5690.04 मीट्रिकटन हुआ जो मण्डल के कुल आलू उत्पादन का 55.17% है। इसके अतिरिक्त हमीरपुर जनपद में 6.20%, महोबा जनपद में
18.59% तथा बांदा जनपद में 20.04% आलू का उत्पादन हुआ।

विकासखण्डों में पहाड़ी विकासखण्ड मण्डल के कुल आलू उत्पादन का 19.21% उत्पादन कर अग्रणी है। यहाँ की पड़ुवा मिट्टी आलू के उत्पादन के लिए अनुकूल है। इसके अतिरिक्त कर्वी में 17.15% (दूसरा स्थान), मानिकपुर में 6.20%, रामनगर में 6.41%, मऊ में 6.20%, पनवाड़ी में 4.96%, जैतपुर में 3.51%, चरखारी में 4.13%, कबरई में 5.99%, महुआ में 3.72% तथा नरैनी में 6.40%, आलू का उत्पादन हुआ। शेष विकासखण्डों में आलू का उत्पादन 3% से कम रहा। (परिशिष्ट संख्या 6–24)। चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में आलू की औसत उपज 213.11 कुन्तल प्रति हेक्टेयर हुई।

2. **टमाटर (Tomato)** :– टमाटर में विटामिन 'ए' बी, तथा सी, के अतिरिक्त तांबा, मैग्नीज, पोटाश, और लवण आदि पौष्टिक तत्व होते हैं। यह आँतों को साफ करता है तथा वात रोगों में लाभ करता है एवं भूख बढ़ाता है। अमरीका के नार्थ कैरोलाइना विश्वविद्यालय ने टमाटर में पाया जाने वाला ऐसा यौगिक ढूँढ़ निकाला है जो मच्छरों को भगाने के लिए ज्यादा कारगर और मनुष्यों के लिए ज्यादा सुरक्षित भी है। टमाटर के पौधे में कीड़े–मकोड़े भगाने की प्राकृतिक क्षमता होती है। आई.बी.आई नामक इस यौगिक का प्रयोग श्रृंगार प्रसाधनों में काफी होता हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि यह हानिकारक नहीं है।

टमाटर के उत्पादन के लिए 15^0 सेग्रे. से 27^0 सेग्रे. तापमान वाले तथा 75 सेमी. से 100 सेमी. तक वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्र उपयुक्त रहते हैं। टमाटर के लिये बलुई दोमट भूमि सर्वोत्तम होती है। टमाटर की उन्नत किस्में पूसा रुबी, एच.एस. 101, एच.एस.102, एस. 12, स्वीट –72, पूसा अर्ली ड्वार्फ, सू. एस.एल. 152, गैभेड, रोमा (ई0सी0 13513), पन्तबहार, पन्त टमाटर –3, एन.डी.टी. 120, हैं। संकर टमाटर की किस्में– रुपाली, वैशाली, अजन्ता, तथा एन.एच 38 हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में सभी विकासखण्डों में टमाटर की खेती की जाती है। 2000–01 में चित्रकूट धाम मण्डल में लगभग 3000 मीट्रिकटन टमाटर का उत्पादन हुआ। उन्नत तौर तरीके से उगाई गई फसल से 150 से 300 कुन्तल प्रति हेक्टेयर टमाटर की पैदावार होती है

3. **मशरुम (Mushroom)** :– मशरुम या खुम्बी को 'शाकाहारी मीट' के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इसमें बहुमूल्य खनिज लवण जैसे – कैल्शियम, फास्फोरस, लोहा आदि भरपूर मात्रा में पाये जाते हैं। इसमें कार्बोहाइड्रेट तथा वसा कम होने के कारण यह मधुमेह, ब्लडप्रेशर तथा हृदय रोगों से पीड़ित व्यक्तियों के लिए बहुत ही लाभदायक है। मशरुम में कुछ ऐसे तत्व भी पाये जाते हैं जो पथरी और कैंसर को बनने से रोकते हैं। मशरुम की खेती अपनाकर इसे आजीविका का एक साधन बनाया जा सकता हैं। मशरुम की कृषि के लिए सूर्य का प्रकाश, वर्षा का पानी एवं तेज हवा के झोकों से बचाव होना परमावश्यक है। वस्तुतः मशरुम की खेती के लिए कुछ विशेष तापक्रम, आर्द्रता, माध्यम तथा अच्छे कवक जाल (बीज) जिसे 'स्पान' (Span) कहा जाता है की आवश्यकता होती है। इनके अतिरिक्त खुली हवा का होना भी आवश्यक है। जलवायु के आधार पर मशरुम की मुख्य रुप से तीन कस्में उगायी जा सकती हैं। (1) बटन मशरुम (2) पैडी स्ट्रामशरुम (3) ढ़ीगरी मशरुम। बटन मशरुम को शरद ऋतु में धान के पुआल या गेंहूँ के भूसे की कम्पोस्ट पर 85–90 प्रतिशत आर्द्रता तथा 15^0–25^0 सेग्रे. तापक्रम पर पैदा किया जा सकता है। पैडी स्ट्रा मशरुम गर्मियों में धान के पुआल पर 30^0 से 35^0 सेग्रे. तापक्रम पर तथा 80% आर्द्रता में अच्छी प्रकार से उगाया जा सकता है। ढ़ीगरी मशरुम को शरद–ऋतु (सितम्बर–मार्च) में 20^0 से 30^0 सेग्रे.तापक्रम तथा 80–90% आर्द्रता में धान के पुआल पर उगाया जा सकता है। बाजार में बटन मशरुम की माँग सर्वाधिक है। मशरुम की कृषि के लिए भूमि की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसलिए इसकी कृषि को 'भूमि रहित कृषि' अथवा 'भूमि बचत कृषि' भी कहते हैं। इसकी कृषि साधारण कमरे में, ग्रीन हाउस, गैराज तथा बन्द बरामदों में सफलतापूर्वक की जा सकती है। किन्तु व्यावसायिक दृष्टि से इसके उत्पादन के लिए विशेष रुप से निर्मित कक्ष अधिक लाभकारी होता है। इसकी कृषि गाँव, कस्बों तथा शहरों में कहीं भी की जा सकती है। मशरुम को उगाने के लिए विशिष्ट प्रकार के कम्पोस्ट की आवश्यकता होती है।

चित्रकूट धाम मण्डल में मशरुम के 'स्पान' (बीज) की व्यवस्था स्थानीय स्तर पर उपलब्ध न होने के कारण कृषक अधिक रुचि नहीं ले रहे हैं। यदि विकासखण्ड स्तर पर 'स्पान'तैयार करने की व्यवस्था हो जाये तो उत्पादन का क्षेत्र काफी बढ़ सकता है और उत्पादक अच्छी आय भी अर्जित कर सकते हैं। हमीरपुर तथा जमालपुर (बांदा) के कृषक मशरुम की खेती पर रुचि ले रहे हैं। बाजार में इसकी मांग अधिक होने के कारण इसके उत्पादन क्षेत्र के बढ़ने की पर्याप्त संभावनाएं है।

सरोवरीय फसलें :– तालाबों या जलाशयों में उत्पन्न की जाने वाली प्रमुख फसलें सिंघाड़ा एवं कमल पुष्प हैं। कमल से कमलगट्टा प्राप्त होता है तथा कमलगट्टा से 'मखाना' बनाया जाता हैं। कमल के पत्ते (पुरइन) का उपयोग पत्तल के रुप में, जड़े (भसीड़े) सब्जी तथा अचार में प्रयोग की जाती है तथा कमल के फूल का उपयोग धार्मिक कार्यों में होता है। सिंघाड़ा एक विटामिनयुक्त फल है। जिसे कच्चा एवं उबालकर खाने में उपयोग किया जाता है। इसको सुखाकर आटा बनाया जाता है तथा व्रत में विविध प्रकार से प्रयोग किया जाता हैं।

सिंघाड़ा एवं कमल की कृषि चित्रकूट धाम मण्डल में ग्रीष्म ऋतु में जलधारण क्षमता वाले तालाबों में की जा सकती है। इनके उत्पादन के लिए नये तालाबों का निर्माण एवं उथले तालाबों की

खुदाई आवश्यक है। इससे एक ओर जहाँ सिंघाड़ा एवं कमलगट्टा का उत्पादन होगा वहीं दूसरी ओर भूमिगत जलस्तर को बढ़ाने में मदद मिलेंगी क्योंकि जलसंकट वर्तमान समय में एक प्रमुख समस्या है।

चित्रकूट धाम मण्डल में महोबा के कीरतसागर, मदनसागर, विजयसागर, टिकामऊ, जैतपुर के बेलाताल, चरखारी के रतनसागर आदि सरोवरों, हमीरपुर जनपद के पुरैनी का तालाब, मकरबई का तालाब भरुवा सुमेरपुर का हरचन्द्र तालाब, कन्धौली का तालाब, बांदा जनपद के रसिन तालाब, तथा चित्रकूट जनपद के रैपुरा–तालाब, बदरन तालाब, खण्डेहा का महाजना ताल, चन्द्रमारा का देउरी तालाब, रामनगर का तालाब, खोह का तालाब, अशोय का सिंघानिया तालाब, पहाड़ी का तालाब, तथा कई अन्य सरोवरों में कमल एवं सिंघाड़े का उत्पादन होता है लेकिन नियन्त्रण एवं सुरक्षा न होने के कारण सम्पूर्ण फसल प्राप्त नहीं होती। इन तालाबों में यदि उचित एवं नियोजित ढ़ंग से सिंघाड़ा एवं कमल की फसल उगाई जाय तो मुद्रा प्राप्ति का उत्तम स्रोत बन सकता है।

बागवानी :– बागवानी फसलों के अन्तर्गत फलों, सब्जियों, कंदमूल फसलों, फूलों, सुगन्धित पौधों, एवं औषधीय पौधों (जड़ी बूटी), मसालों आदि की व्यापक प्रजातियों को सम्मिलित किया जाता हैं। चित्रकूट धाम मण्डल के प्रत्येक विकासखण्ड में ये फसलें उगायी जा रही हैं और बागवानी के विकास में निरन्तर प्रगति जारी है। फलों, फूलों, सब्जियों एवं जड़ी बूटियों का उत्पादन कर अत्यधिक लाभ कमाया जा सकता है। चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में बाग एवं उद्यानों के अन्तर्गत 5253 हेक्टेयर भूमि आच्छादित थी, जो कुल प्रतिवेदित भूमि का 0.35%, है।

फलों की खेती :– चित्रकूट धाम मण्डल की जलवायु एवं मिट्टी आम, अमरुद, अनार, पपीता, कटहल, नींबू, संतरा, ऑवला, जामुन, केला, आदि फलों के उत्पादन के लिए अनुकूल है। अतः इन फलों के बाग लगाये गये हैं। फलो का बाग एक बार लगाने से कई वर्षों तक चलता है। अतः यह आवश्यक है कि बाग बड़ी सावधानी से लगाया जाय। चित्रकूट धाम मण्डल में पपीता, आम, केला, नींबू तथा अमरुद का उत्पादन एवं वितरण निम्नलिखित है :–

1. **पपीता की कृषि :–** पपीता एक लम्बा पौधा है। इसके पौधे तीन प्रकार के होते हैं :– (1) नरपौधे (2) मादा पौधे (3) उभयलिंगी पौधे। नर पौधे फल उत्पन्न नहीं करते। पपीता मध्यम तथा उष्ण जलवायु का फल हैं। इसकी कृषि 15^0 सेन्टीग्रेट से 30^0 सेग्रे. औसत ताप वाले क्षेत्रों में की जा सकती है। पपीता के फलों को अधिक लू तथा ओले के साथ तेज हवा से अधिक क्षति पहुँचती है। बलुई मिट्टी, जिसमें पानी के निकास का अच्छा प्रबन्ध हो पपीते के सफल उत्पादन के लिए उपयुक्त होती है इसकी प्रसिद्ध किस्में – कुर्ग हनीट्यु, वाशिंगटन, रोवी, कोयम्बटूर, बैंगलोर, सीलोन, फेयर, चाइल्ड, तथा सीलो हैं। पपीते के प्रति पौधे से 20 से 25 फल प्राप्त होते हैं तथा प्रति हेक्टेयर 10,000 रु0 की आमदनी होती है। चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में लगभग 200 मीट्रिकटन पपीते का उत्पादन हुआ।

2. **आम :–** आम के कच्चे तथा पके फलों से विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट आचार मुरब्बा, चटनी, स्क्वैश आदि तैयार किए जाते हैं। गर्मतर जलवायु इसके लिए उपयुक्त होती है। पथरीली, कंकरीली तथा ऊसर मिट्टी को छोड़कर आम प्रायः सभी प्रकार की मिट्टियों में लगाया जा सकता है। आम की अनेक किस्में हैं– जिसमें बम्बई हरा, बम्बई पीला, गोपाल भोग, फजरी जाफरानी, लंगड़ा, दशहरी, सफेदा, मलिहाबादी, खुसुलखास, समरवहिश्त, चौसा, फजली, सफेदा, मल्लिका एवं लखनऊ हैं। जिस खेत में पौधे लगाने हों उसमें 10 मीटर की दूरी पर गड्ढे वर्षा से पूर्व खोद देने चाहिए तथा प्रति गड्ढा दो टोकरी सड़ी गोबर की खाद, 2 किलो हड्डी का चूरा, 5 किलो लकड़ी की राख मिट्टी में मिलाकर

भर देते हैं। बरसात आरम्भ हो जाने के बाद पौधों को गढ्ढे के बीच लगा देना चाहिए। समय–समय पर खाद देना एवं सिंचाई करना आवश्यक है। आम का पौधा प्रतिवर्ष फल नहीं देता है। आम के वृक्ष में 5 वर्ष में फल लगने लगते हैं तथा 10 साल में 500 से 1000 फल प्रति पौधा मिलने लगते हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में लगभग 2000 हेक्टेयर भूमि में आम की खेती होती है।

3. **केला** :– केला उत्तम तथा पोषक खाद्य पदार्थ प्रदान करने वाला पौधा है। चित्रकूट धाम मण्डल में व्यावसायिक रुप से इसका क्षेत्रफल बढ़ाया जा सकता है तथा आर्थिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। केला उष्ण प्रदेशीय फल है। इसकी सफल खेती के लिए उचित ताप तथा वातावरण में अधिक आर्द्रता का होना आवश्यक है। यह सभी प्रकार की मिट्टियों में उगाया जा सकता है परन्तु अधिक उपजाऊ दोमट तथा अधिक पानी धारण करने वाली मिट्टी में सफलता पूर्वक उत्पन्न किया जाता है। इसकी प्रमुख किस्में– (क) सब्जी वाली – हजारा रामकेला, (3) खाने वाली – माल भोग, हरी छाल, बसरा, बोनी, तथा चीनी चम्पा। केले के पौधा पहली वर्षा के बाद पहले से तैयार किए हुए गढ्ढों में लगाते हैं। जाड़ों में 15 दिन तथा गर्मी में प्रति सप्ताह सिंचाई करनी चाहिए। अच्छी फसल के लिए पौध लगाने के दो या तीन माह में 3 किलो अण्डी की खली तथा 8 किलो गोबर की खाद प्रत्येक पौधे को देना चाहिए। पौध लगाने के 10 से 12 माह बाद फल आने आरम्भ होते हैं और फूलने के लगभग 4 माह बाद फल भी पकने की अवस्था में पहुँच जाते हैं। एक हेक्टेयर में साधारणतया 180 कुन्तल केला प्राप्त होता है। चित्रकूट धाम मण्डल में बांदा तथा हमीरपुर जनपदों में इसकी कृषि व्यावसायिक रुप से सिंचित क्षेत्रों में की जा सकती है।

4. **नींबू** :– स्वास्थ्य की दृष्टि से नींबू बहुत महत्वपूर्ण फल है। नींबू में विटामिन सी तथा अन्य अनेक आवश्यक खनिज तत्व पाये जाते हैं। प्रतिदिन के प्रयोग के अलावा नींबू का उपयोग रस, मार्मलेट तथा अचार, बनाने में भी होता है। नींबू प्रजाति के फलों में चकोतरा, महानींबू, सन्तरा, खट्टी नारंगी, लेमन, नारंगी, आडूस, मीठा नींबू आदि होते है परन्तु कागजी नींबू अधिक प्रयोग किया जाता है इसलिए यह अधिक लोकप्रिय है।

नींबू अच्छे जल निकास वाली मिट्टी में सफलता पूर्वक उगाया जाता है, किन्तु उपजाऊ दोमट भूमिसबसे अच्छी होती है। यह गर्म जलवायु की उपज है। जहाँ वर्षा कम होती है सिंचाई करके नींबू की अच्छी उपज ली जा सकती है। पर्वतीय तथा पठारी क्षेत्रों में भी नींबू की खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है। कागजी नींबू की दो किस्में है। (1) गोल (2) अण्डाकार। पौधे रोपने के बाद सिंचाई कर देनी चाहिए। नींबू का पौधा वर्ष में दो बार फल देता है। (1) बरसात में (2) जाड़े में । अच्छी तरह खेती होने पर प्रति पेड़ 600 से 700 फल पैदा हो जाते हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में नींबू की कृषि के लिए उत्तम भौगोलिक दशायें अनुकूल हैं। यहाँ 2000–01 में लगभग 871 मीट्रिकटन नींबू का उत्पादन हुआ।

5. **अमरुद** :– पोषक तत्वों की दृष्टि से यह सेव से अधिक पौष्टिक माना जाता है। अमरुद में विटामिन सी तथा अन्य लवण भरपूर मात्रा में पाये जाते हैं। अमरुद के लिए अधिक गर्मी और अधिक वर्षा की आवश्यकता होती है। शुष्क क्षेत्रों में सिंचाई द्वारा अमरुद की अच्छी फसल पैदा की जा सकती है। अमरुद केवल कंकरीली पथरीली भूमि को छोड़कर प्रत्येक प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है। अमरुद की प्रमुख किस्में–इलाहाबादी, सफेदा, लखनऊ–49, वेदना, सेबिया, लाल गूदे वाला (ललगुदिया) हैं। पौधों की रोपाई 1/2 घनमीटर के गड्ढों में 6–7 मीटर की दूरी पर की जाती है। अमरुद वर्ष में दो बार फूलता और फलता है–(1) बरसात में एवं (2) जाड़े में। अच्छी आमदनी की दृष्टि से जाड़े की

फसल अच्छी समझी जाती है। दक्षिण भारत में अमरुद वर्ष में तीन बार फलता है। अमरुद के एक पेड़ से साधारण 400—600 फल मिल जाते हैं। अमरुद का पेड़ 20—25 वर्ष तक अच्छी उपज देता है।

चित्रकूट धाम मण्डल में अमरुद की पैदावार अच्छी होती है। यहाँ सन् 2000—01 में अमरुद का लगभग 900 मीट्रिकटन उत्पादन हुआ।

औषधीय पौधों (जड़ी बूटियों) की कृषि :— जनसंख्या वृद्धि के साथ—साथ आयुर्वेदिक औषधियों की माँग बढ रही है। ऐसे में चित्रकूट धाम मण्डल में इसकी कृषि की असीम सम्भावनाएँ हैं परन्तु प्रशिक्षण व मार्गदर्शन के अभाव में कृषक उदासीन हैं। यहाँ अनेक प्रकार की बहुमूल्य जीवन रक्षक औषधियाँ पैदा होती है। इनसे तेल, टानिक, अवलेह, और गोलियाँ तैयार होती है। आयुर्वेदिक औषधियों का निर्माण करने वाली फर्मों में कच्चे माल की माँग बहुत हैं। किसानों के उत्पाद बिना किसी कठिनाई के फर्मों तक पहुँच सकते है। औषधीय पौधों की कृषि के प्रचार प्रसार से विलुप्त होती हुई प्रजातियों का संरक्षण किया जा सकता है। कृषक यदि धीग्वार, शतावार, बाकुची, पथरचटा, भुई, आवला, सफेद मूसली, मकोय, कलिहारी, गुड़मार वेल, किवांछ, गन्धराज, सुर्यमुखी, सावनी, अश्वगंधा, गुम्मीठर्रा, छुई—मुई, हरीतिका, चेतकी, शलावटी, पाषाणभेद, हर्र, बहेड़ा, कालाजीरा, हरसिंगार, लटजीरा, गुडुच, विदारीकंद, आदि औषधीय वनस्पतियों का उत्पादन व बिक्री करें तो उन्हे आर्थिक लाभ होगा।

जैट्रोफा करकस (रतनजोत, सफेद या काली अंरड) का तेल विदेशों में डीजल के रुप में प्रयुक्त होता है। इससे प्रदूषण नहीं होता है। यह फसल ऊसर, बंजर एवं परती भूमि उपचारित करके भरपूर मात्रा में उत्पादित की जा सकती है। यह प्रत्येक प्रकार की जलवायु व मिट्टी में उत्पन्न हो सकता है। यह कलम व बीज दोनों से उगाया जा सकता है। तीन से पाँच साल के अन्दर यह अधिकतम 10 से 12 फीट तक बढ जाता है और फल देना शुरु कर देता है। इसके फलों में तीन या चार अंडाकार काले बीज होते हैं। चमत्कारी गुणों वाले इन्ही बीजों को धूप में सुखाकर उनसे तेल निकाला जाता है। यह तेल पर्यावरण सुरक्षित, सस्ता, गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत और डीजल व मिट्टी के तेल का बेहतरीन विकल्प है। इसका तेल साबुन व मोमबत्ती बनाने के लिए कच्चे माल के रुप में उपयोग होता है। जैट्रोफा को चित्रकूट धाम मण्डल में ही नहीं सम्पूर्ण देश में पैदा किया जा सकता है तथा डीजल व केरोसिन के विकल्प के रुप में एवं अनेक औषधियों में इसका उपयोग किया जा सकता है।

जे0 एन0 महाविद्यालय बाँदा परिसर में औषधीय उद्यान विकसित किया गया है, जिसमें घीग्वार, शतावार, बाकुची, पथरचटा, भुई, आँवला, सफेद मूसली, मकोय, कलिहारी, गुड़मार बेल, किंवाछ, गन्धराज, सूर्यमुखी, सावनी और अश्वगंधा जैसी अनेक औषधियों को उगाया गया है। महोबा के पान अनुसंधान केन्द्र में औषधीय जड़ी बूटियों वाले पौधों का संकलन व अध्ययन कर उसके परिणामों को किसानों तक पहुँचाने की योजना बनायी गयी है। हमीरपुर के कुछ कृषक अश्वगंधा की खेती कर लाभ कमा रहे हैं। राज्य—सरकार को चाहिए कि प्रत्येक जनपद में औषधीय जड़ी बूटियों के उत्पादन की तकनीकि प्रशिक्षण केन्द्र खोलकर कृषकों को प्रोत्साहित करें।

फूलों की कृषि :— जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक अवसरों पर सदियों से फूलों का प्रयोग होता चला आ रहा है। इसकी खेती भी प्राचीन काल से होती चली आ रही है। जनसंख्या में वृद्धि, शहरीकरण, रहन—सहन का आधुनिक स्तर, होटलों तथा शापिंग स्थलों का आधुनिकीकरण, पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुकता के कारण फूलों की माँग बढ़ती जा रही है। विभिन्न अवसरों पर पुष्प निर्मित उपहारों का विशेष प्रचलन होने से फूलों का निर्यात तेजी से बढ़ रहा है। भविष्य में भी पुष्पों के निर्यात

की असीम संभावनाएँ हैं अतः फूलों की खेती के व्यवसाय को अपनाकर अत्यधिक लाभ कमाया जा सकता है।

चित्रकूट धाम मण्डल की भौगोलिक दशायें नाना प्रकार के पुष्पों के उत्पादन के अनुकूल हैं। अतः विभिन्न प्रकार के फूलों जैसे– गुलाब, बेला, गेंदा, डहेलिया, ग्लोडियोलस, चमेली, मालती, गुड़हल, रातरानी, गुलदाउदी, रजनीगंधा, गुलखेंरा, कैलेन्डुला आदि की खेती करके लाभ कमाया जा सकता है। साथ ही साथ इत्र–व्यवसाय को विकसित किया जा सकता है। बाँदा में कुछ कृषकों ने फूलों की खेती करना प्रारम्भ किया है।

6(V) सिंचाई सुविधाएँ :– सिंचाई वह साधन है जिसके द्वारा फसल को कृत्रिम ढंग से जल पहुँचाकर उसकी कमी को पूरा किया जाता है। सूखे क्षेत्रों में किसी भी फसल को उगाने के लिए, वर्षा की कमी को पूरा करने के लिए, अनपेक्षित सूखे मौसम में फसल को बचाने तथा उत्पादन बढ़ाने और अधिक आर्द्रता चाहने वाली फसलों के लिए सिंचाई का अत्यधिक महत्व है। चित्रकूट धाममण्डल में पर्याप्त वर्षा न होने के कारण अधिकाँश भाग सूखा रहता है तथा सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। चित्रकूट धाम मण्डल में सबसे पहले चन्देल तथा बुन्देल राजाओं ने कृषि भूमि की सिंचाई करने पर ध्यान दिया उन्होने अपने शासनकाल में अनेक जलाशय तथा तालाब बनवाए, जैसे– महोबा में कीरत सागर तथा मदन सागर। स्वतन्त्रता के पश्चात् छोटी–छोटी सिंचाई योजनाएँ मण्डल में विकसित की गयी है। जैसे– ओहन बाँध, गुन्ता बाँध, मौदहा बाँध, अर्जुन बाँध, आदि। ये सभी बाँध योजना आयोग के द्वारा स्वीकृत किए गए है। चित्रकूट धाम मण्डल में छोटी–बड़ी नदियों की प्राप्ति के कारण सिंचाई योजनाओं का विकास सम्भव है। वर्षा जल को संचय करके सिंचाई सुविधा बढ़ाना दसवीं पंचवर्षीय योजना की सर्वोच्च्य प्राथमिकता भी हैं, जिसके अन्तर्गत बरसाती नदियों और नालों पर बड़े पैमाने पर चैकडैम बनाये जा रहे हैं।

सिंचाई के साधन तथा स्रोत :– जल के दो स्रोत हैं (1) सतह का जल जो नदियों तथा जलाशयों के रुप में प्राप्त होता है तथा (2) भूमिगत जल जो कुओं तथा नलकूपों द्वारा प्राप्त किया जाता है।

चित्रकूट धाम मण्डल में सिंचाई के स्रोत निम्नलिखित हैं:– (1) नहरें (2) नलकूप (3) कुएँ (4) तालाब (5) अन्य–स्रोत।

2000–01 में चित्रकूट धाम मण्डल में शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल का 43.9% नहरों द्वारा, 21.5% नलकूपो द्वारा, 23.6% कुओं द्वारा, 2.6% तालाबों द्वारा, 8.4% अन्य स्रोतों द्वारा सिंचाई हुई। (चित्र सं. 6.8)

Fig : 6.8

FIG. 6.9
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
SOURCE WISE NET IRRIGATED AREA
2000-01
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
N
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25
24° 30' N
AREA IN HECTARES
28000
21000
14000
7000
CANALS
TUBE-WELLS
WELLS
TANKS
OTHER SOURCES
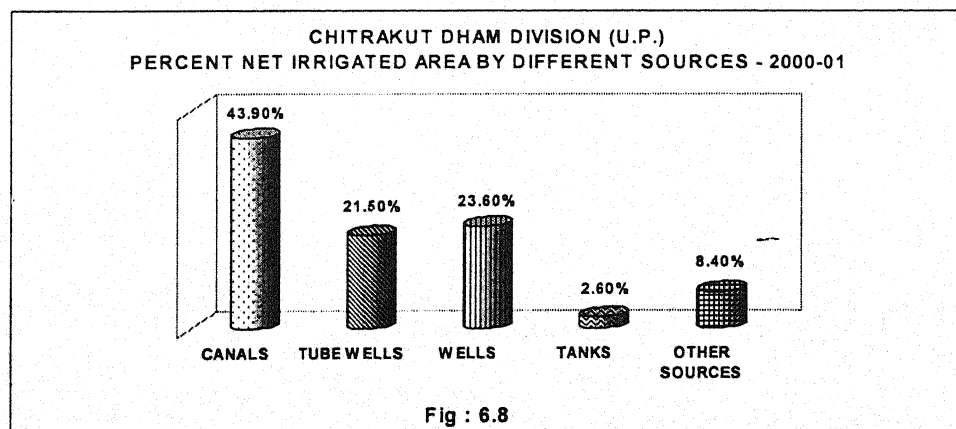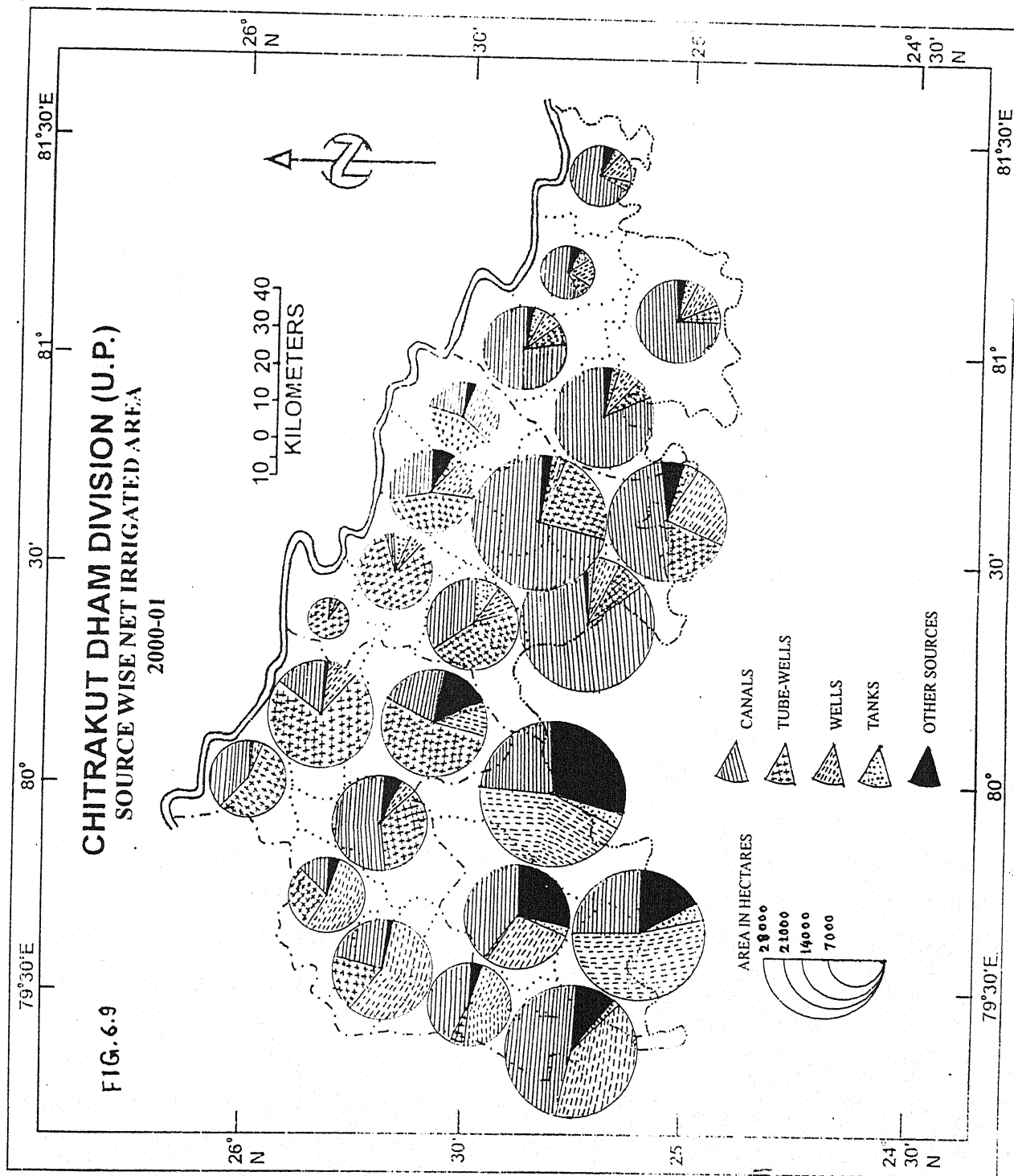
1. **नहरों द्वारा सिंचाई :–** चित्रकूट धाम मण्डल में नहरें सिंचाई का प्रमुख साधन हैं। नहरों में जल या तो नदियों से पहुँचाया जाता है या बाँधों से। मण्डल में (2000–01में) नहरों की कुल लम्बाई 3051 किमी. है। हमीरपुर जनपद में नहरों की कुल लम्बाई 832 किमी., महोबा में 455 किमी., बांदा में 1193 किमी. तथा चित्रकूट जनपद में 611 किमी. है। (परिशिष्ट संख्या 6–27) बड़ोखर खुर्द में विकासखण्ड में नहरों की लम्बाई सबसे अधिक 288 किमी. है तथा सबसे कम जसपुरा विकासखण्ड में 8 किमी. है। 2000–01 चित्रकूट धाम मण्डल में नहरों द्वारा कुल 146708 हेक्टेयर भूमि (43.9%) की सिंचाई हुई जिसमें हमीरपुर जनपद में 24920 हेक्टेयर (28.7%) महोबा जनपद में 29367 हेक्टेयर (32.5%), बाँदा जनपद में 60196 हेक्टेयर (52.6%) तथा चित्रकूट जनपद में 32225 हेक्टेयर (75.6%) भूमि की सिंचाई की गयी। (परिशिष्ट संख्या 6–25) विकासखण्डों में सर्वाधिक नहरों द्वारा सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत महुआ विकासखण्ड में 83.6%, है। इसके अतिरिक्त यह प्रतिशत कर्वी में 81.1%, विसण्डा में 72.2%, मानिकपुर में 74.0%, पहाड़ी में 78.7% हैं। जसपुरा विकासखण्ड में नहरों द्वारा सिंचाई नहीं होती। (परिशिष्ट संख्या 6–26 एवं मानचित्र सं. 6–9)

चित्रकूट धाम मण्डल की प्रमुख नहरें तथा बाँध :–

1. बेतवा नहर :– यह नहर झाँसी जिले में बेतवा नदी के बाँए किनारे से निकाली गई है।इसका निर्माण सन् 1887 ई0 में किया गया इसका उद्गम झाँसी के परीक्षा जलाशय से होता है। यह नहर झाँसी कानपुर सड़क के समानान्तर लगभग 19 कि.मी. तक जाती है जो आगे चलकर दो शाखाओं में विभाजित हो जाती हैं (1) हमीरपुर शाखा (2) कुठौंध शाखा। इस नहर द्वारा कुल 5 लाख हेक्टेयर भूमि की सिंचाई की जाती है। इससे जालौन, झाँसी तथा हमीरपुर जिले लाभान्वित होते हैं। नवीं पंचवर्षीय योजना (1997–2002) में इसकी सिंचित क्षमता को बढ़ाया गया है तथा दसवीं पंचवर्षीय योजना (2002–2007)में सिंचित क्षमता और बढ़ाने का कार्यक्रम प्रस्तावित है।

2. केन नहर :– यह नहर केन नदी पर बने 'बरियारपुर बाँध' से निकलती है तथा बांदा जिले की 27 लाख हेक्टेयर भूमि को सींचती है इस जलाशय की जल संचित करने की क्षमता 426 मिलियन क्यूबिक फीट है तथा 2000 क्युसेक पानी छोड़ने की क्षमता है। इस जलाशय के द्वारा पानी की पूर्ति पूरी तरह नहीं हो पाती है। इसलिए छतरपुर जिले में 'गंगऊ गाँव' के पास दूसरा बड़ा बाँध 'गंगऊ बाँध' बनाया गया है। इसमें जल संचित करने की क्षमता 5000 मिलियन क्यूबिक फीट है। गंगऊ और रनगवां बाँध से निकला पानी बरियारपुर बाँध में रोका जाता है। केन नहर केन नदी के दाहिने किनारे पर समान्तर बहती हुई आगे चलकर यह दो शाखाओं (1) बांदा नहर (2) अतर्रा नहर में विभाजित हो जाती है। इन नहरों द्वारा बॉदा जिले का अधिकॉश भाग सिंचित किया जाता है।

3. धसान नहर :– यह नहर धसान नदी पर बने लहचूरा जलाशय से निकाली गयी है। इससे राठ एवं चरखारी तहसीलों में लगभग 147200 हेक्टेयर भूमि की सिंचाई होती है। _लहचूरा जलाशय 1906–12 में बनाया गया। इसका कैचमेन्ट एरिया 8421 वर्ग किमी. है। धासान नदी पर बने 'पहारी बाँध' से जलापूर्ति की जाती है। दसवीं पंचवर्षीय योजना में इस जलाशय की सिंचित क्षमता बढ़ानें की योजना प्रस्तावित है।

4. अर्जुन बाँध :– यह बाँध हमीरपुर ज़िले में चरखारी से 2.4 किमी. दक्षिण –पश्चिम में बेतवा की सहायक नदी अर्जुन नदी पर बनाया गया है। इसकी संचयन क्षमता 2250 मिलियन क्यूबिक फीट है

तथा कैचमेन्ट एरिया 200 वर्ग किमी. हैं। इस बाँध में सिल्ट जमा हो जाने के कारण संचयन क्षमता में कमी आ गयीहै। इससे निकाली गयी नहरों से हमीरपुर तथा मौदहा तहसील की लगभग 10800 हेक्टेयर भूमि सींची जाती है।

5. कबरई बाँध :– यह बाँध महोबा जिले में कबरई के पास चन्द्रावल नदी पर बनाया गया है।इसकी संचित जल क्षमता 400 मिलियन क्यूबिक फीट है। इससे महोबा तथा मौदहा तहसीलों की 2000 हेक्टेयर भूमि की सिंचाई होती है।

6. मौदहा बाँध (ब्रम्हानन्द बाँध):– इसका निर्माण वर्मा नदी पर सन् 1976–77 में किया गया है। इस बाँध की सिंचन क्षमता 28234 हेक्टेयर है। *यह चित्रकूट धाम मण्डल का सबसे बड़ा बाँध है।* इस बाँध से मौदहा व हमीरपुर तहसील क्षेत्र में सिंचाई की जाती है। वर्ष 1996 में इसका नाम 'ब्रह्मानन्द बाँध' कर दिया गया।

7. रसिन बाँध परियोजना (निर्माणाधीन) :– यह बाँध कर्वी तहसील (जनपद चित्रकूट) में रसिन गाँव के पास 'बानगंगा' और 'खरेली नाला' जलस्रोत पर तैयार किया जा रहा है। बाँध का जलग्रहण क्षेत्र 148.51 वर्ग किमी. है। इनमें उ0प्र0 का हिस्सा 74 वर्ग किमी. है तथा मध्यप्रदेश का संग्रहण क्षेत्र 74.51 वर्ग किमी. है। बाँध की कुल लम्बाई 2.7 किमी. होगी। अधिकतम ऊँचाई 16.22 मीटर होगी। इसकी कुल जल भंडारन क्षमता 15.67 मिलियन घनीमीटर होगी। बाँध से लगभग 23 किमी. लम्बी नहर प्रणाली का निर्माण किया जायेगा। इसमें 5.20 किमी. लम्बी 'दायीं मुख्य नहर' तथा 5.80 किमी. 'बायीं मुख्य नहर' बनायी जायेगी। परियोजना में 22.90 हेक्टेयर भूमि सिंचित करने का लक्ष्य है। इसमें रबी में 1494 हेक्टेयर तथा खरीफ में 796 हेक्टेयर कृषि भूमि की सिंचाई की जा सकेगी। इस बाँध का सी.सी.ए. 1992 हेक्टेयर होगा। इसके निर्माण की कुल लागत 1724.62 लाख होगी तथा यह तीन वर्ष में बनकर तैयार हो जायेगा।

अन्य परियोजनायें :– उपर्युक्त परियोजनायों के अतिरिक्त मण्डल में निम्नांकित परियोजनाएँ भी विद्यमान है। जिनका विवरण अधोलिखित है–

<u>परियोजना का नाम</u>	<u>सिंचन क्षमता</u>
हमीरपुर तथा महोबा जनपद की परियोजनायें	(वर्ग किमी. में)
(1) उर्मिल बाँध (महोबा)	47.7 वर्ग किमी.
(2) चन्द्रावल बाँध (महोबा)	4.0 वर्ग किमी.
(3) क्योलरी बाँध	14.60 वर्ग किमी.
(4) टिकरी बाँध	72.0 वर्ग किमी.
(5) बैजेमऊ पम्प कैनाल (उत्तर)	8.57 वर्ग किमी.
(6) बैजेमऊ पम्प कैनाल (दक्षिण)	16.00 वर्ग किमी.
(7) कम्हौर बाँध	7.2 वर्ग किमी.
(8) छानी बाँध	86.4 वर्ग किमी.
(9) भौली पम्प कैनाल	130.0 वर्ग किमी.
(10) रमेड़ी पम्प कैनाल	5.8 वर्ग किमी.
(11) मेरापुर पम्प कैनाल	3.9 वर्ग किमी.
(12) पत्योरा पम्प नहर	30.4 वर्ग किमी.

(13) छानी पम्प नहर — 17.0 वर्ग किमी.
(14) सोहरापुर पम्प नहर — 20.0 वर्ग किमी.
(15) बिलौटा पम्प नहर — 7.7 वर्ग किमी.
(16) मिश्रीपुर पम्प नहर — 6.4 वर्ग किमी.
(17) बरेण्डा माफ पम्प कैनाल — 28.8 वर्ग किमी.
(18) मगरौठ पम्प कैनाल — 16.0 वर्गकिमी.
(19) धनसेर पम्प कैनाल — 6.9 वर्ग किमी.
(20) रटकनी पम्प कैनाल — 37.8 वर्ग किमी.
(21) कैमहा पम्प कैनाल (महोबा) — 24.3 वर्ग किमी.
(22) विराट सागर बॉंध

बांदा तथा चित्रकूट जनपद की परियोंजनायें

(23) औगासी पम्प नहर योजना — 119.9 वर्ग किमी.
(24) चिल्लीमल लिफ्ट नहर योजना — 17.5 वर्ग किमी.
(25) चिलला लिफ्ट सिंचाई योजना — 13.3 वर्ग किमी.
(26) बनकट लिफ्ट नहर योजना (चित्रकूट)
(27) ओहन बाँध (चित्रकूट)
(28) गुन्ता बाँध (चित्रकूट)

2. **नलकूपों (TUBEWELLS) द्वारा सिंचाई** :— चित्रकूट धाम मण्डल में 2000—01 में 72045 हेक्टेयर भूमि की सिंचाई नलकूपों द्वारा की गयी, जो शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल का 21.5% है। नहरों एवं कुओं के पश्चात् इसका स्थान तीसरा है। नलकूपों द्वारा सर्वाधिक सिंचित प्रतिशत हमीरपुर जनपद में 39.2% है। सबसे कम सिंचित प्रतिशत महोबा जनपद में 0.5% है। यहाँ पथरीली जमीन होने के कारण भू—गर्भीय जल स्रोतों का प्रयोग नहीं हो पाता है। कठोर चट्टानी परतों तथा भूमिगत जल के अधिक गहराई पर मिलने के कारण नलकूप सफल नहीं है। इसके अतिरिक्त बाँदा जनपद में 30.4% (शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल का) सिंचाई नलकूपों द्वारा होती है तथा चित्रकूट जनपद में इसका प्रतिशत 6.5 है। पहाड़ी क्षेत्र अधिक होने के कारण नलकूप बनाने में अधिक रुपये खर्च होते हैं। इसलिए यहाँ नलकूपों की संख्या कम है।

विकासखण्डों में नलकूपों द्वारा सर्वाधिक सिंचित क्षेत्र जसपुरा विकासखण्ड में 92.1% है। इसके अतिरिक्त तिन्दवारी में 83.4%, बड़ोखर खुर्द में 45.3%, बबेरु में 44.7%, कमासिन में 42.0%, विसण्डा में 21.8%, नरैनी में 17.5%, कुरारा में 55.6%, सुमेरपुर में 73.2%, सरीला में 28.9%, गोहाण्ड में 17.8%, मुस्करा में 35.6%, मौदहा में 54.2%, सिंचाई नलकूपों द्वारा की जाती है। शेष विकासखण्डों में 8% से कम है। महोबा के सभी विकासखण्डों में नलकूपों द्वारा सिंचित क्षेत्र 1% से कम है। (परिशिष्ट सं. 6—26) तथा (मानचित्र सं. 6—9)

चित्रकूट धाम मण्डल में 31 मार्च 2002 तक कुल नलकूपों की संख्या 4613 थी, जिसमें राजकीय नलकूपों की संख्या 983 तथा निजी नलकूपों की संख्या 3630 थी। सर्वाधिक नलकूपों की संख्या बांदा जनपद में 2971 थी, जिसमें 460 राजकीय नलकूप तथा 2511 निजी नलकूप थे। हमीरपुर

जनपद में नलकूपों की कुल संख्या 1606 थी (516 राजकीय + 1090 निजी) सबसे कम नलकूप महोबा में 22 तथा चित्रकूट जनपद में 14 थे। इसका कारण यहाँ की पथरीली भूमि है। कठोर चट्टानों एवं भूमिगत जल की अधिक गहराई के कारण नलकूप बनाना आसान काम नहीं है। यहाँ एक नलकूप बनाने में 1.5 लाख से अधिक रुपये खर्च होते हैं।

विकासखण्डों में सर्वाधिक नलकूप तिन्दवारी में (566) विद्यमान है। जैतपुर, रामनगर, तथा मऊ विकासखण्डों मे एक भी नलकूप नहीं है।
(परिशिष्ट सं. 6–27)

3. **कुओं द्वारा सिंचाई** :– चित्रकूट धाम मण्डल में कुएँ सिंचाई के लिए सस्ते तथा महत्वपूर्ण साधन हैं। पहले ढेकुली, रहट, मोठ (चमड़े की बाल्टियाँ) के द्वारा कुएँ से पानी निकाल कर सिंचाई की जाती थी, लेकिन अब इनका प्रयोग कम हो गया है। अधिकाँशतः पम्पिंगसेट द्वारा कुएँ से पानी निकाला जाने लगा है। जहाँ विद्युत सुविधाएँ है, वहाँ विद्युत मोटरों का प्रयोग पानी निकालने के लिए किया जा रहा है। चित्रकूट धाम मण्डल के कुल सिंचित क्षेत्रफल का 23.6% कुओं द्वारा सिंचित किया जाता है। अब कुछ वर्षों से नलकूप अधिक लगाये जा रहे हैं। महोबा जनपद में शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल का 43.3% कुओं द्वारा सींचाई की जाती हैं। इसके अतिरिक्त हमीरपुर जनपद में 26.3%, बांदा जनपद में 11.1% तथा चित्रकूट जनपद में 9.8% कुओं द्वारा सिंचाई होती है। विकासखण्डों में कुल सिंचित क्षेत्रफल का गोहाण्ड में सर्वाधिक 63.0% कुओं द्वारा सिंचाई होती है। इसके अतिरिक्त सरीला में 52.2% (शुद्ध सिंचित क्षेत्र का) राठ में 45.9%, पनवाड़ी में 41.2%, जैतपुर में 53.5%, चरखारी में 28. 2%, कबरई में 44.1%, कमासिन में 30.7%, नरैनी में 22.1% मानिकपुर में 11.1%, रामनगर में 17.0%, तथा मऊ में 15.6% सिंचाई कुओं द्वारा सिंचाई होती है। (परिशिष्ट सं. 6–26) (मानचित्र सं. 6–9)

चित्रकूट धाम मण्डल में 31 मार्च 2002 तक पक्के कुओं की संख्या 9840 थी। हमीरपुर जनपद में पक्के कुओं की संख्या 4300, महोबा जनपद में 609, बांदा जनपद में 4866 तथा चित्रकूट जनपद में मात्र 65 पक्के कुएँ थे। राठ विकासखण्ड में सर्वाधिक 1661 पक्के कुएँ थे। (परिशिष्ट सं. 6–27) रामनगर विकासखण्ड में सबसे कम केवल 2 पक्के कुएँ थे।

4. **तालाबों द्वारा सिंचाई**:–चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में 8535 हेक्टेयर भूमि की सिंचाई तालाबों द्वारा की गयी जो कुल सिंचित क्षेत्रफल का केवल 2.6% है। हमीरपुर जनपद में तालाबों द्वारा सिंचाई का प्रतिशत नगण्य (0.6%) है। महोबा में 3.0%, बांदा में 3.0%, तथा चित्रकूट जनपद में 4.0% तालाबों द्वारा सिंचित क्षेत्र है। विकासखण्डों में बड़ोखर खुर्द में 8.7%, जसपुरा में 5.8%, तिन्दवारी में 6.5%, नरैनी में 4.3%, पहाड़ी में 4.5%, मानिकपुर में 4.6%, रामनगर में 7.2% सिंचाई तालाबों द्वारा होती है। शेष विकासखण्डों में तालाबों द्वारा सिंचाई का प्रतिशत 4 से कम है। वर्तमान समय में भूमिगत जल स्तर को बढ़ाने तथा तालाबों द्वारा सिंचित क्षेत्र की वृद्धि करने हेतु तालाबों की गहराई बढ़ाना एवं नये तालाबों का निर्माण आवश्यक है, क्योंकि यदि भूमिगत जलस्तर कम होगा तो नलकूपों एवं कुओं द्वारा सिंचाई करना सम्भव न हो सकेगा।

5. **अन्य स्रोतों द्वारा सिंचाई** :– अन्य स्रोतो के अर्न्तगत नदी, नालो एवं पम्पिंग सेट आदि माध्यमों को सम्मिलित किया गया है। 31 मार्च 2002 के अनुसार भूस्तरी पम्प सेटों की संख्या चित्रकूट धाम मण्डल में 10453 है। इनके द्वारा 28313 हेक्टेयर भूमि की सिंचाई की गयी, जो कुल सिंचित क्षेत्रफल
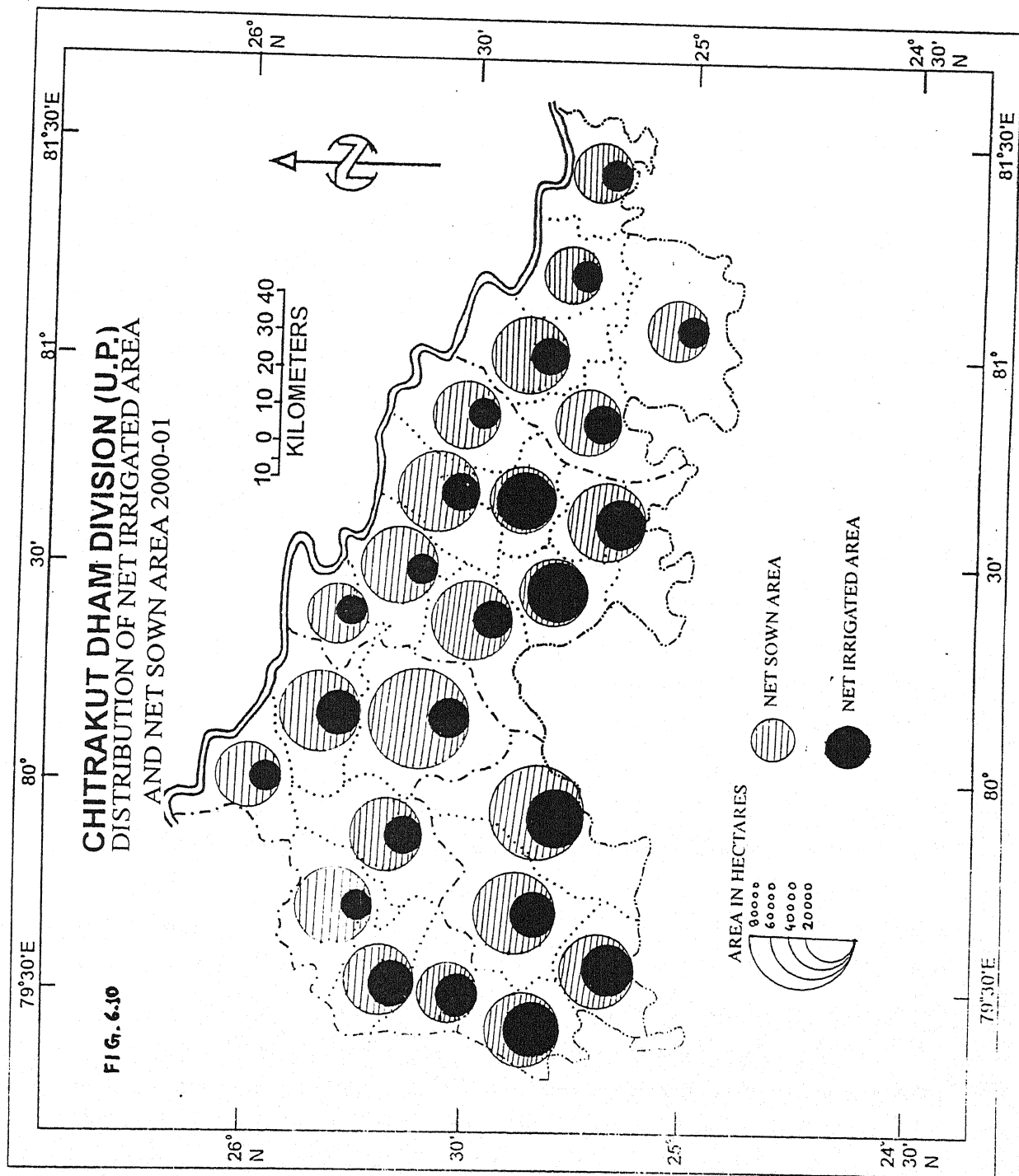
का 8.4% है। अन्य स्रोतों के द्वारा सबसे अधिक सिंचाई महोबा जनपद में 18701 हेक्टेयर भूमि में की गयी जो कुल सिंचित क्षेत्रफल का 20.7% है। इसके अतिरिक्त चित्रकूट जनपद में 8.4%, हमीरपुर में 5.2%. तथा बांदा में 2.9% अन्य स्रोतों से सिंचाई की गयी।

विकासखण्डवार अन्य स्रोतों द्वारा सर्वाधिक सिंचित क्षेत्र कबरई में 30.5% है। इसके अतिरिक्त चरखारी मे 28.2%, मौदहा में 16.3%, तथा जैतपुर में 16.3%, अन्य स्रोतो के अंतर्गत सम्मिलित है। अन्य विकासखण्डों में यह प्रतिशत इस प्रकार है– मुस्करा में 5.3%, पनवाड़ी में 9.7%, बबेरु में 8.7%, नरैनी में 6.4% रामनगर में 7.5% तथा मऊ में 7.5% है। शेष विकासखण्डों में अन्य स्रोतों से सिंचित क्षेत्र 5% से कम है। (परिशिष्ट सं. 6--26)

सिंचित क्षेत्र :– चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में कुल शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 1057210 हेक्टेयर है। इसमें शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल 334466 हेक्टेयर है, जो शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल का 31.6% है।शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल में सबसे अधिक शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल का प्रतिशत महोबा जनपद में 41.4 प्रतिशत है। तथा सबसे कम प्रतिशत चित्रकूट जनपद में 24.5% है। महोबा जनपद में 32.5% सिंचाई नहरों से तथा 43.3% सिंचाई कुओं द्वारा की जाती है।

विकासखण्डों में शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल से शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल का सर्वाधिक प्रतिशत विकासखण्ड विसण्डा में 69.9% है तथा सबसे कम प्रतिशत जसपुरा विकासखण्ड में 8.8% है। अन्य विकासखण्डों में महुआ में 64.3%, जैतपुर में 57.1%, पनवाड़ी में 53.4%, राठ में 43.9%, कर्वी में 40.8%, नरैनी में 40.5%, कबरई में 37.7%, गोहाण्ड में 35.5% मुस्करा में 31.8% है शेष विकासखण्डों में शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल का प्रतिशत 30% से कम है। (परिशिष्ट सं. 6–28)(मानचित्र सं. 6–10)

चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में सकल सिंचित क्षेत्रफल 349407 हेक्टेयर है, जो शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल का 104.5% है। शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल से सबसे अधिक सकल सिंचित क्षेत्रफल का प्रतिशत बांदा जनपद में 105.5% है तथा सबसे कम प्रतिशत महोबा जनपद में 102.0% है।

विकासखण्डों में शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल से सकल सिंचित क्षेत्रफल का सबसे अधिक प्रतिशत विकासखण्ड बबेरु में 122.9% है तथा सबसे कम प्रतिशत सरीला विकासखण्ड में 89.9% है। अन्य विकासखण्डों में कर्वी में 121.6%, राठ में 120.1% बड़ोखर खुर्द 111.1%, तिन्दवारी में 108.7%, गोहाण्ड में 104.7%, पहाड़ी में 104.3%, नरैनी में 104.2%, चरखारी में 104.1%, कमासिन में 103.3%, पनवाड़ी में 102.4% तथा जैतपुर में 102.4% है। शेष विकासखण्डों में 100.0% से 102.0% के मध्य है।(परिशिष्ट सं. 6–29)

6(vi) **उत्तम कृषि, हेतु सुझाव** :– चित्रकूट धाम मण्डल कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहाँ कृषि के विकास एवं उत्पादन में गुणात्मक वृद्धि के लिए निम्नांकित उपाय कारगर सिद्ध हो सकते है–

(1) चित्रकूट धाम मण्डल की अधिकाँश कृषि वर्षा पर आधारित है। अतः इस क्षेत्र हेतु ऐसी प्रजाति की आवश्यकता है जो कम पानी में अधिक उपज दे सके तथा फसल की अवधि कम हो।

(2) सम्पूर्ण चित्रकूट धाम मण्डल में अभी सिंचाई के साधनों का पर्याप्त विकास नहीं हो पाया है। अतः सिंचाई के साधनों का विकास आवश्यक है।

(3) चित्रकूट धाम मण्डल की भूमि मृदा कटाव से ग्रसित है। अतः मृदा अपरदन नियंत्रण हेतु बंधियों का निर्माण आवश्यक है।

(4) चित्रकूट धाम मण्डल में कृषि योग्य बंजर भूमि 41707 हेक्टेयर है। 'कृषि बंजर भूमि सुधार कार्यक्रम' के अंतर्गत इसे कृषि योग्य बनाया जाय, जिससे खाद्यान्नों के उत्पादन में वृद्धि की जा सके।

(5) मण्डल में सब्जी की कृषि हेतु उपयुक्त भौगोलिक वातावरण सुलभ है जबकि वर्तमान में सब्जी की खेती का आच्छादन बहुत ही कम है, जिसके कारण आम जनता को दैनिक पोषण आहार एवं भोज्य पदार्थों में पोषक तत्वों का सन्तुलित समावेश नहीं होता। यहाँ मिर्च, टमाटर, बैंगन, सौंफ, एवं धनिया की कृषि बहुतायत से होती है।इसे व्यापारिक स्तर पर प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है।

(6) जैविक खादों के प्रयोग पर बल दिया जाय तथा रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कम किया जाय क्योंकि रासायनिक उर्वरकों के अन्धाधुन्ध प्रयोग से मृदा में जरुरी सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी हो जाती है और धीरे धीरे उसकी उत्पादकता कम हो जाती है। जैविक खादों के प्रयोग द्वारा उत्पादकता पाँच गुना तक बढ़ायी जा सकती है।

(7) अच्छी फसल के लिए अच्छे बीज का होना आवश्यक है। उपजाऊ मिट्टी, उत्तम खाद तथा सिंचाई के अच्छे साधनों के होते हुए भी बिना उन्नत बीज के अच्छी फसल पैदा करना संभव नहीं है। इसलिए प्रगतिशील कृषकों को सदा उन्नतिशील बीजों का प्रयोग करना चाहिए।

(8) भूमि की किस्म एवं उपलब्ध साधनों को ध्यान में रखकर ही फसलों का चयन करके अधिक से अधिक प्रमाणित बीजों की बुवाई करने हेतु कृषकों को प्रेरित किया जाये और संरक्षित नमी पर ही माह अक्टूबर के प्रथम पक्ष से नवम्बर के प्रथम पक्ष तक दलहनी एवं तिलहनी फसलों की बुवाई सुनिश्चित कराई जाये। इससे कीट व्याधियों का प्रकोप कम होता है और स्वस्थ एवं प्रमाणित बीजों के प्रयोग से फसल उत्पादन में 15 से 20 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी होती है।

(9) रबी की फसलें अधिकॉशतः 'मिलवां' बोई जाती है। उनमें शस्य क्रियाओं के सम्पादन में कठिनाई होती है तथा उत्पादन में भी कमी आती है। अतः मिश्रित खेती के स्थान पर 'सहफसली खेती' पर विशेष बल दिया जाय। उदाहरण के लिए चना+अलसी, चना+राई, मसूर+अलसी, मटर+सरसों को 5:1 और गेंहूँ को 9:1 के अनुपात में बोने से अच्छा उत्पादन प्राप्त होता है।

(10) एक खेत में लगातार एक ही फसल लेने से सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे जिंक आदि की कमी हो जाती है, जिससे उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसके लिए आवश्यक है कि 25 से 30 किग्रा. जिंक सल्फेट प्रति हेक्टेयर प्रयोग हेतु कृषकों को प्रेरित किया जाय या फिर फसल चक्र को नियमित अपनाया जाय।

(11) चित्रकूट धाम मण्डल में *'अन्ना प्रथा'* एक बारहमासी समस्या है। पहली बारिश के बाद बोई जाने वाली खरीफ की फसलों पर अन्ना घूमते मवेशी तथा वनरोज किसानों की फसल चौपट करते हैं। इससे किसानों को बहुत क्षति उठानी पड़ती है। पालतू मवेशियों को खिलाने के लिए चारा–भूसा की व्यवस्था न करने वाले किसान व पशुपालक अपने जानवरों को 'अन्ना' (खुला) छोड़ देते हैं, जो घूम फिरकर अपना पेट भरते हैं। पशु जितनी फसल चरते नहीं है, उससे ज्यादा रौंदकर नष्ट कर देते हैं। अन्ना प्रथा पर अंकुश लगाने के लिए नगर पंचायत नगरपालिका और ग्रामीण क्षेत्रों में जिला पंचायतों को अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन ठीक ढंग से करना चाहिए। यदि इस 'अन्ना प्रथा' पर काबू पा लिया गया तो खाद्यान्न एवं सब्जियों के उत्पादन में कई गुना वृद्धि की जा सकती है।

(12) महोबा जनपद में मृदा परीक्षण प्रयोगशाला नहीं है। अतः मृदा परीक्षण प्रयोगशाला की व्यवस्था अत्यंत आवश्यक है।

(13) अधिकाँश बाँधों तथा तालाबों में सिल्ट जमा हो गयी है, जिससे वे उथले हो गये है और उनकी सिंचन क्षमता में कमी आ गयी है। इसलिए बाँधों तथा तालाबों को गहरा करवाना चाहिए। साथ

ही साथ उपयुक्त स्थानों पर और अधिक बाँध तथा तालाब बनवाये जायें इससे सिंचित क्षेत्र एवं भूमिगत जल स्तर वृद्धि करने में मदद मिलेगी।

(14) कृषि उत्पादकता में वृद्धि के लिए सुगम ऋण अधिक उपज देने वाले उत्तम बीज, कीटनाशक दवाइयाँ, रासायनिक उर्वरक आदि उचित मूल्यों पर गाँव में ही उपलब्ध होने चाहिए, जिससे किसानों का समय, श्रम और धन व्यर्थ न जाये। यदि सम्भव हो सके तो कृषि निवेशों को सार्वजनिक वितरण प्रणाली द्वारा किसानों को उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

(15) ग्रामीण क्षेत्रों में सिंचाई के लिए और घरेलू उद्योगों के लिए शक्ति संसाधनों (विद्युत) की कमी बनी रहती है। जिससे फसलों व उद्योगों का उत्पादन प्रभावित होता है। अतः शक्ति संसाधनों (विद्युत) की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित की जाये जिससे कृषक फसल की सिंचाई उपयुक्त समय पर कर सकें।

(16) फसल कटने के बाद कृषकों को मण्डल में ऐसी बाजार सेवाएँ उपलब्ध नहीं है, जहाँ उसे अपनी कृषि उपजों का लाभकर मूल्य मिल सके। फल, सब्जियाँ आदि के परिरक्षण की ग्रामीण क्षेत्रों में उचित व्यवस्था नहीं है। अतः किसानों को इन उत्पादनों के लिए प्रोत्साहन नहीं मिल पा रहा है। अतः विकासखण्ड स्तर पर या ग्रामीण क्षेत्रों में शीत भण्डार (Cold Storage) की सुविधा उपलब्ध कराई जाय जिससे फल एवं सब्जियों का परीरक्षण हो सके और कृषकों को लाभकारी मूल्य मिल सके।

(17) चित्रकूट धाम मण्डल में कृषि आधारित कुटीर उद्योगों का नितान्त अभाव है, जिसके कारण किसानों को अपनी उपजों का पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। यदि फलों के रस, चटनी, अचार, मुरब्बे आदि बनाने और सब्जियों के परिरक्षण तथा दुग्ध उत्पादों के घरेलू उद्योग गाँवों में स्थापित किये जायें तो किसानों को इन उपजों का पूर्ण लाभ प्राप्त होगा। कुटीर उद्योग धंधो मे वृद्धि होगी एवं रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि होगी।

(18) चित्रकूट मण्डल में 1995–96 की कृषि गणना के अनुसार कुल 641569 जोतों में से 177288 जोतों (27.6 %) का आकार 0.5 हेक्टेयर से कम है। 152993 जोतों (23.8 %) का आकार 0.5 से 1.0 हे० के मध्य है।[20] अर्थात् 51.4% जोतों का आकार एक हे० से कम है। इनके पास चित्रकूट मण्डल की कुल कृषि भूमि का केवल 14.7% भाग है। ऐसी जोतें आर्थिक दृष्टि से अलाभकर होती हैं। अतः ऐसी जोतों का आकार चकबन्दी द्वारा विस्तृत किया जाय, जिससे अधिक अर्थिक लाभ प्राप्त हो सकेगा।

(19) फसल कीटनाशकों के दुष्प्रभाव तथा पर्यावरण–प्रदूषण रोकने के लिए फसल भक्षी कीटों को चट (नष्ट) करने वाली फफूंदी का उत्पादन एवं विकास किया जाय तथा कृषकों को सुलभ कराया जाय, जिससे कृषक जहरीले कीटनाशकों के अन्धाधुन्ध प्रयोग को रोक सकें। 'चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौधोगिक विशविविद्यालय कानपुर' में परभक्षी फफूंद जिसमें प्रमुखतः ट्राइकोडर्मा, ट्राइकोग्रामा, क्राइसोपर्ला व एच.पी.वी. का विकास किया है।

हरित क्रान्ति तकनीक

कृषि विकास के सम्बन्ध में 1967–68 में उच्च उत्पादकता (एच0बाई0वी0) कार्यक्रम का श्रीगणेश किया गया था। कृषि विकास की यह विधि सिंचाई, उर्वरक, और सुधरे बीजों पर आधारित थी। इसे पैकेज टेक्नोलॉजी या हरित क्रान्ति (Green Revolution) तकनीक भी कहते है। इस समय भारतीय कृषि का बहुत अधिक विकास हुआ। गेंहूँ, धान, ज्वार–बाजरा, और व्यापारिक फसलों के क्षेत्रफल, उत्पादन और प्रति हेक्टेयर उपज में कई गुनी वृद्धि हुई। परन्तु प्रमुख सफलता गेंहूँ और धान के उत्पादन में मिली।

मण्डल में हरित क्रान्ति का प्रभाव :– हरित क्रान्ति का प्रभाव चित्रकूट धाम मण्डल में सभी फसलों पर समान नहीं हुआ है। चित्रकूट धाम मण्डल में गेंहूँ का उत्पादन 1967–68 में लगभग

148396.95 हेक्टेयर में 10.03 कुन्तल प्रति हे0 उपज से 148842.14 मिट्रिकटन हुआ, जबकि 2000–01 में 331386 हेक्टेयर में 15.68 कुन्तल प्रति हेक्टेयर उपज की दर से 519387.87 मीट्रिकटन उत्पादन हुआ। जबकि चावल 69577.24 हेक्टेयर से बढ़कर 85580.00 हेक्टेयर बोया जाने लगा और उपज 6.5 कुन्तल/हेक्टेयर से बढ़कर 9.79 कुन्तल/हेक्टेयर तथा उत्पादन 45225.20 मीट्रिकटन से बढ़कर 83777.95 मीट्रिकटन हो गया। गेंहूँ के उत्पादन में लगभग साढ़े तीन गुना व धान के उत्पादन में लगभग दो गुना वृद्धि हुई। मोटे अनाजो के क्षेत्रफल में गिरावट आई। दालों के क्षेत्रफल प्रति हेक्टेयर उपज और उत्पादन में नाम मात्र की ही वृद्धि हुई। 2000–01 के पूर्व के वर्षों में गेंहूँ और चावल का प्रति हेक्टेयर उत्पादन इससे अधिक था। कालान्तर में रासायनिक उर्वरकों के अन्धाधुन्ध प्रयोग से आवश्यक पोषक तत्वों की मिट्टी में कमी हो जाने से उत्पादकता में कमी आ गयी है, जिससे उत्पादन प्रभावी हुआ है।

गेंहूँ की कृषि पर हरित क्रान्ति का प्रभाव :– हरित क्रान्ति का जितना प्रभाव गेंहूँ की फसल पर हुआ उतना प्रभाव किसी अन्य फसल पर नहीं हुआ। इसके कई कारण हैं :– (1) गेंहूँ में अधिक उपज देने वाले बीजों का सबसे अधिक विकास किया गया है (2) गेंहूँ की खेती करने के लिए कृषकों ने सिंचाई के साधनों, रासायनिक उर्वरकों, नये बीजों, कीटनाशकों और नये तरीकों व कृषि उपकरणें का प्रचुर उपयोग किया है। चित्रकूट धाम मण्डल में कुल कृषित भूमि के 27.24% क्षेत्रफल में गेंहूँ की कृषि की जाती है।

(1) उत्तम बीजों का प्रयोग :– हरित क्रान्ति की सफलता अधिक उपज देने वाली किस्म तथा उनके बढ़िया बीजों पर निर्भर करती है। इस दृष्टि से न केवल बढ़िया किस्मों का प्रयोग करना आवश्यक है बल्कि उनके उत्तम बीजों की व्यवस्था करना भी जरुरी है अधिक उपज देने वाली फसलों के बीजों का प्रयोग अभी केवल पाँच खाद्यान्नों गेंहूँ, धान, ज्वार–बाजरा, तथा मक्का के उत्पादन में ही किया गया। इनमें गेंहूँ की अधिक उपज देने वाली किस्में सोनालिका (R.R.21), कल्याण सोना, के 816, राज 911, यू.पी 301, यू.पी 368, के. 68, तथा मुक्ता किस्में प्रसिद्ध हैं। चावल की भी साकेत 4, अश्विनी, गोविन्द पन्त 12, नरेन्द्र 359, महसूरी, टा.9.टा.100, क्रास 116, बासमती 370, पूसा. बासमती–1, पन्त संकरधान–1, नरेन्द्र संकर धान–2, प्रो. एग्रो. 6111, प्रो. एग्रो 6201, पी.एच.वी. –71 आदि किस्मों का विकास किया गया है।

चित्रकूट धाम मण्डल में 8 कृषि फार्म स्थापित किये गये हैं जहाँ उत्तम किस्म के बीजों की उत्पत्ति होती है। मण्डल मे बीज गोदाम तथा उर्वरक डिपों की सं. 90 है जिनकी क्षमता 16724 है। ग्रामीण गोदामों की सं.169 तथा क्षमता 16540 है। (तालिका 6–7)

तालिका सं. 6–7

चित्रकूट धाम मण्डल में जनपदवार कृषि से सम्बन्धित कुछ मुख्य सुविधाएँ –2001–02

जनपद	बीज गोदाम/ उर्वरक	क्षमता (मी. टन.)	ग्रामीण गोदाम सं.	क्षमता (मी.टन.)	कृषि सेवा केन्द्र		बीज वृद्धि के फार्म
					एग्रो	अन्य	
हमीरपुर	10	3140	44	5270	2	20	2
महोबा	28	5734	41	3180	–	16	1
बांदा	39	4250	56	5450	1	28	4
चित्रकूट	13	3600	28	2640	5	12	1
मण्डल	90	16724	169	16540	8	76	8

स्रोत : सांख्यकीय पत्रिका, चित्रकूट धाम मण्डल, बांदा 2002

(2) रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग :– सिंचित क्षेत्रों में वृद्धि और अधिक उपज देने वाले बीजों का प्रयोग बढ़ने के साथ–साथ उर्वरकों का उपयोग भी क्रमशः बढता जा रहा है। इनका उपयोग 1997–98 में 26499 मीट्रिकटन, 1998–99 में 27385 मीट्रिकटन तथा 2000–2001 में 31751 मीट्रिकटन हो गया।

चेस्टर बोल्स का कथन है कि *"खाद के यथेष्ट प्रयोग से उत्पादन की मात्रा तिगुनी की जा सकती है।"* तालिका सं. 6–8 में 2000–01 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार उर्वरक विवरण दर्शाया गया है :–

तालिका सं. 6–8

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार उर्वरक वितरण (मीट्रिकटन) में

क्र सं.	विकासखण्ड	नाइट्रोजन	फास्फोरस	पोटाश	योग
1	कुरारा	810	610	7	1427
2	सुमेरपुर	750	595	5	1350
3	सरीला	730	580	4	1314
4	गोहाण्ड	800	585	4	1389
5	राठ	998	639	7	1644
6	मुस्करा	730	627	5	1362
7	मौदहा	720	615	4	1339
जनपद हमीरपुर		5538	4251	36	9825
8	पनवाड़ी	632	689	–	1321
9	जैतपुर	1044	1121	4	2169
10	चरखारी	533	622	3	1158
11	कबरई	1136	1200	7	2343
जनपद महोबा		3345	3632	14	6991
12	जसपुरा	533	369	2	904
13	तिन्दवारी	565	421	2	988
14	बड़ोखर खुर्द	636	413	3	1052
15	बबेरु	639	409	4	1052
16	कमासिन	595	377	3	975
17	विसण्डा	715	452	3	1170
18	महुआ	711	455	4	1170
19	नरैनी	738	468	4	1210
जनपद बांदा		5132	3364	25	8521
20	पहाड़ी	872	610	10	1492
21	कर्वी	925	800	8	1733
22	मानिकपुर	680	518	6	1204
23	रामनगर	790	298	6	1094
24	मऊ	681	205	5	891
जनपद चित्रकूट		3948	2431	35	6414
मण्डल–योग		17963	13678	110	31751

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें– 2002

(3) जैविक खादों का प्रयोग :– निरन्तर रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से मिट्टी में आवश्यक पोषक तत्वों की कमी हो जाती है और उसकी उत्पादकता कम हो जाती है। अतः रासायनिक उर्वरकों के साथ ही साथ जैविक खादों का प्रयोग आवश्यक है। जैविक खेती से प्राप्त जैविक खाद्यान्नों में शरीर के लिए आवश्यक सभी महत्वपूर्ण पोषक तत्व मौजूद रहते हैं। जैविक खादों में गोबर की खाद, कम्पोष्ट खाद, हरी खाद, केचुआ खाद, मलमूत्र की खाद, खली की खाद सम्मिलित हैं। इनका प्रयोग कर पर्यावरण को दूषित होने से बचाया जा सकता है तथा उत्पादन को भी बढ़ाया जा सकता है। जैविक खादें *टिकाऊ खेती के आधार बनती है जिनसे भूमि की उर्वरकता व फसल उत्पादकता सालोंसाल बनी रहती है।* अतः जैविक खेती का प्रचार प्रसार किया जाय।

(4) कृषि उपकरण :– आधुनिक कृषि यन्त्रों एवं उपकरणों का प्रयोगकर विकसित तकनीक के द्वारा कृषि उत्पादन में निश्चित रुप से वृद्धि की जा सकती है। किसी प्रदेश या क्षेत्र में आधुनिक कृषि यन्त्रों एवं उपकरणों के उपयोग की स्थिति उस क्षेत्र के कृषि स्तर को दर्शाती हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में 1997 में 252696 लकड़ी के हल, 77412 लोहे के हल, 10341 उन्नत हैरों तथा कल्टीवेटर, 22367 उन्नत थ्रेशिंग मशीन, 2082 स्प्रेअर 218137 उन्नत बोआई यन्त्र, तथा 14606 टैक्टर कृषि कार्य में लगे थे। जबकि 1988 में 315545 लकड़ी के हल 107633 लोहे के हल, 14455 उन्नत हैरो कल्टीवेटर, 7182 उन्नत थ्रेशर मशीन, 724 स्प्रेयर 88666 उन्नत बोआई यन्त्र तथा 6264 टैक्टर थे। उपर्युक्त आँकड़ों से स्पष्ट है कि परम्परागत लकड़ी तथा लोहे के हलों की संख्या में कमी हुई है तथा आधुनिक कृषि–यन्त्रों उन्नत थ्रेशर मशीन, स्प्रेयर, उन्नत बुवाई यन्त्र तथा टैक्टरों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है।

(5) लघु सिंचाई :– हरित क्रान्ति की हरियाली केवल बीज अथवा खाद से ही बनाए रखना कठिन होता है। इसके लिए सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था बहुत आवश्यक हैं। यह व्यवस्था बड़े बाँधों के अतिरिक्त छोटी नहरो, कुओं तथा तालाबों से भी करनी पड़ती है ताकि प्रत्येक वर्ग के किसान को इन सुविधाओं का लाभ प्राप्त हो सके। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत नलकूप छोटी नहरों तथा तालाब आदि बनाने का कार्य किया जाता है एवं इसमें सहायता दी जाती हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में 1997–98 में विभिन्न साधनों द्वारा वास्तविक सिंचित क्षेत्रफल 308232 हेक्टेयर, तथा सफल सिंचित क्षेत्रफल 367321 हेक्टेयर था। 2000–01 में वास्तविक सिंचित क्षेत्रफल 334466 हेक्टेयर तथा सकल सिंचित क्षेत्रफल 349407 हेक्टेयर हो गया।

(6) पौध संरक्षण (Plant Protection) :– हरित क्रान्ति में पौध संरक्षण कार्यक्रमों का विशेष महत्व रहा है। इसके अन्तर्गत भूमि तथा फसलों पर दवा छिड़कने व बीज उपचारित करने का कार्य किया जाता है। चित्रकूट धाम मण्डल में (2001–2002 में) 25 कीटनाशक डिपो हैं, जिनकी कुल क्षमता 1409 मीट्रिकटन है।

हानिकारक कीटनाशकों के अन्धाधुन्ध प्रयोग से खाद्यान्न, सब्जियाँ और फल जहरीली होते जा रहे हैं, जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं एवं विभिन्न रोगों को जन्म देने वाली हैं। अतः फसल कीटनाशकों के दुष्प्रभाव तथा पर्यावरण सुरक्षा के लिए फसल भक्षी कीटों को चट करने वाली फफूंदी का विकास एवं उत्पादन किया जाय। परभक्षी फफूंदी हानिकारक कीड़ों को चटकर जाती है। इससे फसल कीटनाशकों के दुष्प्रभाव से भी बच जाती है और उसकी पौष्टिकता पर भी असर नहीं पड़ता।

(7) बहुफसली एवं मिश्रित फसल प्रणाली (Multiple and Mixd Cropping System) :– 1967–68 में सिंचित क्षेत्रों में खाद तथा नयी किस्म के बीजों से एक ही भूखण्ड में जल्दी पकने वाली

कई फसलें उत्पन्न करने का प्रयोग आरम्भ किया गया था। वर्तमान में चित्रकूट धाम मण्डल में कुल सिंचित क्षेत्र के लगभग 60 प्रतिशत भाग में दो या अधिक फसलें बोई जा रही हैं। इस विधि से उत्पादन में वृद्धि संभव है।

(8) कृषि–शिक्षा तथा शोध :– कृषि अर्थव्यवस्था में उन्नति करने के लिए इस क्षेत्र में शोध करना बहुत आवश्यक है, जिससे उत्पादन तथा विकास की नवीनतम पद्धति का प्रयोग किया जा सकेगा। चित्रकूट धाम मण्डल में 'ब्रम्हानन्द महाविद्यालय राठ (हमीरपुर)' में कृषि शिक्षा तथा शोध की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त जिला परिषद् कृषि महाविद्यालय बांदा में भी कृषि शिक्षा प्रदान की जाती है।

कृषि के विकास एवं हरित क्रान्ति के लिए जिनमें खाद्यान्न उत्पादन वृद्धि कार्यक्रम, प्रमाणित बीज वितरण कार्यक्रम, उर्वरक वितरण, फसली ऋण वितरण, जिंक सल्फेट वितरण, उन्नतिशील कृषि यन्त्रों का वितरण, मृदा परीक्षण कार्यक्रम, भूमि सुधार योजना, राजकीय कृषि प्रक्षेत्र पर बीज सम्बर्द्धन कार्यक्रम, राष्ट्रीय दलहन विकास परियोजना, राष्ट्रीय तिलहन उत्पादन कार्यक्रम, सनई उत्पादन कार्यक्रम, कृषि रक्षा कार्यक्रम, फल संरक्षण हेतु प्रशिक्षण, वैज्ञानिक खेती द्वारा तकनीकि स्थानान्तरण का कार्यक्रम, फसल उत्पादन तकनीकि प्रशिक्षण, चारा विकास कार्यक्रम, वृहद प्रणाली प्रबन्धन योजना, किसान मित्र योजना, राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना आदि कार्यक्रमों का क्रियान्वयन अत्यावश्यक है।

1. जिमरमैन ई0 डब्ल्यू0 : (1951)– 'वर्ल्ड रिसोर्सेज एण्ड इन्डस्ट्रीज,' पृ.148.
2. बुचानन आर0 ओ0 : (1959)– 'सम रेफ्लेक्शन्स आफ एग्रीकल्चर ज्याग्राफी', 44,पृ. 1
3. बेवर जे0 सी0 : (1954)– 'क्राप एण्ड काम्बीनेशन रीजन्स इन दि मिडिल–वेस्ट, ज्याग्राफी' रिव्यू 44, पृ. 175–200
4. *जेम्स, पी0ई0एण्ड जॉन्स, सी0पी0* : अमेरिकन ज्याग्रफी इन्वेन्ट्री एण्ड प्रास्पेक्टस, सिराकस यूनीवर्सिटी प्रेस 1954.
5. *सिंह, बी0वी0 एण्ड सिंह सी0* : 'क्राप कम्बीनेशन रीजन्स' 'ए रिव्यू इन मेथोडोलॉजी, उत्तर प्रदेश', भूगोल पत्रिका नवम्बर, 1954.
6. *थामस, डी0* : एग्रीकल्चर इन वेल्स ड्यूरिंग दि नेपोलियनिक वार. 1963
7. *कोपॉक, जे0टी0* : इन एग्रीकल्चर एटलस ऑफ इग्लैण्ड एण्ड वेल्स, 1964
8. *स्कॉट पीटर* : दि एग्रीकल्चरल रीजन्स ऑफ तसमानिया – " ए स्टाटिसटिकल मेजर इकोनॉमिक ज्याग्रफी वाल्यूम 33,1957,, पृ0 109.
9. *जॉन्सन, वी0एल0सी0* : क्राप कम्बीनेशन रीजन्स इन ईस्ट पाकिस्तान ज्याग्रफर, वाल्यूम 43,1958, पृ0 87.
10. *अय्यर, एन0पी0* : (1969)– "क्राप रीजन ऑफ मध्य प्रदेश – ए स्टडी इन मेथोडोलॉजी ज्याग्रफी, रिव्यू इण्डिया. 31.1, पृ01–19
11. *नेल्सन, एच0जे0* : ए सर्विस क्लैसीफिकेशन ऑफ अमेरिकन सिटीज, इकोनॉमिक ज्याग्रफी, वाल्यूम, XXXI 1955, पृ 189–210.

12. *दोई, के0* : 'दि इण्डस्ट्रियल स्ट्रक्चर ऑफ जापान्स प्रिफेक्चर्स, प्रोसीडिंग्स आई0जी0यू0 रीजनल कान्फ्रेन्स इन जापान' 1957 पृ0 310–316.

13. *बनर्जी बी0* : "चेन्जिंग क्राप लैण्ड ऑफ वेस्ट बंगाल," ज्याग्रफिकल रिव्यू ऑफ इण्डिया, वाल्यूम 24 सं.1 1964.

14. *अहमद, ए0 एण्ड सिद्दिकी, एम0एफ0* : "क्राप एसोसिएशन पैटर्न इन दि लूनी – वेसिन", दि ज्याग्रफर वाल्यूम 14, 1967.

15. *सिद्दिकी एम0एफ0* : "कम्बीनेशनल एनालिसिस – ए रिव्यू ऑफ मेथोडोलॉजी" दि ज्याग्राफर वाल्यूम X, 1967, पृ0 81–99.

16. *त्रिपाठी, वी0बी0 एण्ड अग्रवाल* : 'यू0 चेन्जिंग पैटर्न्स ऑफ क्रापलैण्ड यूज इन दि लोअर गंगा–यमुना दो आब' दि ज्याग्रफर (स्पेशल नम्बर XXXI इन्टरनेशनल ज्याग्रफिकल कांग्रेस इण्डिया 1968) पृ0 128–140.

17. *चौहान, वी0एस0* : "क्राप कम्बीनेशन इन दि जमुना– हिंडन ट्रैक", ज्याग्रफिकल आब्सर्वर वाल्यूम 1971, पृ0 66–72.

18. *शर्मा, टी0सी0* : 'पैटर्न्स ऑफ क्रापलैण्ड यूज इन उत्तर प्रदेश डकन ज्याग्रफर' वाल्यूम, जनवरी, जून 1972, पृ0 1–17.

19. *नित्यानन्द* : " क्राप कम्बीनेशन्स इन राजस्थान" ज्याग्रफिकल रिव्यू ऑफ इण्डिया वाल्यूम 34 नं0 1, 1972, पृ0 46–60

20. सांख्यकीय पत्रिका चित्रकूट धाम मण्डल, बांदा – 2001, पृ0 70.

अध्याय –7

अवसंरचनात्मक सुविधायें
(INFRA STRUCTURAL FACILITIES)

किसी भू–भाग के औद्योगिक, वाणिज्यिक, कृषिगत, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास के लिए अवसंरचनात्मक सुविधाओं का होना अत्यावश्यक है। चित्रकूट धाम मण्डल जैसे पिछड़े क्षेत्र के लिए अवसंरचनात्मक सुविधायें औद्योगिक विकास के लिए उपकरण सदृश्य हैं। अवसंरचनात्मक सुविधायें सामान के उत्पादन और सुविधाओं की कार्यकुशलता के लिए ही पर्याप्त नहीं हैं, अपितु सभी क्षेत्रों में सामान और सेवाओं के 'न्यायोचित वितरण' के लिए भी इसका विशेष महत्व है। निःसंदेह 'किसी क्षेत्र के सन्तुलित औद्योगिक विकास के लिए संस्थागत और भौतिक अवसंरचनाओं की परम आवश्यकता होती है।[1]''

अवसंरचनात्मक सुविधाओं के विकास के फलस्वरुप सारे विश्व का आकार बिल्कुल संकीर्ण हो गया है और हम प्रत्येक प्रकार की वस्तु का प्रयोग कर सकने में सक्षम हुए है, साथ ही साथ समस्त विश्व में अपने विचारों का आदान–प्रदान करने में सफल हुए हैं। अवसंरचानत्मक सुविधाओं के अंतर्गत यातायात, परिवहन, संचार, ऊर्जा, वित्तीय सुविधाएं, कृषि सेवा केन्द्रों आदि का विवरण अग्रांकित है–

7(i) यातायात या परिवहन (Transport) –

किसी प्रदेश के विकास के लिए यातायाात जाल का महत्व उसी तरह है जैसे मानव शरीर में रक्त नलिकाओं का।''[2] अतः ''एक देश के विकास के लिए यातायात तंत्र अवसंरचना का प्रबन्ध करना अत्यावश्यक है।[3]''

आर्थिक विशेषीकरण (Specialization) तथा वृहद् पैमाने पर उत्पादन परिवहन या यातायात के साधनों की सुलभता पर निर्भर है। सस्ते एवं तीव्र गति वाले साधन वर्तमान औद्योगिक तथा वैज्ञानिक युग के लिए अनिवार्य एवं अत्यन्त महत्वपूर्ण है।[4] क्षेत्र में वस्तुओं की माँग की पूर्ति के लिए पदार्थों का आयात–निर्यात, अच्छे बाजारों की स्थिति, स्थायी मानव बस्तियाँ, उद्योग धन्धों की स्थापना आदि यातायात के साधनों पर ही निर्भर करती हैं। यातायात के साधनों द्वारा ही आवश्यकतानुसार विकेन्द्रीकरण होता है, वह एक ही स्थान पर एकत्रित होकर व्यर्थ में नष्ट नहीं होने पाती है। परिवहन उत्पादन का महत्वपूर्ण अंग है। परिवहन द्वारा वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने से उसके मूल्य में वृद्धि होती है। इस प्रकार परिवहन एक प्रकार की सेवा अथवा सुविधा प्रदान करता हैं। अतः तृतीयक उत्पादन की श्रेणी में आता है। इस प्रकार *''यातायात अर्थव्यवस्था के सम्पूर्ण उपकरणों का स्विच–बोर्ड है।''*[5]

''किसी विस्तृत प्रदेश में भारी माँग और पूर्ति, अपने साथ–साथ व्यापार को बढ़ाती हैं जो यातायात की कार्य प्रणाली पर निर्भर है।''[6] इस प्रकार माँग और पूर्ति की प्रकृति द्वारा और कच्चे माल के प्रवाह की मात्रा पर परिवहन तन्त्र की संरचना निर्भर है।[7]

चित्रकूट धाम मण्डल भारत के मध्य में स्थित होने के कारण केन्दीय स्थिति के परिणाम स्वरूप औद्यागिक, व्यापारिक तथा वाणिज्यिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, परन्तु विषम धरातल के कारण यातायात के साधन अविकसित हैं। मण्डल के दक्षिणी–पूर्वी भाग में असमान पहाड़ी धरातल एवं जलधाराओं द्वारा अत्यधिक विच्छेदित पठारी भाग होने के कारण कई भागों में अभी भी यातायात का विकास पूर्ण नहीं हो पाया है।

चित्रकूट धाम मण्डल के यातायात का इतिहास –

चित्रकूट धाम मण्डल के यातायात का इतिहास उतना ही प्राचीन है, जितना कि इस क्षेत्र में सबसे पहले निवास करने वाला मनुष्य। सर्वप्रथम प्राचीनकाल में मनुष्य स्वंय ही अपना बोझ एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाता था। उसके बाद जब कुछ पशुओं को मनुष्य ने पालतू बनाया तब पशु ही परिवहन के प्रमुख साधन होने लगे। तत्पश्चात् बैलगाड़ी, घोड़ागाड़ी द्वारा परिवहन होने लगा। आज भी प्रारम्भिक आर्थिक तन्त्रों में इस प्रकार के परिवहन माध्यमों का बहुत महत्व है। बीहड़ एवं पर्वतीय क्षेत्र में खच्चर आज भी सर्वप्रमुख परिवहन के साधन हैं, परन्तु सब मिलाकर इस प्रकार के परिवहन का महत्व नगण्य हो गया है। परिवहन के आधुनिक साधनों की तुलना में परम्परागत परिवहन के साधन बहुत पीछे रह गयें हैं।

बाल्मीकि रामायण में अयोध्या से बाल्मीकि आश्रम तक के प्रादेशिक मार्ग का वर्णन मिलता है।[8] बाल्मीकि आश्रम 'चित्रकूट जनपद' के लालापुर पहाड़ी पर स्थित था। मौर्य, गुप्त, वर्धन, प्रतिहार तथा चन्देल राजाओं के समय में कई सड़कें बनवाई गयी, जो उरई, झाँसी तथा ललितपुर को भारत के अन्य भागों से जोड़ती थी। मौर्यों ने सड़कों के निर्माण तथा रखरखाव पर बहुत ध्यान दिया। कालिंजर में गुप्तकाल के दो छोटे शिला लेखों से ज्ञात होता है कि उस काल में सड़कों का विकास इस भाग में काफी किया गया। उस समय स्थल मार्ग के अतिरिक्त जल यातायात भी महत्वपूर्ण था। यमुना, केन, तथा वेतवा में नावों द्वारा यातायात होता था। वर्धन राजाओं ने हस्तनिर्मित सामान तथा व्यापार को संरक्षण दिया, जिससे इन उद्योगों का विकास होने के कारण व्यापारिक केन्द्रों की स्थापना हुई। परिणामतः कई मार्गों का निर्माण किया गया। तत्कालीन समय का वर्णन यूनानी यात्री मैंगस्थनीज ने अपनी भारत यात्रा के दौरान इस प्रकार किया है कि– 'ऊँट, घोड़ो तथा गधों का यातायात के लिए प्रयोग साधारण व्यक्तियों द्वारा किया जाता था। धनी व्यक्ति हाँथी पर यातायात करते थे तथा रथों पर जाते थे तथा ऊँट की सवारी तीसरे नम्बर पर थी।'[9]

मुगल और ब्रिटिश शासन में चित्रकूट धाम मण्डल में कई सड़कों का निर्माण हुआ। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने 1854–55 में सार्वजनिक निर्माण विभाग का संगठन सड़कों की देखरेख के लिए सभी प्रान्तों में किया गया इस समय कुछ महत्वपूर्ण सड़कों का निर्माण किया गया। इनमें से प्रथम पक्की सडक कालपी नगर को महोबा और झाँसी से तथा द्वितीय सड़क कानपुर से जोड़ती थी। सन् 1857 में ब्रिटिश काल में झाँसी से इलाहाबाद तक सड़क का निर्माण हुआ। तत्पश्चात् एक पक्की सड़क, 'फतेहपुर–बाँदा–नवगाँव' बनायी गयी जो महोबा होकर गुजरती थी, यह चिल्ला से बाँदा विभाजित थी। यह सड़क पूर्वी बुन्देलखण्ड में अति महत्वपूर्ण पक्की सड़कों में एक थी।[10]

एक अन्य महत्वपूर्ण पक्की सड़क फतेहपुर से सागर को बाँदा से होकर जाती थी।तत्पश्चात् सन् 1908 में कुछ सड़कों का निर्माण किया, जो यातायात की दृष्टि से अनुपयोगी थी। स्वतंत्रता के पश्चात् 'सड़कों के विकास के लिए एक समाकलित कार्यक्रम सन् 1951 से प्रथम पंचवर्षीय योजना के साथ प्रारम्भ किया गया।'[11]

मिर्जापुर के व्यापारियों ने बुन्देलखण्ड के प्रमुख कपास उत्पादक क्षेत्रों में अपने एजेन्ट बना रखे थे। उन दिनों यमुना नदी द्वारा नावों में राजापुर, कालपी, आगरा, और अन्य भारत के ऊपरी भागों में शक्कर, चावल और कपड़े लादकर लाते थे और बदले में कपास, और अनाज लेकर लौट जाते थे।[12]

चित्रकूट धाम मण्डल में रेलवे का इतिहास सन् 1885 से प्रारम्भ हुआ, जब इण्डियन मिडलैण्ड कम्पनी के द्वारा पहली रेल लाइन 'झाँसी से मानिकपुर' तक बिछायी गई। सन् 1914 में कानपुर –

बाँदा रेलवे लाइन का निर्माण हुआ। इनमें से एक मार्ग इटारसी से कानपुर जोड़ा गया। 31 दिसम्बर 1910 को इण्डियन मिडलैण्ड कम्पनी रेलमार्ग को 'दि ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला' रेलमार्गों के साथ मिला दिया गया।

प्रथम पंचवर्षीय योजना में भारत सरकार ने 5 नवम्बर 1951 में मध्य रेलवे जोन की स्थापना की। 'बम्बई' इस जोन का मुख्यालय था। अब यहाँ के रेलमार्ग प्रदेश को दिल्ली, आगरा, कानपुर, लखनऊ, वाराणसी, इलाहाबाद, सतना, मिर्जापुर और सागर आदि से जोड़ते हैं।

यातायात के साधन (Means of Transport) :–

चित्रकूट धाम मण्डल में यातायात के दो प्रकार के साधन हैं–

(1) स्थल यातायात – (क) सड़क यातायात (ख) रेल–यातायात

(2) जल–यातायात

(वायु यातायात इस मण्डल में उपलब्ध नहीं है।)

(1) स्थल यातायात (Land Transport) :– स्थल यातायात को दो भागों में बाँटा गया है (क) सड़क यातायात (ख) रेल यातायात। जिनकी प्रगतिशीलता एवं सांख्यकी–प्रतिरुप निम्नलिखित है :–

(क) सड़क यातायात (Road Transport) :– सड़कों और रेलमार्गों में किसका महत्व अधिक है, यह निश्चित करना अत्यन्त कठिन है। दोनों का अपने–अपने स्थान पर विशेष महत्व है। सड़कों का महत्व रेलों से कम नहीं कहा जा सकता। दोनों को एक दूसरे का पूरक कहना अनुचित न होगा। रेलगाड़ियाँ तो केवल एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन तक ही माल या यात्रियों को ले जाती है, परन्तु स्टेशनों से अन्य स्थानों और वहाँ से स्टेशनों तक ले जाने के लिए सड़कों की शरण लेनी पड़ती है।

चित्रकूट धाम मण्डल में सड़कों का वास्तविक निर्माण 'मुगल–साम्राज्य' से प्रारम्भ हुआ। लेकिन कुछ सड़कों में केवल एक ही चित्रकूट धाम मण्डल को अन्य बड़े केन्द्रों से जोड़ती थी। इस मण्डल में सड़कों का विकास स्वतन्त्रता के उपरान्त हुआ। सन् 1977 में यमुना, बेतवा तथा केन नदियों में पुल बनने के बाद सड़क–यातायात में तीव्र गति से विकास हुआ।

चित्रकूट धाम मण्डल में सडकें दृढता और बनावट की दृष्टि से दो प्रकार की हैं।

(1) पक्की सड़कें (2) कच्ची सड़कें।

पक्की सड़कों पर प्रत्येक मौसम में परिवहन होता रहता है परन्तु कच्ची सड़कें वर्षा ऋतु में बेकार हो जाती हैं। कच्ची सड़कों का भी ग्रामीण क्षेत्रों के लिए कम महत्व नहीं है क्योंकि गाँवों में खेतों से खलिहान और गाँव तक पशु–चालित बोगियों व बैलगाड़ियों द्वारा अधिकतर माल कच्ची सड़कों से होकर ही ढ़ोया जाता है।

सड़कों के महत्व और उनके निर्माण व रखरखाव के आधार पर इसे तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है :– (1) राष्ट्रीय राजमार्ग (2) प्रादेशिक राजमार्ग (3) जिले तथा गाँवों की सड़कें। (मानचित्र सं. 7–1)

FIG. 7.1
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
TRANSPORT
2001-02
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26°
N
30'
25°
24°
30'
N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
KURARA
HAMIRPUR
TO KANPUR
JASPURA
SUMERPUR
TO FATEHPUR
SARILA
GOHAND
MUSKARA
MAUDAHA
RATH
TINOWARI
BABERU
KAMASIN
KABRAI
PANWARI
BISANDA
BANDA
CHARKHARI
MAHOBA
PAHARI
RAJAPUR
FROM JHANSI
MAHUA
ATARRA
MAU
RAMNAGAR
KARWI
BARGARH
TO ALLAHABAD
JAITPUR
TO LUNDI
NARAINI
TO SAGAR
TO PANNA
MANIKPUR
INDEX
NATIONAL HIGHWAY
OTHER DISTRICT ROADS
RAILWAY LINES

(1) राष्ट्रीय राजमार्ग (**National High Ways**) :–

राष्ट्रीय राजमार्गों का निर्माण एवं रखरखाव केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (C.P.W.D.) द्वारा किया जाता है। चित्रकूट धाम मण्डल में केवल एक ही राष्ट्रीय राजमार्ग है। यह झाँसी–हरपालपुर–महोबा–बाँदा–कर्वी (चित्रकूट) – मिर्जापुर मार्ग है। इस राष्ट्रीय राजमार्ग की चित्रकूट धाम मण्डल में कुल लम्बाई 279 किमी है। जैसा कि तालिका सं. 7–1 से स्पष्ट है। यह मार्ग चित्रकूट धाम मण्डल के तीन जिलों महोबा, बाँदा, तथा चित्रकूट से होकर जाता है। इस मार्ग की सबसे अधिक लम्बाई महोबा जनपद में 129 किमी. तथा बाँदा में 67 किमी. एवं चित्रकूट में 83 किमी है।

(2) प्रादेशिक राजमार्ग (**State High Ways**) :–

इन सड़कों के निर्माण एवं रख–रखाव का कार्य राज्य सरकारें, लोक निर्माण विभाग के माध्यम से करती हैं। चित्रकूट धाम मण्डल से होकर जाने वाले प्रादेशिक राजमार्ग निम्नलिखित हैं।

(1) लखनऊ – कानपुर – बाँदा

(2) कानपुर – हमीरपुर – महोबा

(3) पनवाड़ी – राठ – उरई

(4) कानपुर – बाँदा – पन्ना

(5) कालींजर – सतना

(6) राठ – महोबा

चित्रकूट धाम मण्डल में प्रादेशिक राजमार्गों की कुल लम्बाई 456 किमी. है। सर्वाधिक बाँदा जनपद में 234 किमी. है। इसके पश्चात् हमीरपुर, चित्रकूट एवं महोबा जनपदों में क्रमशः इनकी लम्बाई 194, 21 एवं 7 किमी. है। (तालिका सं. 7–1)

(3) जिले तथा गाँवों की सड़कें (**District & Village Roads**) :–

ये सड़के गाँवों, कस्बों, और नगरों को जिला मुख्यालय से जोड़ती है। इनका निर्माण लोक निर्माण विभाग, स्थानीय निकायों – जिला पंचायत, नगर पालिका परिषद, नगर निगम, नगर पंचायत, कैण्ट, तथा अन्य विभागों के अन्तर्गत किया जाता है। चित्रकूट धाम मण्डल की प्रमुख जिले तथा गाँवों की सडके इस प्रकार है :–

(1) बाँदा–बबेरु मार्ग

(2) बबेरु–कमासिन मार्ग

(3) बाँदा–कालींजर मार्ग

(4) बाँदा–विसण्डा–ओरन–सिंहपुर मार्ग

(5) बाँदा–फतेहपुर मार्ग

(6) नरैनी–अजयगढ़ मार्ग

(7) नरैनी–अतर्रा मार्ग

(8) कर्वी–राजापुर मार्ग

(9) कर्वी–मानिकपुर मार्ग

(10) कर्वी–नादिन–राजापुर मार्ग

(11) राजापुर–छीबों–लालता रोड

(12) मानिकपुर–मारकुण्डी मार्ग

(13) राठ–मुस्करा–मौदहा मार्ग

(14) चरखारी–मुस्करा–जैतपुर मार्ग

(15) राठ–सरीला मार्ग

(16) राठ–मुस्करा–हमीरपुर मार्ग

(17) कुरारा–महोबा–कुठौंद मार्ग

(18) कुछेछा–देवगाँव मार्ग

(19) सुमेरपुर–ललपुरा मार्ग
(20) मौदहा–बांदा मार्ग
(21) इगोहटा–छानी मार्ग
(22) सुमेरपुर–सिसोलर मार्ग
(23) सुमेरपुर–पत्यौरा मार्ग
(24) गिवार–जलालपुर मार्ग
(25) मुस्करा–जलालपुर मार्ग
(26) कुन्डौरा–पौथिया मार्ग
(27) टेढ़ा–सुरौली मार्ग
(28) मौदहा–बिवार मार्ग
(29) राठ–जलालपुर मार्ग
(30) चरखारी–सूपा मार्ग
(31) पनवाड़ी–हरपालपुर मार्ग
(32) जैतपुर–नौगाँव मार्ग।

तालिका सं. 7–1 में चित्रकूट धाम मण्डल की पक्की सड़कों की लम्बाई जनपदवार अंकित है :–

तालिका सं. 7–1

चित्रकूट धाम मण्डल में पक्की सड़कों की लम्बाई (किमी. में) – 2000–01

क्र. सं.	मद	हमीरपुर जनपद	महोबा जनपद	बाँदा जनपद	चित्रकूट जनपद	मण्डल योग
1	लोक निर्माण विभाग के अन्तर्गत	–	–	–	–	–
1.1	राष्ट्रीय राजमार्ग	–	129	67	83	279
1.2	प्रादेशिक राजमार्ग	194	7	234	21	456
1.3	मुख्य जिला सडकें	111	79	102	34	326
1.4	अन्य जिला तथा ग्रामीण सड़कें	925	957	850	507	3239
	योग	1230	1172	1253	645	4300
2	स्थानीय निकायों के अन्तर्गत	–	–	–	–	–
2.1	जिला पंचायत	17	11	25	–	53
2.2	नगर निगम/ नगरपालिकापरि0 नगर पंचायत/ कैण्ट	63	37	50	6	156
	योग	80	48	75	6	209
3	अन्य विभागों के अन्तर्गत	60	–	–	–	60
	कुल योग	1370	1220	1328	651	4569

स्रोत : सांख्यकीय पत्रिका – जनपद – हमीरपुर, महोबा, बांदा, तथा चित्रकूट – 2002

चित्रकूट धाम मण्डल में कुल पक्की सड़कों की लम्बाई 4569 किमी. है। सबसे अधिक पक्की सड़कों की लम्बाई हमीरपुर जनपद में 1370 किमी. है। इसके अतिरिक्त बाँदा जनपद में 1328 किमी., महोबा में 1220 किमी. तथा चित्रकूट जनपद में सबसे कम 651 किमी. है। मण्डल में कुल छोटे बड़े बस स्टैण्ड तथा बस स्टॉप की संख्या 424 हैं। हमीरपुर जनपद में 166, महोबा जनपद में 68, बाँदा जनपद में 143 तथा चित्रकूट जनपद में 47 बस स्टैण्ड तथा बस स्टॉप है।

विकास खण्डवार पक्की सड़कों की लम्बाई तालिका सं. 7–4 में अंकित है। सबसे अधिक सड़कों की लम्बाई कबरई विकासखण्ड में 420 किमी. है तथा सबसे कम रामनगर विकासखण्ड में 66 किमी. है। इसके अतिरिक्त चरखारी में 266 किमी., पनवाड़ी में 262 किमी. मौदहा में 225 किमी., जैतपुर में 233 किमी., नरैनी में 213 किमी. है एवं बड़ोखर खुर्द में 218 किमी. है। शेष विकासखण्डों में सड़कों की कुल लम्बाई 66 किमी. से 189 किमी. के मध्य है।

सड़क घनत्व (**Road Density**) :–

तालिका सं. 7.2 में दृष्टिपात करने पर यह ज्ञात होता है कि चित्रकूट धाम मण्डल में सड़क का घनत्व प्रति 1000 वर्ग किमी. पर 307.16 किमी. है। जनपदवार सबसे अधिक पक्की सड़कों का घनत्व प्रति हजार वर्ग किमी. पर महोबा जनपद में 388.8 किमी. है। इसके अतिरिक्त हमीरपुर जनपद में प्रति हजार वर्ग किमी में 316.2 किमी., बाँदा जनपद में 216.8 किमी. है।

विकासखण्डों में सर्वाधिक सड़क घनत्व विसण्डा विकासखण्ड में प्रति हजार वर्ग किमी. 521.7 किमी. हैं। सबसे कम सड़क घनत्व मानिकपुर विकासखण्ड में सड़क घनत्व प्रति हजार वर्ग किमी. 170.3 किमी है। इसके अतिरिक्त अन्य विकासखण्डों में सड़क घनत्व प्रति हजार वर्ग किमी. कबरई में 442.2 किमी., पनवाड़ी में 423.0 किमी., राठ में 412.0 किमी., नरैनी में 390.1 किमी. कुरारा में 386.4 किमी., जैतपुर में 386.3 किमी., महुआ में 382.8 किमी. मुस्करा में 370.5 किमी., गोहाण्ड में 340.2 किमी., चरखारी में 307.3 किमी., बड़ोखर खुर्द में 324.5 किमी., कर्वी में 291.8 किमी., सुमेरपुर में 286.7 किमी., है। शेष विकास खण्डों में यह घनत्व 278.3 किमी. से 170.3 किमी. के मध्य है।

इस मण्डल के सड़क घनत्व को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है :–

(1) अति उच्च घनत्व :– प्रति हजार वर्ग किमी. 400–550 किमी.।
इसके अन्तर्गत विसण्डा, कबरई, पनवाड़ी तथा राठ विकासखण्ड सम्मिलित है।

(2) उच्च घनत्व :– प्रति हजार वर्ग किमी. 300 किमी. से 399 किमी.।
इसके अन्तर्गत नरैनी, कुरारा, जैतपुर, महुआ, मुस्करा, गोहाण्ड, बड़ोखर खुर्द तथा चरखारी विकासखण्ड सम्मिलित हैं।

(3) मध्यम घनत्व :– प्रति हजार वर्ग किमी. पर 200 किमी. से 299 किमी.।
इसके अन्तर्गत कर्वी, सुमेरपुर, बबेरु, सरीला, तिन्दवारी, मौदहा, पहाड़ी, जसपुरा तथा मऊ विकासखण्ड सम्मिलित हैं।

(4) निम्न घनत्व :– प्रति हजार वर्ग किमी. 150 किमी. से 199 किमी.।
इसके अन्तर्गत रामनगर, मानिकपुर, तथा कमासिन, विकासखण्ड, सम्मिलित हैं। इन विकासखण्डों में सड़क के निम्न घनत्व का कारण पर्वतीय स्थलाकृति, असमतल धरातल एवं नदी–नालों की अधिकता है। (मानचित्र सं. 7–2)

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि चित्रकूट धाम मण्डल में क्षेत्रफल के अनुसार सड़कों की लम्बाई बहुत कम है, जो कि यहाँ के पिछड़ेपन का प्रतीक है। सड़कों की कमी के कारण आर्थिक विकास की प्रगति मन्द है। मण्डल का विकास करने के लिए अधिक से अधिक सड़कों का निर्माण करना आवश्यक है।

Fig. : 7.2
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
BLOCKWISE ROAD DENCITY
2001-02
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
N
KM / 1000 KM²
VERY HIGH 400 - 550
HIGH 300 - 399
MODERATE 200 - 299
LOW 150 - 199
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
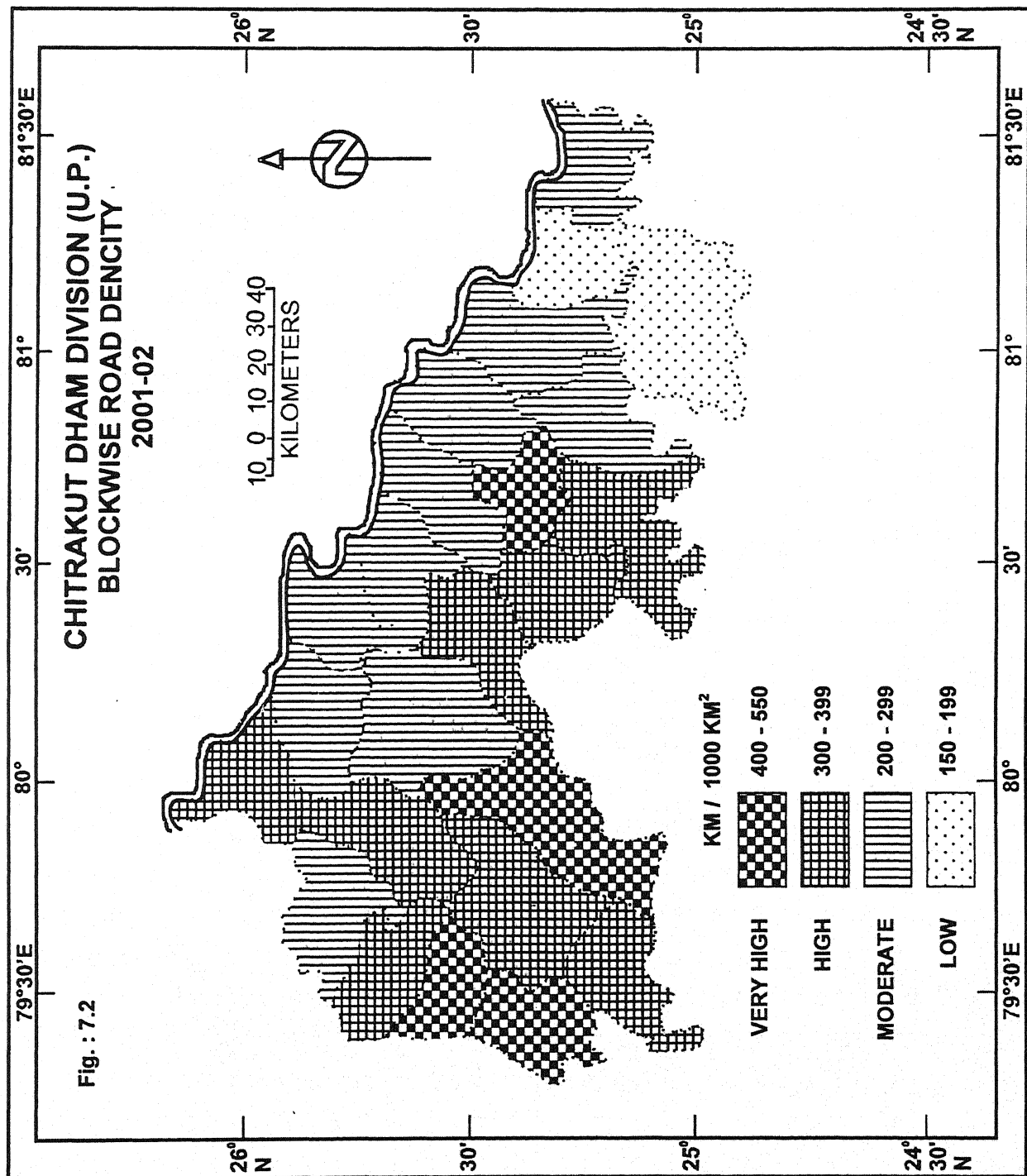
तालिका सं. 7–2

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार सड़क–घनत्व – 2000–01

क्र.सं.	विकासखण्ड	प्रति हजार वर्ग किमी. पर कुल पक्की सड़कों की लं0 (किमी.)
1	कुरारा	386.4
2	सुमेरपुर	286.7
3	सरीला	270.3
4	गोहाण्ड	340.2
5	राठ	412.0
6	मुस्करा	370.5
7	मौदहा	243.4
	जनपद हमीरपुर	316.2
8	पनवाड़ी	423.0
9	जैतपुर	386.3
10	चरखारी	307.3
11	कबरई	442.2
	जनपद महोबा	388.8
12	जसपुरा	222.3
13	तिन्दवारी	247.5
14	बड़ोखर खुर्द	324.5
15	बबेरु	278.3
16	कमासिन	193.2
17	विसण्डा	521.7
18	महुआ	382.8
19	नरैनी	390.1
	जनपद बांदा	308.6
20	पहाड़ी	230.7
21	कर्वी	291.8
22	मानिकपुर	170.3
23	रामनगर	194.7
24	मऊ	224.3
	जनपद चित्रकूट	216.8
	चित्रकूट धाम मण्डल	307.16

स्रोत : सांख्यकीय पत्रिकायें, जनपद–हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट – 2002

सड़क–जनसंख्या अनुपात (**Road Population Ratio**) :–

चित्रकूट धाम मण्डल में प्रति लाख जनसंख्या पर पक्की सड़कों की कुल लम्बाई 165.27 किमी. है, जो कि अत्यंत कम है। मण्डल में सर्वाधिक सड़कों की लम्बाई प्रति लाख जनसंख्या के पीछे महोबा जनपद में 254.4 किमी है तथा न्यूनतम लम्बाई चित्रकूट जनपद में 114.1 किमी. है। इसके अतिरिक्त हमीरपुर जनपद में प्रति लाख जनसंख्या पर सड़कों की लम्बाई 173.5 किमी. तथा बाँदा जनपद में 119.1 किमी. हैं।

तालिका सं. 7–3 से स्पष्ट है कि विकासखण्डों में सबसे अधिक सड़कों की लम्बाई प्रति लाख जनसंख्या पर चरखारी विकासखण्ड में 298.2 किमी. तथा सबसे कम कमासिन विकासखण्ड में 85.2 किमी. है। चित्रकूट धाम मण्डल के 6 विकासखण्डों में प्रति लाख जनसंख्या पर सड़कों की लम्बाई 200 किमी. से 300किमी. के मध्य है। ये विकास खण्ड चरखारी, कबरई, राठ, कुरारा, पनवाड़ी तथा जैतपुर है, जहाँ प्रति लाख जनसंख्या पर सड़कों की लम्बाई क्रमशः 298.2, 289.0, 225.9, 224.0, 221.0 तथा 209.5 किमी. है।

यहाँ के 6 विकासखण्डों में प्रति लाख जनसंख्या के पीछे सड़क की लम्बाई 140 किमी. से 200 किमी. के मध्य है। ये विकासखण्ड सरीला में (195.2 किमी.) गोहाण्ड (190.4 किमी.), मौदहा (181.1 किमी.), मुस्करा (180.6 किमी.), बड़ोखर खुर्द (165.5 किमी.) तथा मानिकपुर (148.2 किमी.) हैं।

7 विकासखण्डों में प्रतिलाख जनसंख्या के पीछे सड़क की लम्बाई 110 किमी. से 140 किमी. के मध्य हैं। ये विकासखण्ड सुमेरपुर (133.0 किमी.) नरैनी (125.3 किमी.) विसण्डा (120.9 किमी.) तिन्दवारी (119.3 किमी.), बबेरु (117.1 किमी.), जसपुरा (114.4 किमी.) तथा मऊ (110.1 किमी.)हैं।

मण्डल के 5 विकासखण्डों में प्रति लाख जनसंख्या के पीछे सड़कों की लम्बाई 85 किमी. से 110 किमी. के बीच है। ये विकासखण्ड कर्वी (108.6 किमी.) महुआ (103.7 किमी.) रामनगर (101.0 किमी.) पहाड़ी (100.4 किमी.) तथा कमासिन (85.2 किमी.) है। इन विकासखण्डों में सड़कों की लम्बाई अत्यंत कम है जिससे सड़कों पर जनसंख्या का दबाव अधिक है, फलस्वरूप जनसंख्या के अनुपात में नवीन सड़कों का निर्माण अत्यावश्यक है। (मानचित्र सं. 7–3)

निम्नलिखित तालिका स. 7–3 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार तथा जनपदवार सड़क – जनसंख्या अनुपात प्रदर्शित किया गया है :–

Fig. : 7.3
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
BLOCKWISE ROAD-POPULATION RATIO
2000-01
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
N
KM-ROAD/100000 PERSONS
LOW 85 - 110
MODERATE 110-140
HIGH 140 - 200
VERY HIGH 200 - 300
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
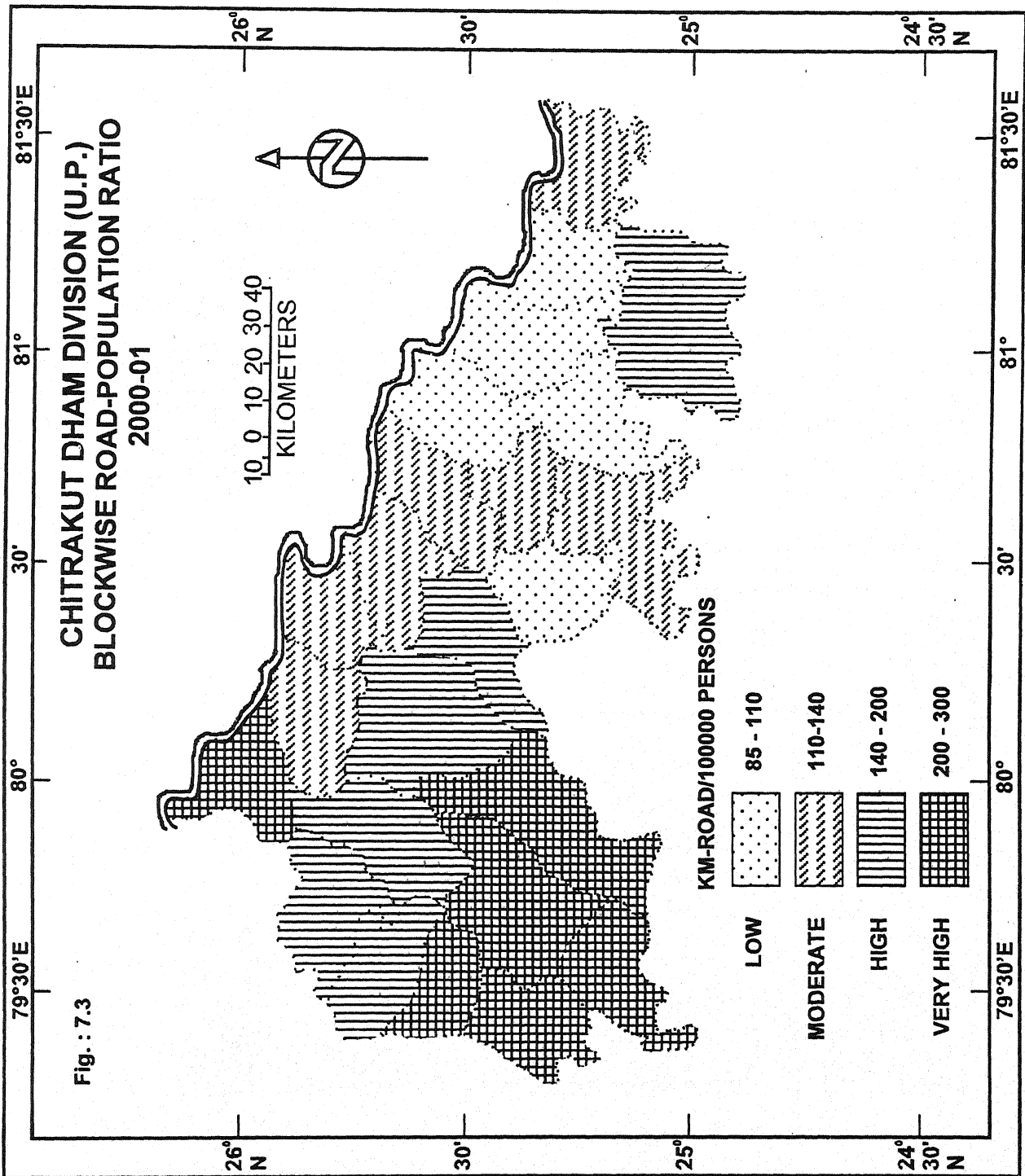
तालिका सं. 7–3

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार तथा जनपदवार सड़क जनसंख्या अनुपात 2000–01

क्र.सं.	विकासखण्ड / जनपद	प्रति लाख जनसंख्या पर कुल पक्की सड़कों की लं0 (किमी.में)
1	कुरारा	224.0
2	सुमेरपुर	133.0
3	सरीला	195.2
4	गोहाण्ड	190.4
5	राठ	225.9
6	मुस्करा	180.6
7	मौदहा	181.1
	जनपद–हमीरपुर	173.5
8	पनवाड़ी	221.0
9	जैतपुर	209.5
10	चरखारी	298.2
11	कबरई	289.0
जनपद–महोबा		254.4
12	जसपुरा	114.4
13	तिन्दवारी	119.3
14	बड़ोखर खुर्द	165.5
15	बबेरु	117.1
16	कमासिन	85.2
17	विसण्डा	120.9
18	महुआ	103.7
19	नरैनी	125.3
जनपद – बाँदा		119.1
20	पहाड़ी	100.4
21	कर्वी	108.6
22	मानिकपुर	148.2
23	रामनगर	101.0
24	मऊ	110.1
जनपद – चित्रकूट		114.1
चित्रकूट धाम मण्डल		165.27

स्रोत : सांख्यकीय पत्रिकायें, जनपद हमीरपुर, महोबा, बाँदा, चित्रकूट 2002

सुगमता (Accessibility) :–

किसी प्रदेश या क्षेत्र की सुगमता उसके सामाजिक –आर्थिक विकास की ओर संकेत करती है। मनुष्य के भौतिक विकास का यह एक महत्वपूर्ण अंग है। 'सुगमता' का अर्थ है कि "कम धन व्यय करके अल्प समय में सरलता एवं सुविधापूर्वक किसी स्थान पर पहुँचना।"

"Accessibility means the case of contact with relatively little friction" [13]

सुगमता किसी प्रदेश या क्षेत्र के लोगों का समय शक्ति एवं धन बचाता है' तथा आर्थिक–उत्पादन को एक स्थान से दूसरे स्थान में आसानी से पहुँचाने का एक महत्वपूर्ण व्यापारिक अभिकर्ता है। जिस क्षेत्र में पहुँचने में जितनी अधिक आसानी होगी वह क्षेत्र उतना ही अधिक विकसित होता जायेगा चाहे वह आर्थिक रुप से हो अथवा सांस्कृतिक या सामाजिक। अर्थात् 'सुगमता' विकास की आधारशिला है"।

"The importance of place and more particularly the case with whitch one can travel from one place to another is an essencial ingredient in an expanding economy" [14]

'सुगमता' परिवहन के माध्यम (सड़कें, रेलमार्ग, जलमार्ग, तथा वायुमार्ग) तथा साधन (मोटरगाड़ी, रेलगाड़ी, मालगाड़ी, जलायान, वायुयान आदि) के बिना सम्भव नहीं है। चित्रकूट धाम मण्डल में परिवहन के माध्यम 'सड़क' तथा 'रेल' सुगमता का वर्णन अग्रांकित है।

सड़क – सुगमता (Road Acessibility) :–

तालिका सं. 7–4 पर दृष्टिपात करने से यह ज्ञात होता है कि चित्रकूट धाम मण्डल में कुल पक्की सड़कों की लम्बाई 4569 किमी. है तथा 2130 आबाद ग्रामों में 1226 ग्राम सभी ऋतुओं में सड़कों से जुड़े हुए है, जो कुल आबाद ग्राम का 57.6% हैं। सर्वाधिक सड़क से जुड़े ग्रामों का प्रतिशत हमीरपुर जनपद में 74.1% है। यहाँ सड़कों की कुल लम्बाई 1370 किमी. है तथा सबसे कम सड़क से जुड़े ग्रामों का प्रतिशत चित्रकूट जनपद में केवल 29.9% है। यहाँ सड़कों की कुल लम्बाई मात्र 651 किमी. है। इसके अतिरिक्त महोबा जनपद में 62.8% तथा बाँदा जनपद में 64.9% ग्राम सड़क से जुड़े हुए है।

विकासखण्डों में सर्वाधिक सड़क से जुड़े ग्रामों की संख्या का प्रतिशत विसण्डा विकास खण्ड में 93.0% है तथा सबसे कम मऊ विकासखण्ड में 22.4% है। यहाँ पक्की सड़कों की कुल लम्बाई 109 किमी. है।

इसके अतिरिक्त सड़क से जुड़े ग्रामों का कुल आबाद ग्रामों से प्रतिशत मुस्करा में 80.7, कुरारा में 80.6, सुमेरपुर में 79.3, तिन्दवारी में 78.7, राठ में 76.2, कबरई में 75.4, चरखारी में 72.9 बड़ोखर खुर्द में 72.6, मौदहा में 70.8, बबेरु में 69.6, सरीला में 67.7 गोहाण्ड में 65.8, जसपुरा में 64.4, हैं।

शेष विकासखण्डों में 22.4 प्रतिशत से 56.3 प्रतिशत के मध्य है। उपर्युक्त विवेचन ये स्पष्ट है कि 80 प्रतिशत से 93 प्रतिशत के मध्य सड़क से जुड़े ग्राम वाले विकासखण्डों की संख्या 4 है– ये विकासखण्ड, विसण्डा, मुस्करा, कुरारा, तथा सुमेरपुर हैं।

70% से 79% के मध्य सात विकासखण्ड हैं– ये तिन्दवारी, राठ, कबरई, चरखारी, बड़ोखर खुर्द, मौदहा, तथा बबेरु हैं।

50% से 69% के मध्य 6 विकासखण्ड हैं – ये पनवाड़ी, नरैनी, रामनगर, मानिकपुर, पहाड़ी, कर्वी, तथा मऊ हैं। इन विकासखण्डों के विकास के लिए और गाँवों को सड़क से जोड़ना आवश्यक है।

FIG.7.4
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
ROAD ACCESSIBILITY
2001-02
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
DISTANCE
< 5 KM.
5 - 10
10 - 15
15 - 20
20 - 25
>25
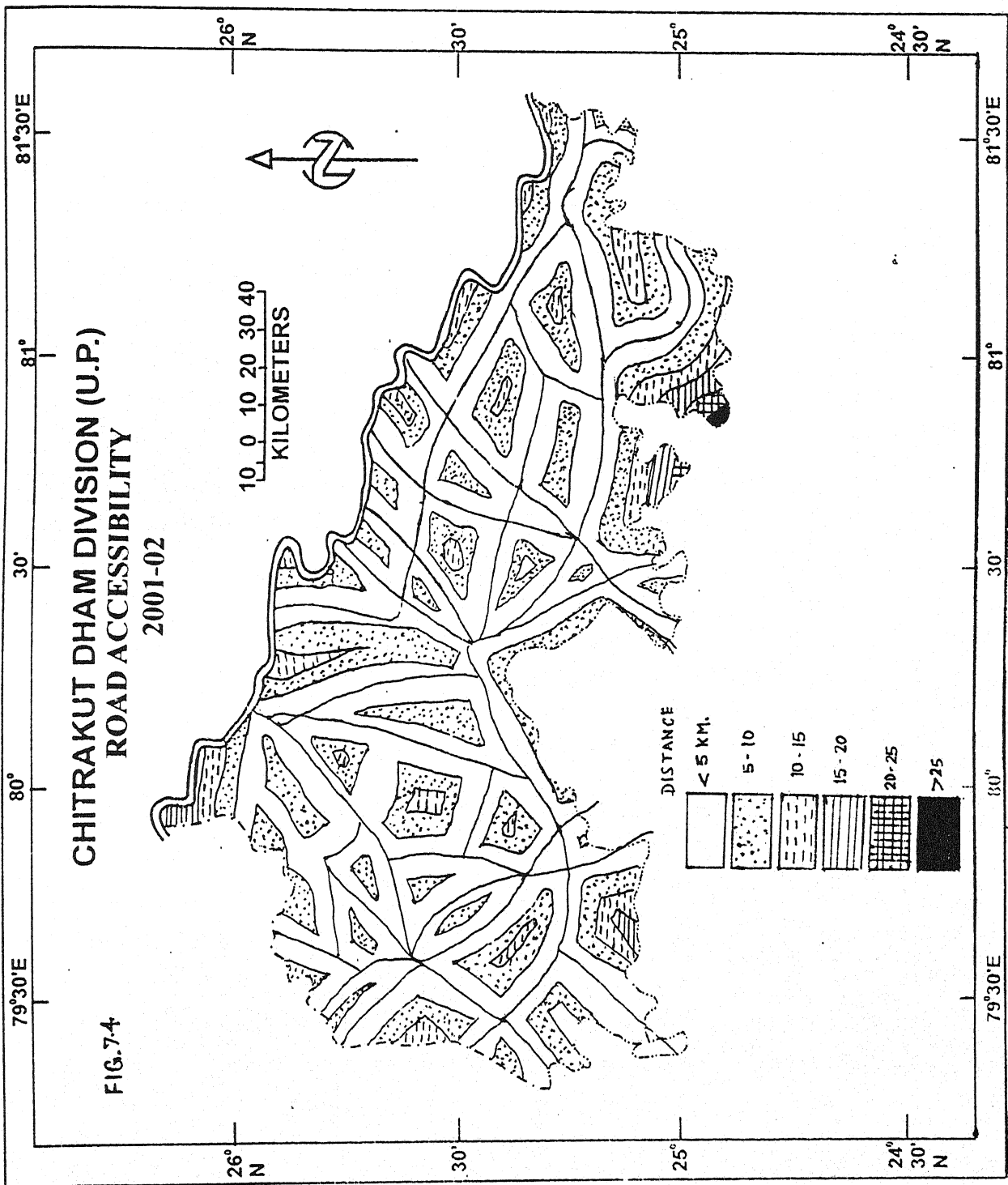
तालिका सं. 7–4

चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार पक्की सड़कों की लम्बाई तथा सब ऋतु योग्य सड़कों से जुड़े ग्रामों का आबाद ग्रामों से प्रतिशत – 2000–01

क्र.सं.	विकासखण्ड	पक्की सड़कों की कुल लं0 (किमी)	आबाद ग्रामों की संख्या	सब ऋतु योग्य सड़कों से जुड़े ग्रामों की सं.	सड़क से जुड़े ग्रामों का आबाद ग्रामों से प्रतिशत
1	कुरारा	243	62	50	80.6
2	सुमेरपुर	170	82	65	79.3
3	सरीला	176	65	44	67.7
4	गोहाण्ड	181	73	48	65.8
5	राठ	186	63	48	76.2
6	मुस्करा	189	57	46	80.7
7	मौदहा	225	89	63	70.8
जनपद–हमीरपुर		1370	491	364	74.1
8	पनवाड़ी	262	120	58	48.3
9	जैतपुर	233	104	58	55.8
10	चरखारी	266	85	62	72.9
11	कबरई	459	126	95	75.4
जनपद–महोबा		1220	435	273	62.8
12	जसपुरा	91	45	29	64.4
13	तिन्दवारी	148	80	63	78.7
14	बड़ोखर खुर्द	287	73	53	72.6
15	बबेरु	169	79	55	69.6
16	कमासिन	102	75	42	56.0
17	विसण्डा	160	57	53	93.0
18	महुआ	158	119	67	56.3
19	नरैनी	213	125	59	47.2
जनपद–बांदा		1328	653	424	64.9
20	पहाड़ी	134	124	41	33.1
21	कर्वी	171	152	37	24.3
22	मानिकपुर	171	106	38	35.8
23	रामनगर	66	71	27	38.0
24	मऊ	109	98	22	22.4
जनपद–चित्रकूट		651	551	165	29.9
चित्रकूटधाम मण्डल		4569	2130	1226	57.6

स्रोत सांख्यकीय पत्रिकायें, जनपद – हमीरपुर, महोबा, बाँदा, चित्रकूट – 2002

तालिका संख्या 7.5 तथा तालिका सं. 7.6 से स्पष्ट है कि चित्रकूट धाम में कुल 2130 गावों में से 401 गावों (18.8%) में बस स्टैण्ड या बस स्टॉप की सुविधा है। बस स्टैण्ड/स्टॉप से 1 किमी. से

कम दूरी पर 9 गाँव (0.4%), 1–3 किमी. की दूरी पर 272 गाँव (12.8%), 3–5 किमी. की दूरी पर 364 गाँव (17.1%) तथा 5 किमी. से अधिक दूरी पर 1040 गाँव (50.9%) स्थित है। इससे यह स्पष्ट है कि यह क्षेत्र अत्यन्त पिछड़ा हुआ है, जिसके विकास के लिए यातायात के साधनों का विकास करना अत्यन्त आवश्यक है।

हमीरपुर जनपद के कुल 491 गाँवों में से 159 गाँवों (32.4%) में बस स्टैण्ड या बस स्टाप की सुविधा है। 1 किमी.से कम दूरी पर 2 गाँव (0.4%) 1–3 किमी. की दूरी पर 77 गाँव (15.7%), 3–5 किमी. की दूरी पर 84 गाँव (17.1%)तथा 5 किमी. ये अधिक दूरी पर 169 गाँव स्थित हैं, जो कुल गाँव का 34.4% है।

महोबा जनपद के कुल 435 गाँवों में से 63 गाँवों (14.5%) में बस स्टाप या बस स्टैण्ड की सुविधाएँ हैं। 1 किमी. से कम की दूरी पर कोई गाँव स्थित नहीं है। 1–3 किमी. की दूरी पर 27 गाँव (6.2%), 3–5 किमी. की दूरी पर 75 गाँव (17.2%), तथा 5 किमी. से अधिक की दूरी पर 270 गाँव (62.1%) स्थित हैं।

बाँदा जनपद में कुल 653 ग्रामों में से 135 गाँव (20.7%) बस स्टैण्ड या बस स्टाप वाले हैं। बस स्टैण्ड/स्टॉप से 1 किमी. की कम दूरी पर 7 गाँव (1.1%), 1–3 किमी. की दूरी पर 102 गाँव (15.6%), 3–5 किमी. की दूरी पर 118 गाँव (18.1%), तथा 5 किसी. से अधिक दूरी 291 गाँव (44.5%) स्थित हैं।

चित्रकूट जनपद में कुल आबाद ग्रामों की संख्या 551 है, जिसमें से 44 गाँवों (8%) में बस स्टाप/बस की सुविधा है। बस रटैण्ड या बस स्टॉप से 1 किमी. से कम दूरी पर एक भी गाँव स्थित नहीं है। 1 से 3 किमी की दूरी पर 66 गाँव (12%), 3 से 5 किमी. की दूरी पर 87 गाँव (15.8%) तथा 5 किमी. से अधिक दूरी पर 354 गाँव (64.2%) स्थित हैं।

विकासखण्डों में बस स्टैण्ड या बस स्टाप वाले का सर्वाधिक प्रतिशत कुरारा में 45.2 है। तथा सबसे कम प्रतिशत मऊ विकासखण्ड में 5.1 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त राठ में 41.3%, मौदहा में 33.7, गोहाण्ड में 30.1% बड़ोखर खुर्द में 30.1%, विसण्डा में 29.8%, मुस्करा में 28.1%, सरीला में 27.7%, तिन्दवारी में 23.8%, सुमेरपुर में 23.2%, है शेष विकासखण्डों में 5.1% से 20.6% के मध्य है।

बस स्टैण्ड या बस स्टॉप से 1 किमी. से कम दूरी पर स्थित ग्रामों का प्रतिशत गोहाण्ड में 1.4%, मौदहा में 1.1%, तिन्दवारी में 6.3%, बड़ोखर खुर्द में 1.4% विसण्डा में 1.8% है। शेष विकासखण्डों में शून्य है।

1–3 किमी. की दूरी पर (बस स्टैण्ड या बस स्टॉप से) स्थित सर्वाधिक गावों का प्रतिशत, विसण्डा में 24.6%है तथा सबसे कम चरखारी में 1.2% है। इसके अतिरिक्त कुरारा में 24.2, राठ में 23.8%, गोहाण्ड में 23.3%, नरैनी में 22.4, सुमेरपुर में 19.5%, बड़ोखर खुर्द में 17.8% ग्राम बसस्टैण्ड या बस स्टॉप से 1–3 किमी. की दूरी पर स्थित हैं। शेष विकासखण्डों का प्रतिशत 16.4% से कम है।

3–5 किमी. की दूरी पर स्थित ग्रामों का सर्वाधिक प्रतिशत, जसपुरा विकासखण्ड में 28.9% है तथा सबसे कम कमासिन विकासखण्ड में 6.7% है। इसके अतिरिक्त जैतपुर में 23.1 सुमेरपुर में 21.9%, मौदहा में 21.4%, तिन्दवारी में 20%, नरैनी में 21.6%, कबरई में 20.6%, महुआ में 19.3%, मानिकपुर में 17.9%, कर्वी में 17.1% ग्राम 3–5 किमी. की दूरी पर स्थित है।

बस स्टैण्ड या बस स्टॉप से 5 किमी. से अधिक दूरी पर स्थित ग्रामों का सबसे अधिक प्रतिशत चरखारी में 81.2 है तथा सबसे कम कुरारा में 16.1% है। इसके अतिरिक्त पहाड़ी में 69.3%, मऊ में 68.4%, कमासिन में 65.3%, कर्वी में 65.1%, पनवाड़ी में 64.2%, रामनगर में 60.6%, मानिकपुर में 55.7%, जसपुरा में 55.6%, जैतपुर में 54.8%, सरीला में 53.8%, कबरई में 53.2%, मुस्करा में 52.6,

तथा बबेरु में 48.1% गाँव बस स्टैण्ड या बस स्टाप से 5 किमी. से अधिक दूरी पर स्थित है। शेष विकासखण्डों में 16.1% से 47.9% के मध्य है। (मानचित्र सं. 7.4)

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि 15 विकासखण्डों में बस स्टैण्ड या बस स्टाप के 5 किमी. से अधिक दूरी वाले ग्राम 50% से अधिक हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि चित्रकूट धाम मण्डल में यातायात – तंत्र को विकासित किए जाने की अत्यधिक आवश्यकता है।

तालिका सं. 7–5

चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार बस स्टैण्ड/स्टॉप से दूरी के अनुसार ग्रामों की संख्या – 31 मार्च 2002

क्र.सं.	विकासखण्ड/ जनपद	बस स्टैण्ड/स्टॉप वाले ग्रामों की संख्या	1 किमी. से कम	1–3 किमी.	3–5 किमी.	5 किमी. से अधिक	कुल
1	कुरारा	28	–	15	9	10	62
2	सुमेरपुर	19	–	16	18	29	82
3	सरीला	18	–	4	8	35	65
4	गोहाण्ड	22	1	17	12	21	73
5	राठ	26	–	15	9	13	63
6	मुस्करा	16	–	2	9	30	57
7	मौदहा	30	1	8	19	31	89
जनपद–हमीरपुर		159	2	77	84	169	461
8	पनवाड़ी	14	–	13	16	77	120
9	जैतपुर	17	–	6	24	57	104
10	चरखारी	6	–	1	9	69	85
11	कबरई	26	–	7	26	67	126
जनपद–महोबा		63	–	27	75	270	435
12	जसपुरा	5	–	2	13	25	45
13	तिन्दवारी	19	5	9	16	31	80
14	बड़ोखर खुर्द	22	1	13	12	25	73
15	बबेरु	15	–	13	13	38	79
16	कमासिन	14	–	7	5	49	75
17	विसण्डा	17	1	14	9	16	57
18	महुआ	23	–	16	23	57	119
19	नरैनी	20	–	28	27	50	125
जनपद–बांदा		135	7	102	118	291	653
20	पहाड़ी	9	–	9	20	86	124
21	कर्वी	8	–	19	26	99	152
22	मानिकपुर	16	–	12	19	59	106
23	रामनगर	6	–	10	12	43	71
24	मऊ	5	–	16	10	67	98
जनपद चित्रकूट		44	–	66	87	354	551
योग–मण्डल		401	9	272	364	1084	2130

स्रोत : सांख्यकीय पत्रिका, जनपद हमीरपुर, महोबा, बाँदा, चित्रकूट – 2002

तालिका सं. 7–6

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार बस स्टैण्ड/स्टॉप से दूरी के अनुसार ग्रामों की संख्या प्रतिशत में 31 मार्च 2002

क्र. सं.	विकासखण्ड	बस स्टैण्ड/स्टॉप वाले ग्राम	1 किमी. से कम	1–3 किमी.	3–5 किमी.	5किमी. से अधिक
1	कुरारा	45.2	–	24.2	14.5	16.1
2	सुमेरपुर	23.2	–	19.5	21.9	35.4
3	सरीला	27.7	–	6.2	12.3	53.8
4	गोहाण्ड	30.1	1.4	23.3	16.4	28.8
5	राठ	41.3	–	23.8	14.3	20.6
6	मुस्करा	28.1	–	3.5	15.8	52.6
7	मौदहा	33.7	1.1	9.0	21.4	34.8
जनपद हमीरपुर		32.4	0.4	15.7	17.1	34.4
8	पनवाड़ी	11.7	–	10.8	13.3	64.2
9	जैतपुर	16.3	–	5.8	23.1	54.8
10	चरखारी	7.0	–	1.2	10.6	81.2
11	कबरई	20.6	–	5.6	20.6	53.2
जनपद महोबा		14.5	–	6.2	17.2	62.1
12	जसपुरा	11.1	–	4.4	28.9	55.6
13	तिन्दवारी	23.8	6.3	11.2	20.0	38.7
14	बड़ोखर खुर्द	30.1	1.4	17.8	16.4	34.3
15	बबेरु	19.0	–	16.4	16.5	48.1
16	कमासिन	18.7	–	9.3	6.7	65.3
17	विसण्डा	29.8	1.8	24.6	15.8	28.0
18	महुआ	19.3	–	13.5	19.3	47.9
19	नरैनी	16.0	–	22.4	21.6	40.0
जनपद बांदा		20.7	1.1	15.6	18.1	44.5
20	पहाड़ी	7.3	–	7.3	16.1	69.3
21	कर्वी	5.3	–	12.5	17.1	65.1
22	मानिकपुर	15.1	–	11.3	17.9	55.7
23	रामनगर	8.5	–	14.0	16.9	60.6
24	मऊ	5.1	–	16.3	10.2	68.2
जनपद चित्रकूट		8.0	–	12.0	15.8	64.2
चित्रकूट धाम मण्डल		18.8	0.4	12.8	17.1	50.9

स्रोत : तालिका सं. 7–5 के आँकड़ों के आधार पर आंकलित

(ख) रेल यातायात (Rail Transport) :–

चित्रकूट धाम मण्डल में आवागमन के साधनों में रेलों का विशेष महत्व है। मण्डल में लगभग 40% माल का परिवहन रेलों के माध्यम से तथा 60% यात्री रेलों से यात्रा करतें हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में रेलमार्गों के निर्माण का प्रारम्भ ब्रिटिश शासन (1885 ई.) के दौरान हुआ। यहाँ उपलब्ध रेल यातायात यहाँ के लोगों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए पर्याप्त नहीं है, क्योकि चित्रकूट धाम मण्डल में इसकी कुल लम्बाई केवल 377 किमी. है।यह वर्तमान में उत्तर मध्य रेलवे (NCR) के अन्तर्गत आता है, जिसका मुख्यालय इलाहाबाद है।

इस मण्डल में निम्नलिखित रेलमार्ग है :– (मानचित्र सं. 1)

(1) इलाहाबाद – मानिकपुर – बांदा – झाँसी

(2) इलाहाबाद – मानिकपुर – कटनी

(3) बांदा – कानपुर

ये रेलमार्ग मध्य प्रदेश, पूर्वी उत्तर प्रदेश, दिल्ली, कोलकाता तथा मुम्बई को जोड़ते हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में कुल 32 रेलवे स्टेशन या हाल्ट हैं। हमीरपुर जनपद में 6, महोबा जनपद में 7, बाँदा जनपद में 7 तथा चित्रकूट जनपद में 12 रेलवेस्टेशन/हाल्ट हैं। (तालिका सं. 7.7) चित्रकूट मण्डल के 24 विकासखण्डों में से केवल 12 (50%) विकासखण्डों में ही रेलमार्ग का विस्तार है। इन विकासखण्डों में रेलमार्ग का विस्तार तालिका सं. 7.7 में अंकित है।

रेलमार्ग का सर्वाधिक विस्तार मानिकपुर विकासखण्ड में 77.05 किमी. है। मानिकपुर से कानपुर–बाँदा–मानिकपुर रेलमार्ग, झाँसी–बांदा–मानिकपुर–मुगलसराय रेलमार्ग तथा इलाहाबाद – मानिकपुर–कटनी रेलमार्ग होकर जाते हैं। अतः मानिकपुर चित्रकूट धाम मण्डल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण जंक्शन कहा जा सकतो है। इसलिए इस विकासखण्ड में रेलमार्ग का अधिक विस्तार है। रेलमार्ग की सबसे कम लम्बाई विकासखण्ड चरखारी में 8.04 किमी. है।

तालिका सं0 7.7

चित्रकूट– मण्डल में विकास खण्डवार रेलमार्गों की लम्बाई

तथा रेलवे स्टेशन संख्या –(2000–01)

क0 सं0	विकास खण्ड	रेलमार्ग की लम्बाई (किमी0 में)	रेलवे स्टेशन/ हाल्ट सं0
1	कुरारा	–	–
2	सुमेरपुर	20,00	3
3	सरीला	–	–
4	गोहाण्ड	–	–
5	राठ	–	–
6	मुस्करा	–	–
7	मौदहा	46,80	3
जनपद हमीरपुर		66,80	6
8	पनवाड़ी	20,00	1
9	जैतपुर	20,00	2
10	चरखारी	8.04	1

11	कबरई	40.16	2+1 नग0
जनपद– महोबा		88.20	7
12	जसपुरा	–	–
13	तिन्दवारी	–	–
14	बडोखर खुर्द	34.50	3+2 नग0
15	बबेरू	–	–
16	कमासिन	–	–
17	विसण्डा	–	–
18	मछुआ	24.45	1
19	नरैनी	24.90	1
जनपद– बांदा		83.85	7
20	पहाड़ी	–	–
21	कर्बी	34.30	3+2 नग0
22	मानिकपुर	77.05	5
23	रामनगर	–	–
24	मऊ	26.80	2
जनपद– बादां		83.85	7
मण्डल– योग		377.0	32

स्रोतः कार्यालय, डिवीजनल मैनेजर, उत्तर–मध्य रेलवे, झाँसी

रेल – घनत्व (Density of Rail Network) :–

चित्रकूट धाम मण्डल में रेलमार्गो का विकास या विस्तार बहुत कम हुआ है। मण्डल के 50 प्रतिशत विकासखण्डों में रेलमार्ग नहीं है। रेल घनत्व की गणना निम्नलिखित सूत्र के अनुसार की गयी है :–

$$\text{रेल घनत्व} = \frac{\text{रेल मार्ग की कुल ल0 X 1000}}{\text{क्षेत्रीय इकाई का कुल क्षेत्रफल}}$$

चित्रकूट धाम मण्डल में रेल घनत्व प्रति हजार वर्ग किमी. पर 25.35 किमी. है। सबसे अधिक रेल घनत्व प्रति हजार वर्ग किमी. पर चित्रकूट जनपद में 38.72 कि. मी. है तथा सबसे कम हमीरपुर जनपद में 16.21 किमी. है। अन्य जपनदों में रेल घनत्व प्रति हजार किमी. पर महोबा में 28.72 किमी. तथा बांदा जनपद में 20.38 किमी. है। (तालिका सं. 7.8)

विकास खण्डों में प्रति हजार वर्ग किमी. पर सर्वाधिक रेल घनत्व मानिकपुर विकास खण्ड में 76. 75 किमी. तथा सबसे कम सड़क घनत्व चरखारी विकास खण्ड में 9.29 किमी. है।

चित्रकूट मण्डल के 2 विकास खण्डों में रेल घनत्व प्रति हजार वर्ग किमी. 60 किमी. से 77 किमी. के मध्य है, जो अन्य विकास खण्डों से अधिक है। ये विकास खण्ड मानिकपुर (76.75 किमी.), तथा कर्वी (में 60.67 किमी.) है।

मण्डल के 4 विकास खण्डों में रेल घनत्व प्रति हजार वर्ग किमी. पर 50 किमी. से 60 किमी. के मध्य है। ये विकास खण्ड बडोखर खुर्द (51.36 किमी.), मऊ (55.16 किमी.), मौदहा (50.12 किमी.) एवं महुआ (59.24 किमी.) है।

FIG. 7.5
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
BLOCK WISE RAIL DENSITY
2000-01
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
KM. RAIL LENGTH/1000KM²
NIL
LOW 9-35
MODERATE 35-50
HIGH 50-60
VERY HIGH 60-77
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
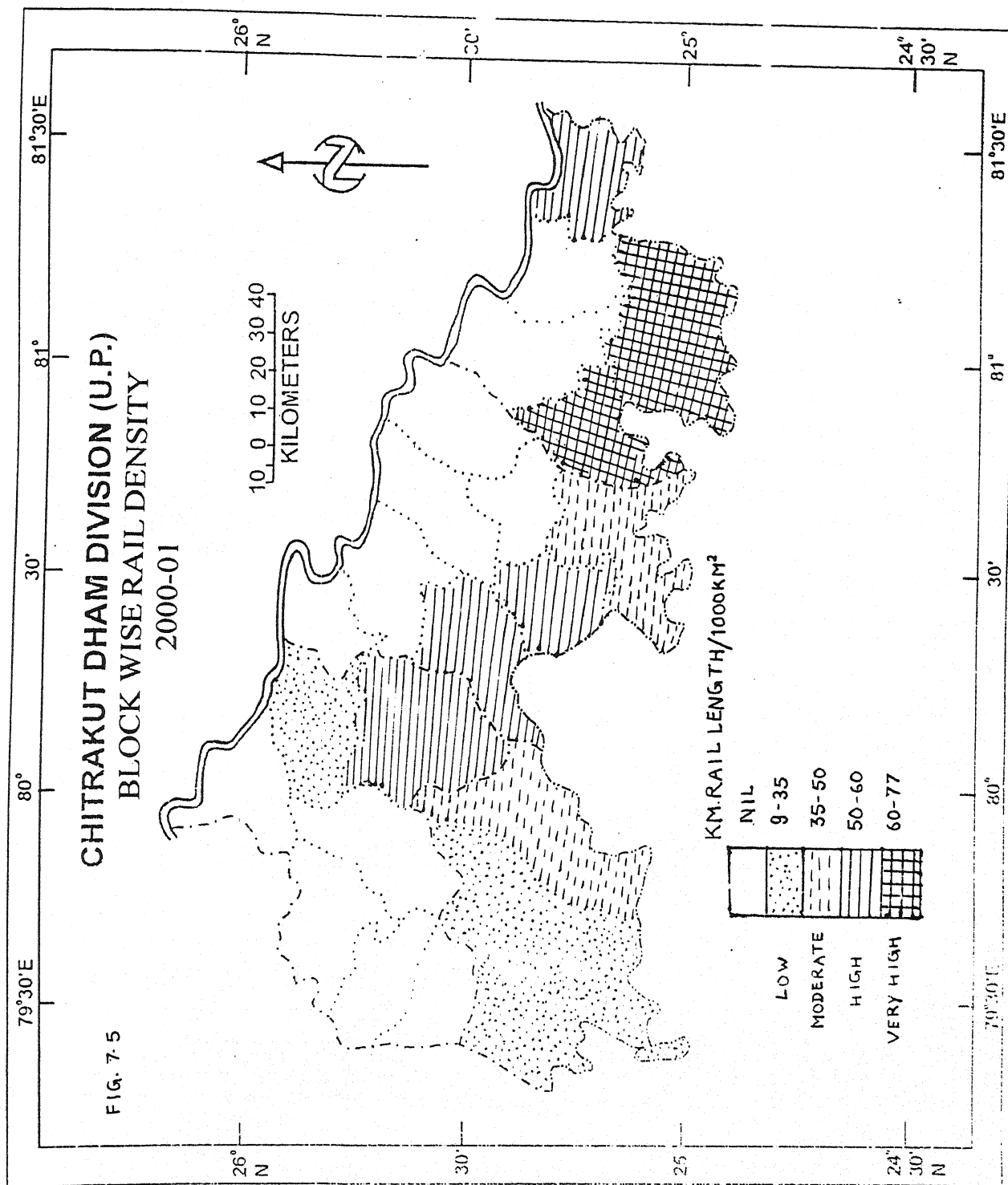
यहाँ 2 विकास खण्डों में रेलवे घनत्व 35–50 किमी. के मध्य है। ये विकास खण्ड कबरई (42. 28 किमी.), तथा नरैनी (में 46.11 किमी.) है।

4 विकास खण्डों में रेल घनत्व प्रति हजार वर्ग किमी. पर 9 किमी. से 35 किमी. के मध्य है। ये विकास खण्ड चरखारी (9.29 किमी.), पनवाड़ी (32.29 किमी.), जैतपुर (33.16 किमी.) तथा सुमेरपुर (33. 73 किमी.) है।

12 विकास खण्डों (50 प्रतिशत) में रेलमार्ग नहीं है– ये विकास खण्ड– कुरारा, सरीला, गोहाण्ड, राठ, मुस्करा, जसपुरा, तिन्दवारी, बबेरू, कमासिन, विसण्डा, पहाड़ी तथा रामनगर है। (तालिका सं. 7.8) (मानचित्र सं. 7.5)

तालिका सं. 7.8

चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार / जनपदवार रेल का घनत्व–2000–01

क्र0 स0	विकासखण्ड / जनपद	प्रति हजार वर्ग किमी. पर कुल रेलमार्ग की लं. किमी. में
1	कुरारा	–
2	सुमेरपुर	33.73
3	सरीला	–
4	गोहाण्ड	–
5	राठ	–
6	मुस्करा	–
7	मौदहा	50.62
जनपद हमीरपुर		16.21
8	पनवाड़ी	32.29
9	जैतपुर	33.16
10	चरखारी	9.29
11	कबरई	42.28
जनपद महोबा		28.72
12	जसपुरा	–
13	विन्दवारी	–
14	बड़ोखर खुर्द	51.36
15	बबेरू	–
16	कमासिन	–
17	विसण्डा	–
18	महुआ	59.24
19	नरैनी	46.11
जनपद बाँदा		20.38
20	पहाड़ी	–
21	कर्वी	60.67
22	मानिकपुर	76.75
23	रामनगर	–
24	मऊ	55.16
जनपद चित्रकूट		38.72
चित्रकूट धाम– मण्डल		25.35

स्रोत :– सांख्यकीय पत्रिका, जनपद हमीरपुर, महोबा, बाँदा, चित्रकूट 2002 के ऑकड़ो के आधार पर

रेलमार्ग तथा जनसंख्या – अनुपात (Rail & Population Ratio)

तालिका सं. 7.9 पर दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि चित्रकूट धाम मण्डल में प्रति लाख जनसंख्या पर कुल रेलमार्गो की लम्बाई 11.32 किमी. है।

सबसे अधिक रेलमार्ग की लम्बाई प्रति लाख जनसंख्या पर चित्रकूट जनपद में 22.13 किमी. है तथा सबसे कम बाँदा जनपद में 6.77 किमी. है। इसके अतिरिक्त हमीरपुर जनपद में 7.55 किमी. तथा महोबा जनपद में 15.15 किमी. है।

विकासखण्डों में सर्वाधिक रेलमार्ग की लंम्बाई प्रति लाख जनसंख्या पर मानिकपुर विकासखण्ड में (66.79 किमी.) है तथा सबसे कम चरखारी विकासखण्ड में (9.01 किमी.) है

चित्रकूट धाम मण्डल में 50किमी. से 67किमी. के मध्य केवल एक विकासखण्ड मानिकपुर में प्रति लाख जनसंख्या के पीछे 66.79 किमी. रेलमार्ग है। मानिकपुर एक महत्वपूर्ण जंक्शन है, अतः इस विकासखण्ड में रेलमार्ग अधिक हैं।

5 विकासखण्डों में प्रति लाख जनसंख्या के पीछे रेलमार्ग की लम्बाई 25 किमी. से 50_किमी. के मध्य है। ये विकासखण्ड कबरई (27.63 किमी.), मौदहा (27.26 किमी), मऊ (27.07 किमी.), सुमेरपुर में (26.35 किमी.), तथा बड़ोखर खुर्द (25.55 किमी.) है।

4 विकासखण्डों में रेलमार्ग की लम्बाई प्रति लाख जनसंख्या के पीछे 15 किमी. से 25 किमी. के मध्य हैं ये विकासखण्ड कर्वी (22.58 किमी.), जैतपुर (17.98 किमी.), पनवाड़ी (16.87 किमी.), महुआ (16.04 किमी.) हैं।

2 विकासखण्डों में रेलमार्ग की लम्बाई 9 किमी. से 15 किमी. के बीच है ये विकासखण्ड चरखारी 9.01 किमी. तथा नरैनी 14.65 किमी. है। शेष 12 विकासखण्डों में रेलमार्गों का विस्तार नहीं हैं। (मानचित्र सं. 7.6)

उपर्युक्त रेलमार्ग तथा जनसंख्या के सम्बन्ध की गणना निम्न सूत्र के द्वारा ही गयी है: जो तालिका सं. 7.9 में अंकित है।

$$\text{रेल मार्ग जनसंख्या–अनुपात} = \frac{\text{कुल रेलमार्ग की ल0} \times 100000}{\text{कुल जनसंख्या}}$$

निम्नलिखित तालिका सं. 7–9 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार तथा जनपदवार रेल – जनसंख्या अनुपात प्रदर्शित किया गया है :–

तालिका संख्या 7.9

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार/जनपदवार रेल – जनसंख्या अनुपात – 2000–01

क्र.सं.	विकासखण्ड /जनपद	प्रति लाख जनसंख्या पर रेलमार्ग की लं. (किमी.)
1	कुरारा	26.35
2	सुमेरपुर	–
3	सरीला	–
4	गोहाण्ड	–
5	राठ	–
6	मुस्करा	–
7	मौदहा	27.26
	जनपद हमीरपुर	7.55
8	पनवाड़ी	16.87
9	जैतपुर	17.98
10	चरखारी	9.01
11	कबरई	27.63
	जनपद महोबा	15.15
12	जसपुरा	–
13	तिन्दवारी	–
14	बड़ोखर खुर्द	25.55
15	बबेरु	–
16	कमासिन	–
17	विसण्डा	–
18	महुआ	16.04
19	नरैनी	14.65
	जनपद बांदा	6.77
20	पहाड़ी	–
21	कर्वी	22.58
22	मानिकपुर	66.79
23	रामनगर	–
24	मऊ	27.07
	जनपद चित्रकूट	22.13
	चित्रकूट धाम मण्डल	11.32

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें 2002 के आँकड़ों के आधार पर

FIG. 7.6
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
BLOCK WISE RAIL POPULATION
RATIO 2000-01
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
KM.RAIL/100000 PERSONS
NIL
9-15
15-25
25-50
50-67
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
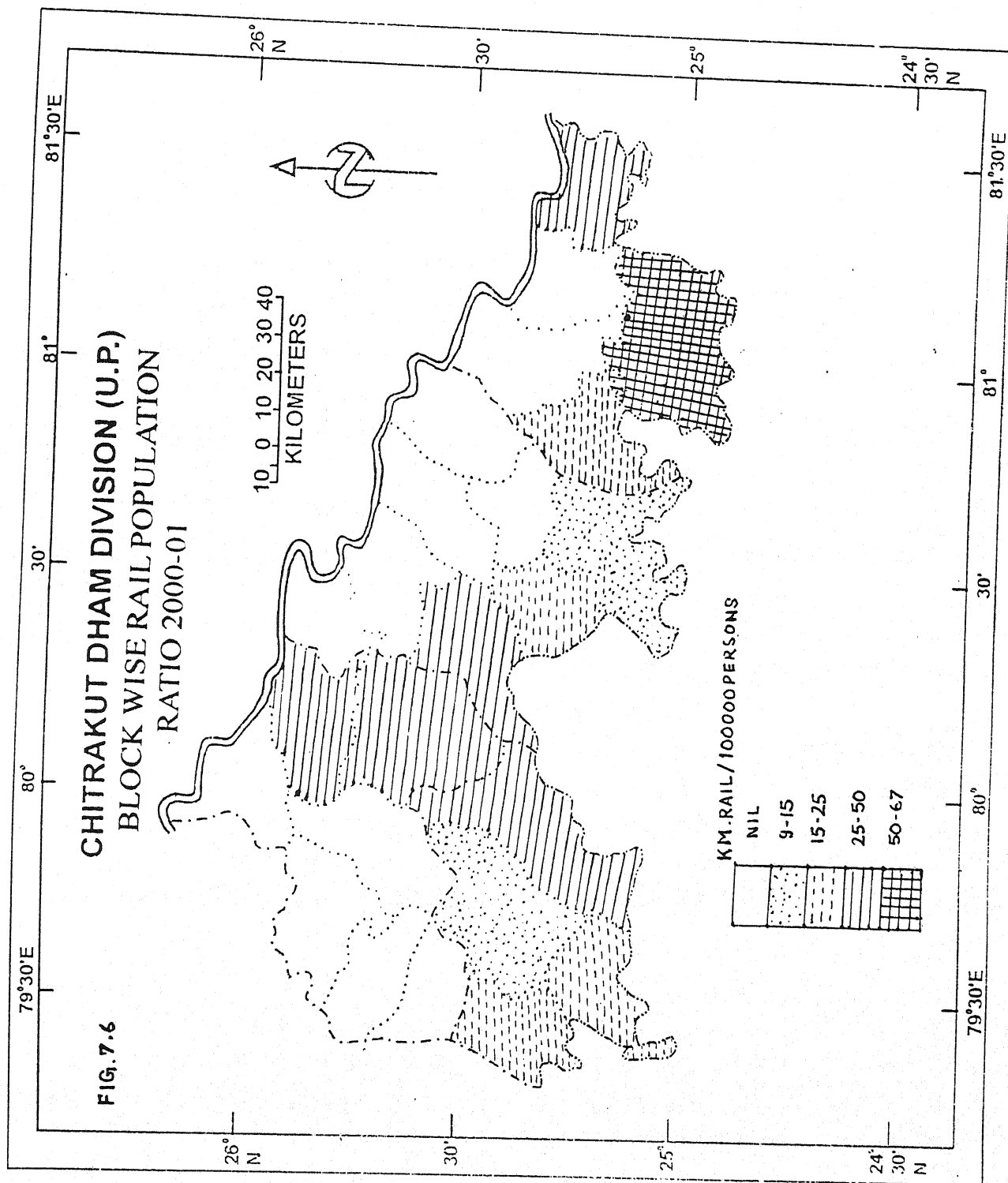
रेल – सुगमता (Rail Accessibility) :–

चित्रकूट धाम मण्डल में रेलवे स्टेशन से अधिकांश गाँव 5 किमी. से अधिक दूरी पर स्थित हैं, क्योंकि मण्डल में रेलमार्ग का विस्तार कम है। तालिका संख्या 7.10 तथा 7.11 से स्पष्ट है कि चित्रकूट धाम मण्डल में 2130 गाँवों में केवल 27 गाँवों (1.3%) में रेलवे स्टेशन/हाल्ट हैं। 3 गाँव (0.1%) रेलवे स्टेशन से एक किमी. से कम दूरी पर स्थित हैं। 46 गाँव (2.2%) 1–3 किमी. की दूरी पर स्थित हैं। 87 गाँव (4.1%) 3–5 किमी. रेलवे स्टेशन से दूर स्थित हैं। तथा 1967 गाँव (92.3%) 5 किमी. से अधिक दूरी पर स्थित हैं।

हमीरपुर जनपद में 6 गाँवों (1.2%) में रेलवे स्टेशन/हाल्ट हैं। रेलवे स्टेशन से 1 किमी. से कम दूरी पर एक भी गाँव स्थित नहीं हैं। 1–3 किमी. की दूरी पर 2 गाँव (0.4%), 3–5 किमी. की दूरी पर 16 गाँव (3.3%) 5 किमी. से अधिक दूरी पर 467 गाँव (95.1%) स्थित हैं।

महोबा जनपद में 6 गाँवों (1.4%) में रेलवे स्टेशन से 1 किमी. की दूरी पर 3 गाँव (0.7%), 3–5 किमी. की दूरी पर 10 गाँव (2.3%) तथा 5 किमी. से अधिक दूरी पर 414 गाँव (95.1%) स्थित हैं।

बाँदा जनपद में 5 ग्रामों (0.8%) में रेलवे स्टेशन की सुविधा है। रेलवे स्टेशन से 1 किमी. से कम दूरी पर मात्र 1 गाँव (0.2%), 1 से 3 किमी. की दूरी पर 13 गाँव (2.0%), 3 से 5 किमी. की दूरी पर 23 गाँव (3.5%) तथा 5 किमी. से अधिक दूरी पर 653 गाँव (93.5%) स्थित हैं।

चित्रकूट जनपद में 10 गाँवों (1.8%) में स्टेशन हैं तथा रेलवे स्टेशन से 1 किमी. से कम दूरी पर एक भी गाँव स्थित नहीं हैं। 1–3 किमी. की दूरी पर 28 गाँव (5.1%), 3 से 5 किमी. की दूी पर 38 गाँव (6.9%) तथा 5 किमी. से अधिक दूरी पर 475 गाँव (86.2%) स्थित हैं।

विकासखण्डों में गाँवों में स्थित रेलवे स्टेशन का सबसे अधिक प्रतिशत मानिकपुर विकासखण्ड में 4.7%, तथा सबसे कम पनवाड़ी, महुआ, नरैनी, विकासखण्ड प्रत्येक में 0.8%है। कुरारा, सरीला, गोहाण्ड, राठ, मुस्करा, जसपुरा, तिन्दवारी, बबेरु, कमासिन, विसण्डा, पहाड़ी, तथा रामनगर विकासखण्ड के किसी भी ग्राम में रेलवे स्टेशन/हाल्ट नहीं हैं। रेलवे स्टेशन से 1 किमी. से कम दूरी पर स्थित गाँव केवल जैतपुर विकासखण्ड में 2 गाँव (1.9%) तथा महुआ विकासखण्ड में 1 गाँव (0.8%) हैं।

1 से 3 किमी. की दूरी पर स्थित गाँवों का सर्वाधिक प्रतिशत मऊ विकासखण्ड का 11.2% है तथा सबसे कम प्रतिशत कबरई विकासखण्ड का 0.8% है। कुरारा, सुमेरपुर, सरीला, गोहाण्ड, राठ, मुस्करा, जैतपुर, चरखारी, जसपुरा, तिन्दवारी, बबेरु, कमासिन, विसण्डा, पहाड़ी, रामनगर, विकासखण्डों में इस दूरी पर एक भी गाँव स्थित नहीं हैं। 3 से 5 किमी. की दूरी पर स्थित गाँवों का सर्वाधिक प्रतिशत मऊ विकासखण्ड में 12.3% है तथा सबसे कम विसण्डा विकासखण्ड में 1.8% है। कुरारा, सरीला, गोहाण्ड, राठ, मुस्करा, चरखारी, जसपुरा, तिन्दवारी, बबेरु, कमासिन, पहाड़ी, तथा रामनगर में यह प्रतिशत शून्य है। अर्थात् 3–5 किमी. की दूरी पर कोई गाँव स्थित नहीं है।

रेलवे स्टेशन से 5 किमी. से अधिक दूरी पर कुरारा, सरीला, गोहाण्ड, राठ, मुस्करा, जसपुरा, तिन्दवारी, बबेरु, कमासिन, पहाड़ी, रामनगर, विकासखण्ड के सभी गाँव स्थित हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि यहाँ रेलमार्ग का अधिकांश हिस्सा मण्डल के दक्षिणी भाग से होकर गुजरता है। अन्य विकासखण्डों में दूरी के अनुसार ग्रामों की संख्या का प्रतिशत तालिका सं. 7.11 में अंकित है। (मानचित्र सं. 7.7)

FIG. 7.7
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
ACESSIBILITY BY RAIL - 2001-02
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
No. Name of the Station
1 Harpalpur (M.P.)
2 Ghautai
3 Belatal
4 Kulpahar
5 Charkhari Road
6 Mahoba
7 Baripura
8 Kabrai
9 Mataundh
10 Khairar Jn.
11 Banda
12 Dingwahi
No. Name of the St.
13 Khurahand
14 Atarra
15 Badausa
16 Bharatpur
17 Shiva Rampur
18 Chitrakut Dham
19 Bahil Purwa
20 Manikpur
21 Markundi
22 Tikaria
23 Itwandundaila
24 Panhai
No. Name of the St.
25 Dabhaura
26 Katya Daud
27 Bargarh
28 Ichauli
29 Akona
30 Ragaul
31 Ingohta
32 Bharua Sumerpur
33 Yamuna South Bank
Kms.
8
16
24
32
40
48
56

तालिका संख्या 7.10

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार/जनपदवार रेलवे स्टेशन/हाल्ट से दूरी के अनुसार ग्रामों की संख्या – 31 मार्च 2002

क्र0 संख्या	विकासखण्ड	ग्राम में	1 किमी. से कम	1–3 किमी.	3–5 किमी.	5 किमी. से अधिक	कुल
1	कुरारा	–	–	–	–	62	62
2	सुमेरपुर	3	–	–	8	71	82
3	सरीला	–	–	–	–	65	65
4	गोहाण्ड	–	–	–	–	73	73
5	राठ	–	–	–	–	63	63
6	मुस्करा	–	–	–	–	57	57
7	मौदहा	3	–	2	8	76	89
जनपद हमीरपुर		6	–	2	16	467	491
8	पनवाड़ी	1	–	2	4	113	120
9	जैतपुर	2	2	–	2	98	104
10	चरखारी	1	–	–	–	84	85
11	कबरई	2	–	1	4	119	126
जनपद महोबा		6	2	3	10	414	435
12	जसपुरा	–	–	–	–	45	45
13	तिन्दवारी	–	–	–	–	80	80
14	बड़ोखर खुर्द	3	–	3	5	62	73
15	बबेरु	–	–	–	–	79	79
16	कमासिन	–	–	–	–	75	75
17	विसण्डा	–	–	–	1	56	57
18	महुआ	1	1	5	8	104	119
19	नरैनी	1	–	5	9	110	125
जनपद बांदा		5	1	13	23	611	653
20	पहाड़ी	–	–	–	–	124	124
21	कर्वी	3	–	10	18	121	152
22	मानिकपुर	5	–	7	8	86	106
23	रामनगर	–	–	–	–	71	71
24	मऊ	2	–	11	12	73	98
जनपद चित्रकूट		10	–	28	38	475	551
मण्डल योग		27	3	46	87	1967	2130

स्रोतः सांख्यकीय पत्रिका, जनपद हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट 2002

तालिका सं. 7–11

चित्रकूट धाम मण्डल मे विकासखण्डवार/जनपदवार रेलवे स्टेशन/ हाल्ट से दूरी के अनुसार ग्रामों की संख्या प्रतिशत में – 31 मार्च 2002

क्र.सं.	विकासखण्ड	ग्राम में	1 किमी. से कम	1–3 किमी.	3–5 किमी.	5 किमी. से अधिक
1	कुरारा	–	–	–	–	100.00
2	सुमेरपुर	3.6	–	–	9.8	86.6
3	सरीला	–	–	–	–	100.00
4	गोहाण्ड	–	–	–	–	100.00
5	राठ	–	–	–	–	100.00
6	मुस्करा	–	–	–	–	100.00
7	मौदहा	3.4	–	2.2	9.0	85.4
जनपद हमीरपुर		1.2	–	0.4	3.3	94.1
8	पनवाड़ी	0.8	–	1.7	3.3	94.2
9	जैतपुर	1.9	1.9	–	1.9	94.3
10	चरखारी	1.2	–	–	–	98.8
11	कबरई	1.6	–	0.8	3.2	94.4
जनपद महोबा		1.4	0.5	0.7	2.3	95.1
12	जसपुरा	–	–	–	–	100.00
13	तिन्दवारी	–	–	–	–	100.00
14	बड़ोखर खुर्द	4.1	–	4.1	6.9	84.9
15	बबेरु	–	–	–	–	100.00
16	कमासिन	–	–	–	–	100.00
17	विसण्डा	–	–	–	1.8	98.2
18	महुआ	0.8	0.8	4.2	6.8	87.4
19	नरैनी	0.8	–	4.0	7.2	88.0
जनपद बांदा		0.8	0.2	0.2	3.5	93.5
20	पहाड़ी	–	–	–	–	100.00
21	कर्वी	2.0	–	6.6	11.8	79.6
22	मानिकपुर	4.7	–	6.6	7.6	81.1
23	रामनगर	–	–	–	–	100.00
24	मऊ	2.0	–	11.2	12.3	74.5
जनपद चित्रकूट		1.8	–	5.1	6.9	86.2
चित्रकूट धाम मण्डल		1.3	0.1	2.2	4.1	92.3

स्रोत : तालिका संख्या 7–10 के आँकड़ों के आधार पर

(2) जल – यातायात (water Transport) :–

इस मण्डल में मुगल शासन काल में यमुना नदी द्वारा जल यातायात का उल्लेख मिलता है उस समय कृषि एवं वन उत्पादों का यहाँ से व्यापार होता था। मिर्जापुर के व्यापारी यहाँ से कपास तथा अनाज ले जाते थे और शक्कर चावल तथा कपड़े नावों में लादकर लाते थे। स्थलमार्ग के विकास के साथ ही साथ जल– यातायात का पतन हो गया, लेकिन उन्नीसवीं शताब्दी में यान्त्रिक नावों एवं स्टीमरों के आने के साथ जल–यातायात का पुनरुत्थान हुआ।[15] बींसवी शताब्दी में स्थल–यातायात के विकास के साथ आन्तरिक जल–यातायात का विस्तार नगण्य हो गया।

यमुना तथा बेतवा नदियाँ चित्रकूट धाम मण्डल की सदावाहिनी नदियाँ हैं, जो जल–यातयात के लिए उपयुक्त हैं। यमुना नदी द्वारा जल–यातायात से दिल्ली, मथुरा, आगरा, कालपी, हमीरपुर, राजापुर, मऊ, इलाहाबाद, मिर्जापुर, वाराणसी, पटना, मुंगेर, भागलपुर, कलकत्ता तक की यात्रा की जा सकती है। यमुना नदी इलाहाबाद, में गंगा नदी से मिल जाती है। ये दानों नदियाँ (गंगा और यमुना) उत्तरी भारत में उत्तर – पश्चिम भाग को दक्षिणी–पूर्वी भाग को जोड़ने का काम करती है। अतः इन नदियों में आन्तरिक जल यातायात से कच्चेमाल एवं निर्मित माल के आयात–निर्यात से उद्योग–धन्धों का विकास किया जा सकता है।

बेतवा नदी भी बुन्देलखण्ड में आन्तरिक जल यातायात के लिए उपयुक्त सदावाहिनी नदी है। बेतवा नदी हमीरपुर के पास यमुना नदी मे मिलती है।

यातयात के विकास के लिए सुझाव :–

(1) चित्रकूट धाम मण्डल में एक भी हवाई अड्डा नहीं है अतः वायु–यातायात से अछूता है। अतः महोबा तथा चित्रकूट में हवाई अड्डा बनाकर वायु–यातयात का विस्तार किया जाना चाहिए।

(2) रेलमार्गों का विस्तार चित्रकूट धाम मण्डल में कम है अतः नए रेलमार्गों का निर्माण तथा विस्तार किया जाए। संसाधनों के समुचित विकास एवं यातायात हेतु एक रेलमार्ग महोबा–राठ–गोहाण्ड–उरई बनाया चाहिए तथा दूसरा बाँदा–तिन्दवारी–बबेरु–, कमासिन, रामनगर–मऊ–मेजा–मिर्जापुर बनाया जाना चाहिए।

(3) क्षेत्रफल तथा जनसंख्या के अनुसार चित्रकूट धाम मण्डल में सड़क मार्गों की कमी है अतः नवीन सड़कों का निर्माण किया जाय।

(4) केवल सड़कों का निर्माण करना आवश्यक नहीं हैं बल्कि, उन पर सवारी वाहन भी चलाया जाना चाहिये, जिससे लोगों को आवागमन की सुविधा प्राप्त हो सके।

(5) पुरानी सड़कों की मरम्मत की जाय तथा सड़कों को चौड़ा किया जाय।

(6) सड़कों द्वारा चित्रकूट–मण्डल के प्रत्येक गाँव को जोड़ा जाय।

(7) सड़कों द्वारा वर्ष–पर्यन्त यातायात के लिए नदियों तथा नालों पर पुल बनाए जाय।

7(ii) संचार (Communication)

"मनुष्य के संदेशों (Massages) एवं विचारों (Ideas) को एक स्थान से दूसरे स्थान पहुँचाने की प्रक्रिया को संचार की संज्ञा देते हैं तथा उन सभी साधनों को 'संचार के साधन' कहा जाता हैं, जिन माध्यमों से विचारों का आदान–प्रदान होता है।

किसी प्रदेश या क्षेत्र के आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास में संचार की महत्वपूर्ण भूमिका है। संचार सेवा जितनी कुशल होगी आर्थिक,सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास को उतना ही बढ़ावा मिलेगा। इस प्रकार संचार–व्यवस्था विकास के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ती है और यहीं तक नहीं कभी–कभी तो विकास के आगे निकलकर वह विकास का मार्ग और अधिक प्रशस्त करती है। पोस्ट और टेलीग्राफ आफिस, टेलीफोन एक्सचेंज तथा एस.टी.डी. आदि का किसी प्रदेश या क्षेत्र के औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। दूरसंचार के तीव्रगामी साधन समय, शक्ति, श्रम बचाते हैं तथा औद्योगीकरण की तीव्रता में सहायता करते हैं।

इस प्रकार आर्थिक विशेषीकरण तथा वृहत् पैमाने पर उत्पादन, परिवहन की भाँति संचार के साधनों की सुलभता पर भी निर्भर है।

चित्रकूट धाम मण्डल मे निम्नलिखित संचार सेवायें उपलब्ध हैं :–

(1) डाक सेवायें (2) तार सेवायें

(3) टेलीफोन (4) एस.टी.डी.

(5) फैक्स (6) कोरियर

चित्रकूट धाम मण्डल में (2000–01 में) कुल 517 डाकघर, 22 तारघर, 1300 पी. सी. ओ. तथा 34046 टेलीफोन सेवायें उपलब्ध हैं। हमीरपुर जनपद में 140 डाकघर, 1 तारघर, 456 पी.सी.ओ. तथा 15019 टेलीफोन सेवायें उपलब्ध हैं, जबकि महोबा जनपद में 92 डाकघर, 4 तारघर, 312 पी.सी.ओ., तथा 5949 टेलीफोन कनेक्शन हैं। बांदा जनपद में 208 डाकघर, 9 तारघर 226 पी.सी.ओ. तथा 11193 टेलीफोन की सुविधायें उपलब्ध हैं जबकि चित्रकूट जनपद में 77 डाकघर, 8 तारघर 306 पी.सी.ओ. तथा 1885 टेलीफोन संचार सेवायें कार्य कर रही हैं।

विकासखण्डों में सर्वाधिक डाकघर 35 कबरई विकासखण्ड में हैं तथा सबसे कम डाकघर रामनगर तथा कुरारा विकासखण्ड में क्रमशः 11–11 हैं। सर्वाधिक पी.सी.ओ. संख्या कर्वी विकासखण्ड में 8 हैं। टेलीफोन की संख्या सबसे अधिक मुस्करा विकासखण्ड 1151 तथा सबसे कम संख्या बबेरु विकासखण्ड में 59 है। रामनगर विकासखण्ड में एक भी टेलीफोन कनेक्शन नहीं हैं।

हमीरपुर जनपद में 140 नगरीय डाकघर 1 तारघर, 225 पी.सी.ओ., तथा 10382 टेलीफोन कनेक्शन हैं, जबकि महोबा जनपद में 8 नगरीय डाकघर, 3 तारघर 130 पी.सी.ओ. तथा 5194 टेलीफोन कनेक्शन हैं, बांदा में 16 नगरीय डाकघर, 6 नगरीय तारघर, 79 पी.सी.ओ. तथा 8993 टेलीफोन कनेक्शन है।

जनपद चित्रकूट में 3 नगरीय डाकघर, 2 नगरीय तारघर, 21 नगरीय पी.सी.ओ. तथा 1340 नगरीय टेलीफोन हैं। इसके अतिरिक्त नगरों में फैक्स तथा कोरियर की सेवायें भी उपलब्ध हैं। तालिका सं. 7–12 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार संचार सेवाओं की संख्या दर्शायी गयी है :–

तालिका संख्या 7–12

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार संचार सेवाएँ – 2000–01

क्र.सं.	विकासखण्ड	डाकघर सं.	तारघर सं.	पी.सी.ओ.	टेलीफोन सं.
1	कुरारा	11	–	44	368
2	सुमेरपुर	26	–	44	889
3	सरीला	15	–	33	317
4	गोहाण्ड	20	–	24	665
5	राठ	12	–	12	301
6	मुस्करा	17	–	26	1151
7	मौदहा	20	–	40	946
	नगरीय	11	1	225	10382
जनपद हमीरपुर		140	1	456	15019
8	पनवाड़ी	20	–	59	218
9	जैतपुर	15	1	47	233
10	चरखारी	14	–	37	148
11	कबरई	35	–	39	156
	नगरीय	8	3	130	5194
जनपद महोबा		92	4	312	5949
12	जसपुरा	21	–	12	256
13	तिन्दवारी	24	–	22	497
14	बड़ोखर खुर्द	25	–	29	118
15	बबेरु	24	–	13	59
16	कमासिन	23	1	8	280
17	विसण्डा	21	–	13	295
18	महुआ	29	1	24	245
19	नरैनी	25	1	26	450
नगरीय		16	6	79	8993
जनपद बांदा		208	9	226	11193
20	पहाड़ी	20	1	57	94
21	कर्वी	18	2	107	217
22	मानिकपुर	13	1	68	150
23	रामनगर	11	1	15	–
24	मऊ	12	1	38	84
नगरीय		3	2	21	1340
जनपद चित्रकूट		77	8	306	1885
मण्डल–योग		517	22	1300	34046

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें 2002

डाक–तारघर घनत्व :–(Density of Post and Telegraph Offices)

2002–01 के आँकड़ों के आधार पर चित्रकूट धाम मण्डल में प्रति 100 वर्ग किमी. पर (डाक तार घर) घनत्व 3.6 डाक–तारघर हैं। डाक–तार घर घनत्व की गणना निम्नलिखित सूत्र के अनुसार की गयी है

$$\text{डाक–तार घर घनत्व} = \frac{\text{डाक–तार घरों की संख्या} \times 100}{\text{क्षेत्रीय इकाई का कुल क्षेत्रफल}}$$

तालिका सं. 7–13 से स्पष्ट है कि सर्वाधिक डाक–तारघर घनत्व प्रति सौ वर्ग किमी. पर बाँदा जनपद में 5.3 डाक–तारघर हैं। सबसे कम चित्रकूट जनपद में 2.4 है।

विकासखण्डों में सर्वाधिक डाक–तारघर घनत्व महुआ विकासखण्ड में 7.3 डाक–तारघर प्रति सौ वर्ग किमी. है। सबसे कम मानिकपुर विकासखण्ड में 1.4 है। इसके अतिरिक्त प्रति 100 वर्ग किमी. पर डाक–तारघर घनत्व विसण्डा में 6.8 जसपुरा में 5.1 नरैनी में 4.8 कमासिन में 4.5 सुमेरपुर में 4.4 तिन्दवारी में 4.0 बबेरु में 4.0 गोहाण्ड में 3.8 कबरई में 3.7 बड़ोखर खुर्द में 3.7 तथा पहाड़ी में 3.6 डाक–तारघर हैं। शेष विकासखण्डों में यह घनत्व1.4 से 3.5 के मध्य है। (मानचित्र सं. 7–8)

टेलीफोन–पी.सी.ओ.घनत्व (Density of Telephone & P.C.O) :-

टेलीफोन–पी.सी.ओ. घनत्व की गणना निम्नलिखित सूत्र के अनुसार की गयी है जो तालिका 7–13 में अंकित है

$$\text{टेलीफोन–पी0सी0ओ0 घनत्व} = \frac{\text{टेलीफोन–पी0सी0ओ0 की संख्या} \times 100}{\text{क्षेत्रीय इकाई का क्षेत्रफल}}$$

चित्रकूट धाम मण्डल में (2000–01 में) टेलीफोन – पी.सी.ओ. घनत्व प्रति 100 वर्ग किमी. 237.6 टेलीफोन तथा पी.सी.ओ. हैं। सर्वाधिक टेलीफोन तथा पी.सी.ओ घनत्व प्रति सौ वर्ग किमी. पर हमीरपुर जनपद में 375.4 है तथा न्यूनतम घनत्व चित्रकूट जनपद में 61.4 हैं। इसका मुख्य कारण संचार सेवाओं का कम प्रसार तथा यहॉ के निवासियों की निर्धनता है। इसके अतिरिक्त बांदा तथा महोबा जनपद में यह घनत्व क्रमशः 277.6 तथा 203.9 है।

विकासखण्डों में सर्वाधिक टेलीफोन–पी.सी.ओ घनत्व मुस्करा विकासखण्ड में 230.7 टेलीफोन तथा पी.सी.ओ प्रति सौ वर्ग किमी. है। सबसे कम रामनगर विकासखण्ड में 4.4 है। इसके अतिरिक्त सुमेरपुर में 157.3, गोहाण्ड में 129.5, मौदहा में 106.7, विसण्डा में 100.4, कुरारा में 93.6, नरैनी में 88.1, तिन्दवारी में 86.6, राठ में 69.4, जसपुरा में 65.5, महुआ में 65.2, कर्वी में 57.3, कमासिन में 54.6, तथा सरीला में 53.8 है। शेष विकासखण्डों में यह घनत्व 46.4 से कम है। (तालिका सं. 7–13)

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर टेलीफोन– पी.सी.ओ घनत्व को चार भागों में वर्गीकृत किया सकता हैं।

(i) **अति उच्च घनत्व** :– (प्रति 100 वर्ग किमी. 150–250 टेलीफोन– पी.सी.ओ.) इसके अन्तर्गत मुस्करा तथा सुमेरपुर विकासखण्ड सम्मिलित है।

(ii) **उच्च घनत्व** :– (प्रति 100 वर्ग किमी. पर 100–150 टेलीफोन– पी.सी.ओ.) इसके अन्तर्गत गोहाण्ड, मौदहा तथा विसण्डा विकासखण्ड सम्मिलित हैं।

(iii) **मध्यम घनत्व** :– (प्रति 100 वर्ग किमी. 50–100 टेलीफोन– पी.सी.ओ.) इसके अन्तर्गत कुरारा, नरैनी, तिन्दवारी, राठ, जसपुरा, महुआ, कर्वी, कमासिन, तथा सरीला विकासखण्ड सम्मिलित हैं।

Fig. : 7.8
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
POST & TELEGRAPG OFFICES DENSITY 2000-01
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
N
PER 100Km²
< 3
3 - 4
4 - 5
5 - 6
6 - 7
7 - 8
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
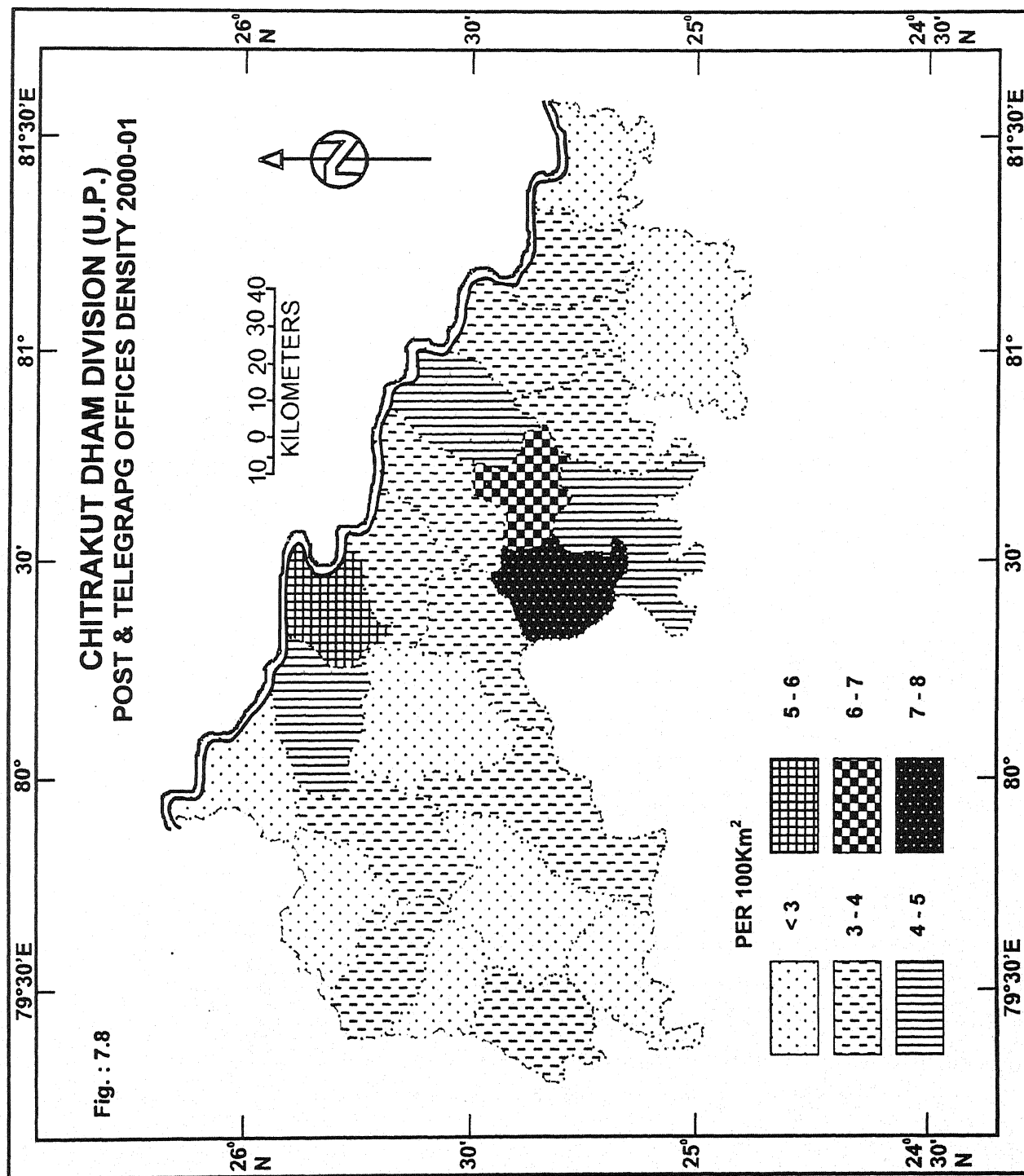
(iv) **न्यून घनत्व** :– (प्रति 100 वर्ग किमी. 50 या कम टेलीफोन– पी.सी.ओ.) इसके अन्तर्गत जैतपुर, पनवाड़ी, चरखारी, कबरई, बड़ोखर खुर्द, बबेरु, पहाड़ी, मानिकपुर, मऊ, तथा रामनगर विकासखण्ड सम्मिलित हैं। (मानचित्र सं. 7.9)

निम्नलिखित तालिका संख्या 7.13 में चित्रकूट धाम मण्छल में विकासखण्डवार संचार सेवाओं का घनत्व दर्शाया गया है।

तालिका सं. 7.13

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार/जनपदवार संचार सेवाओं का घनत्व (2000–01)

क्र.सं.	विकासखण्ड	100 वर्ग किमी. पर डाक–तारघरों की सं.	100 वर्ग किमी. पर टेलीफोन तथा पी.सी.ओ.सं.
1	कुरारा	2.5	93.6
2	सुमेरपुर	4.4	157.3
3	सरीला	2.3	53.8
4	गोहाण्ड	3.8	129.5
5	राठ	2.7	69.4
6	मुस्करा	3.3	230.7
7	मौदहा	2.2	106.7
जनपद हमीरपुर		3.4	375.4
8	पनवाड़ी	3.2	44.7
9	जैतपुर	2.7	46.4
10	चरखारी	1.6	21.4
11	कबरई	3.7	20.5
जनपद महोबा		3.1	203.9
12	जसपुरा	5.1	65.5
13	तिन्दवारी	4.0	86.6
14	बड़ोखर खुर्द	3.7	21.9
15	बबेरु	4.0	12.0
16	कमासिन	4.5	54.6
17	विसण्डा	6.8	100.4
18	महुआ	7.3	65.2
19	नरैनी	4.8	88.1
जनपद बांदा		5.3	277.6
20	पहाड़ी	3.6	26.0
21	कर्वी	3.5	57.3
22	मानिकपुर	1.4	21.7
23	रामनगर	3.5	4.4
24	मऊ	2.7	25.1
जनपद चित्रकूट		2.4	61.4
चित्रकूट धाम मण्डल		3.6	237.6

स्रोतः– जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकाएं, 2002

Fig. : 7.9
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
TELEPHONE AND P.C.O. DENSITY
2000-01
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26°
N
30'
25°
24°
30'
N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
N
PER 100 KM²
VERY HIGH
150 - 250
HIGH
100 - 150
MODERATE
50 - 100
LOW
< 50
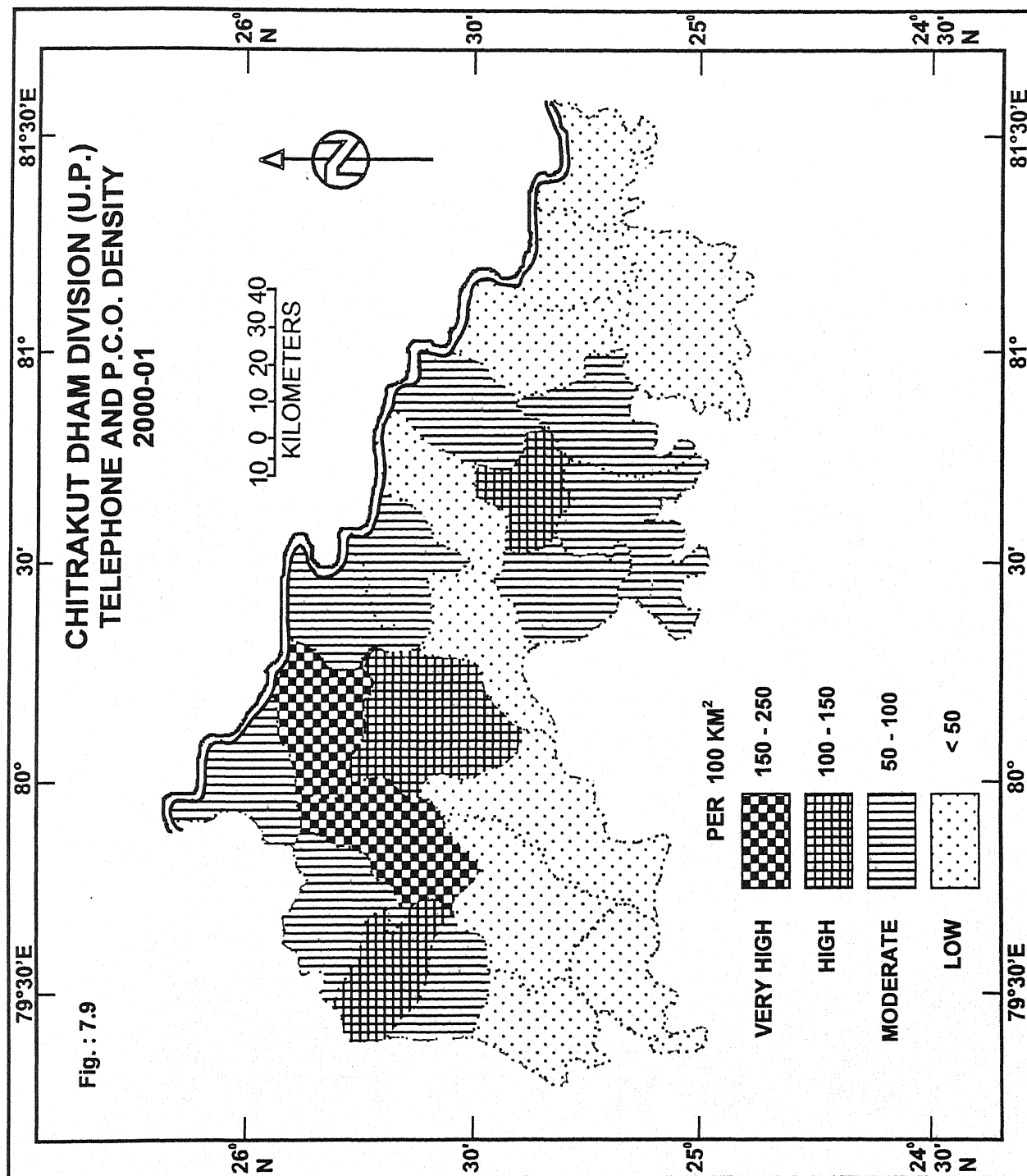
संचार – सुलभता

संचार सुलभता का आशय कम धन व्यय करके अल्प समय में आसानी से संचार सुविधाएँ प्राप्त करना है। *संचार – सुलभता किसी नगर या गाँव के आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास की आधार–शिला है।* निम्नलिखित सारणियों में संचार सुविधाओं से दूरी के अनुसार ग्रामों का विवरण अंकित है :–

तालिका सं. 7.14

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार डाकघर से दूरी के अनुसार ग्रामों की संख्या :–

31 मार्च 2002

क्र.सं.	विकासखण्ड	ग्राम में	1 किमी. से कम	1–3 किमी.	3–5 किमी.	5 किमी. से अधिक	कुल
1	कुरारा	11	–	13	11	27	62
2	सुमेरपुर	26	–	24	23	9	82
3	सरीला	15	–	8	24	18	65
4	गोहाण्ड	20	2	15	22	14	73
5	राठ	12	–	13	17	21	63
6	मुस्करा	17	–	9	19	12	57
7	मौदहा	28	1	17	30	13	89
जनपद हमीरपुर		129	3	99	146	114	491
8	पनवाड़ी	20	1	29	24	46	120
9	जैतपुर	15	–	6	19	64	104
10	चरखारी	14	–	1	8	62	85
11	कबरई	35	–	10	20	61	126
जनपद महोबा		84	1	46		233	435
12	जसपुरा	21	3	4	14	3	45
13	तिन्दवारी	24	6	14	27	9	80
14	बड़ोखर खुर्द	25	3	14	18	14	73
15	बबेरु	24	4	9	20	21	79
16	कमासिन	23	5	16	23	8	75
17	विसण्डा	21	3	8	17	8	57
18	महुआ	29	6	37	22	25	119
19	नरैनी	25	1	26	38	35	125
जनपद बांदा		192	31	128	179	123	653
20	पहाड़ी	20	–	22	42	40	124
21	कर्वी	18	–	25	52	57	152
22	मानिकपुर	13	–	13	27	53	106
23	रामनगर	11	–	13	20	27	71
24	मऊ	12	–	19	19	48	98
जनपद चित्रकूट		74	–	92	160	225	551
मण्डल –योग		479	35	365	556	695	2130

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

तालिका सं. 7.15

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार सार्वजनिक टेलीफोन से दूरी के अनुसार ग्रामों की संख्या = 31 मार्च 2002

क्र. सं.	विकासखण्डवार	ग्राम में	1 किमी. से कम	1–3 किमी.	3–5 किमी.	5 किमी. से अधिक	कुल
1	कुरारा	44	–	8	7	3	62
2	सुमेरपुर	44	–	13	12	13	82
3	सरीला	33	–	3	11	18	65
4	गोहाण्ड	24	–	1	–	48	73
5	राठ	12	–	4	5	42	63
6	मुस्करा	25	–	4	9	19	57
7	मौदहा	48	–	5	13	23	89
जनपद हमीरपुर		230	–	38	57	166	491
8	पनवाड़ी	48	–	8	10	54	120
9	जैतपुर	28	–	3	5	68	104
10	चरखारी	9	–	–	2	74	85
11	कबरई	38	–	4	14	70	126
जनपद महोबा		123	–	15	31	266	435
12	जसपुरा	12	–	4	9	20	45
13	तिन्दवारी	22	2	4	19	33	80
14	बड़ोखर खुर्द	29	1	4	11	28	73
15	बबेरु	13	–	3	5	58	79
16	कमासिन	8	–	4	10	102	124
17	विसण्डा	13	–	4	7	33	57
18	महुआ	24	–	10	24	61	119
19	नरैनी	26	1	16	17	65	125
जनपद बांदा		147	4	46	96	360	653
20	पहाड़ी	8	–	4	10	102	124
21	कर्वी	11	–	15	22	104	152
22	मानिकपुर	6	–	9	9	82	106
23	रामनगर	7	–	7	11	46	71
24	मऊ	9	–	9	14	66	98
जनपद चित्रकूट		41	–	44	66	400	551
मण्डल–योग		541	4	143	250	1192	2130

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

7(iii) ऊर्जा (Energy)

ऊर्जा से तात्पर्य शक्ति के साधनों से है, जिनका उपयोग कल कारखानों को चलाने, यातायात के साधनों तथा अन्य घरेलू उपयोगों में किया जाता है। किसी प्रदेश की औद्योगिक उन्नति के लिए चालक शक्ति का होना नितान्त आवश्यक है। ऊर्जा संसाधनों से युक्त प्रदेश ही आज उन्नति शील एवं शक्तिशाली माना जाता है। ऊर्जा स्रोत दो प्रकार के माने जाते हैं

(1) **परम्परागत ऊर्जा स्रोत** – जैसे कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, एवं जल।

(2) **वैकल्पिक या गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत** – सूर्य–शक्ति, पवन शक्ति, ज्वारीय शक्ति, बायोगैस, बायोमास। ऊर्जा संसाधनों को नवीन वर्गीकरण के अनुसार निम्नांकित दो वर्गों में रखा जा सकता है :–

(1) नव्यकरणीय या अक्षय स्रोत – वे स्रोत जो बार–बार काम में लाये जाये सकते हैं या समाप्त नहीं होते, वे नव्यकरणी स्रोत कहे जाते है जैसे जलशक्ति, वायुशक्ति, सौर शक्ति एवं ज्वारीय शक्ति।

(2) अनव्यकरणीय या क्षयी ऊर्जा स्रोत – ऊर्जा के वे स्रोत जो क्षय हो जाते है एवं जो एक बार ही काम में लाये जा सकते हैं। उन्हें अनव्यकरणी ऊर्जा के स्रोत कहते है, जैसे– कोयला, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस आदि।

चित्रकूट धाम मण्डल में ऊर्जा के प्रमुख स्रोत जल एवं ताप विद्युत हैं। यातायात एवं कृषि क्षेत्र में डीजल ऊर्जा के रुप में महत्वपूर्ण है। प्राकृतिक गैस तथा गोबर गैस (बायोगैस) का प्रयोग खाना पकाने और घरों में रोशनी करने के लिए किया जा रहा है। गैर विद्युतीकृत ग्रामीण क्षेत्रों में सौर ऊर्जा का उपयोग किया जा रहा है। सोलर कुकर बहुत लोकप्रिय नहीं हो पाये फिर भी इसका प्रयोग कुछ परिवारों में किया जा रहा है।" गैर परम्परागत (पुनरुपयोगी) ऊर्जा स्रोत अपनी अक्षम प्रकृति और पर्यावरण के अनुकूल विशेषता के कारण स्थायी ऊर्जा विकास का आधार उपलब्ध करा सकते हैं।" [15]

ऊर्जा के मुख्य स्रोत पेट्रोलियम एवं प्रकृतिक गैस का उत्पादन इस मण्डल में नहीं होता। बिहार, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ की कोयला खानों से प्राप्त कोयले का प्रयोग रेलइंजन चलाने और विभिन्न घरेलू–उद्देश्यों के लिए होता है। प्रदेश में पेट्रोलियम माँग की पूर्ति 'बरौनी–कानपुर' पाइप लाइन द्वारा होती है। ऊर्जा का प्रमुख स्रोत जलविद्युत शक्ति है, जिसका प्रयोग घरेलू और औद्योगिक क्षेत्रों में होता है। चित्रकूट धाम मण्डल में जलविद्युत शक्ति आपूर्ति का मुख्य स्रोत माताटीला बहुउद्देशीय योजना है।

(क) जल विद्युत शक्ति (Hydro Electricity) :–

ऊर्जा सर्वेक्षण समिति (Energy Survey Committee) के अनुसार शक्ति के सभी साधनों में जल विद्युत उत्पादन की लागत प्रति किलोवाट घण्टा (रिपोर्ट के समय) केवल 3 पैसे, ताप विद्युत (कोयले से) लागत 6 से 7 पैसे तथा परमाणु ऊर्जा की लागत 6 पैसे प्रति किलोवाट घण्टा बताई गई है। आज भी जलविद्युत की लागत अन्य सभी साधनों की अपेक्षा सबसे कम बैठती है।

चित्रकूट धाम मण्डल में बेतवा नदी पर बने हुए माताटीला बहुउद्देशीय योजना से जलविद्युत आपूर्ति होती है। इसकी क्षमता 30 मेगावाट है। यह मण्डल मिर्जापुर जिले के रिहन्द बाँध परियोजना के ग्रिड – सिस्टम से भी जुड़ा हुआ है।

(ख) ताप विद्युत शक्ति (Thermal Power) :–

जलविद्युत का उत्पादन मानसून की स्थिति पर निर्भर होने के कारण ताप विद्युत ही विश्वसनीय और सतत शक्ति का महत्वपूर्ण स्रोत है। चित्रकूट धाम मण्डल में ताप विद्युत गृह स्थापित नहीं है। यहाँ पनकी ताप विद्युत गृह कानपुर से ताप विद्युत की आपूर्ति की जाती है।

(ग) डीजल शक्ति (Diesel Power) :–

डीजल का प्रयोग, रेलवे इंजन चलाने, मोटर इंजन और खेतों की सिंचाई हेतु पम्पिंग–सेट चलाने के लिए होता है। चित्रकूट धाम मण्डल में डीजल आपूर्ति का मुख्य स्रोत बरौनी कानपुर पाइप लाइन है। चित्रकूट धाम मण्डल में खनिज–तेल का उत्पादन नहीं होता है।

(घ) सौर ऊर्जा (Solar Energy) :–

सूर्य ऊर्जा का अक्षय साधन है। चित्रकूट धाम मण्डल में प्रतिवर्ष तीन सौ दिन धूप निकलती है। प्रति वर्ग किमी. इलाके में 20 मेगावाट सौर बिजली का उत्पादन किया जा सकता है। इस समय सौर ऊर्जा को दो भिन्न माध्यमों से प्रयोग में लाया जा रहा है। ''सौर तापीय माध्यम'' एवं ''फोटोवोल्टेइक माध्यम।''

सौर ऊर्जा को सौर संग्राहकों और रिसीवरों की सहायता से ताप–ऊर्जा में बदला जा सकता है। मण्डल में ताप–ऊर्जा की बढ़ती माँग को देखते हुए और ताप–यन्त्रों के उपयोग की व्यापक संभावनाएँ विद्यमान हैं। सौर ताप यन्त्रों का उपयोग पानी गरम करने, कमरे गरम करने, खाना पकाने, सुखाने, पानी को लवणयुक्त करने, औद्योगिक ताप प्रक्रिया, औद्योगिक तथा विद्युत उत्पादन उपयोगो के लिए वाष्प उत्पन्न करने और रेफ्रीजरेशन प्रणालियों के परिचालन आदि के लिए किया जाता है।

चित्रकूट धाम मण्डल में कुछ परिवारों में सन्दूकनुमा सौर कुकर का प्रयोग किया जा रहा है, किन्तु मण्डल में इनका उत्पादन नहीं होता। सौर फोटोवाल्टेक प्रौद्योगिकी से सौर विकिरण को बिजली में बदलने में मदद मिलती है। इसमें टरबाइन आदि जैसे चालक पुर्जों के प्रयोग की आवश्यकता नहीं होती है। 'फोटोवाल्टेक प्रणालियाँ' न केवल प्रकाश जल पम्पिंग और दूरसंचार जैसे प्रयोजनों के लिए बल्कि गाँवों, अस्पतालों, अस्थायी गृहों आदि की बिजली सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने के वाले विद्युत संयंत्रों के लिए भी उपयोगी ऊर्जा स्रोत के रुप में उभरी हैं। चित्रकूट धाम मण्डल के गैर विद्युतीकृत ग्रामीण क्षेत्रों में सौर ऊर्जा से कई घरों में बिजली की सुविधा की जा रही है तथा सौर लालटेनों का प्रयोग भी किया जा रहा है।

(ङ.) बायोगैस (Bio-Gas) :– परिवारों के लिए बायोगैस संयन्त्रों को बढ़ावा देने के लिए 'राष्ट्रीय बायोगैस विकास परियोजना' सन् 1981–82 में की गयी थी। इसका उद्देश्य गाँवों में स्वच्छ तथा सस्ते ऊर्जा स्रोत उपलब्ध कराना, जैविक खाद तैयार करना, सफाई तथा स्वच्छता की स्थिति सुधारना और स्त्रियो को उबाऊ काम से मुक्ति दिलाना है। इस कार्यक्रम की सबसे उल्लेखनीय विशेषता यह है कि ग्रामवासी गोबर, रसोई के कचरे, जलकुंभी आदि सड़ने वाले जैव पदार्थों के साथ–साथ मानव की विष्टा को भी भराई सामाग्री के रुप में स्वीकार करने लगे हैं।

ग्रामीण इलाकों में बायोगैस प्रौद्योगिकी के प्रयोग को बड़े पैमाने पर प्रचलित करने के लिए मंत्रालय उपभोक्ताओं को वित्तीय सब्सिडी तथा वित्तीय प्रोत्साहन देने के साथ–साथ उद्यमियों, निगमित निकायों और गैर–सरकारी संगठनों को भी पहले तीन वर्षों तक निःशुल्क रखरखाव और सर्विसिंग वारंटी

Fig. : 7.10
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
BIO-GAS PLANTS DENSITY – 2001-02
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
PER 100 KM²
< 30
30 - 40
40 - 50
50 – 60
60 - 70
70 - 80
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
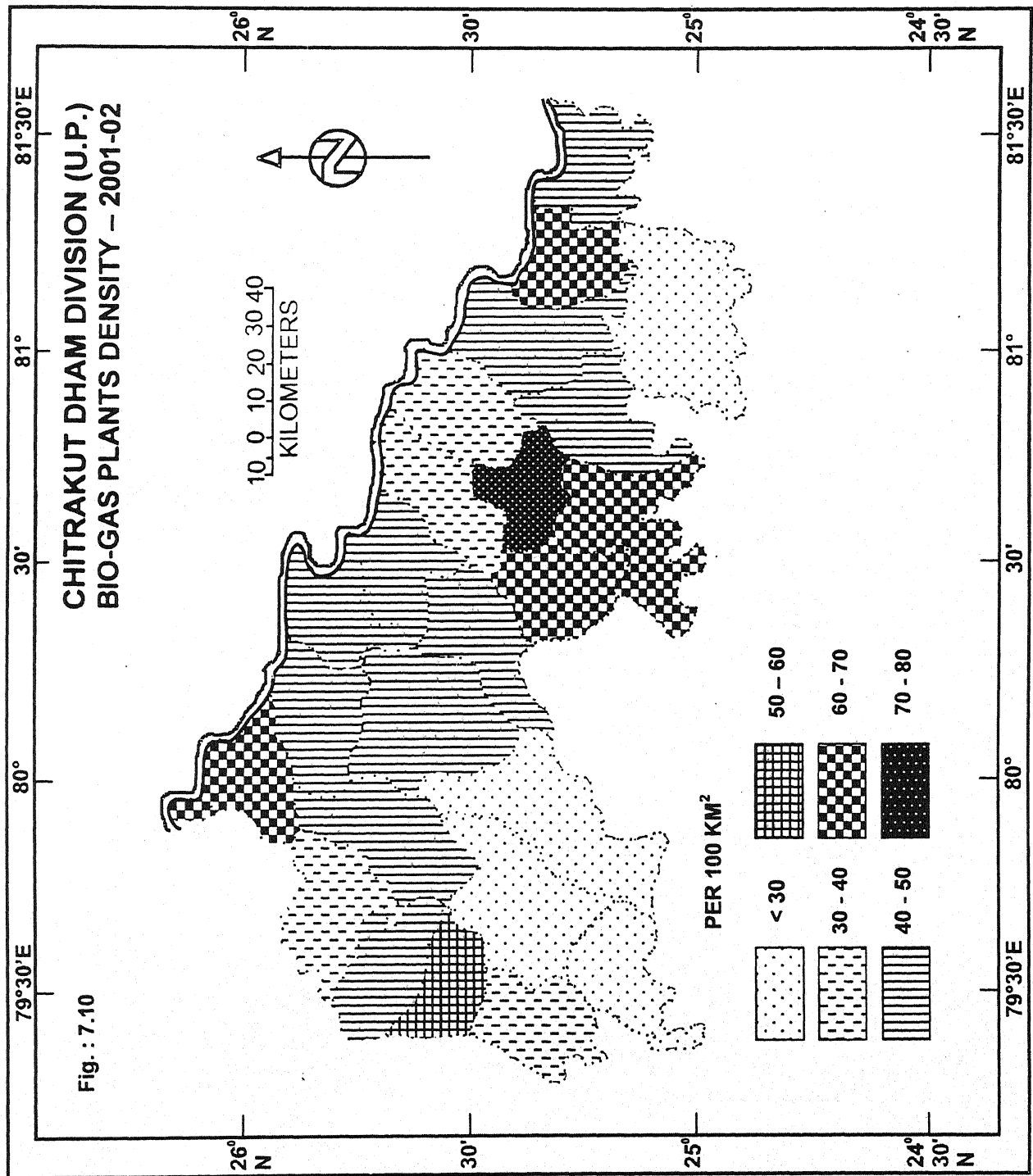
सहित 'टर्न' के आधार पर बायोगैस संयत्रों की स्थापना के लिए वित्तीय सहायता प्रदान कर रहा है। कृषि प्राथमिकता क्षेत्र योजनाओं के अंतर्गत बायोगैस संयन्त्रों की स्थापना के लिए वाणिज्यिक और सहकारी बैंक ऋण उपलब्ध करा रहे हैं। राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक बायोगैस संयंत्रों के लिए वितरित की जाने वाली राशि के लिए बैंकों को स्वतः पुनर्वित्त सुविधा प्रदान कर रहा है।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2001–02 में कुल मिलाकर 5779 बायेगैस संयन्त्र स्थापित किये गये हैं। हमीरपुर जनपद में 1853, महोबा जनपद में 864, बांदा जनपद में 1930 तथा चित्रकूट जनपद में 1128 बायोगैस संयंत्र स्थापित किये गये। निम्नलिखित तालिका सं. 7.16 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार बायोगैस संयन्त्रों का वितरण एवं घनत्व दर्शाया गया है : (मानचित्र 7.10)

तालिका सं. 7.16

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार बायोगैस संयन्त्रों का वितरण एवं घनत्व 2001–02

क्र. स.	विकास खण्ड/जनपद	वायोगैस संयन्त्र संख्या	घनत्व प्रति100 वर्ग किमी.
1	कुरारा	272	61.8
2	सुमेरपुर	264	44.5
3	सरीला	216	33.2
4	गोहाण्ड	266	50
5	राठ	248	54.9
6	मुस्करा	208	40.8
7	मौदहा	379	41
जनपद	हमीरपुर	1853	44.9
8	पनवाड़ी	235	37.9
9	जैतपुर	179	29.7
10	चरखारी	231	26.7
11	कबरई	223	23.5
जनपद	महोबा	868	28.3
12	जसपुरा	191	46.7
13	तिन्दवारी	252	42.1
14	बडोखर खुर्द	292	43.5
15	बबेरू	198	32.9
16	कमासिन	169	32
17	विसण्डा	244	79.6
18	महुआ	248	60.1
19	नरैनी	336	62.2
जनपद	बॉदा	1930	46.9
20	पहाड़ी	251	43.2
21	कर्वी	263	46.5
22	मानिकपुर	183	18.2
23	रामनगर	222	65.5
24	मऊ	209	43
जनपद चित्रकूट		1128	— 31.6
मण्डल		5779	38.9

स्रोतः जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें 2002

चित्रकूट–धाम मण्डल में जलविद्युत शक्ति का वितरण और उपभोगः –

चित्रकूट–धाम मण्डल में माताटीला और रिहन्द बहु–उद्देशीय परियोजनाओं द्वारा उत्पादित जल विद्युत शक्ति का वितरण विभिन्न क्षमता वाली ट्रान्समिसन लाइन्स द्वारा होता है। मण्डल में तीन प्रकार की लाइन्स द्वारा जलविद्युत शक्ति का वितरण होता है। सबसे अधिक क्षमतावाली 220 के. वी. लाइन बाँदा को 'पनकी–कानपुर' से जोड़ती है, बाँदा का 220 के. वी. सबस्टेशन आल इंडिया के 'नार्दन ग्रेड' से जुड़ा हुआ है। 132 के. वी. लाइन सिराथू (इलाहाबाद) से कर्वी, अतर्रा और बाँदा को जोड़ती है। इसी क्षमता की दूसरी लाइन भरूवा– सुमेरपुर से जहाँनाबाद (फतेहपुर) को जोड़ती है। 66 के. वी. क्षमता वाली लाइन झाँसी से महोबा और बाँदा को जोड़ती है। 33 के.वी. क्षमता वाली लाइन्स (सिंगल सरकिट) बांदा से मौदहा तथा बिवॉर को, पलरा तथा जसपुरा को, औगासी को, चिल्लीमल को भरुवा, सुमेरपुर से हमीरपुर को, महोबा से पनवाड़ी को, कबरई को चरखारी–राठ से सरीला को जोड़ती हैं, इस क्षमता वाली राठ से मुस्करा को, कर्वी से राजापुर को, मऊ को, मानिकपुर को, अतर्रा बाँदा को जोड़ती हैं।

इनकी (लाइन्स) क्षमता सभाँलने के लिए विभिन्न स्थानों में सब स्टेशन का निर्माण किया गया है। भरुवा–सुमेरपुर, बाँदा और कर्वी 132 के.वी. ट्रान्समिसन लाइन के सब स्टेशन हैं। हमीरपुर, बिवॉर, मौदहा, मुस्करा, राठ, सरीला, चरखारी, पनवाड़ी, कबरई, पलरा, जसपुरा, तिन्दवारी, औगासी, चिल्लीमल, राजापुर, अतर्रा, नरैनी, मानिकपुर आदि 33 के.वी. ट्रान्समिसन लाइन्स के सब स्टेशन हैं। (मानचित्र सं. 7–11)

उपभोग :– चित्रकूट धाम मण्डल में 2000–01 में जलविद्युत शक्ति का उपभोग 46.5% कृषि में, 32% उद्योग में, 15.9% घरेलू कार्यों में, 2.7% वाणिज्य में, 2.7% सार्वजनिक एंव अन्य कार्यों में किया गया। चित्रकूट मण्डल में जलविद्युत शक्ति का उपभोग सबसे अधिक कृषि क्षेत्र में होता है। कृषि एवं उद्योग दोनों मिलकर 78.7% जलविद्युत शक्ति का उपभोग करते हैं। निम्नलिखित तालिका सं. 7.17 में चित्रकूट धाम मण्डल में विभिन्न कार्यों में जलविद्युत उपभोग दर्शाया गया है :–

तालिका सं. 7.17

चित्रकूट धाम मण्डल में विभिन्न कार्यों में जलविद्युत उपभोग (हजार कि. वाट घंटा) 2000–01

क्र.सं.	मद	महोबा	हमीरपुर	बाँदा तथा चित्रकूट	योग	प्रतिशत
1	घरेलू प्रकाश एवं लघु विद्युत शक्ति	17220	22010	42680	81910	15.9
2	वाणिज्यिक प्रकाश एवं लघु विद्युत शक्ति	2990	3250	7990	14230	2.7
3	औद्योगिक विद्युत शक्ति	14480	132750	19040	166270	32.2
4	सार्वजनिक प्रकाश व्यवस्था	610	370	2460	3440	0.7
5	कृषि विद्युत शक्ति	15520	83020	141560	240100	46.5
6	सार्वजनिक जलकल व्यवस्था	2710	1960	5880	10550	2.0
योग		53530	243360	219610	516500	100.0

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
TRANSMISSION LINES AND SUB-STATION
2002-03
Fig. 7.11
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
TO JAHANABAD
FROM SIRATHU
HAMIRPUR
SUMERPUR
JASPURA
SARILA
BIWAR
MUSKARA
MAUDAHA
TINDWARI
AUGASI
RATH
BANDA
CHILLMAL
CHARKHARI
KABRAI
PANWARI
ATARRA
KARWI
MAU
NARAINI
MANIKPUR
220 K.V. SUB-STATION
132 K.V. " "
66 K.V.
32 K.V.
220 K.V. LINE
132 K.V. LINE
33 K.V. SINGLE CIRCUIT

विद्युतीकरण :– चित्रकूट धाम मण्डल जैसे पिछड़े क्षेत्र के औद्योगिक विकास के लिए नगरों के साथ–साथ गाँवों का विद्युतीकरण भी अति आवश्यक है। मण्डल में ग्रामीण विद्युतीकरण का प्रारम्भ 1972 में हुआ। 2001–02 में चित्रकूट धाम मण्डल में केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण की परिभाषा के अनुसार 1517 गाँवों का विद्युतीकरण हो चुका है, जो कुल आबाद ग्रामों का 71.2% है। सबसे अधिक विद्युतीकृत ग्रामों का कुल आबाद ग्रामों से प्रतिशत बाँदा जनपद में 82.8% है तथा सबसे कम चित्रकूट जनपद में 59.2% है। इसके अतिरिक्त हमीरपुर जनपद में 79.0% तथा महोबा जनपद में 60.2% है। (मानचित्र सं.7.12) तालिका सं. 7.18 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार विद्युतीकृत ग्रामों की संख्या तथा कुल आबाद ग्रामों से प्रतिशत दर्शाया गया है :–

तालिका सं. 7.18

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार विद्युतीकृत ग्राम – 2001–02

क्र.सं.	विकासखण्ड	कुल आबाद ग्रामों की संख्या	विद्युतीकृत ग्रामों की संख्या	विद्युतीकृत ग्रामों का कुल आबाद ग्रामों से प्रतिशत
1	कुरारा	62	62	100.0
2	सुमेरपुर	82	79	96.3
3	सरीला	65	49	75.4
4	गोहाण्ड	73	58	79.5
5	राठ	63	33	62.3
6	मुस्करा	57	36	63.2
7	मौदहा	89	71	79.8
जनपद हमीरपुर		491	388	79.0
8	पनवाड़ी	120	61	50.8
9	जैतपुर	104	58	55.8
10	चरखारी	85	54	63.5
11	कबरई	126	89	70.6
जनपद महोबा		435	262	60.2
12	जसपुरा	45	45	100.0
13	तिन्दवारी	80	78	97.5
14	बड़ोखर खुर्द	73	70	95.9
15	बबेरु	79	69	87.3
16	कमासिन	75	44	58.7
17	विसण्डा	57	48	84.2
18	महुआ	119	98	82.4
19	नरैनी	125	89	71.2
जनपद बांदा		653	541	82.8
20	पहाड़ी	124	102	82.3
21	कर्वी	152	95	62.5
22	मानिकपुर	106	46	43.4
23	रामनगर	71	37	52.1
24	मऊ	98	46	46.9
जनपद चित्रकूट		551	326	59.2
चित्रकूट धाम मण्डल		2130	1517	71.2

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें – 2002

Fig. : 7.12
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
PERCENTAGE OF ELECTRIFIED
VILLAGES – 2001 - 02
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
KURARA
SUMERPUR
JASPURA
SARILA
GOHAND
MUSKARA
MAUDAHA
TINDWARI
BABERU
KAMASIN
RATH
BAROKHAR KHURD
CHARKHARI
KABRAI
PANWARI
MAHUA
BISANDA
PAHARI
RAMNAGAR
KARWI
MAU
JAITPUR
NARAINI
MANIKPUR
40 – 50%
50 – 60%
60 – 70%
70 – 80%
80 – 90%
90 – 100%
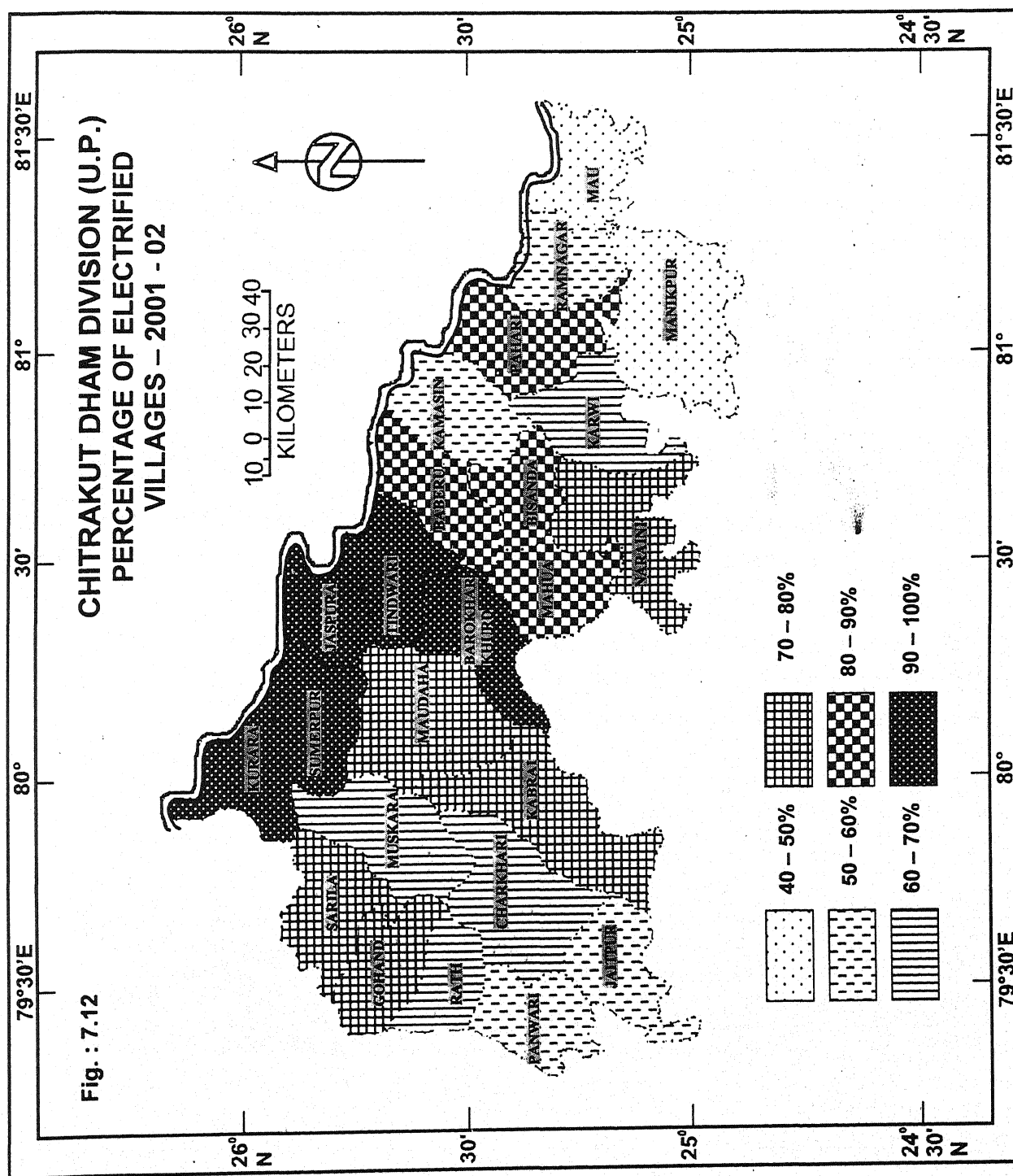
7 (iv) **वित्तीय सुविधाएँ** (**Capital Facilites**) :– प्रत्येक उद्योग की स्थापना के लिए पर्याप्त पूँजी की आवश्यकता होती है। औद्योगिक विकास के लिए पूँजी के दो स्रोत हैं–(क) व्यक्तिगत (ख) सार्वजनिक । जो लोग धनी अथवा बचत करने में समर्थ हैं, वे अपनी पूँजी लगाकर औद्योगिक इकाइयों की स्थापना करते है। कुछ औद्योगिक इकाइयों में लोग पूँजी लगाना जोखिम समझते हैं। औद्योगिक इकाइयों की स्थापना के लिए विभिन्न सरकारी एजेन्सियाँ, व्यावसायिक एवं औद्योगिक बैंक ऋण प्रदान करते हैं। 'उत्तर प्रदेश फाइनेन्स कार्पोरेशन' का कार्यालय प्रत्येक मण्डल में स्थापित है जो औद्योगिक इकाइयों की स्थापना के लिए आसानी से निश्चित अवधि और दशाओं पर ऋण प्रदान करता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक कृषकों को कुटीर उद्योगों की स्थापना के लिए ऋण प्रदान कर रहे हैं। सहकारी बैंक, सहकारी साख समितियाँ और भूमि बन्धक बैंक, क्रमशः अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन कृषि वित्त की व्यवस्था करते हैं। 'नेशनल बैंक फार एग्रीकल्चर एण्ड रुरल डेवलपमेंट'(Nabard) की स्थापना इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

बैंक (Bank) :– बैंक एक ऐसा संगठन है जो सुरक्षित ढंग से ऐसे लोगों को धन उपलब्ध कराता है, जिन्हे उसकी आवश्यकता पड़ती है। इसके साथ ही धन सुरक्षित रखने का एक महत्वपूर्ण प्रतिष्ठान भी है।

व्यवसायिक (व्यापारिक) एवं औद्योगिक बैंक किसी प्रदेश के औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। व्यावसायिक बैंक अल्पकालीन ऋण की सुविधा प्रदान करते हैं जबकि औद्योगिक बैंक दीर्घकालीन ऋणों की आवश्यकता को पूरा करते हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में कुल 81 राष्ट्रीयकृत अनुसूचित व्यावसायिक बैंक शाखायें कार्य कर रही हैं। इनमें से 26 हमीरपुर जनपद में, 17 महोबा जनपद में, 28 बाँदा जनपद में और 10 चित्रकूट जनपद में हैं। क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक शाखयें भी कुटीर उद्योगों की स्थापना में अल्प ऋण प्रदान कर रही हैं। मण्डल में कुल 126 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक शाखायें कार्य कर रहीं हैं, जिसमें 30 हमीरपुर में, 18 महोबा में, 50 बांदा में तथा 28 चित्रकूट जनपद में हैं। तालिका सं. 7.19 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार अनुसूचित व्यावसायिक बैंक तथा ग्रामीण बैंक शाखाओं की संख्या दर्शायी गयी है ।

तालिका सं. 7.19

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार अनुसूचित व्यावसायिक बैंक तथा ग्रामीण बैंक शाखाओं की संख्या 2001–02

क्र.सं.	विकासखण्ड	राष्ट्रीयकृत बैंक शाखायें	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक शाखायें
1	कुरारा	1	2
2	सुमेरपुर	4	3
3	सरीला	1	3
4	गोहाण्ड	1	5
5	राठ	1	1
6	मुस्करा	4	2
7	मौदहा	2	6
नगरीय		12	8
जनपद हमीरपुर		26	30
8	पनवाड़ी	2	5

9	जैतपुर	2	2
10	चरखारी	2	2
11	कबरई	2	4
नगरीय		9	5
जनपद महोबा		17	18
12	जसपुरा	1	4
13	तिन्दवारी	2	6
14	बड़ोखर खुर्द	1	8
15	बबेरु	–	6
16	कमासिन	1	3
17	विसण्डा	1	3
18	महुआ	3	6
19	नरैनी	3	6
नगरीय		16	8
जनपद बांदा		28	50
20	पहाड़ी	1	5
21	कर्वी	2	6
22	मानिकपुर	–	3
23	रामनगर	1	5
24	मऊ	2	5
नगरीय		4	4
जनपद चित्रकूट		10	28
मण्डल–योग		81	126

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें – 2002,

सहकारिता :– "सहकारिता स्वेच्छा से संगठित हुए व्यक्तियों की शक्ति व साधनों के उपयोग करने की वह क्रिया है, जो सबके लाभ के लिए पारस्परिक प्रबन्ध के द्वारा की जाती है।" सहकारिता का कार्यक्रम निःस्वार्थ भावना से *'एक सबके लिए तथा सब एक के लिए'* के आधार पर चलाया जाता है। इसका प्रबन्ध प्रजातन्त्रीय ढ़ंग से किया जाता है। इसमें व्यक्ति अपनी आर्थिक उन्नति के लिए सम्मिलित होते हैं तथा अपनी शक्तियों तथा साधनों का सम्मिलित रुप से उपयोग करते हैं। सदस्यों द्वारा संगठन में जिस सीमा में अंशदान दिया जाता है, उसके अनुसार ही लाभ का बँटवारा होता है। सहकारिता के द्वारा सहकारी समितियाँ ग्रामीणों की सहायता करती हैं तथा बीज, खाद, यन्त्र, एवं कीटनाशक दवाएँ प्रदान करती हैं। कम ब्याज पर किसानों को ऋण देती हैं। किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाती हैं। सहकारी समितियाँ दुग्ध व्यवसाय एवं मत्स्य व्यवसाय में सहयोग प्रदान करती हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में विभिन्न सहकारी समितियाँ कार्य कर रहीं हैं। जैसे – प्रारम्भिक कृषि ऋण, सहकारी समितियाँ, क्रय–विक्रय सहकारी समितियाँ, संयुक्त कृषि समितियाँ, मत्स्य सहकारी समितियाँ, प्रारम्भिक औद्योगिक सहकारी समितियाँ आदि। मण्डल में जिला सहकारी बैंक तथा सहकारी

कृषि एवं ग्राम्य विकास बैंक भी कृषकों को ऋण प्रदान कर सहयोग कर रहे हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में सहकारी समितियों की स्थिति निम्नलिखित तालिकाओं से स्पष्ट है :–

तालिका सं. 7.20

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार प्रारम्भिक कृषि ऋण सहकारी समितियाँ 2001–02

क्र.सं.	विकासखण्ड	संख्या	सदस्यों की संख्या	अंशपूँजी (000रु)	कार्यशील पूँजी (000रु)	समीतियों के अन्तर्गत ग्राम
1	कुरारा	6	9000	2150	14362	62
2	सुमेरपुर	7	17200	4946	26426	82
3	सरीला	10	7715	2501	20059	65
4	गोहाण्ड	5	10852	7573	20549	73
5	राठ	6	10135	2800	16400	63
6	मुस्करा	6	12317	2871	18994	57
7	मौदहा	7	15000	4880	23978	89
जनपद हमीरपुर		47	82219	27321	140768	491
8	पनवाड़ी	9	14814	4783	31351	120
9	जैतपुर	8	16121	4083	27613	104
10	चरखारी	9	16644	42668	31668	85
11	कबरई	15	28444	9865	51917	126
जनपद महोबा		41	76023	61399	142549	435
12	जसपुरा	6	5695	1124	10637	45
13	तिन्दवारी	6	11340	2421	28511	80
14	बडोखर खुर्द	5	6224	969	6496	73
15	बबेरु	6	12077	3317	20067	79
16	कमासिन	7	9067	2747	14395	75
17	विसण्डा	5	8878	2186	9889	57
18	महुआ	5	7749	1445	6646	119
19	नरैनी	6	14428	2903	18480	125
जनपद बांदा		46	75458	17112	115121	653
20	पहाड़ी	9	12607	3065	19476	124
21	कर्वी	10	16084	2383	20084	152
22	मानिकपुर	9	10449	2430	14483	106
23	रामनगर	6	7275	1530	7926	71
24	मऊ	7	10164	4109	17455	98
जनपद चित्रकूट		41	56583	13517	79424	551
मण्डल योग		175	290283	119349	477862	2130

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

तालिका सं. 7.21

चित्रकूट धाम मण्डल में अन्य सहकारी समितियाँ, सहकारी बैंक तथा सहकारी कृषि एवं ग्राम्य विकास बैंक – 2002–02

क्र.सं.	मद	हमीरपुर	महोबा	बांदा	चित्रकूट	योग
1	क्रय विक्रय सहकारी समितियों की संख्या	4	3	3	1	11
2	संयुक्त कृषि समितियों की संख्या	4	–	6	23	33
3	प्रारम्भिक दुग्ध उत्पादन समितियाँ	95	–	–	–	95
4	मत्स्य सहकारी समितियों की सं.	24	14	21	–	59
5	बुनकरों की प्रारम्भिक औद्योगिक सहकारी समितियों की संख्या	7	8	–	–	15
6	प्रारम्भिक औद्योगिक सहकारी समितियों की सं.	18	31	–	–	49
7	जिला सहकारी बैंक शाखाएँ	9	10	11	7	37
8	सहकारी कृषि एवं ग्राम्य विकास बैंक शाखाएँ	3	2	3	1	9

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें – 2002

बाजार (Market) :– किसी उद्योग के स्थानीयकरण में बाजार की निकटता एक महत्वपूर्ण कारक है। बाजार की निकटता और विशालता उपलब्ध होने पर तैयार माल को बाजार तक पहुँचाने में कम समय और कम व्यय होता है। यदि बाजार बड़ा है और उसमें तैयार वस्तुओं की प्रचुर माँग है तो वह अनेक उद्योगों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। बाजार की निकटता से आशय किसी उद्योग से विभिन्न दिशाओं को तैयार माल ले जाने और कच्चे माल को लाने के लिए पर्याप्त द्रुतगामी और सस्ते परिवहन व संचार के साधन उपलब्ध होने से है। तैयार माल के भारी होने पर या विकारीय होने पर (शीघ्र खराब होने वाले फल, सब्जियाँ, दूध, अण्डे से बने भोज्य पदार्थ) बाजार की निकटता का और भी अधिक महत्व हो जाता है। उपभोक्ताओं वस्तुओं का उत्पादन करने वाले उद्योगों की स्थापना ऐसे सघन बसे क्षेत्रों में होती है, जहाँ की जनसंख्या की क्रय–शक्ति ऊँची हो। शीघ्र टूटने की सम्भावना वाली वस्तुओं का उत्पादन करने वाले उद्योग इन वस्तुओं की भारी माँग के बाजार कर्वी, राजापुर, मानिकपुर, मऊ, अतर्रा, बबेरु, नरैनी, बाँदा, महोबा, चरखारी, कबरई, कुलपहाड़, राठ, मौदहा, हमीरपुर, मुस्करा, तथा भरुवा सुमेरपुर हैं। मण्डल के बाहर 'कानपुर' प्रमुख निकटतम व्यापारिक केन्द्र हैं।

भण्डार (Storage) :– प्रत्येक कारखानों में उत्पादन नियमित रखने के लिए तथा किसी कारणवश माँग की मात्रा में अचानक घट–बढ़, आपूर्ति में विघ्न तथा अन्य संकटकालीन स्थितियों का सामना करने के लिए कुछ सामाग्री, उपकरण एवं अन्य आवश्यक पदार्थों का सुरक्षित भण्डार रखना पड़ता है। अतः किसी प्रदेश के औद्योगिक विकास में माल गोदाम, खाद्यान्न भण्डार और शीत भण्डार अप्रत्यक्ष रुप से सहायक होते हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2001–02 में सभी प्रकार के खाद्यान्न भण्डारों की संख्या 138 तथा भण्डारन क्षमता 120450 मीट्रिकटन है। भारतीय खाद्य निगमों की संख्या 12 तथा कुल क्षमता 38750

मीट्रिकटन, केन्द्रीय भण्डारागार निगमों संख्या 3 तथा क्षमता 13500 मीट्रिकटन, राज्य भण्डारागार की संख्या 4 तथा उनकी कुल भण्डारन क्षमता 23630 मीट्रिकटन राज्य सरकार खाद्यान्न भण्डार की संख्या 4 तथा उनकी कुल भण्डारन क्षमता 17500 मीट्रिकटन, सहकारिता खाद्यान्न भण्डारों की संख्या 92 तथा उनकी कुल क्षमता 21000 मी.टन है। चित्रकूट धाम मण्डल में मात्र एक शीत भण्डार महोबा में स्थित है जिसकी क्षमता 560 मीट्रिकटन है। निम्नलिखित तालिका संख्या 7.22 में चित्रकूट धाम मण्डल में खाद्यान्न भण्डारों एवं शीत भण्डारों की संख्या एवं क्षमता दर्शायी गयी है :–

तालिका संख्या 7.22

चित्रकूट धाम मण्डल में खाद्यान्न भण्डारों एवं शीत भण्डारों की संख्या एवं क्षमता 2001–02

क्रसं.	मद	हमीरपुर		महोबा		बांदा		चित्रकूट		मण्डल योग	
		सं.	क्षमता (मी.टन)	सं.	क्षमता (मी.टन)	सं.	क्षमता (मी.टन)	सं.	क्षमता (मी.टन)	सं.	क्षमता (मी.टन)
1	खाद्यान्न भण्डार										
1.1	भारतीय खाद्य निगम	–	–	8	11250	4	27500	–	–	12	38750
1.2	केन्द्रीय भण्डारागार निगम	–	–	1	5000	2	8500	–	–	3	13500
1.3	राज्य भण्डारागार	1	11400	1	1260	2	10970	–	–	4	23630
1.4	राज्य सरकार	–	–	–	–	4	17500	–	–	4	17500
1.5	सहकारिता	61	10200	29	7800	1	2000	1	1000	92	21000
1.6	अन्य	7	1050	5	750	2	4000	9	270	23	6070
	योग	69	22650	44	26060	15	70470	10	1270	138	120450
2	शीत भण्डार	–	–	1	560	–	–	–	–	1	560

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

7(V) – **अन्य** :–

विस्तार सेवायें **(Extension Services)** :– विस्तार सेवायें गाम पंचायत स्तर पर तैनात किसान सहायक, ग्राम पंचायत विकास अधिकारी एवं किसान मित्रों द्वारा गाँवों में लायी जाती है। ये सेवायें कृषकों को कृषि तकनीकि प्रशिक्षण देकर कृषि उत्पादन बढ़ाती है। ट्रैक्टर और हार्वेस्टर, थ्रेसर और पवन पंखे आधुनिक कृषि के प्रसिद्ध अंग हो गये हैं। उवर्रकों, कीटनाशकों, रोगाणुनाशकों का प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण है, निःसंदेह नयी औद्योगिक इकाइयों की संख्या बढ़ाने में अप्रत्यक्ष रुप से विस्तार सेवायें सहयोग करती हैं।

कृषि सेवा केन्द्र **(Agro Service Centers)** :– कृषि सेवा केन्द्र कृषि औद्योगिक निगम, सहकारी समीतियों और निजी ठेकेदारों द्वारा व्यवस्थित किये जाते हैं, जो कृषकों को निम्नलिखित सेवायें प्रदान करते हैं :–

(1) ट्रैक्टर, पम्पिंगसेट और थ्रेसर आदि कृषि–यंत्र सब्सिडी पर बेचे जाते हैं।
(2) उत्तम बीजों, उर्वरकों, कीटनाशकों एवं रोगाणुनाशकों की आपूर्ति ।
(3) उच्चकोटि की मरम्मत की सुविधाएँ।
(4) डीजल और स्नेहक पदार्थों की आपूर्ति।
(5) नलकूप और कुँए खुदवाने की सुविधाएँ।
(6) मृदा संरक्षण और भूमि विकास की सुविधाएँ।
(7) पशुओं और पशु–आहार की आपूर्ति।

चित्रकूट धाम मण्डल में (2001–02में) 8 एग्रो कृषि सेवा केन्द्र तथा 76 अन्य कृषि सेवा केन्द्र हैं। जिनमें हमीरपुर जनपद में 2 एग्रो तथा अन्य 20 कृषि सेवा केन्द्र, महोबा में 16 अन्य कृषि सेवा केन्द्र, बाँदा जनपद में 1 एग्रो तथा 28 अन्य कृषि सेवा केन्द्र तथा चित्रकूट जनपद में 5 एग्रों तथा 12 अन्य कृषि सेवा केन्द्र हैं।

औद्योगिक भूसम्पति (Industrial Estates) :– लगभग 100 वर्ष पूर्व औद्योगिक भूसम्पति का सूत्रपात सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में हुआ। भारत में 1955 में औद्योगिक भूसंम्पति का पदार्पण हुआ। औद्योगिक भूसम्पति विकास योजना की सामाजिक तकनीक है।

ब्रेडो विलियम[16] अनुसार – *" A trac of land which is sub divided and developed according to a comprehensive plan for the use of a community of industrial enterprise the plan must make the detailed provision for streets and roods transportation facilities and installation of utilities the plan may provide for the creation of factory buildings in advance of sale are leased of accupant."*

उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि औद्योगिक भूसम्पति के निम्नलिखित तथ्य हैं:–

(1) सुनियोजित और सामूहिक औद्योगिक इकाइयाँ

(2) पहले से ही औद्योगिक इमारतों का निर्माण

(3) बचत के उद्देश्य से भवन निर्माण स्तर तथा

(4) कास्तकारों को सुविधाओं एवं सेवाओं के भिन्न–भिन्न प्रबन्ध।

औद्योगिक भूसम्पत्ति का मुख्य उद्देश्य अर्द्धविकसित एवं पिछड़े क्षेत्रों में लघु एवं कुटीर उद्योग धन्धों को फैलाना है। चित्रकूट धाम मण्डल में बाँदा, महोबा, तथा भरुवा सुमेरपुर यह तीन प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र हैं।

हमीरपुर, अतर्रा, कर्वी, चरखारी, मौदहा, राठ में भी औद्योगिक इकाइयाँ स्थापित की जा सकती है, ताकि ग्रामीण क्षेत्रों के लघु उद्यमियों का औद्योगिक क्रियाकलाप की ओर ध्यान आकर्षित किया जा सके। इसके अतिरिक्त 'ग्रामीण औद्योगिक इकाइयाँ' बदौसा, विसण्डा, बबेरु, राजापुर, मानिकपुर, कुलपहाड़, तथा अन्य ऐसे ही केन्द्रों में खोली जा सकती हैं, क्योंकि इन केन्द्रों में पानी, बिजली और सड़क की सुविधाओं के साथ–साथ विपणन एवं बैंकिंग जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं।

:– सन्दर्भ :–

1. *अरोरा, आर0 सी0* : 'इन्टीग्रैटड रुरल डेवलपमेन्ट', एस. चन्द्र एण्ड कं. लि. न्यू देलही, 1979, पृ. 286,
2. *उलमैन ई0 एल0* : 'द रोल आफ ट्रान्सपोर्टेशन एण्ड द बेसिस फार इन्ट्रैक्शन इन योनीज', डब्ल्यू0 एल0 जे0 आर0 (एडी.) मैन्स रोल इन चेन्जिंग द फेश आफ अर्च यूनीवर्सिटी आफ शिकागो, 1956 पृ.875,
3. ड्राफ्ट, पाँचवी पंचवर्षीय योजना वाल्यूम 2, गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया, प्लानिंग कमीशन 1974–79,पृ. 171
4. *फिंच वी0 सी0* तथा *ट्रिवार्था जी0 टी0* : 'एलीमेन्ट्स आफ ज्याग्रफी', न्यूयार्क 1949, पृ.622.
5. *चौरसिया, आर0 ए0* : 'एग्रो इन्डस्ट्रियल डेवलपमेन्ट'–ए स्ट्रेटेजी, चुग पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, 1988, पृ.91
6. *गुल्ड पी0 आर0* : 'ट्रान्सपोर्टेशन इन घाना', नार्थ वेस्टर्न युनिवर्सिटी, इवान्स्टन, इलीनायस – 1960, पृ.01.
7. *चौरसिया आर0 ए0* : अप सिट, पृ.91.
8. वाल्मीकि रामायण, उत्तराखण्ड, सर्ग पृ. 71.
9. *मैक ग्रिन्डल, जे0 डब्ल्यू0* : 'एन्सेन्ट इण्डिया इज डिस्क्राइब्ड बाई मैग्स्थनीज एण्ड वर्धन' कलकत्ता 1926, पृ. 226.
10. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ बाँदा 1988, पृ.138.
11. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ झाँसी डिवीजन, 1965.
12. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ मिर्जापुर – 1911, पृ.76.
13. *हेग, आर0 एम0* : 'मेजर इकोनामिक फैक्टर्स इन मेट्रोपालिटन ग्रोथ एण्ड एरेन्जमेन्ट, रीजनल प्लान आफ न्यूयार्क', 1927, पृ.38.
14. *सियर्ली के0 आर0* : 'दि ज्याग्रफी आफ एअर ट्रान्सपोर्ट', लन्दन 1957, पृ.19.
15. वार्षिक संदर्भ ग्रन्थ : भारत 2002 पृ.533
16. *ब्रेडो, विलियम* : 'इन्डस्ट्रियल इस्टेट, टूल फार इन्डस्ट्रियलाइजेशन', इन्टरनेशनल इन्डस्ट्रियल डेवलपमेन्ट सेन्टर, स्टैन्डर्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूड मेनोलो पार्क, कैलीफोर्निया, यू. एस. ए, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बाम्बे 1962 पृ.01.

अध्याय –8

वनाधारित उद्योग धन्धे (Forest-Based Industries)

वनों से मनुष्य का प्रगाढ़ सम्बन्ध है। मानव सभ्यता का विकास वन एवं मृदा पर ही आश्रित है। जब मानव 'आदिम अवस्था' में था, तो वन उसे 'आश्रय' और 'भोजन' प्रदान करते थे। आज का मनुष्य सभ्य और सुसंस्कृत है। अब उसने वनोंत्पादों से सम्बन्धित अनेक उद्योगों का आविष्कार कर लिया है।

चित्रकूट धाम मण्डल में मुख्य वनोपजें निम्न गुणवत्ता वाली पायी जाती है तथा गौण वनोपजों का भी उचित प्रयोग नहीं हो सका है। चित्रकूट धाम मण्डल में विभिन्न वस्तुओं की स्थानीय माँग के आधार पर वन आधारित उद्योग–धन्धों का विकास हुआ है।

वनों से प्राप्त उपजों पर आधारित उद्योग धन्धे मण्डल के सम्पूर्ण क्षेत्र में फैले हुए हैं। ये उद्योग न केवल स्थानीय माँग ही पूरा नहीं करते, अपितु ये क्षेत्रीय निवासियों को रोजगार भी प्रदान करते है। उपलब्ध इमारती लकड़ी, घासें तथा अन्य मुख्य उत्पाद अध्ययन क्षेत्र में वन आधारित उद्योग धन्धों के विकास को उचित आधार प्रदान करते हैं।

'टी. डब्ल्यू. फ्रीमैन' ने ठीक ही कहा है कि – *''मानवीय इतिहास में लकड़ी का प्रयोग ईंधन तथा रचनात्मक दोनों कार्यों में हुआ है। यद्यपि अधिक से अधिक इसका प्रयोग फर्नीचर और अन्य उपयोगी वस्तुओं में हुआ है। यह कई उद्योगों का कच्चा माल हो गया हैं''।* [1]

चित्रकूट धाम मण्डल के वनों से प्राप्त उत्पाद विभिन्न उद्योग–धन्धों के लिए कच्चा माल प्रदान करते हैं। कागज, बीड़ी, खिलौना, फर्नीचर, सजावट की वस्तुएँ बनाना, आरा मशीन से लकड़ी चीरना, आयुर्वेदिक दवायें बनाना, कार्ड बोर्ड बनाना आदि वनाधारित उद्योग धन्धों के अन्तर्गत सम्मिलित हैं।

अध्ययन क्षेत्र में स्वतन्त्रता से पूर्व वनाधारित उद्योग धन्धों की संख्या अत्यन्त न्यून थी। सन् 1975 में चित्रकूट धाम मण्डल में वनोत्पाद पर आधारित 275 औद्योगिक इकाइयाँ थी, जिनकी संख्या 1990 में बढ़कर 513 इकाइयाँ तक पहुँच गयी। सन् 2003–04 में यह संख्या बढ़कर 1131 इकाइयाँ हो गयी है। सर्वाधिक 403 इकाइयाँ बांदा जनपद में स्थित हैं। इसके अतिरिक्त हमीरपुर जनपद में 335, महोबा जनपद में 208 तथा चित्रकूट जनपद में 184 इकाइयाँ क्रीयाशील हैं।

विकासखण्डों में वनाधारित उद्योग धन्धों की सर्वाधिक 125 इकाइयाँ बड़ोखर खुर्द में हैं। इसके अतिरिक्त कर्वी में 105 इकाइयाँ, नरैनी में 90 इकाइयाँ, कबरई में 88 इकाइयाँ, राठ में 84, चरखारी में 54 तथा मौदहा विकासखण्ड में 52 इकाइयाँ है। शेष विकासखण्डों में 50 से कम इकाइयाँ हैं। (तालिका संख्या– 8–1)

अध्ययन से ज्ञात होता है कि लगभग 57% वनाधारित उद्योग धन्धों की इकाइयाँ कस्बों या नगरों में स्थापित है, जिनमें – हमीरपुर, सुमेरपुर, कुलपहाड़, चरखारी, मौदहा, राठ, महोबा, नरैनी, बांदा, बबेरु, अतर्रा, कर्वी, राजापुर, मानिकपुर प्रमुख हैं तथा शेष 43% इकाइयाँ ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित है।

वनाधारित उद्योग धन्धों में कुल 4697 लोगों को रोजगार मिला हुआ है जो कुल कार्यरत जनसंख्या का 0.34 प्रतिशत है एवं कुल जनसंख्या का 0.14 प्रतिशत है। जनपद बॉदा की वनाधारित औद्योगिक इकाइयाँ के माध्यम से 1572 लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त हमीरपुर जनपद में 1261, चित्रकूट जनपद में 978 तथा महोबा जनपद में 886 व्यक्तियों को वनाधारित उद्योग धन्धों द्वारा रोजगार प्राप्त है।

विकासखण्डों में सर्वाधिक बड़ोखर खुर्द में 375 व्यक्तियों को रोजगार मिला हुआ है। इसके अतिरिक्त कर्वी विकासखण्ड में 447, कबरई विकासखण्ड में 419, नरैनी विकासखण्ड में 315, राठ विकासखण्ड में 308, सुमेरपुर विकासखण्ड में 218, मानिकपुर विकासखण्डों में 215 तथा बबेरु विकासखण्ड में 200 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है। शेष विकासखण्डों में रोजगार की संख्या 200 व्यक्ति से कम है। (तालिका सं. 8–1)

इससे स्पष्ट है है कि रोजगार की दृष्टि से 'वनाधारित औद्योगिक सेक्टर' बहुत कमजोर है। वर्तमान में चित्रकूट धाम मण्डल में फर्नीचर उद्योग में 1467, आरा मशीन उद्योग में 803, काष्ठ शिल्प उद्योग में 208, अगरबत्ती उद्योग में 118, कागज की दफ्ती बनाने का उद्योग में 7, आयुर्वेदिक दवा बनाने का उद्योग में 36, डलिया उद्योग में 176, बीड़ी उद्योग में 400, दोना–पत्तल उद्योग में 800, तथा रस्सी बनाने के उद्योग में लगभग 750 लोग कार्यरत हैं।

8(i) उद्योगों का वर्गीकरण (Clasification of the Industries):–

उद्योगों का वर्गीकरण करना अत्यन्त दुरुह एवं दुष्कर कार्य है। यहॉ उद्योगों की श्रेणी निर्धारित करते समय न तो सम्पूर्ण इकाई की लागत पर दृष्टिपात किया गया है और न ही उसमें लगने वाले कर्मचारियों की संख्या को और न ही उनके द्वारा किए गये उत्पादन के मूल्य को। इस सन्दर्भ में उद्योग की श्रेणी का निर्धारण केवल एक पहलू पर किया गया है, वह इकाई में लगने वाली प्लांट व मशीनरी की लागत है। इस आधार पर ही उद्योगों की श्रेणीयों का निर्धारण किया गया है। जो कि निम्नांकित हैं:–

1. **वृहद उद्योग (Large Scale Industries)** :– वे उद्योग जिसके प्लान्ट एवं मशीनरी पर कुल निवेश 5 करोड़ रु0 से अधिक है तो वृहद्व उद्योग कहलाता है। ऐसे उद्योग के लिए अधिकतम निवेश की कोई सीमा नहीं है। मण्डल में इस प्रकार के वनाधारित उद्योगों की संख्या शून्य है।

2. **मध्यम उद्योग (Medium Scale Industries)** :– वे उद्योग जिनकी प्लान्ट एवं मशीनरी पर पूँजी विनियोजन 3 करोड़ से 5 करोड़ रु0 के मध्य हो, मध्यम उद्योग की श्रेणी में आते हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में वनाधारित मध्यम उद्योग नहीं है।

3. **पूरक उद्योग (Ancillary Industries)** :– ऐसे 'लद्यु स्तरीय उद्योग' जिसके प्लान्ट एवं मशीनरी पर पूँजी विनियोजन 3 करोड़ रुपये से अधिक न हो आैर अपने उत्पादन के 50% की आपूर्ति

मूल औद्योगिक इकाइयों को आपूर्ति करने को अनुबन्धित हो, पूरक इकाई की श्रेणी में आते हैं। ये उद्योग निदेशालय के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। अध्ययन क्षेत्र में वनाधारित ऐसे उद्योग भी नहीं है।

4. **लघु उद्योग (Small Scale Industries)** :– लघु उद्योगों की परिभाषाएँ समय–समय पर बदलती रही हैं। वर्तमान परिभाषा के अनुसार –"वे उद्योग जिनमें प्लान्ट एवं मशीनरी पर कुल पूँजी विनियोजन एक करोड़ रुपये से अधिक न हो लघु उद्योगों की श्रेणी में आते हैं। यह उद्योग निदेशालय के अन्तर्गत आते हैं।

5. **अति लघु उद्योग (Tiny Sector Industries)** :– ऐसे 'लद्यु स्तरीय उद्योग' जिसकी प्लान्ट एवं मशीनरी पर 25 लाख रुपये तक पूँजी विनियोजन हो एवं उद्योग की स्थापना ऐसे क्षेत्र में हो, जहाँ की जनसंख्या 50,000 से अधिक न हों, 'लघुत्तर' या 'अतिलघु' उद्योग कहते हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में वनाधारित 'लघु' तथा 'अतिलघु' औद्योगिक इकाइयों की संख्या 623 है। जिसमें बाँदा जनपद में 226, जनपद हमीरपुर में 159, चित्रकूट जनपद में 148 तथा महोबा जनपद में 90 इकाइयाँ क्रियाशील है। विकासखण्डों में सर्वाधिक 93 इकाइयाँ कर्वी विकासखण्ड में हैं। इसके अतिरिक्त बड़ोखर खुर्द, राठ तथा कबरई विकासखण्डों में क्रमशः 80, 54 तथा 45 इकाइयॉ कार्यरत है। शेष विकासखण्डों में लघु तथा अतिलघु औद्योगिक इकाइयों की संख्या 40 से कम है।

6. **ग्रामोद्योग** – वे उद्योग जो नगर निगम/नगर पंचायत क्षेत्र के बाहर ग्रामीण क्षेत्र स्थित हों तथा जहाँ की आबादी बीस हजार से अधिक न हो, ग्रामोद्योग कहलाते हैं, साथ ही साथ जिसके उत्पादन व सेवा का कार्य करने में विद्युत का प्रयोग हो अथवा न हो एवं 50 हजार प्रति व्यक्ति पूँजी विनियोग से अधिक न हो, ऐसी इकाइयों को ग्रामोद्योग माना जाता है। ये उद्योग 'खादी एवं ग्रामाद्योग कमीशन' व प्रदेशीय खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अधिकार क्षेत्र में आते हैं।

7. **कुटीर एवं हस्त–शिल्प उद्योग** :– ऐसे परम्परागत एवं घरेलू उद्योग जो हस्तशिल्पियों के परिवार के सदस्यों के सक्रिय सहयोग से चलाये जाते हैं तथा अल्पतम पूँजी (स्थायी परिसम्पत्तियों में रु0 25000 कुछ राज्यों में रु0 60,000) का निवेश होता है एवं कर्मचारियों की संख्या 9 से अधिक न हो, कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योग कहलाते हैं। यह ऑल इण्डिया हैन्डीक्राप्ट बोर्ड के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में वनाधारित ग्रामोद्योग तथा कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योगों की कुल इकाइयों की संख्या 508 है। बाँदा जनपद में 177, हमीरपुर जनपदमें 176, महोबा जनपद में 118 तथा चित्रकूट जनपद में 37 इकाइयाँ कार्यरत हैं। विकासखण्डों में सर्वाधिक 51 ग्रामोद्योग इकाइयों की संख्या नरैनी में है। इसके पश्चात बड़ोखर खुर्द एवं कबरई में इनकी संख्या क्रमशः 45 एवं 43 है।

निम्नलिखित तालिका संख्या 8–1 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार वनाधारित औद्योगिक इकाइयों की संख्या तथा रोजगार में लगे लोगों की संख्या को दर्शाया गया है :–

तालिका संख्या 8–1

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार वनाधारित औद्योगिक इकाइयाँ (विविध श्रेणियों के आधार पर) एवं कार्यरत व्यक्तियों की संख्या 2003–04

क्रसं0	विकासखण्ड	लघु/अतिलघु उद्योग इकाइयों की संख्याा	ग्रामोद्योग इकाइयों की संख्या	कुल योग	रोजगार में लगे व्यक्तियों की सं0
1	कुरारा	23	25	48	176
2	सुमेरपुर	19	26	45	218
3	सरीला	17	18	35	139
4	गोहाण्ड	10	24	34	107
5	राठ	54	30	84	308
6	मुस्करा	14	23	37	137
7	मौदहा	22	30	52	176
जनपद हमीरपुर		159	176	335	1261
8	पनवाड़ी	9	21	30	93
9	जैतपुर	12	24	36	108
10	चरखारी	24	30	54	166
11	कबरई	45	43	88	519
जनपद महोबा		90	118	208	886
12	जसपुरा	14	10	24	120
13	तिन्दवारी	18	12	30	153
14	बड़ोखर खुर्द	80	45	125	375
15	बबेरु	30	14	44	200
16	कमासिन	21	13	34	163
17	विसण्डा	15	14	29	139
18	महुआ	9	18	27	107
19	नरैनी	39	51	90	315
जनपद बांदा		226	177	403	1572
20	पहाड़ी	11	8	19	98
21	कर्वी	23	12	105	447
22	मानिकपुर	16	7	23	215
23	रामनगर	11	4	15	75
24	मऊ	17	6	23	143
जनपद चित्रकूट		148	37	184	978
मण्डल–योग		623	508	1131	4697

स्रोतः कार्यालय, महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र तथा ग्रामोद्योग अधिकारी कार्यालय– हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट। (2003–04)

8(II) विविध वनाधारित उद्योग धन्धो का विवरण :–

चित्रकूट धाम मण्डल में स्थापित वनाधारित प्रमुख उद्योग धन्धे फर्नीचर उद्योग, आरामीशन उद्योग, काष्ठशिल्प उद्योग, अगरबत्ती उद्योग, कार्ड बोर्ड बनाने का उद्योग आयुर्वेदिक औषधि निर्माण उद्योग, डलिया निर्माण उद्योग, बीड़ी उद्योग, दोना–पत्तल उद्योग, रस्सी बनाने के उद्योग हैं। जिनका अध्ययन, कच्चेमाल की उपलब्धि, स्थिति एवं वितरण, कार्यरत इकाइयों की संख्या, पूँजीनिवेश, रोजगार, उत्पादन, प्रबन्धन एवं नियोजन आदि को दृष्टिगत करते हुए किया गया है :–

8.1 फर्नीचर उद्योग (Furniture Making Industry) :– फर्नीचर बनाने का उद्योग आरा मशीन (Saw milling) इकाइयों पर निर्भर है लेकिन ये इकाइयाँ पृथक रुप से भी स्थापित की गयी हैं। इस उद्योग के लिए विभिन्न किस्म, गुणवत्ता एवं आकार की लकड़ियों की आवश्यकता होती हैं। इसलिए यह उद्योग समीपवर्ती चलने वाली आरा मशीनों पर निर्भर होता है। आरा मशीनों से विभिन्न आकार एवं साइज में चीरी हुई लकड़ियाँ प्राप्त हो जाती हैं। इस उद्योग के लिए लकड़ी, बोर्ड , प्लाई, बाक्स, माइका शीट्स, ग्लास रंगने के पदार्थ, फेवीकाल, आदि की आवश्यकता होती है। यह माँग पर आधारित उद्योग, है। इसलिए नगर, कस्बे तथा बड़े गाँव इस उद्योग के स्थिति के लिए उपयुक्त स्थान मानें जाते हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में कुल 434 फर्नीचर बनाने वाली इकाइयाँ स्थित है। लगभग 40.55% इकाइयाँ बांदा जनपद में स्थित है। इसके अतिरिक्त 26.04% हमीरपुर जनपद में, 17.28% चित्रकूट जनपद में तथा 16.13% महोबा जनपद में स्थित हैं।

बांदा जनपद की फर्नीचर बनाने वाली 176 इकाइयों में से 65 बड़ोखर खुर्द में, 29 नरैनी में, 22 बबेरु में, 17 कमासिन में, 13 तिन्दवारी, 12 विसण्डा में तथा 17 इकाइयाँ महुआ विकासखण्ड में स्थित हैं।

हमीरपुर जनपद की 113 इकाइयों में से 43 राठ में, 17 सुमेरपुर में, 15 कुरारा में, 13 मौदहा में, 9 सरीला में, 9 मुस्करा में तथा 7 गोहाण्ड विकासखण्ड में स्थित हैं।

चित्रकूट जनपद की 75 इकाइयों में से 35 कर्वी में, 13 मानिकपुर में, 12 मऊ में, 8 रामनगर विकासखण्ड में स्थित हैं।

महोबा जनपद की 70 इकाइयों में से 35 इकाइयॉ कबरई तथा 19 इकाइयॉ चरखारी में कार्यरत है।

1975 में फर्नीचर बनाने वाली कुल इकाइयों की संख्या 178 थी, जो बढ़कर 1980 में 216, 1985 में 267, 1990 में 309 एवं सन् 2003 में बढ़कर 434 इकाइयाँ तक हो गयी।

इस उद्योग में 2003–04 में 1467 लोगों को रोजगार प्राप्त हैं (मानचित्र सं0 8–1) जबकि 1989–90 में अध्ययन क्षेत्र में मात्र 1124 लोग इस उद्योग में संलग्न थे।

इस उद्योग में 243.35 लाख रुपये का पूँजी निवेश हुआ है, जिसमें 138.90 लाख रुपये स्थायी पूँजी तथा 104.45 लाख रुपये कार्यशील पूँजी है। सर्वाधिक पूँजी निवेश बांदा जनपद में 98.80 लाख रुपये हुआ है तथा सबसे कम पूँजी निवेश चित्रकूट जनपद में 38.85 लाख रुपये हुआ है। इसके अतिरिक्त हमीरपुर जनपद में कुल पूँजी निवेश 64.70 लाख रुपये तथा महोबा जनपद में 41.00 लाख रुपये हुआ है।

चित्रकूट धाम मण्डल की कुल फर्नीचर बनाने वाली इकाइयों की उत्पादन क्षमता 245.05 लाख रुपये है जिसमें सर्वाधिक क्षमता बांदा जनपद की 98.60 लाख रुपये तथा न्यूनतम क्षमता चित्रकूट जनपद की 40.70 लाख रुपये है।

FIG. 8.1
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
FOREST BASED INDUSTRIES
2003-04
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
KURARA
SUMERPUR
JASPURA
SARILA
GOHAND
MAUDAHA
TINDWARI
BABERU
KAMASIN
MUSKARA
RATH
CHARKHARI
KABRAI
BAROKHAR KHURD
PAILARI
PANWARI
MAHUA
BISANDA
RAMNAGAR
MAU
JAITPUR
MANIKPUR
KARWI
NARAINI
INDEX
WOODEN FURNITURE
WOOD SHILP INDUSTRY
CARD BOARD MAKING INDUSTRY
BIRI MAKING INDUSTRY
NO. OF WORKERS
400
200
100
50
CIRCLE REPESENT AVERAGE DAILY NO. OF WORKERS EMPLOYED

निम्नलिखित तालिका संख्या 8–2 चित्रकूट धाम मण्डल में फर्नीचर उद्योग की विकासखण्डवार इकाइयों की संख्या, रोजगार, पूँजी – निवेश तथा उत्पादन क्षमता को दर्शाया गया है :–

तालिका संख्या 8–2

चित्रकूट धाम मण्डल में फर्नीचर उद्योग की इकाइयों की संख्या, रोजगार, पूँजी, निवेश तथा वार्षिक उत्पादन क्षमता – 2003–04

क्रसं0	विकासखण्ड	इकाइयों की संख्या	रोजगार	स्थायी पूँजी लाख रुपये में	कार्यशील पूँजी निवेश लाख रुपये में	कुल पूँजी निवेश लाख रु0 में	वार्षिक उत्पादन क्षमता लाख रु0 में
1	कुरारा	15	48	3.20	4.50	7.70	7.90
2	सुमेरपुर	17	58	5.95	5.10	11.05	11.00
3	सरीला	9	29	3.15	1.35	4.50	4.15
4	गोहाण्ड	7	21	2.10	1.15	3.25	3.60
5	राठ	43	148	12.90	12.85	25.75	25.70
6	मुस्करा	9	29	2.70	2.60	5.30	5.30
7	मौदहा	13	56	3.90	3.25	7.15	7.10
जनपद	हमीरपुर	113	389	33.90	30.80	64.70	64.75
8	पनवाड़ी	7	24	2.45	1.05	3.50	3.60
9	जैतपुर	9	32	2.70	1.35	4.05	4.00
10	चरखारी	19	55	5.70	6.65	12.35	12.30
11	कबरई	35	120	10.60	10.50	21.10	21.10
जनपद	महोबा	70	231	21.45	19.55	41.00	41.00
12	जसपुरा	11	38	3.40	3.30	6.70	6.75
13	तिन्दवारी	13	45	4.55	3.90	8.45	8.40
14	बड़ोखर खुर्द	65	220	22.75	19.50	42.25	42.20
15	बबेरु	22	77	6.65	3.30	9.95	9.90
16	कमासिन	17	59	5.10	2.60	7.70	7.75
17	विसण्डा	12	41	4.20	2.45	6.65	6.60
18	महुआ	7	23	2.50	1.50	4.00	4.00
19	नरैनी	29	97	8.70	4.40	13.10	13.00
जनपद	बांदा	176	600	57.85	40.95	98.80	98.60
20	पहाड़ी	7	22	2.15	1.40	3.55	3.50
21	कर्वी	35	115	12.35	8.75	21.10	21.00
22	मानिकपुर	13	41	4.60	–	4.60	6.55
23	रामनगर	8	27	2.40	1.20	3.60	3.60
24	मऊ	12	42	4.20	1.80	6.00	6.05
जनपद	चित्रकूट	75	247	25.70	13.15	38.85	40.70
मण्डल	योग	434	1467	138.90	104.45	243.35	245.05

स्रोत कार्यालय, महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र, हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट (2003–04)

फर्नीचर उद्योग का विकास अधिकाशंतः अध्ययन क्षेत्र के प्रत्येक नगर, कस्बे तथा बड़े गांवों में हुआ है। चित्रकूट धाम मण्डल में इस उद्योग के विकास की और भी अधिक सम्भावनायें हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल की फर्नीचर बनाने वाली कुछ महत्वपूर्ण इकाइयाँ अधोलिखित हैः—

दुर्गा फर्नीचर उद्योग कुरारा हमीरपुर, करन सिंह, फर्नीचर उद्योग हमीरपुर, बनवारी फर्नीचर उद्योग हमीरपुर, विश्वकर्मा फर्नीचर उद्योग सुमेरपुर, दयाल फर्नीचर उद्योग गुरगुज भरुवा सुमेरपुर, लक्ष्मी फर्नीचर उद्योग गौहानी, राठ, शंकर फर्नीचर, उद्योग गौहानी राठ, मोती फर्नीचर उद्योग गौहानी राठ, मूलचन्द्र फर्नीचर उद्योग राठ, रमेश फर्नीचर उद्योग राठ, संजय फर्नीचर उद्योग राठ, सुरेन्द्र फर्नीचर उद्योग राठ, किरन फर्नीचर उद्योग राठ, उमा फर्नीचर उद्योग मुस्करा, राजा फर्नीचर उद्योग राठ, बाबू फर्नीचर उद्योग राठ, नरसिंह फर्नीचर उद्योग राठ, विश्वकर्मा फर्नीचर उद्योग राठ, वन्दना फर्नीचर उद्योग राठ, प्रकाश फर्नीचर उद्योग राठ, जनता फर्नीचर उद्योग राठ, उमा फर्नीचर उद्योग देवानपुरा राठ, किशोरी फर्नीचर राठ, रुपेन्द्र फर्नीचर उद्योग राठ, अग्रवाल फर्नीचर उद्योग, राठ, बजरंग फर्नीचर उद्योग राठ, हामिद फर्नीचर उद्योग राठ, आशा फर्नीचर वर्क्स लुधियातपुरा राठ, विजय फर्नीचर वर्क्स कोट राठ, गुप्ता फर्नीचर उद्योग सिकन्दरपुर राठ, जनता तेल एण्ड फर्नीचर उद्योग लोधियातपुर राठ, जयराम विश्वकर्मा फर्नीचर उद्योग अतरौली राठ, महेशचन्द्र विश्वकर्मा फर्नीचर उद्योग राठ, हरीशंकर जियालाल फर्नीचर उद्योग राठ, राज फर्नीचर उद्योग वर्गावन सरीला, श्याम लकड़ी फर्नीचर उद्योग वर्गावन सरीला, साधना फर्नीचर उद्योग बिवॉर, किसान फर्नीचर उद्योग जूदेवपुरा, सरीला, विश्वकर्मा फर्नीचर, उद्योग सरीला, बजरंग फर्नीचर उद्योग मौदहा, ईश्वरचन्द्र साहू फर्नीचर उद्योग ममना हमीरपुर केशव फर्नीचर उद्योग देवरीपुरा जैतपुर, जितेन्द्र फर्नीचर उद्योग जैतपुर, रघुवीर फर्नीचर उद्योग कुलपहाड़, आरती फर्नीचर उद्योग कुलपहाड़, मु0सफी फर्नीचर उद्योग पनवाड़ी, रज्जाक फर्नीचर इन्डस्ट्रीज पनवाड़ी, भरत वुडेन फर्नीचर, भरवारा पनवाड़ी, कुमार वुडेन फर्नीचर उद्योग कुलपहाड़, रामा फर्नीचर उद्योग कुलपहाड़, विश्वकर्मा फर्नीचर उद्योग राजवाड़ी कुलपहाड़, श्याम बिहारी फर्नीचर उद्योग कुलपहाड़, कमल फर्नीचर उद्योग कुलपहाड़, श्रीराम फर्नीचर वर्क्स कुलपहाड़, अजाज फर्नीचर उद्योग तुर्कियाना चरखारी, शारदा फर्नीचर उद्योग चरखारी, विश्वकर्मा फर्नीचर उद्योग चरखारी, गुप्ता फर्नीचर उद्योग चरखारी, पुष्पा फर्नीचर उद्योग महोबा, कुशवाहा फर्नीचर उद्योग नारुपुरा महोबा, रेशमा फर्नीचर गाँधीनगर महोबा, यासीन फर्नीचर वर्क्स गाँधीनगर महोबा, अशोक फर्नीचर वर्क्स गाँधीनगर महोबा, शमा फर्नीचर उद्योग जारीगंज महोबा, शाही फर्नीचर उद्योग महोबा, मिक्रान फर्नीचर वर्क्स महोबा, रोशन फर्नीचर उद्योग महोबा, कमरुद्दीन वूडेन फर्नीचर इण्डस्ट्री महोबा,रोशन फर्नीचर उद्योग महोबा, सुरेश फर्नीचर उद्योग बांदा, मो0 चौरसिया फर्नीचर उद्योग डिग्गी चौराहा बांदा, कुमार फर्नीचर उद्योग बलखण्डी नाका बांदा, पटेल फर्नीचर वर्क्स बांदा रोड बबेरु, जयशंकर फर्नीचर उद्योग ओरन रोड विसण्डा, शिव फर्नीचर उद्योग कमासिन, मुकेश फर्नीचर उद्योग तिन्दवारी, लक्ष्मण फर्नीचर उद्योग बांदा, मुरली फर्नीचर उद्योग बांदा, जीतेन्द्र फर्नीचर उद्योग बांदा, विशाल फर्नीचर उद्योग कालींजर रोड नरैनी, अजय लकड़ी फर्नीचर उद्योग बांदा, गया फर्नीचर उद्योग कर्वी चित्रकूट, जीवन फर्नीचर उद्योग सिद्धपुर कर्वी चित्रकूट, शाहिद फर्नीचर उद्योग भरतपुरी पुरानी बाजार कर्वी, सुजीत लकड़ी फर्नीचर वर्क्स कर्वी चित्रकूट, शिवहरे लकड़ी फर्नीचर उद्योग कर्वी चित्रकूट, राम फर्नीचर वर्क्स सेमरदहा चित्रकूट ।

8–2 आरा मशीन उद्योग (Saw Milling Industry) :– आरा मशीन से लकड़ी चीरने का व्यवसाय चित्रकूट धाम मण्डल में कई दशकों से चल रहा है। इस उद्योग के लिए प्रचुर मात्रा में इमारती लकड़ी की आवश्यकता होती है। इसलिए इस उद्योग के स्थानीयकरण की उत्तम स्थिति वन के समीप के कस्बों या नगरों में हो सकती है, क्योंकि इससे कच्चेमाल (लकड़ी) को मँगाने में मार्गव्यय (भाड़ा) कम लगेगा। अध्ययन क्षेत्र में 1974–75 में आरा मशीनों की संख्या मात्र 32 थी, जो 1989–90 में बढ़कर 63

तक हो गई और अब (2003–04) में इनकी संख्या 130 तक पहुँच गई है। इनमें से सर्वाधिक हमीरपुर जनपद में 51 आरा मशीनें है। इसके पश्चात् बांदा जनपद में 42, चित्रकूट जनपद में 19 तथा महोबा जनपद में 18 आरा मशीनें हैं।

हमीरपुर जनपद के सुमेरपुर तथा राठ विकासखण्ड में प्रत्येक में 10–10 इकाइयाँ, कुरारा तथा सरीला प्रत्येक विकासखण्ड में 8 ,मौदहा में 7, मुस्करा विकासखण्ड में 5 तथा गोहाण्ड विकसखण्ड में 3 इकाइयाँ स्थापित हैं।

महोबा जनपद में 8 कबरई विकासखण्ड में, 5 चरखारी विकासखण्ड में, 3 जैतपुर तथा 2 इकाइयाँ पनवाड़ी विकासखण्ड में स्थित है।

बांदा जनपद में 11 इकाइयाँ बड़ोखर खुर्द विकासखण्ड में स्थित हैं जबकि 8 नरैनी में, 7 बबेरु में, 4 तिन्दवारी में एवं 4 कमासिन में कार्यरत है।इसके अतिरिक्त 3 इकाइयाँ जसपुरा तथा 3 विसण्डा विकासखण्ड में तथा 2 इकाइयाँ महुआ विकासखण्ड में स्थित हैं।

चित्रकूट जनपद में 8 इकाइयाँ कर्वी में, 5 इकाइयाँ मऊ विकासखण्ड में स्थित हैं जबकि 2–2 इकाइयाँ क्रमशः पहाड़ी एवं मानिकपुर विकासखण्ड में स्थित हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल की प्रमुख 'सा मिल' इकाइयाँ – केशव प्रसाद आरा मशीन कुरारा, हमीरपुर, राम औतार आरा मशीन कुरारा हमीरपुर, सत्य प्रकाश आरा मशीन कुरारा, हमीरपुर, चन्दन सिंह आरा मशीन सुमेरपुर, रामदयाल आरा मशीन सुमेरपुर, गया प्रसाद आरा मशीन मौदहा, जगन्नाथ आरा मशीन मौदहा, मुनीर खाँ आरा मशीन मौदहा, मुनीर खाँ आरा मशीन मुस्करा, राजकुमार द्विवेदी आरा मशीन मुस्करा, गंगाराम आरा मशीन राठ, नाथूराम आरा मशीन राठ, राम सनेही आरा मशीन सरीला, तेज सिंह आरा मशीन सरीला, नन्दराम आरा मशीन सरीला, रामनरेश आरा मशीन गोहाण्ड, तेजवा आरा मशीन गोहाण्ड, खान आरा वर्क्स अमरगंज चरखारी, द्वारिका चिराई उद्योग गाँधीनगर महोबा, तिवारी सा मिल स्टेशन रोड महोबा, सईद सा मिल गाँधीनगर, महोबा, हीरा आरा मशीन और फर्नीचर उद्योग कुलपहाड़, महोबा, यादव सा मिलिंग इन्उस्ट्री कृष्णानगर नरैनी, बांदा, कुशवाहा सा वर्क्स बबेरु, बांदा मनोज कुमार गुप्ता सा मिल राजापुर चित्रकूट राजेश कुमार और सुरेश कुमार जायसवाल सा मिल राजापुर (चित्रकूट), उमेश कुमार श्रीवास्तव सा मिल पहाड़ी, बद्रीप्रसाद कुशवाहा सा मिल भौंरी, भोला प्रसाद सा मिल सरधुआ, (चित्रकूट), चुन्नीलाल सा मिल सीतापुर चित्रकूट, हीरालाल गुप्ता सा मिल शिवरामपुर (चित्रकूट) नवलकिशोरी सा मिल पुरानी बाजार कर्वी चित्रकूट, बाबूलाल सा मिल सीतापुर चित्रकूट, शिवनारायण मिश्रा आरा मशीन पुरानी बाजार कर्वी चित्रकूट, दीपचन्द्र केशरवानी आरा मशीन नई दुनिया, कर्वी, चित्रकूट सुशीला देवी सा मिल इलाहाबाद रोड कर्वी (चित्रकूट), छोटेलाल साहू आरा मशीन शंकर बाजार कर्वी, चित्रकूट, अनिल कुमार जायसवाल आरा मशीन मऊ, चित्रकूट दिलीप कुमार जायसवाल आरा मशीन मऊ चित्रकूट, ज्ञानचन्द्र जायसवाल आरा मशीन मऊ चित्रकूट, जीतेन्द्र कुमार जायसवाल सा मिल मऊ, चित्रकूट, गिरीशचन्द्र शुक्ल आरा मशीन सरैंया चित्रकूट हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में सा मिलिंग इन्डस्ट्री में कुल 356.15 लाख रुपये का पूँजी विनियोजन हुआ है जिसमें 246.25 लाख रुपये (69.14%) स्थायी पूँजी तथा 109.90 लाख रुपये (30.86%) कार्यशील पूँजी सम्मिलित हैं। सर्वाधिक पूँजी निवेश हमीरपुर जनपद में 143.25 लाख रुपये हुआ है इसके पश्चात् बांदा जनपद में 112.60 लाख रूपये चित्रकूट जनपद में 50.35 लाख रुपये तथा महोबा जनपद में 49.95 लाख रुपये पूँजी निवेश हुआ है। विकासखण्डों में बड़ोखर खुर्द विकासखण्ड अग्रणी हैं, जहाँ 29.60 लाख रुपये का पूँजी निवेश हुआ है। इसके अतिरिक्त सुमेरपुर विकासखण्ड में 28.50 लाख रुपये, राठ विकासखण्ड में 22.40 लाख रुपये, सरीला विकासखण्ड में 22.50 लाख रुपये, कुरारा विकासखण्ड में 22.40 लाख रुपये, सरीला विकासखण्ड में 22.20 लाख रुपये तथा नरैनी विकासखण्ड में 22.20 लाख

रुपये का पूँजी निवेश हुआ हैं। सबसे कम पूँजी निवेश मानिकपुर विकासखण्ड में 4.80 लाख रुपये हुआ है।

निम्नलिखित तालिका संख्या 8–3 में चित्रकूट धाम मण्डल में 'सा मिलिंग इन्डस्ट्री' की इकाइयों की संख्या, पूँजी निवेश तथा रोजगार को दर्शाया गया है:–

तालिका संख्या 8–3

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार आरा मशीनों का वितरण, पूँजी निवेश तथा रोजगार – 2003–04

क्र0 सं0	विकासखण्ड	इकाइयों की संख्या	स्थायी पूँजी लाख रूपये में	कार्यशील पूँजी निवेश लाख रूपये में	कुल पूँजी निवेश लाख रूपये में	रोजगार कार्मिक
1	कुरारा	8	15.20	7.20	22.40	49
2	सुमेरपुर	10	19.00	9.50	28.50	62
3	सरीला	8	15.10	7.10	22.20	50
4	गोहाण्ड	3	5.70	10.40	8.10	18
5	राठ	10	19.10	9.40	28.50	64
6	मुस्करा	5	9.50	4.50	14.00	30
7	मौदहा	7	13.25	6.30	19.55	43
जनपद हमीरपुर		51	96.85	46.40	143.25	316
8	पनवाड़ी	2	3.75	1.60	5.35	12
9	जैतपुर	3	5.70	2.40	8.10	18
10	चरखारी	5	9.50	4.50	14.00	32
11	कबरई	8	15.20	7.30	22.50	51
जनपद महोबा		18	34.15	15.80	49.95	113
12	जसपुरा	3	5.60	2.40	8.0	18
13	तिन्दवारी	4	7.60	2.50	10.10	24
14	बड़ोखर खुर्द	11	20.90	8.70	29.60	70
15	बबेरू	7	13.30	5.60	18.90	43
16	कमासिन	4	7.50	3.20	10.70	24
17	विसण्डा	3	5.50	2.40	7.90	18
18	महुआ	2	3.70	1.50	5.20	12
19	नरैनी	8	15.20	7.00	22.20	49
	जनपद बांदा	42	79.30	33.30	112.60	258
20	पहाड़ी	2	3.70	1.40	5.10	12
21	कर्वी	8	15.25	7.20	22.45	49
22	मानिकपुर	2	3.70	1.10	4.80	12
23	रामनगर	2	3.80	1.20	5.00	12
24	मऊ	5	9.50	3.50	13.00	31
जनपद चित्रकूट		19	35.95	14.40	50.35	116
मण्डल योग		130	246.25	109.90	356.15	803

स्रोतः– कार्यालय, महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र, हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट।

8.3 काष्ठ शिल्प उद्योग :– चित्रकूट धाम मण्डल का यह एक परम्परागत उद्योग हैं। इस उद्योग के प्रमुख उत्पाद – टेबुल लैम्प, जहाज, झूला–पालना, अगरबत्ती स्टैण्ड, चिड़िया, हाँथी, फेमिली सेट, वैंगल स्टैंड, रसोई केसामान, गृहसज्जा की वस्तुएँ, खेलकूद के सामान तथा अन्य कई प्रकार के बच्चों के खिलौनें हैं। यह उद्योग कोमल लकड़ी पर निर्भर है। इसका प्रमुख केन्द्र चित्रकूट है । यहाँ इस उद्योग के स्थानीयकरण का प्रमुख कारण इस क्षेत्र में कोमल लकड़ी के वृक्षों जैसे कोरैया (दूधी), काष्ठ शिल्प उद्योग के लिए सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाली लकड़ी की प्रजाति है, जिसकी आपूर्ति वर्ष पर्यन्त वन निगम के माध्यम से होती है। इस प्रकार के वृक्ष चित्रकूट तथा मानिकपुर के जंगलों में पर्याप्त संख्या में पाये जाते हैं, जिनसे इस उद्योग के लिए कच्चामाल (लकड़ी) प्राप्त होता है। 'कोल' जनजाति के लोग भी निकट के जंगलों से आवश्यक लकड़ियों को इकट्ठा करके औद्योगिक इकाइयों के मालिक को बेंच देते हैं। चित्रकूट में इस उद्योग में कार्य करने वाले स्थानीय बढ़ई या काष्ठ शिल्पकार कच्चेमाल की निश्चित आपूर्ति को प्रोत्साहित करते हैं।

इस उद्योग के लिए अन्य आवश्यक कच्चेमाल जैसे केवड़ा की पत्तियाँ, सीलिंग वाक्स (Sealing wax) 'रंग और पेन्ट' प्रदेश के अन्य स्थानों से आयात किए जाते हैं। केवड़ा की पत्तियाँ रीवा (म0प्र0) से आयात की जाती है। सीलिंग–वाक्स मिर्जापुर से और रंग–रोगन कानपुर महानगर से मँगाया जाता है।

चित्रकूट धाम मण्डल में 52 काष्ठ शिल्प उद्योग की इकाइयाँ कार्यरत हैं। जो कुटीर स्तर पर कार्य कर रही हैं। इनमें से 44 इकाइयाँ चित्रकूट में तथा 5 इकाइयाँ बांदा (बड़ोखर विकासखण्ड) में स्थापित है जबकि हमीरपुर (कुरारा विकासखण्ड), सुमेरपुर तथा चरखारी में एक–एक इकाई क्रियाशील है। चित्रकूट इस उद्योग का प्रमुख केन्द्र है।जहाँ के लकड़ी के खिलौने सुदूर क्षेत्रों में लोकप्रिय हैं।

काष्ठ शिल्प उद्योग की प्रमुख औद्योगिक इकाइयाँ अधोलिखित है– कमदगिरि खिलौना वर्क्स चित्रकूट, सिंह एण्ड ब्रदर्स ट्वाय कम्पनी चित्रकूट, दुर्गा काष्ठ कला चित्रकूट, केदार एण्ड सन्स ट्वाय कम्पनी चित्रकूट, रमेश काष्ठ कला चित्रकूट, लक्ष्मी गृह उद्योग चित्रकूट, साजन लघु काष्ठ कला उद्योग चित्रकूट, विजय काष्ठ कला उद्योग तीर्थराज चित्रकूट, भवानी काष्ठ कला उद्योग चित्रकूट, जानकी वूडेन वर्क्स चित्रकूट धाम, साधना काष्ठकला उद्योग सीतापुर (चित्रकूट), चारु शिल्प उद्यान सीतापुर (चित्रकूट), किशन काष्ठ कला उद्योग सीतापुर चित्रकूट, वैकुण्ठ कला उद्योग कर्वी, पुरुषोत्तम काष्ठ कला उद्योग कर्वी, शंकर काष्ठ कला उद्योग कर्वी, सोनी काष्ठ कला उद्योग कर्वी, जनसेवा काष्ठ कला उद्योग हमीरपुर, विश्वकर्मा काष्ठकला उद्योग गुरगुज सुमेरपुर, मंसूरी काष्ठकला उद्योग चरखारी, भोला काष्ठकला उद्योग तिंदवारी, शंकर काष्ठकला उद्योग बांदा, शर्मा काष्ठकला उद्योग बांदा आदि।

ये औद्योगिक इकाइयाँ विभिन्न डिजायन, आकार और रंग के खिलौने बनाती हैं, जो देखने में बहुत सुन्दर एवं आकर्षक लगते हैं। ये इकाइयाँ खेलकूद के सामान जैसे हाँकी, बैट, गेंद और अन्य मनोरंजन खेल के सामानों का निर्माण करती हैं। खिलौना बनाने की इकाइयाँ कच्चेमाल पर आधारित उद्योग है इसलिए इसका विकास ऐसे क्षेत्र में हुआ है, जहाँ कच्चेमाल की आपूर्ति आसानी से हो सके। इस दृष्टि से कर्वी तथा चित्रकूट उपयुक्त स्थान हैं, जहाँ कच्चेमाल की सुलभता, विद्युत आपूर्ति, बाजार की सुविधाएँ, कुशल काष्ठ शिल्पकार जैसी सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

एक खिलौना निर्माण करने वाली इकाई को प्रतिवर्ष लगभग 80 कुन्तल लकड़ी 500 केवड़ा की पत्तियाँ (Pandanus leaves) 40 किग्रा0 सीलिंग वाक्स (मुहर की लाह) और 200 ग्राम पेन्ट की आवश्यकता होती है।

इस उद्योग के संचालन हेतु साधारण कमरा, पावर को चलाने के लिए लकड़ी की लम्बी और पतली पट्टियाँ (Lathes), मोटर और पालिश करने वाली वस्तुएँ प्रमुख हैं। मोटर विद्युत चालित होता है, इसलिए इसे विद्युत की नियमित आपूर्ति की आवश्यकता होती है। खिलौना बनाने वाली औद्योगिक इकाइयों को विद्युत की आपूर्ति 'माटा–टीला बहु–उद्देशीय योजना' से होती है। प्रति इकाई प्रति माह लगभग 110 यूनिट विद्युत खपत होती है। बड़ी इकाइयाँ प्रतिमाह 200 यूनिट के लगभग विद्युत खपत करती हैं।

इस उद्योग में कुल लगभग 57.20 लाख रुपये का पूँजी निवेश हुआ है, जिसमें 18.20 लाख रुपये स्थायी पूँजी तथा 39.0 लाख रुपये कार्यशील पूँजी सम्मिलित हैं। प्रति इकाई की स्थापना के लिए लगभग 35000 रु0 स्थायी पूँजी तथा 80,000 रु0 कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती है। इस उद्योग द्वारा संचालक को अधिक लाभ प्राप्त होता है,क्योंकि प्रत्येक यूनिट की उत्पादन क्षमता 50,000 रु0 वार्षिक हैं

यह एक घरेलू उद्योग है, इसलिए अधिक श्रमिकों की आवश्यकता नहीं होती है। इस उद्योग के लिए दो प्रकार के श्रमिकों की आवश्यकता होती है– कुशल तथा अकुशल। कुशल श्रमिकों की आवश्यकता मध्यम आकर के संयन्त्रों में होती है। जबकि अकुशल श्रमिकों की आवश्यकता जंगल से लकड़ी–आपूर्ति के लिए होती है। वास्तव में ये नियमित श्रमिक नहीं है। वे इकाइयों को लकड़ी की आपूर्ति करते हैं। छोटी इकाइयों में बाहरी श्रमिक नहीं है, बल्कि परिवार के सदस्य खिलौने बनाने, सजाने और रंग–रोगन और पॉलिश करने का कार्य करते हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में इस उद्योग में 208 व्यक्ति कार्य कर रहे हैं। इस उद्योग में लगभग 36 महिलाओं को भी रोजगार प्राप्त है।

मानचित्र संख्या 8–1 में काष्ठ शिल्प उद्योग में रोजगार की स्थिति को दर्शाया गया है।

काष्ठ शिल्प उद्योग की कुछ समस्यायें भी हैं जो निम्नलिखित हैं–

(1) विद्युत की अनियमित कटौती ।

(2) सरकारी प्रोत्साहन का अभाव ।

(3) चित्रकूट एक धार्मिक स्थल है, यहाँ प्रत्येक अमावस्या को तीर्थयात्री आते हैं। जिनके द्वारा खिलौने खरीदे जाते हैं, लेकिन अन्य दिनों में बिक्री कम हो जाती है।

(4) इस उद्योग को प्लास्टिक के खिलौने बनाने वाली औद्योगिक इकाइयों से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है।

(5) देश–विदेश में काष्ठ शिल्प की माँग बढ़ने के बावजूद शासकीय सहायता न मिलने से शिल्पकारों की जिंदगी आर्थिक तंगहाली से गुजर रही है।

(6) केन्द्रीय वस्त्र मंत्रालय की मदद से यहाँ अकुशल कारीगरों को प्रशिक्षण प्रदान करने की व्यवस्था भी समाप्त कर दी गयी है।

(7) पूँजी का अभाव इस उद्योग के विकास में बाधक है।

(8) उत्पादों के विक्रय के लिए स्थानीय बाजार सीमित है।

इस उद्योग के विकास के लिए सरकारी प्रोत्साहन की आवश्यकता है। उद्योग पतियों को अधिक सुविधाएँ प्रदान कर प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे इस उद्योग का उत्तरोत्तर विकास हो सके।

8.4 अगरबत्ती उद्योग (Agarbatti Industry) :–

पूजा पाठ तथा धार्मिक अनुष्ठानों में अगरबत्ती का प्रयोग महत्वपूर्ण है। वातावरण को सुगन्धित बनाने के लिए इसका प्रयोग घरों तथा धार्मिक स्थलों में किया जाता है। इस उद्योग के लिए पतली बाँस की सींके तथा निश्चित रासायनिक पदार्थो की आवश्यकता होती है। बाँस की सींके बनाने के लिए बाँस क्षेत्र से ही प्राप्त हो जाता है तथा रासायनिक पदार्थ कानपुर से मँगाना पड़ता है।

चित्रकूट धाम मण्डल में अगरबत्ती उद्योग की कुल 32 इकाइयाँ हैं, जिसमें 10 इकाइयाँ हमीरपुर जनपद में, 6 महोबा जनपद में, 8 बांदा जनपद में तथा 8 चित्रकूट जनपद में स्थित हैं। इस उद्योग के प्रमुख केन्द्र राठ, हमीरपुर, मुस्करा, मौदहा, महोबा, कालींजर, बांदा, चित्रकूट तथा राजापुर हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में अगरबत्ती बनाने वाली प्रमुख इकाइयाँ निम्नांकित है –
न्यू गुप्ता अगरबत्ती उद्योग मुस्करा, पूजा अगरबत्ती पठानपुरा राठ, मधुर सुगन्धबहार कोट बाजार राठ, सक्सेना अगरबत्ती, सिकन्द्रापुरा राठ, बेतवा अगरबत्ती वर्क्स बेरीस्टेट हमीरपुर, गायत्री अगरबत्ती उद्योग लोधियातपुरा राठ, देवन्द्र मोहन चौबे अगरबत्ती मैनुफैक्चर रमेड़ी हमीरपुर, अरुण कुमार अगरबत्ती मैनुफैक्चर मौदहा हमीरपुर, गुप्ता अगरबत्ती उद्योग भरुवा सुमेरपुर, कशमीरा मोंगरा अगरबत्ती उद्योग बिवांर हमीरपुर, चन्द्रिका अगरबत्ती ऊदल चौक महोबा, सुगन्धबहार अगरबत्ती ऊदल चौक महोबा लक्ष्मी अगरबत्ती उद्योग पैलानी (बांदा), संगीता अगरबत्ती उद्योग बांदा, अगरबत्ती निर्माण उद्योग कालींजर, (बांदा), अगरबत्ती इन्डस्ट्री पुरानी बाजार कर्वी, माँ महिमा अगरबत्ती उद्योग शंकर बाजार कर्वी चित्रकूट, तुलसी अगरबत्ती उद्योग पश्चिम नाका राजापुर चित्रकूट, शुक्ला अगरबत्ती उद्योग राजापुर, चित्रकूट।

चित्रकूट धाम मण्डल में अगरबत्ती उद्योग का विकास चित्रकूट, कालिंजर, बांदा, मानिकपुर, बदौसा में हो सकता है क्योंकि इन क्षेत्रों में सींके बनाने के लिए बाँस एवं मुलायम लकड़ी आसानी से उपलब्ध हो जाती है।

चित्रकूट धाम मण्डल की सभी 32 इकाइयों में 34.30 लाख रुपये का पूँजी निवेश हुआ है, जिसमें 14.00 लाख रुपये स्थायी पूँजी तथा 19.30 लाख रुपये कार्यशील पूँजी सम्मिलित है। सर्वाधिक पूँजी निवेश हमीरपुर जनपद में 12.00 लाख रुपये हुआ है। इसके अतिरिक्त बांदा जनपद में 9.10 लाख रुपये, महोबा जनपद में 7.45 लाख रुपये तथा, चित्रकूट जनपद में 5.75 लाख रुपये का पूँजी निवेश हुआ है।

मण्डल में अगरबत्ती उद्योग में कुल 118 लोगों को रोजगार मिला हुआ हैं। हमीरपुर जनपद में 38, बांदा जनपद में 32, चित्रकूट जनपद में 28 तथा महोबा जनपद में 20 व्यक्तियों को इस उद्योग में रोजगार प्राप्त है। मण्डल की कुल इकाइयों की वार्षिक उत्पादन क्षमता 16.40 लाख रुपये है।
निम्नलिखित तालिका संख्या 8–4 में चित्रकूट धाम मण्डल में अगरबत्ती उद्योग की इकाइयों का वितरण, रोजगार, पूँजी निवेश तथा उत्पादन क्षमता को दर्शाया गया है :–

तालिका संख्या 8–4

चित्रकूट धाम मण्डल में अगरबत्ती उद्योग की इकाइयों का वितरण, रोजगार, पूँजी निवेश तथा उत्पादन क्षमता – 2003–04

क्र0 सं0	विकासखण्ड /जपनद	इकाइयों की संख्या	रोजगार में लगे लोगो की संख्या	स्थायी पूँजी निवेश लाख रू0 में	कार्यशील पूँजी निवेश लाख रूपये में	कुल पूँजी निवेश लाख रू0 में	वार्षिक उत्पादन क्षमता लाख रू0 में
1	कुरारा	2	7	0.40	1.80	2.20	1.00
2	सुमेरपुर	2	8	0.50	1.95	2.45	1.10
3	सरीला	–	–	–	–	–	–
4	गोहाण्ड	–	–	–	–	–	–
5	राठ	4	15	2.60	2.40	5.00	2.00
6	मुस्करा	1	4	0.20	0.95	1.15	0.50
7	मौदहा	1	4	0.50	0.70	1.20	5.10
जनपद हमीरपुर		10	38	4.20	7.80	12.00	5.10
8	पनवाड़ी	–	–	–	–	–	–
9	जैतपुर	–	–	–	–	–	–
10	चरखारी	2	6	1.15	1.20	2.35	1.10
11	कबरई	4	14	2.50	2.60	5.10	2.10
जनपद महोबा		6	20	3.65	6.80	7.45	3.20
12	जसपुरा	1	4	0.40	0.70	1.10	0.50
13	तिन्दवारी	–	–	–	–	–	–
14	बड़ोखर खुर्द	5	21	2.60	3.00	5.60	2.70
15	बबेरू	–	–	–	–	–	–
16	कमासिन	–	–	–	–	–	–
17	विसण्डा	–	–	–	–	–	–
18	महुआ	–	–	–	–	–	–
19	नरैनी	2	7	1.00	1.40	2.40	1.00
जनपद बांदा		8	32	4.00	5.10	9.10	4.20
20	पहाड़ी	–	–	–	–	–	–
21	कर्वी	5	15	1.10	1.20	3.30	2.50
22	मानिकपुर	1	3	0.20	0.40	0.60	0.40
23	रामनगर	2	10	0.85	1.00	1.85	1.00
24	मऊ	–	–	–	–	–	–
जनपद चित्रकूट		8	28	2.15	2.60	5.75	5.75
मण्डल योग		32	118	14.00	19.30	34.30	16.40

स्रोत:कार्यालय, महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र– हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट (2003–04)

8.5 कागज की दफ्ती बनाने का उद्योग (Card Board Making Industry) :–

यह उद्योग कागज की दफ्ती, कागज की दफ्ती के बक्शे, फाइल कवर और बाइडिंग कवर की माँग को पूरा करता हैं यह माँग पर आधरित उद्योग है। अध्ययन क्षेत्र में केवल एक औद्योगिक इकाई कार्यरत है। यह महोबा नगर में स्थित है।

इस उद्योग का कच्चामाल घास, रद्दीकागज, भूसा, भूसी, पत्तियाँ तथा चिथड़े आदि हैं। मुख्य कच्चामाल घास है जिसका निर्माण की क्रिया में 60% वजन कम हो जाता है चूँकि इस उद्योग के लिए अधिक कच्चेमाल की आवश्यकता होती है। इसलिए इसका परिवहन व्यय (भाड़ा) अधिक होता है। अधिक भाड़े से बचने के लिए कागज की दफ्ती बनाने के उद्योग की स्थापना कच्चेमाल प्राप्ति के क्षेत्रों में की जाती है। जहाँ आस–पास घास, लकड़ी, भूसी, चिथड़े आदि कच्चामाल पाया जाता है। रासायनिक पदार्थ कानपुर से मँगाया जाता है।

महोबा स्थित कार्ड बोर्ड इन्डस्ट्री की स्थापना में कुल 3.25 लाख रुपये का पूँजी निवेश हुआ है, जिसमें 2.50 लाख रुपये स्थायी पूँजी (भूमि, भवन और मशीन उपकरण में) तथा 0.75 लाख रुपये कार्यशील पूँजी हैं। कार्यशील पूँजी में कच्चेमाल और रासायनिक पदार्थों की लागत, तैयार माल का भण्डार, वेतन–बिल आदि सम्मिलित है।

इस इकाई में 8 कर्मियों को रोजगार प्राप्त है। कागज की दफ्ती (Card board) बनाने वाली इस इकाई की उत्पादन क्षमता 1.10 लाख रुपये वार्षिक है।

अध्ययन क्षेत्र में स्थित केवल एक इकाई मण्डल की आवश्यकता को पूरा नहीं कर पा रही है अतः अन्य इकाइयों की स्थापना होनी चाहिए। अतर्रा, बांदा तथा चित्रकूट इस उद्योग की स्थापना के लिए उपयुक्त केन्द्र है, क्योंकि इन केन्द्रों को आसानी से कच्चा माल प्राप्त हो सकता है। इस उद्योग की प्रमुख समस्या कच्चेमाल का वर्षभर नियमित उपलब्ध न होना है।

8.6 कागज उद्योग (Paper Industry) :–

संसार की 16.7% जनसंख्या का देश (भारत) संसार के कुल कागज की खपत का केवल 1: ही उपयोग करता है। देश में प्रति व्यक्ति कागज का औसत उपभोग 3.1 किग्रा0 है जबकि चीन में 18 किग्रा0, मलेशिया में 61 किग्रा0, जापान में 225 किग्रा0 है जबकि विश्व का औसत उपभोग 45 किग्रा0 है।

विश्व में सर्वप्रथम कागज का निर्माण पूर्वी तुर्किस्तान में (चीन का एक भाग) किया गया था, जहाँ लगभग 105 ई0 में किसी रेशीय कच्चे पदार्थ से हाँथ से कागज बनाया गया।[2]
शीघ्र ही कागज पुराने कपड़ों, सन, मछली पकड़ने के जाल, घास, कोमल हरे बाँस से बनाया जाने लगा।[3]

तीसरी तथा चौथी शताब्दी में मिस्र में नील नदी के समीपवर्ती जंगलों में पैपी रस (Papy Rus) नामक पौधा उगता था, जिसकी पत्तियाँ लिखने में प्रयोग की जाती थी।[4] 6वीं शताब्दी में जापान में कागज बनाने के लिए रेशेदार कच्चामाल प्रयोग में लाया जाता था।[5]

भारत में भी कुछ पत्तियाँ जैसे भोजपत्र कागज के रुप में लिखने के लिए प्रयोग किये जाते थे। भारत में कागज उद्योग का प्रारम्भ सन् 1812 में श्रीरामपुर (प0 बंगाल) में किया गया, जो अधिक समय

तक न संचालित हो सका। 1870 में पुनः एक नया प्रयत्न किया गया, जब हुगली नदी के किनारे कोलकाता के समीप 'बाली' नामक स्थान पर एक अन्य कारखाना स्थापित किया गया। वस्तुतः इस उद्योग का वास्तविक विकास तब हुआ जब लखनऊ में सन्1879 ई0 में 'अपर इण्डिया पेपर मिल्स' तथा सन् 1881 में पश्चिम बंगाल में 'टीटागढ़ पेपर मिल्स' की स्थापना की गयी। सन् 1950 के बाद हमारे देश में कागज उद्योग ने तेजी से उन्नति की। आधुनिक युग में हमारे जीवन में विभिन्न प्रकार के कागजो का प्रयोग होने लगा है।

यह उद्योग मुख्यतः कच्चेमाल पर आधारित उद्योग है इसलिए इस उद्योग की स्थापना कच्चेमाल के क्षेत्रों के निकट सफलता पूर्वक हो सकती है। औसत रुप से एक टन कागज बनाने के लिए 2.38 टन बाँस की आवश्यकता पड़ती है।[6] यद्यपि कागज मिलें कागज मिलें देश के सभी भागों में पायी जाती है, परन्तु कागज मिलों का स्थानीयकरण बाँस, काष्ठ और खोई की बहुतायत वाले राज्यों एवं क्षेत्रों में अधिक हुआ है। कागज उद्योग कच्चेमाल को कम करने वाला उद्योग है। कागज बनाने की प्रक्रिया में कच्चेमाल का भार 60% कम हो जाता है।[7] कागज उद्योग में मुख्य रुप से कच्चामाल— धान की भूसी, रद्दी गत्ता तथा कागज, रस्सी, भूसा घासें तथा चिथड़े आदि हैं। भरुवासूमेरपुर में कागज उद्योग के लिए धान की भूसी अतर्रा तथा बांदा से मँगायी जाती थी। अन्य कच्चामाल क्षेत्र में ही उपलब्ध हो जाता था। रासायनिक पदार्थ चूना, चाइनाक्ले, कास्टिक सोडा, 'अलम फेरिक' (Alum-feric) तथा अन्य रासायनिक पदार्थ कानपुर तथा सतना से मँगाये जाते थे। रासायनिक पदार्थ कागज उद्योग में वानस्पतिक कच्चेमाल को शीघ्र विघटित करने में प्रयोग किये जाते हैं। चूना इसके वजन तथा परिमाण को कम करता है। अन्य रासायनिक पदार्थ भी इसके वजन को कम करते हैं। यह उद्योग रासायनिक क्रिया का उद्योग कहा जाता है। कागज बनानेके लिए पहले रासायनिक पदार्थो को मिलाकर लुगदी तैयार की जाती है तत्पश्चात उसे शुद्धकर कागज निर्मित किया जाता है।

भारत में कागज व गत्ता बनाने के लिए कच्चामाल 38% वनोत्पादों से तथा 62% कृषि अपशिष्ट और पुनुरुपयोग में आने वाले कागज व चीथड़ों से प्राप्त होता है।

चित्रकूट धाम मण्डल में प्रथम पेपर मिल (मध्यम स्तर) 1988 में भरुवासुमेरपुर (हमीरपुर) में 'सुशीला पेपर मिल' स्थापित की गयी थी जिसका पूँजी निवेश 2 करोड़ 65 लाख रुपये था। 1993 में यह मिल रुग्ण होकर बन्द हो गयी। इसके बाद 1989 में भरुवासुमेरपुर में दो और मध्यम स्तर की कागज मिलों की स्थापना हुई। जिनमें 'रजत पेपर मिल' भरुवा सुमेरपुर का नाम उल्लेखनीय है।

ये दोनों मिलें पारिवारिक विवादों के कारण अल्प समय में 1991 में बन्द हो गयी। इस प्रकार ये तीनों मिलें वर्तमान समय में बन्द पड़ी है। भरुवासुमेरपुर स्थित ये इकाइयाँ विभिन्न प्रकार का कागज बनाती थी, जैसे ड्राइंग पेपर, वाटरमार्क्ड पेपर, फाइल कवर पेपर, आर्टिस्टिक पेपर, पेसटल कलर पेपर आदि। इन तीनों इकाइयों के माध्यम से 60 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त था। सरकार इन मिलों की समस्याओं के निदान में संलग्न है, जिससे इनके पुनः प्रारम्भ होने की संभावना है।

इस उद्योग में कुल उत्पादक पूँजी का 70: स्थायी पूँजी में निवेश होता है। इसका तात्पर्य यह है कि कागज बनाने वाली मशीन तथा उपकरण काफी मँहगे होते हैं। कागज बनाने वाली इकाइयों को निरन्तर कार्य करने के लिए अधिक कच्चेमाल के भण्डारन की आवश्यकता होती है। अतः इसके लिए अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है।

इस उद्योग में श्रमिक खर्च कुल कार्यशील पूँजी का लगभग 1/6 भाग होता है।[8] कचचेमाल प्राप्ति के क्षेत्रों में इस उद्योग की स्थापना उपयुक्त होती है।

इस उद्योग की कुछ समस्यायें हैं (1) इस उद्योग के लिए सबसे बड़ी समस्या कच्चेमाल की कमी है (2) कागज मिलों के लिए पर्याप्त विद्युत शक्ति नहीं मिल पाती हैं। (3) पूँजी का अभाव भी इस उद्योग की एक समस्या है।

उत्तर प्रदेश सरकार ने इस उद्योग के विकास के लिए कुछ योजनायें प्रारम्भ की हैं जिनका उद्देश्य निम्नलिखित है :—

(1) हाँथ से कागज बनाने की आधुनिक विधि का कागज बनाने वाले शिल्पकारों को प्रशिक्षण देना।

(2) कच्चेमाल और उपकरणों के विषय में शोध करना।

(3) शिल्पकारों (Artisan) को लुग्दी तथा अन्य सामाग्री की आपूर्ति करना।

(4) शिल्पकारों को तकनीकि ज्ञान प्रदान करना तथा मार्गदर्शन देना।

(5) उत्तम किस्म के कागज की जानकारी देना जैसे डी.ओ. पेपर फिल्टर पेपर आदि।

17 जुलाई 1997 से सरकार ने कागज उद्योग को पूरी तरह 'लाइसेंस मुक्त' कर दिया है। इस समय (2002) में देश में 515 कागज मिलें हैं (इसमें अखबारी कागज मिलें भी शामिल हैं।) 194 कागज मिलें, जिनमें से अधिकतर छोटी मिलें है, या तो बीमार हैं और बंद पड़ी हैं।[9] कागज उद्योग, खासतौर पर गैर—परंम्परागत कच्चेमाल के उपयोग पर आधरित मिलों के लिए अनेक प्रोत्साहन दिए गए हैं। 75% से अधिक अपारंपरिक कच्चेमाल से बने कागज और गन्ने के उत्पादों को प्रति वर्ष पहले 3,500 टन उत्पादन को उत्पाद शुल्क से छूट प्रदान की जाती है।

8.7 : आयुर्वेदिक दवा बनाने का उद्योग (Ayurvedic Medicine Manufacturing Industry):—

चित्रकूट धाम मण्डल में नाना प्रकार की दुर्लभ जड़ीबूटियाँ पायी जाती हैं। यहाँ पायी जाने वाली प्रमुख जड़ी बूटियाँ अश्वगंधा, गुम्मीठर्रा, लोखराही, पथरचट्टा, छुईमुई, दुद्धी, लटजीरा, बसई, गुडुच, निर्गुडी, परिजात, विदारीकंद, सफेद पुनर्नवा, गुडमार, अर्जुन, हरीतिका, चेतकी, शलावटी, पाषाणभेद, शिवलिंगी, शंखपुष्पी, बेल, सफेद तुलसी, काली तुलसी, आंवला, हर्र, बहेड़ा, जंगली गोंद, पीपल, सफेद मूसली, कालाजीरा, हरसिंगार, गोखरु, मकोय, किवांछ, गंधराज, घीग्वार, शतावर, आदि है। जिनसे आयुर्वेदिक दवायें निर्मित की जाती हैं। जड़ी बूटियों का संग्रह तथा उनस आयुर्वेदिक दवा बनाने का उद्योग मण्डल का एक परम्परागत उद्योग है।

चित्रकूट धाम मण्डल में आयुर्वेदिक दवा बनाने वाली औद्योगिक इकाइयों की संख्या मात्र 7 हैं जिनमें बांदा, चित्रकूट एवं हमीरपुर जपनद में इकाइयों की संख्या क्रमशः 3,1 एवं 3 है।इन इकाइयों में विविध स्वास्थ्य वर्धक औषधिया निर्मित की जाती है, जिनमें अवलेह, तेल, चूर्ण, टेबलेट एवं आसव प्रमुख हैं।

निम्नलिखित तालिका सं0 8—5 में आयुर्वेदिक दवा बनाने वाली इकाइयों का पूँजी निवेश, रोजगार तथा उत्पादन क्षमता को दर्शाया गया है :—

तालिका सं0 8–5

चित्रकूट धाम मण्डल में आयुर्वेदिक दवा बनाने वाली इकाइयों का पूँजी निवेश, रोजगार तथा उत्पादन क्षमता – 2003–04

क्र सं0	आयुर्वेदिक मेडिसन यूनिट का नाम	स्थायी पूँजी (लाख रुपये में)	कार्यशील पूँजी (लाख रुपये में)	कुल निवेश (लाख रुपये में)	वार्षिक उत्पादन क्षमता (लाख रुपये में)	रोजगार में लगे व्यक्तियों की सं0
1	गुप्ता आयुर्वेदिक फार्मेसी राठ हमीरपुर	0.60	0.70	1.30	1.10	7
2	वीरेन्द्र सिंह चौहान आयुर्वेदिक फार्मेसी भरुवा सुमेरपुर (हमीरपुर)	0.42	0.60	1.02	1.00	7
3	रघुवीर आयुर्वेदिक फार्मेसी भरुवा सुमेरपुर	0.60	0.50	1.10	1.10	7
4	श्याम आयुर्वेदिक सेवा संस्थान बांदा	0.20	0.30	0.50	0.50	4
5	माधव रसायन शाला तिंदवारी (बांदा)	0.96	0.54	1.50	0.90	4
6	प्रणव आयुर्वेदिक फार्मेसी अतर्रा, बांदा	0.18	0.30	0.48	0.50	3
7	लक्ष्मी आयुर्वेदिक फार्मेसी राजापुर, चित्रकूट	0.45	0.60	1.05	0.60	4
योग		**3.41**	**3.54**	**6.95**	**5.70**	**36**

स्रोतः कार्यालय, क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी, हमीरपुर, बांदा (2003–04)

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि माधव रसायन शाला तिंदवारी (बांदा) तथा गुप्ता आयुर्वेदिक फार्मेसी राठ, हमीरपुर मण्डल की सबसे बड़ी आयुर्वेदिक दवा निर्मित करने वाली इकाइयाँ हैं। ये सभी लघु स्तर की इकाइयाँ हैं। सन् 1991 में 'यदुनाथ सिंह चौहान आयुर्वेदिक फार्मेसी भरुवा सुमरेपुर' की स्थापना हुई थी, जिसमें 22 लाख रुपये का पूँजी निवेश था। सन् 1995 में यह इकाई अपरिहार्य कारणों से बन्द हो गयी । यह चित्रकूट धाम मण्डल की सबसे बड़ी आयुर्वेदिक फार्मेसी थी।

बांदा तथा चित्रकूट इस उद्योग के लिए अनुकूल केन्द्र हैं। समीपवर्ती वनों में कच्चामाल– जड़ी बूटियाँ, छालें, पत्तियाँ, फल–फूल तथा शहद आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो जाते हैं। इस उद्योग में विभिन्न प्रकार का कच्चामाल प्रयोग किया जाता है। कुछ कच्चामाल औसत निर्माण इकाइयाँ अपने खेतों में उत्पन्न करती हैं तथा कुछ माल वनों से एकत्र किया जाता है। अधिकांशतः कच्चामाल निकट के जंगलों से एकत्र किया जाता है। कुछ कच्चामाल दूर के बाजारों से भी क्रय किया जाता है। इस उद्योग में प्रयुक्त होने वाला कच्चामाल कई किस्मों का होता है जैसे– जड़ीबूटियाँ, छालें, पत्तियाँ, फल–फूल, पेड़–पौधों की शाखायें एवं उनका दूध, शक्कर, अल्कोहल, शहद, रासायनिक पदार्थ, तथा खनिज पदार्थ। कुछ कच्चामाल काफी मँहगा होता है, जैसे– सोना, पारा, मोती भस्म (Peal ashes) आदि। ये साधरणतः बड़े बाजार केन्द्रों में खरीदे जाते हैं, जैसे– कानपुर, इलाहाबाद, दिल्ली, कोलकाता,

FIG. 8.2
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
FOREST BASED INDUSTRIES
2003-04
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
KURARA
SUMERPUR
JASPURA
TINDWARI
SARILA
MUSKARA
GOHAND
RATH
CHARKHARI
KABRAI
MAUDAHA
BAROKHAR KHURD
BABERU
KAMASIN
BISANDA
PAHARI
MAHUA
NARAINI
KARWI
RAMNAGAR
MAU
MANIKPUR
PANWARI
JAITPUR
SAW MILLING INDUSTRY
AGARBATTI INDUSTRY
AYURVEDIC MEDICINE INDUSTRY
NO. OF WORKERS
200
150
100
50
CIRCLE REPESENT AVERAGE DAILY NO. OF WORKERS EMPLOYED

फरीदाबाद, और गाजियाबाद आदि।इन दवाओं को काँच अथवा प्लास्टिक की बोतलों में पैक किया जाता है।

चित्रकूट धाम मण्डल की इन सभी आयुर्वेदिक दवा बनाने वाली इकाइयों में 6.95 लाख रुपये का पूँजी निवेश हुआ है, जिसमें 3.41 लाख रुपये स्थायी पूँजी तथा 3.54 लाख रुपये कार्यशील पूँजी लगी हुई है।

आयुर्वेदिक दवा बनाने वाले उद्योग में कुशल तथा अनुकूल दोनों प्रकार के श्रमिकों की आवश्यकता होती है। पेटेन्ट (Patent) दवाओं को तैयार करने के लिए कुशल तथा अनुभवी व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। दवा बोतलों में भरनें, सैम्पलिंग और पैकिंग करने के लिए अर्ध कुशल कर्मियों की आवश्यकता होती है। चित्रकूट धाम मण्डल में कुल 36 कर्मी आयुर्वेदिक दवा बनाने में लगे हुए हैं (मानचित्र सं0 8–2) मण्डल की सभी आयुर्वेदिक दवा बनाने वाली इकाइयों की वार्षिक उत्पादन क्षमता 5.70 लाख रु0 है।

इस उद्योग का बाजार बहुत विस्तृत है। उत्पादन की आपूर्ति निकटवर्ती राज्यों के अतिरिक्त सुदूर राज्यों जैसे पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, बिहार एवं छत्तीसगढ़ को होती है।

अतर्रा (बांदा) में राजकीय आयुर्वेदिक कालेज स्थित है , जहाँ विभिन्न राज्यों से आये हुए विद्यार्थी आयुर्वेदिक चिकित्सीय शिक्षा प्राप्त कर 'बी.ए.एम.एस.' की उपाधि धारण करते हैं।इस राजकीय आयुर्वेदिक कालेज में व्यक्तिगत उपयोग के लिए एक 'मिनी फार्मेसी' भी है। 'बुन्देलखण्ड आयुर्वेद सेवा संस्थान भरुवा, सुमेरपुर, हमीरपुर' में भी वनौषधि जड़ीबूटियों का संग्रह करके आयुर्वेदिक औषधि निर्माण की जाती है।

इस उद्योग की प्रथम समस्या कच्चेमाल का पर्याप्त मात्रा में वर्षपर्यन्त उपलब्ध न होना है। इस उद्योग में प्रयुक्त होने वाले कच्चेमाल का संग्रह वनस्पतियों तथा जड़ी बूटियों की अच्छी जानकारी रखने वाले ही कर सकते हैं। जिनकी संख्या उत्तरोत्तर घटती जा रही है। द्वितीय समस्या इस उद्योग को 'ऐलोपैथी' (Allopathy) प्रकार की चिकित्सा पद्धति से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि ऐलोपैथी दवाइयाँ अधिक लोकप्रिय हो गई हैं।

8.8 डलिया उद्योग (Basket Making Industry) :–

ग्रामीण क्षेत्रों का यह परम्परागत कुटीर उद्योग है। डलिया, बाँस, अरहर की खॉड तथा सेहारु से बनायी जाती है। अरहर की खॉड, अरहर उत्पादन क्षेत्रों में आसानी से उपलब्ध हो जाती है। बाँस तथा सेहारु निकटवर्ती जंगलों से प्राप्त होता है। सेहारु तथा बाँस चित्रकूट तथा बांदा के जंगलों से प्राप्त किया जाता है। बड़े तथा मोटे किस्म का रोपित बाँस ग्रामीण क्षेत्रों से पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो जाता है।

चित्रकूट धाम मण्डल में डलिया बनाने वाली कुल 54 इकाइयाँ हैं, जिनमें 16 इकाइयाँ हमीरपुर जनपद में, 11 इकाइयाँ महोबा जनपद में, 17 इकाइयाँ बांदा जनपद में तथा 10 इकाइयाँ चित्रकूट जनपद में स्थित हैं।

मण्डल की अधिकाँश इकाइयाँ बाँस से डलियाँ बनाती है। हमीरपुर जनपद में ममना (सरीला विकासखण्ड) डलिया उद्योग के लिए सर्वाधिक प्रसिद्ध केन्द्र है, जहाँ अरहर की खांड से डलिया बनायी जाती है, लेकिन संरक्षण के अभाव में यह उद्योग का रुप धारण नहीं कर सका है। यहाँ प्रत्येक जाति

वर्ग के लोगों द्वारा अरहर की खांड से डलिया बनायी जाती है। यहाँ की निर्मित डलिया दिल्ली, हरियाणा, व पंजाब, आदि प्रान्तों तक भेजी जाती है।

इससे जुड़े शिल्पियों को भी प्रशासन द्वारा किसी प्रकार का संरक्षण नहीं दिया जाता है, जिसके कारण लोगों की जीविका का एक अच्छा साधन साबित होने वाला यह उद्योग अभी तक व्यापक स्वरुप धारण नहीं कर सका है। कच्चेमाल की वर्षभर व्यापक आपूर्ति न होने के कारण क्षेत्रीय उद्यमियों को अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उन्हे कटाई के समय पर आसपास के ग्रामों से भी खांड का प्रबन्ध करना पड़ता है। 'ममना' की भौगोलिक स्थिति के अनुसार यह सम्पूर्ण क्षेत्र असिंचित है, जहाँ पर अरहर जैसी खेती लोग व्यापक पैमाने पर करते हैं। यह उद्योग वैसे तो क्षेत्र के लगभग प्रत्येक गाँव में अपनाया जाता है परन्तु ममना ग्राम में इसे वर्षभर बनाते हैं। यहाँ की निर्मित डलिया का प्रयोग विविध संसाधनों के रख रखाव, पैकिंग एवं उत्पादित वस्तुओं के निर्यात में प्रयोग किया जाता है, साथ ही महोबा के पान को सुरक्षित विविध स्थानों में भेजने फलों एवं सब्जियों के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में भेजने में भी इसका बहुतायत से प्रयोग किया जाता है। यहाँ न केवल बॉस निर्मित डलियां अपितु चटाइयां, टोकरियां, झाडू, बॉस निर्मित विविध साज सज्जा का सामान भी बनाया जाता है।

चित्रकूट जनपद में बाँस की डलिया बनाने की एक बड़ी इकाई 'अशोक डलिया उद्योग राजापुर '(चित्रकूट) है। जहाँ 6 लोगों को रोजगार प्राप्त है। मण्डल में इस उद्योग में 176 लोगों को रोजगार प्राप्त है। यह उद्योग कम पूँजी से संचालित किया जा सकता है तथा इससे अच्छा लाभ कमाया जा सकता है।

यदि क्षेत्र में निर्मित माल को बड़े-बड़े शहरों में भेजने की सरकारी व्यवस्था कर दी जाये तो इससे जुड़े लोगों को मेहनत के अनुरुप उसका लाभ मिलने लगेगा। अतः इस कुटीर उद्योग के विकास के लिए शासकीय सहायता की नितान्त आवश्यकता है।

8.9 बीड़ी उद्योग (Biri Making Industry) :-

बीड़ी धूम्रपान का एक सस्ता एवं सहज सुलभ माध्यम है विशेषतः ग्रामीण एवं निर्धन वर्ग बहुत समय पहले से इसका प्रयोग परम्परागत रुप से करते चले आ रहे है। यह तेदूँ की पत्ती में तम्बाकू की पत्ती का चूर्ण भर कर बनायी जाती है। तेदूँ के वृक्ष चित्रकूट, बांदा तथा महोबा के जंगलों में पर्याप्त संख्या में पाये जाते हैं। वन निगम इन पत्तियों को मई-जून मास में श्रमिकों द्वारा तुड़वाता हैं। पत्तियों के तोड़ने का कार्य अधिकाशंतः कोल तथा निम्न वर्ग जातियाँ करती हैं। श्रमिक तेदूँ की पत्तियों के बण्डल बनाकर (लगभग 50 पत्तियों के) निगम द्वारा निर्धारित किये हुए 'फड़' में बेंच देते हैं। निगम के कर्मचारी बण्डलों को धूप में सुखाकर जूट के झालों में भरकर पैक कर देते हैं। वन निगम इन झालों को सुरक्षित गोदामों में रखता है, बाद में बीड़ी बनाने वाली इकाइयों को इस सूखे तेंदू के पत्ते का निर्यात जबलपुर, सतना, कटनी, इन्दौर, इलाहाबाद, और मुम्बई केन्द्रों को किया जाता है।

स्थानीय तम्बाकू बीड़ी बनाने के लिए उपयुक्त नहीं है इसलिए इसका आयात गुजरात के तम्बाकू उत्पादक क्षेत्रों से होता है। जो कि अच्छे किस्म की होती है। पैकिंग पेपर कानपुर तथा इलाहाबाद से मँगाया जाता है एवं सूत स्थानीय क्षेत्रों में ही उपलब्ध हो जाता है।

चित्रकूट धाम मण्डल में दो दशक पूर्व बीडी–व्यवसाय अतिउन्नाति अवस्था में था। सन् 1989–90 में अध्ययन क्षेत्र में 33 बीडी बनाने वाली इकाइयाँ थीं। इनमें से तत्कालीन बांदा जनपद में 20 इकाइयाँ तथा महोबा जनपद में 13 इकाइयाँ कार्यरत थी।

'श्याम बीड़ी वर्क्स मानिकपुर चित्रकूट' के बढ़ते प्रभाव के कारण चित्रकूट धाम मण्डल की लगभग सभी इकाइयाँ ठप्प पड़ गयी हैं। बांदा जनपद की सभी इकाइयाँ एक के बाद एक बन्द होती गयी। दो वर्ष पूर्व रोहित बीड़ी कं0 बीड़ी का निर्माण कर रही थी, किन्तु अब वह भी बन्द हो गयी है। सम्प्रति, हमीरपुर जनपद में भी कोई इकाई कार्य नहीं कर रही है।

महोबा जनपद में भी बीड़ी व्यवसाय में आई गिरावट के कारण शहर के आधा दर्जन बीड़ी कारखाने बन्द हो गये हैं। इस व्यवसाय से जुड़े सैकड़ों परिवार बेरोजगार हो गये हैं। दो दशक पूर्व यहाँ पर बीड़ी बनाने का कारोबार जोरों पर था। आठ कारखानों में बीड़ी बनाने एवं छाँटने का काम चलता था, जिसमें हजारों लोग बीड़ी बनाने का काम करते थे। इसके अलावा घरों में भी महिलाएँ बीड़ी बनाने का काम करती थीं। यहाँ की मशहूर ताजमहल व राजा बीड़ी दूर–दूर तक अपनी पहचान बनाये हुये थीं। यहाँ की बीड़ी उ0प्र0 के अलावा अन्य प्रान्तों में भी भेजी जाती थी। एक दशक से इस कारोबार को ग्रहण लग गया है और आधा दर्जन कारखानें बन्द हो गये हैं। वर्तमान में सिर्फ दो ही कारखानें चल रहें हैं जिसमें 'दी रायल बीड़ी फैक्ट्री महोबा' 'टिकट छाप बीड़ी' का निर्माण कर रही है। कारखानों के बन्द होने का प्रमुख कारण शेष अन्य कम्पनियों का प्रतिस्पर्धा में 'श्याम बीड़ी वर्क्स, मानिकपुर, चित्रकूट' से पिछड़ जाना है।

इस प्रकार अब (2003–04) 'श्याम बीड़ी वर्क्स मानिकपुर चित्रकूट' 'श्याम बीड़ी' का तथा दी रायल बीड़ी फैक्ट्री, महोबा टिकट छाप बीड़ी का निर्माण कर रही है। 'श्याम बीड़ी वर्क्स मानिकपुर चित्रकूट' का कारोबार मध्य प्रदेश (सतना जनपद) में भी विस्तृत हैं। तैयार माल की आपूर्ति उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश में की जाती है।

चित्रकूट जनपद में मानिकपुर विकासखण्ड में श्याम बीड़ी वर्क्स में 450 लोगों को रोजगार प्राप्त है, इसमें अन्य जनपदों जैसे सतना इलाहाबाद के लोगों को भी रोजगार प्राप्त है। महोबा जनपद में कबरई विकासखण्ड में 250 लोगों को इस उद्योग में रोजगार प्राप्त है। बीड़ी बनाने का कार्य अधिकांशतः महिला श्रमिक कर रही हैं।

इस उद्योग में कार्यरत श्रमिक स्थानीय हैं जिसमें 60% महिलायें हैं, क्योंकि बीड़ी बनाने में पत्तियों को काटना, तम्बाकू भरना, रोलिंग, धागे से बाँधना तथा बण्डल बनाने में अधिक श्रम की आवश्यकता नहीं होती है। अतः इस कार्य हेतु सस्ते एवं कुशल श्रमिक के रुप में स्थानीय महिलायें सुलभ है। इस उद्योग में शुद्ध प्राकृतिक कच्चेमाल का प्रयोग होता है। निर्माण की क्रिया के समय इसका वजन कम नहीं होता इसलिए इस उद्योग की स्थापना उपभोक्ताओं के बड़े केन्द्रों में होती है।

चित्रकूट धाम मण्डल की बीड़ी बनाने वाली ये इकाइयाँ स्थानीय उपभोक्ताओं को आपूर्ति के साथ ही साथ अन्य प्रदेशों में अपने उत्पाद को निर्यात करती हैं।

इस उद्योग की प्रमुख समस्या तम्बाकू की कम आपूर्ति तथा इसका अभाव है। इसके अतिरिक्त कभी–कभी तेंदूँ की पत्तियों की कमी का भी सामना इन इकाइयों को करना पड़ता है।

धूम्रपान करना स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद है इसलिए सरकार ने इस उद्योग पर भारी कर (TAX) लगा रखा है, जिसका समय–समय पर भुगतान करना बीड़ी निर्माताओं के लिये गम्भीर समस्या है।

8.10 दोना पत्तल निर्माण उद्योग :–

चित्रकूट धाम मण्डल का यह परम्परागत मौसमीय कुटीर उद्योग है। यहाँ पाये जाने वाले चौड़ी पत्ती वाले वृक्षों– ढ़ाक, सागौन, बरगद, महुवा, बहेड़ा आदि के पत्तों सें दोना तथा पत्तल बनाने का उद्योग लगभग प्रत्येक गाँव में प्रचलित है, जो हाथ द्वारा स्थानीय पूर्ति के लिए बनाया जाता है। मण्डल में पाये जाने वाले वृक्षों के पत्तों से मशीन से खाँचेदार थाली तथा दोना नहीं बनता क्योंकि यहाँ के पत्तों में तैलीय पदार्थ नहीं पाया जाता है अतः बिहार तथा पश्चिमी बंगाल से साखू तथा सागौन का पत्तल मँगाना पड़ता है फिर उससे मशीन द्वारा खाँचेदार थाली तथा दोनों बनाया जाता है।

मण्डल में खाँचेदार थाली तथा दोना बनाने वाली एक इकाई 'श्री रामबाबू गुप्ता दोना पत्तल उद्योग' लोदीपुर–निवादा हमीरपुर' में स्थित है। कच्चामाल (साखू तथा सागौन का पत्तल) दुर्गापुर, चन्द्रकोना पश्चिमी बंगाल तथा पटना–बिहार से मँगाया जाता है। अन्य कच्चामाल टेसू (प्लास्टिक पतली पन्नी), रोल, बोरी, धागा आदि कानपुर से मँगाया जाता है। पत्तल से खाँचेदार थाली तथा दोना बनाने वाली मशीन संचालित करने के लिए विद्युत शक्ति की आवश्यकता होती है, क्योंकि डाई को विद्युत शक्ति द्वारा हीट करना पड़ता है। गर्म डाई मे दो पत्तलों के मध्य टेसू रखकर दबाया जाता है, जिससे खाँचेदार थाली–दोना बनकर तैयार हो जाता है। तैयार माल का विक्रय छानी विंवार, मौदहा, राठ, कबरई, चरखारी, श्रीनगर (महोबा), बेलाताल तथा लौड़ी, छतरपुर (म0प्र0) के बाजारों में होता है। मशीन द्वारा पत्तल से खाँचेदार थाली तथा दोना बनानें के उद्योग का लागत–लाभ विश्लेषण निम्नलिखित तालिका सं0 8–6 में दिया गया है:–

तालिका संख्या 8–6

मशीन द्वारा पत्तल से थाली तथा दोना बनाने के उद्योग, की पूँजी संरचना

क्रम सं0	मद	उत्पादक पूँजी (रुपये में)	प्रतिशत
1	भूमि	15,000	11.19
2	भवन	25,000	18.66
3	प्लान्ट और मशीनरी	17,000	12.69
4	अन्य स्थायी सम्पत्ति	2000	1.49
	कुल स्थायी पूँजी	59,000	44.03
5	कच्चेमाल का स्टाक	40,000	29.85
6	तैयार माल का स्टाक	10,000	7.46
7	उधार–बकाया	5,000	3.73
8	आपरेटिंग खर्चे	10,000	7.46
9	आकस्मिक नगदी	10,000	7.46
	कुल कार्यशील पूँजी	75,000	55.97
	कुल उत्पादक पूँजी	134,000	100.00

मासिक उत्पादन मूल्य रु0 – 70,000

मासिक शुद्ध लाभ रु0 – 15,000

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि इस उद्योग में लगभग 1.34 लाख रुपये का पूँजी निवेश होता है। स्थायी पूँजी में सर्वाधिक भूमि और भवन में 29.85% खर्च होता है। लगभग इतना ही खर्च कच्चेमाल के स्टाक मे कार्यशील पूँजी के रुप में होता हैं। मासिक उत्पादन मूल्य 70 हजार रुपये तथा मासिक शुद्ध लाभ 15000 रु होता है।

सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में हाथ से दोना–पत्तल बनाने की 4.22 इकाइयाँ हैं। जिसमें 810 व्यक्ति संलग्न हैं। सवार्धिक चित्रकूट जिले में 308 व्यक्ति कार्यरत है, जबकि बॉदा, महोबा एवं हमीरपुर में क्रमशः 236, 198 एवं 67 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है। चूँकि यह एक मौसमीय उद्योग है। अतः वर्षा ऋतु में इसका स्टाक करना पड़ता है।

इस उद्योग की कुछ समस्यायें निम्नलिखित हैं :–

(1) नियमित विद्युत आपूर्ति न होने से मशीन द्वारा पत्तल से खाँचेदार थाली तथा दोना बनाने के उद्योग को हानि उठानी पड़ती हैं।

(2) मण्डल में खँचेदार थाली एवं दोना बनाने के लिए वृक्षों में तैलीय चौड़े पत्ते नहीं पाये जाते हैं, जिससे इस उद्योग का आशानुरुप विकास नहीं हो सका है।

(3) स्थानीय वृक्षों के पत्तों से बिना खाँचेदार हाँथ से दोना एवं पत्तल अधिक बनाया जाता है, जो कि देखने में आकर्षक नहीं लगता इसलिए इसकी कीमत बहुत कम होती है।

(4) इस उद्योग को प्लास्टिक के प्लेट और दोना की प्रतिस्पर्धा से सामना करना पड़ रहा है।

(5) चौड़ी पत्ती वाले वृक्षों की कमी के कारण कच्चेमाल की आपूर्ति कम होती है। अतः इस उद्योग के विकास के लिए चौड़ी तथा बीड़ी पत्ती वाले वृक्षों के रोपण की आवश्यकता है, ताकि कच्चेमाल की आपूर्ति आसानी से मांगानुरुप होती रहे।

8.11 रस्सी बनाने का उद्योग (Rope Making Industry) :–

रस्सी बनाना गाँवों का एक परम्परागत उद्योग है। यह बहुत पुराना उद्योग है। रस्सी सन, रामबाँस, और विभिन्न प्रकार की घासों जैसे मूंज, कुश और बबई से निर्मित जाती हैं। साधारणतः प्रत्येक गाँव में ग्रामवासी अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए रस्सी बनाते हैं, लेकिन यहाँ कोई औद्योगिक इकाई नहीं हैं। मूज, कुश तथा बबई की रस्सी साधारणतया चारपाई बनाने में प्रयोग की जाती है। सन तथा रामबाँस की रस्सी विभिन्न प्रकार के कार्यों में प्रयोग की जाती है। सनई से रेशा (सन) अलग करने के लिए उसे तालाबों या गड्ढ़ों में डाल देते हैं। 20–25 दिन तक पानी में पड़े रहने के उपरान्त जब पौधे के रेशे पूर्णतः फूलकर सड़ जातें हैं, तो उन्हे स्वच्छ पानी में पीटकर धो डालते हैं। पुनः धूप में सुखाकर डण्ठलों से रेशों को पृथक कर लिया जाता है। तत्पश्चात रेशों को ढेर से कातकर रस्सी बनाई जाती है। रेशे की उत्तमता उसकी मजबूती चमक, रंग व लम्बाई के आधार पर मापी जाती है। सन के रेशे से घरेलू कार्य में प्रयुक्त होने वाली अनेक सामग्रियों का निर्माण होता है, जिनमें टाट, रस्सी एवं डोरियाँ मुख्य हैं।

अध्ययन क्षेत्र के अर्न्तगत रस्सी बनाने के उद्योग में 750 व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध है। जो विभिन्न प्रकार की रस्सियाँ बनाकर अपने उत्पाद को निकटवर्ती बाजार में बेचते हैं। रस्सी बनाना एक उद्योग ही नहीं कला भी है। जिला उद्योग केन्द्र तथा खादी ग्रामोद्योग बोर्ड को इस उद्योग के विकास हेतु संरक्षण एवं प्रोत्साहन देना चाहिए, जिससे यह उद्योग कुटीर उद्योग के रुप में भलीभॉति पुष्पित एवं

पल्लवित हो सके। मण्डल में इस उद्योग के विकास की असीम सम्भावनायें हैं क्योंकि इस क्षेत्र में सन रामबाँस एवं घासें (मूँज, कुश, बबई) बहुतायत में पायी जाती हैं।

इस उद्योग की प्रधान समस्या है, कि इस उद्योग को प्लास्टिक की रस्सी जो सुन्दर और टिकाऊ होती है, से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है।

1) *फ्रीमैन, टी० डब्ल्यू० :* हन्ड्रेड इयर्स ऑफ ज्याग्रफी, पृ०15

2) रिपोर्ट ऑफ दि नाइन्थ इन्डियन इन्डस्ट्रियल कान्फ्रेन्स, हेल्ड ऐट कराची ऑन थर्सडे, 25 दिसम्बर 1919 पृ0117

3) तत्रैव पृष्ठ 117

4) तत्रैव पृष्ठ 117

5) तत्रैव पृष्ठ 117

6) *डॉ0 मेवाराम :* प्रादेशिक एवं भारत का भूगोल भारत भारती प्रकाशन (ग्यारहवां संस्करण) एण्ड कं0, मेरठ पृ0413

7) *तिवारी आर0 एन0 :* लोकेशन एण्उ डेवलपमेन्ट ऑफ लार्ज स्केल इन्डस्ट्रीज इन यू0पी0 अनपब्लिशड डी.लिट. थीसिस, वॉल्यूम II , एप्रूव्ड इन 1965, पृ0379

8) तत्रैव पृष्ठ 383

9) भारत 2002, वार्षिक सन्दर्भ ग्रन्थ, पृ0564

अध्याय – 9

पशु आधारित उद्योग धन्धे (Live Stock Based Industries)

सृष्टि के प्राणियों में मनुष्य ने अपने विशेष बुद्धि–बल के कारण सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है और वह चर तथा अचर सभी प्राणियों का उपयोग अपने हित के लिए करता हुआ अपने जीवन को सुविधा सम्पन्न बनाये हुए है। मानव का पशुओं से घनिष्ठ सम्बन्ध है। जीवजगत के हिंसक जन्तुओं का आखेट करके वह अपनी आवश्यकता पूर्ण करता है और भोले–भाले अहिंसक पशुओं को पालकर उनसे अपनी आवश्यकता की अनेक वस्तुयें प्राप्त करता है, जिनमें दूध और दुग्ध पदार्थ, माँस, चमड़ा एवं ऊन महत्वपूर्ण है।

आदिम अवस्था में पशुचारण एक 'अव्यवस्थित उद्यम' के रुप में प्रचलित था, लेकिन अब मनुष्य ने अनेक क्षेत्रों में पशुपालन की अच्छी व्यवस्था कर ली है। अस्तु पशुपालन मनुष्य के व्यवस्थित उद्यमों– में गिना जाने लगा है। पशुओं से अनेक वस्तुएँ तथा सुविधाएँ मिलने के कारण ही इनका 'कृषि' में विशेष स्थान है। 'वाणिज्य पशुचारण' और 'चलवासी पशुचारण' अर्थव्यवस्था पूर्णतः पशुओं पर ही निर्भर होती है। विश्व के मिश्रित कृषि क्षेत्रों में भी पशुओं के माँस और दूध की आय ही कृषकों की प्रमुख आय होती है। कुल कृषि आय में पशुधन का योगदान डेनमार्क में 82%, आयरलैण्ड में 81%, स्वीडन में 79% तथा भारत में 23% है। "कोई देश अपने खाद्य–पदार्थों में पशुजन्य पदार्थों का कितना उपभोग करता है, इससे उसके रहन–सहन के स्तर का पता चलता है।[1] आज संसार में माँस और दूध का अधिक उपभोग यूरोप, उत्तरी अमेरिका, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड में किया जाता है जबकि विश्व के दुग्ध उत्पादक देशों में भारत ने 1997–98 में प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया था, परन्तु अब यह संयुक्त राज्य के बाद दूसरे स्थान पर पहुँच गया है। "भारत में विश्व में सबसे अधिक मवेशी हैं। दुनिया की कुल भैसों का 57% और गाय–बैलों का 15% भारत में है।"[2]

चित्रकूट धाम मण्डल में पर्याप्त संख्या में पशुधन उपलब्ध है। 1997 की पशुगणनानुसार कुल 2543898 पशुधन है, जिनसे कच्चेमाल के रुप में दुग्ध, खालें, माँस, हड्डियाँ, ऊन आदि प्राप्त होता है, जो औद्योगिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। इन पशुओं से प्राप्त माल अधिकतर स्थानीय उद्योगों में उपयोग किया जाता है तथा अतिरिक्त कच्चेमाल को आगरा तथा कानपुर भेज दिया जाता है।

चित्रकूट–धाम मण्डल में 'पशुपालन' और 'डेयरी' विकास की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका है। ग्रामीण परिवार खासकर भूमिहीन और छोटे किसान इन्हे आय के पूरक स्रोत के रुप में अपनाते हैं। इस व्यवसाय में मण्डल के पहाड़ी एवं पठारी तथा अभावग्रस्त क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को सहायक रोजगार मिलता है, जहाँ केवल कृषि की उपज से परिवार की गुजर नहीं हो सकती।

9(i) वर्गीकरण :–

चित्रकूट धाम मण्डल में पशु आधारित लघु उद्योग धन्धों की कुल इकाइयों की संख्या 717 हैं। सर्वाधिक 234 इकाइयाँ हमीरपुर जनपद में है। तत्पश्चात् बांदा में 205, महोबा में 140 तथा चित्रकूट जनपद में 138 इकाइयाँ हैं।

विकासखण्डों में सर्वाधिक इकाइयाँ बड़ोखर खुर्द में 74 हैं। इसे अतिरिक्त कबरई में 70, राठ में 57, कुरारा में 47, कर्वी में 42, चरखारी में 41, मौदहा में 39, नरैनी में 37, मानिकपुर में 35 तथा सुमेरपुर में 30 पशु आधारित उद्योग धन्धों की इकाइयाँ हैं।बांदा जनपद के महुआ विकास खण्ड में न्यूनतम 10 इकाइयाँ ही क्रियाशील है। चित्रकूट धाम मण्डल में पशु आधारित उद्योग धन्धों में कुल 1317 लोग कार्यरत है, जो कुल कार्यरत जनसंख्या का मात्र 0.09% है। हमीरपुर जनपद में पशु आधारित उद्योग धन्धों में सर्वाधिक 436 व्यक्ति कार्यरत हैं इसके बाद बांदा जनपद में 380, महोबा जनपद में 263 तथा चित्रकूट जनपद में 138 व्यक्ति कार्यरत हैं।

विकासखण्डों में सर्वाधिक व्यक्ति बड़ोखर खुर्द में 145 व्यक्ति कार्यरत हैं इसके अतिरिक्त कबरई में 135, राठ में 108, कुरारा में 89, कर्वी में 79, चरखारी में 76, मौदहा में 72, नरैनी में 70, सुमेरपुर में 70 तथा मानिकपुर में 59, व्यक्ति पशु आधारित उद्योग धन्धों में कार्यरत हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में पशु आधारित उद्योग धन्धों में कुल पूँजी निवेश 476.70 लाख रु0 हुआ है, जिसमें सर्वाधिक पूँजी निवेश हमीरपुर जनपद में 146.05 लाख रु0 हुआ है। इसके बाद बांदा जनपद में 140.10 लाख रु0 चित्रकूट धाम जनपद में 98.75 लाख रु0 तथा महोबा जनपद में 91.80 लाख रु0 पूँजी निवेश हुआ है।

निम्नलिखित तालिका संख्या 9–1 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार पशु आधारित औद्योगिक इकाइयों की संख्या, रोजगार तथा पूँजी निवेश को दर्शाया गया है:–

तालिका संख्या 9–1

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार पशु आधारित औद्योगिक इकाइयों की संख्या एवं कार्यरत व्यक्ति तथा पूँजी निवेश – 2003–04

क्रसं0	विकासखण्ड	इकाइयों की संख्या	रोजगार में लगे व्यक्तियों की सं0	पूँजी निवेश लाख रु0 में
1	कुरारा	47	89	26.75
2	सुमेरपुर	30	60	20.00
3	सरीला	22	38	14.20
4	गोहाण्ड	22	38	13.85
5	राठ	57	108	35.15
6	मुस्करा	17	31	11.00
7	मौदहा	39	72	25.10
जनपद हमीरपुर		234	436	146.05
8	पनवाड़ी	14	26	9.95
9	जैतपुर	15	26	10.35
10	चरखारी	41	76	26.95
11	कबरई	70	135	44.55
जनपद महोबा		140	263	91.80
12	जसपुरा	13	24	9.45
13	तिन्दवारी	13	23	9.80
14	बड़ोखर खुर्द	74	145	40.10
15	बबेरु	26	46	23.20
16	कमासिन	17	30	14.05
17	विसण्डा	15	26	10.55
18	महुआ	10	16	8.70

19	नरैनी	37	70	24.25
जनपद बांदा		205	380	140.10
20	पहाड़ी	15	25	10.65
21	कर्वी	42	79	31.85
22	मानिकपुर	35	59	23.70
23	रामनगर	24	40	16.45
24	मऊ	22	35	16.10
जनपद चित्रकूट		138	238	98.75
मण्डल–योग		717	1317	476.70

स्रोत : कार्यालय, महाप्रबन्धक जिला उद्योग केन्द्र– हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट

9(ii) विविध पशु आधारित उद्योग धन्धों का विवरण :–

अध्ययन क्षेत्र में पशु आधारित उद्योग धन्धे डेयरी उद्योग, चमड़ा उद्योग, माँस उद्योग, ऊनी वस्त्र उद्योग, एवं आइसकैण्डी तथा आइसक्रीम उद्योग हैं। सर्वाधिक रोजगार डेयरी उद्योग में मिला हुआ है। रोजगार की दृष्टि से द्वितीय स्थान चमड़ा उद्योग का है।

1– डेयरी उद्योग (Dairying) :– भोज्य तत्व विशारदों का मत है कि दुग्ध एक सम्पूर्ण भोजन है। अर्थात् इसमें मानव भोजन के सभी तत्व उस परिमाण में उपलब्ध रहते हैं जितनी इनकी हमें जरुरत होती है। शाकाहारी लोगों के लिए तो दूध बहुत ही महत्वपूर्ण है। एक अति उत्तम भोज्य पदार्थ होने के कारण सभी देशों या प्रदेशों में दूध का प्रयोग प्रचलित है और इसे प्राप्त करने के लिए डेरी उद्योग का यथासम्भव विकास करने की कोशिश की जाती है। तीव्रगामी परिवहन की सुविधाओं और शीत संग्रहागार की (Cold Storage) व्यवस्था ने दुग्ध शाला उद्योग (Dairy Industries) के विकास में बहुत योगदान दिया हैं, फलस्वरुप अब दुग्ध–पदार्थों का अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार भी होने लगा है।

चित्रकूट धाम मण्डल में दूध प्राप्ति के अनेक स्रोत हैं जैसे– गाय, भैंस, भेड़, बकरी आदि। भेड़ और बकरियों से बहुत थोड़ी मात्रा में दूध प्राप्त होता है, इसलिए दुग्धशाला–उद्यम के लिए इनका महत्व नगण्य है। गाय और भैंस ही दो ऐसे महत्वपूर्ण स्रोत हैं, जिनसे बड़ी मात्रा में दूध प्राप्त किया जाता हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में गायों की अपेक्षा भैंसों से अधिक दूध प्राप्त होता हैं। इसका मुख्य कारण भैंसों की उत्तम नस्ल का पाया जाना है, जबकि अन्य देशों में दुग्ध प्राप्ति हेतु भैंसों की अपेक्षा गायों कों अधिक प्राथमिकता दी जाती है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् चित्रकूट धाम मण्डल में ग्रामीण विकास के अनेक प्रयास किये गये हैं। 'श्वेत क्रान्ति' या 'ऑपरेशन फ्लड' भी इन्ही प्रयासों में एक हैं।

दुग्ध शाला उद्यम की उपज दुग्ध है। दुग्ध से अनेक वस्तुयें बनाकर दुग्ध शाला उद्योग द्वारा प्रदान की जाती हैं। जैसे– मक्खन (Butter), पनीर (Cheese), गाढ़ा किया हुआ दूध (Condensed milk), दुग्ध चूर्ण (Milk Powder) इत्यादि। दूध के विविध स्वरूप में परिवर्लित हो सकने के कारण एवं दीर्घ काल तक सुरक्षित रखने की प्रणाली विकसित होने के परिणाम स्वरूप इसे सुदूर क्षेत्रों तक भेजना सम्भव हो सका है।"डेरी फार्मिंग के लिए विशेष रुप से गाँवों के लिए साधारण जाड़ों और शीतल गर्मियों वाली शीतोष्णार्द जलवायु की आवश्यकता होती है। 50 से 75 सेमी0 औसत वार्षिक वर्षा के क्षेत्रों

FIG. 9.1
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
LIVE STOCK BASED INDUSTRIES
2003-04
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
INDEX
MINI DAIRYING
LATHER INDUSTRY
MEAT INDUSTRY
WOOLLEN TEXTILE INDUSTRY
ICE CANDY AND ICE CREAM INDUSTRY
NO. OF WORKERS
40
20
10
CIRCLE REPESENT AVERAGE DAILY NO. OF WORKERS EMPLOYED
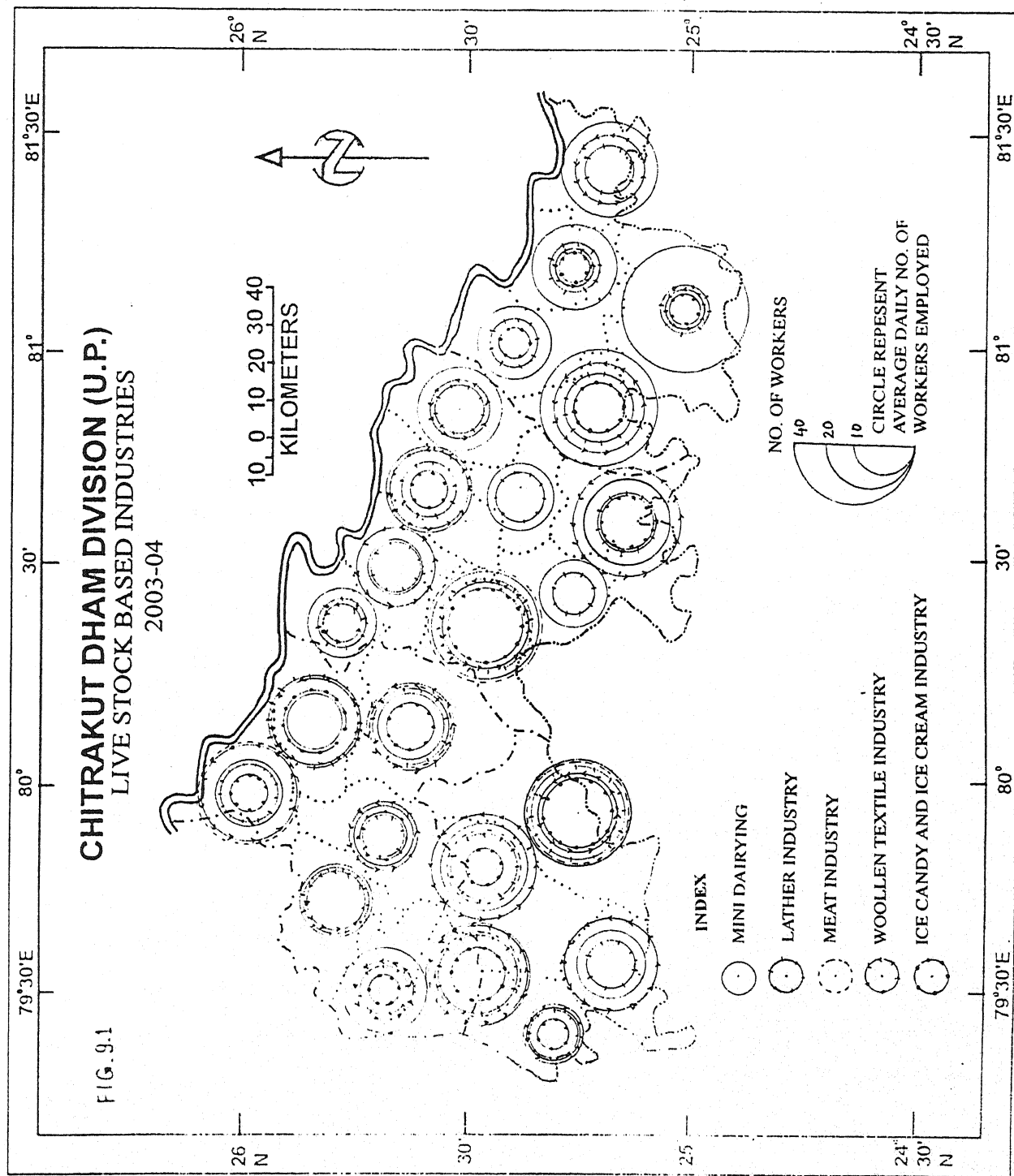
में पोषक घासों का प्रचुर विकास होता है। 10^0 से 17^0 सेल्सियस तक औसत ताप के सम जलवायु के क्षेत्रों में गायें वर्ष भर चरागाहों में चर सकती हैं। ठण्डी जलवायु में दुग्ध तथा उससे निर्मित पदार्थ शीघ्र खराब नहीं होते, परन्तु शीतकाल में ताप हिमांक से नीचे नहीं ले जाना चाहिए।"[3]

चित्रकूट धाम मण्डल में शीतऋतु में ताप हिमांक के नीचे नहीं जा पाता, लेकिन गर्मी में तापमान 47^0 तक पहुँच जाता है जो डेरी फार्मिंग के लिए अनुकूल नहीं है।
मण्डल में 'दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि0' की सफलता सहकारी समितियों पर निर्भर है, सहकारी समितियों के दूध न देने पर डेयरी का व्यवसाय बन्द हो जाता है। ग्रीष्म ऋतु में अधिक ताप के कारण हरी घासों की कमी हो जाने से दूध का उत्पादन कम हो जाता है।

चित्रकूट धाम मण्डल में सर्वप्रथम चित्रकूट जनपद में वर्ष 1979 में कर्वी में, दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड कर्वी, की स्थापना की गयी थी। यहाँ विभिन्न ग्रामों में गठित 'दुग्ध समितियों' के माध्यम से दूध एकत्रित कर स्थानीय स्तर पर बिक्री की जाती थी तथा तीन से पाँच हजार लीटर दूध इलाहाबाद व अन्य समीपवर्ती शहरों को उपलब्ध कराया जाता था। शासन के अनुदान के आधार पर संचालित डेयरी में कुल 31 कर्मचारी नियमित व 3 कर्मचारी दैनिक भोगी थे। यह डेयरी स्थापना के कुछ वर्षों तक ही वास्तविक स्थिति में क्रियाशील रही। बीच–2 में शासन से इसे विकसित करने के लिए कई बार अनुदान भी मिला किन्तु स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, कर्वी के अन्तर्गत कुल 230 दुग्ध समितियाँ निबन्धित थी जो विभिन्न ग्रामों में संचालित थी। प्रत्येक दुग्ध समिति अपने गाँवों में पशुपालकों, किसानों से दूध एकत्र कर कर्वी दुग्ध संघ को देती थी। इन्ही समितियों के द्वारा एकत्रित दूध को बाजार में बेंचकर दुग्ध संघ लाभ अर्जित करता था। दुग्ध संघ द्वारा समितियों को समय से भुगतान न करने पर सक्रिय समितियों ने उधार देना बन्द कर दिया। जिससे डेयरी का व्यवसाय ही ठप्प हो गया। दुग्ध संघ में कार्यरत 31 नियमित कर्मचारियों का जून 1999 से वेतन बन्द कर दिया गया। इसके बाद दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि0 के कार्यालय में सितम्बर 2000 में तालाबन्दी कर दी गयी जिससे प्लान्ट में लगे लाखों के दुग्ध उत्पादन सम्बन्धी उपकरण अनुपयोगी हों गयें। सरकारी सहयोग से अब यह पुनः संचालित हो गयी है।

1979–80 में भरुवा सुमेरपुर में भी 'दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड' की स्थापना की गयी। 2003–04 तक इससे 170 दुग्ध उत्पादक समितियाँ सम्बद्ध हैं, जिसमें 65 ही कार्य कर रहीं हैं। दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि0 में 30 नियमित कर्मचारी कार्य कर रहे हैं। इस सहकारी डेयरी की दुग्ध उत्पादक क्षमता 10 हजार लीटर है।

15 जनवरी 1997 को बांदा में बांदा–नरैनी मार्ग पर सहकारी दुग्ध डेयरी का शिलान्यास किया गया। इसके लिए 7.16 लाख रुपये की भूमि खरीदी गयी। इसके निर्माण में 43.77 लाख रुपये की चहारदीवारी तथा 6.93 लाख रुपये गोदाम बनाने में खर्च किये गये। इसके साथ प्रशासनिक भवन तैयार किया गया। 2003 में डेयरी चलाने के लिए 17 लाख रुपये शासन से मिले थे लेकिन अधिकारियों के अभाव में डेयरी संचालित न होने के कारण धनराशि खाते में डाल दी गयी। वर्तमान समय में यहाँ तीन

सुपरवाइजर है जबकि डेयरी संचालन के लिए मानक के आधार पर यहाँ प्रबन्धक, उपदुग्ध विकास अधिकारी, वरिष्ठ दुग्ध निरीक्षक सहित दस सुपरवाइजर का स्टाफ होना चाहिए।

चित्रकूट जनपद अलग होने के बाद 81 दुग्ध समितियाँ कर्वी की दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि0 से अलग कर बांदा की सहकारी डेयरी से सम्बद्ध कर दी गयी हैं और इसके संचालन हेतु सभी औपचारिकतायें पूरी की जा रही हैं। पुनः 2005 के अन्त तक डेयरी चलने की सम्भावना है।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक जनपद में कुटीर उद्योग (घरेलू उद्योग) के रुप में 'मिनी डेयरी' उद्योग की इकाइयाँ स्थापित की गयीं हैं। अधिकॉश इकाइयाँ गाँवों में स्थित हैं जो अपने गाँव या समीपवर्ती गाँव के दूध पर निर्भर हैं। ये इकाइयाँ दूध एकत्र कर बाजार में विक्रय करती हैं। ये इकाइयाँ दूध से खोया, घी, या क्रीम बनाकर भी मण्डियों में विक्रय करती हैं। बुन्देलखण्ड की सबसे बड़ी खोया मण्डी चित्रकूट जिलें की 'मानिकपुर मण्डी' है।

चित्रकूट धाम मण्डल में मिनी डेयरी उद्योग की कुल 300 इकाइयाँ हैं। इनमें सर्वाधिक इकाइयाँ बांदा जनपद में 91 हैं। इसके बाद चित्रकूट जनपद में 90, हमीरपुर जनपद में 73, तथा महोबा जनपद में 46 इकाइयाँ हैं। सभी इकाइयों में 231.25 लाख रुपये का पूँजी निवेश हुआ है, जिसमें स्थायी पूँजी 128.20 लाख रुपये तथा कार्यशील पूँजी 103.05 लाख रुपये लगी हुई है। बांदा जनपद में कुल पूँजी निवेश 71.15 लाख रुपये चित्रकूट धाम जनपद में 69.05 लाख रुपये, हमीरपुर जनपद में 56.10 लाख रुपये, तथा महोबा जनपद में 34.95 लाख रुपयें का पूँजी निवेश हुआ है।

अध्ययन क्षेत्र में 1970 में मिनी डेरी उद्योग की 140 इकाइयाँ, 1980 में 181 इकाइयाँ, 1990 में 230 इकाइयाँ, थी अब जिनकी संख्या सन् 2004 में बढ़कर 300 तक पहुँच गयी है। 1970 में डेयरी उद्योग में 225 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त था जो 2004 में बढ़कर 471 हो गया। निम्नलिखित तालिका सं0 9–2 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार मिनी डेयरी उद्योग की इकाइयों की संख्या पूँजी निवेश तथा रोजगार को दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 9–2

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार मिनी डेयरी उद्योग की इकाइयों की संख्या, पूँजी निवेश तथा रोजगार 2003–04

क्रसं0	विकासखण्ड	इकाइयों की सं0	स्थायी पूँजी लाख रु0 में	कार्यशील पूँजी लाख रु0 में	कुल पूँजी निवेश लाख रु0 में	रोजगार में लगे व्यक्तियों की सं0
1	कुरारा	9	4.05	3.60	7.65	14
2	सुमेरपुर	6	2.80	2.50	5.30	9
3	सरीला	11	4.40	3.35	7.75	17
4	गोहाण्ड	13	5.20	3.90	9.10	20
5	राठ	19	8.55	5.70	14.25	30
6	मुस्करा	7	3.10	2.50	5.60	11

7	मौदहा	8	3.25	3.20	6.45	12
जनपद हमीरपुर		73	31.25	24.75	56.10	113
8	पनवाड़ी	6	2.50	2.10	4.60	10
9	जैतपुर	8	3.55	2.50	6.05	12
10	चरखारी	13	5.85	4.00	9.85	21
11	कबरई	19	7.80	6.65	14.45	31
जनपद महोबा		46	19.70	15.25	34.95	74
12	जसपुरा	7	3.10	2.40	5.50	12
13	तिन्दवारी	6	2.70	2.10	4.80	9
14	बड़ोखर खुर्द	21	9.45	8.50	17.95	32
15	बबेरु	13	5.20	4.00	9.20	20
16	कमासिन	11	4.50	4.40	8.90	18
17	विसण्डा	9	4.05	2.75	6.80	14
18	महुआ	8	3.20	2.50	5.70	12
19	नरैनी	16	6.50	5.80	12.30	25
जनपद बांदा		91	38.70	32.45	71.15	142
20	पहाड़ी	11	4.50	3.50	8.00	17
21	कर्वी	20	9.50	8.80	18.30	35
22	मानिकपुर	28	11.20	8.30	19.50	45
23	रामनगर	14	5.65	4.90	10.55	20
24	मऊ	17	7.60	5.10	12.70	25
जनपद चित्रकूट		90	38.45	30.60	69.05	142
मण्डल–योग		300	128.20	103.05	231.25	471

स्रोत : कार्यालय, महाप्रबन्धक जिला उद्योग केन्द्र – हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट (2003–04)

2 **चमड़ा उद्योग (Leather-Industry)** :– चमड़ा और खालें माँस उद्योग की गौण उपजें हैं। जिन पशुओं का आखेट किया जाता है अथवा पशु–वधशालाओं में जिनका गोश्त के लिए वध किया जाता है उनसे मांस के अलावा 'खाले' भी प्राप्त होती हैं। अतः खालों की प्राप्ति पशुसंख्या पर निर्भर करती है। मृतक पशु के शरीर पर से उतारी गई त्वचा को 'खाल' (Skin) कहते हैं। यह शीघ्र सड़ जाती हैं अतः सड़ने से बचाने के लिए खालों को कमाना पड़ता है। कुछ विशेष वस्तुओं के प्रयोग से खालों को रंगकर सुखाया जाता है। यह प्रक्रिया चमड़ा कमाना (Leather Tanning) कहलाती है। कमाई हुई खाल को 'चमड़ा' कहकर पुकारते हैं। यह चमड़ा विभिन्न वस्तुएँ बनाने के काम आता है। जैसे– जूते, सूटकेस, पोटियाँ, गद्दियाँ, थैले, दस्तानें, हैंण्डबैग, यात्राबैग, बेल्ट, कलाई घड़ी के पट्टे आदि।

इस उद्योग के लिए चित्रकूट धाम मण्डल में पर्याप्त पशुधन प्राप्त है। स्थानीय खपत के अतिरिक्त पशुओं की खालें तथा चमड़ा साफ करने व रंगने के पदार्थ जैसे बबूल व घोंट के फल जो चित्रकूट धाम मण्डल में बहुतायत से उत्पन्न होते हैं, अधिक मात्रा में कानपुर तथा आगरा को निर्यात

कर दिये जाते हैं। ग्रामीण तथा शहरी दोनों क्षेत्रों में चमड़े का काम मुख्यरुप से चर्मकारों (कुरील) के द्वारा संपन्न किया जाता है। चमड़े को रंगने तथा साफ करने का कार्य इस भाग में परम्परागत ढ़ंग से किया जाता है। यह चमड़ा देशी जूते बनाने के लिए बहुत उपयोगी है।

चित्रकूट धाम मण्डल में कई चमड़े रंगने तथा साफ करने की औद्योगिक इकाइयाँ क्रियाशील हैं, जो ग्रामीण तथा खादी बोर्ड विभाग द्वारा संगठित की गई है। इन इकाइयों द्वारा बनाए गए जूते स्थानीय बाजारों में बेंच दिये जाते हैं क्योंकि यहाँ के बने जूते आगरा व कानपुर के बने माल की प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते हैं। अभी कुछ वर्षो से कुशल कारीगरों की प्राप्ति के कारण यह प्रतिस्पर्धा धीरे–धीरे कम हो रही है क्योंकि इन इकाइयों द्वारा बनाए गए जूते सस्ते मजबूत व टिकाऊ होते हैं। आकर्षक डिजाइन एवं उच्च गुणवत्ता के माध्यम से इस उद्योग में पर्याप्त संभावनाए विद्यमान हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में चमड़ा उद्योग की कुल 125 इकाइयाँ क्रियाशील हैं। हमीरपुर जनपद में सर्वाधिक इस उद्योग में 45 इकाइयाँ संलग्न हैं। इसके अतिरिक्त बांदा, महोबा एवं चित्रकूट जनपद में इस उद्योग में क्रियाशील इकाइयों की संख्या क्रमशः 36,24 एवं 20 है।

विकासखण्डों में सर्वाधिक इकाइयाँ क्रमशः सुमेरपुर (12), कबरई (12), बड़ोखर खुर्द (11), मौदहा (9), राठ (8), तथा कर्वी (7) में हैं।

भरुवासुमेरपुर का नागरा जूता जिसे 'भरुवाशाही' के नाम से सम्बोधित किया जाता है, अपने मजबूती तथा हल्केपन के लिए प्रसिद्ध है। अतः इसकी माँग मण्डल के बाहर अन्य केन्द्रों में भी है। जूते चप्पल के अतिरिक्त इस भाग की इकाइयों द्वारा चमड़े के सूटकेश, ब्रीफकेस, तथा बैग भी बनाये जाते हैं। निर्मित सामान स्थानीय बाजारों में बेंच दिया जाता है।

चित्रकूट धाम मण्डल की चमड़े से जूते तथा अन्य सामान बनाने वाली प्रमुख इकाइयाँ– भानु शू उद्योग इटैलिया बाजार, हमीरपुर, मे0 लल्लू चर्मकला उद्योग सुमेरपुर, छत्रपाल फूट वियर उद्योग भरुवासुमेरपुर, मे0 लाल फूट वियर उद्योग सरीला, कीर्ति जूता उद्योग सरीला, कालीचरन जूता उद्योग पाथानाऊ राठ, सज्जू शूज नियर बस स्टैण्ड राठ, हारजू शू मेकर लुधियातपुरा, राठ, किसान शू मेकर कोट बाजार राठ, हमीरपुर, देहाती चर्म उद्योग मनरौल, सरीला हमीरपुर, जहूर शू वर्क्स मोहल्ला गौहारी हमीरपुर, प्रागी चर्म उद्योग बर्गावन, ममना हमीरपुर, मे0 वर्मा लेदर शूज मौदहा, मे0 जे0 के0 लेदर इन्डस्ट्रीज रागौल मौदहा, हमीरपुर, मे0 नारायण लेदर शू इन्डस्ट्रीज रागौल मौदहा, मे0 सुदामा शू इन्डस्ट्रीज रागौल, मौदहा, परमेश्वरी दयाल शू मेकर गोहाण्ड हमीरपुर, अब्दुल रहमान शू मेकर महोबा, सजीद जूता उद्योग ग्रान्टगंज महोबा, सन्तोष लेदर वर्क्स छाजमानपुरा महोबा, अब्दुल शू मेकर ग्रान्टगंज महोबा, अंकित लेदर वर्क्स ग्रान्टगंज महोबा, तनवीर अहमद चर्म उद्योग महोबा, मे0 इण्डिया शू वर्क्स कुलपहाड़, बुन्देलखण्ड लेदर वर्क्स तकियापुरा महोबा, इलियास अहमद लेदर उद्योग कुलपहाड़, दयाल बूट हाउस अतर्रा, पप्पू शू मेकर न्यूमार्केट, बांदा, राजेन्द्र शू मेकर बंगालीपुर, बांदा, कल्लू शू मेकर तरौंहा, चित्रकूट, मइयादीन वर्मा शू मेकर कर्वी, राजेश जूता चप्पल उद्योग मऊ, चित्रकूट, नत्थू चर्म

उद्योग बछरन–चित्रकूट, सुन्दर चमड़ा उद्योग राजापुर, चिन्तामणि शूज मेकर राजापुर, नीरज जूता–चप्पल उद्योग पुरानी बाजार कर्वी–चित्रकूट, मुर्तजा जूता उद्योग लालता रोड़ मऊ, चित्रकूट हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में चमड़ा उद्योग में कुल पूँजी विनियोजन 98.30 लाख रुपये हैं जिसमें हमीरपुर जनपद में 33.25 लाख रु0, बांदा जनपद में 29.30 लाख रु0, महोबा जनपद में 20.25 लाख रु0 तथा चित्रकूट जनपद में 15.50 लाख रुपये का पूँजी विनियोजन हुआ हैं। मण्डल में कुल उत्पादक पूँजी का 47.46% स्थायी पूँजी तथा 52.54% कार्यशील पूँजी लगी हुई हैं।

चित्रकूट धाम में चमड़ा उद्योग में कुल 248 लोगों को रोजगार प्राप्त है। जिससे सर्वाधिक रोजगार जनपद हमीरपुर में 90 व्यक्तियों को प्राप्त हैं। इसके अतिरिक्त बांदा जनपद में 73, महोबा जनपद में 46 तथा चित्रकूट जनपद में 39 व्यक्तियों इस उद्योग में कार्यरत हैं।
विकासखण्डों में सुमेरपुर में सर्वाधिक 25 व्यक्ति इस उद्योग में कार्यरत हैं।

इसके अतिरिक्त कबरई विकासखण्ड में 23, बड़ोखर खुर्द में 23, मौदहा में 18, राठ में 16, सरीला में 13, कर्वी में 13, चरखारी में 11, बबेरु में 10, नरैनी में 10 तथा अन्य विकासखण्डों में इनकी संख्या अत्यंत कम है। चित्रकूट धाम मण्डल में चमड़ा उद्योग की कुल वार्षिक उत्पादन क्षमता लगभग 88.50 लाख रुपये हैं।

निम्नलिखित तालिका सं0 9–3 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार चमड़ा उद्योग की इकाइयाँ, पूँजी विनियोजन तथा रोजगार को दर्शाया गया है :–

तालिका संख्या 9–3

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार चमड़ा उद्योग की इकाइयाँ, पूँजी विनियोजन तथा रोजगार – 2003–04

क्रसं0	विकासखण्ड / जनपद	औद्योगिक इकाइयों की सं0	स्थायी पूँजी लाख रु0 में	कार्यशील पूँजी लाख रु0 में	कुल पूँजी निवेश	रोजगार में लगे व्यक्तियों की सं0
1	कुरारा	4	1.20	1.40	2.60	8
2	सुमेरपुर	12	4.30	4.40	8.70	25
3	सरीला	7	2.45	2.10	4.55	13
4	गोहाण्ड	3	0.90	1.05	1.95	6
5	राठ	8	2.80	3.60	6.40	16
6	मुस्करा	2	0.60	0.80	1.40	4
7	मौदहा	9	3.60	4.05	7.65	18
जनपद	हमीरपुर	45	15.85	17.40	33.25	90
8	पनवाड़ी	3	1.20	1.25	2.45	6
9	जैतपुर	3	1.05	1.35	2.40	6
10	चरखारी	6	2.40	2.70	5.10	11

11	कबरई	12	4.90	5.40	10.30	23
जनपद	महोबा	24	9.55	10.70	20.25	46
12	जसपुरा	3	1.10	1.35	2.45	6
13	तिन्दवारी	4	1.55	1.60	3.15	8
14	बड़ोखर खुर्द	11	4.95	5.10	10.05	23
15	बबेरु	5	1.75	2.25	4.00	10
16	कमासिन	3	0.95	1.20	2.15	6
17	विसण्डा	3	1.10	1.15	2.25	6
18	महुआ	2	.80	0.70	1.50	4
19	नरैनी	5	1.75	2.00	3.75	10
जनपद	बांदा	36	13.95	15.35	29.30	73
20	पहाड़ी	3	0.90	1.25	2.15	6
21	कर्वी	7	3.15	2.80	5.95	13
22	मानिकपुर	3	0.90	1.20	2.10	6
23	रामनगर	4	1.25	1.65	2.90	8
24	मऊ	3	1.10	1.30	2.40	6
जनपद	चित्रकूट	20	7.30	8.20	15.50	39
	मण्डल–योग	125	46.65	51.65	98.30	248

स्रोत : कार्यालय, महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र, हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट (2003–04)

चमड़ा उद्योग के विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की सहायता से देश में चुनी हुई संस्थाओं और एजेंसियों के माध्यम से 1992 से 1998 तक सरकार राष्ट्रीय चमड़ा विकास कार्यक्रम चलाया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य चुनी हुई संस्थाओं, ऐजेंसियों के माध्यम से देश में चमड़ा उद्योग का समेकित विकास करना था। इससे चमड़े के जूते, वस्त्र तथा अन्य सामान के डिजायन और उत्पादन के लिए प्रशिक्षण प्रणाली में सुधार लाने में मद मिली। चमड़ा विकास कार्यक्रम का दूसरा चरण अगस्त 1998 से आरम्भ किया गया। "चमड़ा क्षेत्र में लघु उद्योग विकास और रोजगार कार्यक्रम" के नाम से चलाए जा रहे इस कार्यक्रम को भी संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम से सहायता मिली है।[4]

चमड़ा उद्योग की कुछ समस्यायें भी हैं जिनमें प्रमुख समस्यायें निम्नांकित है–

1. चमड़ा उद्योग की इकाइयों के सामने पूँजी तथा कुशल कारीगरों की कमी हैं।
2. इस उद्योग को प्लास्टिक, रेक्सीन, फेम लेदर तथा रबड़ से निर्मित वस्तुओं के उद्योग से प्रतिस्पर्धा क सामना करना पड़ रहा है क्योंकि चमड़े की अपेक्षा इनका सामान सस्ता होता है।
3. चित्रकूट धाम मण्डल की चमड़ा उद्योग की इकाइयों द्वारा बनाए गये जूते स्थानीय बाजारों में सस्ते दर पर बेंचना पड़ता हैं क्योंकि यहाँ के बने जूते आगरा व कानपुर के बने माल की प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते हैं।

3 **मांस उद्योग (Meat Industry)** :– पशुओं से प्राप्त होने वाले पदार्थों में मांस का मुख्य स्थान है। आदिम मानव माँसाहारी था और आखेट मनुष्य के प्राथमिक व्यवसायों में से एक है। मांस से प्रोटीन प्रचुर मात्रा में प्राप्त होती है और यह शरीर की माँसपेशियों का निर्माण करने में योग देता है। पश्चिमी देशों में मांस का प्रयोग बहुत अधिक प्रचलित है। पश्चिमी देशों के लोग सभ्यता के ऊँचे स्तर पर पहुँच चुके हैं, अतः वहाँ 'आखेट उद्यम' का प्रचार बहुत कम हैं। सभ्य मनुष्य मांस की माँग को आखेट द्वारा

नहीं बल्कि व्यवस्थित पशुपालन द्वारा पूर्ण करते हैं।[5] मांस के लिए पशुपालन का व्यवसाय या तो उन देशों में विकसित है, जहाँ चरागाहों का अधिक विस्तार है अथवा ऐसे उन्नत देशों में मिलता है, जहाँ मांस प्राप्ति पर काफी धन खर्च करने की क्षमता है। ऐसे देश मांस प्रदान करने वाले जन्तुओं के लिए बढ़िया चारा उगाने की वयवस्था करते हैं और खेतों में ऐसी चीजें बोते हैं, जिन्हे पशुओं को खिलाकर मोटा किया जाता हैं जैसे– मक्का, चुकन्दर, आलू आदि। पूर्वी एशियाई देशों में मुख्यतः भारत में माँस का प्रचार कम है। इसका मुख्य कारण जनता की दरिद्रता धार्मिक भावना अथवा अहिंसा की भावना है।

चित्रकूट धाम मण्डल में गाय–बैलों की सर्वाधिक संख्या है लेकिन इन्हें मांस प्राप्ति के लिए नहीं, बल्कि मुख्यतः दूध के लिए पाला जाता है। मण्डल में 1997 की पशुगणनानुसार कुल 2543898 पशुओं में 46.7% गोजातीय पशु 23.3% महिष जातीय, 4.0%, भेंड़ 22.2% बकरा–बकरी तथा 3.4%, सुअर 0.4% अन्य पशु पाये जाते हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में मांस के लिए सुअर, बकरें, भेड़ आदि पाले जाते हैं। यहाँ बहुत कम व्यक्तियों द्वारा सुअर का मांस (Park) भैंसों का मांस, भेड़ तथा बकरे का मांस (Mutton) भोजन के अंग के रूप में प्रयोग किया जाता है। धार्मिक कारणों से यहाँ गाय और बैल के मांस (Beef) का प्रयोग नहीं किया जाता है। मुस्लिम क्षेत्रों में मांस का प्रयोग अधिक होता है। इन क्षेत्रों में सुअर तथा बकरी पालन में प्रगति हुई है।

माँस आधारित पशुओं का विकास निम्नलिखित दशाओं में उत्तम होता है–

1. मांस आधारित पशुओं के लिए विस्तृत घास स्थलों की आवश्यकता होती है।
2. ज्वार, बाजरा, मक्का बरसीम आदि चारे की प्रचुर मात्रा में उत्पादन होना चाहिए।
3. मॉस को शीघ्र बाजारों तक भेजने के लिए द्रुतगामी प्रशीतन सुविधाओं वाले परिवहन साधन होने चाहिए।
4. उत्पादित मांस की खपत के लिए सघन जनसंख्या के केन्द्र निकट में होने चाहिए।
5. मांस के प्रशीतन, शीत भण्डारन आदि की सुविधा का पाया जाना आवश्यक है।
6. मांस पशुओं की उत्तम नस्लें ही उच्च कोटि के मांस का अधिकतम उत्पादन देती है। ब्लैक बंगाल, ओसमानाबादी बकरे माँस के लिए उत्तम हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में कुल 6 बूचड़ खाने (पशुवध स्थल) हैं। ये हमीरपुर, मौदहा, राठ, चरखारी, महोबा तथा बांदा में स्थित हैं। इन स्थानों में माँस उद्योग की कुल 77 छोटी–छोटी इकाइयाँ हैं जो स्थानीय स्तर पर मांस की आपूर्ति करती हैं। हमीरपुर जनपद में 35 इकाइयाँ, महोबा जनपद में 24 इकाइयाँ तथा बांदा जनपद में 18 इकाइयाँ क्रियाशील हैं। विकासखण्डों के आधार पर कुरारा में 15 इकाइयाँ, मौदहा में 11, राठ में 9, चरखारी में 8, कबरई में 16, तथा बड़ोखर खुर्द में 18 इकाइयाँ कार्य कर रही हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में इस उद्योग में 146 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है, जिसमें हमीरपुर जनपद में 66, महोबा जनपद में 45, तथा बांदा जनपद में 35 व्यक्ति इस उद्योग में कार्यरत हैं। विकासखण्डवार कुरारा में 28, मौदहा में 20, राठ में 18, चरखारी में 15, कबरई में 30 तथा बड़ोखर खुर्द में 35 व्यक्ति इस उद्योग में कार्यरत हैं। इस उद्योग में अधिकाँशतः चिकवा, खटिक, तथा कसाई जाति के लोग संलग्न हैं।

इस उद्योग की प्रमुख समस्या यह है कि कुछ कसाई या खटिक लोग जानवरों का वध बूचड़खानों में न करके सघन आबादी के क्षेत्र में ही करते हैं साथ ही उससे निकलने वाला 'मलवा' आसपास ही फेंक देते हैं जिससे उठने वाली दुर्गन्ध एवं गन्दगी से वातावरण प्रदूषित हो रहा है और निकटवर्ती लोग अनेक बीमारियों की चपेट में आ रहे हैं। इस समस्या के निदान के लिए आवश्यक है कि पशुओं का वध शहर के बाहर 'बूचड़खानों' में ही किया जाय एवं निःसृत बेकार पदार्थ भूमि के अन्दर दबा दियें जाएँ।

4 ऊनी वस्त्र उद्योग (Woolen Textile Industry) :– कुछ जन्तुओं से अत्यन्त मुलायम बाल प्राप्त होते हैं। इन्हे ही 'ऊन' के नाम से पुकारा जाता है। ऊन का प्रयोग कपड़ा बनाने में होता है। शीतऋतु में ठण्डी से रक्षा पाने के लिए ऊनी वस्त्रों का प्रयोग किया जाता है। प्राचीनकाल में जब कपडा बुनने की कला का अविष्कार नहीं हुआ था, खालों के वस्त्र बनाये जाते थे। समूरदाल खालें इस हेतु सबसे अधिक उपयुक्त होती हैं। समूरदाल खालें इतनी शोभायमान होती है कि आज के सभ्य जगत में भी समूरदाल खाल के वस्त्र पहनना शान समझी जाती है। कपड़ा बुनने की कला का अविष्कार हो जाने के उपरान्त विभिन्न प्रकार के रेशों से कपड़े बुने जाने लगे। ठण्डे क्षेत्रों में ऊनी कपड़े अधिक पहने जाते हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में ऊनीवस्त्र उद्योग अति महत्वपूर्ण उद्योग नही है। यह गर्म जलवायु वाला क्षेत्र है, फिर भी जाड़े की ऋतु में ऊनी वस्त्रों की आवश्यकता होती है। चित्रकूट धाम मण्डल में कोई भी ऊनी वस्त्र मिल नहीं है। ऊनी वस्त्र का कार्य बुनाई केन्द्रों पर होता है। ये बुनाई केन्द्र सम्पूर्ण चित्रकूट धाम मण्डल में पाये जाते हैं। ये केन्द्र स्वेटर, मफलर, मोजे, जर्सी, साल, टोपी, कम्बल आदि तैयार करते हैं। ऊन बाजार से खरीदकर उससे तैयार किये हुए उत्पादों को स्थानीय बाजार में बेचा जाता हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में 170 बुनाई इकाइयाँ कार्य कर रहीं हैं जिसमें सर्वाधिक इकाइयाँ (62) हमीरपुर जनपद में हैं। इसके अतिरिक्त बांदा जनपद में 48, महोबा जनपद में 38, तथा चित्रकूट जनपद में 22 इकाइयाँ क्रियाशील हैं। इस उद्योग के माध्यम से 358 व्यक्तियों को रोजगार मिल रहा है। सर्वाधिक रोजगार हमीरपुर जनपद में 130 लोगों को प्राप्त है, इसके बाद बांदा जनपद में 103, महोबा जनपद में 80 तथा चित्रकूट जनपद में 45 लोग इस उद्योग के माध्यम से रोजगार प्राप्त करतें है।

स्थानीय गड़रिये जो भेड़–बकरियाँ पालते हैं। वे मोटे कम्बल बनते हैं, जिनका प्रयोग स्थानीय लोग करते हैं। इस क्षेत्र में दो प्रकार का माल तैयार किया जाता है। (1) परम्परागत ढंग से तैयार किया जाने वाला माल, जैसे– कम्बल तथा मफलर आदि तथा (2) अच्छा महीन फैन्सी माल। फैन्सी माल बनाने के लिए ऊन राजस्थान, पंजाब, तथा कानपुर से आयात की जाती है तथा परम्परागत ढंग से ऊन की वस्तुएँ तैयार करने के लिए कच्चामाल स्थानीय क्षेत्रों से प्राप्त हो जाता है।

5 आइस कैण्डी तथा आइस्क्रीम उद्योग (Ice Candy and Ice Cream Industry) :– यह दुग्ध आधारित उद्योग है। आइस कैण्डी तथा आइस्क्रीम ग्रीष्म ऋतु की गर्मी को क्षणिक शान्त करने का एक स्वादिष्ट तथा शीतल खाद्य पदार्थ है। यह पानी तथा दूध से शीतलन प्रक्रिया द्वारा 'आइस कैण्डी फैक्ट्री' में बनायी जाती है। जिसके लिए पर्याप्त ऊर्जा की आवश्यकता होती है। इसकी माँग शहरों के साथ–साथ ग्रामीण अंचलों में होती है। इसका 'कच्चामाल' – जल, दूध, शक्कर, मैदा, सीमा पाउडर, ग्लोकोज, गरी तथा स्टिक आदि है।आइसक्रीम में 'फ्लोर कोन' का भी प्रयोग किया जाता हैं। जिसे कानपुर से मँगाया जाता है।

चित्रकूट धाम मण्डल में 'आइस कैण्डी' तथा 'आइसक्रीम' बनाने वाली 44 इकाइयाँ क्रियाशील हैं, जिनमें 18 इकाइयाँ हमीरपुर जनपद में, 8 इकाइयाँ महोबा जनपद में, 12 इकाइयाँ बांदा जनपद में तथा 6 इकाइयाँ चित्रकूट जनपद में स्थित हैं। अध्ययन क्षेत्र में आइसकैण्डी तथा आइसक्रीम की 1975 में 15 इकाइयाँ थी, जिनकी संख्या सन् 1980 में 20, सन्1985 में 26 ,सन् 1990 में 29 तथा सन् 2003 में बढ़कर 44 हो गयीं।

विकासखण्डों में अधिकांश इकाइयाँ सुमेरपुर (5), राठ (4), कबरई (5), बड़ोखर खुर्द (6) तथा नरैनी (4) मुस्करा (3), मौदहा (3), तथा कर्वी (3) में स्थित हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल की कुछ प्रमुख आइसकैण्डी तथा आइसक्रीम बनाने वाली इकाइयाँ अंग्राकित हैं– निधी आइसकैण्डी पन्धरी हमीरपुर, गुप्ता आइसकैण्डी मौदहा, हमीरपुर, अरशाद आइस कैण्डी स्टेशन रोड़ मौदहा, हमीरपुर, गौरी आइसकैण्डी वेस्ट तरौंस मौदहा हमीरपुर मनोज आइसकैण्डी मुस्करा, हमीरपुर, महेन्द्र आइसकैण्डी मुस्करा, हमीरपुर, जय आइसकैण्डी फैक्ट्री बिवाँर हमीरपुर, जय सिंह गौतम आइसक्रीम मेहरपुर, हमीरपुर, उमा आइसकैण्डी उद्योग पनवाड़ी रोड़ भरुवासुमेरपुर, परमार आइस कैण्डी उद्योग सुमेरपुर, हमीरपुर, भोला आइस कैण्डी चाँद थोक सुमेरपुर, हमीरपुर, मे0 राजेन्द्र आइसकैण्डी कोट बाजार राठ, हमीरपुर, मे0 संजय आइस फैक्ट्री विशाल नगर कबरई, महोबा, दुर्गा आइस कैण्डी सरीला, विश्वकर्मा आइस कैण्डी गोदी मोहाल कुलपहाड़, महोबा, गोपाल आइसकैण्डी श्रीनगर, महोबा, प्रताप आइसकैण्डी स्टेशन रोड़ महोबा, शिवशक्ति आइस कैण्छी पनवाड़ी महोबा, नाजमी आइसकैण्डी हैदरगंज महोबा, मे0 रामशरन गुप्ता आइस कैण्डी उद्योग परशुराम तालाब बांदा, मे0 विन्दा प्रसाद आइसकैण्डी उद्योग गायत्रीनगर बांदा गुप्ता आइसकैण्डी इलाहाबाद रोड़ कर्वी, चित्रकूट, राजेन्द्र आइसकैण्डी उद्योग सरधुआ, चित्रकूट।

इस उद्योग में चित्रकूट धाम मण्डल में कुल 31.70 लाख रु0 का पूँजी विनियोजन हुआ है। सर्वाधिक पूँजी विनियोजन हमीरपुर जनपद में 13.00 लाख रु0 है। इसके अतिरिक्त बांदा जनपद में 8. 80 लाख रु0, महोबा जनपद में 5.10 लाख रु0 तथा चित्रकूट जनपद में 4.30 लाख रु0 पूँजी विनियोग हुआ है। सम्पूर्ण औद्योगिक इकाइयों की वार्षिक उत्पादन क्षमता 24.30 लाख रुपये है।

इस उद्योग में चित्रकूट धाम मण्डल में कुल 94 लोगों को रोजगार प्राप्त होता हैं, जिसमें हमीरपुर जनपद में 37, बांदा जनपद में 27, महोबा जनपद में 18 तथा चित्रकूट जनपद में 12 लोगों को रोजगार प्राप्त हैं। फ्रिज के चलन से यह उद्योग प्रभावित हो रहा हैं।

निम्नलिखित तालिका सं0 9–4 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार आइसकैण्डी तथा आइसक्रीम उद्योग की इकाइयों की संख्या पूँजी निवेश तथा रोजगार दर्शाया गया हैं।

तालिका सं0 9–4

चित्रकूट धाम मण्डल में आइसकैण्डी तथा आइसक्रीम उद्योग की इकाइयों की संख्या, पूँजी विनियोजन तथा रोजगार 2003–04

क्रसं0	विकासखण्ड	औद्योगिक इकाइयों की संख्या	पूँजी विनियोजन लाख रु0	रोजगार में लगे व्यक्तियों की संख्या	वार्षिक उत्पादन क्षमता लाख रु0 में
1	कुरारा	2	1.50	4	1.00
2	सुमेरपुर	5	3.60	11	2.50
3	सरीला	–	–	–	–
4	गोहाण्ड	1	0.70	2	0.50
5	राठ	5	2.90	8	2.00
6	मुस्करा	3	2.10	6	1.50
7	मौदहा	3	2.20	6	1.50
जनपद	हमीरपुर	18	13.00	37	9.00
8	पनवाड़ी	1	0.70	2	1.00
9	जैतपुर	–	–	–	–
10	चरखारी	2	1.40	4	2.00

11	कबरई	5	3.50	12	2.80
जनपद	महोबा	8	5.60	18	5.80
12	जसपुरा	—	—	—	—
13	तिन्दवारी	—	—	—	—
14	बड़ोखर खुर्द	6	4.50	15	3.10
15	बबेरू	2	1.40	4	1.00
16	कमासिन	—	—	—	—
17	विसण्डा	—	—	—	—
18	महुआ	—	—	—	—
19	नरैनी	4	2.90	8	2.20
जनपद	बांदा	12	8.80	27	6.30
20	पहाड़ी	1	0.70	2	0.50
21	कर्वी	3	2.20	6	1.60
22	मानिकपुर	1	0.70	2	0.60
23	रामनगर	1	0.70	2	0.50
24	मऊ	—	—	—	—
जनपद	चित्रकूट	6	4.30	12	3.20
	मण्डल—योग	44	31.70	94	24.30

स्रोतः कार्यालय, महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र, हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट (2003—04)

1. डॉ0 मेवाराम, विश्व का भूगोल, (ग्यारहवॉ संस्करण) भारत—भारती प्रकाशन एण्ड कं0, मेरठ पृ0 306
2. भारत 2002, वार्षिक सन्दर्भ ग्रन्थ पृ0 431
3. डॉ मेवाराम, विश्व का भूगोल, पृ0 307
4. भारत 2002, वार्षिक सन्दर्भ ग्रन्थ पृ0 563
5. डॉ कृपाशंकर गौड़, 'विश्व का आर्थिक भूगोल' पृ0 20

अध्याय 10

कृषि–आधारित उद्योग धन्धे (Agro Based Industries)

चित्रकूट धाम मण्डल औद्योगिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ा क्षेत्र है। यहाँ कृषि आधारित लघु एवं कुटीर उद्योगों का समुचित विकास नहीं हुआ है, लेकिन यहाँ पर इन उद्योग धन्धों के विकास के अच्छे अवसर हैं। यहाँ उत्पन्न होने वाली अनेक फसलें जैसे– धान, चना, गेंहूँ, अरहर, मसूर, मूँग, मटर, उड़द, तिलहन, गन्ना तथा कुछ अन्य फसलें, सब्जियाँ व फल कृषि आधारित औद्योगीकरण को प्रबल आधार प्रदान करते हैं। कृषि आधारित उद्योगों के सर्वांगीण विकास से इस क्षेत्र की चहुँमुखी उन्नति की जा सकती है तथा बेरोजगारी को कुछ हद तक कम किया जा सकता है। कृषि आधारित उद्योगों को प्रारम्भ करने से कृषि एवं उद्योग के क्षेत्र में गुणवत्ता एवं परिमाण में वृद्धि होगी तथा कृषि आधारित उद्योगों के लिए नये बाजार खुल सकेंगे। इससे औद्योगिक वातावरण के निर्माण की प्रक्रिया तीव्र हो जायेगी। ग्रामीण अंचलों के शिक्षित बेरोजगार युवकों को प्रशिक्षित करके उन्हें अपने गाँव में मनपसन्द उद्योग स्थापित कराने में सुविधा होगी। यहाँ कृषि आधारित उद्योगों के विकास एवं प्रोत्साहन हेतु विशिष्ट सुविधाएँ शासन द्वारा प्रदान की जा रही है। यहाँ औद्योगिक विकास में कार्यरत विभाग या संस्थायें जिला उद्योग केन्द्र, राष्ट्रीयकृत बैंक्स, उ0प्र0 वित्त निगम, पिकप, लघु उद्योग विकास बैंक, उ0प्र0 लघु उद्योग निगम, उ0प्र0 इण्डस्ट्रियल कंसल्टेन्ट्स, उ0प्र0 हथकरघा निगभ, राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम, उद्यमिता विकास संस्थान, राष्ट्रीय लघु उद्योग, विस्तार प्रशिक्षण संस्थान, लघु उद्योग विकास संगठन (सीडो), लघु उद्योग बोर्ड तथा उ0प्र0 खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड आदि प्रमुख हैं।

शासन द्वारा सहयोग प्राप्त कर क्षेत्र में प्राप्त कृषि उत्पादों के आधार पर उद्यमी स्वैच्छिक उद्योग स्थापित कर सकते हैं, जैसे– खाद्य या अखाद्य तेल मिल, चावल मिल, बेकरी–बिस्कुट उत्पादन, आटा मिल, गुड़ तथा खण्डसारी उद्योग, लाई बनाने का उद्योग, सूती वस्त्र उद्योग, हथकरघा उद्योग, दरी तथा गलीचा बुनने का उद्योग, नमकीन–दालमोट उद्योग, मसाला पीसने का उद्योग, आलू चिप्स, अचार–चटनी मुरब्बा उद्योग, फल और सब्जी का प्रशोधन, परिक्षण एवं डिब्बा बंदी, पशुआहार, मुर्गीआहार निर्माण आदि।

10(i) वर्गीकरण :–

चित्रकूट धाम मण्डल में 2003–04 में कृषि आधारित उद्योग धन्धों की इकाइयों की कुल संख्या 4330 है। अधिकांश औद्योगिक इकाइयाँ नगरों में केन्द्रित हैं, इसका प्रमुख कारण यातायात की सुविधाएँ, विद्युत आपूर्ति, बड़ी बाजारें, कुशल श्रमिक तथा तकनीकि सुविधाएँ हैं। ग्रामीण क्षेत्रों की इकाइयाँ या तो रेलवे स्टेशनों के निकट हैं या सड़कों के किनारे।

चित्रकूट धाम मण्डल में सर्वाधिक कृषि आधारित औद्योगिक इकाइयों की संख्या बांदा जनपद में (1317) है। इसके बाद हमीरपुर, महोबा तथा चित्रकूट जनपद में कृषि आधारित औद्योगिक इकाइयों की संख्या क्रमशः 1234, 1038 एवं 741 है।

विकासखण्डों में कृषि आधारित औद्योगिक इकाइयों की सर्वाधिक संख्या जैतपुर में (419) है, इस कारण इस क्षेत्र में हथकरघा उद्योग की इकाइयों की अधिक संख्या का होना हैं। इसके अतिरिक्त बड़ोखर

खुर्द में 315, कबरई में 286, नरैनी में 228, तथा सुमेरपुर विकासखण्ड में 210 इकाइयाँ कार्यरत हैं, शेष विकासखण्डों में कृषि आधारित औद्योगिक इकाइयों की संख्या 200 से कम हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में कृषि आधारित अधिकांश औद्योगिक इकाइयाँ वहीं पर स्थित हैं, जहाँ पर कच्चामाल उत्पन्न होता है। आसानी से कच्चेमाल के उपलब्ध होने के कारण छोटे–छोटे कुटीर उद्योग इस क्षेत्र में स्थापित किए गये हैं। शहरी क्षेत्रों में लघु औद्योगिक इकाइयाँ कार्य कर रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में इनकी संख्या कम है। आजादी के 57 वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद भी इस क्षेत्र में कृषि आधारित एक भी वृहद तथा मध्यम स्तर का उद्योग स्थापित नहीं हो सका है, केवल लघु, अतिलघु, ग्रामोद्योग तथा कुटीर उद्योगों का ही विकास हुआ है।

चित्रकूट धाम मण्डल में कृषि आधारित लघु तथा अतिलघु औद्योगिक इकाइयों की संख्या 1455 है। सर्वाधिक इकाइयाँ हमीरपुर जनपद में 550 है। इसके अतिरिक्त महोबा जनपद में 476, बांदा जनपद में 347 तथा चित्रकूट जनपद में 82 इकाइयॉ कार्यरत हैं। अधिकाँश लघु तथा अतिलघु औद्योगिक इकाइयाँ शहरों या कस्बों में केन्द्रित हैं। इसका कारण यातायात की सुविधाएँ, विद्युत–आपूर्ति, बाजार तथा पूँजी की सुविधाएँ हैं।

विकासखण्डों में लघु तथा अतिलघु औद्योगिक इकाइयों की सर्वाधिक संख्या जैतपुर में 284 है। इसके अतिरिक्त राठ में 128, बड़ोखर खुर्द में 112, कबरई में 109, गोहाण्ड में 97, सुमेरपुर में 88, नरैनी तथा मौदहा प्रत्येक में 79, कुरारा में 61 तथा चरखारी विकासखण्ड में 60 इकाइयाँ हैं। चित्रकूट जनपद में कृषि आधारित लघु तथा अतिलघु औद्योगिक इकाइयों की संख्या बहुत कम है, पहाड़ी एवं पठारी क्षेत्र होने के कारण यहाँ कृषि उत्पादन कम है, जिससे औद्योगिक इकाइयों की संख्या भी कम है। (तालिका संख्या 10.1)

चित्रकूट धाम मण्डल में खादी ग्रामोद्योग द्वारा प्रवर्तित कृषि आधारित ग्रामोद्योग इकाइयों की संख्या 2875 है। सर्वाधिक ग्रामोद्योग इकाइयों की संख्या बांदा जनपद में 970 है। इसके बाद हमीरपुर, चित्रकूट, तथा महोबा जनपद में ग्रामोद्योग इकाइयों की संख्या क्रमशः 684, 659 एवं 562 हैं।

विकासखण्डों में सर्वाधिक कृषि आधारित ग्रमोद्योग इकाइयों की संख्या बड़ोखर खुर्द तथा कर्वी (203) में है। इसके अतिरिक्त नरैनी में 180, कबरई में 177, जैतपुर में 135, पनवाड़ी में 134, पहाड़ी में 132, महुआ में 130, मानिकपुर में 123, सुमेरपुर में 122, मौदहा में 118, चरखारी में 116, बबेरु में 115 हैं। शेष विकासखण्डों में इकाइयों की संख्या 56 से 110 के मध्य है।

ग्रामीण औद्योगीकरण के क्षेत्र में उ0प्र0 खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड की अहम् भूमिका है। इसका सीधा सम्बन्ध ग्रामीण अर्थव्यवस्था, अनुसूचित जाति, जनजाति, अल्पसंख्यक, महिलायें, विकलांग, भू0 पू0 सैनिक, एवं पिछड़े व कमजोर वर्गों के उत्थान से है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी परम्परागत कौशल को बढ़ावा देने से औद्योगिक विकास की अच्छी संभावना है।

रोजगार की दृष्टि से कृषि आधारित औद्योगिक सेक्टर अत्यन्त कमजोर है, जो मात्र 12048 व्यक्तियों को रोजगार दे सका है। यहॉ कार्यरत जनसंख्या का 0.87% है एवं कुल जनसंख्या का 0.29% हैं। जनपद हमीरपुर की कृषि आधारित औद्योगिक इकाइयाँ सर्वाधिक 3591 लोगों को रोजगार दे सकी हैं। इसके अतिरिक्त क्रमशः बांदा जनपद में 3507, महोबा जनपद में 3326 तथा चित्रकूट जनपद में 1624 व्यक्ति इन औद्योगिक इकाइयों में कार्यरत है। सर्वाधिक रोजगार तेल मिलें देती हैं। तत्पश्चात् आटा उद्योग का स्थान आता है।

निम्नलिखित तालिका सं0 10.1 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार कृषि आधारित औद्योगिक इकाइयो की संख्या तथा रोजगार में लगे व्यक्तियों की संख्या को दर्शाया गया है :–

तालिका सं0 10.1

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार कृषि आधारित औद्योगिक इकाइयाँ (विविध श्रेणियों के आधार पर) एवं कार्यरत व्यक्ति – 2003–04

क्र0सं0	विकासखण्ड	लघु/ अतिलघु उद्योग इकाइयों की सं0	ग्रामोद्योग इकाइयों की संख्या	योग	कार्यरत व्यक्ति
1	कुरारा	61	109	170	461
2	सुमेरपुर	88	122	210	652
3	सरीला	42	80	122	332
4	गोहाण्ड	97	83	180	506
5	राठ	128	100	228	758
6	मुस्करा	55	72	127	354
7	मौदहा	79	118	197	528
जनपद हमीरपुर		550	684	1234	3591
8	पनवाड़ी	23	134	157	328
9	जैतपुर	284	135	419	1578
10	चरखारी	60	116	176	577
11	कबरई	109	177	286	843
जनपद महोबा		476	562	1038	3326
12	जसपुरा	10	56	66	138
13	तिन्दवारी	13	95	108	210
14	बड़ोखर खुर्द	112	203	315	1087
15	बबेरु	51	115	166	392
16	कमासिन	21	91	112	213
17	विसण्डा	30	100	130	303
18	महुआ	31	130	161	365
19	नरैनी	79	180	259	799
जनपद बांदा		347	970	1317	3507
20	पहाड़ी	09	132	141	287
21	कर्वी	36	203	239	567
22	मानिकपुर	11	123	134	268
23	रामनगर	11	91	102	226
24	मऊ	15	110	125	276
जनपद चित्रकूट		82	659	741	1624
मण्डल – योग		1455	2875	4330	12048

स्रोत : कार्यालय, महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र तथा जिला ग्रामोद्योग अधिकारी कार्यालय– हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट। (2003–2004)

10(ii) विविध कृषि आधारित उद्योग धन्धों का विवरण :-

चित्रकूट धाम मण्डल में स्थापित कृषि आधारित प्रमुख उद्योग धन्धे खाद्य तेल उद्योग, अखाद्य तेल उद्योग, आटा उद्योग, दाल उद्योग, चावल उद्योग, लाई बनाने का उद्योग, बेकरी और बिस्कुट बनाने का उद्योग, गुड़ तथा खाड़सारी उद्योग, मसाला उद्योग, पान प्रोसेसिंग उद्योग, पान मसाला एवं गुटका उद्योग, नमकीन एवं दालमोट उद्योग, फल सब्जी संरक्षण उद्योग तथा कृषि उत्पादित रेशा आधारित उद्योग हैं। जिनका अध्ययन–कच्चेमाल की उपलब्धि, स्थिति एवं वितरण, लागत–लाभ विश्लेषण, रोजगार, उत्पादन, प्रबन्धन एवं नियोजन को ध्यान में रखकर आगे किया गया है :-

1 खाद्य तेल उद्योग (Edible Oil Milling Industries)

चित्रकूट धाम मण्डल में यह कृषि आधारित उद्योगों में प्रमुख उद्योग है, जो सर्वाधिक रोजगार प्रदान करता है। इस क्षेत्र का यह अत्यन्त प्राचीन उद्योग है। पहले तेली जाति के लोग कोल्हू को बैलों से चलाते थे, लेकिन विद्युत–चालित कोल्हूओं के प्रादुर्भाव के साथ–साथ तेल निकालने के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं। तेल निकालने की परम्परागत प्राचीन पद्धति अब कोई प्रयोग में नहीं लाता।

चित्रकूट धाम मण्डल में प्रथम तेल मिल 85 वर्ष पूर्व कर्वी में 'मेसर्स कमलापति–जुग्गीलाल' के नाम से स्थापित की गयी थी। यह मिल 52 क्रमिक घानियों से युक्त वाष्पइंजनों द्वारा चलता था। कुछ समय तक चलने के बाद किन्हीं प्रबन्धकीय कारणों से बन्द हो गया।

स्वतन्त्रता प्राप्त होने के पश्चात् इस अध्ययन क्षेत्र मे यह उद्योग नियोजित आर्थिक विकास के साथ–साथ खूब पनपा। सन् 1970–75 में अध्ययन क्षेत्र में कुल मिलों की संख्या 109 थी। सन् 1975–80 के मध्य इनकी संख्या 138, सन् 1985–90 के मध्य 213, तथा सन् 1990–95 में इनकी संख्या 224 हो गई। यह संख्या बढ़ती हुई सन् 1995–2000 में 236 एवं सन् 2000–2005 में बढ़कर 248 मिलें हो गई है।

खाद्य तेल मिलों में प्रयोग होने वाला कच्चा माल तिलहन ही है, जैसे–तिल, अलसी, सरसों, सेंहुँआ, मूँगफली तथा सोयाबीन। मूँगफली को छोड़कर अन्य तिलहन यहीं उत्पन्न किया जाता है और क्षेत्र में स्थापित औद्योगिक इकाइयों को उपलब्ध करा दिया जाता है। अधिकांश औद्योगिक इकाइयाँ शहरों में स्थित है। इसलिए व्यापारी लोग ग्रामीण क्षेत्रों से तिलहन इकत्रित करके शहर स्थित इकाइयों में भेज देते हैं। उत्पाद की अधिकांश खपत शहर में ही हो जाती है, क्योंकि वे अच्छे बाजार भी है। अब ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युतीकरण के साथ–साथ तेल पेरने के लिए छोटी मशीनों (स्पेलर) की संख्या बढ़ रही है।

चित्रकूट धाम मण्डल में 2003–04 में कुल मिलों की संख्या 248 है, जिसमें सर्वाधिक मिलें हमीरपुर जनपद में 114 है तथा न्यूनतम चित्रकूट जनपद में 31 हैं। इसके अतिरिक्त बांदा जनपद में 54 तथा महोबा जनपद में इनकी संख्या 49 हैं।

विकासखण्डों में सर्वाधिक खाद्य तेल की मिलें सुमेरपुर विकासखण्ड में हैं। 'भरुवासुमेरपुर' नगर चित्रकूट धाम मण्डल की 'औद्योगिक नगरी' कहलाता है। यहाँ खाद्य तेल मिलों की अधिकता का प्रमुख कारण कच्चेमाल की निकट उपलब्धता है। सुमेरपुर विकासखण्ड में कुल तेल मिलों की संख्या 30 है, जबकि अकेले सुमेरपुर नगर में मिलों की संख्या 23 है।

दूसरा स्थान राठ विकासखण्ड का है। यहाँ कुल मिलों की संख्या_23 है। इसके बाद कुरारा विकासखण्ड में 19 मिलें हैं। बांदा जनपद में सर्वाधिक खाद्य तेल मिलें बड़ोखर खुर्द विकासखंण्ड में 19 हैं। कमासिन, विसण्डा, महुआ, पहाड़ी, रामनगर, तथा मानिकपुर में अपेक्षाकृत मिलों की संख्या कम है।

FIG. 10-1
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
AGRO BASED INDUSTRIES
2003-04
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
EDIBLE OIL MILLING INDUSTRY
DAL MILLING INDUSTRY
RICE MILLING INDUSTRY
LAI MAKING INDUSTRY
NO. OF WORKERS
200
100
50
25
CIRCLE REPESENT AVERAGE DAILY NO. OF WORKERS EMPLOYED
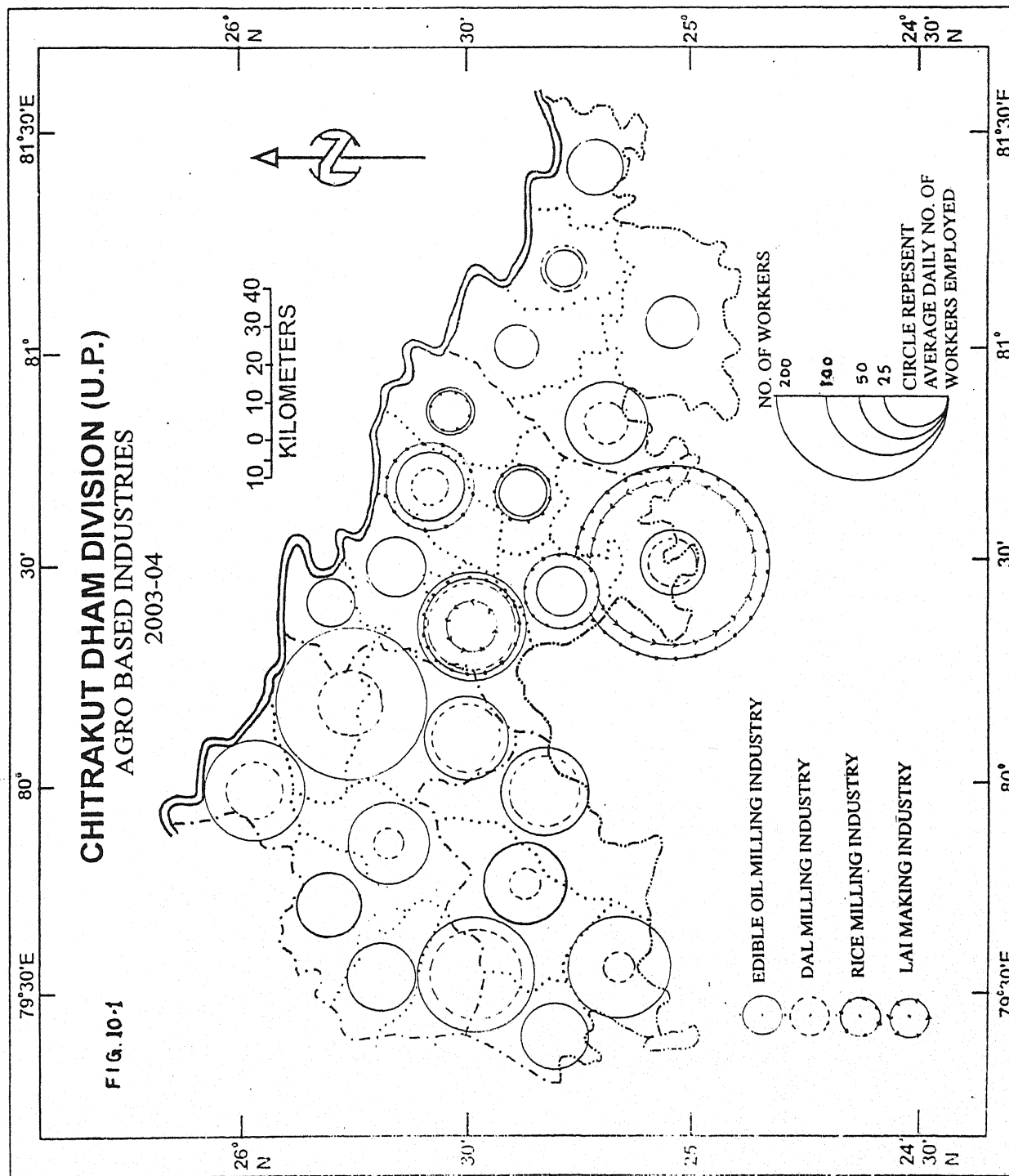
निम्नलिखित तालिका सं0 10.2 में चित्रकूट धाम मण्डल में कुल मिलों की संख्या तथा रोजगार में संलग्न व्यक्तियों की संख्या एवं पूँजी निवेश विकासखण्डवार दर्शाया गया है :–

तालिका संख्या 10.2

चित्रकूट धाम मण्डल में खाद्य तेल मिलों का वितरण तथा पूँजी निवेश, 2003–04

क्रसं0	विकासखण्ड	मिलों की संख्या	रोजगार में लगे व्यक्तियों की संख्या	स्थायी पूँजी लाख रुपये में	कार्यशील पूँजी लाख रुपये में	कुल निवेश लाख रुपये में
1	कुरारा	19	76	126.50	108.50	235.00
2	सुमेरपुर	30	156	264.00	248.00	512.00
3	सरीला	07	28	45.50	38.00	83.50
4	गोहाण्ड	08	32	52.00	44.50	96.50
5	राठ	23	92	149.50	125.50	275.00
6	मुस्करा	12	48	78.00	66.00	144.00
7	मौदहा	15	60	97.50	81.50	179.00
योग	जनपद–हमीरपुर	114	492	813.00	712.00	1525.00
8	पनवाड़ी	07	28	45.00	39.00	84.00
9	जैतपुर	18	72	117.50	99.0	216.50
10	चरखारी	11	45	71.50	61.50	133.00
11	कबरई	13	52	85.42	73.34	158.76
योग	जनपद–महोबा	49	137	319.42	271.84	592.26
12	जसपुरा	4	16	26.00	22.00	48.00
13	तिन्दवारी	6	24	39.50	34.00	73.50
14	बडोखर खुर्द	19	76	123.00	106.50	229.50
15	बबेरु	8	31	52.00	44.00	96.50
16	कमासिन	3	11	18.50	15.00	33.50
17	विसण्डा	3	12	18.40	14.60	33.00
18	महुआ	4	15	26.00	22.00	48.00
19	नरैनी	7	27	45.50	39.00	84.50
योग	जनपद–बांदा	54	212	348.90	297.60	646.50
20	पहाड़ी	4	15	25.50	20.50	46.00
21	कर्वी	13	51	85.50	73.00	158.00
22	मानिकपुर	5	19	32.50	27.50	60.00
23	रामनगर	3	12	18.00	14.30	32.30
24	मऊ	6	24	38.50	33.50	72.00
योग	जनपद–चित्रकूट	31	121	200.00	168.80	368.80
योग	मण्डल	248	1022	1681.32	1451.24	3132.56

स्रोत :– कार्यालय, महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट, 2003–04।

चित्रकूट धाम मण्डल की सबसे बड़ी खाद्य तेल मिल 'प्रकाश आयल मिल्स, गुरगुज भरुवासुमेरपुर' है। अन्य प्रमुख मिलें शरण आयल उद्योग भरुवासुमेरपुर, सर्वोदय तेल उद्योग गुरगुज, भरुवासुमेरपुर, राकेश

आयल उद्योग भरुवासुमेरपुर, लक्ष्मी दाल और आयल उद्योग, भरुवासुमेरपुर, नेशनल आयल उद्योग गुरगुज सुमेरपुर, रामगोपाल आयल उद्योग सुमेरपुर, श्याम आयल उद्योग गुरगुज सुमेरपुर, बजरंग आयल उद्योग गुरगुज सुमेरपुर, पंकज आयल इन्डस्ट्रीज सुमेरपुर, अर्चना आयल मिल इन्डस्ट्री सुमेरपुर, माधुरी तेल उद्योग सुमेरपुर, अमित आयल इन्डस्ट्रीज गुरगुज भरुवासुमेरपुर,गुप्ता ऑयल उद्योग सुरौली बुजुर्ग हमीरपुर, के0 के0 ऑयल इंण्डस्टीज गुरगुज, सुमेरपुर, केशर आयल मिल हमीरपुर, मधुसूदन आयल उद्योग सूफीगंज बाजार हमीरपुर, राम संजीवन अवस्थी आयल उद्योग कुरारा, केशवदास गुप्त आयल मिल कुरारा, अजय तेल उद्योग हेलापुर–कुछेछा, हमीरपुर, राजदुलारी आयल मिल हमीरपुर, चौरसिया आयल उद्योग शीतलपुर हमीरपुर, कृष्णा आयल मिल्स मौदहा, अनिल आयल इन्डस्ट्रीज खन्ना मौदहा, प्रवेश आयल मिल्स मौदहा, मिश्रा आयल इन्डस्ट्रीज बिवाँर हमीरपुर, शीतला आयल इन्डस्ट्रीज मौदहा, किसान आयल मिल पूर्वी तरौंस मौदहा, त्रिपाठी आयल इण्डस्ट्रीज खन्ना हमीरपुर, ज्योती आयल उ़द्योग मुस्करा हमीरपुर, महेश्वरी आयल इन्डस्ट्रीज जुलहटी राठ, हमीरपुर, शक्ति आयल मिल्स चिकासी राठ, श्रीराम आयल मिल राठ, हमीरपुर, मेहर बाबा आयल इन्डस्ट्रीज जुगियाना राठ, दुर्गा आयल मिल्स राठ, रहमान तेल उद्योग राठ, कुशवाहा आयल इन्डस्ट्रीज सरीला, राजेश आयल उद्योग सरीला, श्याम तेल उद्योग गोहाण्ड, गुप्ता तेल उद्योग मियानपुरा राठ, राजा आयल उद्योग बाराखम्भा राठ, घनश्याम किशोर आयल उद्योग राठ, साहू आयल मिल उद्योग हमीरपुर, शर्मा ऑयल इन्डस्ट्रीज विशालनगर, कबरई, साहू ऑयल भटीपुरा महोबा, गोपी आयल मिल मलकपुरा महोबा, आनन्द आयल मिल चरखारी, महोबा, पुरवार आयल मिल सब्जीमण्डी महोबा, गुप्ता आयल इन्डस्ट्रीज सफीपुरा महोबा, अरविन्द आयल मिल सूपा, महोबा, साहू आयल मिल्स कुलपहाड, विश्वकर्मा आयल उद्योग कुलपहाड़, शाहू आयल मिल्स जैतपुर, अंसारी आयल उद्योग जैतपुर, गौरव आयल मिल महोबा, चक्रवर्ती आयल मिल इन्डस्ट्री जैतपुर, श्रीपत सहॉय आयल उद्योग जैतपुर, साहू आयल मिल्स कर्वी, कुशवाहा आयल मिल सीतापुर, चित्रकूट, अलका आयल उद्योग शंकर बाजार कर्वी, प्रकाश आयल उद्योग अतर्रा, राजा आयल उद्योग बबेरु, लक्ष्मी आयल मिल्स छावनी, बांदा है।

चित्रकूट धाम मण्डल में खाद्यतेल मिलों में कुल पूँजी निवेश 3132.56 लाख रुपये हुआ है। सर्वाधिक पूँजी निवेश हमीरपुर जनपद में 1525.00 लाख रुपये तथा न्यूनतम पूँजी निवेश चित्रकूट जनपद में 368.80 लाख रुपये हुआ है। इसके अतिरिक्त बांदा जनपद में 646.50 लाख रुपये तथा महोबा जनपद में 592.26 लाख पूँजी निवेश हुआ है। विकासखण्डों में सर्वाधिक सुमेरपुर में 512.00 लाख रुपये निवेश हुआ है। इसके अतिरिक्त राठ में 275.00 लाख रुपये, कुरारा विकासखण्ड में 235.00 लाख रुपये, बड़ोखर खुर्द में 229.50 लाख रुपये, जैतपुर विकासखण्ड में 216.50 लाख रुपये, मौदहा विकासखण्ड में 179.00 लाख रुपये, कबरई में 158.76 लाख रूपये कर्वी विकासखण्ड में 158.00 लाख रुपये, मुस्करा विकासखण्ड में 144.00 लाख रुपये तथा चरखारी विकासखण्ड में 133.00 लाख रुपये का पूँजी निवेश हुआ है। शेष विकासखण्डों में पूँजी निवेश 32.30 लाख रुपये से 96.50 लाख रु0 के मध्य है। सबसे कम पूँजी निवेश रामनगर विकासखण्ड में 32.30 लाख रुपये है। (तालिका सं0 10.2)

चित्रकूट धाम मण्डल में खाद्य तेल उद्योग इकाइयों में रोजगार प्राप्त लोगों की कुल संख्या 1022 है। हमीरपुर जनपद की तेलमिल इकाइयाँ सर्वाधिक 492 लोगों को रोजगार प्रदान करती हैं। इसके बाद बांदा जनपद में 212, तथा महोबा जनपद में 197 तथा चित्रकूट जनपद में 121 लोगों को खाद्य तेल मिलों में रोजगार मिला हुआ है। सुमेरपुर विकासखण्ड में सर्वाधिक 156 व्यक्तियों को इस उद्योग में रोजगार प्राप्त हैं। मिलों की संख्या की वृद्धि के साथ–साथ रोजगार पाने वाले व्यक्तियों की संख्या भी बढ़ी है। 1970–75

के मध्य 440 व्यक्ति इस उद्योग में लगे हुए थे। यह संख्या 1975–80 के मध्य बढ़कर 150 हो गयी, जो 1985–90 में 847 व्यक्ति, 1990–95 में 890 व्यक्ति, 1995–2000 में 940 व्यक्ति एवं 2000–2005 में बढ़कर 1022 व्यक्ति हो गयी।

चित्रकूट धाम मण्डल में तेल मिलों की तेल पेरने (निकालने) की कुल वार्षिक क्षमता 74400 मीट्रिकटन तिलहन की है, जिनमें 26040 मीट्रिकटन तेल तथा 46872 मीट्रिकटन खली का वार्षिक उत्पादन होता है।

किसी भी उत्पादन क्रिया में पाँच 'M' का सामंजस्य होता है – Man (व्यक्ति) Machine (कारखाना), Material (पदार्थ), Money (धन), Market (बाजार)। इन पाँचों का सही संचालन अच्छा प्रबन्धक ही कर सकता है। इन पाँच कारकों के अतिरिक्त अन्य कारक जो उत्पादन पर प्रभाव डालते है, वह है : उत्पादन की गुणवत्ता, कारखाने की व्यवस्था, सामग्री का प्रबन्धन और नियोजन। तेल मिलों के नियमित उत्पादन के लिए प्रमुख बात कच्चेमाल का प्रबन्ध करना है। जिन क्षेत्रों में कच्चेमाल की प्राप्ति स्थानीय रुप से हो जाती है, वे ही मिलें लाभप्रद सिद्ध हो रहीं हैं। सुदूरवर्ती क्षेत्रों से माल क्रय करने या मँगाने से मिल मालिको कों लाभ के बजाय हानि होने से मिलों को बन्द करना पड़ता है।

2– अखाद्य तेल उद्योग (Non- Edible Oil Milling Industry)

अखाद्य तेल साबुन तथा दवाओं के बनानें में प्रयुक्त होता है। अखाद्य तेल महुवा, अण्डी, नीम के बीज तथा, धान की भूसी से निकाला जाता है। प्राचीनकाल में भी महुवा, अण्डी, तथा नीम अखाद्य तेल के महत्वपूर्ण स्रोत रहे हैं और आज भी इनके बीज इन उद्योगो का कच्चामाल है।

चित्रकूट धाम मण्डल में मात्र 5 अखाद्य तेल मिलें हैं। बांदा जनपद में तीन, हमीरपुर तथा महोबा जनपद में एक–एक हैं। हमीरपुर जनपद में अखाद्य तेल मिल – 'प्रकाश आयल मिल्स' गुरगुज भरुवासुमेरपुर है। इसमें अण्डी के तेल (Castor Oil) का उत्पादन होता हैं। महोबा जनपद में स्थित अखाद्य तेल उद्योग गाँधी नगर, महोबा मिल नीम के तेल (Neem Oil) का उत्पादन होता है। बांदा जनपद में अतर्रा में 'बुन्देलखण्ड सोलवेन्ट एक्सट्रैक्शन्स' एण्ड 'राइस मिल प्रा0लि0 अतर्रा' स्थित है। जिसमें राइस ब्रान आयल का उत्पादन होता हैं। यह 'बुन्देलखण्ड' की राइस ब्रान आयल की एक मात्र इकाई है। राइस ब्रान आयल धान की भूसी से निकाला जाता है। धान की भूसी अतर्रा, विसण्डा, नरैनी, बांदा तथा खुरहण्ड की राइस मिलों से प्राप्त होती है, अतः कच्चामाल निकट ही प्राप्त हो जाता है। यह संयन्त्र 1965 ई0 में 1.5 लाख रुपये में अतर्रा में स्थापित किया गया था। इसकी वार्षिक उत्पादन क्षमता 730 टन राइस ब्रान आयल हैं। इस मिल से 1972 में 450 टन, 1975 में 470 टन तथा 2001 में 640 टन तेल का उत्पादन हुआ। इस संयन्त्र का भविष्य उज्ज्वल है।

अखाद्य तेल का उपयोग भरुवासुमेरपुर नगर के फैक्ट्री एरिया में स्थित हिन्दुस्तान लीवर में रिन व लाइफबॉय साबुन बनाने में किया जाता है। राइस ब्रान आयल का निर्यात टाटा प्रा0 लि0 मुम्बई, हिन्दुस्तान लीवर प्रा0लि0 मुम्बई तथा गोदरेज सोप वर्क्स मुम्बई आदि साबुन–कारखानों को किया जाता है।

चित्रकूट धाम मण्डल में इस उद्योग में लगभग 50 लोगों को रोजगार मिला हुआ है। मण्डल में कुल अखाद्य तेल का उत्पादन मूल्य लगभग 10 लाख रुपये है।

इस उद्योग की कुछ समस्यायें हैं जो निम्नलिखित है :–

1) कच्चे पदार्थों की उपलब्धता मौसमी (Seasonal) है, क्योंकि महुवा, नीम तथा अण्डी के बीज ग्रीष्म ऋतु के दौरान उपलब्ध होते हैं। इसलिए कच्चामाल उपलब्ध होने पर ही यह उद्योग चलता है।

2) राइस ब्रान आयल मिल, चावल मिल से प्राप्त भूसी पर निर्भर है। अतः चावल मिलों के बन्द होने पर यह उद्योग भी ठप्प हो जायेगा।

3) विद्युत शक्ति की कमी तथा अनियमित आपूर्ति होने से यह उद्योग प्रभावित होता है।

4) अखाद्य तेल खपत के लिए निकट बाजार न होने से आपूर्ति पर प्रभाव पड़ता है।

इस उद्योग के लिए कुछ सुविधाएँ भी हैं, जैसे – राइस ब्रान आयल मिल चावल मिलों के क्षेत्र में ही स्थापित है। इसलिए कच्चेमाल को लाने में बहुत कम भाड़ा लगता है। अखाद्य तेल मिलों के परिसर में साबुन–फैक्ट्री स्थापित करके इस उद्योग का विकास किया जा सकता है।

3– आटा उद्योग (The Flour Milling Industry)

मानव की प्राथमिक आवश्यकतायें रोटी, कपड़ा, और मकान है। आटा गेंहूँ, जौ, चना, ज्वार तथा मक्का आदि को पीसकर तैयार किया जाता है। यह बहुत प्राचीन उद्योग है, क्योंकि पत्थरों की सहायता से आटा–पीसने का कार्य प्राचीन सभ्यता से ही (पत्थरों की सहायता से) चला आ रहा है। गाँवों में आटा चक्कियों की स्थापना के कारण अब घर की चकिया या जाँत का महत्व धीरे–धीरे कम होता जा रहा है। जलविद्युत शक्ति के विकास के पूर्व ये चक्कियाँ या मिलें डीजल इंजनों से तथा जल धारा द्वारा चलती थी, जिनको 'पनचक्की' कहा जाता था। अब प्रत्येक गाँव या कस्बों में आटा चक्कियाँ देखी जा सकती है, जो डीजल इंजनों या विद्युत मोटरों द्वारा चलती है। रहन–सहन के स्तर में वृद्धि के साथ ही यह उद्योग गाँवों में भी लोकप्रिय होता जा रहा है। विद्युतीकृत गाँवों में वृद्वि के साथ चक्कियों की संख्या में भी अभिवृद्धि हुई है, इस प्रकार इस उद्योग का निरन्तर विकास हुआ है। ग्रामीण क्षेत्रों में आटा चक्कियों के साथ–साथ एक्सपेलर भी लगे हुए हैं, जो स्थानीय स्तर पर आटा तथा तेल की माँग की पूर्ति करते हैं। अध्ययन क्षेत्र में बड़ी आटा मिलों की संख्या बहुत ही कम है।

आटा चक्कियाँ या मिलें उच्च गुणवत्ता का कच्चामाल प्रयोग करती है, ये कच्चामाल बहुत ही शुद्ध एवं साफ–सुथरा होता है, ताकि पिसाई के बाद उसका वजन कम न हो। इस उद्योग में चावल तथा दाल मिल इकाई की अपेक्षा कच्चेमाल इकट्ठा करने के लिए पूँजी की कम आवश्यकता होती है। खपत के केन्द्रों तथा शुद्ध प्राकृतिक कच्चेमाल प्राप्ति के क्षेत्रों में इस उद्योग की स्थिति उत्तम होती है, क्योंकि यह एक उपभोग की सीमा से बँधा हुआ उद्योग है।

बड़ी इकाइयों की स्थिति अधिकाँशतः शहरों में होती है क्योंकि शहरों में यातायात, विद्युतशक्ति तथा बाजार की सुविधाएँ सुलभ होती हैं। शहर अच्छी खपत के केन्द्र भी होते हैं। आटा की पिसाई साधारण मशीनी प्रक्रिया है इसलिए कुशल श्रमिक के उपलब्ध न होने पर अकुशल श्रमिक भी कर सकते हैं।

स्वतन्त्रता के पश्चात् यह उद्योग बहुत लोकप्रिय हुआ और इसका विकास बहुत ही तीव्र गति से हुआ। चित्रकूट धाम मण्डल में 2003–04 में कुल आटा चक्कियों की संख्या 2259 है। सर्वाधिक चक्कियाँ बांदा जनपद में 767 तथा सबसे कम महोबा जनपद में 436 हैं। इसके अतिरिक्त चित्रकूट जनपद में 557 तथा हमीरपुर जनपद में 499 चक्कियाँ है।

विकासखण्डों में सर्वाधिक चक्कियाँ कर्वी विकासखण्ड में 159 है तथा सबसे कम आटा चक्कियाँ जसपुरा विकासखण्ड में 46 हैं। इसके अतिरिक्त बड़ोखर खुर्द में 136, नरैनी में 130, कबरई में 127, पहाड़ी में 123, महुआ में 119, पनवाड़ी में 118, मानिकपुर में 105, तथा जैतपुर में 101 चक्कियाँ स्थापित हैं। शेष

FIG. 10.2
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
AGRO BASED INDUSTRIES
2003-04
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25'
24° 30' N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
N
FLOUR MILLING INDUSTRY
BAKERY AND BISCUT MAKING INDUSTRY
GUR AND KHANDSARI MANUFACTURING INDUSTRY
SPICES GRINDING AND PACKING INDUSTRY
NO. OF WORKERS
400
200
100
50
CIRCLE REPESENT
AVERAGE DAILY NO. OF
WORKERS EMPLOYED
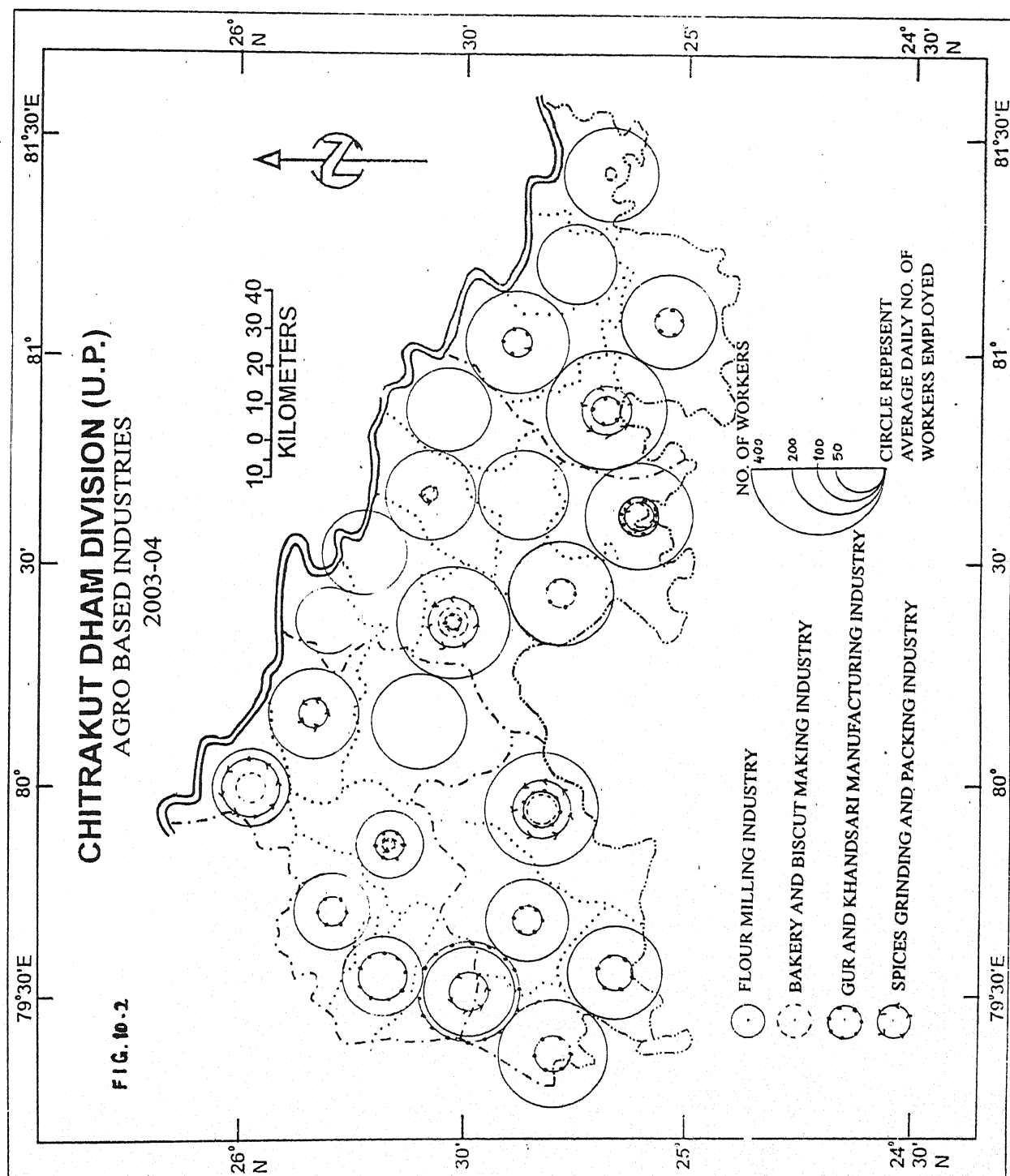
विकासखण्डों में चक्कियों की संख्या 100 से कम है। निम्नलिखित तालिका संख्या 10–3 में चित्रकूट धाम मण्डल में आटा मिलों तथा चक्कियों की संख्या तथा उनमें रोजगार में लगे व्यक्तियों की संख्या दर्शायी गयी है।

तालिका संख्या 10.3

चित्रकूट धाम मण्डल में आटा मिलों तथा चक्कियों का वितरण – 2003–04

क्रसं0	विकासखण्ड	मिलों तथा व्यक्तियों की संख्या	रोजगार में लगे व्यक्तियों की सं0
1	कुरारा	64	128
2	सुमेरपुर	85	176
3	स्रीला	64	128
4	गोहाण्ड	70	140
5	राठ	63	126
6	मुस्करा	54	108
7	मौदहा	99	198
जनपद हमीरपुर		499	1004
8	पनवाड़ी	118	236
9	जैतपुर	101	202
10	चरखारी	90	181
11	कबरई	127	254
जनपद महोबा		436	873
12	जसपुरा	46	92
13	तिन्दवारी	82	164
14	बड़ोखर खुर्द	136	278
15	बबेरु	86	176
16	कमासिन	80	160
17	विसण्डा	86	172
18	महुआ	119	238
19	नरैनी	130	260
जनपद बांदा		767	1540
20	पहाड़ी	123	246
21	कर्वी	159	319
22	मानिकपुर	105	210
23	रामनगर	72	144
24	मऊ	98	198
जनपद चित्रकूट		557	1115
मण्डल योग		2259	4532

स्रोत : कार्यालय, महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र महोबा, हमीरपुर, बांदा, चित्रकूट, 2003–04।

चित्रकूट धाम मण्डल में 5 बड़ी आटा मिलें हैं। जिनमें 3 बांदा जनपद में तथा 2 हमीरपुर जनपद में हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण आटा मिलें इस प्रकार हैं– अग्रवाल फ्लोर मिल न्यूमार्केट बांदा, जैन फ्लोर मिल बांदा, प्रदीप चक्की सिकन्दरापुर, बांदा, श्रवण चक्की सिकन्दरापुर, बांदा, सुरेश आयल एवं चक्की उद्योग बबेरु, भाऊ आटा चक्की खुटला बांदा, उमाशंकर आटा चक्की खुटला बांदा, ईश्वरचन्द्र आटा चक्की छोटी बाजार बांदा, छक्कीलाल आटा चक्की छोटी बाजार, बांदा, रविकान्त आटा चक्की शंकर बाजार कर्वी, सत्यनारायण

आटाचक्की शेकर बाजार कर्वी, बद्रीप्रसाद साहू आटाचक्की कर्वी, केदारगुप्ता आटा चक्की कर्वी, रामाश्रे आटाचक्की बल्दाऊगंज कर्वी, केशव फ्लोर एण्ड आयल मिल कुरारा, हमीरपुर, लल्लू भाईजान आटाचक्की भरुवासुमेरपुर, हुरमत खान आटाचक्की भरुवासुमेरपुर, राकेश आटाचक्की भरुवासुमेरपुर, बृजकिशोर आटाचक्की भरुवासुमेरपुर, श्याम शिवहरे आटाचक्की भरुवासुमेरपुर, मे0 बाबू आटाचक्की सरीला, मे0 सुरेश आयल एण्ड फ्लोर इन्डस्ट्री पनवाड़ी, मे0 अंसारी मिनी फ्लोर मिल बजरिया महोबा।

छोटी मिल (आटा चक्की) लगवाने में 10 किलो वाट पावर की आवश्यकता होती है। एक इकाई लगवाने में कुल 292,000 रु0 लागत लगती है। जिसमें 150,000 रु0 स्थायी सम्पत्ति तथा 142,000 का कार्यशील पूँजी का निवेश होता है। स्थायी पूँजी का कुल उत्पादक पूँजी से प्रतिशत 51.36 है तथा कार्यशील पूँजी का प्रतिशत 48.64 है। कुल उत्पादक पूँजी में भूमि तथा भवन का प्रतिशत 34.24% प्लान्ट और मशीनरी (विद्युत कनेक्शन सहित) का प्रतिशत 15.41, तथा कच्चेमाल के स्टॉक का प्रतिशत 28.77 है। निम्नलिखित तालिका सं0 10–4 में आटा चक्की उद्योग का लगत–लाभ विश्लेषण किया गया है :–

तालिका सं0 10.4

छोटी आटा मिल (चक्की) में लगी पूँजी की संरचना

क्रसं0	मद	उत्पादक पूँजी रुपये में	उत्पादक पूँजी का प्रतिशत
1	भूमि	30,000	10.27
2	भवन	70,000	23.97
3	प्लान्ट और मशीनरी (विद्युत कनेक्शन सहित)	45,000	15.41
4	अन्य	5000	1.71
	स्थायी सम्पत्ति का योग	150,000	51.36
5	कच्चेमाल का स्टाक (एक सप्ताह)	84,000	28.77
6	तैयार माल का स्टॉक	40,000	13.70
7	उधार बकाया	10,000	3.43
8	आपरेटिंग खर्चे	5,000	1.71
9	अन्य	3,000	1.03
कार्यशील पूँजी का योग		142,000	48.64
कुल उत्पादक पूँजी		292000	100.00
शुद्ध लाभ (वार्षिक)		240,000	

जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ आटा चक्कियों की संख्या में तथा रोजगार में वृद्धि हुई है। 2003–04 में इस उद्योग में लगे व्यक्तियों की संख्या 4532 हैं। बांदा जनपद में सर्वाधिक 1540 व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध है। इसके बाद चित्रकूट जनपद में 1115 हमीरपुर जनपद में 1004 तथा महोबा जनपद में 873 लोगों को इस उद्योग में रोजगार प्राप्त है।

इस उद्योग के प्रमुख उत्पाद–आटा, मैदा, सूजी, रवेदार आटा तथा मिश्रित आटा है। इस उद्योग की प्रमुख समस्यायें विद्युत की नियमित आपूर्ति का न होना एवं बिलों में भारी बढ़ोत्तरी है।

4– दाल–उद्योग (Dal Milling Industry)

दाल शाकाहारी भोजन का महत्वपूर्ण प्रोटीनयुक्त भोज्य पदार्थ है। जिसे अरहर, मूँग, उड़द, चना, मसूर तथा मटर आदि फसलों से प्राप्त किया जाता है। मण्डल में ये सभी दलहनी फसलें उगायी जाती हैं, लेकिन सर्वाधिक खपत अरहर की दाल की होती है। दाल मिलों के लिए कच्चामाल निकट ही प्राप्त हो जाता है। दाल का छिलका (भूसी) निकालने की देशी पद्धति अत्यन्त प्राचीन है लेकिन आधुनिक शक्ति चालित संयन्त्रों के कारण यह पद्धति करीब–करीब लुप्त हो गयी है। ब्रिटिश शासन काल के दौरान दाल मिल उद्योग बहुत धीमा रहा है, लेकिन स्वतन्त्रता के बाद इस उद्योग में द्रुत गति से वृद्धि हुई है। 1950–51 में बांदा में केवल एक ही दाल मिल 'विराट राइस एण्ड दाल मिल्स' थी, सन् 1969–70 यह संख्या बढ़कर 6 हो गई। तत्पश्चात् सन् 1975–76 में 23, सन् 1980–81 में 30 और सन् 1985–86 में 38 और सन् 2003–2004 में दाल मिलों की संख्या बढ़कर 42 हो गई। सर्वाधिक दाल मिलों की संख्या हमीरपुर जनपद में 22 है, सबसे कम चित्रकूट जनपद में मात्र 3 है। इसके अतिरिक्त बांदा जनपद में 11 तथा महोबा जनपद में 6 मिलें है। दाल मिल उद्योग का प्रमुख केन्द्र राठ है अन्य केन्द्र सुमेरपुर, मौदहा, महोबा, कुरारा बांदा, तथा कर्वी है। राठ में दाल शोधन कार्यशालायें सबसे अधिक है।

चित्रकूट मण्डल की प्रमुख दाल मिलें– पुरवार दाल मिल राठ, छोटेलाल लक्ष्मीप्रसाद दाल मिल राठ, अग्रवाल दाल मिल राठ, गोपाल दाल मिल राठ, श्याम दाल इन्डस्ट्रीज पठानपुरा, राठ हमीरपुर, मनोज दाल एण्ड आयल इन्डस्ट्रीज राठ हमीरपुर, श्रीराम आयल एण्ड दाल मिल राठ हमीरपुर, अच्छन मिया दाल एण्ड आयल मिल हमीरपुर, अन्नपूर्णा दाल मिल कुरारा हमीरपुर, शिवनारायण दाल मिल कुरारा, अशोक दाल एण्ड आयल मिल भरुवासुमेरपुर, साहू दाल मिल मौदहा, हमीरपुर, नत्थूलाल मिल मौदहा, केशर दाल एण्ड आयल मिल्स गल्लामण्डी हमीरपुर, गनेशीलाल भोलालाल दाल मिल लालपुर कुलपहाड़, बल्देव दाल एण्ड आयल मिल्स बल्देवनगर, शक्तिनगर महोबा, किशोर आयल एण्ड दाल मिल चरखारी किरन दाल एण्ड आयल मिल मुस्करा, हमीरपुर, साहू राइस एण्ड दाल मिल्स बांदा, रामदास राजकुमार दाल मिल्स बांदा, रामचरन एण्ड सन्स दाल मिल्स बल्दाऊगंज कर्वी, अरुण दाल मिल कर्वी, मनोजकुमार गुप्ता दाल मिल राजापुर हैं।

निम्नलिखित तालिका सं0 10.5 में चित्रकूट धाम मण्डल में दालें मिलों की संख्या उनमें काम करने वाले व्यक्तियों की संख्या तथा पूँजी निवेश दर्शाया गया है:–

तालिका संख्या 10.5

चित्रकूट धाम मण्डल में दाल मिलों का वितरण तथा पूँजी निवेश 2000–04

क्रसं0	विकासखण्ड	मिलों की सं0	रोजगार में लगे व्यक्तियों की संख्या	कुल पूँजी निवेश लाख रु0 में
1	कुरारा	4	24	85.00
2	सुमेरपुर	5	30	100.50
3	सरीला	–	–	–
4	गोहाण्ड	–	–	–
5	राठ	8	67	144.50
6	मुस्करा	1	6	16.50
7	मौदहा	4	33	72.00
जनपद हमीरपुर		22	160	418.50
8	पनवाड़ी	–	–	–
9	जैतपुर	1	8	17.30
10	चरखारी	1	8	16.20
11	कबरई	4	29	68.50
जनपद महोबा		6	45	102.00
12	जसपुरा	–	–	–
13	तिन्दवारी	–	–	–
14	बड़ोखर खुर्द	7	54	112.00
15	बबेरु	1	08	29.45
16	कमासिन	–	–	–
17	विसण्डा	–	–	–
18	महुआ	–	–	–
19	नरैनी	3	15	53.50
जनपद बांदा		11	77	194.95
20	पहाड़ी	–	–	–
21	कर्वी	2	13	57.40
22	मानिकपुर	–	–	–
23	रामनगर	1	8	16.40
24	मऊ	–	–	–
जनपद चित्रकूट		3	21	73.80
मण्डल योग		42	303	789.25

स्रोत : कार्यालय, महाप्रबन्धक जिला उद्योग केन्द्र– हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट 2003–04।

चित्रकूट धाम मण्डल में दाल मिलों में कुल पूँजी निवेश 789.25 लाख रुपये हुआ है, सर्वाधिक पूँजी निवेश हमीरपुर जनपद में 418.50 लाख रुपये हुआ है, इसके पश्चात् बांदा जनपद में 194.95 लाख रुपये, महोबा जनपद में 102.00 लाख रुपये तथा चित्रकूट जनपद में 73.80 लाख रुपये हुआ है।

विकासखण्डों में सर्वाधिक पूँजी निवेश राठ विकासखण्ड में 144.50 लाख रुपये का हुआ है, क्योंकि यहाँ सर्वाधिक (8) दाल मिलें हैं। इसके पश्चात् बड़ोखर खुर्द में 112.00 लाख रुपये, सुमेरपुर में 100.50 लाख रुपये, कुरारा में 85.00 लाख रुपये, मौदहा में 72.00 लाख रुपये, कबरई में 68.50 लाख रुपये, कर्वी में 57.40 लाख रुपये, नरैनी में 53.50 लाख रुपये का पूँजी निवेश हुआ है। दाल मिल का एक छोटा प्लांट करीब 15.00 लाख रुपये में प्रारम्भ किया जा सकता है परन्तु इसमें बाउन्ड्री वाल आदि का खर्च अतिरिक्त है।

प्रत्येक मिल में एक मिस्त्री, चार–पाँच श्रमिक, दो चौकीदार व एक मुनीम की आवश्यकता पड़ती है। इस तरह कुल आठ या नौ कर्मचारियों द्वारा एक दाल मिल संचालित होती है। छोटे से कारखानें में पचास कुन्तल दाल 24 घन्टे में तैयार हो जाती है।

चित्रकूट धाम मण्डल में दाल मिलों में कुल 303 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है। सर्वाधिक हमीरपुर जनपद में दाल मिलों में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या 160 है। बांदा जनपद में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या 77, महोबा जनपद में 45 तथा चित्रकूट जनपद में 21 व्यक्ति दाल मिलों में कार्यरत हैं। (तालिका सं0 10.5) बढ़ती हुई दालमिलों की संख्या के साथ–साथ कर्मियों की संख्या भी बढ़ी है। 1975 में दाल मिल उद्योग में 140 कर्मी थे, जो 2003–04 में बढ़कर 303 हो गये। दाल मिलें मौसम या ऋतुओं के अनुसार रोजगार में लगे कर्मियों की संख्या घटा–बढ़ा लेती है। इन मिलों के संचालन का श्रेष्ठ समय अप्रैल से जुलाई तक होता है इसलिए गर्मियों में श्रमिकों की संख्या 10 से 60 तक प्रति इकाई होती है, लेकिन जब व्यवसाय का समय नहीं होता तब कर्मियों की संख्या में कमी आ जाती है, जो 6 या इससे कम हो जाती है। इस उद्योग में लगे हुए कर्मियों का पारिश्रमिक अल्प होता है।

अधिकांश कर्मचारियों को 50 से 60 रुपये दैनिक मजदूरी पर रखा जाता है। इस उद्योग में कोई स्थायित्व नहीं होता है। केवल मुनीम (Accountants) ही स्थायी माने जाते हैं।

शोधित दाल उ0प्र0 के बनारस, गोरखपुर तथा पूर्वांचल के जिलों में भेजी जाती है, इसके अतिरिक्त बिहार, प0 बंगाल और असम राज्यों के लिए निर्यात कर दी जाती है। दाल उद्योग का गौण उत्पादन टूटी–भूसी पशुओं के भोजन के काम आती है। मण्डल की कुल दाल मिलों की उत्पादक क्षमता 86000 मीट्रिकटन वार्षिक है।

दाल उद्योग का गौण उत्पादन टूटी तथा भूसी है। इसका कच्चे माल के रुप में उपयोग करने के लिये मिलों के परिसर में पशु–आहार बनाने की इकाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं। दालमिल स्थापित करने से पहले यह अवश्य विचार कर लेना चाहिए कि कच्चामाल (दलहन) आसानी से उपलब्ध हो जायेगा या नहीं? बाजार की माँग के अनुसार उत्पादन की पूर्ति होती रहे। इसके लिए कभी आवश्यक कच्चेमाल समाप्त हो जाने का प्रतीक्षा न करें बल्कि जितनी मात्रा में माल की खपत होती जाये उतनी मात्रा में माल क्रय करते जाना चाहिये। जिससे उत्पादन और उद्योग सफलतापूर्वक चलता रहे। दाल मिल उद्योग की कुछ समस्यायें भी हैं। सबसे बड़ी समस्या ट्रान्सपोर्टेशन की सुविधा का अभाव है। तैयार माल कई–कई

दिनों तक डंप रहता है और साधन के अभाव में गंतव्य तक नहीं पहुँच पाता। मार्च–अप्रैल के महीने में मजदूर की समस्या रहती है। श्रमिक को ढूँढनें जाना पड़ता है, क्योंकि वे लोग कृषि कार्यों में लग जाते हैं। पूँजी का अभाव एव बिजली की कटौती अन्य बडी समस्यायें हैं, जिनका समाधान करना आवश्यक है।

5 चावल उद्योग (Rice Milling Industry) :–

चावल चित्रकूट धाम मण्डल के लोगों का प्रमुख आहार है। यह धान की भूसी अलग करने पर प्राप्त होता हैं। मण्डल में धान की भूसी अलग करने का कार्य अत्यन्त प्राचीन काल से किया जा रहा है। प्राचीन तथा देशी विधि द्वारा गांवो में गृहणियों द्वारा धान को मिट्टी की चकिया में दरकर तथा काड़ी–मूसल द्वारा कूटकर भूसी अलग की जाती थी, लेकिन शक्तिचालित यन्त्रों के अविष्कार हो जाने से भूसी अलग करना एक महत्वपूर्ण उद्योग बन गया। अतर्रा इस उद्योग का प्रमुख केन्द्र है। धान की भूसी अलग करने की दो विधियाँ हैं :– (1) बिना उबाले धान की भूसी अलग करना तथा (2) उबालकर धान की भूसी अलग करना। इस प्रकार चावल निकालने की विधि के आधार पर मण्डल में दो तरह की चावल मिलें हैं :– (1) बिना उबाले धान की भूसी अलग करने वाली मिलें–यें कम क्षमता वाली हैं, जो धान के छिलके को अलग करके 'अर्वा' चावल (बिना उबला हुआ) तैयार करती हैं। इस प्रकार की इकाइयाँ अधिक हैं।

(2) धान उबालकर भूसी अलग करने वाली मिलें :– यें धान को उबालकर उसका छिलका (भूसी) अलग करती हैं। इस विधि से चावल अधिक नहीं टूटता है। इस प्रकार तैयार किये हुए चावल को 'भुजिया' (सेला चावल) कहते हैं। यह विकसित विधि द्वारा तैयार किया जाता है। कुछ इकाइयाँ पालिश करने वाले संयन्त्रों को रखती हैं, इस प्रकार चावल को पालिस किया हुआ तथा बिना पालिश किया हुआ में बाँट सकते हैं। धान में लगभग 70% चावल तथा 30% भूसी होती है। धान उत्पन्न करने वाले क्षेत्र में ही यह उद्योग उन्नति कर सकता है। इसलिए यह उद्योग कच्चेमाल के नजदीक ही स्थापित किया जाता है। महुआ, विसण्डा, बड़ोखर खुर्द, नरैनी, बबेरु, विकासखण्ड अच्छी किस्म का धान उत्पादन करते हैं, यें समीपस्थ चावल मिलों को कच्चे माल (धान) की आपूर्ति करते हैं।

अतर्रा उत्तर प्रदेश की सबसे बड़ी चावल मण्डी है। चित्रकूट धाम मण्डल में प्रथम चावल मिल 1950 में बांदा शहर में स्थापित की गयी इसकी स्थापना में 3.5 लाख रुपये खर्च हुए। यह 'विराट चावल और दाल मिल' के नाम से जानी जाती थी। तत्पश्चात् एक चावल मिल बांदा से 32 किमी0 पूर्व की ओर अतर्रा में खोली गयी। धीरे–धीरे अतर्रा चावल मिलों का महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया। 1990 में अतर्रा में 30 राइस मिलें कार्य कर रही थी। वर्तमान समय में (2003–04) में 30 राइस मिलों में से केवल 5 ही क्रियाशील है, इसके अतिरिक्त 20 मिनी राइस प्लांट भी चल रहे हैं। एक दशक से चावल उद्योग निरन्तर टूटता जा रहा है। यहाँ चलने वाली अंबिका राइस मिल, लखन राइस मिल, बरैल राइस मिल, सिंधी मिल, अंचत मिल, हेमना मिल, लक्ष्मी राइस मिल, गंगा राइस मिल का अस्तित्व ही समाप्त हो गया है। जब यहाँ 30 राइस मिलें चलती रहीं तो लगभग एक हजार मजदूरों को काम मिलता रहा, लेकिन अब असम, बिहार, बंगाल, और म0प्र0 में चावल आपूर्ति करने वाली अतर्रा की मंडी का चावल उद्योग मृत्यु शैय्या पर है।

अतर्रा की कुछ महत्वपूर्ण राइस मिलें या मिनी प्लान्ट्स निम्नलिखित हैं :– नारायण मार्डन राइस मिल, अतर्रा, जे0के0 राइस मिल अतर्रा, ओम राइस एण्ड दाल मिल अतर्रा, शिवम राइस मिल, शिव लघु उद्योग अतर्रा, गायत्री राइस प्लान्ट्स अतर्रा, अखिल भुवन राइस प्लान्ट्स अतर्रा, शिवहरे राइस मिल अतर्रा,

राजा राइस मिल अतर्रा, सम्राट राइस मिल अतर्रा, रामलखन राइस मिनी प्लान्ट्स अतर्रा। इस प्रकार नरैनी विकासखण्ड में 10 मिलें तथा 40 मिनी प्लान्ट्स, बड़ोखर खुर्द में 1 मिल तथा 11 मिनी प्लान्ट्स, बबेरु विकासखण्ड में 1 मिल तथा 8 मिनी प्लान्ट्स, विसण्डा में 1 मिल तथा 3 मिनीप्लान्ट्स, महुआ विकासखण्ड में 2 मिलें तथा 4 मिनीप्लान्ट्स एवं कमासिन में 2 मिनीप्लान्ट्स स्थापित हैं। मिलों की संख्या घटने के साथ मिनी राइस प्लान्ट्स की संख्या में वृद्धि हुई है। अतर्रा में 20 मिनी प्लान्ट्स है जो धान को बिना उबाले भूसी अलग करती हैं। मिनी प्लान्ट्स छोटे उद्यमियों द्वारा चलायी जा रही है, इनके साथ आटा चक्कियाँ भी लगी हुई हैं। अतर्रा की राइस मिलें तथा मिनी प्लांट्स के मालिकों ने सन् 2003–04 में 12 करोंड़ 35 लाख रु0 का चावल सरकार को तथा 6 करोड़ रुपये का बाजार में विक्रय किया।

चावल मिल (राइस मिल) में लगभग 20 लाख रु0 का पूँजी निवेश होता है, जिसमें स्थायी पूँजी 11,54000 रु0 (उत्पादक पूँजी का 57.7%) तथा कार्यशील पूँजी 84,6000 रू0 (उत्पादक पूँजी का 42.3%) होती है। सर्वाधिक व्यय प्लान्ट और मशीनरी में (27.3%) होता है, तत्पश्चात् भवन निर्माण, कच्चेमाल के भण्डारन और शुद्ध उत्पादों (तैयार माल) पर होता है। निम्नलिखित तालिका 10.6 में चावल मिल की लागत एवं उससे लाभ का विश्लेषण दर्शाया गया है:–

तालिका संख्या 10.6

चावल मिल में लगी पूँजी की संरचना

क्रसं0	मद	उत्पादक पूँजी का प्रतिशत
1	भूमि	6.3
2	भवन	23.2
3	प्लान्ट और मशीनरी	27.3
4	अन्य स्थायी सम्पत्ति	0.9
कुल स्थायी पूँजी		57.7
5	कच्चेमाल का स्टाक	14.2
6	तैयार माल का स्टाक	14.4
7	उधार बकाया	7.7
8	आपरेटिंग खर्चे	2.5
9	आकस्मिक नगदी	3.5
कुल कार्यशील पूँजी		42.3
कुल उत्पादक पूँजी		100.0%
कुल उत्पादक पूँजी निवेश		20 लाख रुपये
शुद्ध लाभ (वार्षिक)		4.2 लाख रुपये

चित्रकूट धाम मण्डल में चावल मिलों में 150 लोगों को रोजगार प्राप्त है, तथा 'मिनी प्लान्ट्स' में 300 लोगों को रोजगार प्राप्त है, क्योंकि मिलों की अपेक्षा मिनी प्लान्ट्स की संख्या अधिक है। नरैनी विकासखण्ड में सर्वाधिक (267) व्यक्ति इस उद्योग में लगे हुए हैं। सभी मिलें बांदा जनपद में स्थापित है क्योंकि नरैनी, बबेरु, बड़ोखर खुर्द विसण्डा तथा महुआ विकासखण्ड प्रमुख धान उत्पादक क्षेत्र है। बड़ी मिलों की अपेक्षा मिनी प्लान्ट्स की संख्या में वृद्धि के साथ ही साथ कर्मियों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। सन् 1975 में 84 व्यक्तियों को इस उद्योग में रोजगार प्राप्त था, जो बढ़कर सन् 1980 में 191, सन् 1990 में 265 तथा सन् 2003 450 हो गया। चावल मिल उद्योग एक मौसमीय उद्योग है, क्योंकि धान की कटाई अक्टूबर से दिसम्बर के मध्य होती है, इसलिए इसका मुख्यकाल अक्टूबर से मार्च तक होता है। इस काल में औद्योगिक इकाइयों को चावल की आपूर्ति होती रहती है। ग्रीष्म तथा वर्षा ऋतु में धान की आपूर्ति बन्द हो जाने से उत्पादन ठप्प हो जाता है तथा कर्मियों की संख्या भी कम हो जाती है। इस उद्योग में श्रमिकों की नियुक्ति नहीं की जाती है । इसमें अकुशल श्रमिक अधिकांशतः दैनिक मजदूरी पर कार्य करते हैं तथा इन्हें कम वेतन दिया जाता है। इसमें सेवा–सुरक्षा का कोई नियम नहीं है। सेवा–सुरक्षा कार्य करने की ईमानदारी पर निर्भर है।

अध्ययन क्षेत्र में चावल मिल उद्योग से सम्बन्धित कुछ समस्यायें हैं जो निम्नलिखित हैं :–

1) धान का उत्पादन मानसूनी वर्षा पर निर्भर है, यदि वर्षा कम या असामयिक हुई तो धान का उत्पादन बहुत कम होता है, जिससे कच्चेमाल की कमी हो जाती है और मिलों का उत्पादन कम हो जाता है।
2) इसमें रोजगार की कोई गारण्टी नहीं है, इसलिए कुछ समय के लिए श्रमिकों की आपूर्ति कम हो जाती है, जिससे उत्पादन प्रभावित होता है।
3) विद्युत शक्ति की अनियमित तथा कम आपूर्ति मिलों के संचालन में बाधक है। विद्युत की नियमित आर्पूति न होने से उत्पादन कम हो जाता है।
4) अन्य प्रदेशों की चावल मिलों से बढ़ती प्रतिस्पर्धा भी एक समस्या है।
5) विद्युत–बिलों में बेतहासा वृद्धि मिलों से प्राप्त होने वाले लाभ को निगल रही है।

चावल मिलों के निकट राइस ब्रान आयल निकालने की इकाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं क्योंकि इस उद्योग के लिए आवश्यक कच्चामाल धान की भूसी राइस मिलों से आसानी से प्राप्त हो जाती है।

6 लाई बनाने का उद्योग (Lai Making Industry) :–

लाई मोटे (Rought) किस्म के धान से तैयार किए हुए 'भुजिया चावल' से बनायी जाती है, जो एक सस्ता, सुपाच्य तथा स्वादिष्ट व्यंजन (नाश्ता) है। चित्रकूट धाम मण्डल में लाई बनाने का प्रमुख केन्द्र अतर्रा है। लाई बनाने वालें भड़भूजे, विशेष किस्म के धान (Rought) को निकटवर्ती गाँवों के कृषको से क्रय करके लाई तैयार करते है। तैयार माल को बाजार में विक्रय के लिए भेज दिया जाता है।

बांदा जनपद में कुल 31 इकाइयाँ अतर्रा, बांदा तथा नरैनी में लाई बनाने का कार्य कर रही है। जिनमें लगभग 165 लोग लगे हुए हैं। लाई बनाने का कार्य भड़भूजा जाति के लोग परम्परागत रुप से कर रहे हैं। ये लोग लाई बनानें में अतिकुशल होते हैं। अतर्रा में लाई बनाने का उद्योग तीन दशकों से चल रहा है। 1975 में यहाँ केवल 12 इकाइयाँ थीं, जिनकी संख्या बढ़कर सन् 1980 में 16, सन् 1985 में 19,

सन् 1990 में 21, सन् 1995 में 22 तथा वर्तमान (2003–04) में 26 इकाइयॉ तक हो गयी हैं। लाई बनाने वाली इकाइयों की वृद्धि के साथ ही साथ इसमें काम करने वाले व्यक्तियों की संख्या में भी वृद्वि हुई है। 1975 में 56 व्यक्ति इस उद्योग में लगे थे, जो 1985 में बढ़कर 96 व्यक्ति हो गये। 1990 में 107 व्यक्ति तथा 2003 में 195 व्यक्तियों को इस उद्योग में रोजगार प्राप्त है। इस उद्योग में कुल उत्पादक पूँजी 6.2 लाख रू0 लगी हुई है। लाई बनाने वाली सभी इकाइयाँ कुल 13 लाख रुपये की लाई का उत्पादन करती हैं।

अतर्रा कस्बे में इस उद्योग के संकेन्द्रण के निम्नलिखित मुख्य कारण है :–

1) कच्चेमाल की आसानी से उपलब्धता,
2) रेल तथा सड़क यातायात की सुविधाएँ,
3) लाई बनाने की विधि का परम्परागत ज्ञान और अनुभव,
4) स्थानीय खपत तथा
5) चावल मिलों से ईधन (भूसी) की सुलभता।

इस उद्योग की कुछ समस्यायें भी हैं – प्रमुख समस्या 'पर्यावरण–प्रदूषण' है क्योंकि इस उद्योग में धुँआ, राख, वातावरण में फैलता रहता है, जो काम करने वाले व्यक्तियों के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। धूल, राख, और धुएँ से युक्त वातावरण में निरन्तर काम करने से लोगों को विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ हो जाती हैं जैसे– क्षय रोग (T.B.) दमा (Asthma) कास (Bronchites) तथा अन्य फेफड़े की बीमारियाँ। कुछ समय के लिए ये लोग चर्मरोगों से भी पीड़ित हो जाते हैं तथा इस उद्योग के प्रदूषण से निकट रहने वाले लोग भी प्रभावित होते हैं। इसलिए लाई बनाने वाली इकाइयाँ कस्बे के बाहर स्थापित होना चाहिए, जिससे अन्य लोग इसके प्रदूषण के दुष्प्रभाव से प्रभावित न हों सके।

7 बेकरी और बिस्कुट बनाने का उद्योग (Bakery and Biscuit Making Industry)

बेकरी के अन्तर्गत ब्रेड, कतरे (स्लाइर्सज), सूखे कतरे (ड्राई स्लाइसेज) बन्ड्स आते हैं। यह उद्योग मुख्यतः नगरों या कस्बों में स्थापित है। महाराष्ट्र और प0 बंगाल बेकरी उद्योग में अग्रणी हैं। मुम्बई और कोलकाता इस उद्योग के प्रधान केन्द्र हैं। उत्तर प्रदेश के शहरों में भी अच्छी बेकरी बनाने वाली औद्योगिक इकाइयाँ स्थापित हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में बेकरी और बिस्कुट बनाने 10 इकाइयाँ क्रियाशील हैं। 2 हमीरपुर में, 3 महोबा में, 4 बांदा में तथा 1 इकाई मऊ (चित्रकूट) में कार्य कर रहीं हैं। ये सभी छोटी इकाइयाँ हैं, जो उत्पाद की स्थानीय आपूर्ति करती हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में बेकरी और बिस्कुट बनाने वाली महत्वपूर्ण इकाइयाँ निम्नलिखित है– हमीरपुर बेकरी अमर शहीद पटकाना, हमीरपुर, शालू बेकरी हमीरपुर, अमर बेकरी बजरिया, महोबा, हरिहर बेकरी अमर शहीद ऊदल चौक महोबा, पूनम बेकरी इन्डस्ट्रीज महोबा, कामता बेकरी चिल्ला बांदा, अमर बिस्कुट और बेकरी बांदा, महेन्द्र बेकरी गूलर नाका, बांदा, केशरवानी बेकरी मऊ बाजार चित्रकूट ।

बेकरी एवं बिस्कुट उद्योग (हैवी प्लान्ट्स) में 30 लाख रु0 का पूँजी निवेश होता है, जिसमें 73.0% स्थायी पूँजी तथा 27.0% कार्यशील पूँजी है। प्लान्ट और मशीनरी तथा भवन में उत्पादक पूँजी का सबसे अधिक भाग व्यय होता है। निम्नलिखित तालिका सं0 10.7 में बेकरी और बिस्कुट उद्योग में पूँजी निवेश (उत्पादक पूँजी) का विश्लेषण किया गया है:–

तालिका संख्या 10.7

बेकरी और बिस्कुट उद्योग में पूँजी निवेश का विश्लेषण :–

क्रसं0	मद	उत्पादक पूँजी का प्रतिशत
1	भूमि	4.5
2	भवन	20.5
3	प्लान्ट और मशीनरी	42.5
4	अन्य स्थायी सम्पत्ति	5.5
कुल स्थायी पूँजी		73.0
5	कच्चेमाल का स्टाक	15.5
6	तैयार माल का स्टाक	3.8
7	उधार बकाया	2.0
8	आपरेटिंग खर्चे	2.5
9	आकस्मिक नगदी	3.2
कुल कार्यशील पूँजी		27.0
कुल उत्पादक पूँजी		100.0

'मिनी बेकरी प्लान्ट्स' इकाई में कुल पूँजी निवेश 2.40 लाख रु0 होता है। जिसमें स्थायी पूँजी 1.60 लाख रु0 तथा कार्यशील पूँजी 0.80 लाख रु0 (1 से 2 माह तक) होती है। इसमें मालिक को 115.00 रु0 मासिक लाभ होता है।

चित्रकूट धाम मण्डल में बेकरी उद्योग में 41 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त हुआ है। इस उद्योग में कुल 24.60 लाख रुपये की पूँजी लगी हुई है। इस उद्योग के मुख्य उत्पादन– ब्रेड, कतरे (स्लाइसेज), सूखे कतरे (ड्राई स्लाईसेज) बन्ड्स तथा बिस्कुट आदि हैं। यह उद्योग एक मौसमी (सीजनल) उद्योग है। इसके उत्पाद शीघ्र सड़ने या खराब होने वाले होते हैं। अतः गर्मी तथा वर्षा ऋतु में बेकरी का उत्पादन कम हो जाता है। यह मुख्यतः जाड़े की ऋतु का उद्यम होता है। मौसम के अनुसार इसका उत्पादन घटता–बढ़ता रहता है और उत्पादन के आधार पर आपूर्ति भी सीमित हो जाती है। ग्रीष्म तथा वर्षा ऋतु में इसकी आपूर्ति सीमित एवं स्थानीय हो जाती है।

8 गुड़ तथा खाँडसारी उद्योग (Gur and Khandsari Making Industry) :–

गन्ना से सम्बन्धित होने के कारण यह कृषकों का प्रमुख कुटीर उद्योग है। प्रदेश में अनेक चीनी मिलों के स्थापित हो जाने पर भी यह उद्योग अपना विशिष्ट स्थान रखता है। गन्ना तैयार होने पर किसान उसे कोल्हू में पेरता है और उसके रस को कड़ाहों में पका कर गुड़, भेली, और खाँडसारी बनाता है।

चित्रकूट धाम मण्डल में कई दशकों से गन्ना उगाया जा रहा है, इसलिए यहाँ के कृषक गुड़ बनाने में दक्ष हैं। गुड़ बनाने का उद्योग मुख्यतः गाँवों में होता है इसके कई कारण हैं:–

1) यह एक परम्परागत कला है, जो ग्रामीण अनुभवी कृषकों द्वारा किया जाता है।
2) कृषक अपना निजी कोल्हू (गन्ना पेरने की मशीन) रखते हैं, जिससे गन्ना पेरते हैं।
3) कृषक कोल्हू को आसानी से खरीद सकते हैं। इसकी पेराई में बहुत कम खर्च आता है।
4) गन्ने की पेराई में विशेष तकनीक की आवश्यकता नहीं होती है।
5) गन्ने के रस को कढ़ाहों में पकाने के लिए ईंधन के रुप में गन्ने की छोई का प्रयोग किया जाता है, जिससे ईंधन की कोई समस्या नहीं होती है।

चित्रकूट धाम मण्डल में कुल 235060.01 मीट्रिकटन (2000–01 में) गन्ने का उत्पादन होता है। सर्वाधिक गन्ने का उत्पादन (14878.64 मिट्रिकटन) हमीरपुर जनपद में होता है। चित्रकूट धाम मण्डल में कुल गन्ना उत्पादन का एक तिहाई भाग चूसने, रस पीने तथा बीज में उपयोग किया जाता है। शेष दो तिहाई भाग का गुड़ बनाया जाता है। चित्रकूट धाम मण्डल में कुल 165 गुड़ बनाने वाली इकाइयाँ क्रियाशील हैं, जिसमें हमीरपुर जनपद में 101 इकाइयाँ, महोबा में 30 इकाइयाँ, बाँदा जनपद में 17 इकाइयाँ तथा चित्रकूट जनपद में 17 इकाइयाँ हैं। विकासखण्डवार सर्वाधिक इकाइयाँ राठ में (76) हैं, इसके अतिरिक्त गोहाण्ड में 14, मुस्करा में 6, सरीला में 5, पनवाड़ी में 9, जैतपुर में 9, चरखारी में 5, कबरई में 7, नरैनी में 8, महुआ में 5, बड़ोखर खुर्द में 4, कर्वी में 6, पहाड़ी में 6 तथा मानिकपुर विकासखण्ड में 5 इकाइयाँ क्रियाशील हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में गुड़ तथा खाड़सारी बनाने वाली इकाइयों में 496 लोगों को रोजगार प्राप्त है। हमीरपुर जनपद में 303, महोबा में 90, बांदा जनपद में 51 तथा चित्रकूट जनपद में 51 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है। यह एक मौसमी उद्योग है, क्योंकि गुड़ बनाने का कार्य फरवरी तथा मार्च में किया जाता है। मण्डल में 2003–04 में 13670 मीट्रिकटन गुड़ का उत्पादन हुआ। गन्ने के रस से गुड़ के अलावा 'राब' भी बनायी जाती है। राब एक अर्धठोस उत्पाद है जो गन्ने के रस को हल्के तापमान पर उबालकर तैयार की जाती है।[1] गुड़ एक सस्ता उत्पाद है, जो अधिकांशतः ग्रामीण जनता द्वारा उपभोग किया जाता है। शेष उत्पाद को कृषक समीपस्थ बाजार में बेंच देते हैं।

9 मसाला पिसाई उद्योग (Spices Grinding Industry) :–

मसाले का उपयोग सब्जियाँ बनाने, मीट बनाने तथा अचार बनाने आदि में होता है। मसालों के अन्तर्गत हल्दी, लालमिर्च, अजवाइन, कबाबचिनी, कालीमिर्च, छड़ीला (Stone flower) जायफल जावित्री, जीरा, तेजपात, दालचीनी, लौंग, इलायची (छोटी), डोडा (बड़ी इलायची) सोंठ, सौंफ, हर्र, हींग, धनिया आदि आते हैं। इनको मसाला पीसने वाली चक्कियों में पीसकर उनका चूर्ण (पाउडर) बनाकर पैकिंग करके शहरी तथा

ग्रामीण क्षेत्रों में आपूर्ति की जाती है। हल्दी, लालमिर्च, जीरा, सोंठ, सौंफ, धनिया आदि का उत्पादन मण्डल में भी होता है। अन्य मसालों का दूसरे प्रान्तों से आयात करना पड़ता है। केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक प्रमुख मसाला उत्पादन राज्य हैं।

मसाले सिल–बट्टे से पीसकर सब्जी आदि में उपयोग किया जाते है। सिल–बट्टे से मसाला पीसने में अधिक श्रम करना पड़ता है। इसलिए अब मसाला चक्कियों में पीसा जाता है, जो विद्युतशक्ति से चलती हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में 42 इकाइयाँ मसाला पीसने के कार्य में लगी हुई है। सर्वाधिक इकाइयाँ हमीरपुर जनपद में 17 तथा सबसे कम इकाइयाँ चित्रकूट जनपद में 7 हैं। इसके अतिरिक्त बाँदा जनपद में 10 इकाइयाँ तथा महोबा जनपद में 8 इकाइयाँ मसाला–उद्योग में लगी हैं। (तालिका सं0 10.8) हमीरपुर, महोबा, राठ, बांदा तथा कर्वी (चित्रकूट) इस उद्योग के प्रमुख केन्द्र हैं। प्रमुख मसाला पीसने की इकाइयाँ निम्नलिखित हैः–

गोहाई मसाला उद्योग कुरारा, हमीरपुर, कुन्ती मसाला उद्योग, रमेड़ी, हमीरपुर, सुनीला मसाला उद्योग मन्झूपुर हमीरपुर, रवी मसाला उद्योग सुभाष बाजार हमीरपुर, प्रदीप मसाला उद्योग विवेकनगर, हमीरपुर, प्रतिमा द्विवेदी मसाला उद्योग रमेड़ी हमीरपुर, गोहाई मसाला उद्योग हनुमान गढ़ी हमीरपुर, राजेश कुमार त्रिपाठी मसाला पिसाई उद्योग हमीरपुर, मनोंज कुमार धुरिया मसाला उद्योग सूफीगंज हमीरपुर, नरेन्द्र कुमार मसाला उद्योग जारीगंज महोबा, शिवममसाला उद्योग महोबा, रवी मसाला उद्योग बजरिया महोबा, गोपी मसाला पिसाई केन्द्र महोबा, राजगढ़ मसाला उद्योग स्टेशन रोड़ महोबा, चित्रकूट गृह उद्योग पुरानी बाजार कर्वी, चित्रकूट, रवि मसाला उद्योग तरौंहा, चित्रकूट, खरे मसाला पिसाई केन्द्र शोभा सिंह का पुरवा कर्वी, पुनीत मसाला उद्योग पुरानी बाजार कर्वी, आनन्द कुमार मसाला उद्योग अतर्रा, प्रभा कुटीर मसाला केन्द्र बबेरु, सपना लघु उद्योग रामलीला मैदान बांदा, सूरज मसाला सब्जी मण्डी बांदा है। कुछ इकाइयाँ मसाला पैकिंग करती है और स्थानीय या बाहर के व्यापारियों को विक्रय करती है। कुछ व्यापारी मसाला पीसने वाली इकाइयों से मसाला–पाउडर क्रय करके बण्डल (पैकेट्स) बनाते हैं। पैकेट बनाने के बाद उनकी आपूर्ति कस्बों में दुकानदारों को करते हैं।

मसाला पीसने की छोटी इकाई स्थापित करने में लगभग 1.12 लाख रु0 की लागत आती है। जिसमें 53000 रुपये 'स्थायी पूँजी' तथा 59,000 रुपये कार्यशील पूँजी होती है।

चित्रकूट धाम मण्डल की मसाला पीसने की 42 इकाइयाँ 154 लोगों को रोजगार प्रदान कर रही हैं तथा लगभग 21.28 लाख रुपये के मसाले का मासिक उत्पादन करती हैं। इस उद्योग में कुल पूँजी 47.04 लाख रुपये लगी हुई है।

तालिका सं0 10.8

चित्रकूट धाम मण्डल में मसाला पीसने की इकाइयों का वितरण – 2003–04

क्रसं0	जनपद	औद्योगिक इकाइयों की संख्या	रोजगार सृजन
1	हमीरपुर	17	61
2	महोबा	8	29
3	बांदा	10	38
4	चित्रकूट	7	26
मण्डल–योग		42	154

स्रोत : कार्यालय, महा प्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र– हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट 2003–04।

10 पान प्रोसेसिंग उद्योग (Betel Processing Industry)

पान चित्रकूट धाम मण्डल में महोबा तथा नरैनी तहसील (सिहुड़ा शेरपुर गाँव) में उत्पन्न किया जाता है। इसे स्थानीय उपभोग के साथ–साथ प्रदेश के अन्य जनपदों में भी भेजा जाता है। इसके निर्यात में व्यक्तिगत प्रबन्धन की आवश्यकता होती है। पान की पत्तियों को खेत से तोड़कर घर लाते हैं और निजी प्रबन्धकों के द्वारा गिनकर व्यवस्थित करते हैं। इसके बाद पान पत्तियों को बड़ी टोकरी में घास बिछाकर रखते हैं। टोकरी भर जाने पर उसे ढक्कन से बन्द करके सही तरीके से कसकर बाँध देते हैं। इस प्रकार व्यवस्थित रखी हुई, पान की पत्तियाँ खराब नहीं होती। इन पान भरी टोकरियों को माँग वाले स्थानों में ट्रकों, बसों में रेलगाड़ियों से भेज दिया जाता है। पान की पत्तियाँ शीघ्र खराब हो जाती हैं इसलिए गीली (नम) घास पर रखकर इसकी सुरक्षा करते हैं। अधिक दिन तक डलियों में पान बन्द रहने पर पान खराब हो जाता है।

चित्रकूट धाम मण्डल में महोबा तथा नरैनी तहसील में लगभग 4500 से अधिक लोग पान की खेती और पान प्रोसेसिंग (Processing) में लगे हुए हैं। इसके लिए अधिक संख्या में अनुभवी श्रमिकों की आवश्यकता होती है। महोबा का पान सम्पूर्ण देश में प्रसिद्ध है, इसलिए इसकी माँग और पूर्ति बहुत ही विस्तृत है। महोबा में 'पान अनुसंधान केन्द्र' स्थापित है, जो पान के कृषकों को वैज्ञानिक कृषि का प्रशिक्षण देता है।

11 पान मसाला एवं गुटका उद्योग (Pan Masala and Gutka Industry) :–

पान–सुपाड़ी का सेवन लोग प्राचीन काल से करते चले आ रहे हैं। पहले थैली (पर्स) रखने का रिवाज था जिसमें सुपाड़ी, लौंग, इलायची, तम्बाकू, कत्था, चूना तथा पान रखते थे। पान मसाला एवं गुटका बनाने का उद्योग लगभग 15 वर्षो से प्रारम्भ हुआ है और अब गुटके तथा पान मसाले का उपयोग गाँवों तथा शहरों में भी तेजी से बढ़ रहा है।

पान–मसाला एवं गुटका उद्योग का कच्चामाल सुपाड़ी, लौंग, इलायची, तम्बाकू, कत्था तथा अन्य रासायनिक क्षारीय पदार्थ हैं। ये सभी कच्चे माल अन्य राज्यों से आयात किए जाते हैं, केवल तम्बाकू का उत्पादन इस क्षेत्र में होता है। सुपाड़ी को काटकर लौंग इलायची, कत्था, तथा तम्बाकू आदि मिलाकर

FIG. 10.3
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
AGRO BASED INDUSTRIES
2003-04
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
KURARA
SUMERPUR
JASPURA
TINDWARI
BABERU
KAMASIN
PAHARI
RAMNAGAR
MAU
SARILA
MUSKARA
MAUDAHA
RATH
GOHAND
CHARKHARI
BAROKHAR KHURD
BISANDA
MAHUAL
KARWI
PANWARI
KABRAI
JAITPUR
NARAINI
MANIKPUR
TAILORING AND EMBROIDERY INDUSTRY
NAMKEEN AND DALMOTH INDUSTRY
PAN MASALA AND GUTKHA INDUSTRY
FRUIT VEGITABLE PRESERVATION INDUSTRY
NO. OF WORKERS
200
100
50
25
CIRCLE REPESENT
AVERAGE DAILY NO. OF
WORKERS EMPLOYED

पाउच में पैकिंग, मालाओं के रुप में की जाती है और फिर उसके बण्डल बनाकर बाजार में विक्रय के लिए भेज दिया जाता है।

पान–मसाला एवं गुटका उद्योग में चित्रकूट धाम मण्डल में (2003–04 में) 26 इकाइयाँ कार्य कर रही हैं। प्रमुख केन्द्र बांदा है जहाँ 9 इकाइयाँ इस उद्योग में लगी है। इसके अतिरिक्त राठ, अतर्रा, भरुवासुमेरपुर, महोबा, तथा कर्वी (चित्रकूट) अन्य केन्द्र हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में पान एवं गुटका उद्योग की प्रमुख इकाइयाँ– विवेक गुटका उद्योग बांदा (60 नं0 देशी गुटका), श्री विराट ओवर सीज (प्रा0) लिमिटेड बांदा (श्री चन्द्रकमल देशी गुटका), साई इण्टरप्राइजेज भरुवासुमेरपुर (पण्डित देशी गुटका), संगम इण्टरप्राइजेज मर्दननाका बांदा (भारत देशी गुटका) एम0ए0 प्रोडक्ट्स बांदा (ऊँ, 132 नं0, तथा ताल देशी गुटका), बद्री गुटका राज कार्पोरेशन शारदानगर, अतर्रा, बांदा, त्रिपाठी गुटका उद्योग राठ, दीपा गुटका भण्डार मियानपुरा राठ, भोला गुटका उद्योग बांदा, तथा लक्ष्मी गुटका उद्योग बल्दाऊगंज कर्वी (चित्रकूट) है। इस उद्योग में लगभग 2.40 लाख रु0 का पूँजी निवेश होता है, जिसमें स्थायी पूँजी 1.40 लाख रु0 तथा कार्यशील पूँजी 1.00 लाख रुपये है।

इस उद्योग में चित्रकूट धाम मण्डल में 108 लोग लगे हुए हैं। औद्योगिक इकाइयों में वृद्धि के साथ–साथ रोजगार मे लगे व्यक्तियो की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। इस उद्योग का विकास समाज के बदलते परिवेश, तलब की बढती प्रवृत्ति के कारण निरन्तर हो रहा हैं।

12 नमकीन एवं दालमोठ उद्योग (Namakeen and Dalmoth Industry)

नमकीन एवं दालमोट नाश्ते का महत्वपूर्ण अंग है। यह चना–बेसन, मूँग, मसूर, मूँगफली, काजू आदि से तैयार की जाती है। इस उद्योग का कच्चामाल ग्रामीण क्षेत्रों से आसानी से उपलब्ध हो जाता है। जो पदार्थ उपलब्ध नहीं होते, वे समीपस्थ बाजार से प्राप्त हो जाते है।

चित्रकूट धाम मण्डल में नमकीन एवं दालमोठ बनाने में 49 इकाइयाँ लगी हुई हैं, जिनमें 243 लोगों को रोजगार प्राप्त है। हमीरपुर में 74 , महोबा में 65, बांदा में 60 तथा चित्रकूट जनपद में 44 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है। सर्वाधिक इकाइयाँ हमीरपुर जनपद में 15 तथा न्यूनतम इकाइयाँ चित्रकूट जनपद में 9 हैं। इसके अतिरिक्त महोबा में 13 इकाइयाँ तथा बांदा जनपद में 12 इकाइयाँ इस उद्योग में लगी हुई हैं। इस उद्योग के प्रमुख केन्द्र भरुवासुमेरपुर, हमीरपुर, मौदहा, राठ, महोबा, बांदा, अतर्रा तथा कर्वी हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल की नमकीन एवं दालमोठ बनाने वाली प्रमुख इकाइयाँ, नवरंग नमकीन उद्योग जवाहर नगर सुमेरपुर, विनीत कुमार शुक्ला नमकीन उद्योग चरखारी, शैलेन्द्र सिंह चौहान नमकीन उद्योग महोबा, बादशाह नमकीन उद्योग बड़ीहाट, महोबा, चौरसिया नमकीन उद्योग कौशलपुरी बांदा, सुरेन्द्र अग्रहरी नमकीन उद्योग गोकुलपुर, शंकर बाजार कर्वी (चित्रकूट), निर्मला नमकीन उद्योग शोभा सिंह का पुरवा कर्वी चित्रकूट, कृष्ण नमकीन उद्योग, रगौली, चित्रकूट, मिलन नमकीन उद्योग तरौंहा, कर्वी (चित्रकूट), भागवत नमकीन उद्योग लोदहा, कर्वी, रमेश नमकीन उद्योग नई दुनिया कर्वी, चित्रकूट है।

चित्रकूट धाम मण्डल में इस उद्योग में कुल 100.10 लाख रुपये का पूँजी निवेश हुआ है। भूमि और भवन में 39.20 लाख रुपये, प्लान्ट और मशीनरी के 21.60 लाख रुपये तथा कार्यशील पूँजी 34.30 लाख रुपये हैं। सर्वाधिक पूँजी निवेश हमीरपुर जनपद में 30.50 लाख रुपये हुआ है तथा सबसे कम पूँजी निवेश चित्रकूट जनपद में 18.30 लाख रुपये हुआ है। (तालिका सं0 10.9)

चित्रकूट धाम मण्डल में इस उद्योग में 243 लोगों को रोजगार प्राप्त हैं। भविष्य में इस उद्योग के विकास की अधिक सम्भावनायें है, क्योंकि कच्चामाल निकट ग्रामीण क्षेत्रों से उपलब्ध हो जाता है। नमकीन की माँग न केवल शहरी क्षेत्रों में अपितु ग्रामीण क्षेत्रों में भी उत्तरोत्तर बढ़ रही है।

निम्नलिखित तालिका सं0 10.9 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार नमकीन एवं दालमोठ उद्योग की इकाइयों की संख्या, रोजगार तथा पूँजी निवेश को दर्शाया गया है।

तालिका सं0 10.9

चित्रकूट धाम मण्डल में नमकीन उद्योग इकाइयों का वितरण, रोजगार तथा पूँजी निवेश 2003–04

क्रसं0	विकासखण्ड	औद्योगिक इकाइयों की संख्या	रोजगार	भूमि और भवन (लाख रु0 में)	प्लान्ट और मशीनरी (लाख रुपये में)	कार्यशील पूँजी (लाख रुपये)	कुल निवेश लाख रु0 में
1	कुरारा	3	15	2.40	1.59	2.10	6.09
2	सुमेरपुर	4	19	3.20	2.12	2.80	8.12
3	सरीला	–	–	–	–	–	–
4	गोहाण्ड	–	–	–	–	–	–
5	राठ	5	25	4.00	2.65	3.50	10.15
6	मुस्करा	1	5	0.80	0.58	0.70	2.08
7	मौदहा	2	10	1.60	1.06	1.40	4.06
जनपद हमीरपुर		15	74	12.00	8.00	10.50	30.50
8	पनवाड़ी	2	10	1.60	1.13	1.40	4.13
9	जैतपुर	3	15	2.40	1.71	2.10	6.21
10	चरखारी	2	10	1.60	1.13	1.40	4.13
11	कबरई	6	30	4.80	3.42	4.20	12.42
जनपद महोबा		13	65	10.40	7.40	9.10	26.90
12	जसपुरा	–	–	–	–	–	–
13	तिन्दवारी	–	–	–	–	–	–
14	बड़ोखर खुर्द	7	35	5.60	3.71	4.90	14.21
15	बबेरु	2	10	1.60	1.06	1.40	4.06
16	कमासिन	–	–	–	–	–	–
17	विसण्डा	–	–	–	–	–	–
18	महुआ	–	–	–	–	–	–
19	नरैनी	3	15	2.40	1.63	2.10	6.13
जनपद बांदा		12	60	9.60	6.40	8.40	24.40
20	पहाड़ी	–	–	–	–	–	–
21	कर्वी	6	29	4.80	3.18	4.20	12.18
22	मानिकपुर	2	10	1.60	1.09	1.40	4.09
23	रामनगर	1	5	0.80	0.53	0.70	2.03
24	मऊ	–	–	–	–	–	–
जनपद चित्रकूट		9	44	7.20	4.80	6.30	18.30
मण्डल योग		49	243	39.20	26.60	34.30	100.10

स्रोत : कार्यालय, महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र– हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट, 2003–04।

13— फल सब्जी संरक्षण उद्योग (Fruit-Vegitable Preservation Industry) :-

फल सब्जी संरक्षण उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिए प्रत्येक जनपद में राजकीय सामुदायिक फल संरक्षण एवं प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किये गये हैं, जिनमें फल संरक्षण हेतु तकनीकी सहायता प्रदान की जाती है। केन्द्रों पर पन्द्रह दिवसीय फल संरक्षण प्रशिक्षण की भी सुविधा उपलब्ध है। शीतकालीन, ग्रीष्मकालीन एवं वर्षाकालीन फल एवं सब्जी संरक्षण का तकनीकी ज्ञान कराया जाता है।

इस उद्योग के अन्तर्गत अचार, चटनी, मुरब्बा, च्यवनप्राश, जैली, शर्बत आदि का उत्पादन किया जाता है। इनका मुख्य कच्चामाल -- टमाटर, अमरुद, संतरा,, नींबू, मटर, गाजर, शलजम, प्याज, फूलगोभी, ऑवला, आम, कटहल, लीची, पपीता, बादाम, जामुन, सेब, अनन्नास, सेब, करौंदा, इमली, बेल, कैथा, अदरक, मिर्च, खाद्यतेल, विभिन्न प्रकार के मसाले एवं रसायन है। टमाटर, आम से चटनी तथा जूस, नींबू, आम, ऑवला, कटहल, आम, सेब, गाजर, आदि से मुरब्बा, अमरुद, करौंदा, सेब आदि से जैम एवं जैली तैयार की जाती है।

चित्रकूट–धाम मण्डल में फल–सब्जी संरक्षण उद्योग की कुल 11 इकाइयाँ हैं। इनमें 4 हमीरपुर जनपद में, 2 महोबा जनपद में , 3 बांदा जनपद में तथा 2 चित्रकूट जनपद में हैं। मण्डल की प्रमुख कार्यशील इकाइयाँ निम्नलिखित है :– फल प्रशोधन इकाई वी0डी0जी0 विकास संस्थान कुरारा हमीरपुर, फल संरक्षण इकाई, रविकान्त पुरवार सुभाष बाजार, हमीरपुर, फल संरक्षण इकाई प्रदीप सक्सेना किंग रोड हमीरपुर, सूरज प्रकाश गुप्त, पेय व अचार उद्योग मुस्करा, हमीरपुर, प्रेमसिंह फल प्रशोधन उद्योग बड़ोखर खुर्द, बांदा।

हमीरपुर जनपद में फल प्रसोधन इकाई वी0डी0जी0 विकास संस्थान कुरारा, हमीरपुर, ओशन अचार का उत्पादन कर रहा है। इसका बाजार हमीरपुर महोबा तथा जालौन जनपदों तक सीमित है। इस इकाई में 15 लोगों को रोजगार मिला हुआ है। यह इकाई 425 टन ओशन ब्रांड अचार का वार्षिक उत्पादन करती है।

बांदा जनपद में स्थित प्रेम सिंह फल प्रशोधन उद्योग बड़ोखर खुर्द, बांदा इकाई के उत्पाद विदेशों में भी प्रसिद्ध है, इसके प्रमुख उत्पाद आँवले का सूखा मुरब्बा, रसीला मुरब्बा, अमरुद जैली, गुलाब शरबत, च्यवनप्राश, अचार, तथा दलिया है।

सूखा मुरब्बा देश ही नहीं विश्व का सबसे पहला अनोखा उत्पाद है। इस इकाई में 52 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है। इन उत्पादों की आपूर्ति चित्रकूट, हमीरपुर, महोबा, फतेहपुर, भोपाल, रामपुर, कोरबा जनपदों तक अधिक होती है।

उद्यान एवं फल उपयोग विभाग उ0प्र0 के प्रसार खण्ड के अन्तर्गत प्रत्येक जनपद में स्थित राजकीय सामुदायिक फल संरक्षण केन्द्रों पर घरेलू उपयोग हेतु विभिन्न फल–सब्जी पदार्थों को बनाने की सुविधा प्रदान की जाती है।

14 हथकरघा उद्योग (Handloom Industry) :–

हथकरघा एक महत्वपूर्ण लघु उद्योग है। चित्रकूट धाम मण्डल में सूत कातने एवं कपड़े बुनने का कार्य प्राचीनकाल से हथकरघे के रुप में उन्नतिशील था। अठारहवीं शताब्दी के दौरान बुंदेलखण्ड प्रदेश जुलाहों के द्वारा उत्तम कपड़ा बनाने के लिए प्रसिद्ध था। कपड़ों के डिजायन एवं ठप्पे विशेष महत्वपूर्ण थे। ये जुलाहे कपड़ा बनाने के लिए इस प्रदेश से ग्वालियर स्थानान्तरित हो गये। वे बहुत सुन्दर कपड़ा बनाने में दक्ष थे। झाँसी जनपद के गजेटियर के अनुसार 80 हजार रुपये के कपड़े दूर के स्थानों को निर्यात कर दिये जाते थे।[3] 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में बांदा जनपद हाँथ से बने कपड़ों के लिए प्रसिद्व था। बांदा शहर का 'गाजी' मुख्य उत्पादक था। जिसके बनाये कपड़े सुन्दर डिजायन छपी होने के कारण बहुत सुन्दर लगते थे। यहाँ के उत्पादन को उत्तर प्रदेश के बड़े शहरों जैसे– बनारस, बरेली, हाथरस, तथा अन्य राज्यों को निर्यात किया जाता था। *इस प्रकार बुन्देलखण्ड में हथकरघा उद्योग की परम्परागत पृष्ठभूमि रही है। इस उद्योग द्वारा निर्मित 'चन्देरी' तथा 'महेश्वरी' साड़ियों से अच्छा लाभ कमाया गया और इसकी अच्छी ख्याति फैली।* गाँधी जी के स्वदेशी एवं चर्खा आन्दोलन ने इस उद्योग में जान फूँक दी। अम्बर चर्खा के आविष्कार से इसकी उत्पादन क्षमता बहुत बढ़ गई। सरकारी संरक्षण प्राप्त करने के कारण इसकी उन्नति तीव्र गति से हो रही है। इसकी उन्नति में उत्तर प्रदेश हथकरघा निगम और उ0प्र0 खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड का महत्वपूर्ण हाथ है। इसके अलावा भारत सरकार ने दीनदयाल हथकरघा प्रोत्साहन योजना और अम्बेडकर हस्तशिल्प योजना शुरु की है और हाल ही में राष्ट्रीय कपड़ा डिजायन केन्द्र भी स्थापित किया है।

चित्रकूट धाम मण्डल में हथकरघा उद्योग की 375 इकाइयाँ क्रियाशील हैं। जिसमें लगभग 1903 बुनकर इस उद्योग में कार्यरत हैं। 25 इकाइयाँ औद्योगिक सहकारी समितियों द्वारा कार्यशील हैं। 348 इकाइयाँ व्यक्तिगत उद्योग पतियों द्वारा तथा 2 इकाइयाँ पंजीकृत संस्थाओं द्वारा चलायी जा रही है। निम्नलिखित तालिका सं0 10.10 में चित्रकूट धाम मण्डल में विभिन्न प्रकार के संस्थाओं के अधीन कार्यशील हथकरघा उद्योग की इकाइयों की संख्या तथा उनमें कार्यरत व्यक्तियों की संख्या को दर्शाया गया है।

तालिका सं0 10.10

चित्रकूट धाम मण्डल में हथकरघा उद्योग की कार्यशील इकाइयों की संख्या तथा कार्यरत व्यक्ति, 2001–2002

क्रसं0	जनपद	औद्योगिक सहकारी समीतियों	पंजीकृत संस्थाओं द्वारा	व्यक्तिगत उद्योग पत्तियों द्वारा	कुल योग	कार्यरत व्यक्तियों की संख्या
1	हमीरपुर	7	–	171	178	824
2	महोबा	8	–	175	183	860
3	बांदा	10	2	2	14	219
4	चित्रकूट	–	–	–	–	–
मण्डल योग		25	2	348	375	1903

स्रोत :– जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें – 2002

FIG. 10.4
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
AGRO-BASED INDUSTRIES
2003-04
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
REDYMADE GARMENTS INDUSTRY
HANDLOOM INDUSTRY
KHADI CLOTH MAKING INDUSTRY
DURRI AND CARPET WEAVING INDUSTRY
NO. OF WORKERS
200
100
50
25
CIRCLES REPRESENT AVERAGE DAILY NO. OF WORKERS EMPLOYED
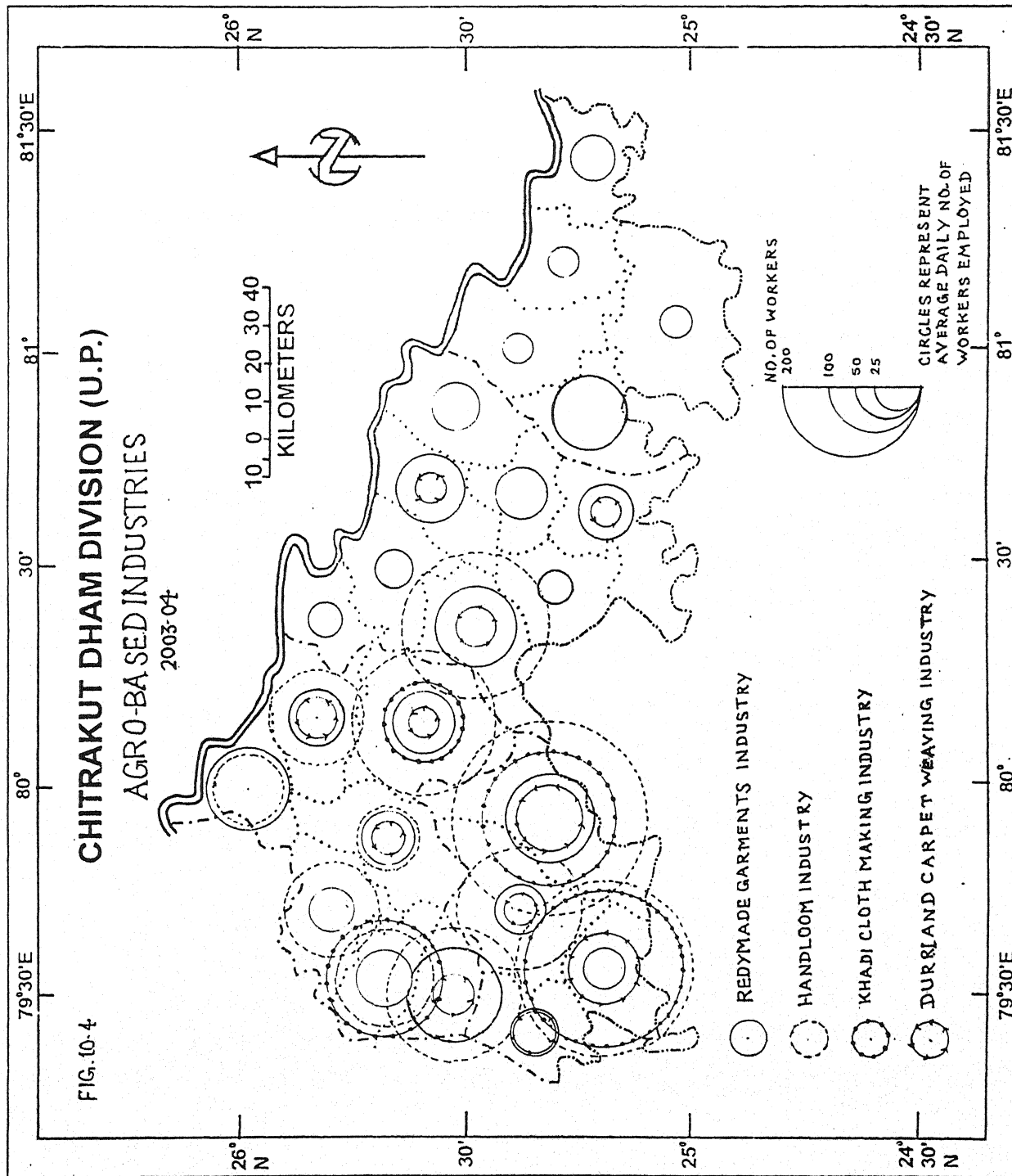
कुल 375 इकाईयों में से 183 महोबा तथा 178 इकाइयाँ हमीरपुर जनपद में है। हथकरघा उद्योग के प्रमुख केन्द्र– हमीरपुर जपनद के गहरौली, सरीला, राठ, इचौली, लोदीपुर–निवादा, कुस्मरा, मगरौठ, छानी तथा भमई ग्राम, महोबा जनपद के बेलाताल, कुलपहाड़, चरखारी, महोबा, तथा बांदा जनपद के बांदा, खपटिहा, तिंदवारी, गौरीखाँपुर तथा पपरेंदा हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में हथकरघा उद्योग के अन्तर्गत कुल पूँजी निवेश 90.24 लाख हुआ है। सर्वाधिक हमीरपुर जनपद में 38.32 लाख रुपये, महोबा जनपद में 37.44 लाख रुपये तथा बांदा जनपद में 14.48 लाख रुपये हुआ। निम्नलिखित तालिका सं0 10.11 में चित्रकूट धाम मण्डल में हथकरघा उद्योग के अन्तर्गत पूँजी निवेश का विवरण दर्शाया गया है।

तालिका सं0 10.11

चित्रकूट धाम मण्डल में हथकरघा उद्योग के अन्तर्गत पूँजी निवेश (लाख रुपये में)–2001–02

क्रसं0	जनपद	भूमि तथा भवन	प्लान्ट और मशीनरी	कार्यशील पूँजी	कुल योग (उत्पादक पूँजी)
1	हमीरपुर	8.36	6.52	23.44	38.32
2	महोबा	6.00	6.88	24.56	37.44
3	बांदा	5.68	2.16	6.64	14.48
4	चित्रकूट	–	–	–	–
मण्डल योग		20.04	15.56	54.64	90.24

स्रोत :– कार्यालय, महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र, हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट

रोजगार की दृष्टि से हथकरघा उद्योग का विशेष महत्व है। चित्रकूट मण्डल में 1903 व्यक्ति इस उद्योग में लगे हुए हैं। महोबा में 860, हमीरपुर में 824, तथा बांदा जनपद में 219 व्यक्ति इस उद्योग में कार्यरत हैं। इस उद्योग के प्रमुख उत्पाद सूती कपड़ा, शूट तथा शर्ट के लिए टेरीकाट कपड़ा गाढ़ा, गमछा, दरियाँ आदि है।

चित्रकूट धाम मण्डल में पूँजी का अभाव इस उद्योग के विकास में बाधक है। बुनकरों की 'सहकारी समितियाँ' संगठित की गयी हैं, जिन्हें 'वित्तीय संस्थायें' रियायती दर पर ऋण तथा अनुदान प्रदान करती हैं। इस योजना के अन्तर्गत सोसाइटी के सदस्यों को प्रशिक्षण प्रदान करती है। महोबा जनपद के कुस्ता (kusta) बुनकरों को उनकी कला के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

बांदा की 'उ0प्र0 राज्य सूत कताई मिल बांदा' सन् 1988 से बन्द पड़ी है। इसे पुनः चालू करने का प्रयास किया जाय, जिससे हथकरघा उद्योग को आसानी से सूतीधागा उपलब्ध हो सके। हथकरघा उद्योग का बाजार सीमित है क्योंकि इसके उत्पादों का विक्रय समीपस्थ जिलों में किया जाता है। अतः इसके उत्पादों के उचित मूल्य पर विक्रय के लिए विस्तृत बाजार की तलाश की जाय।

15 सूत कातने का उद्योग (Yarn Spining Industry) :–

चित्रकूट धाम मण्डल में सूत की कताई मध्यम स्तर की मिलों में तथा कुटीर उद्योग स्तर पर की जाती थी। लेकिन बांदा की सूत कातने की मिल के बन्द हो जाने से अब यह उद्योग कुटीर उद्योग स्तर पर सिमिट गया है। मण्डल में खादी ग्रामोद्योग बोर्ड का विभिन्न परिवारों में अम्बर चरखा (Ambar Charkha)

लोकप्रिय हुआ है। यह बोर्ड सहकारी समितियों के माध्यम से चरखा रखने वालों को रुई प्रदान करता है और सूत कातने वालों का काता हुआ सूत खरीदता है।

'यू0पी0 टेक्सटाइल कार्पोरेशन' ने बांदा से 3 किमी की दूरी पर बांदा–चिल्ला रोड के क़िनारे मवई बुजुर्ग गाँव में सूत कातने की मिल की 1983 में स्थापना की थी। 18 करोड़ रुपये से निर्मित यह मिल 70 एकड में फैली हुई है। 1983 में 745 व्यक्ति इसमें कार्य करते थे।[5]

विस्तृत क्षेत्र में फैली इस मिल में अनेकों बड़े कमरे, भण्डारकक्ष और कार्यकत्ताओं के आवास बने हुए हैं। यह मिल 18 करोड़ रुपये में निर्मित हुई थी। इसमें प्लान्ट और मशीनरी तथा कच्चेमाल की कीमत भी सम्मिलित है। यह एक मध्यम उद्योग है जो सन् 1992 में इसमें 1200 तकनीकी तथा गैर तकनीकी कार्यकत्ताओं को रोजगार प्राप्त था। घाटे के कारण सन् 1998 से यह मिल बन्द पड़ी है।

यह प्रतिदिन 10 मीट्रिकटन कपास और टेरीकाट के धागे का उत्पादन करती थी। इसकी उत्पादन क्षमता इससे भी अधिक थी। कपास की गॉठें पंजाब, हरियाणा और प्रदेश के अन्य जनपदों से मँगायी जाती थी। काते हुए धागे की पूर्ति स्थानीय हथकरघा इकाइयों, कालपी और मऊरानीपुर केन्द्रों को की जाती थी। इस मिल के रूग्ण होने से हथकरघा उद्योग भी प्रभावित हुआ है। इस मिल को पुनः संचालित करने के लिए सरकार को प्रयास करना चाहिए।

16 खादी वस्त्र बनाने का उद्योग (Khadi Cloth Making Industry) :–

खादी वस्त्र बनाने का कार्य खादी और ग्रामाद्योग बोर्ड के निरीक्षण में किया जाता है। खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड ने सन् 1947–48 में उ0प्र0 में एक कार्यक्रम चलाया था। जिसका उद्देश्य ग्रामीण जनता को रोजगार उपलब्ध कराना था। खादी वस्त्र के विकास के लिए 'अम्बर चरखा' नामक एक योजना का प्रारम्भ हुआ। इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण परिवारों को परिपूरक आय प्रदान करना है।

चित्रकूट धाम मण्डल में 1989–90 में खादी वस्त्र बनाने की 139 इकाइयाँ क्रियाशील थीं। उस समय हमीरपुर जनपद में 70 तथा बांदा जनपद में 69 इकाइयाँ थी। सन् 2003–04 में खादी वस्त्र बनाने की क्रियाशील इकाइयों की संख्या बढ़कर 220 हो गयी। हमीरपुर तथा महोबा जनपद में क्रमशः 75 तथा 145 इकाइयाँ कार्यरत हैं। हमीरपुर जनपद में मगरौठ (गौहाण्ड विकासखण्ड) में 45 इकाइयाँ तथा मौदहा विकासखण्ड में 25 इकाइयाँ कार्य कर रही हैं। महोबा जनपद में कुलपहाड़ तथा बेलाताल (जैतपुर) में 95, महोबा (कबरई विकासखण्ड) में 55 इकाइयाँ कार्य कर रही है। इस प्रकार मगरौठ, कुलपहाड़ बेलाताल तथा महोबा खादी वस्त्र बनाने के प्रमुख केन्द्र हैं। यह एक कुटीर उद्योग की तरह है। खादी का निर्माण करने वाले शिल्पकारों को खादी ग्रामोद्योग भवन कच्चामाल बहुत ही सस्ते दर में प्रदान कर रहा है। शिल्पकार विभिन्न प्रकार के कपड़े बनाते हैं, जैसे– बेडशीट, दरी, गमछा, रजाई, और तकिया की खोल, गद्दा, तकिया, शर्ट, कुर्ता तथा पायजामा के लिए कपड़ा। शिल्पकार अपना उत्पादित माल 'खादी ग्रामोद्योग भवन' में विक्रय करते हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल में इस उद्योग में वर्तमान समय में 675 व्यक्ति कार्यरत हैं। गोहाण्ड विकासखण्ड में 135 व्यक्ति, मौदहा विकासखण्ड में 75 व्यक्ति तथा जैतपुर विकासखण्ड में 285 व्यक्ति, तथा कबरई विकासखण्ड में 186 व्यक्ति इस उद्योग में व्यक्ति कार्यरत हैं। (मानचित्र सं0 10.4) सन् 1989–90 में इस उद्योग में 532 व्यक्ति कार्य कर रहे थे, जो सन् 2003–04 में यह संख्या बढ़कर 675 हो गयी। अब यह उद्योग कुछ समस्याओं के कारण सीमित क्षेत्र में सिमट गया है। इस उद्योग की प्रमुख समस्यायें निम्नलिखित हैं–

1) कपड़ों की मिलों से कड़ी प्रतिस्पर्धा,
2) चरखे को आधुनिक बनाने की समस्या,
3) पूँजी की अनुपलब्धता,
4) कच्चेमाल की कमी,
5) यथोचित मूल्य का न मिलना एवं
6) शिल्पकारों का वेतन कम होना।

17 दरी, गलीचा तथा कालीन बुनने का उद्योग (Durri and carpet wearing Industry)

चित्रकूट धाम मण्डल का यह परम्परागत उद्योग है। दरी बनाने में रद्दी सूती धागे और छोटे कपड़े के टुकड़े (कतरन) प्रयोग किये जाते हैं। इस उद्योग में अधिकांशतः मुस्लिम बुनकर संलग्न हैं। कालीन निर्माण में जो धागा इस्तेमाल किया जाता है। वह काफी मजबूत होता है। रेशम के धागे का भी कालीन निर्माण में प्रयोग किया जाता है।

इस मण्डल में सन् 2003–04 में 73 इकाइयाँ दरी, गलीचे तथा कालीन तथा बुनने का कार्य कर रही है। जिसमें 192 व्यक्ति कार्यरत है। सन् 1998–90 में मण्डल में 129 इकाइयाँ दरी गलीचे तथा कालीन बनाने का कार्य कर रहीं थी। जिनमें 298 लोगों को रोजगार प्राप्त था। उस समय बांदा तथा हमीरपुर जनपद में क्रमशः 65 एवं 64 इकाइयाँ थी। इन इकाइयों की संख्या में कमी का कारण विदेशी तथा उच्च गुणवत्ता वाली दरी, गलीचों तथा कालीनों का आकर्षण है। स्थानीय माँग घटने पर बुनकर उदासीन होते गए और दूसरे रोजी रोजगार मे फँसते गये हैं। इस उद्योग के प्रमुख केन्द्र कुलपहाड़, बेलाताल, महोबा तथा बांदा है। चित्रकूट धाम मण्डल में कालीन बनाने वाली प्रमुख इकाइयाँ– मो0 बबलू कालीन उद्योग कुलपहाड़, महोबा, शेख साबिर मंसूरी कालीन उद्योग कुलपहाड़ , महोबा, जागे प्रसाद कालीन उद्योग कुलपहाड़, महोबा, पप्पू कालीन उद्योग कुलपहाड़, महोबा, मुन्ना कालीन उद्योग बेलाताल, महोबा, नूर मोहम्मद कालीन उद्योग, बेलाताल, महोबा हैं। कालीन बुनने का का यन्त्र करघा (लूम) है। धागा, स्टेपर पंजी, गुल्ला, छुरी, पेंच, एस व जंजीर लूम निर्माण के प्रमुख उपकरण हैं।

इस उद्योग में चित्रकूट धाम मण्डल में कुल पूँजी निवेश 28.80 लाख रुपये है, जिसमें भूमि और भवन पर 16.70 लाख रुपये, प्लान्ट और मशीनरी पर 4.35 लाख रुपये तथा कार्यशील पूँजी 7.75 लाख रुपये है। कोरी और जुलाहे इस उद्योग के मुख्य कार्यकर्ता है। यह उद्योग महोबा जनपद में 118, हमीरपुर जनपद में 46 तथा बांदा जनपद में 28 व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करता है। (तालिका सं0 10.13)

अध्ययन क्षेत्र में सन् 1970 में दरी और गलीचा तथा कालीन बुनने वाली इकाइयाँ 76 थी। 1980 में 115 इकाइयाँ, सन् 1989–90 में 129 इकाइयाँ थी, जो सन् 2003–04 में घटकर 73 ही रह गयी। इसी प्रकार इस उद्योग में लगे कर्मियों की संख्या सन् 1970 में 170व्यक्ति, सन् 1980 में 250 व्यक्ति तथा सन् 1989–90 में 298 तक थी, जो सन् 2003–04 में घटकर 192 हो गई। यदि वित्तीय सुविधाएँ, सस्ते मूल्य पर कच्चेमाल की पूर्ति तथा उत्पाद की गुणवत्ता को बढ़ाया जाय तो यह उद्योग उन्नति कर सकता है। कालीन की माँग अधिक होने के कारण इसके विकास की और अधिक सम्भावनायें है।

निम्नलिखित तालिका सं0 10.12 में चित्रकूट धाम मण्डल में दरी गलीचा तथा कालीन उद्योग की इकाइयों का वितरण, रोजगार तथा पूँजी विनियोजन को दर्शाया गया है।

तालिका सं0 10.12

चित्रकूट धाम मण्डल में दरी, गलीचा तथा कालीन उद्योग की इकाइयों का वितरण, रोजगार तथा पूँजी विनियोजन– 2003–04

क्रसं0	विकासखण्ड	औद्योगिक इकाइयाँ	रोजगार	भूमि और भवन (लाख रु0 में)	प्लान्ट और मशीनरी (लाख रुपये में)	कार्यशील पूँजी (लाख रुपये)	कुल विनियोजन (लाख रु0 में)
1	कुरारा	–	–	–	–	–	–
2	सुमेरपुर	7	14	1.40	0.42	0.70	2.52
3	सरीला	–	–	–	–	–	–
4	गोहाण्ड	–	–	–	–	–	–
5	राठ	7	14	1.40	0.45	0.70	2.55

6	मुस्करा	5	10	0.95	0.29	0.55	1.79
7	मौदहा	4	8	0.85	0.24	0.35	1.44
जनपद हमीरपुर		23	46	4.60	1.40	2.30	8.30
8	पनवाड़ी	8	16	1.60	0.48	0.80	2.88
9	जैतपुर	12	56	4.50	0.65	1.65	6.80
10	चरखारी	5	10	1.05	0.30	0.45	1.80
11	कबरई	11	42	2.15	0.72	1.15	4.02
जनपद महोबा		36	118	9.30	2.15	4.05	15.50
12	जसपुरा	–	–	–	–	–	–
13	तिन्दवारी	–	–	–	–	–	–
14	बडोखर खुर्द	9	18	1.80	0.50	0.90	3.20
15	बबेरु	3	6	0.60	0.18	0.30	1.08
16	कमासिन	–	–	–	–	–	–
17	विसण्डा	–	–	–	–	–	–
18	महुआ	–	–	–	–	–	–
19	नरैनी	2	4	0.40	0.12	0.20	0.72
जनपद बांदा		14	28	2.80	0.80	1.40	5.00
20	पहाड़ी	–	–	–	–	–	–
21	कर्वी	–	–	–	–	–	–
22	मानिकपुर	–	–	–	–	–	–
23	रामनगर	–	–	–	–	–	–
24	मऊ	–	–	–	–	–	–
जनपद चित्रकूट		–	–	–	–	–	–
मण्डल योग		49	243	39.20	26.60	34.30	100.10

स्रोत :– महाप्रबन्धक, कार्यालय, जिला उद्योग केन्द्र, हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट (2003–04)।

18 रेडीमेड गारमेन्ट्स उद्योग (Ready Made Garments Industry)

रेडीमेड गारमेन्ट्स उद्योग चित्रकूट धाम मण्डल का एक लोकप्रिय लघु उद्योग है। मण्डल में सिलेसिलाये वस्त्रों की माँग दिनोदिन बढ़ती जा रही है, जिससे रेडीमेड गारमेन्ट्स उद्योग की इकाइयाँ भी बढ़ रही हैं, जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ इनकी इकाइयों में भी वृद्धि हुई है। सन् 1989–90 में मण्डल में 144 इकाइयाँ थी, जो सन् 2003–04 में बढ़कर कुल 298 इकाइयाँ हो गयीं। हमीरपुर जनपद में 105, महोबा में 60, बांदा में 89 तथा बांदा–चित्रकूट जनपद में 44 इकाइयाँ हैं। सन् 1989–90 में 472 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त था। जबकि सन् 2003–04 में चित्रकूट धाम मण्डल में 789 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है।

चित्रकूट धाम मण्डल की कुछ महत्वपूर्ण रेडीमेड गारमेन्ट्स उद्योग की इकाइयाँ सरन रेडीमेड गारमेन्ट्स उद्योग हमीरपुर, मन्नूलाल रेडीमेड गारमेन्ट्स रमेड़ी हमीरपुर, राधा रेडीमेड गारमेन्ट्स रमेड़ी

हमीरुपर, हेमलता गारमेन्ट्स कुलासी कुरारा, हमीरपुर, न्यू रेडीमेड गारमेन्ट्स गुरगुज भरुवासुमेरपुर हमीरपुर, डिलाइट रेडीमेट गारमेन्ट्स वेतवाघाट हमीरपुर, अहमद वक्श रेडीमेड गारमेन्ट्स राठ, नवीन रेडीमेड गारमेन्ट्स मियानपुरा राठ, राना रेडीमेड गारमेन्ट्स सरीला, राठ, हाजी रेडीमेड गारमेन्ट्स राठ, शहीदन रेडीमेड गारमेन्ट्स राठ, रवीन्द्र रेडीमेड गारमेन्ट्स राठ, नसीम रेडीमेड गारमेन्ट्स राठ, दीनदयाल रेडीमेड उद्योग महोबा, गनेश रेडीमेड गारमेन्ट्स महोबा, कलीम रेडीमेड गारमेन्ट्स महोबा, मनोज रेडीमेड उद्योग महोबा, समर रेडीमेड उद्योग महोबा, किसान रेडीमेड गारमेन्ट्स कुलपहाड़, मुमताज रेडीमेड इण्डस्ट्री कुलपहाड़, जनता रेडीमेड गारमेन्ट्स किशोरगंज कुलपहाड़, असगर अली रेडीमेड उद्योग पैलानी बांदा, ऐनुद्दीन रेडीमेड वस्त्र–उद्योग मर्दननाका बांदा, अनिल रेडीमेड गारमेन्ट्स बांदा, रोशनी रेडीमेड उद्योग नया बाजार कर्वी, मिश्रा रेडीमेड उद्योग कर्वी, चित्रकूट, शशांक रेडीमेड उद्योग पहाड़ी चित्रकूट है।

चित्रकूट धाम मण्डल में इस उद्योग में कुल पूँजी निवेश 248.2 लाख रुपये हुआ है, जिसमें 151.8 लाख रुपये स्थायी पूँजी तथा 96.4 लाख रुपये कार्यशील पूँजी हैं। कुल उत्पादक पूँजी का 61.2% हिस्सा स्थायी पूँजी तथा शेष 38.8% कार्यशील पूँजी के रूप में विनियोजित है।

निम्नलिखित तालिका सं0 10.13 में मण्डल में रेडीमेड गारमेन्ट्स उद्योग की इकाइयों की संख्या तथा रोजगार में लगे व्यक्तियों की संख्या एवं पूँजी निवेश को विकासखण्डवार दर्शाया गया है।

तालिका सं0 10.13

चित्रकूट धाम मण्डल में रेडीमेड गारमेन्ट्स उद्योग की इकाइयों का वितरण, रोजगार तथा पूँजी निवेश– 2003–04

क्रसं0	विकासखण्ड	इकाइयों की संख्या	रोजगार	स्थायी पूँजी (लाख रु0 में)	कार्यशील पूँजी (लाख रुपये)	कुल निवेश (लाख रु0 में)
1	कुरारा	21	65	12.6	8.6	21.2
2	सुमेरपुर	9	26	4.5	2.9	7.4
3	सरीला	7	20	3.6	2.2	5.8
4	गोहाण्ड	11	32	5.5	3.3	8.8
5	राठ	32	95	16.5	14.0	30.5
6	मुस्करा	9	25	4.5	2.9	7.4
7	मौदहा	16	40	8.5	4.9	13.4
जनपद हमीरपुर		105	303	55.7	38.8	94.5
8	पनवाड़ी	8	18	4.1	2.4	6.5
9	जैतपुर	9	19	4.5	2.7	7.2
10	चरखारी	13	28	6.7	4.1	10.8
11	कबरई	30	76	15.3	9.0	24.3
जनपद महोबा		60	141	30.6	18.2	48.8

12	जसपुरा	6	12	3.0	1.8	4.8
13	तिन्दवारी	7	13	3.6	2.2	5.8
14	बड़ोखर खुर्द	26	70	13.5	8.1	21.6
15	बबेरु	16	49	8.0	4.4	12.4
16	कमासिन	8	23	4.1	2.4	6.5
17	विसण्डा	10	30	4.9	3.2	8.1
18	महुआ	5	12	2.3	1.4	3.7
19	नरैनी	11	30	5.5	3.4	8.9
जनपद बांदा		89	239	44.9	26.9	71.8
20	पहाड़ी	5	11	2.4	1.5	3.9
21	कर्वी	18	53	9.1	5.5	14.6
22	मानिकपुर	6	10	3.0	1.8	4.8
23	रामनगर	4	7	2.0	1.4	3.4
24	मऊ	8	20	4.1	2.3	6.4
जनपद चित्रकूट		44	106	20.6	12.5	33.1
मण्डल योग		298	789	151.8	96.4	248.2

स्रोत :– कार्यालय, महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र – हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट, (2003–04)।

इस उद्योग का विकास तीव्र गति से हुआ है। सन् 1970 में रेडीमेड गारमेन्ट्स उद्योग की 80 इकाइयाँ थी, जिनमें 251 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त था। सन् 1989–90 में इस उद्योग की 144 इकाइयों में 472 व्यक्ति लगे हुए थे। सन् 2003–04 में इकाइयों की संख्या बढ़ाकर 298 हो गयी तथा रोजगार में लगे व्यक्तियों की संख्या 789 हो गयी। इस क्षेत्र में इस उद्योग के विकास की अधिक सम्भावनायें हैं, लेकिन इसके सामने कुछ समस्यायें भी हैं। यह क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ा हुआ है, इसलिए यहाँ लोगों की क्रयशक्ति कम है। इस कारण से रेडीमेड गारमेन्ट्स का बाजार सीमित है। इसके अतिरिक्त इस उद्योग को बड़ी कम्पनियों से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है।

19 सिलाई तथा कढ़ाई उद्योग (Tailoring and Embroidery Industry)

सिलाई तथा कढ़ाई परम्परागत कुटीर उद्योग है, जिसका अब विकास वाणिज्यिक कला के रुप में हुआ है। चित्रकूट धाम मण्डल में सिलाई तथा कढ़ाई उद्योग की 430 इकाइयाँ क्रियाशील हैं। तालिका सं0 10.16 से स्पष्ट है कि सर्वाधिक इकाइयाँ हमीरपुर जनपद में 141 हैं। इसके अतिरिक्त बांदा जनपद में 123, महोबा जनपद में 85 तथा चित्रकूट जनपद में 81 सिलाई–कढ़ाई उद्योग की इकाइयाँ क्रियाशील हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में सिलाई तथा कढ़ाई उद्योग की सन् 1970 में175 इकाइयाँ, सन् 1980 में 240 इकाइयाँ तथा सन् 1990 में 315 इकाइयाँ थी, जो सन् 2003–04 में बढ़कर 430 इकाइयाँ हो गयीं।

चित्रकूट धाम मण्डल की प्रमुख सिलाई तथा कढ़ाई उद्योग की इकाइयाँ निम्नांकित है– इन्द्र बुनाई–सिलाई केन्द्र भरुवासुमेरपुर, हमीरपुर, मे0 वन्दना सिलाई कढ़ाई बुनाई केन्द्र बाजमऊ हमीरपुर, श्रीमती गयाश्री सिलाई कढ़ाई केन्द्र कुछेछा, हमीरपुर, पापुलर्स टेलर्स मौदहा, हमीरपुर,-गोल्डेन टेलर्स मौदहा, संगीन टेलर्स तहसील रोड, हमीरपुर, रमेश टेलर्स मौदहा हमीरपुर, अग्रवाल टेलर्स मौदहा, हमीरपुर, अनुपम टेलर्स मौदहा, हमीरपुर, बाम्बे टेलर्स मुस्करा, हमीरपुर, राज टेलर्स मुस्करा, हमीरपुर, प्रिन्स टेलर्स बिवॉर, हमीरपुर,

सरताज टेलर्स वर्क्स मुस्करा, हमीरपुर, सानू टेलर्स हलवारा, सरीला, राजकमल टेलर्स सरीला, हमीरुपर, रमा टेलर्स गोहाण्ड, रानी टेलर्स गोहाण्ड, एम0एस0 टेलर्स गोहाण्ड, हमीरपुर, फैन्सी टेलर्स कोट बाजार राठ, राजपूत टेलर्स कोट बाजार राठ, हमीरपुर, स्टूडेन्ट टेलर्स मियानपुरा राठ, हमीरपुर, पंकज टेलर्स राठ, महिला सिलाई–कढ़ाई केन्द्र राठ, हमीरुपर, मे0 जानकी सिलाई उद्योग पठानपुरा राठ, हमीरपुर, सलीम टेलर्स चरखारी, महोबा, कृष्णा टेलर्स कुलपहाड़, महोबा जे0के0 टेलर्स चरखारी, वामदेव टेलर्स मेन मार्केट कुलपहाड़, न्यू फैशन टेलर्स पनवाडी, अंसार टेलर्स कुलपहाड़, ताज टेलर्स पनवाड़ी, विकास टेलर्स पनवाड़ी, ग्रीन टेलर्स ऊदल चौक महोबा, कुमार टेलर्स आल्हा चौक महोबा, राहुल टेलर्स महोबा, रमा टेलर्स नारुपुरा महोबा, फैन्सी टेलर्स ग्रान्टगंज महोबा, शान टेलर्स तांगा बाजार महोबा, वर्मा टेलर्स महोबा, मे0 मनोरमा सिलाई उद्योग गूलरनाका बांदा, सरोजनी देवी सिलाई उद्योग बांदा, जीशन सिलाई उद्योग बांदा, रफीक टेलर्स बांदा, माडर्न टेलर्स बांदा, रंगरुप टेलर्स बांदा, अजन्ता टेलर्स बांदा, गाइड टेलर्स बांदा, सम्राट टेलर्स बांदा, कागदगिरि सिलाई बुनाई कढ़ाई सेन्टर शिवरामपुर, कर्वी, मिश्रा सिलाई केन्द्र बरगढ़, चित्रकूट, हरि सिलाई केन्द्र सेमरदहा, चित्रकूट, मिश्रा कढ़ाई केन्द्र परसौंजा, कर्वी (चित्रकूट), मो0 गुलाबचन्द्र कढ़ाई केन्द्र सिद्धपुर कर्वी (चित्रकूट), प्रकाश टेलर्स कर्वी, मोहम्मद टेलर्स वर्क्स बाबूपुर, कर्वी (चित्रकूट), डायमण्ड टेलर्स कर्वी, सिद्धीकी टेलर्स कर्वी, जीनियस टेलर्स कर्वी, न्यूफैशन टेलर्स कर्वी, रंजना टेलर्स कर्वी

चित्रकूट धाम मण्डल में सिलाई तथा कढ़ाई उद्योग की इकाइयाँ 812, व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करती हैं। हमीरपुर जनपद में 282 लोगों को रोजगार प्राप्त है, इसके अतिरिक्त बांदा जनपद में 229, महोबा जनपद में 159 तथा चित्रकूट जनपद में 142 लोगों को रोजगार प्राप्त है। मण्डल में इकाइयों में वृद्वि के साथ ही साथ रोजगार में भी वृद्धि हुई हैं। सन् 1970 में 310, सन् 1980 में 450 तथा सन् 1990 में 560 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त था, जो सन् 2003–04 में यह बढ़कर 812 हो गया।

चित्रकूट धाम मण्डल में सिलाई तथा कढ़ाई उद्योग में कुल 220.25 लाख रुपये का पूँजी विनियोजन हुआ है। जिसमें 136.70 रुपये (62.1%) स्थयी पूँजी तथा 83.55 लाख रुपये (37.9%) कार्यशील पूँजी है। सर्वाधिक पूँजी विनियोजन हमीरपुर जनपद में 74.90 लाख रु0 हुआ है। इसके बाद बांदा, महोबा तथा चित्रकूट जनपद में पूँजी विनियोजन क्रमशः 61.75,42.90 तथा 40.70 लाख रुपये हुआ है।

निम्नलिखित तालिका सं0 10.14 में चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार सिलाई तथा कढ़ाई उद्योग की इकाइयों की संख्या पूँजी विनियोजन तथा रोजगार को दर्शाया गया है :–

तालिका सं0 10.14

चित्रकूट धाम मण्डल में सिलाई तथा कढ़ाई उद्योग की इकाइयों की संख्या पूँजी विनियोजन तथा रोजगार– 2003–04

क्रसं0	विकासखण्ड	इकाइयों की संख्या	स्थायी पूँजी (लाख रु0 में)	कार्यशील पूँजी (लाख रु0 में)	कुल पूँजी विनियोजन (लाख रुपये में)	रोजगार में लगे व्यक्तियों की संख्या
1	कुरारा	29	8.70	5.80	14.50	58
2	सुमेरपुर	25	8.75	6.25	15.00	52
3	सरीला	16	4.00	2.40	6.40	32
4	गोहाण्ड	13	3.25	2.40	5.65	26
5	राठ	28	11.20	5.60	16.80	60
6	मुस्करा	13	5.20	2.00	7.20	24
7	मौदहा	17	5.10	4.25	9.35	30
जनपद हमीरपुर		141	46.20	28.70	74.90	282
8	पनवाड़ी	14	2.80	2.10	4.90	22
9	जैतपुर	18	4.50	3.60	8.10	32

10	चरखारी	22	6.60	4.40	11.00	45
11	कबरई	31	12.40	6.50	18.90	60
जनपद महोबा		85	26.30	16.60	42.90	159
12	जसपुरा	10	3.00	2.30	5.30	18
13	तिन्दवारी	13	4.55	1.95	6.50	22
14	बडोखर खुर्द	33	11.50	6.60	18.10	67
15	बबेरु	16	4.80	2.40	7.20	30
16	कमासिन	11	2.75	1.65	4.40	19
17	विसण्डा	14	4.20	2.80	7.00	25
18	महुआ	11	3.30	1.70	5.00	20
19	नरैनी	15	5.25	3.00	8.25	28
जनपद बांदा		123	39.35	22.40	61.75	229
20	पहाड़ी	9	2.70	1.35	4.05	15
21	कर्वी	27	9.45	5.40	14.85	48
22	मानिकपुर	16	4.80	3.20	8.00	29
23	रामनगर	17	4.25	3.40	7.65	28
24	मऊ	12	3.65	2.50	6.15	22
जनपद चित्रकूट		81	24.85	15.85	40.70	142
मण्डल योग		430	136.70	83.55	220.25	812

स्रोत : कार्यालय, महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र, हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट (2003–04)।

1) काटिहा, नवल किशोर – 'सुगर इन द फील्ड' द वर्कशाप्स एण्ड द फैक्टरीज़ ' – 1937,पृ039

2) डॉ मेवाराम, 'प्रादेशिक एवं भारत का भूगोल' (ग्यारहवॉ संस्करण) भारत–भारती प्रकाशन एण्ड कं0, मेरठ, 2004, पृ0.401.

3) डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ झॉसी, 1965, पृ0.144.

4) सिंह आर0 एल0 (एडीटर). इण्डिया– ए रीजनल ज्यॉग्रफी, पृ0.614.

5) एन आउटलाइन ऑफ बांदा मास्टर प्लान (1982–2001) डिपार्टमेन्ट ऑफ टाउन एण्ड कन्ट्री प्लानिंग, यू0पी0, पृ0.38–39.

अध्याय 11

निष्कर्ष एवं सुझाव : औद्योगिक विकास एवं नियोजन

(Industrial Development and Planning)

औद्योगिक विकास एवं नियोजन एक ऐसी विवेकपूर्ण व्यवस्था है, जिसका उद्देश्य उपलब्ध स्थानीय संसाधनों का समुचित उपयोग कर न्यायपूर्ण सन्तुलित औद्योगिक विकास करके अधिकतम आर्थिक विकास के लक्ष्य को प्राप्त करना है।

पूर्व विश्लेषित आँकड़े यह स्पष्ट करते हैं, कि चित्रकूट धाम मण्डल में जैविक कच्चेमाल पर आधारित उद्योग स्वतः विकसित हुए हैं। अभी तक क्षेत्र के अपेक्षाकृत जर्जर औद्योगिक आधार को दृढ़ बनाने हेतु योजनाबद्ध प्रयास नहीं किये गये। मण्डल के विभिन्न स्थानों में विभिन्न जैविक संसाधन जैसेः– कृषि उत्पाद – गेहूँ, धान, दालें, तिलहन, गन्ना, विभिन्न वनोंत्पाद जैसे :– रेशेदार पदार्थ, बाँस, तेदूँ की पत्तियाँ, घास इमारती लकड़ियाँ तथा पशु व जन्तु उत्पाद जैसे :– ऊन, बाल, खाल, चमड़ा, माँस, दूध, अंडा, शहद, रेशम की उपलब्धता नव औद्योगिक इकाई की स्थापना के लिये प्रेरित करते है। अतः चित्रकूट धाम मण्डल में औद्योगिक विकास की मन्दाकिनी प्रवाहित करने हेतु सुविचारित सुव्यवस्थित सुनिश्चित औद्योगिक योजनायें परम आवश्यक हैं।

चूँकि चित्रकूट धाम मण्डल मौलिक रुप में ग्रामीण कृषि प्रधान क्षेत्र है, इसलिए इसका व्यापक रुप से सर्वेक्षण करने के उपरान्त औद्योगीकरण की योजना निर्मित होनी चाहिए। *नगरीकरण के युग में महती आवश्यकता है कि गाँवों का औद्योगीकरण किया जाय। स्थानीय कच्चेमाल पर आधारित विभिन्न लघु एवं कुटीर उद्योग औद्योगीकरण की पूर्ति कर सकते है। उत्तर प्रदेश कुटीर उद्योग उपसमिति 1947 का मत था कि "बेरोजगारी के दानव से लोहा लेने के लिए कृषि में पूर्ण व आंशिक रुप से बेकार पड़ी हुई जनशक्ति का उपयोग करने का एकमात्र उपाय कुटीर एवं लघु उद्योगों के विकास में निहित है।"* औद्योगिक इकाइयों से लाभ लेने के लिए योजनायें अति बुद्धिमतापूर्ण होना चाहिए। स्थानीय जनों प्रशासकों, राजनीतिज्ञों तथा योजनाकारों को अपने इस औद्योगिक विकास के प्रति प्रबल चिन्तन मनन एवं रुझान होना चाहिए। मानव के औद्योगिक साजसज्जा का आवश्यक अंग योजनायें ही होती हैं। [1]

योजनाओं द्वारा प्राकृतिक एवं सामाजिक संसाधनों को इस तरह से श्रृंखलाबद्ध एवं प्रोन्नत किया जाय कि थोड़ी ही अवधि में बड़ी उपलब्धि हो सके। [2] औद्योगिक नियोजन अनिवार्य रुप से सामाजिक उद्देश्यों के अनुरुप संसाधनों का अधिकतम लाभ उठाने के लिए संगठित एवं उपयोग करने का एक मार्ग है। औद्योगिक नियोजन से विकास का मार्ग प्रशस्त होता है एवं राष्ट्रीय तथा प्रति व्यक्ति आय में निरन्तर वृद्धि करना सम्भव हो सकता है। योजना के दो अंग हो सकते हैं – (1) राष्ट्रीय योजना एवं (2) प्रादेशिक या स्थानीय योजना। प्रादेशिक या स्थानीय योजनायें राष्ट्रीय योजनाओं की पूरक होती है। इसका अपना आयाम होता है जो विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के अन्तर्गत कार्य करती है। [3]

योजना बनाते समय योजनाओं को स्पष्ट भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर सूक्ष्म इकाइयों के रुप में विभाजित करने की आवश्यकता होती है। यह इसलिए आवश्यक है क्योंकि –

(1) सूक्ष्म इकाइयाँ सन्तुलित विकास करती हैं।

(2) यह विषमता कम करती हैं।

(3) यह बिखरे संसाधनों एवं प्रबन्धन संगठन का अधिकाधिक उपयोग करती है। इसमें लोगों का सामूहिक सहयोग एवं हिस्सेदारी होती है।

(4) ये सूक्ष्म इकाइयाँ स्थानीय क्षेत्रों को राजनैतिक विरोध से बचाती हैं।
(5) ये बेरोजगारी दूर करती हैं।
(6) जन सुविधाओं का विस्तार करती है।

योजना बनाते समय क्षेत्र विशेष की बाधाओं एवं अवरोधों को पहचानना, भावी परिस्थितियों का आंकलन करना, अवसंरचनात्मक सुविधाओं तथा असुविधाओं का ध्यान रखना अति आवश्यक है।

जैविक ससाधनों पर आधारित औद्योगिक विकास की योजना बनाते समय जैविक संसाधनों के विकास पर अवलोकन आवश्यक है। बिना जैवीय संसाधनों के विकास के औद्योगिक प्रगति नहीं की जा सकती। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं और एक–दूसरे पर निर्भर करते हैं।
जैवीय संसाधनों में कृषि महत्वपूर्ण है। अतः इसके तीन प्रमुख क्षेत्रों पर दृष्टि केन्द्रित रखी जाती है :–
(1) सत्त्वर फसल देने वाले क्षेत्र
(2) भावी कृषि उत्पादन के क्षेत्र
(3) अपेक्षाकृत अल्प उत्पादन के क्षेत्र

प्रथम अर्थात् सत्त्वर कृषि उत्पादन क्षेत्रों के लिए अधिक उपज देने वाली किस्में, खाद एवं रासायनिक उर्वरक, सिंचाई, के साधन, तकनीक एवं यान्त्रिकी, सेवा–सुविधाएँ, एवं आपणन संरचना सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक हैं। सिंचित उपजाऊ भूमि में तकनीक एवं नव पद्धतियों के प्रबन्धन से उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

भावी कृषि उत्पादन क्षेत्रों में मृदा अच्छी किस्म की होती है, एवं जलवायु भी अनुकूल होती है लेकिन सिंचाई सुविधाओं, नव तकनीक एवं अन्य आवश्यक कृषि प्रर्वतनों के अभाव के कारण उनका उत्पादन कम रह जाता है। ऐसे क्षेत्रों के लिए सर्वाधिक आवश्यक बात यह है कि सिंचाई की सुविधाएँ, कृषि तकनीक, सड़के तथा बाजार की सुविधाएँ इसलिए हों ताकि यह क्षेत्र अति उत्पादक क्षेत्रों में परिणित किये जा सकें।

अपेक्षाकृत अल्प उत्पादन क्षेत्र वे क्षेत्र होते हैं, जहाँ बिना भूमि सुधार एवं नवीनतम तकनीक के कृषि अभियान चलाकर उन्हें अत्यन्त उत्पादनशील नहीं बनाया जा सकता। पशु संसाधनों में दुधारु एवं मांसल पशुओं की नस्लों में सुधार कर दुग्ध उत्पादन तथा माँस उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। योजना बनाते समय जैविक संसाधनों में वनों के विनाश, तथा वृक्षारोपण के अनुपात पर भी दृष्टिपात करना चाहिए।

योजना की अनेक पद्धतियाँ होती हैं जैसे– पूँजीवादी पद्धति, समाजवादी पद्धति, साम्यवादी पद्धति, प्रजातान्त्रिक पद्धति, सार्वभौमिकतावादी पद्धति आदि। ये पद्धतियाँ लक्ष्यों, क्रियान्वयन के तरीकों, तकनीकों एवं नियन्त्रण के सम्बन्ध में एक दूसरे से भिन्न होती है। औद्योगिक योजनायें सामान्य योजनाओं से कुछ कारणों से भिन्न होती है। सामान्य योजनाओं की अपेक्षा औद्योगिक योजनाओं में पूँजी, तकनीक, क्रीयान्वयन पद्धति, यातायात एवं संचार के साधन तथा प्रतिस्पर्धा आदि पर अधिक विचार किया जाता है। पूँजीवादी पद्धति जिसमें व्यक्तिगत ठेकेदार अपनी प्रतियोगी क्षमता का उपयोग करने के लिए स्वतंत्र होते हैं, आधुनिक औद्योगिक योजनाओं को सर्वोत्तम आधार प्रदान करती हैं। कम लागत का उत्पादन होने के कारण मजदूरी कम होने से श्रमिक वर्ग के रहन–सहन का स्तर इस पद्धति से गिरता है। प्रजातान्त्रिक पद्धति में प्रतियोगिता कुछ हद तक नियन्त्रित रहती है और औद्योगिक योजनाओं का तन्त्र अधिकांशतः सरकार द्वारा नियन्त्रित रखा जाता है। लागत और मूल्य का स्तर अधिकतम सामाजिक कल्याण के उद्देश्य से निश्चित करते हैं।

चित्रकूट धाम मण्डल एक पिछड़ा हुआ क्षेत्र है। इसके तीव्रगति से विकास की अति आवश्यकता है। ब्रिटिश शासन के दौरान हमारे देश का औद्योगिक विकास अस्थायी, अनियोजित और असन्तुलित

था। वह मधुमक्खी के विशाल छत्ते की भाँति उत्पन्न हुआ जिसे बाद में अंग्रेज मधुमक्खी के छत्ते की भाँति खाली (औद्योगिक विकास समाप्त) करके देश से चले गये।[4]

बुन्देलखण्ड क्षेत्र ब्रिटिश सरकार द्वारा उपेक्षित क्षेत्र था। स्वतन्त्र भारत की सरकारों ने भी चित्रकूट धाम मण्डल के औद्योगिक विकास की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। कार्यशील जनसंख्या का 2.86% व्यक्ति ही विशेषरुप से लघु तथा कुटीर उद्योगों में कार्यरत हैं। कार्यशील जनसंख्या का अधिकांश भाग कृषि कार्य में लगा हुआ है। यही उसकी जीविकापार्जन का आधार है। कृषि आधारित उद्योगों का अल्प विकास हुआ है। इसका अर्थ यह नहीं है कि इस क्षेत्र में उद्योगों के विकास हेतु संसाधन ही नही हैं, बल्कि यह क्षेत्र औद्योगिक शिक्षा एवं तकनीक में पिछड़ा हुआ है। केन्द्र तथा राज्य सरकारें प्रादेशिक संसाधनों के स्रोतों की उपेक्षा कर रही है। चित्रकूट धाम मण्डल में जैविक संसाधनों के उपयोग करने में पुनर्स्थापन की आवश्यकता है। इस क्षेत्र के तीव्र आर्थिक विकास के लिए कृषि एवं उद्योग दोनों का ही समन्वित विकास आवश्यक है वास्तव में दोनों एक दूसरे के पूरक हैं और एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। ये क्षेत्र जैविक संसाधनों पर आधारित लघु तथा कुटीर उद्योगों के विकास की पूर्ण क्षमता रखता है। औद्योगिक योजना इस क्षेत्र की गरीबी, बेरोजगारी और सामाजिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए अति आवश्यक है।

11(i) नियोजन की आवश्यकता :–

नियोजन के अर्न्तगत किसी कार्य को करने से पूर्व उसमें आने वाली कठिनाइयों का पता लगाकर उन्हें दूर किया जाता है जिससे कि उस क्षेत्र में सरलतापूर्वक सफलता प्राप्त हो सके। वास्तव में *नियोजन एक पूर्ण योजनाबद्ध कार्यक्रम है जिसके द्वारा विकास का मार्ग प्रशस्त होता है।* इस क्षेत्र की जनता के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने एवं सुख समृद्धि के लिए औद्योगिक विकास आवश्यक है। यह औद्योगिक विकास नियोजन प्रक्रिया अपनाकर ही सम्भव हो सकता है। नियोजन की आवश्यकता निम्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु होती है :–

(1) औद्योगिक नियोजन से जैवीय संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग सम्भव होता है।

(2) औद्योगिक नियोजन से देश का सन्तुलित विकास सम्भव होता है।

(3) औद्योगिक नियोजन से उद्योगों का विकास होता है जिससे प्रति व्यक्ति आय तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।

(4) औद्योगिक नियोजन से विभिन्न समस्याओं जैसे– निर्धनता, बेरोजगारी, विषमता, एकाधिकारी प्रवृत्ति, आर्थिक शोषण आदि में कमी आती है।

(5) आत्मनिर्भरता एवं सामाजिक कल्याण में वृद्धि होती है।

सफल नियोजन के लिए या नियोजित प्रक्रियाओं की सफलता के लिए निश्चित दशाओं और पूर्व अपेक्षित आवश्यकताओं को पूर्ण होना चाहिए। औद्योगिक नियोजन के लिए निम्नलिखित दशाओं एवं कारकों की आवश्यकता होती है।

(1) सूक्ष्म योजना इकाइयों में विभाजन (Clasification in Micro Plan Units) :–

तीव्र औद्योगिक विकास के लिए विभिन्न सूक्ष्म योजना (माइक्रोप्लान) इकाइयों में विभाजन अति आवश्यक है। ये सूक्ष्म योजना इकाइयाँ और उपइकाइयाँ विकासखण्ड स्तर पर और न्याय पंचायत स्तर पर हो सकती हैं।

(2) उपयुक्त स्थान का चयन (Choice of Suitable Place) :–

किसी भी उद्योग की स्थापना के लिए उपयुक्त स्थान का चयन अतिआवश्यक है। इसके लिए स्थानीयकरण के कारकों जैसे परिवहन एवं संचार के साधन, बाजार, श्रमिक सुरक्षा, बैंक, चिकित्सालय,

पेयजल सुविधा, सुचारु विद्युत आपूर्ति, कच्चेमाल की उपलब्धता, उद्यमिता आदि का ध्यान रखना अति आवश्यक है।

(3) लक्ष्य और प्राथमिकता पर दृढ़ता (Fixation of Targets and Priorities) :–

योजना का लक्ष्य बहुत ही स्पष्ट और प्रत्यक्ष होना चाहिए। औद्योगिक क्रियाओं के लक्ष्य पर मनन करना चाहिए। लक्ष्य प्रदेश में उपलब्ध संसाधनों के अनुरुप होना चाहिए। प्रदेश की दीर्घकालीन तथा अल्पकालीन आवश्यकताओं के आधार पर प्राथमिकताओं को निर्धारित करना चाहिए। अल्पकालीन औद्योगिक उत्पादन और लोगों की आवश्यकताओं पर विशेष महत्व देना चाहिए।

(4) सांख्यकीय आँकड़ों का संग्रह (Collection of Statistical Data) :–

नियोजन हेतु सूक्ष्म सर्वेक्षण करने के लिए कच्चेमाल की गुणवत्ता की उपलब्धता, औद्योगिक पूँजी, मानव संसाधन, प्राकृतिक संसाधन, कृषि सम्बन्धी विकास, यातायात का विस्तार, तकनीकी और गैरतकनीकी शक्ति, औद्योगिक व्यवसाय के लिए व्यक्तिगत आवश्यकता आदि से सम्बन्धित आँकड़ों के संग्रह एवं उन्हे विस्तारपूर्वक समझने की आवश्यकता होती है। बेकोव ने संकेत किया है कि *"Every act of planing so for as it is not more fantastic castle building presupposes a preliminary investigation of existing resources.* [5]

(5) नियोजन प्रक्रिया की यथार्थ नीति (Proper Policy of Development) :–

नियोजन प्रक्रिया की यथार्थ नीति बहुत आवश्यक है। लेविस ने योजना की तुलना रोगी के लक्षणों के आधार पर रोग के निदान से की है। उसके अनुसार–" डॉक्टर के उचित या अनुचित इलाज से कई रोगी मरते हैं जो जीने की आशा करते हैं और कई रोगी जीते हैं जो मरने की आशा करते हैं।"

(6) प्रशिक्षण संस्थान (Traning Institutes) :–

किसी उद्योग को सफलतापूर्वक चलाने के लिए प्रशिक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता होती है इसलिए प्रत्येक नियोजित इकाई में प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित होना चाहिए। जिससे श्रमिकों को योग्य, कुशल एवं तकनीकी ज्ञान युक्त बनाया जा सके।

(7) औद्योगिक प्रबन्धन (Industrial Management) :–

प्रबन्धन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत इच्छित परिणाम प्राप्त करने हेतु विभिन्न क्रियायें जैसे– योजना–निर्माण, उद्योग संगठन, नेतृत्व तथा संचालन आदि सम्मिलित है। प्रबन्धकीय कुशलताएँ एक उद्योग की अभिवृद्धि, उससे लाभ प्राप्त करने प्रतिस्पर्धा का सामना करने तथा दीर्घकाल तक संचालन के लिए आवश्यक है। एक उद्योग के सिलसिले में प्रबन्ध कई तरह के होते हैं। जिसमें निम्नलिखित 5M प्रमुख हैं।

(1) M = Men (Personal Management)
(2) M = Meterial (Material Management)
(3) M = Money (Financial Managemnet)
(4) M = Marketing (Marketing Management)
(5) M = Manufacturing (Production Management)

(8) प्रशासनिक दक्षता और ईमानदारी (Efficient Administration and Honesty) :–

एक सफल औद्योगिक नियोजन के लिए ईमानदारी और प्रशासनिक दक्षता की अति आवश्यकता होती है।

(9) सार्वजनिक सहयोग (Public Co-Operation) :–

औद्योगिक नियोजन की सफलता के लिए सार्वजनिक सहयोग आवश्यक होता है। लेविस के अनुसार *"Popular enthusiam is both, The lubricating oil of planning and the petrol of economic development a dynamic force that makes all things possible"* [6]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि एक औद्योगिक योजना कई कारकों की एक श्रृंखला है। ये कारक औद्योगिक विकास की संयुक्त संरचना को प्रभावित करते हैं। सूक्ष्म योजना, सरकारी प्रेरणा, वित्तीय सुविधाएँ, श्रमशक्ति की आपूर्ति, विद्युत आपूर्ति, तकनीकी शिक्षा की सुविधाएँ, यथार्थ सांख्यकीय आंकड़े, औद्योगिक प्रबन्धन का समाकलन करना आदि औद्योगिक विकास के महत्वपूर्ण कारक हैं।

11(ii) औद्योगिक विकास में बाधक तत्व :–

चित्रकूट धाम मण्डल आर्थिक दृष्टि से बहुत पिछड़ा हुआ क्षेत्र है। इस क्षेत्र की जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। कुल जनसंख्या का केवल 1.20% औद्योगिक जनसंख्या है जो चित्रकूट धाम मण्डल के औद्योगिक विकास के निम्न स्तर की ओर संकेत करती है। प्रति व्यक्ति आय में कमी, प्रति व्यक्ति कृषि–भूमि की कमी, उपयोगी संसाधनों का अभाव, विद्युत आपूर्ति में कमी, पूँजी का अभाव, उच्च जन्मदर एवं निम्न मृत्युदर, निरक्षरता, बेरोजगारी, कुशल श्रमिकों का अभाव, तकनीकी पिछड़ापन, वृहद औद्योगिक इकाइयों का अभाव, तथा डाकुओं का आतंक आदि औद्योगिक विकास के मार्ग में मुख्य बाधायें हैं। इनका विवरण निम्नवत् है –

(1) चित्रकूट धाम मण्डल में पूँजी का अभाव है जिससे वृहद् तथा मध्यम स्तर के उद्योगों का विकास नहीं हो पाया। अधिकांशतः उद्योग व्यक्तिगत पूँजी पर निर्भर है। निर्धनता के कारण पूँजी–संग्रह की गति अतिमंद है। पूँजी की कमी के कारण अधिक मात्रा में कच्चामाल नहीं खरीद पाते हैं। अतः इन्हें कच्चेमाल का अधिक मूल्य देना पड़ता है।

(2) चित्रकूट धाम मण्डल कृषि संसाधनों में धनी है लेकिन खनिज एवं वन संसाधनों में निर्धन है। इसलिए यहाँ पर औद्योगिक विकास सीमित है।

(3) भारी उद्योग धन्धों से सम्बन्धित फसलों का उत्पादन बहुत कम है जैसे– गन्ना, कपास, जूट आदि। वनों के अत्यधिक दोहन से औद्योगिक लकड़ी का अभाव वनाधारित उद्योगों के विकास में बाधक है।

(4) कृषि तथा औद्योगिक संरचना के मध्य तालमेल (सामंजस्य) नहीं है कृषि उद्योगों को परम्परागत रुप से कच्चामाल प्रदान करती हैं, जबकि औद्योगिक क्षेत्र विलम्ब से कृषि आवश्यक उपकरण यंत्र, उर्वरक, कीटनाशक तथा रोगनाशक दवायें प्रदान करते हैं।

(5) विद्युत आपूर्ति में अनियमित कटौती तथा वोल्टेज में कमी उद्योगों के विकास में सबसे बड़ी बाधा है। विद्युत दरों में बेहतहासा वृद्धि एक समस्या हैं।

(6) चित्रकूट धाम मण्डल में एक सामाजिक–आर्थिक विकास की एकीकरण नीति का अभाव है, जो चित्रकूट धाम मण्डल जैसे– अविकसित क्षेत्र के लिए अति आवश्यक हैं।

(7) मण्डल में अकुशल अशिक्षित श्रमिकों की संख्या अधिक है लेकिन कुशल श्रमिकों की कमी है। यहाँ औद्योगिक तकनीकी प्रशिक्षण संस्थानों की संख्या अपर्याप्त है।

(8) यातायात के साधनों की अपर्याप्तता एवं सड़क मार्गों की दीन–हीन दशा औद्योगिक इकाइयों की वृद्धि में प्रभाव डालती है।

(9) बढ़ते भ्रष्टाचार, लाल फीताशाही एवं जमाखोरी तथा डाकुओं के आतंक ने औद्योगिक योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में बाधा डाली है।

(10) उदारवाद तथा भूमण्डलीकरण कर नीतियों से देश में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के बढ़ते प्रभाव के कारण भारतीय लघु उद्योग कड़ी प्रतिस्पर्धात्मक परिस्थितियों के दौर से -गुजर रहा है, जिससे लघु उद्योग क्षेत्र में रुग्ण इकाइयों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

(11) उत्पादन लागत अधिक होने के कारण भारतीय उद्योग विदेशी प्रतियोगिता के सामने ठहर नहीं पाते हैं।

(12) मूल्यों में तीव्र और निरन्तर वृद्धि ने औद्योगिक योजनाओं की लागत को तेजी से बढ़ाया है।

(13) लघु तथा कुटीर उद्योग पर असहनीय स्थानीय कर लगे हुए हैं जिससे इनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं का मूल्य बढ जाता है और उनके विक्रय में कठिनाई आती है। इसके कारण ये उद्योग अतिरिक्त कर भार से दबे रहने के कारण पनपने नहीं पाते।

(14) लघु तथा कुटीर उद्योग धन्धों द्वारा उत्पादित माल की बिक्री की कोई संगठित व्यवस्था नहीं है। इनके समक्ष निर्मित माल को बेचने में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं।

(15) चित्रकूट धाम मण्डल के शिल्पकार अत्यधिक निर्धन हैं और अपनी निर्धनता के कारण वह आवश्यक पूँजी नहीं जुटा पाते। साहूकार व महाजन इनका मनचाहा शोषण करते हैं। बैंक आदि वित्तीय संस्थायें भी ऋण प्रदान करने में मनचाहा घूस लेती हैं।

(16) अधिकांश शिल्पी उत्पादन कार्य में परम्परागत उपकरणों एवं पुरानी पद्धतियों का ही प्रयोग करते हैं, जिससे उत्पादन तो कम होता है साथ ही उत्पादित वस्तु भी घटिया किस्म की होती है। अडारकर रिपोर्ट के अनुसार – " लघु एवं कुटीर उद्योग पिछड़ी तकनीक के द्योतक हैं।"

(17) अधिकांश औद्योगिक इकाइयों को पर्याप्त मात्रा में कच्चामाल उपलब्ध नहीं हो पाता है और जो माल इन्हें प्राप्त होता है, वह भी अच्छी गुणवत्ता का नहीं होता।

(18) श्रम एवं स्वामित्व में अच्छे सम्बन्धों का अभाव है। इस कारण आए दिन विभिन्न माँगों को लेकर श्रम संघो द्वारा हड़ताले की जाती है। नियोक्ताओं द्वारा तालाबन्दी की जाती है, जिससे श्रमिकों को हानियाँ होती हैं। परिणाम स्वरुप कई औद्योगिक इकाइयाँ ऐसी हैं जो अपनी दोषपूर्ण वित्तीय नीतियों एवं व्यवस्था के कारण रुग्ण हो गयी हैं।

(19) लघु एवं कुटीर उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों में शिक्षा एवं प्रशिक्षण का पूर्ण अभाव है। उचित प्रशिक्षण के अभाव में इनकी कार्यकुशलता कम बनी रहती है, उत्पादन लागत बढ़ने लगती है और उत्पादकता का स्तर निम्न बना रहता है।

(20) दोषपूर्ण प्रबन्धन के कारण अनेक इकाइयाँ नष्ट हो गयीं हैं। औद्योगिक रुग्णता के लिए दोषपूर्ण प्रबन्ध व्यवस्था मुख्य रुप से उत्तरदायी है।

उपर्युक्त समस्याओं का समाधान कर चित्रकूट धाम मण्डल के औद्योगिक विकास की गति को तीव्र किया जा सकता है।

चित्रकूट धाम मण्डल में औद्योगिक नियोजन की सफलता के लिए वर्तमान संसाधनों और सुविधाओं जैसे– कच्चेमाल की उपलब्धता, पूँजी, शक्ति के साधन, यातायात के साधन, बाजार, श्रमिक, संचार के साधन, प्रशिक्षण केन्द्र तथा वित्तीय संस्थाओं का होना आवश्यक है। क्षेत्र में एक औद्योगिक वातावरण निर्माण करना होगा तथा लोगों में उमंग पैदा करना होगा। लघु तथा कुटीर उद्योगों के विकास के लिए जैविक संसाधनों का प्रचुरमात्रा में होना आवश्यक है।

सन्तुलित तीव्र औद्योगिक विकास के लिए नियोजकों को निम्नलिखित सुझाव ग्रहण करना चाहिएः–

(1) उच्च गुणवत्ता के बीज, उर्वरक, कीट तथा रोगाणुनाशक दवाओं, और उचित समय पर सिंचाई की व्यवस्था करके कृषि उत्पादन बढ़ाया जाय। कपास तथा गन्ने उत्पादन बढ़ाया जाय जिससे वृहद् उद्योगों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हो सके।

(2) प्रदेश में उद्योगों के तीव्र गति से विकास के लिए समाकालित योजना अच्छी होना चाहिए। प्रदेश का आर्थिक विकास अन्तिम लक्ष्य होना चाहिए।

(3) यातायात और संचार सुविधाओं, तथा अन्य सेवाओं द्वारा सामाजिक और आर्थिक संरचना मजबूत होनी चाहिए।

(4) विद्युत आपूर्ति बाधित नहीं होना चाहिए इसके लिए अधिक विद्युत उत्पादन पर ध्यान देना चाहिए। नये ऊर्जा केन्द्रों की सथापना होनी चाहिये।

(5) लघु एवं कुटीर उद्योगों की उत्पादन तकनीक में सुधार किया जाना चाहिए ताकि ये विशाल उद्योगों की प्रतियोगिता का सामना करते हुए उपभोक्ताओं को अच्छे किस्म की वस्तुएँ प्रदान कर सकें।

(6) कुटीर एवं लघु उद्योगों की उत्पादकता और उत्पादन क्षमता बढ़ाने और उत्पादों की किस्म सुधारने के लिए अनुसन्धान कार्यक्रमों की व्यवस्था की जानी चाहिए।

(7) अकुशल श्रमिकों को प्रशिक्षित करने के लिए औद्योगिक तकनीकी प्रशिक्षण संस्थानो की स्थापना की जानी चाहिए।

(8) लघु उद्योग प्रदर्शनियों का अधिकाधिक आयोजन किया जाना चाहिए।

(9) लघु उद्योगों की स्थापना करने, विकास और मशीनों आदि के प्रयोग करने के लिए पर्याप्त सलाहकार सेवाओं की व्यवस्था होनी चाहिए।

(10) लघु उद्योग सहकारी समीतियों का अधिकाधिक विकास किया जाना चाहिए।

(11) अमेरिका व जापान की भाँति लघु व कुटीर उद्योगों के संरक्षण के लिए अलग से अधिनियम बनाना चाहिए। 1977 ई0 की औद्योगिक नीति में इसके लिए विशेष कानून की व्यवस्था की गयी है।

(12) लघु तथा कुटीर उद्योगों की उत्पादन किस्म पर उचित नियन्त्रण रखा जाना चाहिए।

(13) वित्तीय सुविधाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार को समाप्त किया जाना चाहिए।

11(iii) औद्योगिक अवस्थापना केन्द्रों की आवश्यकता :–

किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास के लिए, औद्योगिक विकास केन्द्रों की अवस्थापना परमावश्यक है। ये केन्द्र अपने चतुर्दिक उन्नति और विकास का वातावरण उत्पन्न करते हैं। इसलिए ऐसे केन्द्रों को वैज्ञानिक आधार पर चिन्हित कर स्थापित करने की आवश्यकता है। द्रुतगति से आर्थिक विकास करने के उद्देश्य से सेवा क्षेत्रों में विकास केन्द्रों को विभिन्न उपकरणों में ऊर्जा के संवाहक स्विचबोर्ड के समान होना चाहिए।

ऐसे विकास बिन्दुओं की आवश्यकता पर 1955 में फ्रान्सीसी विद्वान पेरॉक्स (Perrox) ने अपनी पुस्तक *'La Nation de pole de croissance, L. economic de XXeme'* में 'ग्रोथ पोल थ्योरी' *(Growth Pole Theory)* विशेष बल दिया है। इस पुस्तक और उनके सिद्धान्तों ने अर्थशास्त्रियों, भूगोल वेत्ताओं तथा प्रादेशिक वैज्ञानिकों का ध्यान आकर्षित किया है। इस सिद्धान्त में निम्नलिखित पहलुओं पर विवेचना की गयी है :–

(1) वास्तविक क्षेत्रों (Actual Space) की अपेक्षा आदर्श आर्थिक क्षेत्रों (Abstract Economic Space) में विकास बिन्दुओं की प्रक्रिया।

(2) असन्तुलित एवं सन्तुलित प्रादेशिक विकास।

(3) विकास बिन्दु केन्द्रों की उत्पत्ति हैं और विकेन्द्रीकरण विकास को प्रेरित करते हैं।

(4) विकास बिन्दुओं की कार्यात्मक कार्य कुशलता की बाधाएँ।

(5) केन्द्रीय स्थान (Central place) मौलिक एवं अमौलिक सिद्धान्तों तथा औद्योगिक एवं गैर औद्योगिक सिद्धान्तों के साथ 'ग्रोथ पोल थ्योरी' का सम्बन्ध।

ग्रोथ पोल थ्योरी (Growth pole theory) के उक्त उद्देश्यों के प्रकाश में विद्वानों के विभिन्न मत हैं। परन्तु वेमैन (Weighman) ने पेरॉक्स के ग्रोथ पोल श्योरी का प्रबल समर्थन किया है। पेरॉक्स के आदर्श क्षेत्र (Abstract space) को आर्थिक क्षेत्र (economic place) के रुप में माना है जो ऊर्जा बिन्दुओं के आधार पर शक्ति का क्षेत्र था। अर्थात् वे केन्द्र या उपकेन्द्र जिनसे केन्द्रापसारी बल उन अधिवासों की ओर चलते हैं जहाँ से वापस केन्द्रापसारी बलों का दिशा निर्देशन होता है। इस तरह से एक संगठित विकास सम्भव हो सकता है। पेरॉक्स ने अपनी विकास संकल्पना को पूरी–तरह से नहीं समझाया है, इसलिए अनेको विद्वानों ने ग्रोथ पोल थ्योरी की आलोचना शुरु कर दिया। बुडेबिल (Boudeville) ने बाद में इस सिद्धान्त का परीक्षण किया एवं व्यापक सैद्धान्तिक पहुँच बनाकर आर्थिक विकास के सिद्धान्तों को सिद्ध किया। तब से अनेको भूगोल वेत्ताओं एवं प्रादेशिक वैज्ञानिकों ने प्रादेशिक विकास योजनाओं (चाहे वे सामाजिक हों या आर्थिक) के उद्देश्य से विकास केन्द्रों की योजना का विश्लेषण

किया है। विकास ध्रुव केन्द्रों (Growth pole centres) एवं उपकेन्द्रों (Foci) का उपयोग अवरोही क्रम से पैमाना के आधार पर अलग–अलग बताया गया है। आर0पी0 मिश्रा, के0वी0 सुन्दरम और प्रकाश राव ने इन सिद्धान्तों का गुणावगुण विवेचन किया है एवं विकास केन्द्रों को एक तन्त्र के क्रम से रखा है उन्होंने इस पैमानिक विशिष्टता को राष्ट्रीय, प्रादेशिक एवं उपप्रादेशिक स्तर पर लागू किया है। विकास ध्रुवों (Growth poles) को राष्ट्रीय स्तर पर विकास केन्द्रों (Growth centers) को प्रादेशिक स्तर पर, विकास उपकेन्द्रों (Growth Foci) को उपप्रादेशिक स्तर पर, सेवा केन्द्रों (Service cetres) को सूक्ष्म स्तर पर तथा ग्रामों (Villages) को स्थानीय स्तर पर इन विद्वानों ने क्रम से रखा है।[7]
लेकिन चित्रकूट धाम मण्डल के सम्बन्ध में जो स्वंय एक उपक्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है इस मापक को संशोधित कर जिला स्तर एवं तहसील स्तर पर विकास केन्द्रों (Growth cetres) विकासखण्ड स्तर पर विकास उपकेन्द्रों (Growth Foci) तथा न्याय पंचायत स्तर पर सेवा ग्रामों (Service Villages) को मैने अपनाया है जहाँ नवीन औद्योगिक इकाइयों की स्थापना की कुछ सुविधायें हों। इन केन्द्रों की विस्तृत विवेचना भावी संसाधनों के ऑकलन, तथा जैविक संसाधनों पर आधारित विभिन्न समूहों के उद्योगों के स्थानीयकरण के गुणांक के आंकलन के बाद की गयी है। औद्योगिक अवस्थापना केन्द्रों की आवश्यकता निम्नलिखित लक्ष्यों से प्रमाणित होती है:–

1 **सन्तुलित तथा न्यायसंगत आर्थिक विकास** :– प्रत्येक देश या प्रदेश की सरकार का यह दृष्टिकोण होता है कि सर्वत्र देश में एक–सा आर्थिक विकास हो। सबको रोजी–रोटी कमाने का अवसर मिले। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु औद्योगिक अवस्थापना केन्द्रों की आवश्यकता होती है। भारत गाँवों का देश है अतः सन्तुलित अर्थव्यवस्था की दृष्टि से सरकार को नगर से लेकर गाँवों तक कुटीर तथा लघु स्तरीय उद्योगों के विकास को सबसे अधिक महत्व प्रदान करना चाहिए।

2 **स्थानीय कच्चेमाल की खपत** :– औद्योगिक केन्द्रों की स्थापना से स्थानीय कच्चेमाल की खपत हो जाती है, जिसे कच्चेमाल के उत्पादन को बढ़ावा मिलता है।

3 **उत्पादन लागत में कमी** :– उद्योगों का स्थानीयकरण के कारण उत्पादन व्यय में कमी आती है, क्योंकि स्थानीयकरण के कारण स्थान या क्षेत्र में कच्चामाल, पूँजी इत्यादि पर्याप्त मात्रा में तथा उचित कीमत पर मिलने लगती है। इसके साथ ही साथ अवशिष्ट पदार्थों का उपयोग तथा यातायात व संचार के साधनों का पर्याप्त विकास होने से उत्पादन लागत में कमी आती है तथा उद्यमियों को अधिक लाभ प्राप्त होता है।

4 **औद्योगिक सुरक्षा** :– शत्रु द्वारा हवाई हमले से सुरक्षा की दृष्टि से भी उद्योगों का अलग–अलग स्थापित करना आवश्यक है क्योंकि यदि किसी एक स्थान पर शत्रु के हमले से उद्योग नष्ट हुआ तो दूसरी जगह का उद्योग बचा रहेगा।

5 **पुराने औद्योगिक केन्द्रों पर नये उद्योगों की स्थापना में लागत की अधिकता** :– प्रायः ऐसा देखा जाता है कि पुराने औद्योगिक केन्द्रों पर भूमि, श्रम, पूँजी सभी मँहगी पड़ती है और नये कल–कारखानों की स्थापना पर अधिक व्यय पड़ता है इसलिए नये कल–कारखाने नये–नये स्थानों पर स्थापित किये जाने की आवश्यकता है।

6 **रोजगार की उपलब्धता** :– औद्योगिक केन्द्रों की स्थापना से रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध होंगे। ग्राम स्तर तक उद्योगों की स्थापना से रोजगार के लिए नगरों की ओर पलायन बन्द होगा।

7 **पूँजी निर्माण की दर और विनियोग में वृद्धि** :– पूँजी निर्माण की दर और विनियोग में वृद्धि के लिए औद्योगिक केन्द्रों की स्थापना करना आवश्यक है। इससे अर्थव्यवस्था को गरीबी के दुश्चक्र से भी बाहर निकाला जा सकेगा।

8 **कृषि का विकास** :— ग्रामीण स्तर तक उद्योगों की स्थापना से कृषि का विकास होता है, कृषि–उपकरणों की पूर्ति औद्योगिक इकाइयों द्वारा ही होती है। वास्तव में कृषि और उद्योग दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं और एक दूसरे पर निर्भर करते हैं।

11(iv) भावी संसाधनों का आंकलन :–

चित्रकूट धाम मण्डल के सन्तुलित आर्थिक विकास एवं उन्नति की तरंगे उत्पन्न करने हेतु विकास केन्द्रों, उपकेन्द्रों एवं सेवाकेन्द्रों को स्थापित करने के लिए उपलब्ध संसाधनों एवं कच्चेमाल के आधार पर भावी संसाधनो का आंकलन करना आवश्यक है। चित्रकूट धाम मण्डल कृषि एवं पशु संसाधनों की दृष्टि से धनी है, अतः जैवीय संसाधनों पर आधारित उद्योगों के विकास की काफी संभावनाएँ हैं। उत्तम तकनीक एवं कुशल श्रम, शक्ति, अध्ययन क्षेत्र के संसाधनों की क्रियाशीलता को सम्भव बना सकते हैं। क्षेत्र में संसाधनों की अधिशेष उपलब्धता के आधार पर कुछ कृषि, पशु, एवं वन पर आधारित उद्योग धन्धों की स्थापना का सुझाव दिया जा सकता हैं। यह सुझाव अवसंरचनात्मक सुविधाओं, बाजार स्थापन, श्रमिक आपूर्ति, पूँजी तथा वित्तीय सुविधाओं को ध्यान में रखकर होने चाहिए। मण्डलीय आर्थिकी में महत्वपूर्ण कृषि संसाधनों में गेंहूँ, धान, दालें, तिलहन, जौ, गन्ना आदि मुख्य फसलें हैं जिनसे चित्रकूट धाम मण्डल की औद्योगिक इकाइयों को कच्चामाल प्राप्त होता हैं।

a- वन संसाधनों का आंकलन :— चित्रकूट धाम मण्डल में विभिन्न वनाधारित उद्योग धन्धों के लिए पर्याप्त कच्चामाल प्राप्त होता है लगभग 6800 कौड़ी बाँस बांदा, चित्रकूट तथा महोबा जनपद में उगाया जाता है जो प्रायः बाहर भेज दिया जाता है लगभग 443.77 घनमीटर इमारती लकड़ी, क्षेत्र में प्रतिवर्ष उपलब्ध होती है। ये वन दो कागज मिलों के लिए पर्याप्त कच्चामाल प्रदान कर सकते हैं। इसके साथ ही एक कार्डबोर्ड तथा लगभग एक दर्जन आरा मशीनों के लिए भी कच्चेमाल की पूर्ति कर सकते हैं।

आरा मशीन से प्राप्त बुरादे से ब्रिकेट्स तथा खिलौने बनाये जा सकते हैं। प्रत्येक मिल से प्रतिदिन लगभग 5 कुन्तल बुरादे की प्राप्ति होती है। इस प्रकार सभी आरामशीनों से वर्षभर में लगभग 20,000 टन बुरादा उपलब्ध होता है। एक ब्रिकेट्स (Briguettes) बनाने वाली इकाई में लगभग एक हजार टन बुरादे की वार्षिक खपत होती है। इस प्रकार बुरादे से ब्रिकेट्स (Briquettes) बनाने वाली लगभग 20 इकाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं। विभिन्न उद्योगों के विभिन्न इकाइयों की उपयुक्त स्थानों पर स्थिति का सुझाव आगे दिया गया है।

b- पशु संसाधनों का आंकलन :— चित्रकूट धाम मण्डल में कुल पशुओं की संख्या 2543898 है, जिसमें 46.7% गोजातीय, 23.3% महिषजातीय, 4% भेड़ें, 22.2% बकरियाँ, 3.6% सुअर, 0.4% अन्य पशु हैं। चित्रकूट धाम मण्डल में प्रतिवर्ष लगभग 3816 मीट्रिकटन मृतक पशुओं की हड्डियाँ निकलती हैं जिन्हे संग्रह करके हड्डियों का चूरा बनाया जा सकता है जिसे रासायनिक उर्वरक बनाने में उपयोग किया जा सकता है। इस प्रकार चित्रकूट धाम मण्डल में 2 बोन क्रशिंग मिलें स्थापित की जा सकती हैं। इसके अतिरिक्त चमड़ें का कारखाना (Tannery) जूता उद्योग, ऊनीवस्त्र उद्योग, ब्रश उद्योग तथा डेरी उद्योग की इकाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं।

c- कृषि संसाधनों का आंकलन :— मण्डलीय आर्थिकी में महत्वपूर्ण कृषि संसाधनों में गेंहूँ, धान, तिलहन, दालें, गन्ना आदि मुख्य फसलें हैं, जिनसे चित्रकूट धाम मण्डल की औद्योगिक इकाइयों को कच्चामाल प्राप्त होता है।

निम्नलिखित तालिका में चावल की मिलों द्वारा उत्पादित धान की खपत अधिशेष मात्रा के आधार पर नई औद्योगिक इकाइयों की संख्या अंकित की गयी है :–

तालिका सं0 11–1

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार धान की अधिशेष मात्रा तथा राइसमिल की नई इकाइयों की संख्या

क्र0 सं0	विकासखण्ड	उत्पादन मीट्रिकटन में	मिलों एवं मिनीप्लांट्स की संख्या	औसत वार्षिक खपत प्रति मिल = 1025 मीट्रिकटन प्रति मिनीप्लान्ट = 350 मीट्रिकटन	अधिशेष मात्रा	अधिशेष मात्रा के आधार पर नई इकाइयों की संख्या (मिनी प्लान्ट्स)	नव रोजगार सृजन
1	कुरारा	129.09	–	–	129.09	–	–
2	सुमेरपुर	9.93	–	–	9.93	–	–
3	सरीला	29.79	–	–	29.79	–	–
4	गोहाण्ड	383.30	–	–	383.30	1	5
5	राठ	704.03	–	–	704.03	2	10
6	मुस्करा	209.52	–	–	209.52	–	–
7	मौदहा	190.66	–	–	190.66	–	–
जनपद हमीरपुर		1656.32	–	–	1656.32	3	15
8	पनवाड़ी	239.31	–	–	239.31	–	–
9	जैतपुर	234.35	–	–	234.35	–	–
10	चरखारी	196.61	–	–	196.61	–	–
11	कबरई	527.28	–	–	527.28	1	5
जनपद महोबा		1197.55	–	–	1197.55	1	5
12	जसपुरा	3.02	–	–	3.02	–	–
13	तिन्दवारी	834.66	–	–	834.66	2	10
14	बड़ोखर खुर्द	5033.95	1+11	4875	158.95	–	–
15	बबेरु	3645.94	1+8	(–) 3825	–	–	–
16	कमासिन	2587.54	0+2	700	1887.54	5	25
17	विसण्डा	14913.36	1+3	2075	12838.36	30	160
18	महुआ	20692.22	2+4	3450	17242.22	45	270
19	नरैनी	18428.26	10+40	(–)24250	–	–	–
जनपद बांदा		66142.95	15+68	39175	26967.95	82	465
20	पहाड़ी	3371.77	–	–	3371.77	9	45
21	कर्वी	3401.18	–	–	3401.18	9	45
22	मानिकपुर	3115.73	–	–	3115.73	8	40
23	रामनगर	2332.91	–	–	2332.91	6	30
24	मऊ	2559.54	–	–	2559.54	7	35
जनपद चित्रकूट		14781.13	–	–	14781.13	39	195
चित्रकूट धाम मण्डल		83777.95	15+68	39175	44602.95	125	680

उपयुर्क्त तालिका से स्पष्ट है कि बांदा जनपद में विशेषरुप से महुआ, नरैनी, तथा विसण्डा विकासखण्ड प्रमुख धान उत्पादक क्षेत्र हैं। इसके अतिरिक्त बड़ोखर खुर्द, बबेरु, कमासिन विकासखण्डों

तथा चित्रकूट जनपद के विकासखण्डों में भी धान का उत्पादन होता है। चित्रकूट धाम मण्डल में कुल धान का उत्पादन 83777.95 मीट्रिकटन है जिसमें बांदा जनपद में सर्वाधिक 66142.95 मीट्रिकटन उत्पादन है। औसत रुप से एक चावल मिल में 1025 मीट्रिकटन तथा एक मिनीप्लान्ट में 350 मीट्रिकटन धान की वार्षिक खपत होती है। इस प्रकार सम्पूर्ण चावल मिलों तथा मिनीप्लान्ट्स की इकाइयों में धान की खपत 39175 मीट्रिकटन है। धान की अवशेष मात्रा 44602.95 मीट्रिकटन है, जिसमें 852.95 मीट्रिकटन धान की खपत धान की भूसी अलग करने वाली छोटी मशीनों (Very Small hullers) में हो रही है। शेष धान की 43750 मीट्रिकटन मात्रा में 125 नये मिनी प्लान्ट्स स्थापित किये जा सकते हैं। चित्र सं0 11–1 में नई मिनी राइस मिलों के स्थानीयकरण की स्थिति को दर्शाया गया है। धान एक घासीय कच्चामाल है और 35% वजन धान की भूसी अलग करने पर कम हो जाता है इसलिए इसकी नई इकाइयाँ धान उत्पादक क्षेत्रों महुआ, विसण्डा, तथा चित्रकूट जनपद के विकासखण्डों में स्थापित किया जाना चाहिए।

वर्तमान समय में अरहर, चना तथा मसूर दालों का उत्पादन 306620.82 मीट्रिकटन है। औसत रुप से एक दाल मिल पर वार्षिक खपत लगभग 5000 मीट्रिकटन दलहन की है। इस प्रकार 42 दाल मिलों में वार्षिक औसत खपत 210000 मीट्रिकटन होती है। अधिशेष मात्रा 96620.82 मीट्रिकटन की खपत के लिए 27 नई मिलें स्थापित की जा सकती हैं। दलहन का उत्पादन सम्पूर्ण चित्रकूट धाम मण्डल में होता है, इसलिए नई इकाइयाँ स्थानीयकरण के उपयुक्त स्थानों पर स्थापित की जानी चाहिए।

निम्नलिखित तालिका सं02 में दालों का उत्पादन, औसत वार्षिक खपत, अधिशेष मात्रा तथा उसके आधार पर दाल मिल की नई इकाइयों की संख्या दर्शायी गयी है :–

तालिका संख्या 11–2

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार दलहन की अधिशेष मात्रा एवं दाल मिल की नई इकाइयों की संख्या

क्र0सं0	विकासखण्ड	उत्पादन मीट्रिकटन में	मिलों की संख्या	औसत वार्षिक खपत प्रति इकाई = 5000 मीट्रिकटन	अधिशेष मात्रा	अधिशेष मात्रा के आधार पर नई इकाइयों की संख्या	नव रोजगार सृजन
1	कुरारा	10479.19	4	(–) 20,000	–	–	–
2	सुमेरपुर	16579.93	5	(–) 25000	–	–	–
3	सरीला	16303.52	–	–	16303.52	3	18
4	गोहाण्ड	10038.58	–	–	10038.58	2	12

5	राठ	5421.91	8	(–) 40,000	–	–	–
6	मुस्करा	12114.22	1	5000	7114.22	1	6
7	मौदहा	28277.86	4	20,000	8277.86	1	6
जनपद हमीरपुर		9921.21	22	(–) 110000	–	7	42
8	पनवाड़ी	7436.35	–	–	7436.35	1	5
9	जैतपुर	6770.50	1	5000	1770.50	1	–
10	चरखारी	10319.42	1	5000	5319.42	1	6
11	कबरई	11640.50	4	(–)20,000	–	–	–
जनपद महोबा		36166.77	6	30,000	6166.77	2	11
12	जसपुरा	13724.30	–	–	13724.30	2	10
13	तिन्दवारी	17708.40	–	–	17708.40	3	18
14	बड़ोखर खुर्द	19655.82	7	(–)35000	–	–	–
15	बबेरु	16710.68	1	5000	11710.68	2	12
16	कमासिन	16984.87	–	–	16984.87	3	15
17	विसण्डा	6701.68	–	–	6701.68	1	6
18	महुआ	8717.57	–	–	8717.57	1	6
19	नरैनी	16729.27	3	15000	1729.27	–	–
जनपद बांदा		116932.59	11	55000	61932.59	12	67
20	पहाड़ी	16169.48	–	–	16169.48	3	15
21	कर्वी	11949.68	2	10,000	1949.68	–	–
22	मानिकपुर	10602.33	–	–	10602.33	2	10
23	रामनगर	7932.27	1	5000	2932.27	–	–
24	मऊ	7652.49	–	–	7652.49	1	5
जनपद चित्रकूट		54306.25	3	15000	39306.25	6	30
चित्रकूट धाम मण्डल		306620.82	42	210000	96620.82	27	150

चित्रकूट धाम मण्डल में लाही, सरसों, अलसी, तिल, तिलहनों का औसत उत्पादन लगभग 13400.03 मीट्रिकटन है। औसत रुप से एक आयल मिल पर वार्षिक खपत लगभग 50 मीट्रिकटन की है। सभी आइल मिल इकाइयों की वार्षिक खपत लगभग 12400 मीट्रिकटन, तिलहन की है। तिलहन की अधिशेष मात्रा 1000.03 मीट्रिकटन 82 नये आयल मिलों के लिए कच्चामाल प्रदान कर सकती है। ये आयल मिलें उपयुक्त केन्द्रों में स्थापित हो सकती हैं।

निम्नलिखित तालिका सं0 11–3 में चित्रकूट धाम मण्डल के विकासखण्डों में तिलहन का उत्पादन आयल मिलों में औसत वार्षिक खपत, अधिशेष मात्रा तथा उसके आधार पर आयल मिल की नई इकाइयों की संख्या को दर्शाया गया है :–

तालिका संख्या 11–3

चित्रकूट धाम मण्डल के विकासखण्डों में तिलहन की अधिशेष मात्रा एवं आयल मिल की नई इकाइयों की संख्या

क्र0 सं0	विकासखण्ड	उत्पादन मीट्रिकटन	मिलों की संख्या	औसत वार्षिक खपत प्रति इकाई 50 मीट्रिकटन	अधिशेष मात्रा	अधिशेष मात्रा के आधार पर नई इकाइयों की संख्या	नव रोजगार सृजन
1	कुरारा	493.92	19	(–)950	–	–	–
2	सुमेरपुर	890.80	30	(–)1500	–	–	–
3	सरीला	315.28	07	(–)350	–	–	–
4	गोहाण्ड	240.38	08	(–)400	–	–	–
5	राठ	147.74	23	(–)1150	–	–	–
6	मुस्करा	385.61	12	(–)600	–	–	–
7	मौदहा	2270.78	15	750	1520.78	30	125
जनपद हमीरपुर		4734.51	114	(–)5700	–	30	125
8	पनवाड़ी	762.82	07	350	412.82	8	35
9	जैतपुर	802.76	18	(–)900	–	–	–
10	चरखारी	1423.91	11	550	873.91	17	70
11	कबरई	1468.79	13	650	818.79	16	64
जनपद महोबा		4458.28	49	2450	2008.28	41	169
12	जसपुरा	191.42	4	(–)200	–	–	–
13	तिन्दवारी	448.15	6	300	148.15	2	8
14	बड़ोखर खुर्द	909.09	19	(–)950	–	–	–
15	बबेरु	358.21	8	(–)400	–	–	–
16	कमासिन	310.07	3	150	160.07	3	12
17	विसण्डा	77.45	3	(–)150	–	–	–
18	महुआ	104.40	4	(–)200	–	–	–
19	नरैनी	232.74	7	(–)350	–	–	–
जनपद बांदा		2631.53	54	(–)2700	–	5	20
20	पहाड़ी	399.83	4	200	199.83	3	12
21	कर्वी	403.67	13	(–)650	–	–	–
22	मानिकपुर	368.52	5	250	118.52	2	8
23	रामनगर	202.53	3	150	52.53	1	4
24	मऊ	201.16	6	(–) 330	–	–	–
जनपद चित्रकूट		1575.71	31	1550	25.71	6	24
चित्रकूट–धाम मण्डल		13400.03	248	12400	1000.03	82	338

चित्रकूट धाम मण्डल में गेंहूँ का कुल उत्पादन 519387.87 मीट्रिकटन है सर्वाधिक उत्पादन बांदा जनपद में 182927.06 मीट्रिकटन है। इसके बाद हमीरपुर जनपद में 167483.32 मीट्रिकटन, महोबा जनपद में 88532.29 मीट्रिकटन तथा चित्रकूट जनपद में 80445.20मीट्रिकटन हैं। मण्डल में छोटी आटा

मिलों या चक्कियों की संख्या 2259 हैं। मध्यम स्तर की आटा मिलें नहीं है अतः बांदा तथा हमीरपुर में दो मध्यम आकार की आटा मिलें स्थापित की जा सकती है और रवा, मैदा, आटा का उत्पादन किया जा सकता है।

मण्डल में गन्ने का औसत वार्षिक उत्पादन 235060.01 मीट्रिकटन है। सर्वाधिक उत्पादन हमीरपुर जनपद में 148783.64 मीट्रिकटन हैं। एक मध्यम स्तर की सुगर मिल में गन्ने की सीजन में खपत लगभग 100000 मीट्रिकटन है, इसलिए हमीरपुर जनपद में राठ विकासखण्ड में मध्यम स्तर की सुगर मिल स्थापित की जा सकती है। महोबा जनपद के सरोवरों में अधिक मात्रा में कमल गट्टे का उत्पादन होता है, इसलिए चरखारी एवं महोबा में मखाना उद्योग की इकाई स्थापित की जा सकती है।

11(v) नवीन औद्योगिक केन्द्रों का सुझाव (Suggestion of New Industrial Centers):–

चित्रकूट धाम मण्डल के तीव्र आर्थिक विकास के लिए नवीन औद्योगिक केन्द्रों का समुचित विकास आवश्यक है। ये औद्योगिक विकास केन्द्र, विकास उपकेन्द्र तथा सेवाग्राम के रुप में हो सकते हैं। विकास केन्द्र (Growth Centres) जनपद या तहसील स्तर, विकास उपकेन्द्र (Growth Foci) विकासखण्ड स्तर तथा सेवाग्राम (Service Village) न्यायपंचायत स्तर पर हो सकता हैं नवीन औद्योगिक केन्द्र जीवीय संसाधनों की अतिरिक्त मात्रा को ध्यान में रखते हुए स्थापित करना चाहिए। ये केन्द्र केन्द्रीय स्थानों के रुप में होते हैं जो अपने समीपवर्ती क्षेत्र के अधिवासों की सेवा करते हैं। अध्ययन क्षेत्र मे सुझाये गए नवीन औद्योगिक केन्द्र समस्त क्षेत्र में 'प्रकाश स्तम्भ' का कार्य करने में समर्थ होंगे।

"These industrial growth points will works as a 'Switch Board' to infuse energy for the industrial growth of the region. the invigourating of these growth points will bring a balance in regional development by generating employment opportunities in suggested small scale and house hold industries based on local materials.'

चित्रकूट धाम मण्डल में नवीन औद्योगिक केन्द्रों की पहचान के लिए जैविक संसाधनों पर आधारित उद्योगों के विभिन्न समूहों के धनात्मक एवं ऋणात्मक विचलन निकालकर स्थानीयकरण के गुणांक का आंकलन किया है। (परिशिष्ट संख्या– 11.1, 11.2, व 11.3) एवं विभिन्न स्तरों के विकास बिन्दुओं की पहचान के लिए समाकलन पद्धति अपनायी गयी है। परिशिष्ट सं0 11–4 में दर्शाया गया ऋणात्मक विचलन विकासखण्ड स्तर पर उद्योगों के अस्तित्वात्मक संकेन्द्रण को संकेत करता है जो अधिकांशतः विकासखण्ड मुख्यालयों पर संकेन्द्रित हैं। तथा धनात्मक विचलन मुख्यालयों में उद्योगों के संकेन्द्रण की आवश्यकता को प्रदर्शित करते हैं। चित्रकूट–धाम मण्डल के बड़े नगरों– बांदा, कर्वी, महोबा, राठ, हमीरपुर, में जैविका संसाधनों पर आधारित लघु तथा कुटीर उद्योगों का केन्द्रीकरण हुआ है। अतः चित्रकूट धाम मण्डल में उद्योगों के विकेन्द्रीकरण की आवश्यकता है।

निम्नलिखित तालिका में चित्रकूट धाम मण्डल में औद्योगिक विकास केन्द्रों (Industrial growth centres] उपकेन्द्रों (Foci) तथा सेवाग्रामों (Service Villages) को दर्शाया गया है।

तालिका संख्या–11–4

चित्रकूट धाम मण्डल में औद्योगिक विकास केन्द्र, उपकेन्द्र तथा सेवाग्राम

विकास केन्द्र (Growth centres)	विकास उपकेन्द्र (Growth Foci)	सेवाग्राम (Service Villages)
1. हमीरपुर	कुरारा	a) पतारा डांडा b) झलोखर c) बेरी स्टेट
2. सुमेरपुर	(i) छानी बुजुर्ग (ii) टेढ़ा	a) पौथिया b) इंगोहटा a) चन्दपुरवा b) सुरौली बुजुर्ग c) पत्यौरा
3. मौदहा	(i) बिंवार (ii) मुस्करा (iii) गहरौली (iv) ग्योड़ी	a) अमिलिया b) उमरी a)बसवारी b) बिहूनी खुर्द a) पहाड़ी भिटारी b) अरतरा a) खन्ना b) खंडेह c) सिसोलर
4. राठ	(i) सरीला (ii) गोहाण्ड (iii) चिल्ली	a) चन्दौत डांडा b) बिलगाँव a) इटेलिया बाजा b)जाराखर a) अकौना
5. महोबा	(i) कबरई (ii) श्रीनगर	a) रिवई सुनियां b) बिलबई a) सिजेहरी b) ननौरा
6. चरखारी	(i) सूपा	a) गुढ़ा b) रिवई
7. कुलपहाड़	(i) पनवाड़ी (ii) जैतपुर	a) किलहोवा b) गोरिहारी a) अजनर
8. बांदा	(i) तिंदवारी (ii) खप्टिहाकलां (iii) तिंदवारा	a)जोहारपुरb)जारीa)गडरिया b)पपरेंदाc)पैलानीd)जसपुरा a) मटौंध b) गुरेह
9. अतर्रा	(i) विसण्डा (ii) महुआ (iii) रसिन	a) पुनाहुर a) खुरहण्ड b) बिलगांव c) खम्हौरा a) पोहार b) बदौसा c) तुर्रा
10. नरैनी	(i) गुढाकलां (ii) गिरवां	a) तरहटी कालींजर b) करतल c) सढ़ा d) बड़ोखर बुजुर्ग
11. बबेरु	(i) मरका (ii) हरदौली (iii) कमासिन (iv) ओरन	a) पिंडारन b) इंगुवा a) सिमौनी b) मुरवल a) बीरा a) भदेहदू b) कुर्रही c) सिंहपुर
12. कर्वी	(i) पहाड़ी बुजुर्ग (ii) मानिकपुर (iii) भौंरी	a) ओरा b) परसौंजा c) सिंहपुर c) भैसौंधा a) सरैंया b) केहुनिया c) भैसौंधा a) रैपुरा
13. राजापुर	(i) रामनगर	a) नादिन्न–कुर्मियान b) छीबों
14. मऊ	खण्डेहा	a) बरगढ़ b) हन्ना बिनैका

उपयुर्क्त तालिका से स्पष्ट है कि चित्रकूट धाम मण्डल में 14 विकास केन्द्र, 32 विकास उपकेन्द्र तथा 68 सेवाग्राम औद्योगिक वातावरण उत्पन्न कर विकसित हो सकते हैं। ये केन्द्र विभिन्न उद्योगों के

Fig. 11.1
CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
PROSPECTIVE INDUSTRIAL UNITS
FOR VARIOUS GROWTH CENTRES &FOCI
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
KURARA
HAMIRPUR
SUMERPUR
TEDA
CHHANI BUZURG
SARILA
GOHAND
BINWAR
MAUDAHA
MUSKARA
GAHRAULI
RATH
PANWARI
CHARKHARI
KULPAHAR
JAITPUR
SUPA
MAHOBA
SRINAGAR
KABRAI
BANDA
TINDWARA
KHAPTIHA KALAN
TINDWARI
MARKA
KAMASIN
BABERU
HARDAULI
BISANDA
ORAN
MAHUA
GIRWAN
ATARRA
NARAINI
GURHA KALAN
RASIN
KARWI
PAHARI
RAJAPUR
RAMNAGAR
MAU
KHANDEHA
BHAUNRI
MANIKPUR
INDEX
1- RICE PLANT
2- MINI RICE PLANT/RICE HULLING UNITS
3- RICE BRON OIL MILL
4- DAL MILLING UNITS
5- OIL MILLS/OIL EXTRACTION
6- FLOOR MILL/ATTA CHAKKIES
7- BEKERY
8- GUR&KHANDSARI MAKING UNITS
9- MASALA GRAINDING
10- PAPAD MAKING UNITS/NAMKEEN MAKING UNITS
11- HOUSE HOLD INDUSTRY
12- AGRICULTURAL IMPLEMETS
13- PRESERVATION AND PACKING OF BETEL LEAVES
14- FRUIT- VEGITABLE PRESERVATION
15- COTTON SPINNING
16- HAND LOOM INDUSTRY
17- CLOTH DYEING
18- DURRI AND CARPET WEAVING
19- READY MADE GARMENTS
20- EMBROIDARY
21- DAIRYING
22- LETHER-INDUSTRY
23- MEAT PRODUCTION UNITS
24- WOOLEN TEXTILE INDUSTRY
25- BONE MILL
26- ICE CANDY AND ICE CREAM INDUSTRY
27- FURNITURE MAKING
28- SAW MILLING
29- WOODEN TOYS
30- DONA-PATTAL MAKING
31- AGARBATTI MAKING
32- CARPENTRY
33- AYURVEDIC MEDICINE MANUFACTURING
34- BASKET MAKING
35- BIRI MAKING
36- ROPE MAKING
37- CARD BOARD MAKING
38- PAPER MAKING

CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
SUGGESTED PROSPECTIVE INDUSTRIAL UNITS FOR VARIOUS SERVICE VILLAGES
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
JHALOKHAR
PATARA
DANDA
BERI
PAUTHIA
PATEORA
SURAULI
JASPURA
CHANDAUT DANDA
BIL GAON
CHAND PURWA
INGOHATA
GADARIYA
UMARI
ITAILIYA BAJA
BASWARI
AMILIYA
ARTARA
SISOLAR
PAILANI
JOHARPUR
PINDARAN
PAPRENDA
AKUNA
BHUNI KHURD
PAHARI BHITARI
JARAKHAR
SIMAUNI
BIRA
INGUA
JARI
KHANDEH
MURUAL
RIWAI
KHANNA
MATOUNDH
GUREH
BHADEHDG
ORA
KILAHOWA
GORIHARI
GORHA
RIVAI SUNIAYAN
BILBAI
KURRAHI
PUNAHUR
SINGH PUR
MAHUA
BADOKHAR
KHURHAND
BUZURG
KHAMHAURA
PARSAUNIA
NADINKURMAIN
CHHIBON
HANNA BINAIKA
RAIPURA
BHASONDHA
POHAR
GIRAWAN
BARGARH
SUEHRI
NANAURA
TURRA
BADAUSA
AJNAR
SADHA
SARAIYAN
KALINJAR
KEHUNIA

Fig. 11.2

स्थानीयकरण के लिए उपयुक्त, सार्थक एवं सामर्थ्य हैं और चित्रकूट धाम मण्डल के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। इन विकासकेन्द्रों, उप विकास केन्द्रों तथा सेवाग्रामों में विभिन्न उद्योगों के स्थानीयकरण की उपयुक्तता, सार्थकता एवं सामर्थ्य का वर्णन निम्नलिखित है।

विकास केन्द्र (Growth Centres) :–

1. **हमीरपुर (Hamirpur)** :– यह जनपद मुख्यालय है जो यमुना तथा वेतवा नदियों के संगम पर स्थित है। यह कानपुर, कालपी तथा महोबा से सड़कों द्वारा जुड़ा हुआ है। इसकी 1991 की जनगणनानुसार कुल जनसंख्या 26835 है तथा औद्योगिक जनसंख्या 343 है। इस केन्द्र में विभिन्न उद्योगों के विकास के लिए यातायात तथा संचार के साधन, विद्युत आपूर्ति, सस्ता श्रम, बाजार आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ पर लकड़ी के फर्नीचर बनाने, बेकरी तथा बिस्कुट बनाने, फल सब्जी संरक्षण उद्योग, तेल पेरने, आटा मिल, आरा मशीन, तथा नमकीन उद्योग मसाला पिसाई एवं पैकिंग, डेयरी उद्योग, चमड़े का जूता बनाने का उद्योग स्थापित किए जा सकते हैं।

विकास उपकेन्द्र (Growth Foci) :–

कुरारा (Kurara) :–

यह कालपी–हमीरपुर सड़क मार्ग पर स्थित विकासखण्ड मुख्यालय है। यहाँ यातायात– संचार, विद्युत आपूर्ति, बैंक, आदि की सुविधाएं उपलब्ध हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 8661 थी जिसमें 207 उद्योगों में कार्यरत जनसंख्या थी। यहाँ पर कृषि यन्त्र बनाने, फल सब्जी संरक्षण उद्योग, तेल पेरने, आटा चक्की, फर्नीचर–बनाने, गुड़ बनाने, चमड़ा उद्योग तथा आइसक्रीम बनाने का उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं।

सेवाग्राम (Service Villages):–

a) **पतारा डांडा (Patara Danda)** :– कुरारा विकास खण्ड का यह गाँव बेतवा नदी से 3 किमी0 की दूरी पर स्थित है। यहाँ डाकखाना, अस्पताल, माध्यमिक विद्यालय आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ वनाधारित उद्योग धन्धे जैसे– खिलौना बनाना, टोकरी बनाना, काष्ठ फर्नीचर बनाना, आदि उद्योगों का इस केन्द्र पर विकास हो सकता है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 4965 थी जिसमें 60 औद्योगिक कर्मी थे।

b) **झलोखर (Jhalokhar)** :– झलोखर कालपी–हमीरपुर सड़क मार्ग पर हमीरपुर से 10 किमी0 की दूरी पश्चिम दिशा की ओर स्थित है। यहाँ पर टेलीफोन, विद्युत आपूर्ति, डाकखाना, इण्टर कालेज, संस्कृत महाविद्यालय आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ तेल पेरने, दाल प्रशोधन, गृहापयोगी काष्ठ उपकरण बनाने वाली इकाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं। 1991 में यहाँ की जनसंख्या 3865 थी। जिसमें 16 औद्योगिक कर्मी थे।

c) **बेरी (Beri)** :– यह बेतवा नदी के बायें किनारे पर स्थित है। यहाँ पर यातायात, दूर संचार, डाकखाना, चिकित्सालय, तथा डेली मार्केट की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ पर गृहोपयोगी काष्ठ उपकरण बनानें, काष्ठ फर्नीचर बनाने, आरा मशीन, तेल पेरने आटा पीसने आदि उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है। 1991 में यहाँ की कुल जनसंख्या 3859 थी जिसमें 24 व्यक्ति उद्योगों में लगे थे।

Fig. 11.3

CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
INFRA - STRUCTURAL FACILITIES
2001 - 02
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
KURARA
HAMIRPUR
SUMERPUR
JASPURA
SARILA
GOHAND
MUSKARA
MAUDAHA
TINDWARI
BABERU
KAMASIN
RATH
BANDA
KABRAI
PANWARI
CHARKHARI
MAHOBA
KULPAHAR
JAITPUR
MAHUA
KHURHAND
BISANDA
ATARRA
NARAINI
KARWI
PAHARI
RAJAPUR
RAMNAGAR
MAU
MANIKPUR
INDEX
POST & TELEGRAPH
TELEPHONE
HOSPITAL
INDUSTRIAL ESTATES
SUGGESTED INDUSTRIAL ESTATES
TECHNICAL INSTITUTION
IMPORTANT MARKET CENTRES

2. विकास केन्द्र – सुमेरपुर (Sumerpur) :– यह हमीरपुर जनपद का विकासखण्ड मुख्यालय है, जो बांदा– कानपुर रेलमार्ग तथा महोबा– कानपुर सड़क मार्ग पर स्थित है। यह बांदा से भी सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। इसकी 1991 की जनगणनानुसार कुल जनसंख्या 18354 थी। जिसमें 615 औद्योगिक कर्मी थे। यह चित्रकूट धाम मण्डल की प्रमुख औद्योगिक नगरी है। यहाँ औद्योगिक आस्थान है। यहाँ यातायात, दूर संचार, विद्युत आपूर्ति, बैंक, चिकित्सालय, डाकखाना, इण्टरमीडिएट कालेज आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ पर सीमेन्ट उद्योग (शिवा सीमेन्ट फैक्ट्री), (ध्रुव सीमेन्ट फैक्ट्री), साबुन उद्योग (हिन्दुस्तान लीवर), आयरन व स्टील उद्योग (रिमझिम आयरन स्टील तथा हंस कास्टिंग फैक्ट्री) स्थापित है। यहाँ वन पशु तथा कृषि आधारित उद्योग धन्धों के विकास की भी संभावनाएँ हैं। यहाँ पर खाद्य तेल मिलें, आटा मिल, गुड़ बनाने का उद्योग, आरा मशीन, कागज उद्योग, लकड़ी का फर्नीचर उद्योग, कपड़ों में रंगाई–छपाई उद्योग, डेयरी उद्योग, चमड़ा उद्योग, आइसक्रीम उद्योग, स्थापित किये जा सकते हैं।

विकास उपकेन्द्र:–

(i) छानी बुजुर्ग (Chhani Buzurg) :– यह हमीरपुर–राठ रोड़ पर हमीरपुर मुख्यालय से 36 किमी0 दूर स्थित है। यहाँ डाकखाना, बैंक, चिकित्सालय, दूरसंचार आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ की 1991 की जनगणनानुसार जनसंख्या 2263 है जिसमें 24 औद्योगिक कर्मी हैं। स्थानीय कच्चेमाल के आधार पर यहाँ तेल मिल, आटा मिल, आरा मशीन, फर्नीचर उद्योग, अगरबत्ती उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं।

सेवाग्राम :–

a) पौथिया (Pouthia) :– यह बेतवा नदी के दाहिने किनारे पर राठ–हमीरपुर सड़क मार्ग के किनारे हमीरपुर मुख्यालय से 10 किमी0 की दूरी पर स्थित है। इस सेवाग्राम में कृषि, वन, तथा पशु आधारित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है। तेल मिल, आटा चक्की, गृहापयोगी काष्ठोपकरण उद्योग, हथकरघा उद्योग, सूती वस्त्रों की रंगाई उद्योग, चर्मशोधन उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 4360 थी। जिसमें 113 औद्योगिक कर्मी थे।

b) इंगोहटा (Ingohata) :– इंगोहाटा बांदा–कानपुर रेलमार्ग के समीप स्थित है। यहाँ डाकखाना, चिकित्सालय, यातायात, दूरसंचार, विद्युत आपूर्ति, सस्ता मानवीय श्रम आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ कृषि तथा वनाधारित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है। यहाँ दाल मिलें, तेल मिलें आटाचक्की, काष्ठ कृषि उपकरण उद्योग स्थापित कर सकते हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 7711 तथा औद्योगिक जनसंख्या 146 थी।

ii) विकास उपकेन्द्र – टेढ़ा (Teda) :– टेढ़ा सुमेरपुर विकासखण्ड में हमीरपुर जनपद के पूर्वी भाग में स्थित है। 1991 में यहाँ की कुल जनसंख्या 6361 थी। जिसमें औद्योगिक जनसंख्या 152 थी। इसका चतुर्दिक क्षेत्र कृषि उत्पादों में धनी है। अतः यहाँ कृषि आधारित उद्योग धन्धों का विकास किया जा सकता है।

सेवाग्राम

a) चन्द्रपुरवा (Candrapurwa) :– यह बांदा कानुपर रेलमार्ग के पूर्व में भरुवा–सुमेरपुर रेलवे स्टेशन से दक्षिण दिशा में 4 किमी0 की दूरी पर स्थित है। यहाँ विद्युत आपूर्ति, दूरसंचार, तथा डाकखाने की सुविधायें उपलब्ध हैं। यहाँ पर कृषि तथा पशु आधारित उद्योगों का विकास हो सकता है। जैसे– दाल उद्योग, खाद्य तेल उद्योग, आटा उद्योग आदि। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 3747 थी जिसमें 16 औद्योगिक कर्मी थे।

CHITRAKUT DHAM DIVISION (U.P.)
MARKET - CENTRES
Fig. 11.4
79°30'E
80°
30'
81°
81°30'E
26° N
30'
25°
24° 30' N
10 0 10 20 30 40
KILOMETERS
HAMIRPUR
KURARA BERI
SUMERPUR
JASPURA
SARILA
PAILANI
GOHAND
MAUDAHA
TINDWARI
MUSKARA
BABERU
RATH
KAMASIN
BANDA
CHARKHARI
PANWARI
KABRAI
BISANDA
PAHARI
RAJAPUR
KHURAHAND
KULPAHAR
RAMNAGAR
MAU
BARGARH
ATARRA
KARWI
CHITRAKUT DHAM
MAHOBA
BADAUSA
JAITPUR
NARAINI
MANIKPUR
INDEX
DAILY MARKET
WEEKLY MARKET
BI-WEEKLY MARKET

b) सुरौली बुजुर्ग (Surauli Buzurg) :— सुरौली बुजुर्ग सुमेरपुर विकासखण्ड में उत्तर–पूर्व में यमुना नदी के निकट स्थित है। यहाँ पर वनाधारित तथा कृषि आधारित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है जैसे– टोकरी बनाना, बढ़ईगिरी, फर्नीचर (काष्ठ) बनाना, तेल पेरना, आटा पीसना आदि। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 5142 थी, जिसमें 51 औद्योगिक कर्मी थे।

c) पत्यौरा (Pateora) :— यह यमुना साउथ बैंक रेलवे स्टेशन के पास स्थित है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 3417 थी, जिसमें 21 औद्योगिक कर्मी थे। यहाँ कृषि, वन तथा पशु आधारित उद्योगों का विकास हो सकता है। जैसे– तेल पेरना, आटाचक्की, आरा मशीन, गृहोपयोगी काष्ठ उपकरण बनाने का उद्योग, चर्मशोधन उद्योग आदि स्थापित किये जा सकते हैं।

3. विकास केन्द्र– मौदहा (Maudaha) :— यह उत्तर मध्य रेलवे का बांदा कानपुर रेलमार्ग पर स्थित एक रेलवे स्टेशन है। यहाँ पर एक बड़ा बाजार, नगर पालिका परिषद, बैंक, डाकखाना, यातायात तथा संचार के साधन, चिकित्सालय तथा महाविद्यालय आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 26520 है जिसमें 138 औद्योगिक कर्मी सम्मिलित है। इस विकास केन्द्र पर खादी तथा सूती वस्त्र बनाने, (हथकरघा उद्योग), तेल मिल मसाला पिसाई एवं पैकिंग, रजाई एवं तकिया बनाने, चमड़े के जूते तथा बैग बनाने, मांस उद्योग, बोन मिल आदि उद्योग विकसित हो सकते हैं।

(i) उपकेन्द्र – बिवांर (Binwar) :— यह हमीरपुर–राठ रोड़ पर स्थित एक वृहद गाँव है। यह हमीरपुर मुख्यालय से 44 किमी0 की दूरी पर स्थित है। 1991 में यहाँ की कुल जनसंख्या 7418 थी जिसमें 52 औद्योगिक कर्मी थे। यहाँ पर कृषि तथा वन पर आधारित उद्योगों जैसे– फर्नीचर उद्योग, कृषि यन्त्र बनाने का उद्योग, तेल मिल, दाल मिल, आटा चक्की, नमकीन बनाने का उद्योग तथा चमड़ा उद्योग की इकाइयाँ स्थापित की जा सकती है। यहाँ बैंक चिकित्सालय, डाकखाना, टेलीफोन, विद्युत आपूर्ति आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

सेवाग्राम :—

(a) अमिलिया (Amiliya) :— अमिलिया राठ–मौदहा रोड़ के दाहिनी ओर स्थित है। यह एक वृहद् गाँव हैं। इस गाँव के चारों ओर उर्वरा भूमि होने के कारण यह कृषि–उत्पादों में धनी है। इस गाँव में यातायात, दूरसंचार, बाजार तथा सस्ते श्रम की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ कृषि आधारित उद्योगों का विकास हो सकता है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 4994 थी जिसमें औद्योगिक जनसंख्या 29 थी।

(b) उमरी (Umari) :— यह गाँव राठ–हमीरपुर सड़क मार्ग से 3 किमी0 की दूरी पर स्थित है। यहाँ डाकखाना, विद्युत आपूर्ति, डेली मार्केट की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इस सेवाग्राम में कृषि आधारित उद्योग धन्धों का विकास सम्भव है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 4280 थी जिसमें औद्योगिक कर्मी 30 सम्मिलित हैं।

(ii) उपकेन्द्र – मुस्करा (Muskara) :— हमीरपुर– राठ रोड़ पर स्थित यह एक वृहद् गाँव है जो मौदहा से भी सडक मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 9398 थी तथा औद्योगिक जनसंख्या 212 थी। यहाँ पर आरा मशीन, कृषि यन्त्र बनाने का उद्योग, आटा उद्योग, गुड बनाने का उद्योग तथा कुटीर उद्योगों के विकास की काफी सम्भावनाएँ हैं।

सेवाग्राम :—

(a) बसवारी (Baswari :— बसवारी मुस्करा के समीप राठ–हमीरपुर रोड़ के दाहिनी ओर स्थित है। यह एक नोडल प्वाइन्ट की तरह विकसित हो सकता है। राठ–मौदहा रोड़ इस गाँव को दो भागो में

विभक्त करता है। यहाँ पर डाकखाना, बाजार, यातायात, दूरसंचार, विद्युत आपूर्ति, सस्ते श्रमिक की सुविधाएँ उपलब्ध हैं, इसलिए यहाँ कृषि तथा पशु आधारित उद्योगों का विकास हो सकता है। दाल प्रशोधन, तेल पेरना, रस्सी बनाना, टाटपट्टी बनाना, चर्मशोधन आदि उद्योगों का विकास हो सकता है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 4070 थी जिसमें औद्योगिक जनसंख्या 31 सम्मिलित है।

(b) **बिहूनीखुर्द (Bihuni Khurd)** :– बिहुनी खुर्द बीरमा नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। राठ–हमीरपुर सड़क इस गाँव से होकर गुजरती है। यहाँ यातायात, दूरसंचार, बाजार, आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इसके चतुर्दिक कृषि तथा वन संसाधन पर्याप्त मात्रा में मौजूद है इसलिए यहाँ टोकरी बनाना, काष्ठोपकरण बनाना, दाल प्रशोधन, तेल पेरना, आटा पीसना आदि उद्योग विकसित हो सकते हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 3839 थी जिसमें 34 औद्योगिक जनसंख्या सम्मिलित है।

(iii) उपकेन्द्र – गहरौली (Gahrauli) :– मुस्करा विकासखण्ड में स्थित हमीरपुर जनपद का सबसे बड़ा गाँव है, जिसकी जनसंख्या 1991 की जनगणनानुसार 9596 हैं, जिसमें 192 औद्योगिक कार्यकर्त्ता है। सड़क मार्ग से दूर स्थित होने के कारण इसकी यातायात की दृष्टि से स्थिति अच्छी नहीं है। कृषि उत्पादों के आधिक्य के कारण यहाँ पर तेल मिल, दाल मिल, कृषि यन्त्र बनाने, तथा अन्य कुटीर उद्योग धन्धों की इकाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं।

सेवाग्राम :–

(a) **पहाड़ी भिटारी (Pahari Bhitari)** :– पहाड़ी भिटारी चरखारी–झाँसी रोड के पूर्व में स्थित है। मुस्करा यहाँ से लगभग 5 किमी0 दूर है। यहाँ पर यातायात, दूरसंचार तथा बाजार की सुविधाएँ हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 4755 थी, जिसमें 66 औद्योगिक जनसंख्या सम्मिलित है। इस गाँव में कृषि आधारित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है।

(b) **अरतरा (Artara)** :– मौदहा नगरपालिका परिषद के उत्तर–पूर्व में स्थित अरतरा एक वृहद् गाँव है। इस गाँव में दाल प्रशोधन, तेल पेरना, रस्सी बनाना, फर्नीचर बनाना, चर्मशोधन आदि उद्योग विकसित हो सकते हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 4752 थी जिसमें 118 औद्योगिक कर्मी थे।

(iv) उपकेन्द्र – ग्योड़ी (Geori):– ग्योड़ी मौदहा तहसील के दक्षिण में स्थित है और दक्षिण की ओर निकट ही सिहू (Sihu) नदी प्रवाहित होती है। इस विकास उपकेन्द्र में एक हाईस्कूल, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा डेली मार्केट की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। कृषि उत्पादों की दृष्टि से इसका चतुर्दिक क्षेत्र अत्यधिक धनी है, जिससे कृषि आधारित उद्योग धन्धों के विकास की अच्छी सम्भावनाएँ हैं। यहाँ कृषि यन्त्र निर्माण, फर्नीचर बनाने, आटा चक्की, तेलमिल, तथा अन्य कुटीर उद्योग स्थापित किये जा सकते है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 8378 थी, जिसमें 81 औद्योगिक कर्मी सम्मिलित थे।

सेवाग्राम :–

(a) खन्ना ;Khanna) :– खन्ना महोबा–कबरई–हमीरपुर सड़क मार्ग पर स्थित है। यहाँ पुलिस स्टेशन, डाकखाना, यातायात एवं संचार, विद्युत आपूर्ति तथा बाजार की सुविधाएँउपलब्ध हैं। यहाँ कृषि आधारित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है। जिनमें तेल मिल, आटा चक्की, दाल मिल प्रमुख है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 3870 थी जिसमें 34 औद्योगिक जनसंख्या थी।

(b) खण्डेह (Khandeh) :– यह महोबा–हमीरपुर रोड़ पर स्थित है। इस विशाल गाँव की जनसंख्या 1991 में 5335 थी जिसमें 52 औद्योगिक कर्मी सम्मिलित थे। यहाँ पर काष्ठ फर्नीचर बनाना, दरी बुनना, सूत कातना, चर्मशोधन, तथा अन्य कुटीर उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है।

(c) सिसोलर (Sisolar) :– यह गाँव मौदहा तहसील के उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 4203 थी जिसमें 37 औद्योगिक कर्मी थे। यहाँ पर दाल मिल, आटा मिल, कृषि यन्त्र बनाने तथा फर्नीचर बनाने के उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं।

4. विकास केन्द्र– राठ (Rath) :– यह एक तहसील तथा विकासखण्ड मुख्यालय है, जो महोबा, हमीरपुर तथा उरई से सड़कमार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। यहाँ पर यातायात,दूरसंचार, विद्युत आपूर्ति, चिकित्सालय, बैंक, इण्टरकालेज तथा महाविद्यालय आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। 1991 की जनगणनानुसार इसकी कुल जनसंख्या 42696 है जिसमें 640 औद्योगिक कर्मी सम्मिलित हैं। यहाँ पर कृषि, वन तथा पशु आधारित उद्योग धन्धों के विकास की अच्छी सम्भावनाएँ हैं। कृषि यन्त्र निर्माण, फर्नीचर उद्योग, दाल मिल, खाद्य तेल मिल, आटा मिल, पशुआहार मिल, मसाला पिसाई तथा पैकिंग, आरा मशीन (सा मिल), आयुर्वेदिक दवा बनाने, रेडीमेड गारमेन्ट्स बनाने, चमड़ा उद्योग, तथा डेयरी उद्योग, ऊनी वस्त्र उद्योग आदि की इकाइयाँ स्थापित की जा सकती है।

(i) उपकेन्द्र– सरीला (Sarila) :– सरीला तहसील तथा विकासखण्ड मुख्यालय है। यहाँ यातायात, दूरसंचार, विद्युत आपूर्ति, चिकित्सालय तथा बैंक आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ कृषि, वन तथा पशु आधारित उद्योग धन्धों जैसे कृषि यन्त्र निर्माण, फर्नीचर बनाने, बीड़ी बनाने, आटा चक्की, तेल पेरने, तथा डेयरी उद्योग आदि कुटीर उद्योगों का विकास किया जा सकता है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 7413 थी, जिसमें 104 औद्योगिक कर्मी थे।

सेवाग्राम :–

(a) चन्दौत डांडा (Chandaut Danda) :– यह गाँव राठ–चन्दौत डांडा रोड के दाहिनी किनारे पर स्थित है। इसके चतुर्दिक प्रचुर कृषि तथा वन उत्पाद मौजूद है, इसलिए इनसे सम्बन्धित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है। यहाँ डाकखाना, विद्युत आपूर्ति आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। 1991 की जनगणना के अनुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 4656 थी जिसमें 451 औद्योगिक जनसंख्या सम्मिलित है।

(b) बिलगाँव (Bilgaon) :– यह गाँव चरखारी– जलालपुर रोड़ पर स्थित है। बिरमा नदी इस गाँव के पास से ही प्रवाहित होती है। इस गाँव में कृषि तथा वन से सम्बन्धित उद्योगों का विकास हो सकता है, जैसे :– कृषियन्त्र बनाना, बैलगाड़ी बनाना, टोकरी बनाना, आटाचक्की, तेल पेरना, दाल प्रशोधन, मिनी प्लान्ट आदि। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 4118 थी, जिसमें 57 औद्योगिक जनसंख्या थी।

(ii) उपकेन्द्र – गोहाण्ड (Gohand) :– यह विकासखण्ड मुख्यालय है, जो उरई–राठ सडक–मार्ग पर स्थित है। यहाँ यातायात–दूरसंचार, विद्युत आपूर्ति, बाजार, चिकित्सालय आदि की उचित सुविधाएँ उपलब्ध हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 6478 थी जिसमें 168 औद्योगिक कर्मी सम्मिलित है। यहाँ पर कृषि यन्त्र निर्माण उद्योग, काष्ठ फर्नीचर उद्योग, लकड़ी चिराई (सा मिल) उद्योग, तथा अगरबत्ती उद्योग विकसित हो सकते हैं।

सेवाग्राम :–

(a) इटैलिया बाजा (Itailiya Baja) :– यह एक नितान्त ग्रामीण परिवेश वाला गाँव है। यहाँ डाकखाना, बाजार तथा विद्युत की सुविधाएँ उपलब्ध है। यहाँ कृषियन्त्र बनाने, गृहोपयोगी काष्ठ फर्नीचर

बनाने, तेल पेरने, आटा चक्की, टाटपट्टी बनाने, रस्सी–बनाने, चर्मशोधन आदि के उद्योग विकसित हो सकते हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 4191 थी जिसमें औद्योगिक जनसंख्या 101 थी।

(b) जाराखर (Jarakhar):– यह भी एक ग्रामीण परिवेश वाला गाँव है। यहाँ एक डाकखाना, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, डेलीमार्केट, ग्रामीण बैंक, तथा विद्युत आपूर्ति की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। कृषि, वन तथा पशु आधारित उद्योग धन्धों का यहाँ विकास हो सकता है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 4087 थी जिसमें औद्योगिक जनसंख्या 61 थी।

(iii) विकास उपकेन्द्र – चिल्ली (Chilli) :– चिल्ली राठ विकासखण्ड में स्थित एक गाँव है। जिसका चतुर्दिक क्षेत्र कृषि उत्पादों में धनी है। अतः यहाँ कृषि आधारित उद्योगों जैसे– दाल मिल, राइस मिनी प्लान्ट, आटा चक्की, खाद्य तेल मिल, कृषि यन्त्र निर्माण, रस्सी बनाना, आदि का विकास हो सकता है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 43 थी जिसमें 35 औद्योगिक जनसंख्या सम्मिलित है।

सेवाग्राम :– अकौना (Akauna) :– अकौना राठ–मौदहा रोड के दक्षिण में स्थित है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 3787 थी जिसमें 49 औद्योगिक जनसंख्या थी यहाँ पर वनाधारित तथा पशु आधारित उद्योगों का विकास हो सकता है। आरा मशीन (सा मिल), बैलगाड़ी, बनाना, रस्सी बनाना, चर्मशोधन आदि उद्योग विकसित हो सकते हैं।

5– विकास केन्द्र – महोबा (Mahoba) :– यह नवनिर्मित जनपद महोबा का मुख्यालय है तथा औद्योगिक एवं ऐतिहासिक नगर है, जहाँ सभी आवश्यक भौगोलिक एवं सांस्कृतिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जैसे – रेल–सड़क यातायात, विद्युत–आपूर्ति, दूरसंचार, बैंक, शिक्षण–संस्थायें आदि। यहाँ नगरपालिका परिषद भी कार्यरत है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 56247 थी जिसमें 1968 औद्योगिक कर्मी थे। यह उत्तर प्रदेश का प्रमुख पान उत्पादक नगर भी है। यहाँ एक 'औद्योगिक आस्थान' स्थापित है। यहाँ पर बीड़ी बनाना, फर्नीचर बनाना, पान–पत्तियों की पैकिंग, लकड़ी के खिलौने बनाना, अगरबत्ती बनाना, मसाला पिसाई तथा पैकिंग, सिलाई एवं कढ़ाई करना, रेडीमेड गारमेन्ट्स बनाना, हथकरघा उद्योग, दरी बनाना, खाद्य तेल मिल, दाल मिल, चमड़ा उद्योग, डेयरी उद्योग, मांस उद्योग एवं आइसक्रीम उद्योग आदि का विकास हो सकता है।

(i) विकास उपकेन्द्र – कबरई (Kabrai) :– यह झाँसी–मानिकपुर रेलमार्ग तथा झाँसी मिर्जापुर राष्ट्रीय राजमार्ग के पास महोबा से पूर्व 18 किमी0 की दूरी पर स्थित है। यह विकासखण्ड मुख्यालय है, यहाँ विद्युत, यातायात, दूरसंचार, आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ की 1991 की जनगणनानुसार जनसंख्या 14018 है, जिसमें 185 औद्योगिक कर्मी सम्मिलित हैं। यहाँ पर कृषि तथा वनाधारित उद्योग धन्धे जैसे– दाल मिल, खाद्य तेल मिल, कृषि यन्त्र बनाने का उद्योग, रेडीमेड गारमेन्ट बनाने का उद्योग तथा फर्नीचर उद्योग विकसित हो सकता है।

सेवाग्राम :–

(a) रिवई–सुनियां (Rivai-Suniyan) :– रिवई–सुनियां बांदा–महोबा सड़क के निकट महोबा जनपद के कबरई विकासखण्ड में स्थित है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 3951 थी। जिसमें औद्योगिक जनसंख्या 28 सम्मिलित थी। कृषि, पशु तथा वनाधारित लघु उद्योग धन्धे यहाँ विकसित हो सकते हैं।

(b) बिलबई (Bilbai) :– यह बांदा–महोबा रोड के दक्षिण में स्थित है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 4170 थी तथा औद्योगिक जनसंख्या 21 थी। यहाँ डाकखाना तथा हाईस्कूल

है। यहाँ कृषि यन्त्र बनाने, रस्सी बनाने, बैलगाड़ी बनाने, तेल पेरने तथा आटा–मिल की इकाइयाँ विकसित हो सकती हैं।

(ii) विकास उपकेन्द्र – श्रीनगर :– यह गाँव महोबा–मलहरा सड़कमार्ग पर स्थित है, जो महोबा से 18 किमी0 दूर है। यहाँ विद्युत, यातायात, दूरसंचार, तथा बाजार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 8530 थी जिसमें 307 औद्योगिक जनसंख्या थी। यहाँ पर बीड़ी बनाना, तेल पेरना, कृषि यन्त्र बनाना, आटा–चक्की तथा अन्य कुटीर उद्योग – धन्धे विकसित हो सकते हैं। इन उद्योगों के लिए कच्चामाल निकट ही उपलब्ध है।

सेवाग्राम :–

(a) **सिजेहरी (Sijehri)** :– यह महोबा छतरपुर सड़क के दाहिने किनारे पर स्थित वृहद् गाँव है जिसकी 1991 में कुल जनसंख्या 4454 थी जिसमें औद्योगिक जनसंख्या 66 थी। यहाँ डाकखाना, चिकित्सालय, की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ पर कृषि तथा वनाधारित उद्योग धन्धों जैसे– फर्नीचर बनाने, कृषि यन्त्र बनाने, लकड़ी के खिलौने बनाने, रस्सी बनाने, तेलपेरने, तथा आटा चक्की की औद्योगिक इकाइयाँ विकसित हो सकती हैं।

(b) **ननौरा (Nanura)** :– ननौरा महोबा जनपद के जैतपुर विकासखण्ड में स्थित है। 1991 की जनगणनानुसार इसकी जनसंख्या 3985 थी तथा औद्योगिक जनसंख्या 231 थी। यहाँ पर जैविक संसाधनों पर आधारित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है। कृषि यन्त्र बनाने तथा सुधारने, गृहोपयोगी काष्ठोपकरण बनाने, तेल पेरने, आटा पीसने, रस्सी बनाने, चर्मशोधन आदि की औद्योगिक इकाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं।

6– **विकास केन्द्र – चरखारी (Charakhari)** :– यह महोबा जनपद का विकास खण्ड तथा तहसील मुख्यालय है जो महोबा से पक्की सड़क द्वारा जुड़ा हुआ है। यहाँ विद्युत, यातायात, बाजार, दूरसंचार, आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 21073 थी तथा औद्योगिक जनंसख्या 632 थी। लकड़ी का फर्नीचर बनाने, गृहोपयोगी काष्ठ का सामान बनाने, लकड़ी की चिराई करने, स्टेशनरी का सामान बनाने, बीड़ी बनाने, तेल मिल, आटा मिल, ऊनीवस्त्र आदि उद्योगों के विकास की अच्छी सम्भावनायें हैं। सरोवरीय फसलों के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण स्थल है।

विकास उपकेन्द्र – सूपा (Supa) :– सूपा बीरमा नदी की सहायक अर्जुन नदी के दाहिने किनारे पर महोबा–चरखारी सड़क–मार्ग पर स्थित है। रेलवे स्टेशन यहाँ से 3 किमी की दूरी पर स्थित है इसलिए इस केन्द्र को झाँसी–मानिकपुर रेलवेलाइन की यातायात की सुविधाएँ उपलब्ध हो सकती हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 6763 थी जिसमें 108 औद्योगिक कर्मी भी थे। इस उपकेन्द्र पर हथकरघा उद्योग, चर्मशोधन उद्योग, तथा कृषि आधारित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता हैं। यहाँ पर डाकखाना, सार्वजनिक चिकित्सालय इण्टरकालेज एवं टेलीफोन आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

सेवाग्राम :–

(a) **गुढ़ा (Gurha)** :– यह अर्जुन नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 3595 थी जिसमें 50 औद्योगिक कर्मी सम्मिलित हैं। यहाँ वनाधारित उद्योगों का विकास हो सकता है।

(b) **रिवई (Riwai)** :– यह मुस्करा–चरखारी रोड़ पर स्थित है। यहाँ एक डाकखाना है। यहाँ पर तेल पेरने, आटा पीसने, रस्सी बनाने, काष्ठ फर्नीचर बनाने, तथा चर्मशोधन उद्योग विकसित हो सकते

हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 6321 थी जिसमें 145 औद्योगिक जनसंख्या सम्मिलित है।

7– विकास केन्द्र – कुलपहाड़ (Kulpahar) :– यह महोबा–पनवाड़ी–मऊरानीपुर रोड़ पर स्थित है तथा झाँसी–मानिकपुर रेलमार्ग के निकट है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 13814 थी जिसमें 358 औद्योगिक जनसंख्या सम्मिलित है। यह महोबा जनपद का तहसील मुख्यालय है। इस विकास केन्द्र पर हथकरघा उद्योग, खादी दस्त्र उद्योग, कालीन उद्योग, दरी बनाने का उद्योग, तथा फर्नीचर उद्योग विकसित हो सकता है।

(i) विकास उपकेन्द्र – पनवाड़ी (Panwari) :– यह महोबा जनपद में स्थित विकासखण्ड मुख्यालय है जो मऊरानीपुर महोबा रोड़ पर स्थित है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 9280 थी जिसमें 207 औद्योगिक कर्मी थे। यहाँ कृषि यन्त्र बनाने, फर्नीचर बनाने, बीड़ी बनाने तथा रस्सी बनाने के उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं।

सेवाग्राम :–

(a) किलहोवा (Kilahowa) :– किलहोवा कुलपहाड़ तहसील के उत्तरी भाग में स्थित है। यहाँ डाकखाना, डिस्पेन्सरी तथा डेलीमार्केट की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इस सेवाग्राम में कृषि आधारित उद्योगों का विकास हो सकता है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 3351 थी जिसमें 26 औद्योगिक कर्मी थे।

(b) गोरिहारी (Gorihari) :– गोरिहारी कुलपहाड़ तहसील के पूर्वी भाग में स्थित है। यहाँ डाकखाना, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा डेलीमार्केट की सुविधाएँउपलब्ध है। स्थानीय उत्पादों के आधार पर यहाँ कृषि आधारित उद्योगों का विकास हो सकता है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 4641 थी जिसमें 26 औद्योगिक जनसंख्या थी।

(ii) विकास उपकेन्द्र–जैतपुर (Jaitpur):– यह विकासखण्ड मुख्यालय है। जो महोबा–कुलपहाड़–अजनर सड़क मार्ग पर स्थित है। यह चरखारी से सड़कमार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 12989 थी तथा औद्योगिक कर्मी 416 थें। यहाँ पर विशाल सरोवर बेलासागर से जलापूर्ति, टेलीफोन, डाकखाना, विद्युतआपूर्ति, तथा चिकित्सालय आदि की सुविधाएँ प्राप्त हैं। यहाँ पर हथकरघा उद्योग, खादीवस्त्र उद्योग, दरी बनाने का उद्योग, कालीन उद्योग, गृहोपयोगी काष्ठोपकरण बनाने का उद्योग आदि का विकास हो सकता है।

सेवाग्राम :–

अजनर (Ajnar) :– यह गाँव जैतपुर विकासखण्ड के दक्षिण में स्थित है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 4798 थी तथा औद्योगिक जनसंख्या 45 थी। यहाँ पर डाकखाना, दूर संचार, थाना एवं ग्रामीण बैंक की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ पर कृषि एवं वनाधारित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है।

8 विकास केन्द्र– बांदा (Banda) :– बांदा चित्रकूट धाम मण्डल का वृहत्तम विकास केन्द्र है। यहाँ से होकर मानिकपुर–झाँसी रेलमार्ग तथा झाँसी–मिर्जापुर राष्ट्रीय राजमार्ग गुजरते हैं। यह चित्रकूट धाम मण्डल का प्रमुख रेलवे स्टेशन है। यहाँ जिला तथा मण्डल मुख्यालय भी है। यहाँ पर कृषि वन तथा पशु आधारित कई उद्योगों कर विकास हुआ है, जो स्थानीय कच्चे माल पर आधारित है। यातायात तथा दूरसंचार, विद्युत आपूर्ति, चिकित्सालय, शिक्षण संस्थायें, बैंक, प्रधान डाकघर बाजार आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। अतः इसे औद्योगिक नगर के रुप में विकसित किया जा सकता है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ जनसंख्या 96795 थी जिसमें औद्योगिक जनसंख्या 4065 सम्मिलित है। इस विकास

केन्द्र में दालमिल, खाद्य तेल मिल, राइस मिल, मिनी राइस प्लान्ट्स, फल–सब्जी संरक्षण उद्योग, मसाला पिसाई एवं पैकिंग, दरी बुनना, हथकरघा उद्योग, कपड़ों की रंगाई तथा छपाई, सिलाई तथा कढ़ाई, रेडीमेड गारमेन्ट्स बनाना, बीड़ी बनाना, अगरबत्ती बनाना, आरा मशीन, फर्नीचर बनाना, बढ़ईगीरी, डेरी उद्योग, चमड़ा उद्योग, मॉंस उद्योग, आइसक्रीम तथा कैण्डी उद्योग, बोन मिल आदि उद्योग विकसित हो सकते हैं।

(i) **विकास उपकेन्द्र – तिन्दवारी (Tindwari)** – तिंदवारी बांदा जनपद का एक विकासखण्ड मुख्यालय है जो बांदा बहराइच–मुम्बई राष्ट्रीय राजमार्ग में स्थित है। इसका चतुर्दिक क्षेत्र खाद्यान्न, दलहन तथा तिलहन के उत्पादन में धनी है। इसलिए यहाँ दालमिल, आयल मिल, कृषि यन्त्र बनाने, आरा मशीन, फर्नीचर बनाने की औद्योगिक इकाइयाँ विकसित हो सकती हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 7523 थी जिसमें औद्योगिक जनसंख्या 331 थी। यहाँ पर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, टेलीफोन, डाकखाना, बैंक विद्युत आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

सेवाग्राम :–

(a) **जोहारपुर (Joharpur)** :– जोहारपुर यमुना नदी के दाहिने किनारे पर बांदा नगर से उ0पू0 लगभग 35 किमी0 दूर स्थित है यहाँ पर डाकखाना, विद्युत आपूर्ति, यातायात आदि की सुविधाएँ प्राप्त हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 5761 थी और औद्योगिक जनसंख्या 26 थी। यहाँ पर कृषि यन्त्र बनाने, तेल पेरने, आटा चक्की, चर्मशोधन, आदि उद्योग स्थापित किए जा सकते हैं।

(b) **जारी (Jari)** :– यह बड़ोखर खुर्द विकासखण्ड में बांदा–बबेरु कमासिन सड़क मार्ग पर स्थित है जो बांदा से 12 किमी0 दूर पूर्व दिशा में स्थित है। यहाँ पर विद्युत आपूर्ति, डाकखाना, दूरसंचार, आदि की सुविधाएँ उपलब्ध है। इसके चारों ओर का क्षेत्र कृषि उत्पादों में धनी है इसलिए यहाँ कृषि से सम्बन्धित उद्योगों का विकास हो सकता है। यहाँ दाल–मिल, राइस प्लान्ट्स, आटा चक्की, आयल मिल, बढ़ई गीरी, चर्मशोधन आदि उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 5078 थी जिसमें औद्योगिक जनसंख्या 29 थी।

(ii) **विकास उपकेन्द्र – खप्टिहाकलां (Khaptiha Kalan)** :– खप्टिहाकला बांदा जनपद का वृहत्तम गाँव है जो केन नदी के किनारे बांदा नगर से 25 किमी0 दूर उ0प्र0 में स्थित है। इसका चतुर्विद क्षेत्र कृषि उत्पादों में धनी है।, इसलिए यहाँ कृषि से सम्बन्धित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है। यातायात–दूरसंचार, विद्युत–आपूर्ति आदि की सुविधाएँ यहाँ उपलब्ध हैं। यहाँ पर दाल मिल, कृषि यन्त्र बनाने, आटा चक्की, डेयरी उद्योग, चर्मशोधन आदि से सम्बन्धित औद्योगिक इकाइयाँ विकसित हो सकती हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 7693 थी जिसमें औद्योगिक जनसंख्या 164 थी।

सेवाग्राम :–

(a) **गडरिया (Gadariya)** :– यह बांदा जनपद के जसपुरा विकासखण्ड में चन्द्रावल नदी के बाये किनारे पर स्थित है। 1991 की जनगणनानुसार इसकी जनसंख्या 6302 थी तथा औद्योगिक जनसंख्या 37 थी। इसका चतुर्दिक क्षेत्र कृषि उत्पादों में धनी है। यहाँ पर कृषि यन्त्र सुधारने, तेल पेरने, आटा चक्की, काष्ठ उद्योग, चर्मशोधन उद्योग आदि विकसित हो सकते हैं।

(b) **पपरेंदा (Paprenda)** :– पपरेंदा जनपद मुख्यालय से लगभग 15 किमी0 दूर बांदा– चिल्ला– कानपुर रोड़ पर स्थित है। यहॉ पर विद्युत आपूर्ति, यातायात, डाकखाना, दूरसंचार, आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इस सेवाग्राम में कृषि यन्त्र बनाने, मिनी दाल मिल, खाद्य तेल मिल, आटा चक्की, नमकीन

बनाने, डेयरी उद्योग तथा चमड़ा उद्योग की इकाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं।1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 5152 थी जिसमें 39 औद्योगिक कर्मी थे।

(c) पैलानी (Pailani) :– यह जसपुरा से लगभग 9 किमी0 दूर केन नदी के किनारे स्थित हैं। यहाँ कृषि तथा वनाधारित उद्योग धन्धों के विकास की सम्भावनाएँ हैं। यहाँ फर्नीचर उद्योग, मिनी राइस मिल तथा कुछ कुटीर उद्योग धन्धों की इकाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 3756 थी, जिसमें 28 औद्योगिक कर्मी थे। यहाँ पर थाना, दूरसंचार, इण्टरकालेज आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

(d) जसपुरा (Jaspura) :– यह बांदा– हमीरपुर सड़क मार्ग पर स्थित है। यहाँ पर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, थाना, दूरसंचार आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ पर आटा मिल, दाल मिल, कृषि यन्त्र बनाने, तथा फर्नीचर बनाने के उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 5200 थी तथा औद्योगिक जनसंख्या 63 थी।

(iii) विकास उपकेन्द्र – तिंदवारा (Tindwara) :– तिंदवारा बांदा नगर से दक्षिण–पूर्व 7 किमी0 की दूरी पर बांदा–कालींजर–सतना रोड़ पर स्थित है। यह क्षेत्र के कृषि संसाधनो की दृष्टि से धनी है। अतः यहाँ पर प्रमुख उद्योग धन्धे जो विकसित हो सकते हैं, वे हैं– कृषि यन्त्र बनाना, फर्नीचर बनाना, आटा चक्की, तेल पेरना, मिनी राइस प्लान्ट दाल मिल, बेकरी बनाना, गुड़ बनाना आदि। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 8658 थी तथा औद्योगिक जनसंख्या 185 थी।

सेवाग्राम :–

(a) मटौंध (Mataundh) :– मटौंध बांदा–महोबा रोड़ पर स्थित एक वृहद् गाँव है, जो कस्बे का रुप ले चुका है। इस ग्राम में कृषि तथा वनाधारित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है। जैसे– कृषि यन्त्र बनाना, फर्नीचर बनाना, लकड़ी के खिलौने बनाना, टोकरी बनाना, तेल पेरना, आटा पीसना आदि। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 7447 थी जिसमें औद्योगिक जनसंख्या 140 थी।

(b) गुरेह (Gureh) :– यह गाँव बांदा से लगभग 7 किमी0 बांदा– बबेरु रोड़ के दाहिने किनारे पर स्थित है। यहाँ ग्रामीण बैंक, डाकखाना, विद्युत–आपूर्ति, यातायात, दूरसंचार, आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इस सेवाग्राम में आटा मिल, चावल उद्योग, गुड़ बनाना, बेकरी बनाना, कृषि यन्त्र बनाना, चर्मशोधन उद्योग, आदि विकसित हो सकते हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ जनसंख्या 4270 थी जिसमें औद्योगिक जनसंख्या 26 थी।

9 विकास केन्द्र – अतर्रा (Atatrra) :– यह उत्तर मध्य रेलवे के झाँसी–मानिकपुर रेलमार्ग तथा मिर्जापुर राष्ट्रीय मार्ग पर स्थित है। यह चित्रकूट–धाम मण्डल का चावल–उद्योग का प्रमुख केन्द्र है। यह तहसील मुख्यालय भी है। यहाँ पर विद्युत आपूर्ति, पूँजी, सस्ता श्रम, चिकित्सालय, शिक्षण संस्थायें, यातायात तथा दूरसंचार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इसलिए यहाँ चावल मिल, बेकरी बनाने, कार्ड बोर्ड बनाने, कृषि यन्त्र बनाने, अखाद्य तेल उद्योग, मसाला पिसाई तथा बैकिंग, डेयरी उद्योग, चमड़ा उद्योग की इकाइयाँ विकसित हो सकती हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 33640 थी जिसमें 605 औद्योगिक जनसंख्या थी।

(i) विकास उपकेन्द्र – बिसण्डा (Bisanda) :– यह अतर्रा से 9 किमी0 दूर अतर्रा–बबेरु रोड पर स्थित है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 9206 थी जिसमें 125 औद्योगिक कर्मी थे। यहाँ पर चावल मिल, तेल पेरने, कृषि यन्त्र बनाने, लकड़ी का फर्नीचर बनाने की इकाइयाँ विकसित हो सकती हैं। पशु आधारित उद्योग धन्धों का भी विकास किया जा सकता है।

सेवाग्राम :— पुनाहुर (Punahur) :— पुनाहुर अतर्रा—विसण्डा सड़क मार्ग पर स्थित है। इसका चतुर्दिक क्षेत्र धान उत्पादन में धनी है। इसलिए इस गाँव में मिनी राइस प्लान्ट्स तथा कार्ड बोर्ड इन्डस्ट्री विकसित हो सकती है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 5298 थी जिसमें 34 औद्योगिक कर्मी सम्मिलित हैं।

(ii) **विकास उपकेन्द्र — महुआ** (Mahua) :— महुआ विकासखण्ड मुख्यालय है, जो बांदा—अतर्रा रोड के दाहिने किनारे पर स्थित है। यहाँ पर डाकखाना, ग्रामीण बैंक, तथा टेलीफोन की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ पर मिनी राइस प्लान्ट्स, आरा मशीन, आटा चक्की, तथा खाद्य—तेल उद्योग की इकाइयाँ स्थापित की जा सकती है।। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 3674 थी जिसमें 30 औद्योगिक जनसंख्या थी।

(a) **खुरहण्ड** (Khurhand) :— खुरहण्ड झाँसी—मिर्जापुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर तथा झाँसी—मानिकपुर रेलमार्ग के निकट स्थित है। यहाँ पर दूरसंचार, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, इण्टरकालेज आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 3540 थी जिसमें 90 औद्योगिक कर्मी थे। यहाँ पर चावल—मिल, राइस ब्रान आयल मिल, खाद्य तेल मिल, और कृषि यन्त्र बनाने, तथा चर्मशोधन की इकाइयाँ विकसित हो सकती हैं।

(b) **बिलगाँव** (Bilgawn) :— यह गाँव बांदा—विसण्डा सड़क मार्ग पर स्थित हैं। यहाँ पर डाकखाना, डिस्पेंसरी, हाईस्कूल आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ पर चावल उद्योग, तथा लाई बनाने का उद्योग विकसित हो सकता है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 4945 थी जिसमें 98 औद्योगिक कर्मी सम्मिलित हैं।

(c) **खम्हौरा** (Khamhaura) :— खम्हौरा अतर्रा से 2 किमी0 उत्तर में स्थित एक गाँव स्थित है यहाँ पर हथकरघा और सूत कातने का उद्योग विकसित हो सकते हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 3699 थी जिसके 34 औद्योगिक कर्मी सम्मिलित थे।

(iii) **विकास उपकेन्द्र — रसिन** (Rasin) :— बदौसा के पास ग्रामीण परिवेश में स्थित यह एक बड़ा गाँव है। यहाँ दूरसंचार, इण्टरकालेज आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 5937 थी तथा औद्योगिक जनसंख्या 23 थी। कृषि यन्त्र बनाने, गृहोपयोगी काष्ठ की वस्तुयें बनाने, टोकरी बनाने,रस्सी बनाने, चर्मशोधन आदि उद्योग विकसित हो सकते हैं।

सेवाग्राम :—

(a) **पोहार** (Pohar) :— यह बागैं नदी के किनारे उत्तरी—पूर्वी भाग में स्थित है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 4067 थी जिसमें 28 औद्योगिक जनसंख्या सम्मिलित है। इस गाँव में कुछ वनाधारित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है। जैसे— फर्नीचर बनाने, लकड़ी की चिराई करने तथा चर्मशोधन उद्योग विकसित हो सकते हैं।

(b) **बदौसा** (Badausa) :— बदौसा झाँसी—मिर्जापुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर अतर्रा से 14 किमी0 दूर पूर्व में स्थित है। यहाँ डाकखाना, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, डिस्पेन्सरी, टेलीफोन, थाना, इण्टरकालेज तथा डिग्री कालेज की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ कुछ कृषि तथा पशु आधारित उद्योगों का विकास हो सकता है जैसे— लाई बनाना, मिनी राइस मिल, खाद्य तेल मिल, चर्मशोधन आदि। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 2835 थी जिसमें 22 औद्योगिक कर्मी थे।

(c) **तुर्रा** (Turra) :— यह गाँव झाँसी—मिर्जापुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर बदौसा के निकट स्थित है। कुछ कृषि आधारित उद्योग धन्धों का यहाँ विकास हो सकता है। फल— प्रशोधन, आटा चक्की, तेल पेरने

एवं चर्मशोधन की इकाइयाँ स्थापित की जा सकती है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 5238 थी जिसमें औद्योगिक जनसंख्या 34 थी।

10 विकास केन्द्र – नरैनी (Naraini) :– यह तहसील मुख्यालय है जो बांदा–सतना सड़कमार्ग पर स्थित है। यहाँ प्रसिद्ध बाजार केन्द्र, बैंक, विद्युत–आपूर्ति, चिकित्सालय, दूरसंचार आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 8995 थी। जिसमें 353 औद्योगिक कर्मी सम्मिलित हैं। इसका चतुर्दिक क्षेत्र धान उत्पादन में धनी है इसलिए यहाँ राइस मिल, मिनी राइस प्लान्ट्स स्थापित हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ फर्नीचर उद्योग, कृषि यन्त्र बनाने, चमड़े के जूता बनाने, चर्मशोधन उद्योग, ऊनीवस्त्र उद्योग तथा आइसक्रीम बनाने के उद्योग विकसित हो सकते हैं।

(i) **विकास उपकेन्द्र – गुढाकलां (Gurha Kalan)** :– गुढाकलां नरैनी–कालींजर रोड से 7 किमी0 की दूरी पर स्थित है। यहाँ डाकखाना, चिकित्सालय आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ एक प्रसिद्ध हनुमान मन्दिर है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 6631 थी जिसमें 51 औद्योगिक जनसंख्या थी। यहाँ पर वनाधारित तथा पशु आधारित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है।

सेवाग्राम :–

(a) **तरहटी कालींजर (Tarahati- Kalinjar)** :– तरहटी कालींजर नरैनी विकासखण्ड के दक्षिणी भाग में नरैनी–नागोद रोड पर स्थित है। यहाँ पर डाकखाना, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, डिस्पेन्सरी तथा हाईस्कूल की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इस ग्राम में कृषि तथा वनाधारित उद्योगों का विकास हो सकता है जैसे– चावलमिल, लाई उद्योग, फर्नीचर बनाना, अगरबत्ती बनाना आदि। सन् 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 4964 तथा औद्योगिक जनसंख्या 38 थी।

(b) **करतल (Kartal)** :– करतल नरैनी विकासखण्ड के दक्षिण–पूर्वी भाग में नरैनी– पन्ना रोड पर स्थित है। यहाँ पर डाकखाना, अस्पताल, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और डिस्पेन्सरी आदि की सुविधाएँ प्राप्त हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 3820 तथा औद्योगिक जनसंख्या 26 थी। इसका चतर्दिक क्षेत्र वन संसाधनों में धनी है इसलिए यहाँ वनाधारित उद्योगों का विकास हो सकता है।

(c) **सढ़ा (Sadha)** :– यह गाँव नरैनी विकासखण्ड में मध्यप्रदेश की सीमा के निकट स्थित है। इसका चतर्दिक क्षेत्र वन संसाधनों की दृष्टि से धनी है। यहाँ पर वनाधारित उद्योग धन्धों जैसे– फर्नीचर उद्योग, अगरबत्ती उद्योग, कृषि यन्त्र बनाने का उद्योग आदि स्थापित किये जा सकते हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 4178 थी। जिसमें 58 औद्योगिक कर्मी थे।

(ii) **विकास उपकेन्द्र – गिरवां (Girwan)** :– यह गाँव बांदा–नरैनी सड़क मार्ग पर स्थित है। यहाँ पर यातायात, दूरसंचार, विद्युत–आपूर्ति, चिकित्सालय, डिस्पेन्सरी, पुलिस स्टेशन, तथा इण्टरकालेज आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 3640 तथा औद्योगिक जनसंख्या 29 थी। यहाँ पर कृषि तथा पशु आधारित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है। जैसे– मिनी राइस प्लान्ट्स, दाल मिल, आटा चक्की, चर्मशोधन उद्योग आदि।

सेवाग्राम :–

बड़ोखर बुजुर्ग (Barokhar Buzurrg):– यह बांदा– नरैनी सड़क मार्ग पर स्थित है। 1991 में यहाँ की जनसंख्या 4773 थी तथा औद्योगिक जनसंख्या 57 थी। यहाँ पर मिनी राइस प्लान्ट्स तथा दाल मिल स्थापित किये जा सकते है।

(11) विकास केन्द्रः बबेरू (Baberu):–

यह तहसील तथा विकासखण्ड मुख्यालय है। यह बांदा, अतर्रा तथा कमासिन से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 11829 तथा औद्योगिक जनसंख्या 574 थी। यह

उत्तम बाजार केन्द्र है तथा यहाँ बैंक विद्युत आपूर्ति, दूरसंचार आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इस कस्बे का चतुर्दिक क्षेत्र कृषि तथा पशु संसाधनों की दृष्टि से धनी है इसलिए यहाँ पर मिनी राइस प्लान्ट, राइस ब्रान, आयल मिल, दाल मिल, आटा मिल, चमड़ा उद्योग, डेयरी उद्योग, काष्ठ फर्नीचर उद्योग आदि की औद्योगिक इकाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं।

(i) **विकास उपकेन्द्र – मरका (Marka)** :– मरका यमुना नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है जो बबेरु से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। कृषि, पशु तथा वनाधारित उद्योग धन्धों का यहाँ विकास हो सकता है। कृषि यन्त्र बनाने, काष्ठ उपकरण बनाने, दाल मिल, तेल पेरने, फल प्रशोधन, डेयरी उद्योग, चमड़ा उद्योग आदि की इकाइयाँ विकसित हो सकती है 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 9755 थी तथा औद्योगिक जनसंख्या 142 थी। यहाँ पर डाकखाना, डिस्पेन्सरी तथा बाजार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

सेवाग्राम :–

(a) **पिंडारन (Pindaran)** :– यह बबेरु तहसील के उत्तरी भाग में स्थित है। इसका चतुर्दिक क्षेत्र कृषि उत्पादों में धनी है इसलिए यहाँ कृषि आधारित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 4050 तथा औद्योगिक जनसंख्या 32 थी।

(b) **इंगुवा (Ingua)** :– इंगुवा बबेरु तहसील के उत्तरी–पूर्वी भाग में कृषि क्षेत्र में स्थित है। यहाँ पर कृषि तथा पशु आधारित कुटीर उद्योग धन्धे विकसित हो सकते हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 4726 तथा औद्योगिक जनसंख्या 39 थी।

(ii) **विकास उपकेन्द्र – हरदौली (Hardauli)** :– हरदौली बबेरु कस्बे से 2 किमी0 दूर स्थित है। यह कृषि उत्पादों में धनी हैं। यहाँ पर दाल मिल, मिनी राइस प्लान्ट्स, खाद्यान्न प्रशोधन, कृषि यन्त्र बनाने, डेयरी उद्योग तथा चमड़ा उद्योग विकसित हो सकते हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 8710 तथा औद्योगिक जनसंख्या 57 थी।

सेवाग्राम :–

(a) **सिमौनी (Simauni)** :– सिमौनी बबेरु तहसील के पश्चिमी भाग में स्थित है। यहाँ डाकखाना, प्राथमिक सवास्थ्य केन्द्र आदि की सुविधाएँ उपलब्ध है। यहाँ स्थानीय उत्पादों के आधार पर वनाधारित उद्योग धन्धे विकसित हो सकते हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 3668 तथा औद्योगिक जनसंख्या 46 थी।

(b) **मुरवल (Murwal)** :– मुरवल बांदा–बबेरु रोड़ पर बबेरु से 16 किमी0 दूरी पर स्थित है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ जनसंख्या 4848 तथा औद्योगिक जनसंख्या 57 थी। यहाँ पर तेल पेरने, धान से भूसी अलग करने वाली छोटी मशीनें, बढ़ईगिरी आदि की औद्योगिक इकाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं।

(iii) **विकास उपकेन्द्र – कमासिन (Kamasin)** :– यह बांदा जनपद का एक विकासखण्ड मुख्यालय है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 5491 तथा औद्योगिक जनसंख्या 106 थी। कृषि यन्त्र बनाने, लकड़ी का फर्नीचर बनाने, 5 मिनी राइस मिलें तथा आटा चक्की विकसित हो सकती हैं।

सेवाग्राम – बीरा (Bira) :– बीरा बबेरु तहसील के पूर्वी भाग में स्थित है। इस गाँव में कुछ कृषि एवं वनाधारित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 3657 थी, जिसमें औद्योगिक जनसंख्या 37 थी।

(iv) विकास उपकेन्द्र – ओरन (Oran) :– यह गाँव बांदा–विसण्डा–सिंहपुर सड़क मार्ग पर स्थित है। विसण्डा विकासखण्ड में स्थित यह वृहद गाँव है। इसका चतुर्दिक क्षेत्र धान उत्पादक है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 5404 तथा औद्योगिक जनसंख्या 55 थी। इस ग्राम में मिनी राइस प्लान्ट्स, आटा चक्की, काष्ठ उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त कृषि यन्त्र बनाने, कार्ड बोर्ड बनाने, रस्सी बनाने, तथा चर्मशोधन उद्योग भी विकसित हो सकते हैं।

सेवाग्राम

(a) भदेहदू ;Bhadehdu) :– भदेहदू बबेरु–विसण्डा रोड़ के निकट स्थित है। यहाँ पर कृषि आधारित कुछ उद्योग–धन्धे स्थापित किये जा सकते है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 3884 थी तथा औद्योगिक जनसंख्या 36 थी।

(b) कुर्रही (Kurrahi) :– यह बांदा–ओरन–राजापुर रोड़ पर विसण्डा तथा ओरन के मध्य स्थित है। यहाँ डाकखाना तथा एक हाईस्कूल स्थित है। यहाँ पर मिनी राइस प्लान्टस, दाल मिल तथा कुटीर उद्योग धन्धे स्थापित किए जा सकते हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 7696 थी जिसमें 125 औद्योगिक जनसंख्या थी।

(c) सिंहपुर (Singhpur) :– सिंहपुर विसण्डा–ओरन–राजापुर रोड़ पर स्थित है और सीधे जनपद मुख्यालय से जुड़ा हुआ है। मिनी राइस प्लान्ट, दाल मिल, लाई बनाना, चमड़ा उद्योग, यहाँ विकसित हो सकते है। यहाँ पर ग्रामीण बैंक, डाकखाना आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 5847 थी जिसमें 107 औद्योगिक कर्मी थे।

12 **विकास केन्द्र – कर्वी (Karwi)** :– यह जनपद मुख्यालय है जो झाँसी–मिर्जापुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। यह झाँसी– मानिकपुर रेलमार्ग का एक स्टेशन भी है। यहाँ नगरपालिका परिषद है जो नगरीय सुविधाएँ प्रदान करती है। यहाँ पर दूरसंचार, यातायात, चिकित्सालय, शिक्षण संस्थायें, डाकखाना आदि सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 37595 तथा औद्योगिक जनसंख्या 1380 थी। यहाँ पर कृषि, पशु तथा वनाधारित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है। लकड़ी के खिलौने बनाने, दोना–पत्तल बनाने, आरा मशीन उद्योग, फर्नीचर बनाने, अगरबत्ती बनाने, कागज बनाने, आयुर्वेदिक दवा बनाने, आटा मिल, दाल मिल, मिनी राइस प्लान्ट्स, मसाला पिसाई उद्योग तथा आइसक्रीम एवं आइसकैण्डी बनाने की औद्योगिक इकाइयाँ विकसित हो सकती हैं।

(i) विकास उपकेन्द्र– पहाड़ी बुजुर्ग (Pahari Buzurg) :– यह कर्वी–राजापुर सड़क मार्ग पर स्थित है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 4901 तथा औद्योगिक जनसंख्या 31 थी। यहाँ पर कृषि तथा वन से सम्बन्धित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है जैसे– कृषि यन्त्र बनाने, बढ़ईगीरी, मिनी राइस प्लान्ट्स, आटा चक्की तथा अन्य कुटीर उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है।

सेवाग्राम :–

(a) ओरा (Ora) :– ओरा पयस्वनी नदी के पश्चिम में बागैंनदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। यह मरम्मत केन्द्र (रिपेयरिंग सेन्टर) के रुप में विकसित हो सकता है। कुछ वनाधारित उद्योग धन्धों का यहाँ विकास हो सकता है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 3639 थी जिसमें 19 औद्योगिक जनसंख्या थी।

(b) परसौंजा (Parsaunja) :– परसौंजा पयस्वनी नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। यह पहाड़ी से लगभग 10 किमी0 पश्चिम में है। यह कृषि औजारों के मरम्मत के रुप में विकसित हो सकता है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 3741 थी, जिसमें 27 औद्योगिक जनसंख्या थी।

(c) **भसौंधा ;Bhaisaundha)** :— यह एक बड़ा गाँव है जो कर्वी से उत्तर—पश्चिम लगभग 14 किमी0 दूर स्थित है। यहाँ एक हाईस्कूल, डाकखाना, और एक अस्पताल है। कृषि आधारित उद्योग धन्धे दालमिल, तेल पेरना, आटा चक्की आदि उद्योग विकसित हो सकते हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 4035 थी जिसमें औद्योगिक जनसंख्या 32 थी।

(ii) **विकास उपकेन्द्र — मानिकपुर (Manikpur)** :— यह चित्रकूट जनपद का एक विकासखण्ड मुख्यालय है तथा उत्तर मध्य रेलवे का एक जक्शन भी है यहाँ पर जबलपुर, वाराणसी, तथा झाँसी रेलवेलाइन, आकर मिलती है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 11116 थी जिसमें 126 औद्योगिक कर्मी थे। इसका चतुर्दिक क्षेत्र वन संसाधनों में धनी है। यहाँ पर बीड़ी उद्योग,कत्था उद्योग, फर्नीचर उद्योग, आरा मशीन उद्योग, बांस की टोकरी बनाने, दोना—पत्तल उद्योग, अगरबत्ती बनाने का उद्योग, डेयरी उद्योग, खोवा उद्योग, आइसक्रीम उद्योग, ऊनीवस्त्र उद्योग तथा चमड़ा उद्योग विकसित हो सकते हैं।

सेवाग्राम :—

(a) **सरैंया (Saraiyan)** :— यह मानिकपुर विकासखण्ड में कर्वी—मानिकपुर सड़क मार्ग पर स्थित है। यह मानिकपुर से 9 किमी0 दूर स्थित है। यहाँ पर डाकखाना, ग्रामीण बैंक, दूरसंचार, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ पर आटा चक्की, तेल पेरने, काष्ठ फर्नीचर बनाने, आरा मशीन उद्योग तथा कृषि उपकरण बनाने के उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 3562 थी तथा औद्योगिक जनसंख्या 22 थी।

(b) **केहुनिया (Kehunia)** :— यह मानिकपुर—जबलपुर रेलमार्ग के बाँयी ओर स्थित है। 1991 में यहाँ की कुल जनसंख्या 2754 थी जिसमें 16 उद्योगों में लगी जनसंख्या थी। यहाँ वनाधारित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है।

(iii) **विकास उपकेन्द्र — भौंरी (Bhaunri)** :— भौंरी, कर्वी से लगभग 10 किमी0 दूर बांदा—कर्वी—इलाहाबाद सड़कमार्ग पर स्थित है। यहाँ यातायात, दूरसंचार, विद्युत आपूर्ति, इण्टरकालेज, डाकखाना, बैंक आदि की सुविधाएँ उपलब्ध है। यहाँ पर लकड़ी के खिलौने बनाने, काष्ठ फर्नीचर बनाना, तेल पेरना, आटा चक्की, आदि उद्योग विकसित हो सकते हैं। 1991 में यहाँ कुल जनसंख्या 6402 तथा औद्योगिक जनसंख्या 55थी।

सेवाग्राम :—

रैपुरा (Raipura) :— रैपुरा कर्वी—इलाहाबाद सड़क मार्ग पर स्थित है। यहाँ डाकखाना, पुलिस स्टेशन, आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ वनाधारित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 4145 तथा औद्योगिक जनसंख्या 34 थी।

13 **विकास केन्द्र — राजापुर (Rajapur)** :— तुलसीदास की जन्मस्थली राजापुर यमुना नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। यह सड़कमार्ग द्वारा कर्वी तथा कमासिन से जुड़ा हुआ है। 1991 में यहाँ की कुल जनसंख्या 9871 थी जिसमें 278 औद्योगिक कर्मी थे। यहाँ पर यातायात, दूरसंचार, विद्युत आपूर्ति, बाजार, बैंक, डाकखाना, इण्टरकालेज आदि की सेवायें उपलब्ध हैं। इस केन्द्र पर दालमिल, मिनी राइस प्लान्ट्स, फर्नीचर (काष्ठ) उद्योग, खिलौना बनाने का उद्योग, डेयरी उद्योग, आइसक्रीम बनाने का उद्योग आदि विकसित हो सकते हैं।

(i) **विकास उपकेन्द्र — रामनगर (Ramnagar)** :— यह चित्रकूट जनपद का एक विकासखण्ड मुख्यालय है जो झाँसी—मिर्जापुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 1418 थी, जिसमें औद्योगिक जनसंख्या 19 थी। यहाँ पर ग्रामीण बाजार,

दूरसंचार, विद्युत–आपूर्ति, बैंक, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा डिस्पेन्सरी आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ पर आटा चक्की, तेल पेरने, आरा मशीन, बढ़ईगीरी आदि की इकाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं।

सेवाग्राम :–

(a) **नादिन कुर्मियान (Nadin Kurmian)** :– यह राजापुर से दक्षिण–पूर्व 4 किमी0 की दूरी पर स्थित है। यह राजापुर–बोड़ी पोखरी सड़क मार्ग द्वारा झाँसी–मिर्जापुर राष्ट्रीय राजमार्ग से जुड़ा हुआ है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 3568 तथा औद्योगिक जनसंख्या 21 थी। यहाँ पर कृषि आधारित उद्योग धन्धों का विकास हो सकता है।

(b) **छीबो (Chhibon)** :– यह रामनगर विकासखण्ड में गन्दा नाला के दाहिने किनारे पर स्थित है 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 3664 थी तथा औद्योगिक कर्मियों की संख्या 36 थी। बैलगाड़ी बनाना, गृहापयोगी काष्ठ उपकरण बनाना, रस्सी बनाना, झाड़ू बनाना आदि उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं।

14 **विकास केन्द्र – मऊ (Mau)** :– मऊ झाँसी–मिर्जापुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। यह तहसील तथा विकासखण्ड मुख्यालय है। यहाँ पर दूरसंचार, बैंक, डाकखाना, चिकित्सालय, बाजार, इण्टरकालेज, महाविद्यालय आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 8537 तथा औद्योगिक जनसंख्या 118 थी। यहाँ पर फर्नीचर उद्योग, लकड़ी चिराई उद्योग, खाद्य तेल मिल, राइस मिनी प्लान्ट्स, आटा चक्की, मसाला पिसाई तथा पैकिंग, चर्मशोधन आदि की औद्योगिक इकाइयों का विकास हो सकता है।

विकास उपकेन्द्र – खण्डेहा (Khandeha) :– यह लालता रोड़ द्वारा झाँसी–मिर्जापुर राष्ट्रीय राजमार्ग से जुड़ा हुआ है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 8798 तथा औद्योगिक जनसंख्या 85 थी। यहाँ पर डाकखाना, दूरसंचार, इण्टरकालेज आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ पर दाल मिल, आटा चक्की, तेल मिल, आरा मशीन उद्योग, कृषि यन्त्र बनाने का उद्योग, चर्मशोधन उद्योग विकसित हो सकते हैं।

सेवाग्राम :–

(a) **बरगढ़ (Bargarh)** :– यह मानिकपुर–इलाहाबाद रेलमार्ग पर तथा कर्वी–इलाहाबाद सड़क मार्ग के निकट स्थित है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 3918 तथा औद्योगिक जनसंख्या 36 थी। यहाँ पर आरा मशीन उद्योग, खिलौना उद्योग तथा बीड़ी बनाने का उद्योग विकसित हो सकते हैं।

(b) **हन्ना बिनैका (Hanna Benaika)** :– यह ग्राम लालता रोड़ से 9 किमी0 की दूरी पर स्थित है। यमुना नदी यहाँ से 3 किमी0 दूर प्रवाहित हो रही है। 1991 की जनगणनानुसार यहाँ की जनसंख्या 2878 तथा औद्योगिक जनसंख्या 23 थी। यहाँ पर कृषि आधारित कुटीर उद्योगों का विकास हो सकता है।

उपयुर्क्त केन्द्र चित्रकूट धाम मण्डल के औद्योगिक विकास के लिए उपकरणों में ऊर्जा प्रवाहित करने वाले 'स्विचबोर्ड' के समान कार्य करेंगे। इन विकास केन्द्रों में स्थानीय कच्चेमाल पर आधारित लघु तथा कुटीर उद्योगों के विकास से क्षेत्र का सन्तुलित आर्थिक विकास होगा। औद्योगिक विकास के साथ–साथ कृषि का विकास होगा। कृषक अपने उत्पाद की अच्छी कीमत प्राप्त करेंगे तथा बेरोजगार युवकों को प्रस्तावित उद्योगों में क्षेत्र में ही रोजगार मिलेगा एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होगीं जिससे चित्रकूट धाम मण्डल के लोगों के जीवनस्तर में सुधार होगा।

-: सन्दर्भ :-

1. *ग्लासन, जे0* : 'एन इन्ट्रोडक्शन टू रीजनल प्लानिंग', पृ0 17।
2. *तिवारी, आर0एन0* : 'इन्डस्ट्रियल प्लानिंग इन यू0पी0', 'एन0 जी0 एलाहाबाद' वॉल्यूम 'वी', 1962पृ0 93
3. *एफ0 बी0 गिलिक* : 'बेसिक थिंकिग इन रीजनल प्लानिंग'।
4. *तिवारी, आर0 एन0* : 'इन्डस्ट्रियल प्लानिंग इन यू0पी0' नेशनल ज्यॉग्राफर इलाहाबाद, वाल्यूम 5, 1962 पृ0 95.
5. *बे कोव* : 'द डेवलपमेन्ट ऑफ सोवियत इकोनॉमिक सिस्टम', पृ0 427.
6. *लेविस, डब्ल्यू0 ए0* : 'प्रिन्सिपल ऑफ इकोनॉमिक प्लानिंग एण्ड डेवलपमेन्ट' – 1959, पृ0 128.
7. *मिश्रा, आर0पी0, सुन्दरम, के0वी0 प्रकाश राव*: 'रीजनल डेवलपमेन्ट एण्ड प्लानिंग इन इण्डिया', ए न्यू स्ट्राटेजी, विकास पब्लिशिंग हाउस, न्यू डेलही, 1974, पृ0 180–218.

परिशिष्ट (APPENDIX)

परिशिष्ट संख्या – 2B-1

चित्रकूटधाम मण्डल में विकास खण्डवार जनसंख्या का आर्थिक वर्गीकरण–1991

क्र0 सं0	विकास खण्ड	कुल जनसंख्या	कुल कर्मकर	कृषक	कृषि श्रमिक	उद्योग तथा निर्माण कार्य	व्यापार एवं वाणिज्य	अन्य कर्मकर
1	कुरारा	75883	27373	13749	7503	544	488	5089
2	सुमेरपुर	127867	51725	21418	15690	1887	1153	11577
3	सरीला	90153	39860	19197	10470	1070	552	8571
4	गोहाण्ड	95052	46347	20194	10400	1535	568	13650
5	राठ	82325	36932	16593	11754	877	353	7355
6	मुस्करा	104647	38742	17506	12257	1347	943	6689
7	मौदहा	171628	64974	29787	17781	2041	1156	14209
योग ग्रामीण		747555	305953	138444	85955	9361	5213	66980
योग नगरीय		136957	40964	7372	6743	5069	7705	14075
योगजनपद		884512	346917	145816	92698	14370	12918	81115
8	पनवाडी	118536	54113	24327	12860	1494	1013	14479
9	जैतपुर	111222	47746	22932	11441	1846	839	10688
10	चरखारी	89215	41883	19153	9405	1039	483	11803
11	कबरई	145318	60494	28256	17926	1729	931	11652
योग ग्रामीण		464291	204236	94668	51632	6108	3266	48562
योग–नगरीय		117688	35902	6903	6658	4743	5515	12083
योग–जनपद		581979	240138	101571	58290	10851	8781	60645
12	जसपुरा	79515	28184	14592	7517	734	533	4808
13	तिन्दवारी	124021	45560	21299	13696	1175	715	8675
14	बडोखरखुर्द	134982	52787	24901	14960	2184	826	9916
15	बबेरू	144290	65423	31153	14471	1707	872	17220
16	कमासिन	119671	55786	28600	10645	970	567	14437
17	विसण्डा	132303	64514	31329	16420	1051	478	15236
18	महुआ	152411	73375	33708	19862	1249	758	17798
19	नरैनी	169930	88483	51562	17800	1490	1140	16491
योग–ग्रामीण		1057123	474112	237144	115371	10558	5889	105150
योग–नगरीय		180839	53470	8697	7208	7632	11189	18744
योग–जनपद		1237962	527582	245841	122579	18190	17078	123894
20	पहाड़ी	133516	63835	36607	14661	1040	471	11056
21	कर्वी	151878	58194	36988	8387	1392	849	10578
22	मानिकपुर	115838	56105	29103	14449	1342	554	10657
23	रामनगर	65370	30198	17730	6004	453	332	5679
24	मऊ	98993	50443	28553	8926	994	902	10998
योग–ग्रामीण		565595	258775	148981	52497	5221	3108	48968
योग–नगरीय		58582	17681	2735	2129	2525	4388	5904
योग–जनपद		624177	276456	151716	54626	7746	7496	54872
मण्डल योग		3328630	1391093	644944	328193	51157	46273	320526

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें 2002

परिशिष्ट सं0–5.1

चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार पशुधन, पशुगणना वर्ष, 1997

क0 सं0	विकासखण्ड	गो जातीय	महिष जातीय	भेड़	बकरी बकरा	घोड़े एवं टट्टू	सुअर	अन्य पशु	कुल पशु
1	कुरारा	25573	15670	1792	14511	57	3991	–	61594
2	सुमेरपुर	49896	23686	2426	21006	160	3908	35	101117
3	सरीला	38306	16811	5299	22199	103	4190	346	87254
4	गोहाण्ड	24627	15145	4521	14677	38	4131	9	63148
5	राठ	22346	13885	5913	15652	123	3481	22	61422
6	मुस्करा	34972	25167	3046	22453	182	3684	42	89546
7	मौदहा	52546	30956	2481	35208	248	3426	100	124965
नगरीय		10503	8713	204	11973	83	2118	395	33989
जनपद हमीरपुर		258769	150033	25682	157679	994	28929	949	623035
8	पनवाडी	38727	20242	7609	30917	175	4075	177	101922
9	जैतपुर	40838	18049	6024	33369	116	3811	112	102319
10	चरखारी	37949	13629	7029	19840	103	2832	105	81487
11	कबरई	43907	22562	6007	27968	168	3798	170	104580
नगरीय		11249	3914	1047	8871	269	2796	294	28440
जनपद महोबा		172670	78396	27716	120965	831	17312	858	418748
12	जसपुरा	30201	18795	769	20318	85	1607	136	71911
13	तिन्दवारी	51736	22002	4712	25268	67	2490	122	106397
14	बडोखर खुर्द	57650	26485	2417	22756	171	2393	200	112072
15	बबेरू	63641	32587	3410	23979	258	4220	100	128195
16	कमासिन	4982	19488	862	16513	312	2767	58	89823
17	विसण्डा	61564	32914	2331	12447	161	3838	156	113411
18	महुआ	57270	35151	2169	16606	129	2888	100	114313
19	नरैनी	89008	47824	4038	36731	181	3487	140	181409
नगरीय		16516	9831	403	7641	138	2923	180	37632
जनपद बांदा		477409	245077	21111	182259	1502	26613	1192	955163
20	पहाड़ी	49690	19467	3676	16711	210	3150	262	93166
21	कर्वी	50670	19629	5702	17408	117	1738	359	95623
22	मानिकपुर	91018	43328	8771	40562	164	3421	175	187439
23	रामनगर	35819	15910	4083	8050	164	1648	127	65801
24	मऊ	47813	18727	4589	17450	178	2887	131	91775
नगरीय		6378	1436	–	3415	40	1305	574	13148
जनपद चित्रकूट		281388	118497	26821	103596	873	14149	1628	546952
मण्डल योग		1190236	592003	101330	564499	4200	87003	4627	2543898

स्रोत : सांख्यकीय पत्रिका – 2002, जनपद हमरीपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट

परिशिष्ट सं0 6.1

चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार भूमि उपयोग (हेक्टेयर में) 2000–01

क0 सं0	विकास खण्ड जनपद	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र	वन	कृषि योग्य बंजर भूमि	वर्तमान परती	अन्य परती	ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	चारागाह	उद्यानों, बागों वृक्षों एवं झण्डियों का क्षेत्र	शुद्ध बोया गया क्षेत्र
1	कुरारा	44715	3975	368	2138	1350	1924	3659	27	80	31194
2	सुमेरपुर	62651	478	19	3809	1017	1205	4061	–	42	52020
3	सरीला	65669	7432	1086	3431	793	2235	4438	41	33	46180
4	गोहाण्ड	52023	1811	1214	1949	218	994	4442	50	303	41042
5	राठ	44623	5496	989	2181	195	616	4735	3	114	30294
6	मुस्करा	50402	2032	777	1034	98	1405	3576	11	120	41349
7	मौदहा	93758	297	842	1516	832	1069	6117	182	53	82850
योग ग्रामीण		413841	21521	5295	16058	4503	9448	31028	314	745	324929
योग वन क्षेत्र		1999	1999	–	–	–	–	–	–	–	–
नगरीय		108	–	17	–	–	19	66	–	–	6
योग हमीरपुर		415948	23520	5312	16058	4503	9467	31094	314	745	324935
8	पनवाडी	61936	2975	2700	2411	398	2689	4752	98	223	44690
9	जैतपुर	62000	5663	3310	2202	2382	2332	5161	117	182	40651
10	चरखारी	76322	3108	2622	3016	1746	1288	606	62	170	57704
11	कबरई	91826	1685	3701	1207	2042	3361	7700	120	328	71682
योग ग्रामीण		292084	13431	12333	8836	7568	9670	24219	397	903	214727
योग वन क्षेत्र		1912	1912	–	–	–	–	–	–	–	–
नगरीय		5951	103	187	240	131	401	953	7	105	3824

योग महोबा		299947	15446	12520	9076	7699	10071	25172	404	1008	218551
12	जसपुरा	35926	167	1122	1904	285	1003	2389	27	119	28906
13	तिन्दवारी	59245	809	1810	3332	691	1072	4096	138	344	46953
14	बडोखरखुर्द	65673	360	1670	3262	1194	1374	4806	103	102	52802
15	बबेरू	58629	114	1207	3009	3815	1603	3370	30	115	45366
16	कमासिन	52101	—	673	6363	3273	1816	2999	8	125	36844
17	विसण्डा	46760	155	492	2935	1452	994	3211	31	113	37377
18	महुआ	50856	380	2016	1574	728	1084	4041	22	159	40852
19	नरैनी	82894	1640	3161	13759	5273	3092	5185	41	186	50557
योग ग्रामीण		452084	3625	12151	36138	16715	12038	30097	400	1263	339657
योग वन क्षेत्र		1383	1383	—	—	—	—	—	—	—	—
नगरीय		—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
योग बांदा		453467	5008	12151	36138	16715	12038	30097	400	1263	339657
20	पहाड़ी	62850	9	2020	650	1250	1300	3500	8	118	53995
21	कर्वी	92275	44822	1688	1755	3240	2160	2950	31	202	35427
22	मानिकपुर	92834	34768	2830	920	1200	15010	5223	6	1340	31537
23	रामनगर	36800	2423	1896	540	650	1680	2010	—	198	27403
24	मऊ	41150	7226	3290	460	354	1440	2282	14	379	25705
योग ग्रामीण		325909	89248	11724	4325	6694	21590	15965	59	2237	174067
योग वन क्षेत्र		—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
नगरीय		—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
योग चित्रकूटधाम		325909	89248	11724	4325	6694	21550	15965	59	2237	174067
योग मण्डल		1495271	133222	41707	65611	35611	53166	102328	1177	5253	1057210

स्रोत : सांख्यकीय पत्रिका, हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट जनपद, 2002

परिशिष्ट संख्या – 6.2

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार (ग्रामीण) भूमि उपयोग प्रतिशत में 2000–01

क्र.सं.	विकासखण्ड	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र हेक्टेयर में	वन	कृषि योग्य बंजर भूमि	वर्तमान परती	अन्य परती	ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	चारागाह	उद्यानों बागों / वृक्षों एवं (झाड़ियों का क्षेत्र)	शुद्ध बोया गया क्षेत्र
1	कुरारा	44715	8.89	0.82	4.78	3.02	4.30	8.18	0.06	0.18	69.77
2	सुमेरपुर	62651	0.76	0.03	6.08	1.62	1.92	6.48	00	0.07	83.04
3	सरीला	65669	11.32	1.66	5.22	1.21	3.40	6.76	0.06	0.05	70.52
4	गोहाण्ड	52023	3.48	2.33	3.75	0.42	1.91	8.54	0.10	0.54	78.89
5	राठ	44623	12.25	2.21	4.89	0.44	1.39	10.61	00	0.32	67.89
6	मुस्करा	50402	4.03	1.55	2.05	0.19	2.79	7.09	0.02	0.24	82.04
7	मौदहा	93758	0.31	0.90	1.61	0.90	1.14	6.52	0.20	0.06	88.36
हमीरपुर जनपद		415948	5.20	1.28	3.88	1.08	2.28	7.50	0.08	0.18	78.52
8	पनवाड़ी	61936	4.80	4.36	3.89	2.26	4.34	7.67	0.16	0.36	72.16
9	जैतपुर	62000	9.13	5.34	3.55	3.84	3.76	8.33	0.19	0.29	65.57
10	चरखारी	76322	4.07	3.43	3.95	2.29	1.69	8.66	0.08	0.22	75.61
11	कबरई	91826	1.83	4.03	1.32	2.22	3.66	8.39	0.13	0.36	78.86
महोबा जनपद		299947	5.15	4.17	3.03	2.57	3.36	8.39	0.13	0.34	72.86
12	जसपुरा	35926	0.46	3.12	5.30	0.80	2.79	6.65	0.08	0.34	80.46
13	तिन्दवारी	59245	1.37	3.06	5.62	1.67	1.81	6.91	0.23	0.58	79.25
14	बड़ोखर खुर्द	65673	0.55	2.54	4.97	1.81	2.09	7.32	0.16	0.16	80.40
15	बबेरु	58629	0.20	2.06	5.13	6.50	2.73	5.75	0.05	0.20	77.38
16	कमासिन	52101	00	1.29	12.21	6.28	3.49	5.76	0.01	0.24	70.72
17	विसण्डा	46760	0.33	1.05	6.28	3.10	2.13	6.87	0.07	0.24	79.93
18	महुआ	50856	0.75	3.96	3.10	1.43	2.13	7.95	0.04	0.31	80.33
19	नरैनी	82894	1.98	3.82	16.60	6.36	3.73	6.25	0.05	0.22	60.99

बांदा जनपद		453467	1.10	2.68	7.97	3.69	2.65	6.64	0.09	0.28	74.90
20	पहाड़ी	62850	0.01	3.22	1.03	1.99	2.07	5.57	0.01	.19	85.91
21	कर्वी	92275	48.58	1.83	1.90	3.51	2.34	3.20	0.03	0.22	38.39
22	मानिकपुर	92834	37.45	3.05	0.99	1.29	16.17	5.63	0.01	1.44	33.97
23	रामनगर	36800	6.58	5.15	1.47	1.77	4.57	5.46	00	0.54	74.46
24	मऊ	41150	17.56	7.99	1.12	0.86	3.50	5.55	0.03	0.92	62.47
चित्रकूट जनपद		325909	27.38	3.60	1.33	2.05	6.62	4.90	0.02	0.69	53.41
मण्डल–योग		1495271	8.91	2.79	4.39	2.38	3.56	6.84	0.08	0.35	70.70

स्रोत : सांख्यकीय पत्रिका – 2002, हमीरपुर, महोबा, बांदा, तथा चित्रकूट जनपद के आँकड़ों के आधार पर

परिशिष्ट सं0 6–3

चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार कृषि भूमि–उपयोग (हेक्टेयर में) 2000–01

क0 सं0	विकासखण्ड	कुल बोया गया क्षेत्रफल	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र	रबी	खरीफ	जनपद
1–	कुरारा	34637	31194	3443	25729	8892	16
2–	सुमेरपुर	58835	52020	6815	42101	16723	11
3–	सरीला	49257	46180	3077	34979	14276	02
4–	गोहाण्डा	47035	41042	5993	33392	13616	27
5–	राठ	36965	30294	6671	24586	12341	38
6–	मुस्करा	46507	41349	5158	34130	12361	16
7–	मौदहा	85931	82850	3081	73901	11999	31
योग ग्रामीण		359167	324929	34238	268818	90208	141
नगरीय		06	06	–	06	–	–
योग जनपद हमीरपुर		359173	324935	34238	268824	90208	141
8–	पनवाड़ी	50492	44690	5802	39676	10771	45
9–	जैतपुर	49162	40651	8511	36330	12774	58
10–	चरखारी	62205	57704	4501	51953	10201	51
11–	कबरई	84070	71682	12388	64423	19577	70
योग ग्रामीण		245929	214727	31202	192382	53323	224
नगरीय		4080	3824	256	3500	563	17
योग महोबा जनपद		250009	218551	31458	195882	53886	241
12–	जसपुरा	30360	28906	1454	21006	9353	1
13–	तिन्दवारी	50920	46953	3967	39226	11676	18
14–	बडोखर खुर्द	61091	52802	8289	48518	12439	134
15–	बबेरू	52920	45366	7554	38642	14277	1
16–	कमासिन	45576	36844	8732	33442	12113	21
17–	विसण्डा	57739	37377	20362	35131	22604	4
18–	महुआ	63007	40852	22155	36935	26051	21
19–	नरैनी	64887	50557	14330	37028	27812	47
योग ग्रामीण		426500	339657	86843	289928	136325	247
नगरीय		–	–	–	–	–	–
योग बांदा जनपद		426500	339657	86843	289928	136325	247
20–	पहाड़ी	58378	53995	4383	29248	29100	30
21–	कर्वी	42617	35427	7190	17595	24950	72
22–	मानिकपुर	35167	31537	3630	25309	9840	18
23–	रामनगर	29621	27403	2218	22730	6870	21
24–	मऊ	28465	25705	2764	25813	2644	12
योग ग्रामीण		194252	174067	20185	120695	73404	153
नगरीय		–	–	–	–	–	–
योग जनपद चित्रकूट		194252	174067	20185	120695	73404	153
महायोग मण्डल		1229934	1057210	172724	875329	353823	782

स्रोत : सांख्यकीय पत्रिका 2002, जनपद हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट

परिशिष्ट सं0 6.4

चित्रकूटधाम मण्डल में विकास खण्डवार मुख्य फसलों का क्षेत्रफल (हेक्टेयर में) 2000–01

क0सं0	विकासखण्ड जनपद	चावल	गेहूँ	ज्वार	चना	मसूर	अरहर	लाही / सरसों	उर्द	मटर	अन्य	योग
1–	कुरारा	130	7987	3781	10914	4218	1395	544	2007	594	1723	33293
2–	सुमेरपुर	10	16133	7621	17384	5521	2590	431	5099	709	2480	57978
3–	सरीला	30	6692	8400	16733	7721	1887	257	1278	3115	1978	48091
4–	गोहाण्ड	386	10870	4699	7789	8608	1538	79	3908	5111	3175	46163
5–	राठ	709	10513	2165	4339	3979	1003	89	3783	5084	4977	36641
6–	मुस्करा	211	11802	4423	12128	5440	1762	249	4625	3649	2019	46303
7–	मौदहा	192	19661	5568	24687	22721	2820	1607	2618	1296	5121	86291
जनपद हमीरपुर		1668	83658	36657	93974	58208	12995	3256	2331 8	19558	21473	354765
8–	पनवाड़ी	241	12227	1738	9413	5623	786	661	3886	12260	6445	53280
9–	जैतपुर	236	12492	1705	8686	5112	638	729	4402	11814	7806	53618
10–	चरखारी	198	16102	2226	14613	5982	745	703	3578	10147	8278	62572
11–	कबरई	531	22643	2247	15370	8514	904	62	4955	10101	12263	78190
जनपद महोबा		1206	63464	7916	48082	25231	3073	2753	1682 1	44322	34722	247660
12–	जसपुरा	3	6183	5462	12602	1722	1969	230	787	19	1075	30057
13–	तिन्दवारी	832	13951	5916	14873	8720	1937	363	1318	164	1855	49929
14–	बडोखर खुर्द	4994	17388	4016	17994	10123	1392	462	598	296	2546	59809

15–	बबेरू	3617	15619	5308	13789	8073	1969	286	1496	121	2050	52328
16–	कमासिन	2567	10709	5085	14017	7523	2130	219	243	67	2579	45139
17–	विसण्डा	14795	16811	2125	4221	6692	728	10	96	95	527	46100
18–	महुआ	2052	31299	2262	7634	4403	791	78	80	114	688	67877
19–	नरैनी	18282	20399	9490	12916	26383407	127	107	85	3103	70558	70558
जनपद बांदा		65618	132364	39664	98046	49894	14323	1775	4725	965	14423	421797
20–	पहाड़ी	3898	12860	6498	14180	4510	2950	580	285	111	3870	49742
21–	कर्वी	3932	13200	7290	9820	2560	2885	690	250	62	3692	44381
22–	मानिकपुर	3602	12264	5897	8044	2090	2993	540	288	38	4097	39853
23–	रामनगर	2697	5850	4266	7150	1205	1817	245	179	20	4192	27621
24–	मऊ	2959	7526	4734	6855	2141	1318	149	258	30	4010	29980
जनपद चित्रकूट		17088	51700	28685	46049	12506	11963	2204	1260	261	19861	191577
योग मण्डल		85580	331186	112922	286151	145839	42354	9988	4612 4	65106	90549	1215799

स्रोत : सांख्यकीय पत्रिका–2002, जनपद–हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट

नोटः अन्य के अन्तर्गत जौ, बाजरा, अलसी, सांवा, कोदो, मूँग, अलसी, तिल, रेण्डी, मूंगफली, सूरजमुखी, सोयाबीन, गन्ना, आलू, तम्बाकू तथा सनई आदि फसलों का क्षेत्र सम्मिलित है।

परिशिष्ट सं0 6.5

चित्रकूट धाम मण्डल में मुख्य फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल (प्रतिशत में) 2000–01

क0 सं0	विकासखण्ड	चावल	गेहूँ	ज्वार	चना	मसूर	अरहर	लाही / सरसों	उर्द	मटर	अन्य	योग
1	कुरारा	0.39	23.99	11.35	32.78	12.67	4.19	1.64	6.03	1.78	5.18	100
2	सुमेरपुर	0.02	27.83	13.15	29.98	9.52	4.47	0.74	8.79	1.22	4.28	100
3	सरीला	0.06	13.92	17.47	34.79	16.05	3.92	0.53	2.66	6.48	4.12	100
4	गोहाण्ड	0.84	23.55	10.18	16.87	18.65	3.33	0.17	8.46	11.07	6.88	100
5	राठ	1.93	28.69	5.91	11.84	10.86	2.74	0.25	10.32	13.88	13.58	100
6	मुस्करा	0.46	25.49	9.55	26.19	11.75	3.80	0.54	9.98	7.88	4.36	100
7	मौदहा	0.22	22.79	6.45	28.61	26.33	3.27	1.86	3.04	1.50	5.98	100
जनपद हमीरपुर		0.47	23.58	10.34	26.49	16.41	3.66	0.92	6.57	5.51	6.05	100
8	पनवाड़ी	0.45	22.95	3.26	17.67	10.55	1.48	1.24	7.29	23.01	12.10	100
9	जैतपुर	0.44	23.30	3.18	16.20	9.53	1.19	1.36	8.21	22.03	14.56	100
10	चरखारी	0.32	25.73	3.56	23.35	9.56	1.19	1.12	5.72	16.22	13.23	100
11	कबरई	0.68	28.95	2.87	19.66	10.89	1.16	0.85	6.34	12.92	15.68	100
जनपद महोबा		0.49	25.63	3.20	19.41	10.19	1.24	1.11	6.79	17.89	14.05	100
12	जसपुरा	.01	20.59	18.17	41.93	5.73	6.55	0.77	2.62	0.06	3.57	100
13	तिन्दवारी	1.67	27.94	11.85	29.79	17.46	3.88	0.73	2.64	0.33	3.71	100
14	बडोखर खुर्द	8.35	29.07	6.71	30.09	16.93	2.33	0.77	1.00	0.49	4.26	100
15	बबेरू	6.91	29.85	10.14	26.35	15.43	3.76	0.55	2.86	0.23	3.92	100
16	कमासिन	5.69	23.72	11.27	31.05	16.67	4.72	0.48	0.54	0.15	5.71	100
17	विसण्डा	32.09	36.47	4.61	9.15	14.52	1.58	0.02	0.21	0.21	1.14	100
18	महुआ	30.24	46.11	3.33	11.25	6.49	1.17	0.11	0.11	0.17	1.02	100
19	नरैनी	25.91	28.91	13.44	18.31	3.74	4.83	0.18	0.15	0.13	4.40	100
जनपद बांदा		15.56	31.38	9.40	23.24	11.83	3.40	0.42	1.12	0.23	3.42	100
20	पहाड़ी	7.84	25.85	13.06	28.51	9.07	5.93	1.67	0.57	0.22	7.78	100
21	कर्वी	8.86	29.74	16.43	22.13	5.77	6.50	1.55	0.56	0.14	8.32	100
22	मानिकपुर	9.04	30.77	14.80	20.18	5.25	7.51	1.35	0.72	0.10	10.28	100
23	रामनगर	9.76	21.18	15.44	25.89	4.36	6.58	0.89	0.65	0.07	15.18	100
24	मऊ	9.87	25.10	15.79	22.87	7.14	4.40	0.50	0.86	0.10	13.37	100
जनपद चित्रकूट		08.92	26.99	14.97	24.03	6.53	6.24	1.15	0.66	0.14	10.37	100
चित्रकूट मण्डल		7.04	27.24	9.29	23.54	12.00	3.48	0.82	3.79	5.35	7.45	100

स्रोत : सांख्यिकीय पत्रिका – 2002 जनपद हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट के ऑकड़ों के आधार पर

परिशिष्ट संख्या 6–6

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार गेंहूँ का क्षेत्रफल तथा उत्पादन – 2000–01

क्रसं.	विकासखण्ड	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	उत्पादन में (मीट्रिकटन में)	प्रतिशत उत्पादन
1	कुरारा	7987	15989.97	3.08
2	सुमेरपुर	16133	32298.27	6.22
3	सरीला	6692	13397.38	2.58
4	गोहाण्ड	10870	21761.74	4.19
5	राठ	10513	21047.03	4.05
6	मुस्करा	11802	23627.61	4.55
7	मौदहा	19661	39361.32	7.58
जनपद हमीरपुर		83658	167483.32	32.25
8	पनवाड़ी	12227	17056.67	3.28
9	जैतपुर	12492	17426.34	3.36
10	चरखारी	16102	22462.29	4.32
11	कबरई	22643	31586.99	6.08
जनपद महोबा		63464	88532.29	17.04
12	जसपुरा	6188	8551.82	1.65
13	तिन्दवारी	13951	19280.28	3.71
14	बड़ोखर खुर्द	17388	24030.22	4.62
15	बबेरु	15619	2158.46	4.16
16	कमासिन	10709	14799.84	2.85
17	विसण्डा	16811	23232.80	4.47
18	महुआ	31299	43255.22	8.33
19	नरैनी	20399	28191.42	5.43
जनपद बांदा		132364	182927.06	35.22
20	पहाड़ी	12860	20010.16	3.85
21	कर्वी	13200	20539.20	3.95
22	मानिकपुर	12264	19082.78	3.67
23	रामनगर	5850	9102.60	1.76
24	मऊ	7526	11710.46	2.26
जनपद चित्रकूट		51700	80445.20	15.49
मण्डल–योग		331186	519387.87	100.00

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

परिशिष्ट संख्या 6–7

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार चावल का क्षेत्रफल तथा उत्पादन 2000–01

क्रसं.	विकासखण्ड का नाम	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	उत्पादन मीट्रिकटन में	उत्पादन (प्रतिशत में)
1	कुरारा	130	129.09	0.15
2	सुमेरपुर	10	9.93	0.01
3	सरीला	30	29.79	0.04
4	गोहाण्ड	386	383.30	0.46
5	राठ	709	704.03	0.84
6	मुस्करा	211	209.52	0.25
7	मौदहा	192	190.66	0.23
जनपद हमीरपुर		1668	1656.32	1.98
8	पनवाड़ी	241	239.31	0.29
9	जैतपुर	236	234.35	0.28
10	चरखारी	198	196.61	0.23
11	कबरई	531	527.28	0.63
जनपद महोबा		1206	1197.55	1.43
12	जसपुरा	3	3.02	0.01
13	तिन्दवारी	832	838.66	1.00
14	बड़ोखर खुर्द	4994	5033.95	6.00
15	बबेरु	3617	3645.94	4.35
16	कमासिन	2567	2587.54	3.09
17	विसण्डा	14795	14913.36	17.8
18	महुआ	20528	20692.22	24.70
19	नरैनी	18282	18428.26	22.00
जनपद बांदा		65618	66142.95	78.95
20	पहाड़ी	3898	3371.77	4.02
21	कर्वी	3932	3401.18	4.06
22	मानिकपुर	3602	3115.73	3.72
23	रामनगर	2697	2332.91	2.78
24	मऊ	2959	2559.54	3.06
जनपद	चित्रकूट	17088	14781.13	17.64
मण्डल–योग		85580	83777.95	100.00

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

परिशिष्ट संख्या 6–8

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार ज्वार का क्षेत्रफल तथा उत्पादन – 2000–01

क्रसं.	विकासखण्ड	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	उत्पादन (मीट्रिकटन के)	उत्पादन प्रतिशत में
1	कुरारा	3781	3055.05	3.26
2	सुमेरपुर	7621	6157.77	6.57
3	सरीला	8400	6787.20	7.24
4	गोहाण्ड	4699	3796.79	4.05
5	राठ	2165	1749.32	1.87
6	मुस्करा	4423	3573.78	3.81
7	मौदहा	5568	4498.94	4.79
जनपद हमीरपुर		36657	29618.85	31.59
8	पनवाड़ी	1738	1379.97	1.47
9	जैतपुर	1705	1353.77	1.44
1	चरखारी	2226	1767.44	1.89
11	कबरई	2247	1784.12	1.90
जनपद महोबा		7916	6285.30	6.70
12	जसपुरा	5462	4637.24	4.95
13	तिन्दवारी	5916	5022.68	5.36
14	बड़ोखर खुर्द	4016	3409.58	3.64
15	बबेरु	5308	4506.49	4.80
16	कमासिन	5085	4317.17	4.60
17	विसण्डा	2125	1804.13	1.92
18	महुआ	2262	1920.44	2.05
19	नरैनी	9490	8057.01	8.59
जनपद बांदा		39664	33674.74	35.92
20	पहाड़ी	6498	5477.81	5.84
21	कर्वी	7290	6145.47	6.55
22	मानिकपुर	5897	4971.17	5.30
23	रामनगर	4266	3596.24	3.84
24	मऊ	4734	3990.76	4.26
जनपद चित्रकूट		28685	24181.45	25.79
मण्डल–योग		112922	93760.34	100.00

स्रोतः जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

परिशिष्ट संख्या 6–9

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार बाजरे का क्षेत्रफल तथा उत्पादन 2000–01

क्रसं.	विकासखण्ड	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	उत्पादन (मीट्रिकटन)	उत्पादन (प्रतिशत)
1	कुरारा	364	306.85	3.56
2	सुमेरपुर	02	1.69	0.02
3	सरीला	11	9.27	0.11
4	गोहाण्ड	–	–	–
5	राठ	29	24.45	0.28
6	मुस्करा	05	4.22	0.05
7	मौदहा	01	0.84	0.01
जनपद हमीरपुर		412	347.32	4.03
8	पनवाड़ी	–	–	–
9	जैतपुर	4	3.37	0.04
10	चरखारी	–	–	–
11	कबरई	–	–	–
जनपद महोबा		4	3.37	0.04
12	जसपुरा	544	458.59	5.32
13	तिन्दवारी	148	124.80	1.44
14	बड़ोखर खुर्द	30	25.29	0.29
15	बबेरु	600	505.80	5.87
16	कमासिन	1226	1033.52	11.99
17	विसण्डा	34	28.66	0.33
18	महुआ	20	16.86	0.20
19	नरैनी	188	158.48	1.84
जनपद बांदा		2790	2352.00	27.28
20	पहाड़ी	1105	805.54	9.34
21	कर्वी	1332	971.03	11.26
22	मानिकपुर	995	725.36	8.41
23	रामनगर	2580	1880.82	21.82
24	मऊ	2107	1536.00	17.82
जनपद चित्रकूट		8119	5918.75	68.65
मण्डल–योग		11325	8621.44	100.00

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

परिशिष्ट संख्या 6–10

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार जौ का क्षेत्रफल तथा उत्पादन – 2000–01

क्रसं.	विकासखण्ड	क्षेत्रफल (हेक्टे.)	उत्पादन–मीट्रिकटन	उत्पादन प्रतिशत में
1	कुरारा	162	112.10	1.36
2	सुमेरपुर	133	92.04	1.12
3	सरीला	149	103.11	1.25
4	गोहाण्ड	403	278.88	3.39
5	राठ	362	250.50	3.04
6	मुस्करा	189	130.79	1.59
7	मौदहा	186	128.71	1.56
जनपद हमीरपुर		1584	1096.71	13.31
8	पनवाड़ी	723	500.32	6.08
9	जैतपुर	788	545.30	6.62
10	चरखारी	602	416.58	5.06
11	कबरई	762	527.30	6.40
जनपद महोबा		2875	1989.50	24.16
12	जसपुरा	47	32.52	0.40
13	तिन्दवारी	391	270.57	3.29
14	बड़ोखर खुर्द	233	161.24	1.96
15	बबेरु	191	132.17	1.60
16	कमासिन	417	288.56	3.50
17	विसण्डा	36	24.91	0.30
18	महुआ	48	33.22	0.40
19	नरैनी	474	328.01	3.98
जनपद बांदा		1837	1271.20	15.43
20	पहाड़ी	1190	848.47	10.30
21	कर्वी	998	711.57	8.64
22	मानिकपुर	1341	956.13	11.61
23	रामनगर	972	693.04	8.41
24	मऊ	940	670.22	8.14
जनपद चित्रकूट		5441	3879.43	47.10
मण्डल–योग		11737	8236.26	100.00

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

परिशिष्ट संख्या 6–11

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार चना का क्षेत्रफल तथा उत्पादन 2000–01

क्रसं.	विकासखण्ड का नाम	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	उत्पादन मीट्रिकटन में	उत्पादन प्रतिशत में
1	कुरारा	10914	7661.63	3.85
2	सुमेरपुर	17834	12203.57	6.12
3	सरीला	16733	11746.56	5.90
4	गोहाण्ड	7789	5467.88	2.74
5	राठ	4339	3045.98	1.53
6	मुस्करा	12128	8513.86	4.27
7	मौदहा	24687	17330.27	8.70
जनपद हमीरपुर		93974	65969.75	33.11
8	पनवाड़ी	9413	5073.61	2.55
9	जैतपुर	8686	4681.75	2.35
10	चरखारी	14613	7876.41	3.95
11	कबरई	15370	8284.43	4.16
जनपद महोबा		48082	25916.20	13.01
12	जसपुरा	12602	9791.75	4.91
13	तिन्दवारी	14873	11556.32	5.80
14	बड़ोखर खुर्द	17994	13981.34	7.02
15	बबेरु	13789	10714.05	5.38
16	कमासिन	14017	10891.21	5.47
17	विसण्डा	4221	3279.72	1.64
18	महुआ	7634	5931.62	2.98
19	नरैनी	12916	10035.73	5.03
जनपद बांदा		98046	76181.74	38.23
20	पहाड़ी	14180	9599.86	4.82
21	कर्वी	9820	6648.14	3.34
22	मानिकपुर	8044	5445.79	2.73
23	रामनगर	7150	4840.83	2.43
24	मऊ	6855	4640.83	2.33
जनपद चित्रकूट		46049	31175.17	15.65
मण्डल–योग		286151	199242.86	100.00

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

परिशिष्ट संख्या 6–12

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार मटर का क्षेत्रफल तथा उत्पादन 2000–01

क्रसं.	विकासखण्ड का नाम	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	उत्पादन (मीट्रिकटन में)	उत्पादन प्रतिशत में
1	कुरारा	594	347.49	0.92
2	सुमेरपुर	709	414.76	1.09
3	सरीला	3115	1822.27	4.79
4	गोहाण्ड	5111	2989.94	7.87
5	राठ	5084	2974.14	7.82
6	मुस्करा	3649	2134.67	5.61
7	मौदहा	1296	758.16	1.99
जनपद हमीरपुर		19558	11441.43	30.09
8	पनवाड़ी	12260	7147.58	18.80
9	जैतपुर	11814	6887.56	18.11
10	चरखारी	10147	5915.70	15.56
11	कबरई	10101	5888.88	15.49
जनपद महोबा		44322	25839.72	67.96
12	जसपुरा	19	11.48	0.03
13	तिन्दवारी	164	99.05	0.26
14	बड़ोखर खुर्द	296	178.78	0.47
15	बबेरु	121	73.08	0.19
16	कमासिन	67	40.47	0.11
17	विसण्डा	95	57.38	0.15
18	महुआ	114	68.86	0.18
19	नरैनी	89	53.76	0.14
जनपद बांदा		965	582.86	1.53
20	पहाड़ी	111	67.04	0.18
21	कर्वी	62	37.45	0.10
22	मानिकपुर	38	22.95	0.06
23	रामनगर	20	12.08	0.03
24	मऊ	30	18.12	0.05
जनपद चित्रकूट		261	157.64	0.42
मण्डल–योग		65106	38021.65	100.00

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

परिशिष्ट संख्या 6–13

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार मसूर का क्षेत्रफल तथा उत्पादन – 2000–01

क्रसं.	विकासखण्ड का नाम	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	उत्पादन (मीट्रिकटन में)	उत्पादन प्रतिशत में
1	कुरारा	4218	1560.66	2.93
2	सुमेरपुर	5521	2042.77	3.84
3	सरीला	7721	2856.77	5.37
4	गोहाण्ड	8608	3184.96	5.98
5	राठ	3979	1472.23	2.77
6	मुस्करा	5440	2012.80	3.78
7	मौदहा	22721	8406.77	15.80
जनपद हमीरपुर		58208	21536.96	40.47
8	पनवाड़ी	5623	1754.38	3.30
9	जैतपुर	5112	1594.94	3.00
10	चरखारी	5982	1866.38	3.51
11	कबरई	8514	2656.37	4.99
जनपद महोबा		25231	7872.07	14.80
12	जसपुरा	1722	559.65	1.05
13	तिन्दवारी	8720	2834.00	5.33
14	बड़ोखर खुर्द	10123	3289.98	6.18
15	बबेरु	8073	2623.73	4.93
16	कमासिन	7523	2444.97	4.59
17	बिसण्डा	6692	2174.90	4.09
18	महुआ	4403	1430.97	2.69
19	नरैनी	2638	857.35	1.61
जनपद बांदा		49894	16215.55	30.47
20	पहाड़ी	4510	2737.57	5.15
21	कर्वी	2560	1553.92	2.92
22	मानिकपुर	2090	1268.63	2.38
23	रामनगर	1205	731.44	1.37
24	मऊ	2141	1299.58	2.44
जनपद चित्रकूट		12506	7591.14	14.26
मण्डल–योग		145839	53215.72	100.00

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

परिशिष्ट संख्या 6–14

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार अरहर का क्षेत्रफल तथा उत्पादन 2000–01

क्रसं.	विकासखण्ड	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	उत्पादन मीट्रिकटन में	उत्पादन प्रतिशत में
1	कुरारा	1395	1256.90	2.32
2	सुमेरपुर	2590	2333.59	4.31
3	सरीला	1887	1700.19	3.14
4	गोहाण्ड	1538	1385.74	2.56
5	राठ	1003	903.70	1.67
6	मुस्करा	1762	1587.56	2.93
7	मौदहा	2820	2540.82	4.69
जनपद हमीरपुर		12995	11708.50	21.62
8	पनवाड़ी	786	608.36	1.12
9	जैतपुर	638	493.81	0.91
10	चरखारी	745	576.63	1.07
11	कबरई	904	699.70	1.29
जनपद महोबा		3073	2378.50	4.39
12	जसपुरा	1969	3372.90	6.23
13	तिन्दवारी	1937	3318.08	6.13
14	बड़ोखर खुर्द	1392	2384.50	4.40
15	बबेरु	1969	3372.90	6.22
16	कमासिन	2130	3648.69	6.74
17	विसण्डा	728	1247.06	2.30
18	महुआ	791	1354.98	2.50
19	नरैनी	3407	5836.19	10.78
जनपद बांदा		14323	24535.30	45.30
20	पहाड़ी	2950	3832.05	7.07
21	कर्वी	2885	3747.62	6.92
22	मानिकपुर	2993	3887.91	7.18
23	रामनगर	1817	2360.28	4.36
24	मऊ	1318	1712.08	3.16
जनपद चित्रकूट		11963	15539.94	28.69
मण्डल–योग		42354	54162.24	100.00

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

परिशिष्ट संख्या 6–15

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार मूंग का क्षेत्रफल तथा उत्पादन – 2000–01

क्र.सं.	विकासखण्ड	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	उत्पादन (मीट्रिकटन में)	उत्पादन प्रतिशत में
1	कुरारा	56	19.26	0.61
2	सुमेरपुर	115	39.56	1.24
3	सरीला	248	85.31	2.67
4	गोहाण्ड	650	223.60	7.01
5	राठ	918	315.79	9.89
6	मुस्करा	294	101.14	3.17
7	मौदहा	657	226.01	7.08
जनपद हमीरपुर		2938	1010.67	31.67
8	पनवाड़ी	1189	366.21	11.47
9	जैतपुर	911	280.59	8.79
10	चरखारी	915	281.82	8.83
11	कबरई	1259	387.77	12.15
जनपद महोबा		4274	1316.39	41.24
12	जसपुरा	76	26.15	0.82
13	तिन्दवारी	297	102.17	3.20
14	बड़ोखर खुर्द	308	105.95	3.32
15	बबेरु	408	140.35	4.40
16	कमासिन	171	58.82	1.84
17	बिसण्डा	86	29.58	0.93
18	महुआ	75	25.80	0.81
19	नरैनी	197	67.77	2.12
जनपद बांदा		1618	556.59	17.44
20	पहाड़ी	369	126.57	3.97
21	कर्वी	247	84.72	2.65
22	मानिकपुर	115	39.44	1.24
23	रामनगर	44	15.09	0.47
24	मऊ	123	42.19	1.32
जनपद चित्रकूट		898	308.01	9.65
मण्डल–योग		9728	3191.66	100.00

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

परिशिष्ट संख्या 6–16

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार उर्द का क्षेत्रफल तथा उत्पादन 2000–01

क्र.सं.	विकासखण्ड	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	उत्पादन मीट्रिकटन में	उत्पादन प्रतिशत में
1	कुरारा	2007	969.38	5.20
2	सुमेरपुर	5099	2462.82	13.21
3	सरीला	1278	617.27	3.31
4	गोहाण्ड	3908	1887.56	10.12
5	राठ	3783	1827.19	9.80
6	मुस्करा	4625	2233.88	11.98
7	मौदहा	2618	1264.49	6.78
जनपद हमीरपुर		23318	12262.59	60.40
8	पनवाड़ी	3886	1262.95	6.77
9	जैतपुर	4402	1430.65	7.67
10	चरखारी	3578	1162.85	6.24
11	कबरई	4955	1610.38	8.64
जनपद महोबा		16821	5466.83	29.32
12	जसपुरा	787	265.22	1.42
13	तिन्दवारी	1318	444.17	2.38
14	बड़ोखर खुर्द	598	201.53	1.08
15	बबेरु	1496	504.15	2.70
16	कमासिन	243	81.89	0.44
17	विसण्डा	96	32.35	0.18
18	महुआ	80	26.96	0.14
19	नरैनी	107	36.06	0.19
जनपद बांदा		4725	1592.33	8.53
20	पहाड़ी	285	73.82	0.39
21	कर्वी	250	64.75	0.35
22	मानिकपुर	288	74.59	0.40
23	रामनगर	179	46.36	0.25
24	मऊ	258	66.82	0.36
जनपद चित्रकूट		1260	326.34	1.75
मण्डल–योग		46124	18648.09	100.00

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

परिशिष्ट संख्या 6–17

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार लाही/सरसों का क्षेत्रफल तथा उत्पादन 2000–01

क्र.सं.	विकासखण्ड	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	उत्पादन मीट्रिकटन में	उत्पादन प्रतिशत में
1	कुरारा	544	252.96	5.45
2	सुमेरपुर	431	200.41	4.32
3	सरीला	257	119.50	2.57
4	गोहाण्ड	79	36.74	0.79
5	राठ	89	41.39	0.89
6	मुस्करा	249	115.79	2.49
7	मौदहा	1607	747.25	16.09
जनपद हमीरपुर		3256	1514.04	32.60
8	पनवाड़ी	661	307.37	6.62
9	जैतपुर	727	338.06	7.28
10	चरखारी	703	326.89	7.04
11	कबरई	662	307.83	6.62
जनपद महोबा		2753	1280.15	27.56
12	जसपुरा	230	106.95	2.30
13	तिन्दवारी	363	168.80	3.63
14	बड़ोखर खुर्द	462	214.83	4.62
15	बबेरु	286	132.99	2.86
16	कमासिन	219	101.84	2.19
17	विसण्डा	10	4.65	0.10
18	महुआ	78	36.27	0.78
19	नरैनी	127	59.05	1.27
जनपद बांदा		1775	825.38	17.77
20	पहाड़ी	580	269.70	5.81
21	कर्वी	690	320.85	6.91
22	मानिकपुर	540	251.10	5.41
23	रामनगर	245	113.93	2.45
24	मऊ	149	69.28	1.49
जनपद चित्रकूट		2204	1024.86	22.07
मण्डल–योग		9988	4644.43	100.00

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

परिशिष्ट संख्या 6–18

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार अलसी का क्षेत्रफल तथा उत्पादन 2000–01

क्रसं.	विकासखण्ड	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	उत्पादन मीट्रिकटन में	उत्पादन प्रतिशत में
1	कुरारा	405	170.10	2.39
2	सुमेरपुर	1481	622.02	8.75
3	सरीला	138	57.96	0.82
4	गोहाण्ड	140	58.80	0.83
5	राठ	36	15.12	0.21
6	मुस्करा	418	175.56	2.47
7	मौदहा	3469	1456.98	20.49
जनपद हमीरपुर		6087	2556.54	35.96
8	पनवाड़ी	904	278.43	3.92
9	जैतपुर	846	260.57	3.67
10	चरखारी	3031	933.55	13.13
11	कबरई	3118	960.34	13.51
जनपद महोबा		7899	2432.89	34.23
12	जसपुरा	164	72.98	1.03
13	तिन्दवारी	569	253.21	3.56
14	बड़ोखर खुर्द	1515	674.17	9.48
15	बबेरु	486	216.27	3.04
16	कमासिन	441	196.25	2.76
17	विसण्डा	150	66.75	0.94
18	महुआ	127	56.51	0.80
19	नरैनी	228	101.46	1.43
जनपद बांदा		3680	1637.60	23.04
20	पहाड़ी	326	108.23	1.52
21	कर्वी	197	65.40	0.92
22	मानिकपुर	303	100.60	1.42
23	रामनगर	241	80.01	1.12
24	मऊ	383	127.16	1.79
जनपद चित्रकूट		1450	481.40	6.77
मण्डल–योग		19116	7108.43	100.00

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

परिशिष्ट संख्या 6—19

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार मूँगफली का क्षेत्रफल तथा उत्पादन — 2000—01

क्रसं.	विकासखण्ड	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	उत्पादन मीट्रिकटन में	उत्पादन प्रतिशत में
1	कुरारा	127	78.61	0.98
2	सुमेरपुर	38	23.52	0.29
3	सरीला	56	34.66	0.43
4	गोहाण्ड	141	87.28	1.09
5	राठ	119	73.66	0.92
6	मुस्करा	73	45.19	0.56
7	मौदहा	35	21.67	0.27
जनपद हमीरपुर		589	364.59	4.54
8	पनवाड़ी	1518	939.64	11.70
9	जैतपुर	3001	1857.62	23.12
10	चरखारी	1912	1883.53	14.73
11	कबरई	4901	3033.72	37.76
जनपद महोबा		11332	7014.51	87.31
12	जसपुरा	5	3.09	0.04
13	तिन्दवारी	14	8.67	0.11
14	बड़ोखर खुर्द	28	17.33	0.22
15	बबेरु	4	2.47	0.03
16	कमासिन	2	1.24	0.01
17	विसण्डा	4	2.48	0.03
18	महुआ	95	58.81	0.73
19	नरैनी	884	547.19	6.81
जनपद बांदा		1036	641.28	7.98
20	पहाड़ी	3	1.86	0.02
21	कर्वी	8	4.95	0.06
22	मानिकपुर	4	2.48	0.03
23	रामनगर	5	3.09	0.04
24	मऊ	2	1.24	0.02
जनपद चित्रकूट		22	13.62	0.17
मण्डल—योग		12979	8034.00	100.00

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

परिशिष्ट संख्या 6–20

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार सोयाबीन का क्षेत्रफल तथा उत्पादन 2000–01

क्रसं.	विकासखण्ड	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	उत्पादन मीट्रिकटन में	उत्पादन प्रतिशत में
1	कुरारा	54	32.02	4.67
2	सुमेरपुर	3	1.78	0.26
3	सरीला	27	16.01	2.24
4	गोहाण्ड	71	42.10	6.14
5	राठ	62	36.77	5.36
6	मुस्करा	21	12.45	1.82
7	मौदहा	18	10.67	1.55
जनपद हमीरपुर		256	151.80	22.14
8	पनवाड़ी	102	60.49	8.82
9	जैतपुर	89	52.77	7.70
10	चरखारी	106	62.86	9.17
11	कबरई	116	68.79	10.04
जनपद महोबा		413	244.91	35.73
12	जसपुरा	–	–	–
13	तिन्दवारी	44	24.09	3.81
14	बड़ोखर खुर्द	77	45.66	6.66
15	बबेरु	137	81.24	11.85
16	कमासिन	40	23.72	3.46
17	विसण्डा	45	26.69	3.89
18	महुआ	16	9.49	1.39
19	नरैनी	103	61.08	8.91
जनपद बांदा		462	273.97	39.97
20	पहाडी	17	10.08	1.47
21	कर्वी	2	1.19	0.17
22	मानिकपुर	4	2.37	0.35
23	रामनगर	2	1.19	0.17
24	मऊ	–	–	–
जनपद चित्रकूट		25	14.83	2.16
मण्डल–योग		1156	685.51	100.00

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

परिशिष्ट संख्या 6–21

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार तिल का क्षेत्रफल तथा उत्पादन 2000–01

क्रसं.	विकासखण्ड	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	उत्पादन मीट्रिकटन में	उत्पादन प्रतिशत में
1	कुरारा	503	60.86	3.69
2	सुमेरपुर	565	68.37	4.15
3	सरीला	1139	137.82	8.37
4	गोहाण्ड	1197	144.84	8.79
5	राठ	754	91.23	5.54
6	मुस्करा	779	94.26	5.72
7	मौदहा	550	66.55	4.04
जनपद हमीरपुर		5487	663.93	40.31
8	पनवाड़ी	1463	177.02	10.75
9	जैतपुर	1687	204.13	12.39
10	चरखारी	1351	163.47	9.92
11	कबरई	1658	200.62	12.18
जनपद महोबा		6159	745.24	45.24
12	जसपुरा	95	11.49	0.70
13	तिन्दवारी	216	26.14	1.59
14	बड़ोखर खुर्द	166	20.09	1.22
15	बबेरु	74	8.95	0.54
16	कमासिन	99	11.98	0.73
17	विसण्डा	50	6.05	0.35
18	महुआ	96	11.62	0.71
19	नरैनी	597	72.23	4.39
जनपद बांदा		1393	168.55	10.23
20	पहाड़ी	181	21.90	1.33
21	कर्वी	144	17.42	1.06
22	मानिकपुर	139	16.82	1.02
23	रामनगर	71	8.59	0.52
24	मऊ	39	4.72	0.29
जनपद चित्रकूट		574	69.45	4.22
मण्डल–योग		**13613**	**1647.17**	**100.00**

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

परिशिष्ट संख्या 6–22

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार गन्ने का क्षेत्रफल तथा उत्पादन 2000–01

क्रसं.	विकासखण्ड	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	उत्पादन मीट्रिकटन में	उत्पादन प्रतिशत में
1	कुरारा	15	668.19	0.28
2	सुमेरपुर	33	1470.02	0.63
3	सरीला	98	4365.51	1.86
4	गोहाण्ड	492	21916.63	9.32
5	राठ	2587	115240.50	49.03
6	मुस्करा	92	4098.23	1.74
7	मौदहा	23	1024.56	0.44
जनपद हमीरपुर		3340	148783.64	63.30
8	पनवाड़ी	326	14068.21	5.98
9	जैतपुर	311	13420.89	5.71
10	चरखारी	156	6732.02	2.86
11	कबरई	222	9580.19	4.08
जनपद महोबा		1015	43801.31	18.63
12	जसपुरा	6	218.73	0.09
13	तिन्दवारी	27	984.29	0.42
14	बड़ोखर खुर्द	84	3062.22	1.30
15	बबेरु	27	984.28	0.42
16	कमासिन	41	1494.66	0.64
17	विसण्डा	74	2697.67	1.15
18	महुआ	185	6744.17	2.87
19	नरैनी	250	9113.75	3.87
जनपद बांदा		694	25299.77	10.76
20	पहाड़ी	107	4617.48	1.96
21	कर्वी	110	4746.94	2.02
22	मानिकपुर	77	3322.86	1.42
23	रामनगर	37	1596.69	0.68
24	मऊ	67	2891.32	1.23
जनपद चित्रकूट		398	17175.29	7.31
मण्डल–योग		5447	235060.01	100.00

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

परिशिष्ट संख्या 6–23

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार सनई का क्षेत्रफल तथा उत्पादन – 2000–01

क्रसं.	विकासखण्ड	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	उत्पादन मीट्रिकटन में	उत्पादन प्रतिशत में
1	कुरारा	28	11.98	1.48
2	सुमेरपुर	96	41.09	5.07
3	सरीला	109	46.65	5.76
4	गोहाण्ड	68	29.10	3.59
5	राठ	68	29.10	3.59
6	मुस्करा	113	48.37	5.97
7	मौदहा	164	70.19	8.67
जनपद हमीरपुर		646	276.48	34.13
8	पनवाड़ी	91	38.95	4.81
9	जैतपुर	68	29.10	3.59
10	चरखारी	120	51.36	6.34
11	कबरई	110	47.08	5.81
जनपद महोबा		389	166.49	20.55
12	जसपुरा	107	45.80	5.65
13	तिन्दवारी	129	55.21	6.81
14	बड़ोखर खुर्द	88	37.66	4.65
15	बबेरु	111	47.51	5.86
16	कमासिन	90	38.52	4.75
17	विसण्डा	30	12.84	1.59
18	महुआ	6	2.57	0.32
19	नरैनी	59	25.25	3.12
जनपद बांदा		620	265.36	32.75
20	पहाडी	78	33.38	4.12
21	कर्वी	44	18.83	2.32
22	मानिकपुर	38	16.27	2.01
23	रामनगर	50	21.40	2.64
24	मऊ	28	11.98	1.48
जनपद चित्रकूट		238	101.86	12.57
मण्डल–योग		1893	810.19	100.00

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

परिशिष्ट संख्या 6–24

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार आलू का क्षेत्रफल तथा उत्पादन – 2000–01

क्रसं.	विकासखण्ड	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	उत्पादन मीट्रिकटन	उत्पादन प्रतिशत में
1	कुरारा	1	21.31	0.21
2	सुमेरपुर	10	213.11	2.07
3	सरीला	1	21.31	1.21
4	गोहाण्ड	3	63.93	0.62
5	राठ	6	127.87	1.24
6	मुस्करा	3	63.93	0.62
7	मौदहा	6	127.87	1.23
जनपद हमीरपुर		30	639.33	6.20
8	प्नवाड़ी	24	511.46	4.96
	जैतपुर	17	362.29	3.51
10	चरखारी	20	426.22	4.13
11	कबरई	29	618.02	5.99
जनपद महोबा		90	1917.99	18.59
12	जसपुरा	4	85.24	0.83
13	तिन्दवारी	9	191.80	1.86
14	बड़ोखर खुर्द	8	170.49	1.65
15	बबेरु	5	106.56	1.03
16	कमासिन	9	191.80	1.86
17	विसण्डा	13	277.04	2.69
18	महुआ	18	383.60	3.72
19	नरैनी	31	660.64	6.40
जनपद बांदा		97	2067.17	20.04
20	पहाडी	93	1981.92	19.21
21	कर्वी	83	1768.62	17.15
22	मानिकपुर	30	639.33	6.20
23	रामनगर	31	660.64	6.41
24	मऊ	30	639.33	6.20
जनपद चित्रकूट		267	5690.04	55.17
मण्डल–योग		484	10314.53	100.00

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें, 2002

परिशिष्ट संख्या 6–25

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार विभिन्न साधनों द्वारा स्रोतानुसार शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल

(हेक्टेयर में) 2000–01

क्रसं.	विकासखण्ड	नहरें	नलकूप	कुएँ	तालाब	अन्य	योग
1	कुरारा	3226	4631	350	70	49	8326
2	सुमेरपुर	2320	11034	1422	91	211	15078
3	सरीला	956	2103	3869	31	318	7277
4	गोहाण्ड	2529	2591	9172	–	258	14550
5	राठ	5803	776	6100	55	558	13292
6	मुस्करा	7034	4689	628	126	692	13169
7	मौदहा	3052	8225	1264	166	2475	15182
जनपद हमीरपुर		24920	34049	22805	539	4561	86874
8	पनवाड़ी	11305	111	9824	302	2318	23860
9	जैतपुर	5943	65	12421	988	3786	23203
10	चरखारी	5850	123	4126	416	4132	14647
11	कबरई	5891	135	1192	832	8267	27046
	नगरीय	378	–	922	233	198	1731
जनपद महोबा		29367	434	39214	2771	18701	90487
12	जसपुरा	–	2352	54	149	–	2555
13	तिन्दवारी	488	8487	534	665	4	10178
14	बड़ोखर खुर्द	4250	5432	1221	1047	30	11980
15	बबेरु	2796	4297	1355	323	842	9613
16	कमासिन	1667	3069	2247	55	267	7305
17	विसण्डा	18869	5706	1112	38	396	26121
18	महुआ	21961	1867	1629	342	469	26268
19	नरैनी	10165	3583	4525	895	1303	20471
जनपद बाँदा		60196	34793	12677	3514	3311	114491
20	पहाडी	8002	731	660	460	317	10170
21	कर्वी	11708	892	1040	365	435	14440
22	मानिकपुर	6545	611	985	410	300	8851
23	रामनगर	2344	305	662	280	292	3883
24	मऊ	3626	230	822	196	396	5270
जनपद चित्रकूट		32225	2769	4169	1711	1740	42614
चित्रकूट धाम–मण्डल		146708	72045	78865	8535	28313	334466

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें –2002

परिशिष्ट संख्या 6–26

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार विभिन्न साधनों द्वारा स्रोतवार शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल का प्रतिशत –2000–01

क्रसं.	विकासखण्ड	नहरें	नलकूप	कुएँ	तालाब	अन्य
1	कुरारा	38.7	55.6	4.2	0.9	0.6
2	सुमेरपुर	15.4	73.2	9.4	0.6	1.4
3	सरीला	13.1	28.9	53.2	0.4	4.4
4	गोहाण्ड	17.4	17.8	63.0	–	1.8
5	राठ	43.7	5.8	45.9	0.4	4.2
6	मुस्करा	53.4	35.6	4.8	0.9	5.3
7	मौदहा	20.1	54.2	8.3	1.1	16.3
जनपद हमीरपुर		28.7	39.2	26.3	0.6	5.2
8	पनवाड़ी	47.4	0.5	41.2	1.2	9.7
9	जैतपुर	25.6	0.3	53.5	4.3	16.3
10	चरखारी	39.9	0.8	28.2	2.9	28.2
11	कबरई	21.8	0.5	44.1	3.1	30.5
जनपद महोबा		32.5	0.5	43.3	3.0	20.7
12	जसपुरा	–	92.1	2.1	5.8	–
13	तिन्दवारी	4.8	83.4	5.2	6.5	0.1
14	बड़ोखर खुर्द	35.5	45.3	10.2	8.7	0.3
15	बबेरु	29.1	44.7	14.1	3.4	8.7
16	कमासिन	22.8	42.0	30.7	0.8	3.7
17	विसण्डा	72.2	21.8	4.3	0.2	1.5
18	महुआ	83.6	7.1	6.2	1.3	1.8
19	नरैनी	49.7	17.5	22.1	4.3	6.4
जनपद बाँदा		52.6	30.4	11.1	3.0	2.9
20	पहाड़ी	78.7	7.2	6.5	4.5	3.1
21	कर्वी	81.1	6.2	7.2	2.5	3.0
22	मानिकपुर	74.0	6.9	11.1	4.6	3.4
23	रामनगर	60.4	7.9	17.0	7.2	7.5
24	मऊ	68.8	4.4	15.6	3.7	7.5
जनपद चित्रकूट		75.6	6.5	9.8	4.0	4.1
चित्रकूट धाम–मण्डल		43.9	21.5	23.6	2.6	8.4

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें – 2002

परिशिष्ट संख्या 6–27

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार सिंचाई साधनों एवं स्रोतों की 31 मार्च 2002 की स्थिति :–

क्रसं.	विकासखण्ड	नहरों की लम्बाई (किमी. में)	राजकीय नलकूपों की सं.	निजी नलकूपों की संख्या	पक्के कुएँ संख्या	भूस्तरी पम्प सेटों की संख्या	बोरिंग पर लगे पम्प सेटों की संख्या
1	कुरारा	79	130	100	79	152	700
2	सुमेरपुर	50	154	409	124	313	4089
3	सरीला	73	116	61	475	549	1385
4	गोहाण्ड	147	31	140	422	611	4224
5	राठ	116	–	48	1661	728	1116
6	मुस्करा	235	13	68	1234	413	1721
7	मौदहा	125	72	272	305	486	4851
जनपद हमीरपुर		832	516	1090	4300	3252	17586
8	पनवाड़ी	67	–	8	153	551	68
9	जैतपुर	101	–	–	161	557	–
10	चरखारी	104	2	5	146	612	75
11	कबरई	183	1	6	149	653	66
जनपद महोबा		455	3	19	609	2413	209
12	जसपुरा	8	109	130	271	183	379
13	तिन्दवारी	116	151	415	248	276	709
14	बड़ोखर खुर्द	288	46	454	284	601	1340
15	बबेरु	229	71	259	630	598	903
16	कमासिन	65	53	166	353	425	808
17	विसण्डा	179	10	236	970	175	1162
18	महुआ	166	18	354	1394	345	1294
19	नरैनी	142	2	497	716	1074	1160
जनपद बांदा		1193	460	2511	4866	3677	7755
20	पहाडी	166	4	3	10	233	147
21	कर्वी	79	–	4	15	390	107
22	मानिकपुर	166	–	3	22	234	27
23	रामनगर	111	–	–	2	66	11
24	मऊ	89	–	–	16	188	32
जनपद चित्रकूट		611	4	10	65	1111	324
मण्डल–योग		3091	983	3630	9840	10453	25874

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें – 2002

परिशिष्ट संख्या 6–28

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल का शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल से प्रतिशत — 2000–01

क्रसं.	विकासखण्ड	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल हेक्टेयर में	शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल हेक्टेयर में	शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल का शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल से प्रतिशत
1	कुरारा	31200	8326	26.7
2	सुमेरपुर	52020	15078	29.0
3	सरीला	46180	7277	15.0
4	गोहाण्ड	41042	14550	35.5
5	राठ	30294	13292	43.9
6	मुस्करा	41349	13169	31.8
7	मौदहा	82850	15182	18.3
जनपद हमीरपुर		324935	86874	26.7
8	पनवाड़ी	44690	23860	53.4
9	जैतपुर	40651	23203	57.1
10	चरखारी	57704	14647	25.4
11	कबरई	71682	27046	37.7
	नगरीय	3828	1731	45.3
जनपद महोबा		218551	90487	41.4
12	जसपुरा	28906	2555	8.8
13	तिन्दवारी	46953	10178	21.7
14	बड़ोखर खुर्द	52802	11980	22.7
15	बबेरु	45366	9613	21.2
16	कमासिन	36844	7305	19.8
17	विसण्डा	37377	26121	69.9
18	महुआ	40852	26268	64.3
19	नरैनी	50557	20471	40.5
जनपद बांदा		339657	114491	33.7
20	पहाडी	53995	10170	18.8
21	कर्वी	35427	14440	40.8
22	मानिकपुर	31537	8851	28.1
23	रामनगर	27430	3883	14.2
24	मऊ	25705	5270	20.5
जनपद चित्रकूट		174067	42614	24.5
	मण्डल–योग	1057210	334466	31.6

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें–2002

परिशिष्ट संख्या 6–29

चित्रकूट धाम मण्डल में विकासखण्डवार सकल सिंचित क्षेत्रफल का शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल से प्रतिशत– 2000–01

क्रसं.	विकासखण्ड	शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल हेक्टेयर में	सकल सिंचित क्षेत्रफल हेक्टेयर में	सकल सिंचित क्षेत्रफल का शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल से प्रतिशत
1	कुरारा	8326	8393	100.8
2	सुमेरपुर	15078	15169	100.6
3	सरीला	7277	6544	89.9
4	गोहाण्ड	14550	15233	104.7
5	राठ	13292	15960	120.1
6	मुस्करा	13169	13296	101.0
7	मौदहा	15182	15289	100.7
जनपद हमीरपुर		86874	89884	103.4
8	पनवाड़ी	23860	24441	102.4
9	जैतपुर	23203	23763	102.4
1	चरखारी	14647	15242	104.1
11	कबरई	27046	27428	101.4
	नगरीय	1721	1433	82.78
जनपद महोबा		90487	92307	102.0
12	जसपुरा	2555	2568	100.5
13	तिन्दवारी	10178	11065	108.7
14	बड़ोखर खुर्द	11980	13309	111.1
15	बबेरु	9613	11815	122.9
16	कमासिन	7305	7545	103.3
17	विसण्डा	26121	26501	101.5
18	महुआ	26268	26716	101.7
19	नरैनी	20471	21338	104.2
जनपद बादा		114491	120857	105.5
20	पहाड़ी	10170	10610	104.3
21	कर्वी	14440	17557	121.6
22	मानिकपुर	8851	8971	101.4
23	रामनगर	3883	3883	100.0
24	मऊ	5270	5338	101.3
जनपद चित्रकूट		42614	46359	108.7
	मण्डल–योग	334466	349407	104.5

स्रोत : जनपदीय सांख्यकीय पत्रिकायें –2002

परिशिष्ट संख्या 11–1

चित्रकूट धाम मण्डल में विकास खण्डवार वनाधारित उद्योग धन्धों का धनात्मक एवं ऋणात्मक विचलन तथा स्थानीयकरण का गुणांक, 2003–04

क0सं0	विकास खण्ड	विकासखण्ड में कार्यरत औद्योगिक कर्मियों का जनपद के कुल औद्योगिक कर्मियों से प्रतिशत	विकासखण्ड में कार्यरत वनाधारित औद्योगिक कर्मियों का जनपद के कुल वना औद्योगिक कर्मियों से प्रतिशत	मानक विचलन (–) या (+)	स्थानीयकरण का गुणांक अथवा धनात्मक विचलन/100
1–	कुरारा	12.37	13.95	–1.58	
2–	सुमेरपुर	21.07	17.29	+3.78	
3–	सरीला	10.50	11.02	– 0.52	
4–	गोहाण्ड	13.92	8.49	+5.43	
5–	राठ	16.31	24.43	– 8.12	12.35/100
6–	मुस्करा	8.73	10.86	–2.13	
7–	मौदहा	17.10	13.96	+3.14	
जनपद हमीरपुर		100.00	100.00	– 12.35 + 12.35	CL 0.123
8–	पनवाडी	11.83	10.50	+1.33	
9–	जैतपुर	33.18	12.19	+20.99	
10–	चरखारी	23.29	18.74	+4.55	26.87/100
11–	कबरई	31.70	58.57	– 26.87	
जनपद–महोबा		100.00	100.00	– 26.87 +26.87	CL 0.268
12–	जसपुरा	4.06	7.63	– 3.57	
13–	तिन्दवारी	9.98	9.73	+0.25	
14–	बडोखर खुर्द	27.09	23.86	+3.23	
15–	बबेरू	16.52	12.72	+3.80	9.35/100
16–	कमासिन	6.03	10.37	–4.34	
17–	विसण्डा	10.34	8.84	+1.50	
18–	महुआ	7.38	6.81	+0.57	
19–	नरैनी	18.60	20.04	– 1.44	
जनपद–बांदा		100.00	100.00	– 9.35 +9.35	CL 0.093
20–	पहाडी	14.72	10.02	+4.70	
21–	कर्वी	34.14	45.71	– 11.57	
22–	मानिकपुर	22.59	21.98	+0.61	12.30/100
23–	रामनगर	14.66	7.67	+6.99	
24–	मऊ	13.89	14.62	– 0.73	
जनपद–चित्रकूट		100.00	100.00	– 12.30 + 12.30	CL 0.123

परिशिष्ट संख्या 11–2

चित्रकूटधाम मण्डल में विकासखण्डवार पशु आधारित उद्योग धन्धों का धनात्मक एवं ऋणात्मक विचलन (**Deviation**) तथा स्थानीयकरण का गुणांक (**Co-efficient of localisation**) 2003–04

क्र0सं0	विकासखण्ड	विकासखण्ड में कार्यरत औद्योगिक कर्मियों का जनपद के कुल औद्योगिक कर्मियों से प्रतिशत	विकासखण्ड में कार्यरत पशु आधारित औद्योगिक कर्मियों का जनपद के कुल पशु आधारित औद्योगिक कर्मियों से प्रतिशत	विचलन (**Deviation**) (-) या (+)	स्थानीयकरण का गुणांक अथवा धनात्मक विचलन / 100
1–	कुरारा	12.37	20.41	– 8.04	
2–	सुमेरपुर	21.07	13.76	+ 7.31	
3–	सरीला	10.50	8.72	+ 1.78	
4–	गोहाण्ड	13.92	8.72	+ 5.20	
5–	राठ	16.31	24.77	– 8.46	16.50 / 100
6–	मुस्करा	8.73	7.11	+1.62	
7–	मौदहा	17.10	16.51	+ 0.59	
जनपद–हमीरपुर		100.00	100.00	– 16.50 + 16.50	CL 0.165
8–	पनवाड़ी	11.83	9.89	+ 1.94	
9–	जैतपुर	33.18	9.89	+ 23.29	25.23 / 100
10–	चरखारी	23.29	28.89	– 5.6	
11–	कबरई	31.70	51.33	– 19.63	
जनपद–महोबा		100.00	100.00	– 25.23 + 25.23	CL 0.252
12–	जसपुरा	4.06	6.32	– 2.26	
13–	तिन्दवारी	9.98	6.05	+ 3.93	
14–	बडोखर खुर्द	27.09	38.16	– 11.07	
15–	बबेरू	16.52	12.10	+ 4.42	15.20 / 100
16–	कमासिन	6.03	7.90	– 1.97	
17–	विसण्डा	10.34	6.84	+ 3.50	
18–	महुआ	7.38	4.21	+ 3.17	
19–	नरैनी	18.60	18.42	+ 0.18	
जनपद– बांदा		100.00	100.00	– 15.20 + 15.20	CL 0.152
20–	पहाड़ी	14.72	10.50	+ 4.22	
21–	कर्वी	34.14	33.19	+ 0.95	5.17 / 100
22–	मानिकपुर	22.59	24.79	– 2.2	
23–	रामनगर	14.66	16.81	– 2.15	
24–	मऊ	13.89	14.71	– 0.82	
जनपद–चित्रकूट		100.00	100.00	– 5.17 + 5.17	CL 0.051

परिशिष्ट संख्या 11–3

चित्रकूटधाम मण्डल के विभिन्न विकासखण्डों में कृषि आधारित उद्योग धन्धों का धनात्मक एवं ऋणात्मक विचलन तथा स्थानीयकरण का गुणांक 2003–04

क्र0सं0	विकासखण्ड	विकासखण्ड में कार्यरत औद्योगिक कर्मियों का जनपद के कुल औद्योगिक कर्मियों से प्रतिशत	विकासखण्ड में कार्यरत कृषि आधारित औद्योगिक कर्मियों का जनपद के कुल कृषि आधारित औद्योगिक कर्मियों से प्रकाशित	विचलन (–) या (+)	स्थानीयकरण का गुणांक अथवा धनात्मक विचलन/100
1	कुरारा	12.37	12.84	– 0.47	
2	सुमेरपुर	21.07	18.16	+ 2.91	
3	सरीला	10.50	9.25	+ 1.25	
4	गोहाण्ड	13.92	14.09	– 0.17	6.56/100
5	राठ	16.31	21.11	– 4.80	
6	मुस्करा	8.73	9.85	– 1.12	
7	मौदहा	17.10	14.70	+ 2.40	
जनपद–हमीरपुर		100.00	100.00	– 6.56 + 6.56	CL 0.065
8	पनवाड़ी	11.83	9.86	+ 1.97	
9	जैतपुर	33.18	47.44	– 14.26	
10	चरखारी	23.29	17.35	+ 5.94	14.26/100
11	कबरई	31.70	25.35	+ 6.35	
जनपद– महोबा		100.00	100.00	– 14.26 + 14.26	CL 0.142
12	जसपुरा	4.06	3.93	+ 0.13	
13	तिन्दवारी	9.98	5.99	+ 3.99	
14	बडोखर खुर्द	27.09	31.00	– 3.91	
15	बबेरू	16.52	11.18	+ 5.34	
16	कमासिन	6.03	6.07	– 0.04	11.16/100
17	विसण्डा	10.34	8.64	+ 1.70	
18	महुआ	7.38	10.41	– 3.03	
19	नरैनी	18.60	22.78	– 4.18	
जनपद– बांदा		100.00	100.00	– 11.16 + 11.16	CL 0.111
20	पहाडी	14.72	17.67	– 2.95	
21	कर्वी	34.14	34.91	– 0.77	
22	मानिकपुर	22.59	16.50	+ 6.09	6.83/100
23	रामनगर	14.66	13.92	+ 0.74	
24	मऊ	13.89	17.00	– 3.11	
जनपद चित्रकूट		100.00	100.00	– 6.83 + 6.83	CL 0.068

परिशिष्ट संख्या 11–4

वन, पशु एवं कृषि पर आधारित उघोगों का विकासखण्ड स्तरीय विचलन

क0सं0	विकासखण्ड	वनाधारित उद्योगों का विचलन	पशु आधारित उद्योगों का विचलन	कृषि अधारित उद्योगों का विचलन	ऋणात्मक विचलन का योग	धनात्मक विचलन का योग	ऋणात्मक या धनात्मक बैलेन्स विवरण
1	कुरारा	− 1.58	− 8.04	− 0.47	− 6.93		− 6.93
2	सुमेरपुर	+ 3.78	+ 7.31	+ 2.91	−	+ 14.00	+ 14.00
3	सरीला	− 0.52	+ 1.78	+ 1.25	− 0.52	+ 3.03	+ 2.51
4	गोहाण्ड	+ 5.43	+ 5.20	− 0.17	− 0.17	+ 10.63	+ 10.46
5	राठ	− 8.12	− 8.46	− 4.80	− 21.38	−	− 21.38
6	मुस्करा	− 2.13	+ 1.62	− 1.12	− 3.25	+ 1.62	− 1.63
7	मौदहा	+ 3.14	+ 0.59	+ 2.40	−	+ 6.13	+ 6.13
8	पनवाड़ी	+ 1.33	+ 1.94	+ 1.97	−	+ 5.24	+ 5.24
9	जैतपुर	+ 20.99	+ 23.29	− 14.26	− 14.26	+ 44.28	+ 30.02
10	चरखारी	+ 4.55	− 5.60	+ 5.94	− 5.60	+ 10.49	+ 4.89
11	कबरई	− 26.87	− 19.63	+ 6.35	− 46.50	+ 6.35	− 40.15
12	जसपुरा	− 3.57	− 2.26	+ 0.13	− 5.83	+ 0.13	− 5.70
13	तिन्दवारी	+ 0.25	+ 3.93	+ 3.99	−	+ 8.17	+ 8.17
14	बडोखर खुर्द	+ 3.23	− 11.07	− 3.91	− 14.98	+ 3.23	− 11.75
15	बबेरू	+ 3.80	+ 4.42	+ 5.34	−	+ 13.56	+ 13.56
16	कमासिन	− 4.34	− 1.87	− 0.04	− 6.25	−	− 6.25
17	विसण्डा	+ 1.50	+ 3.50	+ 1.70	−	+ 6.70	+ 6.70
18	महुआ	+ 0.57	+ 3.17	− 3.03	− 3.03	+ 3.74	+ 0.71
19	नरैनी	− 1.44	+ 0.18	− 4.18	− 5.62	+ 0.18	− 5.44
20	पहाड़ी	+ 4.70	+ 4.22	− 2.95	− 2.95	+ 8.92	+ 5.97
21	कर्वी	− 11.57	+ 0.95	− 0.77	− 12.34	+ 0.95	− 11.39
22	मानिकपुर	+ 0.61	− 2.20	+ 6.09	− 2.20	+ 6.70	+ 4.50
23	रामनगर	+ 6.99	− 2.15	+ 0.74	− 2.15	+ 7.73	+ 5.58
24	मऊ	− 0.73	− 0.82	− 3.11	− 4.66	−	− 4.66

1– ऋणात्मक विचलन उद्योगों का अस्तित्वात्मक संकेन्द्रण संकेत करता है और

2– धनात्मक विचलन उद्योगों के संकेन्द्रण की आवश्यकता को अंकित करता है।

प्रश्नावली
(QUESTIONNAIRE)

चित्रकूट धाम मण्डल में संचालित औद्योगिक इकाइयाँ :–

1– इकाई का नाम

2– स्थापना का वर्ष

3– उत्पादन प्रारम्भ होने का वर्ष

4– औद्योगिक इकाइयों के प्रकार

क– वृहद स्तर के उद्योग

ख– मध्यम स्तर के उद्योग

ग– लघु स्तर के उद्योग

घ– ग्रामीण स्तर के उद्योग

ड़– कुटीर उद्योग

5– उत्पाद :–

क– मुख्य उत्पाद

ख– गौण उत्पाद

6– पूँजी निवेश :–

क– स्थायी पूँजी (रूपये में)

ख– कार्यशील पूँजी (रूपये में)

7– उत्पादन (कीमत रूपये में) :–

क– संस्थापित उत्पादन क्षमता (वार्षिक)

ख– वास्तविक उत्पादन (वार्षिक)

अ– भार या संख्या

ब– मूल्य (रूपये में)

8– विपणन (कय–विकय) :–

क– स्थानीय बाजार से कय–विकय

ख– विदेशी व्यापार

ग– निर्यातित देश

ध– निर्यात की मात्रा

ड– निर्यात का मूल्य

9– कच्चामाल :–

क– प्रकार – स्वदेशी / स्वल्प / नियन्त्रित

ख– किस्म – कुल मात्रा / शुद्ध मात्रा

ग– वार्षिक उपभोग

घ– उपभोग के स्रोत

10– ईधन और शक्ति :–

क– ताप विद्युत–कोयला / पेट्रोलियम / डीजल तेज / गैस

ख– जल विद्युत

ग– आपूर्ति के स्रोत

घ– उपभुक्त मात्रा

ड– कुल आवश्यकता – क– ताप विद्युत ख– जल विद्युत ग– अन्य

11– श्रमिक :–

क– नियोजित श्रमिक

ख– अ– स्थायी ----- प्रतिमाह मजदूरी

ब– समसामयिक – – प्रतिमाह मजदूरी

ग– अ– कुशल -- प्रतिमाह मजदूरी

ब अकुशल – – प्रतिमाह मजदूरी

स– अर्द्ध कुशल – – प्रतिमाह मजदूरी

12– स्वामित्व के भेद :–

क– एकल स्वामित्व

ख– साझेदारी

ग– कम्पनी

अ– प्राइवेट लिमिटेड

ब– पब्लिक सेक्टर

13– समस्यायें :–

क– श्रमिक से सम्बन्धित

ख– भूमि एवं भवन से सम्बन्धित

ग– ऊर्जा एवं जल से सम्बन्धित

ड– वित्त से सम्बन्धित

च– यातायात से सम्बन्धित

ज– मशीनरी से सम्बन्धित

झ– कच्चेमाल से सम्बन्धित

ण– सहकारिता विभाग का सदस्य बनने से सम्बन्धित

त– अन्य

14– उद्यमन की किस्म :–

क– तकनीकी रूप से शिक्षित

ख– किसी उद्योग को चलाने का अनुभव

ग– क्या यह प्रथम पहल है (प्रारम्भिक उद्योग)

घ– पारिवारिक उद्योग

ड– सरकार से सहायता प्राप्त उद्योग

च– स्थानीय व्यक्ति है अथवा बाहरी

15– कियाशील संघ (यदि हो)

16– भावी विस्तार तथा आधुनिकीकरण कार्ययोजना

17– उक्त मदों के अन्तर्गत न आने वाले अन्य विवरण

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची
(BIBLIOGRAPHY)

1.	Alexander, J.W. & Gibson, L.J.	-	Economic Geography, Prantice Hall of India Pvt.Ltd., New Delhi, 1979.
2.	Ahmad E.	-	'Indian Village Pattern' Geographical outlook, Vol.3. No.1, 1992.
3.	Adalamo I.A.	-	Competition Among Temporally Separated Markets, Mainzer Geographische Studien, Heftio, 1976
4.	Alexander, R.S. Cross J.S. and Hiel R.M.	-	'Industrial marketing'. D.B. Tarapore Vale, Sons & Co. Pvt.Ltd. Bombay, 1968.
5.	Anderson, N.	-	'Our Industrial Urban Civilization' Asia Publishing House, Bombay, 1964.
6.	Ahmad, E.	-	Geography and Planning, I.N.E., Ahmad, Some aspects of Indian Geography, Central Book Depot, Allahabad, 1976.
7.	Adalamo I.A.	-	Traders Travel Pattern, Market Rings and Pattern of Market Shifts.- The Niger Len, Geographical Journal- 18, Ist June, 1975 (pp. 17-26).
8.	Allen, H.B.	-	Rural Reconstruction in Action, Colonel University Press, 1953.
9.	Alves, W.R. & R.L. Movrill	-	Diffusion Theory and Planning sec. Geog. 51(3), 290-304, 1975.
10.	Atkinson, E.T.	-	Statistical discriptive and Historical Accounts of North-West Provinces (Bundelkhand) Vol. I Allahabad 1974.
11.	Batta-Charya B.	-	Geography of Market Place: A Case Study of North Bengal, Journal of North-east India Geographical Society, Vol.5, 1973.
12.	Backmann, M.	-	'Location Theory', Ramdam Houk, New York, 1968.
13.	Bracy, H.E.	-	Town and Rural Service Centres, Trans. Inst. Bnt. Geog. 19, 1953.
14.	Bhat L.S.	-	Aspects of Regional Planning in India, in R.N. Steel et. al. (Ed) Geographers-Armed Tropics: Liverpool Essays, London, 1964.

15.	Basak J.K.	-	'Industrial Estates in India. The Journal of Industries And Trade, Feb.1964.
16.	Bose, S.K.	-	Evaluation of Literature on small scale Industries in India. UNESCO Research Centres on Social And Economic Development in Southern Asia.
17.	Benerjee, S. & H.B. Fischer	-	Spatial Analysis for Integrated Planning in India Urb & Rur. Plg.
18.	Berry. B.J.L. & Garrison W.L.	-	the Functional Basis of the Central place Heirarchy. Economic Geography Vol.34. 1958.
19.	Brown, Judith A.	-	'Industrial Estates', Development of India pacific view-point, Vol.X, No.21969, pp.65-71
20.	Brown, C.M.	-	'Successful Features in the planning of New Town planning Institute-1962.
21	Brown, P.A.	-	'The Local Accessibility of Nattingham', The East Mid Land Geographer No.11, pp.41, 1959.
22.	Bredo, Willian,	-	'Substrial Decentralization in India, by Roy Turner (ed) in India's Urban-future, Oxford University Press, Bombay-1962.
23.	Birch J.W.	-	Rural land use and Location Theory: a review, Eco. Geog. (1963).
24.	Bhattacharya, S.N.	-	Rural Industrialisation in India its Nature & Problem.
25.	Bennett, H.H.	-	Element of Soil Conservation, New York, 1955.
26.	Burton, I. & Kates	-	Reading in Resource Management & Conservation Chicago (U.S.A.), R.W. 1965.
27.	Chaudhari, M.R.	-	Indian Industries - Development and Location, An Economic Geographical Appraisel, 13H. Publishing Co., Calcutta-1970
28.	Chandra Shekhar, C.S.	-	The Role of Growth Foci in Regional Development strategy Urbans & Rural planning thoughty Vol.-XV, no.-1.
29.	Chaurasia, R.A.	-	Agro Industrial Development - A Strategy Chugh Publication, Civil Lines Allahabad, India.
30	Chattopadhyaya, B. & Mooni, Raza	-	'Regional Development Analytical Frame Work and Indicaters, Ind. J.I. of Reg. Sec. VII(I), 11-34.
31.	Clark C.	-	'Urban population Densities, Journal of statistical

			society (a), Vol.I. 1951.
32.	Christaller, W.,	-	Central places in southern Germany, Translated by C.W. Baskin, Engle, Wood Cliff, N.J. Prantice Hall - 1966.
33.	Chorley R.J. & Haggett P.	-	'Models in Geography'Methuen London, 1971
34.	Champion H.G. & Griffith A.L.	-	Manual of General Subculture for India'Calcutta- 1948.
35.	Chatterjee, A.	-	Changes in the Industrial Structure of Labour Force and income in India during the Decade - 1961-71, Indian Journal of Regional Science - VII- 1975.
36.	Chatterjee, S.P.	-	'A Decade of Science in India' Progress of Geography, ISCA, Calcutta,- 1973.
37.	Dixit, R.S.	-	'Spatial Distribution of Market Centers', the case of the unland of An Indian Metropolis Kanpur, I.J.M.G. Vol.-2, 1984.
38.	Davis-Peter	-	Date Description and Presentation,- Science in Geography Series. Oxford University, Press. London- 1974.
39.	Dhar, P.N.	-	'Resource Allocation in the Cotton Textile industry'. Studies in Economic Growth, Paper No.6, Asia Publishing House - 1965.
40.	Divine P.J. Tones, R.M. & Tyson, W.J.	-	'An Introduction of Industrial Economics, Minerava series, London, 1976.
41.	Duncan, O.D.	-	'Population Distribution and Community Structure' Gold Spinning Harbour Symposia on Quantitative Biology, Vol.XXII- 1960.
42.	Dixit, R.S.	-	Spatial organization of Market Centres in Hamirpur District, I.C.S.S.R. Research Project-1984.
43.	Davies, W.K.D.	-	'Centrality and Central Place Hierarchy'. Urban Studies vol.4. No.1- 1967.
44.	Dennison, S.R.	-	'The Location of Industry in Depressed Area'. Oxford University Press- London, 1939.

45.	Donal, R.Liggett.	-	'Small Industry Development Organisation: A Word wide Directory I.D.C.S.R.I., Free Press Clanooe - 1960.
46.	Elhance, D.N.	-	'Fundamentals of Statistics'Kitab Mahal, Allahabad- 1960.
47.	Estall, R.C. & Buchanan	-	'Industrial And Economic Geography'. HutChinson And Co., Ltd. London- 1968.
48.	Florence, R.S. Olive, W.	-	'The Selection of Industry suitable for dispersal in Rural Area: Journal of Royal Statistical Society, 1995 Vol.107, 93-116.
49.	finch, V.C.	-	'Element of Geography, Physical and Cultural. M.C. Graw, Hill Book Company, Inc. London 1957.
50.	Falke s.	-	Central Place System And Special Interaction In Nilgris And Coory'. Denmark Ed. by Jacobsen And Jenson Copenhagen, 1968.
51.	Freighman John	-	'Regional Development In Forest Industrial Society, Some Policy Consideration.' National Man Power Revolution, 1964, pp.2333.
52.	Garrison W.L.	-	'Graph theoratic Concepts In M.E.E. Harat (ed.). Transportation Geography, P.D.P. Marlble, 1976.
53.	Giri H.H.	-	Land Utilization Survey District Gonda. Shivalaya Prakashan, Gorakhpur, 1976.
54.	Ganguli, H.C.	-	Some Thoughts on Planning In India. Bombay, 1967.
55.	Gupta, H.S. & Singh, A.	-	'Industrial Economy of India' Light And Life Publishers - New Delhi, 1978.
56.	Gokhle, K.V. G.K., Rao T.C. & Malhotra, D.	-	'Minerological Investigations and Jhansi Pyrophyllite, 1970.
57.	Gadam D.A.	-	the Transportation Systemof Periodic Market Centres in the Wardha Valley of Maharashtra. I.J.M.G. Vol.2, Nos 182, 1984, pp.28-34.
58.	Ginsbarg, N.	-	Natural Resources & Economic Development Annals of the Association American Geography, U.S.A.

			1958.
59.	Gupta, Sen, P. & Sadassyak, G.	-	Economic Region Alization of India, Problems & Approaches, New Delhi, 1968.
60.	Godgil, D.R.	-	Planning And Economic Policy In India, Asia Publishing House, Poona, 1961.
61.	Hensen N.M.	-	Development Pole Theory In A Regional Context, Ky Klos xx, 709-25, 1967.
62.	Halforld, Sir, W.C.	-	'The Location And Designed Trading Estates'. Journal of the Town Planning Institute, 1939, Vol.25.
63.	Herschman, A.O.	-	'The Strategy of Economic Development.' Yale University Press, new Heaven, 1958.
64.	Jackson, N. & Pann, P.	-	Dictionary of Natural Resources and their Principal Uses, New Yark, 1966.
65.	Kuchhal, S.C.	-	'The Industrial Economic of India,' Chaitanya Publishing House, Allahabad, 1961.
66.	Lynton R.P. & Stepanek, J.E.	-	'Industrialiation Beyond the Metropolis. A New Book at India, Hyderabad, 1963.
67.	Mandal, R.B.	-	Planned Development of Rural Settlement, Concept Publishing Company, New Delhi, 1981.
68.	Mandal, R.B.	-	Introduction to Rural Settlement, Concept Publishing Company, New Delhi, 1980.
69.	Monkhouse, F. & H.R. Wilkinson	-	'Maps and Diagrams, Methuen & Co. Ltd. London, 1976.
70.	Morgan, W.B. & R.J.C. Munton	-	Agricultural Geography Methuen & Co. Ltd. 1971
71.	Manickam T.J.	-	'Industrial Planning Study, Triniclad and Tobago O.N. Bureaw of Technical Assesstance Operations. New York, 1964.
72.	Hystlean, J.d.	-	'Identification of some Fundamental Spatial Concepts.' Apatial Analysis (Eds. Berry & Marble). Prentice

			Hall. 1963.
73.	Nambier, & K.K.G.	-	'Banks And Rural Development, Indian Express, Dec. 20, 1977.
74.	Patel, K.	-	Rural Labour In Industrial Bombay, Bombay, 1965.
75.	Propper K.	-	'Objective Knowledge "An Evalutionary Approach. Oxford University Press, London, 1972
76.	Pandey, P.	-	Impact of Industrialization on Urban Growth; A case study of Chhota Nagpur, Central Book Depot, Allahabad, 1970.
77.	Prakasha Rao, V.L.S.	-	Planning For An Agricultural Region in Misra, R.P. et al., Regional Development Planning in India. Vikas Publishing House, Delhi 1974.
78.	Rao R.V.	-	'Cottage And small Industries and Planning Economy. Sterling Publishers, Delhi. 1967.
79.	Rao P.P. & K.V. Sundaram	-	'Regional Imbalances In India.'Some Policy Issues And Problems Ind. J.I. of Reg. Sec. V(V). 61-75, 1973.
80.	Robinson, A.E.G.	-	'The Structure of Comparative Industry Digeswell Place. james-Nisbet & Co. Ltd. Cambridge, 1958.
81.	Raw Chandran, R.	-	'Identification of Growth Centres & Growth Points In South-east Resource Regions, N.G. J.I. XXII (182), 15-24, 1976.
82.	Singh, L.R.(Ed.)	-	'New Perspectives In Geography, Thinkers Library, Allahabad, 1981.
83.	Sinha, Dina Nath	-	'Transport And Regional Planning' AnExample North Bihar: Applied Geography (Ed.) Sing. R.L. National Geographical Society of India, Varanasi, 1963.
84.	Sundaram, K.V.	-	Urban And Regional Planning In India. Vikas Publishing House New Delhi, 1977.
85.	Sharma, T.R.	-	Location of Industies in India, Hind Kitab Ltd., Bombay, Second Edition, 1948.
86.	Singh, S.K.	-	'Impact of Electrification on Agricultural And Industrial Developments of Rihand Grid Area.

			Deptt. of Geog. U.P. College, Varanasi-1978.
87.	Singh, S.	-	'Agriculture Development in India', Kaushal Publications, Shillong, 1994.
88.	Srivastava, P.K. & Srivastava, C.B.	-	'Industrial Economics, Sahitya Bhawan, Agra, 1973.
89.	Smith, D.M.	-	Industrial Location: An Economic Geographical Analysis' John Wiley & Sons. Inc. New Delhi. 1971
90.	Thaper, S.D.	-	Small Industries Study - Mathodology and Concept. Asian Economics Review, 4,2, Feb. 1962, pp.291-97.
91.	Thomas, M.D.	-	'Growth Pole Theory': An Examination of Some of Its Basic Concepts In Akuklinaki (ed._. O.P. Cit. 1977.
92.	Trewartha, G.T.	-	The case for Population Geography Annals. Asso., Am, Geog. 1953.
93.	Viman, E.L.	-	Trade Centres And Tributory Areas of Phillipines Geog. Rev. 1960.
94.	V.D. Mahajan	-	Ancient India, 1990, pp.646
95.	Vepa, R.K.	-	Small Industries In Japan, Vora & Co. Publishers, Pvt.Ltd., Bombay, 1967.
96.	Vishwanath, M.S.	-	'Growth Pattern And Hierarchy of Urban Centres In Mysore'. The Indian Geographical Journal, Vol. XLVII, 1972.
97.	Wantrap, S.V.	-	Ciriacy and Parsons, JJ,Natural Resources, Quality & Quantity, U.S.A. 1967.
98.	Wadia, D.N.	-	'Geology of India'. Tala Mc Graw Hill Pub. Co. New Delhi, Fourth Edition, 1975.
99.	Weaver, J.C.	-	Crop-Combination regions in the Middle West Geog. Rev., 1954.
100.	Yoates, M.H.	-	An Introduction to Quantitative Analysis In Economic Geography

			'M.C.Graw Hill Book Company, London, 1968.
101.	District Gazetteer of Jhansi, Allahabad, 1909 and 1968.		
102.	District Gazetteer of Hamirpur, Allahabad, 1909		
103.	District Gazetteer of Banda, Allahabad, 1909.		
104.	प्रो0 जगदीश सिंह	:	संसाधन भूगोल, ज्ञानोदय प्रकाशन
105.	प्रो0 जी0 मिथैया	:	शुष्क भूमि विकास और संभावनायें योजना, वर्ष–38 अंक–23–24, 1995
106.	प्रभात कुमार सिंह	:	जनसंख्या एवं नगरीकरण, कॉम्पिटीशन स्पेक्ट्रम, इलाहाबाद
107.	डॉ0 मेवाराम	:	विश्व का भूगोल (ग्यारहवॉ संस्करण)ए भारत–भारती प्रकाशन एण्ड कं0, मेरठ, 2004
108.	भारत – 2002 गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग द्वारा संपादित एवं संकलित		
109.	वन विभाग – प्रगति के पथ पर मार्च 1990 – प्रसार एवं जन सम्पर्क वृत्त वन–विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ		
110.	वर्मा, आर0 वी0	:	भारत का संक्षिप्त भौगोलिक विवेचन, किताबघर कानुपर
111.	शिवधार सिंह	:	जैव विविधता क्षरण – विद्या प्रगति, अंक 6, 2002
112.	जिला जनगणना पुस्तिका – बांदा और हमीरपुर, 1991		
113.	सांख्यकीय पत्रिका – जनपद – हमीरपुर, महोबा, बांदा तथा चित्रकूट, 2002		
114.	सांख्यकीय पत्रिका, चित्रकूट धाम मण्डल, बांदा, 2002		